॥ श्री ॥

मदनकोष।

अर्थात्

जीवनचरित्रस्तोम।

(BEING A DICTIONARY OF UNIVERSAL BIOGRAPHY FOR SANSKRIT AND HINDI READERS

जिसमें

संसारके १००० महानुभावोंके चरित्र संगृहीत हैं।

जिसको

संस्कृत व हिंदी पाठकोंके हितार्थ,

श्रीमान् पण्डित मदनलाल तिवारी असिस्टन्ट टीचर गवर्नमेन्ट हाईस्कूल इटावाने

निर्माण किया,

और

खेमराज श्रीकृष्णदासके

मुम्बई "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकराय प्रसिद्ध किया।

FIRST EDITION

Copies 1,000

सम्वत् १९६४, सन् १९०७

मूल्य

प्रस्तावना ।

पश्चिमोत्तर व अवध देशके लफटिनेन्ट गवरनर, सर ए पी मेकडानल साहब बहादुरने शिक्षाविभागकी रिपोर्टका गुणदोष विवेचन करते हुए, रेजोल्युशन नं १४८/८ के द्वारा नैनीतालसे ८ अक्टोबर, सन् १९०१को उत्तेजनाके साथ सूचना दी थी कि शी यमापामें अच्छे २ जीवनचारित लिखाजाना अत्यावश्यक है, क्योंकि विचारशील चित्तवृत्ति छात्रोंपर इतना प्रभाव किसी प्रकारके साहित्यका नहीं पडता है जितना कि अच्छे २ चारित्रोंका ।

लार्डसाहबके पूर्वोक्त कथनसे प्रेरितहोकर मैंने यह रचना की जो अपने ढङ्गकी अनूठीहै क्योंकि इसमें ससारके १ सहस्र श्रेष्टजनोंके चारित हैं जिनमेंसे बहुतसे सस्कृत व हिंदी साहित्यसे सम्बन्ध रखने वाले हैं ।

ग्रथकी सामग्री केवल अत्यत विश्वसनीय स्रोतोंसे एकत्र कीगईहै और प्राचीन तथा रहस्यमय चारित्रोंके लिखनेमें पुरातत्त्ववेत्ताओंके अन्वेषणका भलीभांति व्यवहार कियागयाहै । जिन बातोंके विषयमें प्रामाणिक विद्वानोंका मतभेदहै, उनके निर्णय करनेमें केवल अधिक बुद्धिसम्मत तथा न्यायसगत मतोंको ग्रहण किया है ।

बहुधा स्थलोंमें तो चारितान्वेषणके लिये केवल मूल स्रोतोंका ही आश्रय लिया है और यदि कोई चारित सग्रहग्रथोंके आधारपर लिखाहै तो उसकी शुद्धताकी परीक्षा सावधानीसे कर ली है ।

यह ग्रथ अध्यापक, जिज्ञासु तथा पाठकोंका समानरूपतिसे लाभदायी होगा क्योंकि बहुतसे चारित विस्तृतरूपसे भी लिखे हैं ।

जिज्ञासुओंकी आवश्यकता पूरक इस प्रकारका यह पहलाही ग्रथहै । सस्कृत और हिंदी साहित्य शिक्षाकी इससे बडी उन्नति होगी और पढनेवाली दुनियापर नीति तथा धुम्रिमत्ताका, जिससे यह ग्रथ ओतप्रोतहै, अवश्यही प्रभाव पडेगा ।

इटावा
७ मार्च, १९०७. } मदनलाल तिवारी

DEDICATED

WITH

HIS HIGHNESS' GRACIOUS PERMISSION

TO

MAHARAJ ADHIRAJ SIR SHIVAJI RAO HOLKER,
BAHADUR, G C S I

RETIRED

MAHARAJA OF INDORE

AS A HUMBLE TAKEN OF



GREAT REGARD FOR HIS HIGHNESS' HIGH
MINDEDNESS, GENEROSITY, & LONE
OF HINDI LITERATURE

BY

HIS HIGHNESS MOST DEVOTED ADMIRER & WELL WISHER

PANDIT MADAN LAL TEWARI

THE AUTHOR

PREFACE

In Resolution No $\frac{448}{XV\ 49\ 9}$ dated Naini Tal, the 8th October 1901, Sir A. P Macdonnel, the then Lieutenant Governor of N W P & oudh, very emphatically pointed out the need of fairly good biographies being written in Vernacular and observed that no form of literature impresses a boy of a thoughtful turn of mind so much as a well written biography

Influenced by these remarks of the Lieutenant Governor, I have written this book which is the first one of its kind in Hindi, in as much as, it contains in alphabetical order the lives of about one thousand celebrities of the world, with Special reference to Sanscrit and Hindi literature

Information has been collected from the best and most reliable sources and the researches of modern scholars have been freely made use of in writing the lives of prehistoric personages

Only the most reasonable and logical explanations have been accepted to settle those points upon which the best authorities are at variance

On most occasions I have had recourse to original sources of information and where I have borrowed from other compilers I have always taken care to be assured of their accuracy

The book may with equal advantage be employed both for reference and general reading most of the biographies being written at full length

As a work of reference, it will supply the long-felt want, and will greatly improve the Study of Sanscrit and Hindi languages. The moral tone which pervades the whole work will not be without its influence on the reading public

Etawah
The 7th March 1907

MADAN LAL TEWARI

ॐ

जीवनचरित्रस्तोम

(मदनकोष.)



अकबर (मुगलसम्राट्‌दिल्ली)–जब बादशाह हुमायूं शेरशाह सूरसे हारकर ईरानकी तरफ भागाजाता था तो रास्तेमें स ई १५४२ को साल अमरकोटके किलेमें उसके अकबर पैदा हुआ। अकबरने बचपन में ही अस्त्र शस्त्र चलाना तथा घोड़ेपर चढ़ना सीखा और १३ वर्षकी उमरमें दिल्लीका तख्त पाया। मुगलोंका राज्य उस समय केवल दिल्ली और आगेरेके आस पासही था कुछ कालतक राजकाज बैरमखाँ खानखाँनाकी मददसे होता रहा पर उसके अन्यायसे लोग थोड़ेही दिनोंमें उकला उठे पर्व स ई १५६० में अकबरने सब काम अपने काबूमें कराछिया और अन्य मुसल्मान बादशाहोंकी अपेक्षा हिन्दुओंके पृहत्‌ पृदकोभी अपने दर्बार तथा सेनामें अधिक उच्चपद दिये, राजपूतोंसे शादी व्यवहार किये, गोहिंसा बंदकी, तीर्थोंके कर माफ़ किये, सब राजपूत राजोंको महाराना चितौड़के सिवाय वशमें करके उनसे राजस्व लिया और हिन्दू मुसल्मानोंको मिलाकर सहजहीमें पंजाब, कश्मीर, काबुल, कंधार, गुजरात, बंगाल, आसाम, उड़ीसा और खानदेश इत्यादि देश जीतकर अपने राज्यमें मिलाये फिर सब राज्यको सूबोंमें बाटा, माल, गुजारी वसूल करनेका तथा प्रजाकी रक्षाका सुप्रबंध किया और जागीरोंकी जगह फौजके सिपाहियोंको नकद तनख्वाह देनेका नियम चलाया, बच पनकी शादी तथा सती होनेकी रसम बंद की प्रत्येक शहरमें हिंदू मुसल्मानोंके लिये पृथक् २ मोहताजखाने खोले, आगेरेको अकबराबाद नाम से बसाकर अपनी राजधानी बनाया और प्रयाग तथा आगेरेमें लाल पत्थरके किले बनवाये। अकबर साधु, संतोसे मिलता था, सब मतोंके तत्त्व विज्ञानी तथा ब्रह्मज्ञानी पंडितोंके शास्त्रार्थ सुनता था, किसी मत का विरोधी न था, हिंदू मुसल्मान सबही प्रसन्न थे, राजकाज न्याय और नीतिसे होता था, देखनेमें बड़ा स्वरूपवान्, गौरांग हृष्टपुष्ट, दयालु, मिलनसार, दृढचित्त और तीक्ष्णबुद्धि पुरुषथा, स्वभाव परिश्रमी था, दिनमें ३० । ४० मील पैदल चल सकता था और शिकार खूब करता था। सवम ६मास पर्य्यंत मांस नहीं खाता था, रात दिनमें केवल ३ घंटे सोता था,

मंत्री सेनापति आदिकोंसे मित्रता भाव रखता था, जो उससे मिलता था यही जानता था कि बादशाह मुझको सबसे अधिक चाहता है। बीरबल, टोडर मल, राजामानसिंह, अब्बुलफज्ल, फैजी, अब्दुलरहीम खानखाना, मिर्जा कोकल्ताश, तानसेन और सूरदास दरबारके नवरत्न थे। अकबर सन् ई १६०५ में मरा, मरतेवक्त सबसे हाथ जोडकर बोला " मेरा अपराध क्षमा करना और मेरा मित्रापसे रहना "। मालगुजारी उसके वक्तमें १७॥ करोडकी थी। पिताकी अंतिम दशा देख शाहजादा सलीम जो पहिले बागी होगया था पैरोंपर गिरपडा और विकलहो फूट २ रोया। अकबरने उसे उठा छातीसे लगाया और कहा "बेटा पुराने नौकरोंकी प्रतिष्ठा करना और बेगमोंकी तनख्वाह जारी रखना"। अकबरकी कबर आगरेकेपास सिकंदरेके रोजेमें है जो लाल पत्थरका बनाहुआ है

अगस्त्यऋषि-ऋग्वेदमें लिखा है कि, ऋषि मित्रावरुणके वीर्यसे जो उर्वशी अप्सराको देखकर गिरा अगस्त्य तथा वसिष्ठऋषि पैदाहुये-ये विन्ध्या चल पर्वतके समीप विन्ध्याननवनमें गोदावरीतट रहतेथे-महाभारतमें लिखा है कि राजा नहुष इन्होंके शापसे सांपहुये-रामचंद्रजी वनवासके समय इनके आश्रममें पधारेथे-द्रविण देशवासियोंको इन्होंने अनेक प्रकारकी विद्या पढाई थी-इनका पुत्र शतानंद निमिकुलका पुरोहितथा- अगहतसराय नामक एक खेडा जिलाइटाम है, लोग कहते हैं कि अगस्त्यमुनिने यहां बहुतकालतक तपस्या की थी-अगहत अपभ्रंश अगस्त्यका है-सन् ई १६८५ में अफगानोंने यहां एक सराय बनवाई तबसे अगहतसराय कहलाया-विदर्भ (बरार) के राजाकी कन्या लोपामुद्रासे अगस्त्यऋषिने शादी की थी-रावण पैदाहुआ इनके वंशमें था-ऋषि पुलस्त्य इनके दादा थे-दक्षिण देशके सब राक्षस इनकी आज्ञा मानते थे-समुद्रको तीन चुल्लू करके पीजाने और उसको मूत्रद्वारा निकालकर खारी करदेनेकी पुराणोक्त कथा इन्हींके विषयमें है

अग्निमित्र (मगधदेशकाराजा)-इसका बाप पुष्यमित्र मगधके मौर्यवंशी राजा बृहद्रथका सेनापतिथा-बृहद्रथको वधकरके पुष्यमित्र मगधका राजा बना पुष्यमित्रके मरनेपर अग्निमित्र उसका बेटा ईसासे १७० वर्ष पूर्व राजसिंहासन पर बैठा-कवि कालिदासने इसी अग्निमित्र और मालविकाका प्रेम " मालविकाग्निमित्र " नाम नाटकमें वर्णन कियाहै-मालविका विदर्भ की राजाकी सहेली परमसुन्दरी गाने बजानेमें पूर्ण ज्ञाता थी

अजातशत्रू-ये अपने बाप बिम्बसार मगध नरेशको मारकर ईसासे ४८५ वर्ष पूर्व गद्दीपरबैठा [illegible] वर्ष राज्यकरके आपभी चलबसा राजगृह इसकी राजधानी थी गौतम बुद्धने इसको अपना मतग्रहण कराया था इसके गद्दीपर बैठनेसे ८ वर्ष पीछे महात्मा बुद्धका परलोक हुआ

अजीतसिंह राठौर (जोधपुरनरेश) इनके पिता महाराज यशवंतसिंहसे औरङ्गजेब मनमें शत्रुता रखता था जब औरंगजेबने तख्तपर बैठकर उनको काबुलकी सुबेदारीपर भेजदिया था काबुलहीमें वीरपिताके अंशसे वीर पुत्र अजीतसिंहने गर्भ धारण किया पर इनको पेटहीमें छोड़कर यशवंतसिंहजीका देहांत होगया जब ये जन्मे तो औरंगजेबने पिताका बदला उसके बालक पुत्रसे लेना चाहा निदान जोधपुरकी रियासत जब्तकरली और अजीतसिंहको कैद करनेका ठहराव किया यह देख यशवंतसिंहके साथियाने अजीतसिंहको आबू पर्वतपर जा छिपाया और यशवंतसिंहकी रानियाने प्रतिष्ठा बचानेकेलिये जान खोदी बड़ेहोकर अजीतसिंहने उदयपुरकी एक राजकुमारीसे शादी की और धीरे २ अपने राज्यपर अधिकार जमाया इतिहास साक्षी देताहै कि पराक्रमी अजीतसिंहने औरंगजेबका मान मर्दन करके एक समय दिल्लीमें ७ दिनतक राज्य किया था। स ई १७०६ मे अजीतसिंह और औरंगजेबमें संधि होगई जिससे अजीतसिंहने बादशाहका आधिपत्य स्वीकार किया थोड़ेही दिनोंबाद अवसर पाकर औरङ्गजेबने अजीतसिंहको उनके पुत्र बख्तसिंहके हाथसे मरवाडाला और इसके बदलेमें बख्तसिंहको झडरका राज्य दिया अजीतसिंहकी ६४ रानियें पतिके मृतक शरीरके साथ सती होगई अजीतसिंहका मंदिर और छतुरी जोधपुरमें देखने योग्य हैं

अङ्गदजी (सिक्खोंके द्वितीय गुरु)—इनके बाप फीरुमल खत्री फीरोजपुरके हाकिमके कार्य्य कर्ता थे। माताका नाम सुभराईजी था। स ई १५१९ मे इनका विवाह हुआ जिससे २ पुत्र और २ पुत्री हुई। स ई १५३१ में गुरु नानकके चेले होगये। गुरु इनकी भक्तिसे ऐसे प्रसन्न हुये कि मरती समय निज पुत्रोंकी अपेक्षा इन्हींको अपनी गद्दीका उत्तराधिकारी नियत किया। ये बड़े सत्य वादी और दानीथे जो कुछ चेलोंसे मिलता धर्मार्थ खर्चकर दिया जाता था। पहुँचे हुये साधू थे अनेक सिद्धताकी बातें इनके विषयमें प्रसिद्ध हैं। समाधी इनकी अभीतक संडौर नामक ग्राममें विद्यमान है जिसके खर्चके लिये १४५८ रु० वार्षिक आयकी भूसम्पत्ति सरकार अङ्गरेजीकी तरफसे माफ है। स ई १५०४ में जन्मे। स ई १५५२ में मरे.

अङ्गिराऋषि—१० प्रजापतियों तथा सप्तऋषियोंमें इनकी गणना है। बृहस्पति, मार्कण्डेय इत्यादि इनके पुत्र थे ऋग्वेदका नवाँ मण्डल इन्होंने प्रकट किया और एक धर्मशास्त्र स्मृति तथा एक ज्योतिष सिद्धांत बनाया

ये वर्णके ब्राह्मण थे पर इनके वंशधारियोंका स्वभाव क्षत्रियोंकासा था सन्तति इनकी अनेक पीढ़ियोंतक अङ्गिरानामसे पुकारीजातीरही

अदीसुर—बंगालेका राजा स ई ९९४ में विद्यमान था (देखो वीरसेन)

अनङ्गपाल—पंजाबके राजा जयपालका पुत्र वर्णका ब्राह्मण था। स ई के ११ वें शतकमें जयपालने सुल्तान महिमूद गज़नवीसे हारकर राजपाट निजपुत्र अनङ्गपाल को सौंपदिया और अपना देह अग्निमें हवन करदिया। महिमूदने अनङ्गपालपरभी चढाईकी और बहुतसा माल लूटकर लेगया। कुछसमय पीछे महिमूदने अनङ्गपालपर फिर चढाई की इससमय यद्यपि राजाका कोष खाली था पर क्षत्रियोंने अपनी जान लडादी और क्षत्रानियोंने निज पतिपुत्रोंकी जो राजाकी फौजमें थे जेवर बेंचकर और सूत कातकर रणभूमिमें सहायता की। अनङ्गपालके मरनेपर महिमूदने उसके पुत्रजयपाल द्वितीयको परास्त करके स ई १०२२ मे लाहौरका राज्य छीनलिया

अनङ्गभीमदेव (उडीसाकाराजा)—इस गंगावंशी राजाने स ई ११७५से १२०२ तक राज्य किया और पुरीम जगन्नाथका मंदिर बनवाया

अनन्तदैवज्ञ (ज्योतिषकार) विदर्भ प्रदेशान्तर्गत धर्मपुर निवासी चिन्तामणि दैवज्ञके पुत्रथे— नीलकण्ठी नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्ता पं० नीलकण्ठ दैवज्ञ तथा मुहूर्तचिंतामणि ग्रंथके कर्ता पं० राम दैवज्ञ इनके पुत्रथे—ये बरारसे काशीम आ बसे थे— जातकपद्धति और कामधेनुगणितटीका इनके रचेग्रंथ हैं— अनन्तसुधारसाख्यसारिणी नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्ता अनन्तदैवज्ञ दूसरे थे—स ई के १६ वें शतकमें हुये

अनन्यदास (भाषाकवि) अनन्ययोगप्रकाश नाम ग्रंथ इन्हींका रचाहुआ है—ये जातिके कायस्थ किलेबीकानेरमें पैदा हुयेथे और अपने घरम बैठे भगवद्भजन किया करतेथे— उस समय बीकानेरमे राजा रायसिंहका राज्य था जिनकेभाई पृथ्वीराज बडेकवि, भगवद्भक्त और अकबर बादशाहके कृपा पात्रथे—इन्हीं पृथ्वीराजजीको एक समय वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने घरबार त्यागनेकी तैय्यारी की—कुटुम्बी तथा मित्रादिकोंने घबराकर उनको अनन्यदासजीसे मिलाया—अनन्यजीके उपदेशसे तत्वज्ञानको प्राप्त होकर पृथ्वीराज पहिलेकी तरह सब कामकाज करनेलगे—अनन्यजीने जो उपदेश पृथ्वीराजको कियाथा वही "अनन्ययोगप्रकाश" में लिखा है

अनुभूतस्वरूपाचार्य (वैयाकरण)—सारस्वतचंद्रिका नामक व्याकरण ग्रंथके कर्ता—पंजाबमें रहनेवाले सारस्वत ब्राह्मणथे

अप्पयदीक्षित (धर्म प्रवर्तक) द्रविणदेश वासी रङ्गराज मखीके पुत्र—इनका जन्म विक्रमकी १६ वीं शताब्दीमें हुआ, ये शैवथे—श्रीकण्ठ नामक मत इनका चलाया हुआ है—विद्वानोंकी दृष्टिमें इनकी प्रतिष्ठा शंकरस्वामीके

समान है-इनके अनेक वंशधरोंने अग्निष्टोम, वाजपेय इत्यादि यज्ञकरके मखी दीक्षित, वाजपेई इत्यादिकी पदवी प्राप्तकी थी-प्राय सब शास्त्रोंपर इनके रचे ग्रंथ मिलते हैं-वेदांतमें परिमल आदि, मीमांसामें विधिरसायनादि, साहित्यमें वृत्तिवार्तिक, चित्रमीमांसा, कुवलयानंद इत्यादि और शैवदर्शनमें शिवादित्य मणिदीपिका-अनेक काव्य तथा स्तोत्रभी इन्होंने रचे थे और स्वरचित अनेक ग्रंथोंपर तिलकभी बनायेथे-इनके रचे सब ग्रंथ मिलाकर १०१ प्रतीत होते हैं

अफलातून हकीम (Plato) यूनानमें एक बड़े फ़िलासोफ़र (ब्रह्मज्ञानी) होगये हैं। स ई ४२९ म अरिष्टनक्रेपर पेये-समें उत्पन्न हुये प्राचीन कालमे इनके पूर्वज यूनानके राजाये एवं इनका वंश प्रतिष्ठित था इन्होंने उच्चश्रेणीकी शिक्षा पाई थी और कविता बचपनहीसे करते थे २० वर्षकी उम्रमें सुक़रातके शिष्यहो फ़िलासोफी पढना शुरू किया और स्वरचित कविताकी पुस्तकोंको जलादिया बुद्धि इनकी अत्यत तीव्र थी एवं थोड़ेही कालमें योग्य फ़िलासोफ़र होगये सुक़रातके मरनेपर देश, टनको निकले और १० वर्षतक सिश्रम रहकर पढते रहे बादको इटेली जाकर फ़ीसा गोरसकी फ़िलासोफी पढी ४० वर्षकी उम्रमें अपनी जन्म-भूमिको लौट आये और वहाँ एक पाठशाला स्थापनकरके विद्यार्थियोंको पढाने लगे उम्रभर विवाहनहीं किया ८१ वर्षकी उम्रम मरे बहुतसी पुस्तकें इनकी बनाई हुई हैं जिनमेंसे "फेडो" अत्यंत प्रसिद्ध है सुक़रातके अनेक उपदेश इन्होंने निजरचित ग्रंथोंमें सम्मिलित किये हैं

अब्दुलरहिमानखाँ (सर अबदुररहमानखाँ, जी सी एस आई अमीर अफ़ग़ानिस्तान) अमीर शेर अलीके पुत्र थे। स ई १८८० में ब्रिटिशगवर्न-मेंटकी मददसे काबुलकी गद्दीपरबैठे । अमीर काबुलको ब्रिटिशगवर्नमेंटकी तरफसे कितनेही लाख रुपया सालाना इसलिये दियाजाताहै कि वह हिंदोस्तानकी सरहद्दपर अमन चैन क़ायम रक्खे और रूससे न मिलें। अमीरके राज्यका विस्तार २७००० वर्गमीलहै, आबादी प्राय ४९ लाख मनुष्योंकी है, फ़ौजम २० हज़ार सवार, ४० हजार पैदल और २१० तोपें हैं। अफगानिस्तानकी प्रजा स्वभावसेही लड़ाकू, हठीली, रक्तकी प्यासी, लपद्रवी और स्वदेश भक्त है। अमीर काबुल या किसी विदेशी शत्रुके खिलाफ जहादका झंडा खड़े होतेही पेशा-जीविका छोड स्वधम स्वदेशकी रक्षाके लिये हथियार लेकर निकल पड़ते हैं। मनुष्य वध करना और गाजर मूली काटना उनके नजदीक बराबर है इसी लिये अमीर काबुलको उन लोगोंके साथ सख्त बर्ताव करने की जरूरत है। अमीर अब्दुररहमानके पूर्वजोंके समयमें वहां सदैव मारकाट ट खसोट, खून खराबी होती रहती थी, मुल्ला सर्दार तथा जाति-

यार्थे मुखिया मनमानी करते थे और अमीर काबुल के आधीन होते हुये भी स्वाधीनही रहतेथे। राज कुटुम्बमें द्वेषकी आग सदैव धधकती रहती थी। ऐसी बदहर प्रजाको अब्दुलरहीमानखाँने गद्दीपर बैठकर खूब ही सीधा किया। छोटे २ अपराधों पर उपद्रवियोंको फांसी देने, तोपसे उड़ादेने, हाथ पैर नाक कान काटने, पत्थरोंकी मारसे मारडालने, जीतेजीदीवारमें चुनवादेने आदिके कड़े दंड दिये। ऐसी कड़ी सजाय देनेसे इनका आतङ्क ऐसा जमगया था कि कट्टरसे कट्टर लोगभी इनका नाम सुनतेही पेशाब कर देते थे। निज आतङ्क बैठनेके साथही ये खूब जानतेथे कि प्रजाकी शक्ति नष्ट करना किसी अंशमें भी राज्यके लिये अच्छा नहीं है क्योंकि अफगानिस्थानका छोटासा राज्य अंग्रेजों तथा रूसियाके वृहत् राज्योंके बीचमें है और वक्त पड़नेपर यही उपद्रवी प्रजा उसको बचासक्ती है। इसी लिये इन्होंने व्यापारकी उन्नतिके साथही निज प्रजाको नवीन नियमोंके अनुसार सैनिय शिक्षा दिलाइ, नये ढंगके हेनरी मार्टिनी रैफल, गिफ्ट गन आदि भयानक शस्त्रोंके बनानेके लिये कारखाने खोले और थोड़ेही कालमें अपनी पराक्रमी प्रजाको युद्ध विद्या और उत्तम शस्त्रोंसे सुसज्जित कराहिया। इनकी राजनीति ऐसी विलक्षण थी कि स्वराज्यको भलेप्रकार दृढ़ करते हुये और निज प्रजाका भलीभाँति उत्साह बढ़ाते हुये भी कभी अंग्रेजों व रूसियाके बिगाड़की नौबत नहीं पहुँचनदी। इन्होंने अपने हालातकी एक पुस्तक लिखी है जो शिक्षाजनक और रोचक है। स ई १९०१ में ५८ वर्षकी उमरमें मरे और इनके पुत्र हबीबुल्लाखाँ गद्दीपर बैठे

अब्दुलरहीम खानखाना (दुसरा अकबरीके नवरत्न) बैरमखाँ खान खानाके पुत्र स ई १५५६ में लाहोरमें पैदा हुये, युवावस्थाहीमें अकबरने इनकी अपूर्व योग्यता देख मिर्जाखानकी उपाधि दी और शाहेजादे सलीमका शिक्षक इनको नियत किया

पश्चात् मुजफ्फरशाह सूबेदारके दमनके करनेको लिये इनको भेजा उक्त सूबदारको इन्होंने बड़ी शूरवीरतासे परास्त किया, जिससे पुरस्कारमें अकबरने प्रसन्न होकर इनको पञ्च हजारीका मनसब और खानखानाका खिताब दिया और थोड़ेही दिन पीछे "वकीले सल्तनत" के पदपर नियुक्त किया इसके बाद ये क्रमशः जौनपुर,मुल्तान और सिन्धकी सूबेदारीपर रहे और दक्षिणकी लड़ाइमें गये। ये कवितामें एकही अर्बी,फारसी,तुर्की, संस्कृत और भाषाके बड़े विद्वान् थे और विद्वानों तथा गुणीजनोंका सत्कार करते थे सभा इनकी विद्वानोंसे भरीपुरी रहती थी इनके रचे संस्कृत श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषामें " रसके कवित तथा दोहे अत्यंत ललित हैं, नीति सम्बन्धी सामयिक कविताभी अपूर्वही की है और रहिमन

या रहीम नामसे पदपूर्ति की है भाषा पद्यमे "मदनाष्टक" ग्रंथ इन्होंका बनाया हुआ है फारसी दीवानभी इनका बनाया उत्तम है दरबार अकबरीके नवरत्नोंमें इनकी गणना है अकबरके बाद जहांगीरके समयमें २१ वर्ष जीवन धारणकरके ७० वर्षकी अवस्थामें दिल्लीमें मरे. एकदिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया "तारायन शशिरैन प्रति सूर होहिंशशिगैन" दूसरा चरण रोज खानेको सोचा करते पर नहीं बनता था दिल्लीकी एक क्षत्रानी ने दूसरा चरण इसप्रकार बनाय बहुतसा इनाम पाया 'तदपि अँधेरो है सखी पीठन देखे नैन" खानखानाका कुछ वृत्तांत गोस्वामीतुलसीदासके भी सम्बंधमें हुआ है (देखो तुलसीदास)

अब्बुलफज्ल (अकबरका प्रधान मंत्री) स. ई. १५५१ मे शेख मुबारिक नागोरीके घर आगरेमें पैदाहुआ १५ वर्षके होनेतक सब विद्या भले प्रकार सीख ली थी बुद्धि ऐसी तीव्र थी कि जो इबारत एकदफे देखी याद होगई ये बड़ा तत्त्वविज्ञानी था एवं और विद्वानोंकी अपेक्षा इसकी सम्मति अधिक गौरव पाती थी अकबरने इसको सबगुणसम्पन्न देख अपना वजीर बनाया ये अकबरके बेटोंको आगरेमें अधिक नहीं ठहरने देता था दूर २ सूबोंकी गवर्नरीपर भेजता रहता था इसीलिये वे सब इससे जलते थे शाहिजादा सलीम जहांगिरनामेम लिखता है कि "अब्बुलफज्ल बादशाह सलामतसे प्रेमसे हमारी तरफसे गवला करता रहता था इसीलिये नरसिंहदेव बड़छा नरेशके हाथसे मैंने उसको मरवाडाला" अब्बुलफज्लका अधिकार राज्यकार्य्योंमें अधिक बढा हुआ था इसीलिये उसके बहुतसे शत्रु थे। स. ई. १६०२ में जब अब्बुलफज्ल दक्षिणकी लड़ाइपरसे केवल६ सिपाहियोंसहित लौटा आरहा था तब नरसिंहदेवने १० हजार सेनासहित उसे आ घेरा और वह बड़ी वीरतासे लड़कर कट मरा अकबरने अपने प्यारे मंत्रीके वध होनेकी खबर सुन बड़ा शोक किया साधारण मनुष्योंकी तरह घंटों बराबर हिचकी भर २ रोया और नरसिंहदेवको सपरिवार नष्ट करनेके लिये फौज भेजी अबुलफज्ल बड़ाभारी विद्वान था अकबर नामा, अब्बुलफज्ल इत्यादि फारसीके ग्रंथ उसके बनाये हैं प्रसिद्ध विद्वान् फैजी उसका ज्येष्ट भ्राता था अबुलफज्ल नास्तिक था

अबुलफैजफैजी—(प्रसिद्ध विद्वान्).शेख मुबारिक नागोरीका बेटा तथा अब्बुल फज्लका बड़ा भाइ था। १४ वर्षकी अवस्थामें अर्बी फारसी तुर्की भले प्रकार पढकर संस्कृत पढने बनारस गया। जब पढकर पूर्ण विद्वान् हुआ तब ब्राह्मण गुरुने निज पुत्री इसको बिवाहनी चाही, तब फैजीने उससे सच्चा हाल कहा कि मैं मुसलमान हूं। गुरु यह सुन शोकितहो फैजीसे बोला "जिस प्रयका चाहो अनुवाद करना, पर वेदोंका अनुवाद न करना"। अकबरने गद्दी पर बैठनेसे १२ वर्ष पीछे फैजीको अपने दरबारमें उच्च पद दिया। पश्चात् फैजीने

अबुल्फज़्ल अपने कनिष्ठ सहोदरको दर्बारमें पहुँचाया। फैजीकी समान तत्व तथा ब्रह्मविद्याका ज्ञाता कोई दूसरा दर्बारमें न था। उससे अकबर तथा दर्बारके और सब लोग प्रसन्न थे अकबरने उसको राजकविके पदपर नियुक्त किया था. बेनुक्तकुरान सुलेमान बिल्कीस, हफ्तकिश्वर हफ्तपैकर, मसनवी नलदमन इत्यादि फारसी ग्रंथ और बादशाह अकबरकी आज्ञानुसार रामायण, महाभारत, राजतरंगिणी, लीलावती, बीजगणित इत्यादि संस्कृत पुस्तकोंका फारसी अनुवाद फैजीने किया था और अथर्वण वेदमें अल्लोपनिषद् बनाकर मिलाया था। फैजीकी तनख्वाहका अधिक भाग पुस्तक खरीदने में खर्च होता था। स ई १५९५ मे फैजीका देहांत हुआ। ४६०० पुस्तक उसके कुतुबखानेमे निकलीं। भाषामें उसके बनाये दोहरे अनेक मिलते हैं। ऐसा तीव्र बुद्धि पुरुषथा कि जो पुस्तक एक दफे पढली याद होगई

अभिनव गुप्त आचार्य (संस्कृत कवि) विक्रमकी ११ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें कश्मीर में हुआ। ये संस्कृत का बड़ा विद्वान् था। निजवृत्तांत इसीके बनाये एक ग्रंथसे विदित हुआ है–अभिनव गुप्तजी वाराह गुप्तके पौत्र और चुखल गुप्तके पुत्र थे, इनके कनिष्ठभ्राताका नाम मनोरथ था। निम्न लिखित ग्रंथ इसके रचे हैं–अनुत्तराष्टिका, क्रमस्तोत्र, घटकर्पर, कुलकवृत्ति, तंत्रवटधानिका, परमार्थसार, मालिनीविजयवार्त्तिक, भगवद्गीता विवरण, भरत नाट्य शास्त्रटीका

अम्बरीष–सूर्यवंशी राजा, बड़ा धार्मिक, दृढभक्ति और प्रजापालक था। ऋषिदुर्वासाने उसकी परीक्षा की और दृढचित्त पाया–अंतसमय राजपाट छोड़ वनको चलागया और ईश्वरोपासनामें तत्पर हुआ

अमरदास (सिक्खोंके तृतीय गुरु) जिला अमृतसरमें तेजभानु खत्रीके घर सुलखनीजीके उदरसे उत्पन्न हुए– २० वर्षकी उम्रमें शादी की जिससे २ बेटे और १ बेटी हुई–बचपनसेही इनकी रुचि साधु सेवा और ईश्वरोपासनामें लगी रहतीथी–स ई १५४० में इन्होंने गुरु अङ्गदजीके शिष्य होकर १२ वर्षतक उनकी टहल निज देहके समान की– स ई १५५२ में गुरु अङ्गदजीके परमधामको सिधारनेपर गुरुवाईकी गद्दीपर बैठे–सोलहसालतक इनके समयम बड़ी उन्नति हुई–अनेक पहाड़ी राजाओंको इन्होंने अपने मतका अनुगामी बनाया–ये वृद्ध होकर रातदिन ईश्वरोपासना करतेथे और बड़े सत्यवादी तथा जितेन्द्रियथे–भूख प्यासकी कुछ परवा न करते थे और पहुँचे साधु थे–बादशाह अकबरको इनका निश्चय था– १०० वर्षकी अवस्थामे इनका देहांत हुआ और इनके जामाता रामदासजी इनकी गद्दीके उत्तराधिकारी हुये

ग्राम गोयंदवालमुल्क पंजाबमे इनकी बनवाई हुई एक बावड़ी है और इसी ग्राम में इनके वंशके बहुत लोग रहते है

स ई १४७८ म जन्मे

स ई १५७९ मे सिधारे.

अमरसिंह (कोषकार) ये बौद्ध थे—बुद्ध गयाके मंदिरके एक शिलालेखसे प्रतीत होता है कि उसको अमरसिंहजीने विक्रमी संवत्‌की छठी शताब्दीमे बनवाया था—ये विक्रमादित्य हर्ष महाराजा उज्जैनके दर्बारके नवरत्न नामक प्रसिद्ध पंडितोंमेसे थे—इन्होंको अमरसिंह लेखक कहते हैं—इनके बनाये बहुतसे ग्रंथ थे जिनमें से अमरकोषके सिवाय और सबको ब्राह्मणोंने नष्ट कर दिया

अमीरखां—(रियासतटोंकका संस्थापक)—टोंकके नव्वाब इसीके वंशम हैं ये पहिले जसवंतराव हुलकरके यहां सेनापति था जसवंतरावके सिड़ी होजानेपर ये अपनी मातहत सेनासहित पिंडारियासे मिलगया और सब पिंडारी दलका मुख्य नायक बनगया इस भयानक दलकी मददसे इसने अनेक राजाओंको आपसमें लड़ाकर ढीलाकर दिया कभी किसी राजासे मिलजाता और कभी किसीसे अंतमें बृटिशगवर्नमेंटने वह सब मुल्क जो इसको रियासत इन्दौरकी तरफसे मिला हुआ था इसको देकर अपना आधिपत्य स्वीकार कराया और इसके पास जितना तोपखाना था सब लेलिया और इसके भयानक लुटेरे दलसे हथियार रखवा लिये इस लुटेरे दलने राजपुताना तथा मालवामें दो बपतक बहुतसे निर्दईपनेके ऐसे काम किये थे जिनके सुननेसे शरीरके रूंगटे खड़े होजाते हैं। स ई १८३४ मे मरा

अर्जुन(सिक्खोंके पंचमगुरु) गुरुरामदासजीके कनिष्ठ पुत्र थे ग्राम गोयंदवालमुल्क पंजाबमें पैदा हुये इनके दो विवाह हुये दूसरे विवाहसे गुरुहरगोविंद पैदा हुये अर्जुनगुरुके समयमें गुरुकी भेंट पूजाकी प्रणाली चली इन्होंने अमृतसरके निकट "संतोषसर" नामक तालाब खुदवाया था शहर अमृतसरकी आबादी इनके समयम बहुत बढगई थी। कुष्ठी, अंधे इत्यादि अनेक असाध्य रोगियोंको इन्होंने आराम किया था सिक्खोंकी धर्म पुस्तक "ग्रंथसाहिब" को पहिले पहिल इन्होंने संग्रह किया था ये बड़े चतुर और हढ़चित्त पुरुष थे खालसा पंथकी जड़ इनके समयमे खूब जमगई थी चैडूखाल दीवानने इनको मरवाडाला इनकी समाधि लाहौरम है जिसके खर्चके लिये ९०० रु सालकी माफी है

स ई १५६३ में जन्मे

स ई १६०६ मे मरे.

अर्जुन-(पांडव)-चन्द्रवंशी महाराज पांडुके तृतीय पुत्र रानी कुंतीके उदरसे थे धनुर्विद्या तथा यज्ञाकौशलादिमे अद्वितीय थे पंचालके राजा द्रुपदकी कन्या द्रौपदीसे इनका विवाह स्वयंवर विधिसे हुआ था श्रीकृष्णजीकी बहिन सुभद्रा तथा मणिपुरकी राजकुमारी चित्रांगदासेभी इनकी शादी हुई थी महाभारतके युद्धमें अर्जुनने बड़े २ वीरता और साहसके काम किये भीष्म पितामह तथा करण इन्हींके हाथसे मारेगये इस लड़ाईमे श्रीकृष्ण इनके सार थी बने थे और भगवद्गीताका उपदेश इनको किया था ये ऐसे बाणधारी थे कि एकही दमेम ५। ५ सौ बाण छोड़कर हाथी, घोड़ा और शूरवीरोंकी सेनाका पराजय करते थे राज्यसिंहासनपर बैठकर जब महाराज युधिष्ठिरने अश्वमेध यज्ञ किया तब ये यज्ञके घोड़ेकी रक्षाके लिये सिंध, मणिपुर, गुजरात, दक्षिण इत्यादि देशोंमें गये और जहां कहा किसी राजाने सामना किया उसको पराजय किया अंतमे जब यादवोंमें आपसमें झगड़ा फैला तब श्रीकृष्ण जीने इनको द्वारिका बुलाया और वहां दु:खसे श्रीकृष्णके परमधाम सिधारनेपर उनकी अंत्येष्टिक्रिया की पश्चात् हस्तिनापुर आये महाराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्ण जीके अंतधान होनेकी खबर सुन इनके पौत्र परीक्षितको राजपाट सौंपदिया और पांचों पाण्डवोंने द्रौपदीसहित हिमालयपर जाकर देह त्याग दी

अरस्तू हकीम (Aristotle) हकीम निकोमेकसके पुत्र स्टागिरा (यूनान) में पैदा हुये माता पिता इनको बालक छोड़ मरगयेथे किसी अन्य धनाढ्य पुरुषने इनका पालन पोषण किया और पढाया था १७ वर्षकी अवस्थामें स्टागिरासे एथन्स आए और अफलातूनसे विशेष विद्या पढी अफला तूनके मरनेपर किसी राजकुमारीसे इनका विवाह होगया स ई से ३४२ वर्ष पूर्व बादशाह फिलिपने निज पुत्र अलेग्जेंडरका शिक्षक इनको नियत किया और इनके कामसे बहुत प्रसन्न रहा अलेग्जेंडरने गद्दीपर बैठकर जब देश विदेश चढाई की तब अरस्तू उसके साथ नहीं गये पर एथन्समें रहकर छात्रोंको पढाते रहे और पुस्तक रचते रहे इन्होंने काव्य, राजनीति चिकित्सा, गणित, न्याय, जीव तथा विज्ञान विषयकी ??० पुस्तकें यूनानी भाषामें बनाई थीं जिनमेंसे अनेक अबभी मिलती हैं अंतमें अलेग्जेंडर (सिकन्दर) के मरनेके बाद मुकदमेकी तरह नास्तिक होनेका अभियोग इनको भी लगाया गया जिससे एथेन्स छोड़ इनको यूबिया जगह भाग जाना पड़ा इनकी समान चतुर पुरुष आजतक दूसरा पैदा नहीं हुआ

स ई से ३८२ वर्ष पूर्व जन्म
स ई से ३२२ वर्ष पूर्व मरे

अरिस्टोटल—देखोअरस्तू

अलबरुनी—जिसको अबूरेहाँ भी कहते हैं स इ ९७३ मे खीवामें पैदा हुआ जब महिमूद गजनवीने स इ १०१७ म खीवा विजय किया तो वह अलबरुनीकोभी और लोगोंके साथ कैद करके अपनी राजधानी गजनीमें लेगया गजनी पहुँच अलबरुनीने अनेक भारतवासियोंको जिनको महिमूद यहांसे पकड़कर लेगया था देखा हिंदोस्तानके वृत्तांतम अलबरुनीने फारसीम एक ग्रंथ रचा है जिससे इस देशकी प्राचीन गौरवता स्पष्ट मालूम होती है इस कितावम भारतवर्षकी उससमयकी सामाजिक तथा ऐतिहासिक व्यवस्था अच्छीतरह दर्शाइ गइ है और इस देशकी विद्या, धर्म वर्णव्यवस्था, खानपान, रहिनसहिन, खेतीवाड़ी, वणिज व्यापार, राजनीति, फलफूल, इत्यादिकाभी सविस्तर वृत्तांत लिखा गया है, वराहमिहिरज्योतिषीकी भी प्रशंसा की है और लिखा है कि, भारतवासियाने और देशकी अपेक्षा गणित शास्त्रम अधिक उन्नति की थी यहभी लिखा है कि भारतवासी विद्वान् केवल सब शक्तिमान् परमेश्वरको मानतेथे जैसा कि वेदों और उपनिषदाम लिखा है और क्षुद्रलोग अनेक मूर्तियोंकी पूजा करते थे अलबरुनीने बहुतसे और ग्रंथ भी बनाये थे ४० वर्ष इसने हिंदोस्थान इत्यादि अनेक देशाम भ्रमण करनेम बिताये ये बड़ा ज्योतिषी, इतिहासका ज्ञाता और नैयायिक पंडित था भविष्यवाणी इसकी सही होती थी, नक्षत्र प्रश्न खूब बताता था—स इ १०५० म मरा

अलाउद्दीन खिलजी (दिल्लीका बादशाह) जब इसका चचा जलालुद्दीन खिलजी हिंदोस्तानम बादशाही करता था तब यह प्रयाग प्रदेशान्तर्गत कड़ाका हाकिम था और उसी समय इसने विन्ध्याचलपर्वतके पार जाकर शहर भिलसाको लूटाया। इसके बाद बुंदेलखण्ड तथा मालवाके हिंदू राजाओंको परास्त करके दक्षिण देशान्तर्गत महाराष्ट्र राज्यकी राजधानी देवगिरिपर चढ़ाई की और बहुतसा माल असबाब लूटकर प्रयागको आया और अपने चचाको मारकर दिल्लीकी गद्दीपर बैठा और स ई १२०५ से १३१५ तक राज्य किया। स.इ १२९७ म गुजरात, १३०० मे रणथम्भोर और १३०३ में चित्तौड़ विजय किया, अनेक दफे मुँगलोंको परास्त किया और अपने भतीजाओंको जिन्होंने इसके समयमें उपद्रव किया आँखें निकलवाकर मरवाडाला। फिर स ई १३०३ से १३०६ तक दक्षिण-देशपर अपना अधिकार बढानेमे लगारहा। चित्तौड़ विजय करनेके अवसरपर वहांकी महारानी पद्मिनी १३००० क्षत्रानियां सहित प्रतिष्ठा बचानेके लिये अग्निम जलकर मरगई और क्षत्री लोग कटते काटते मेवाड़की पहाड़की ओर भागगये। दिल्लीके खिलजी वंशोत्पन्न बाद

शाहोंमें ये सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ और मुसल्मान बादशाहोंमें प्रथम इसी- ने दक्षिणदेश विजय किया–स ई १३१५ में इसके सेनापति मलिककाफूरने विष खिलाकर इसे मारडाला

अलावर्दीखाँ (बङ्गालका अन्तिम नव्वाब)–स ई १७४० म गद्दीपर बैठा मुर्शिदाबाद इसकी राजधानी थी–अत्यंत क्रोधीथा पर राजकाज सावधानीसे करताथा–इसके समयमें मरहठा सवारोंने बङ्गालको लूटना आरंभ किया यह देख नव्वाबने स ई १७४२ में कलकत्तेके गिर्द एक खाई खुदवाई जो आजतक "मरहठोंकी खाइ" के नामसे प्रसिद्ध है–स ई १७५६ म इसके मरनेपर इसका पौत्र सिराजुद्दौला नव्वाब हुआ जो एकही वर्ष पीछे पलासीकी लडाईमें अपना मुल्क अङ्गरेजोंको दे बैठा

अलेग्जेंडर दी ग्रेट महाराजा यूनान (Alexander the great Emperor of greece) बादशाह फिलिपके घर स ई से ३५६ वर्ष पूर्व पैदा हुआ। इसको अपनी मातासे बडा प्रेमथा,यहांतक कि एकदफे माताकी भारसे पितासे अप्रसन्न होगया था। हकीम अरस्तूने इसको अनेक प्रकारकी विद्या पढाइ थी, यद्यपि होमरकी रची "इलियड" नामक पुस्तक बहुधा पढा करता था। बाल्यावस्थासेंही बडा पराक्रमी, साहसी, शूरवीर और होनहार मालूम देता था, जब इसका बाप कोई देश विजय करता था तब यह कहता था कि यदि पिता सब देश विजयकर लगे सो मैं क्या करूंगा। २० वर्षकी उम्रमें पिताके देहांत होनेपर राज्यसिंहासनपर बैठा और निज पिताके शत्रुओंको परास्त करके थोडेही दिनोंमें सब यूनानदेशपर अधिकार जमा लिया। २ वर्ष पीछे पिताके पुराने शत्रु दाराशाह यूनानपर ३५ हजार सेना लेकर चढगया, दाराने ५ लाख फौजसे सामना किया, ३ दफे लडाई हुई जिसमें दाराही हारा और तीसरी दफे अपने ही सायियोंके हाथसे मारागया, सिकंदरने दाराके मृतक शरीरपर आकर शोक किया,मारनेवाले नमकहरामोंको सजादी,मुल्क और मालपर अधिकार कर लिया, उसकी बेटी रौशनकसे विवाहकर लिया, उसकी बेगमोंके रहने बहाल रक्खे, तमाम मुल्कको अपने न्याय और सुप्रबंधसे सुखीकिया और प्रजाके धर्ममें किसी प्रकारकी बाधा न दी। पश्चात् मुल्कशामके दमिश्क आदि अनेक शहर विजय किये फिर मिश्रदेश जीतकर "अलेग्जेंडरिया" नामक शहर बसाया और तुर्किस्तानके सूबे बुखारा तथा रूम और अरब इत्यादि देशोंको विजय किया स ई से ३२७ वर्ष पहिले हिंदोस्तानपर चढाइ की और पंजाबके राजा पोरसको परास्त किया पर

उसकी चातुरी और वीरतासे प्रसन्न होकर उसका मुल्क उसीको देदिया इसकेबाद अलेग्जेंडर ईरानकी तरफ लौटा, रास्तेमे अनेक कठिनाई झेली, फौजमें बीमारी फैल गई, केवल चौथियाई फौज जीती ईरान पहुँची। अंतमें सिकंदरने शहिर बाबुलकी तरफ धावा किया पर रास्तेहीमें ३२ वर्षकी उम्रमें ज्वरसे पीड़ित हो परलोकगामी हुआ मृतक शरीर सोनेके ताबूतमें बंदकरके यूनान भेजागया। इटेली, मिश्र, साइबीरिया, आइबीरिया, कार्थेज, सिकालिया इत्यादिके राजदूत साथ थे। अभागिनी माताके शोकका जिससे सिकंदरको इतना प्रेम था कुछ हाल न पूछो। सिकंदरने थोड़ीसी उम्रमें घरसे निकलकर इसने देश जीते और जगत् विजयी कहलाया, जिसने सीस झुकाया उसे निहालकर दिया, जिसने सीस उठाया उसे खाकमें मिला दिया, जिस देशको विजय किया वहांके धर्मकी प्रतिष्ठा की, प्रजाको सुख चैन दिया और विद्वानोंका सत्कार किया। कहि मराथा कि "मेरे हाथ ताबूतसे बाहिर निकाल देना ताकि लोग जानें कि नकुछ लाया था नकुछ लेगया"। उसके सेनापतियों और रिस्तेदारोंने सब राज्य आपसमें बांटलिया क्यूंकि अपुत्र मराथा सिकंदर आज़म तथा शकेंद्र इसीको कहते हैं

अश्वत्थामा (द्रोणाचार्य्यका पुत्र) कौरवोंकी फौजका सेनापति था इसने पंजाबके राजा द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नको महाभारतकी लड़ाईमें मारडाला क्योंकि धृष्टद्युम्नने इसके पिताको वध किया था पश्चात् इसने द्रुपदके दूसरे पुत्र शिखण्डीको मारा और द्रौपदीके पांचों पुत्रोंका भी सिर काटा जब पाण्डवोंको अपने पुत्रोंके मारेजानेकी खबर मिली तब उन्होंने अश्वत्थामासे वह अमोल मणि छीनली जो वह सदैव अपने पास रखता था पश्चात् इस मणिको युधिष्ठिरने अपने ताजमें जड़वालिया अश्वत्थामा उन १० मनुष्योंमेंसे था जो महाभारतकी लड़ाईके बाद जीते बचे थे अनेकोंकी राय है कि यही अमोलमणि अब "कोहनूरहीरा" के नामसे प्रसिद्ध है और आज दिन महारानी अंग्रेजोंके मुकुटम लगी है

अश्वलायन (शौनकऋषिके शिष्य)–ऋग्वेदके श्रौत सूत्र १२ अध्यायमें इन्होंने रचे थे– श्रौत सूत्रोंमें अनेक प्रकारके यज्ञ करानेकी रीतियें लिखी हैं। ऋग्वेदके गृह्यसूत्रभी इन्होंने बनाए थे और इन्होंने तथा इनके गुरुने मिलकर ऐतरेय आरण्यकके २ अन्तिम अध्याय भी लिखे थे

अस्फादियार (पहिलवान) ये ईरानकेबादशाह गुस्तास्पका बेटा तथा कैसरे रूमका दौहित्र बड़ा पहिलवान था इसने रुस्तम पहिलवानको मल्ल युद्धमें पछाड़ा था परंतु रुस्तमने इसे चालाकीसे परास्त करके मारडाला अंतसमय इसने रुस्तमसे अपने पुत्र बहिमनको शिक्षा देनेकी प्रार्थनाकी एवं रुस्तमने बहिमनको सैनिकविद्या भलेप्रकार सिखाई गुस्तास्पके मरनेके बाद बहिमन

ईरानकी गद्दीपर बैठा और अपने बापका बदला रुस्तमसे बदले फरामुजको सूली ठकर लिया साधारण मतसे अस्फंदियार स ई से ३ हजार वर्ष पहिले हुआ पर फिरङ्गी विद्वान केवल ५७५ वर्ष पूर्व सन इस्वी इसका होना सिद्ध करते है इसने जरत्स्तका मत सबन इरानियोंकी सल्तनतमें फैलाया इरानियोंकी सल्तनत काबुलसे यूनानतक थी और उसमे अरब तथा तुर्किस्तान भी शामिल थे

अशोक (हिंदोस्थानका बौद्ध महाराजा) पटनामें राज्यसिंहासनपर बैठा ये पहिले वैष्णवमतको मानता था पश्चात बौद्धमत ग्रहण करलिया-स ई से २४४ वर्ष पूर्व इसने पटनामे तृतीय बौद्ध सभा रच धर्म संबंधी नियम बनाये और हिमालयसे लेकर कन्याकुमारी पर्यंत सब देशोंमें तथा शाम, मिस्र, मेसेडन इत्यादि प्रदेशोमे उपदेशक भेज प्रत्येक नगरमे स्तूप (बौद्धमंदिर) औषधालय, अनाथालय, धर्मशाला, अतिथ्यालय, पाठशाला इत्यादि जारीकी, और ४८००० पत्थरके खम्भापर तथा पहाडोंकी चट्टानो पर बौद्ध धर्मके १४ उपदेश हिन्दुस्थान के सब प्रान्तोमे अङ्कित कराये अपने भाई महेन्द्राचार्यको स ई से २४२ वर्ष पूर्व लंकामे भेजकर बौद्धधर्मका प्रचार कराया अशोककी मित्रता एन्टियोकस, टालमी इत्यादि यूनानके ५ राजाओसे थी इसके समयमे बौद्धमतकी अत्यंत उन्नति हुई इसके पिता बिन्दुसारके १६ रानियोसे १०१ पुत्र थे अशोकने गद्दीपर बैठकर अपने सहोदर तिष्य नामक को छोड़कर सब भाइयोंको मरवाडाला-३६वर्ष राज्यकरके परमधामको सिधारा य हिन्दुस्थानका चक्रवर्ती राजा था

अहिमदशाह अब्दाली (काबुल कंधारकी सल्तनतका मूल स्थापन कर्ता) अफगानोकी कौम अब्दाली या दुर्रानीका सर्दार था-पहिले कुजलबाश नादिरशाहका कोषाध्यक्ष रहा और दिल्लीकी लूटके समय उसके साथ था- नादिरशाहके मरनेपर इसने काबुल कंधारके सूबो को निजअधिकारमे करके बादशाहका खिताब धारण किया पश्चात इसने हिंदुस्थानपर चढाइयां की-पहिले हमलेमे इसको परास्त होकर लौटना पडा परंतु वर्ष बाद स ई १७४८ में दूसरी दफे चढाईकी और दिल्लीके बादशाह अहिमदशाह मुगलको परास्त करके पंजाब छीन लिया-स ई १७५७ में दिल्ली के बादशाह आलमगीर द्वितीयने जब पंजाबपर हाथ फेरने शुरू किये तब इसने फिर चढाईकी दिल्लीको लूटा और पंजाबको पुनः विजयकरके कंधार को लौटगया- स ई १७६१ म जब रघुनाथराय पेशवाने पंजाबपर चढाईकी तब अब्दालीको फिर हिंदुस्तान आना पडा, पानीपतके मैदानमे मरहठोंका पराजय हुआ-अतन्तर सिक्खोंसे कईदफे लडाई हुई जिसमे सर्वदा अब्दालीकी जीता- इसका राज्य पूर्वमे पंजाबसे पश्चिममे हिराततक और दक्षिणमे अरबकी खाड़ीसे उत्तरमे कश्मीरतक था- स ई १७२४ म उत्पन्न हुआ और १७७३ म मरा

अहिल्याबाई (इन्दौरकी प्रसिद्ध महारानी) इन्दौर राज्यके मूल स्थापन कर्ता मल्हारराव हुल्करकी पुत्रवधूथी २० वर्षकी अवस्थामें विधवा होगई थी और सती होना चाहती थी पर ससुर इत्यादि वृद्धजनोंके बहुत समझानेपर रुकी– इसके १ बेटा और १ बेटी थी– स ई १७६६ में मल्हाररावके मरनेपर इसका पुत्र मालीराव गद्दीपर बैठा पर ९ ही महीने बाद मरगया– राज्यका उत्तराधिकारी न होनेके कारण अहिल्याको स्वयंराजकाज सम्हालना पड़ा राजपुरोहितने दूसरा पुत्र लेनेको बहुत समझाया पर महारानीने रोकर यह उत्तर दिया कि "एक राजाकी मैं रानी थी और दूसरेकी माता यदि ईश्वरको मल्हाररावका वंश चलानाही मजूर होता तो मेरेपति और पुत्र क्या नष्ट होजाते" इसपर स्वार्थी पुरोहितने आसपासके राजाओंको उकसाया पर किसीका साध महारानीसे लड़नेका न पड़ा–पश्चात महारानीने तुकोजीराव हुल्कर अपने एक नातेदारको सेनापति नियत करके अनेक काम सौंपे जो स्त्री होनेके कारण खुद नहीं करसकती थी–भरे दर्बारमें बैठकर प्रजाका न्याय करती थी, भूखोंको खाना और कपड़ा बँटवाती थी, चिड़ियोंके लिये खेत जुड़वादेती थी, नदियाकी मछलियाको चुगानेके लिये आदमी नौकर थे, चिकित्सक लोग नियतथे जो घर २ गांव २ रोग करते थे, प्रजागण उसको माताके समान समझतेथे, तुकोजी सेनापति उससे मातुश्री कहकर बोलतेथे और ईश्वरको चीन्ह कर राजकाज करतेथे– विधवा होकर उसने रंगीन वस्त्र कभी नहीं पहिना न सिवाय एक मालाके कोई आभूषण धारण किया–गर्वका ऐश मात्रभी उसमें न था और खुशामद पसंद न थी–कुछ अधिक सुंदरी न होने परभी चेहरा धर्मके तेजसे दीप्तथा– इन्दौरका नगर उसीका बसाया हुआ है–काशीमें विश्वेश्वर नाथका मंदिर उसने बनवायाथा काशी, प्रयागपुरी, द्वारिका, सेतबंदरामेश्वर, केदारनाथ इत्यादि तीर्थ स्थलों में धर्मशाला बनवाईथी और सदाव्रत बैठाये थे–कूप, तड़ाग, पुल, घाट इत्यादि भी अनेक बनवाये थे स ई १७९५ में ३० वर्ष धर्म राज्य करके ६० वर्षकी उम्रमें परलोकको सिधारी–भारत में इस सहस्राब्दीके बीच ऐसी सुप्रबंधकर्ता, धार्मिक और उदार हृदयकी दूसरी नहीं हुई–उसका समय ईश्वराराधन राज्य प्रबंध और प्रजापालनके कामोंमें विभागित था–मैल्कम साहिब स्वरचित इतिहासमें अहिल्याके विषयमें लिखते हैं कि " निस्संदेह यह परम आश्चर्य है कि स्त्री होकर ऐसी गंभीर और सांसारिक विषय भोगोंसे ऐसी विरक्तहो अपने धर्म और मतकी ऐसी पक्कीहो और फिर अन्य मतवालेको तुच्छ न जानतीहो और किसीको अपने २ नीतिधर्मानुसार चलनेकी कुछ रोकटोक न करती हो, जिसके मत संबंधी विश्वास ऐसे अप्रमाणिक और तुच्छहों पर उसको जगत उपकार और दूसरा को संतोष दिलानेके अतिरिक्त और कुछ चिन्ता नहो, एक स्वतंत्र अध्यक्षहो और फिर उसमें ऐसी विनय और दीनताहो, ईश्वरका भय करके धामकर्तीहो और दूसरोंके दोषोंको छिपाती हो इत्यादि "

आदम (Adam) महात्मा इसासे ४ हजार वर्ष पूर्व हुये-इनसे और हव्वा (Eve) नाम स्त्रीसे इसाइ और मुसल्मानी मतोंके अनुसार सृष्टि उत्पन्न हुई थी जो नूहके तूफान में इसासे १६५६ वर्ष पूर्व डूबकर नष्ट होगई

आनन्दघन (भाषाकवि) जातिके कायस्थ मुहम्मदशाह बादशाह दिल्लीके दर्बारमें मुंशीथे-गानविद्या और कविता दोनो में अति कुशल थे-सच्चे प्रेमी थे और कविता इनकी सूर्यके समान भासमान है-अंत समय घरबार छोड श्री वृंदावन वास करते थे-कृष्णगढके राजा जसवंतसिंह उपनाम नागरीदासजीसे इनका बडा प्रेमथा-फारसी, अर्बी, संस्कृत इत्यादिके पूर्ण ज्ञाता थे और दिल्लीके रहने वाले थे-इनकी फुटकर काव्य बहुत मिलती है-नादिरशाहने जब स. इ. १७५७ में मथुरा लूटी तब उसी मारकेमें यह भी मारेगये

आनन्दगिरि (प्रसिद्धवेदांती पंडित) सन् इस्वीकी दशवीं शताब्दी में हुये-स्वामी शंकराचार्य इनके गुरुथे-शंकर दिग्विजय नाम ग्रंथ तथा भगवद्गीतापर आनंदगिरि नाम तिलक इन्होंका रचा हुआहै

आनन्दवर्धनाचार्य (संस्कृत कवि) इन्होने दो भागों में "ध्वन्यालोक" ग्रंथ रचा है-कारिकारूप भागकानाम "ध्वनि" है और वृत्तिरूप भागका नाम "आलोक" है-राजतरङ्गिणीसे विदित होता है कि ये विक्रमकी १० वीं शताब्दीमें कश्मीरके राजा अवन्ति वर्माके दर्बारमें थे-तिन्नस्य ग्रंथ इन्होंने रचेहैं-अर्जी शतक, विषम बाणलीला, प्राकृतअर्जुनचरित्र, और विनिश्चय टीका-राजशेखर कविने सूक्तमुक्तावलीके इस श्लोकमें आनन्दवर्धनाचार्यकी प्रशंसाकी है-

श्लो०-ध्वनिनातिगभीरेण काव्यतत्त्वनिवेशिना ।
आनन्दवर्धन कस्य नासीदानन्दवर्धन: ॥

आपस्तंब ऋषि-इन्होने प्राचीन कालमें होकर कृष्ण यजुर्वेदके कल्पसूत्र जिनमें श्रौतसूत्र धर्मसूत्र और गृह्यसूत्र शामिल है ३० अध्यायमें रचे-३० वें अध्यायमें शुल्व सूत्र है जिनमें रेखागणितका वर्णन हुआ है-डॉक्टरथीबो (Dr Thibaut) ने शुल्व सूत्रका अनुवाद अङ्गरेजीमें करके प्रकाश किया है कि सबसे प्रथम रेखागणितके मुख्य नियम इसी ऋषीने आविष्कार किये थे-फीसागोरस यूनानी हकीमने "शुल्वसूत्र" भारत वर्ष में आकर पढ़े और उनका प्रचार निज देशमें जाकर किया-पश्चात् युक्लिडन इन्हीं शुल्वसूत्रोंको आधारकर अपने भाषकी पुस्तक रची-डॉक्टर बुल्हर साहिब (Dr Bulher) के मतानुसार ये ऋषि स. इ. से प्राय ८०० वर्ष पूर्व दक्षिण देशमें कृष्णा नदीके समीप रहतेथे जिसको अब अमरावती कहते हैं

आर्करायट (Arkwright) स इ १७७४ म इङ्गलैण्डमें जन्में। पहिले हजामत बनानेका पेशा करते थे पश्चात कलाकी देखभालम इन्होंने चित्त लगाया और अंतमें कपड़ा बुनेकी कल तैय्यारकी– वास्तवम कल सौ एक औरही आदमीने तैय्यार की थी और उसने इसविचारसे नहीं चलाई थी कि, लोगोंके उद्यमको हानि होगी– आर्करायटने उसी कलको सुधारकर पूर्ण रीतिसे बनाया और लोगोंको सबसे कपड़ा बुनकर दिखाया–

आर्यभट– (ज्योतिषी) बीज गणित तथा ज्योतिष शास्त्रके अनेक सूक्ष्म विषयोंका अनुभव पहिले पहिले इन्हींको हुआ– इन्होंने गणित तथा ज्योतिष शास्त्रमें ऐसी २ बातें दरियाफ्त कीं जो अन्य देशवासियोंको स ई की १६ वीं शताब्दीसे पूर्व नहीं मालूम हुई ये राजा युधिष्ठिरके सम्वतसे ज्योतिष एगा तेथे निम्नरूप वृत्तांत इन्हींके एक ग्रंथसे मिला है– आर्यभट वि सं ५३३ म पैदा हुए और कुसुमपुर (पटना) म रहेतेथे– नीचे लिखे ग्रंथ इनके बनाये हैं– आर्यभटीय तंत्र (आर्यासिद्धांत) ४ अध्यायमें, बीज गणित, आर्य्य देश रीति सूत्र, आर्य्य अष्टशत, सूर्य्य सिद्धांतकी टीका–

आलमगीर–देखो औरंगज़ेब

आल्हा (प्रसिद्ध सावन्त) महोबा (बुंदेलखण्ड) वासी जगनायक कविने आल्हखण्डग्रन्थमें आल्हा और उसके भाई ऊदल का यशगाया है ये बड़े योद्धा व्यूह रचनाम दक्ष थे इनका बाप यशराज महोबेके राजा परमाल (परमार्दिदेव) की फौजका सावंत था– पिताका देहांत होजानेके कारण आल्हा ऊदल दोनों भाइयोंका पालनपोषण और शिक्षा राजा परमालके दर्बारमें हुई थी– प्राय ६५ लड़ाइयोंमें इन्होंने परमालकी तरफसे लड़कर शत्रुओंको पराजय किया था–५२ गढ़ोंके राजे आल्हा ऊदलसे इस प्रकार डरते थे जैसे नेपोलियन बोना पार्टसे यूरूपीय राजे– इन दोनों भाई योंने महाराज पृथ्वीराजको परास्तकरके उनकी बेटी बेलाका विवाह अपने स्वामी राजा परमालके पुत्र ब्रह्मा से कराया अंतम बेलाके गौनेकी बिदापर पृथ्वीराज और परमालमें घोर युद्ध हुआ जिसमें परमालका सर्वनाश होगया केवल आल्हा जीता बचा पर विरक्त होकर सुंदरबनको चला गया

स ई के १२ वे शतक म हुये–

आसफुद्दौला (नवाब वज़ीर अवध)

निज पिता शुजा उद्दौलाके बाद स ई १७७५ मे अवधकी गद्दी पर बैठे

फैजाबादके बजाय लखनऊमें अपनी राजधानी कायम की–लखनऊमे इनका बनवाया इमामबाडा अबतक मौजूद है और देखने लायक है–यह इमामबाडा उसवक्त बनवाया गया था जब लखनऊमें बड़ा अकाल पड़ा था– ये बड़े दयालू और दानी थे लखनऊके दुकानदार अबतक इनका नाम लेकर दुकान खोलते हैं सूबे अवधमें प्रसिद्ध है कि ' जिसको न दे मौला उसको दे आसफुद्दौला " इन्होंने गुणीजनोंका सत्कार किया एक दीवान उर्दू तथा फार्सीमें बनाया–बहुत रूपया खर्चके एक कुतुबखाना संग्रह किया। स ई १७९७ में मरे और अपने इमामबाड़ेमें दफन हुए इनके कोई औलाद न थी एवं ब्रिटिश गवर्नमेंटने इनके भाई सआदत अलीखांको लखनऊका नवाब बनाया–

औरङ्गजेब (मुगलबादशाह दिल्ली) निज पिता शाहजहांको कैद करके और अपने भाइयोंको वध करके स ई १६५९ में दिल्लीकी गद्दीपर बैठा ये अपने बापको जो आगरेके किलेमें कैद था केवल एकही प्रकारका खाना और गरम पानी पीनेके लिये देता था ये बड़ा कृतघ्नी था और सबकी तरफसे शक रखता था इसने हिंदुओंपर "जजिया" नामक कर लगाया और मथुरा, अयोध्या, बनारस इत्यादिमें अनेक मन्दिर तुड़वाये वास्तवमें हिंदोस्तानसे देशका जहां अनेक जातियोंके लोग रहिते हैं, य बादशाह होनेके योग्य न था इसके सेनापति २५ वर्षतक दक्षिणदेश जीतनेमें लगेरहे, पर कुछ करनेमें समर्थ न हुये, मरहटोंने इसे बड़ी तकलीफ दे रक्खीथी–शिवाजी मरहट्टावीरके मरनेपर औरंगजेबको ६५ वर्षकी उम्रमें दक्षिणविजय करनेके लिये खुद जानेका ख्याल हुआ और २५ वर्ष लड़कर इसने दक्षिणदेशवर्ती गोलकुंडा, बीजापुर, बिदर, बरार और अहमदनगरकी रियासतोंको परास्त करके अपनी सल्तनतमें मिलाया यदि बाप भाईयोंको मार डालने, सबकी तरफसे धोका रखने कृतघ्नी होने हिंदुओंसे द्वेष रखने और उनके मंदिर तुड़वानेका घोर कलङ्क इसके माथे न होता तो इसका चाल चलन दोषरहित समझा जाता, क्योंकि टोपियोंके सीने और क़ुरानोंके लिखनेसे जो आमदनी होती थी वही इसके निजखर्चमें आती थी इसका दूसरा नाम आलमगीर भी प्रसिद्ध है

स ई १६१७ में पैदा हुआ

स ई १७०७ में मरा

औवटपंडित (यजुर्वेदभाष्यकार) कश्मीरदेशवासी जैय्यट उपाध्याय के पुत्र थे इनके बड़े भाई मम्मटने इनको विद्या पढ़ाईथी–व्याकरण भाष्यकार कैय्यटभी इनके सहोदर थे विक्रमकी ११ वीं शताब्दीके अंतमें इनका जन्म हुआ।

इब्राहीमअद्हम–इनके बाप मसऊद गृजनीके अष्टम सर्दार (राजा) थे बल्ख इनकी राजधानी थी. पिताके बाद कुछ दिनतक इनके भाई फर्रुखजाद

ने राज्य किया बादशो ये गद्दीपर बैठे ये बडे न्यायकारी और ईश्वरभक्त थे इन्होंने हिन्दोस्तानकी पश्चिमी सीमापर अनेकबार चढाई करके विजय प्राप्त की इसीकारण इनका नाम अदहम अर्थात् विजयीपडा ४२ वर्ष राज्य किया और अनेक चिकित्सालय, और मसजिदें बनवाई । कई शहर बसाये गुणी जनोका सत्कार किया कहितेहैं कि, स्वप्नमें इन्होंने एकआदमी छतपरचढेहुये कुछ ढूंढते देखा–पूछनेपर उसने कहा कि मेरा ऊंट खोगयाहै । इन्होंने कहा अरे मूर्ख! छतपर ऊंट कहां–इसके उत्तरमे उसने कहा"अरे मूर्ख! राज्य करते परमेश्वर कहां" उसीदिनसे इबराहीम राजपाट छोड फकीर होगये–प्राय ५ वर्ष फकीर रहिकर स ई ८८०में जब इन की ११० वर्षकी उम्र थी परमधामको सिधारे.

इबराहीम लोंदी (दिल्लीकाबादशाह) निज पिता सिकन्दरलोदीके बाद स ई १५१५ में राज्य सिंहासनपर बैठा इसके चित्तमें सबकी तरफसे शक रह आया सर्दार और सूबेदार इससे फिरे हुये थे और इसके बर्बाद करनेकी फिक्रमें थे पहिले तो सूबेदारलोग उपद्रव उठाते रहे और परास्त होते रहे–अंतमें दौलत खां सूबेदार मुल्तानने बागीहोकर बाबरको काबुलसे बुलाया–बाबर और इब्राहीमका पानीपतके मैदानमे स ई १५२६ मे मुकाबलाहुआ और इबराहीम लड कर मारागया

इस्माईलयोगी–कामरूप(आसाम)का रहिनेवाला तंत्रविद्याका प्रसिद्ध सिद्ध हुआहै–स ई की १७ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें इसका होना सिद्ध है क्योंकि इसी समयमें होनेवाले सिक्खोंके अन्तिमगुरू गोविन्दसिंहजीसे इसके साथी लोनिया साधू (लोनाचमारी) की मुलाकात हुइथी तंत्रविद्याके प्रयोगसे इसने एक विचित्र फूलबाग लगायाथा

इक्ष्वाकु–अयोध्याके सूर्य्यवंशी राजा इन्होंके नामसे इक्ष्वाकुवंशी कहिलाते हैं–ये वैवस्वत मनुके पुत्र और सूर्यके पौत्र बडे प्रभावशाली और पराक्रमी थे–इनके १००पुत्र थे जिनमेंसे सबसे बडेका नाम विकुक्षी था–निमीभी इनका एक पुत्र था जिसके नामसे मिथिलाका राजवंश जिसमें महाराज जनक हुये प्रसिद्ध है इक्ष्वाकुके दर्बारमें उक्त ऋषिकी बडी प्रतिष्ठा थी–महाराज रामचंद्र इनकी ५७ वीं पीढीमें भारतके चक्रवर्ती राजा हुये इक्ष्वाकुने अयोध्या नगरी बसाई थी

ईश्वरचंद्र विद्यासागर सी आई ई ये पश्चिमी मेदनीपुर (बंगाल) के वीरसिंहनामक ग्राममें ठाकुरदास बंद्योपाध्याय एक साधारण ब्राह्मणके घर स ई १८२० में पैदा हुये–बचपनहीसे इनका चित्त पठन पाठनमें खूब लगता था–स्वभाव अत्यंत दयालु और परिश्रमी था–स ई १८२९ में पिताने इनको संस्कृतकालिज कलकत्तामें पढनेकेलिये बिठलाया रातभर पढाकरते थे केवल २ घंटे सोते थे, नींद आती तब सरसोंका तेल आंखोंमें लगाते थे–कईदफे सो

सौ रुपयेका इनाम पायाथा–स्वाध्यायियों तथा अन्य मनुष्योंकी यथाशक्ति तन मन धनसे सहायता करतेथे एवं इनका नाम दयासागर पड़ गयाथा–

सन् ई. १८४१में संस्कृतकालिजकी शिक्षा संपूर्ण करके विद्यासागरकी उपाधि पाई और फोर्ट विलियम कालिज कलकत्तामें ५०) रु. मासिकपर नौकर हो गये हिंदी तथा अङ्गरेजी भाषाभी अपने परिश्रमी स्वभावसे शीघ्रही सीखली–कहते हैं तनख्वाह ५००) रु. होगई और प्राय ५००) रु. मासिककी आमदनी स्वरचित पुस्तकोंसेभी थी। विद्यासागर इस सब आमदनीको परोपकारमें लगा देतेथे–सन् ई. १८६६ के अकालमें जैसा दान उन्होंने किया वैसा राजाओंसेभी दुर्लभ है,अनेक भद्रपुरुषोंकी विधवाओंका पालनपोषण करतेथे–अनेक सुपात्रोंके मकान हजारों रुपया ऋणका चुकाकर नीलाम होनेसे बचाये थे अनेक अनाथ रोगियोंको निजगृहमें लाकर टहिलकी और चंगा किया था बंगालमें उनके उद्योगसे सैकड़ों स्कूल और शफाखाने जारी हुयेथे–एक छापाखानाभी जारी कियाथा जिसमें प्राचीन ग्रंथ शोध २ कर छापेजातेथे हिंदूकालिज कलकत्ता उन्हींके उद्योगसे खुला और बहु काल तक उसका खर्च वेही बर्दाश्त करते रहे–

कुलीनब्राह्मणों और क्षत्रियोंमेंसे अधिक विवाह करनेकी कुरीति उन्हींके उद्योगसे मिटी बालविधवाओंका दुःख दूर कर विधवाविवाह शास्त्रोक्त सिद्ध करने तथा जारी करनेमें बड़ा उद्योग किया गवर्नमेंटसे उक्त विषयपर कन्सेन्टबिल पास कराया अनेक विधवाविवाह अपने सामने कराए, निजपुत्रका विवाहभी एक विधवासे करादिया,अनेक पुस्तकभी विधवाविवाह विषयक बनाय छापीं–ऐसी २ सच्ची देशहितकारिणी पर समाज विरुद्ध बातें चलानेसे उनके बहुत शत्रु होगये और प्राय ५० हजार रुपयेका ऋण होगया पर शनैःशनैः सब ऋण चुकादिया व जब लार्ड साहिबसे मिलनेको जाते तब देशी कपड़ेकी चादर ओढ़ते और चट्टी जूता पहिनकर कलकत्ता युनीवर्सिटी तथा सिविल सर्विस परीक्षाकी कमेटी व धर्मसभाके मेम्बर थे, गवर्नमेंटका जब कोई कानून हिंदु भाग विषयमें बनाया जाता था तब विद्यासागरजीकीराय अवश्यही पूछी जाती

ईसप–(Aesop) ये अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता, परमचतुर और महत्वनयुक्त स्वभावका था एसियाई रूममें पैदा हुआ, और बादको यूनाने जाबसा था–देख नेमें कुरूप कुबड़ा और पस्तकद था प्रथम किसीके यहां गुलाम था पश्चात् निज योग्यताके कारण बादशाहके दबारमें पहुँच मतिष्ठाका भागी हुआ था स ई से प्राय· १००० पूव इसका समय है इसका और पृथ्वीप्रसिद्ध हकीम लुकमानका वृत्तांत बहुत कुछ मिलता है सम्भवत ये दोनों एकहीहों–ये उसशिक्षाका आचार्य गिनाजाताहै जिसका व्यवहार किस्सा कहानियों द्वारा कियागया है, पशु, पक्षी, वनस्पति, धातु इत्यादिको बोलनेवाला फर्ज करके उनकी जबानसे अपना मतलब अदा किया है इसपकी शिक्षाका अभिप्राय यह था कि, मनुष्यको ईश्वरकी सृष्टिकी सब छोटी बड़ी चीजोंको गौरसे देखकर उपदेश लेना चाहिये, क्योंकि पशुओंमें अनेक स्वभाव मनुष्यको बुराई भलाईम भेद बतलाते हैं, जैसे कुत्तेकी स्वामिभक्ति, शेरकी वीरता, लोमड़ीकी मक्कारी, और ऊंटकी सहन शीलता इत्यादि ईसपकी रची कहानियोंम लालित्य नहीं है पर वे शिक्षासम्बंधी उपदेशसे भरपूर हैं इन कहानियोंके पढनेसे मनुष्यको अनेक अमूल्य उपदेश मिलते हैं और बच्चोंको इनका पढाना परम लाभकारी है और इसी कारण इनका व्यवहार सब मुल्कों और कौमोंमें पाया जाता है अफलातूनने लिखा है कि, सुकरातने इन्ही कहानियोंकी पद्यरचना की थी–

ईसामसीह (Lord Jesus Christ) भूमंडलके धर्म प्रचारकोंमें गौतम बुद्धके बाद आपहीका दर्जा है यूरूप और अमरिकाके रहिनेवाले आपके मतानुगामी हैं और एशिया, आफरिका इत्यादिमें भी आपके मत पर चलने वाले करोड़ों हैं प्राय· अबसे १९०० वष पहिले आप एशियाई रूमके सूबे ज्यूडामें हजरत दाऊदके वंशमें बीबी मिरियमके पेटसे पैदा हुये, उस समय भूमंडलके पश्चिम विभागके रहिनेवाले मूसाके मतानुगामी यहूदी थे जुरूसलम में यहूदियोंका एक बड़ा मंदिर था,जहां साल भरमें एक दफे बड़ा मेला होताथा मसीहने १२ वर्षकी उमरमें मेलेके बीच इस मंदिरके पुजारियोंको परास्त किया, पश्चात् मसीहने निजधमका उपदेश किया थोड़ेही दिनाम १२ शिष्य होगये जिनको चारों तरफ उपदेशकरणार्थ भेजा–मसीहने अनेक आश्चर्यजनक बातें कीं अंधोंको नेत्र दिये, मुर्दोंको जिन्दा किया कुष्टियों को चंगा किया५ हजार आदमियोंकी दावत एक सुराख से की,समुद्रके तूफानको रोका पानी पर पैदल कई कोसतक चले, सूर्य्यकीसी चमक दिखलाई।३३ वर्षकी अवस्थामें मसीह एक दिन शिष्योंसहित जुरूसलम गये, वहांके यहूदी पुजारीने, जो इनसे द्वेष रखताथा इनको पकड़वाकर मुकद्दमा कायम कराद्रिया और सूली दिलवादी जुरूसलममें इनकी कबर है और ईसाइयोंकी धम पुस्तक बाइबिलमें इनके अनेक उपदेश हैं

सौ रुपयेका इनाम पायाथा–अध्यापकों तथा अन्य मनुष्योंकी यथाशक्ति तन मन धनसे सहायता करतेथे एवं इनका नाम कृपासागर पड़ गयाथा–

स. ई. १८४१में संस्कृतकालिजकी शिक्षा संपूर्ण करके विद्यासागरकी उपाधि पाई और फोर्ट विलियम कालिज कलकत्तामें ५०) रु मासिकपर नौकर हो गये हिंदी तथा अङ्गरेजी भाषाभी अपने परिश्रमी स्वभावसे शीघ्रही सीखली–बढ़ते २ तनख्वाह ५००) रु होगई और प्राय ५००) रु मासिककी आमदनी स्वरचित पुस्तकोंसेभी थी। विद्यासागर इस सब आमदनीको परोपकारमें लगा देतेथे–स. ई. १८६६ के अकालमें जैसा दान उन्होंने किया वैसा राजाओंकोभी दुर्लभ है,अनेक भद्रपुरुषोंकी विधवाओंका पालनपोषण करतेथे–अनेक सुपात्रोंके मकान हजारों रुपया ऋणका चुकाकर नीलाम होनेसे बचाये थे अनेक अनाथ रोगियोंको निजगृहमें लाकर टहिलकी और चंगा किया था बंगालमें उनके उद्योगसे सैकड़ा स्कूल और शफाखाने जारी हुयेथे–एक छापाखानाभी जारी कियाथा जिसमें प्राचीन ग्रंथ शोध २ कर छपजातेथे हिंदूकालिज पटलडंगा उन्होंके उद्योगसे खुला और बहु काल तक उसका खर्च वेही बर्दाश्त करते रहे–

कुलीनब्राह्मणों और क्षत्रियोंमेंसे अधिक विवाह करनेकी कुरीति उन्हींके उद्योगसे मिटी बालविधवाओंका दुःख देख विधवाविवाह शास्त्रोक्त सिद्ध करने तथा जारी करनेमें बड़ा उद्योग किया गवर्नमेंटसे उक्त विषयपर कन्वेन्शनबिल पास कराया अनेक विधवाविवाह अपने सामने कराये, निजपुत्रका विवाहभी एक विधवासे करादिया,अनेक पुस्तकभी विधवाविवाह सिद्धकरणार्थ छापीं–एसी २ सच्ची देशहितकारिणीपर समाज विरुद्ध बात चलानेसे उनके सैकड़ा शत्रु होगये और प्राय ५० हजार रुपयेका ऋण होगया पर आत्मसमर्पणसे सब ऋण चुकादिया वे जब लाट साहिबसे मिलनेको जाते तब देशी कपड़ेकी चादर ओढ़ते और देशी जूता पहिनतेथे कलकत्ता यूनीवर्सिटी तथा सिविल सर्विस परीक्षाकी कमेटीके मेम्बर थे, गवर्नमेंटको जब कोई कानून हिंदुओंके विषयमें बनाना होता था तब विद्यासागरकी राय अवश्यही पूछी जाती थी स. ई. १८९१ में स्वर्गवासी हुये जिनलोगोंकी सहायता जीतेजी करतेथे उनके लिये अपने पीछेभी उत्तम प्रबंध दानपत्रद्वारा करगये हैं–दानपत्रमें १ हजार रुपया प्रतिमास बांटनेकी व्यवस्था है

विद्यासागरके मरनेसे अबतक बंगाली स्त्रियां शोकमय गीतोंमें गाती हैं

बङ्गलामें उनकी रची पुस्तकें ये हैं–वासुदेवचरित्र शकुन्तला नाटक वर्ण परिचय, कथामाला, बोधोदय, चरितावली आख्यानमञ्जरी जीवनचरित इत्यादि संस्कृत व्याकरणकी उपक्रमणिका और ऋजुपाठ ३ भागोंमें इन्हीं का बनाया हुआ है

ईसप–(Aesop) ये अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता, परमचतुर और प्रहसनयुक्त स्वभावका था एसियाइ रूममें पैदा हुआ, और बादको यूनाम आबसा था–देखनेमें कुरूप कुबडा और पस्तकद था प्रथम किसीके यहां गुलाम था पश्चात् निज योग्यताके कारण बादशाहके दर्बारमें पहुँच प्रतिष्ठाका भागी हुआ था स ई से प्राय १००० पूर्व इसका समय है इसका और पूर्व्वप्रसिद्ध हकीम लुकमानका वृत्तात बहुत कुछ मिलता है सम्भवत ये दोनों एकहीहों–ये उत्तशिक्षाका आचार्य गिनाजाताहै जिसका व्यवहार किस्सा कहानियों द्वारा कियागया है, पशु, पक्षी, वनस्पति, धातु इत्यादिको बोलनेवाला फर्ज करके उनकी जबानसे अपना मतलब अदा किया है इसपकी शिक्षाका अभिप्राय यह था कि, मनुष्यको ईश्वरकी सृष्टिकी सब छोटी बडी चीजोंको गौरसे देखकर उपदेश लेना चाहिये, क्योंकि पशुआके अनेक स्वभाव मनुष्यको बुराई भलाईमें भेद बतलाते हैं, जैसे कुत्तेकी स्वामिभक्ति, शेरकी वीरता, लोमडीकी मक्कारी, और ऊंटकी सहनशीलता इत्यादि ईसपकी रची कहानियोंमे लालित्य नहीं है पर वे शिक्षासम्पन्न भी उपदेशसे भरपूर हैं इन कहानियाके पढनेसे मनुष्यको अनेक अमूल्य उपदेश मिलते हैं और बच्चोंको इनका पढाना परम लाभकारी है और इसी कारण इनका व्यवहार सब मुल्कों और कौमोंमे पाया जाता है अफलातूनने लिखा है कि, सुकरातने इन्ही कहानियाकी पद्यरचना की थी–

ईसामसीह (Lord Jesus Christ) भूमंडलके धर्म प्रचारकोमें गौतम बुद्धके बाद आपहीका दर्जा है यूरूप और अमरीकाके रहिनेवाले आपके मतानुगामी हैं और एशिया, आफरिका इत्यादिमे भी आपके मत पर चलने वाले करोडों हैं प्राय अबसे १९०० वर्ष पहिले आप एशियाई रूमके सूबे ज्यूडाम हजरत दाऊदके वंशमें बीबी मिरियमके पेटसे पैदा हुये, उस समय भूमंडलके पश्चिम विभागके रहिनेवाले मूसाके मतानुगामी यहूदी थे जुरूसलममे यहूदियोंका एक बडा मंदिर था,जहां साल भरमे एक दफे बडा मेला होताथा मसीहने १२ वर्षकी उम्रमें मेलेके बीच इस मंदिरके पुजारियोंको परास्त किया, पश्चात् मसीहने निजधर्मका उपदेश किया थोडेही दिनोंमें १२ शिष्य होगये जिनको चारों तरफ उपदेशकरणार्थ भेजा–मसीहने अनेक आश्चर्यजनक बातें कीं अंधोंको नेत्र दिये, मुर्दोंको जिन्दा किया कुष्ठियों को चंगा किया५ हजार आदमियोंकी दावत एक खुराकसे की,समुद्रके तूफानको रोका पानी पर पैदल कई कोसतक चले, सूर्य्यकोसी समय दिखलाई । ३३ वर्षकी अवस्थामें मसीह एक दिन शिष्योंसहित जुरूसलम गये, वहांके यहूदी पुजारीने, जो इनसे द्वेष रखताथा इनको पकडवाकर मुकदमा कायम करादिया और सूली दिलवादी जुरूसलममें इनकी कबर है और ईसाइयोंकी धर्म पुस्तक बाइबिलमें इनके अनेक उपदेश हैं

उक्लैदस (Euclid) मिश्रदेशांतरगत अस्कन्दरिया नामक शहरमें स. ई. से ३०० वर्ष पूर्व जन्मा और निजनामका एक गणितग्रंथ रचकर जगत्प्रसिद्ध हुआ इसग्रंथमें वे सब साध्यभी शामिल हैं जिनको फीसागोरिस आदि विद्वानों ने इससे पहिले होकर प्रकट किया था ये अस्कन्दरियाके महाविद्यालयमें अध्यापक था और अस्कंदरिया इसके समयमें गणितशास्त्रका देश विद्यालय गिनाजाताथा स ई १७१८ म पंडितजगन्नाथने जयपुरके राजा जयसिंहसवाईके हुक्मसे उक्लैदसके १५ अध्यायका अनुवाद हिंदीभाषामें करके उसका नाम रेखागणित रक्खा- अस्कंदरियावासी प्रसिद्ध गणकटालमी उक्लैदसका शिष्य था डाक्टर थीबो साहिब (Dr Thibaut) ने आपस्तंबशुल्वसूत्रोंका अनुवाद अंगरेजीमें करके प्रकट कियाहै कि, यूनानीइतिहासमें फीसागोरिसने भारतमें आकर इनसूत्रोंको पढ़ा और फिर मिश्र तथा यूनानमें जाकर अनेकोंको इनकी शिक्षा दी-पश्चात् उक्लैदसने इन्हीं सत्यसूत्रोंके आशय पर निजनामकी पुस्तक रची।

उदयनाथकवींद्र (भाषाकवि) ग्राम बनपुरा (अंतरवेद) के रहिनेवाले थे भाषाकवि कालीदास त्रिवेदी इनके बाप थे कवि पूरहे इनके पुत्र थे-प्रथम बहुत दिनातक राजा हिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठीनरेशके यहां रहकर कविता करतरहे उससमय कवितामें अपना नाम उदयनाथ लिखतेथे पश्चात् उक्त राजा के नामसे "रसचंद्रोदय" ग्रंथ रचकर "कवींद्र" उपाधि पाई और तबहीसे या क्रम अपना नाम कवींद्र लिखा पश्चात् कवींद्रजी राजा गजसिंह जोधपुरनरेश के दरबारमें रहे और बादको रावबुद्धहाडाबूंदीनरेशके दबारमें आदर सत्कार सहित रहिकर काल व्यतीत किया।

वि स १८०४ मे विद्यमानथे

कवीग्राम जिला राय बरेली के रहिनेवाले कवींद्र त्रिवेदी दूसरे थे

उदयसिंह (राना चित्तौड़) वि सं १५९८में चित्तौड़की गद्दीपर बैठे-यद्यपि इनके बाप राना सांगाकी १० वर्षोंतककी लड़ाईयों राजकी पदवी ? थोड़ीही रहगईथी, पर फिरभी इनका प्रताप इतनाथा कि जब वि सं १६१६ में इन्होंने हाजीखाँ पठान पर चढ़ाई करी थी तब मेवाड़के मुतालिक मैरठे साथ बूंदी, बीकानेर ईडर, सोढ़ा, महेश, डूंगरपुर, बांसवाड़ा देवलिया, रामपुर इत्यादिके भनेक रावराज अपनी २ सेनासहित लड़नेको गये थे-पर जोधपुरके राव मालदेवसे बिगाड़ था, वहाँ १५०० सवारोंसहित सेनाकी सहायता सदजदीमें हाजीखाँसे मिलकर और रानाजी हार हुई इस समय रानाकी अमलदारी भी अजमेरतक थी परंतु जब वि सं १६२४ म आगरा

बादशाहने चितौड़ पर चढ़ाई की तब उस समय राणाके पास बहुत थोड़े परगने रहिगये थे कई महीने किलेमें घिरेरहिनेके पीछे जब बचनेकी कोई आशा न रही तो राणा उदयसिंह तो पहाड़ापर चलेगये और उनके सेनाध्यक्ष जयमल्लने बड़ी सावधानीसे दुर्गकी रक्षा की जयमलके मारे जानेपर स्त्रियां तो चितापर जलकर मरगई और पुरुष माम लड़कर कट मरे उस युद्धमें जितने क्षत्री मारेगये थे उन सबके जनेऊ तौलमें ७४॥ मन निकले इसीसे चिठ्ठियोंपर ७४॥ लिखते हैं

राना उदय सिंहका वि स १६२९ में देहांत होगया और उनके पुत्र राना प्रतापसिंहने गद्दीपर बैठकर अपने पूर्वजनोंका गयाहुआ राज्य पुन विजय कर लिया और अपने बापके नामसे उदयपुर बसाया जो अबतक मेवाड़राज्यकी राजधानी है–

एडवर्ड सप्तम केसरे हिंद (Edward VII Emperor of India, स ई १८४१में श्रीमती महारानी विक्टोरियाके द्वितीय गर्भसे आपका जन्म हुआ जन्मोत्सवमें १० लाख रु. खर्च हुये और साथ ही युवराज तथा ड्यूकऑफकॉर्नवाल कोवगरेंडगायाकी उपाधि आपको दीगई–ब्रिटिश राज्यकी ओरसे ६० हजार पौंड आपको वार्षिक व्ययके लिये नियत हुये–७ वीं वर्षमें आपका विद्यारंभ हुआ–पढ़ते समय साधारण व्यक्तिके समान आपसे बर्ताव किया जाता था और इंग्लैंडकी भविष्यति स्थितिके अनुकूल आपको शिक्षा दीजाती थी स ई १८६१ में आपने कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटीकी अंडरग्रेजुयेटकी परीक्षा उत्तीर्ण की स ई १८६८ मे आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने डी सी एल और एडिनबरो तथा डबलिनकी यूनीवर्सिटियाने एल एल डी की उपाधि सन्मानार्थ प्रदान की–१९ वर्षकी उम्रमें श्रीमतीने आपको सेनाका अवैतनिक कर्नेल नियत किया, पश्चात् एडिनबरामें रहिकर आपने इटाली, फरान्सीसी, और जर्मन भाषा पढ़ी और इतिहास शिल्प, आईन तथा रसायनादि शास्त्रका विशेष अभ्यास किया स ई १८६३ में डेन्मार्ककी राजकुमारी प्रसिद्ध सुंदरी अलेग्जंड्रीनासे शादी की–विवाहके पश्चात् पार्लियामेंटने आपकी तनख्वाहमें ४० हजार पौंड वार्षिक बढ़ाया और १० हजार पौंड वार्षिक आपकी पत्नीको देनेका ठहिराव किया स ई ६४ में आपके स्वर्गवासी प्रथम पुत्र ऐल्बर्टविक्टरका जन्म हुआ दूसरे ही वर्ष वर्तमान युवराज पैदा हुये स ई १८७१ में आपको भयंकर ज्वरपीड़ा हुई, जीनेकी आशा कम रहिगई, ब्रिटिश राज्य भरमें आपकी आरोग्यताके लिये ईश्वरसे प्रार्थना कीगई–स ई १८७५ में हिन्दुस्थान देखनेके लिये लंडन से बिदा हो पैरिस, ऐथेन्स, इटाली होते हुये बम्बई पधारे, आगरेमें आपके स्वागतमें बड़ा भारी दर्बार किया गया और आप ५ लाख पौंडका माल

राजा महाराजाओंकी ओरसे आपकी भेट किया गया, अफगानिस्तानकी सीमा पर जब रूसने प्रथमबार चढाई की थी तब प्रजाकी प्रार्थनासे माताकी आज्ञा पाकर आप पत्नीसहित सेंटपीटर्सबर्ग पधारे वहां पहुंच आपने रूसके सम्राट्‌को और आपकी पत्नीने सम्राज्ञी अपनी बहिनको समझाकर बखेडा शांत किया- स ई १९०१ में श्रीमती महारानी विक्टोरियाके स्वर्गवासी होनेपर इंग्लैंडके राज्यसिंहासनपर बैठे राज्यपर बैठते ही आपका स्वभाव बदला है, मित्र मित्रोंके साथ रातदिन बैठक रहती थी अब आवश्यकता बिना नहीं आन पान आपको कहिनेकी अपेक्षा कामकाजके दिखलाना अधिक पसंद है पार्लियामेंटने पौन छ लाख रुपया वार्षिक वेतन आपको देना स्वीकार किया है-पृथ्वीप्रसिद्ध कोहनूर हीरा जो आपकी माताके मुकुटमें था अब आपको मिला है-

एल्फिन्स्टन साहिब इतिहासकार (The Hon Mount Stuart Elphinston) इनका पूरा नाम आनरेबिल मौंट स्टुअर्ट एल्फिन्स्टन था-१८ वर्ष की अवस्थामें इंग्लैंडसे बिदाहो हिंदुस्थान आये और बंगाल सिविल सर्विसमें नियत हुये-बादको पेश्वाके दर्बारमें भेजे गये वहांसे कुछ काल पीछे भोंसलाके दरबारमें रजीडेंट नियत होकर नागपूर गये और फिर राजदूत बनकर काबुल गये-स ई १८१० में बम्बईके गवर्नर नियत हुये-७ वर्ष इस पदपर रहे और स ई १८२७ में पेन्शन लेकर इंग्लैंड चले गये-अंगरेजी विद्याका प्रचार बम्बई प्रांतमें इन्हींके समयमें हुआ हिंदुस्थानियोंने इनका स्मारक चिह्न स्थापनकरणार्थ बम्बईमें "एल्फिन्स्टन कालिज" खोला-इंग्लैंड पहुंचकर इन्होंने हिंदुस्थानका सविस्तर विश्वासयोग्य इतिहास लिखा जो परम मनोहर है-

स ई १७७८ में पैदा हुये

स ई १८५९ में मरे

एलिजाबेथ, इंग्लैंडकी रानी (Queen Elizabeth) इंग्लैंडके बादशाह हेनरी अष्टमकी बेटी निज पिताके बाद इंग्लैंडकी गद्दीपर बैठी, प्राटेस्टेंट मतकी थी, जब गद्दीपर बैठी थी उस समय इंग्लैंडकी प्रजामें धर्मसंबंधी घोर विप्लव उप स्थित हो रहाथा, आधी प्रजा प्राटेस्टेंटकी और आधी रोमन कैथालिककी-रानी एलि जाबेथ प्रजाप्रिय बनना चाहती थी, इसलिये उसने दोनों मतोंको समानतासे रखा और भेद समझकर अपना विवाह भी इसी कारण नहीं किया और न अपना उत्तराधिकारी नियत किया यदि वह किसी प्राटेस्टेंटसे शादी करती तो सब रोमनकैथलिक उससे बिगड जाते और अगर किसी रोमन कैथालिकसे

शादी होती तो प्राटिस्टेंट लोग बिगड़ बैठते—पूर्वशासकोंकी अपेक्षा राज काज इसके समयमें अच्छा चला हरतरफ शांति रही, प्रजाको सुख चैन मिला और लोगोंकी स्थितिमें अनेक प्रकारकी उन्नति हुई, सर्दारलोग सब प्रसन्न रहे और शेक्सपियर आदि अनेक प्रसिद्ध कवीश्वर इंग्लैंड तथा स्कॉटलैंडमें इसी समयमें हुये—

तिजारतकी तरक्की हुई समुद्रमें अनेक रास्ते और टापू दरियाफ्त हुये—तम्बाकू और आलूके बीज सर वाल्टर राली साहिबने अमेरिकासे लाकर इंग्लैंडमें रोपण कराये अब इन दोनों चीजोंका प्रचार भूमण्डल भरमें होगया है—

स ई १६०३ म ४५ वर्षकी उमरम मरी

ऐडीसन (Josheph Addison) पूरा नाम इनका जोजेफ ऐडीसन था—स ई १६७२ में एक अंगरेजी पादरीके घर विल्टशायरम पैदाहुये प्रथम शिक्षा च्याटर हौस लेंडनम पाई, यहीं स्टीलके साथ इनकी मैत्री होगई जो मरणपर्यंत तिभी—बादको मैग्डालेन कालिज आक्स फोर्डसे इन्होंने एम ए पास किया और यूरूपके अनेक देशोंकी यात्रा की—यात्रासे लौटकर ब्लेनहेमकी लड़ाई पर कविता रचनेके बदलेम कमिश्नर आफ अपीलकी पदवी पाई और स ई १७०६ म अंडरसेक्रीटरीआफस्टेटके पद पर नियुक्त किये गये—कुछ दिन बाद लार्ड लफ्टिनंट वार्नके सेक्रेटरी नियत होकर आयर्लैंड गये वहां रहिकर अनेकानेक मज़मून अपने मित्र स्टीलके जारी किए हुये पत्र "टेटलर" नामकको लिखे स ई १७११ म "स्पेक्टेटर" नामक पत्र जारी हुआ और उसके लिये भी अनेक प्रबंध इन्होंने लिखे—पश्चात् अनेक ग्रंथ रचे—स ई १७१६ मे इन्होंने अपनी शादी की परंतु सुखदाई न हुई—स ई १७१७ मे सेक्रेटरीआफस्टेटके पद पर नियत हुये और थोड़ेही काल पीछे पेन्शनले घर बैठे—

स ई १७१९म परमधामको सिधारे और वेस्टमिनिस्टरऐबीमें दफन किये गये। डाक्टर जानसनकी राय है कि, ऐडीसनरचित ग्रंथोंको पढ़कर सुडौल, रसमी सुंदर, और सभ्य इबारत लिखना आजाती है— मकाले साहिबकी भी सम्मति है कि "अंगरेजी इबारत ऐसी सरल, सौंदर्यसे परिपूर्ण और उत्तम किसीने भी नहीं लिखी" पर इनकी इबारत प्रभाव उत्पन्न करनेवाली नहीं है, इन्होंने मौन साध लिया था—

ऐडीसन, प्रोफेसर (Professor Addison) अमेरिकावासी प्रसिद्ध विद्वान् थे माघ स ई १८८० म इन्होंने बिजलीकी रोशनीका आविष्कार किया इनकी योजनाके अनुसार गैस और तेलके बिना औषधिप्रयोगके योगसे बिजली उत्पन्न होकर प्रकाशका काम देती है— इन्हीं महाशयने एक युक्ति ऐसी निकाली

जिससे सूर्यका प्रकाश रात्रिके समय भी दीखपड़े इस युक्तिसे एक कागजका टुकड़ा कितनीही औषधियोंके योगमें डुबाकर सूर्यके प्रकाशमें रक्खा जाताहै धूपमें रखनेसे वह टुकड़ा सूर्यकी किरणोंको छुपालेताहै इसी टुकड़ेको रात्रिके समय यदि अंधकारमें रक्खाजावे तब उसमेंसे थोड़ी देरतक स्वतः प्रकाश होताहै फोनाग्राफका आविष्कारभी इन्हींके द्वारा हुआ इस यंत्रके समीप जो बात कही जाती है या राग गाया जाताहै, वह इसमें भरजाताहै और उसे जब और जहां सुनना चाहें सुना सकते हैं मनुष्यका स्वरभी इसमें अच्छीतरह पहिचाना जा सकता है

ऐपामीनान्डाज़ी (Epaminondas) थेबीज निवासी प्रसिद्ध सेनापति तथा सुमर्यधकार ये मोटियाके राज्यवंशमें हुआ निजशुभआचरणों तथा रणकुशल होनेके कारण प्रसिद्ध हुआ जन्मभरमें कभी असत्य भाषण नहीं किया स ई से ३७१वर्ष पूर्व स्पार्टावासियोंको ल्युक्टराकी लड़ाईमें पराभव करके अनेक जय प्राप्त करता हुआ ७० हज़ार सेनासहित स्पार्टाके राजा ऐकडेमनके राज्यमें घुसगया इसके बाद थेबीजमें लौटकर आया, वहांके लोगोंने उसपर यह दोष लगाया कि उसने लड़नेमें नियमसे अधिक समय व्यतीत किया,इसदोषके बदलेमें उसको सूली दिये जानेका हुक्म दिया गया ऐपामीनान्डाजने यह हुक्म स्वीकार कर न्यायाधीशोंसे प्रार्थना की कि मेरी कबरपर यह अक्षिरा करा देना कि, स्वदेशको बचा दीने बचानेके बदलेमें सूली दीगई यह बात न्यायाधीशोंके हृदयमें असरकर गई,अर्थ उन्होंने अपराध क्षमा करके ऐपामीनान्डाजको सर्वोच्च पदपर नियत किया ४८ वर्षकी उमरमें किसी लड़ाईमें घायल होकर मरा, थेबीजकी प्रजाने बड़ा शोक किया क्योंकि, इन्होंने इसीके उद्योगसे स्वतंत्रता पाईथी और इसके मरनेसे १० ही वर्ष पीछे वह स्वतंत्रता जाती भी रही-

स ई से ४१४ पूर्व जन्मे

स ई से ३६२ पूर्व मरे.

ऐल्फ्रेड आज़म (Alfred the great) पश्चिमी सैक्सन लोगोंका राजा ऐथिल वुल्फका पुत्र था स ई ८५८ में इसके बापका देहांत हुआ और इसका ज्येष्ठ भ्राता राजगद्दीपर बैठा स ई ८६६ में भाईके मरनेपर राज्य इसके अधिकारमें आया ऐश डौनकी लड़ाईमें इसने डेन्स लोगोंको पराजय किया पर थोड़ेही दिन पीछे डेन्स लोगोंसे हारकर इसे जंगलकी ओर भाग जाना पड़ा-

थोड़े दिन जंगलमें रहकर इसने सेना एकत्र की और डेन्स लोगोंपर चढ़ाई करके पुनः विजय पाई जन्म भर इसने ५६ युद्ध किये, कानून बनाये पैमायशका मुहकमें कायम करके कृषक बसाये, पाठशालाएं जारी कीं दिन विद्यासे पुस्तक अध्यापक नियत किये, यूनीवर्सिटी कालिज आक्सफोर्ड मुहकमें बड़े-बड़े प्रसिद्ध पुस्तक रचीं और बहुतसी पुस्तकोंका अनुवाद लैटिनसे अंग्रेजीमें

किया, चोरी होना इसके समयमें बंद होगइथी दिनमें ८ घंटे पूजा पाठ, ८ घंटे राज काम और ८ घंटे खाने, पीने, सोने इत्यादिमें बिताता था

स ई ८४८ म जन्में

स इ ९०१ म मरे.

ऐल्बर्ट राज कुमार सैक्सकोबग और गोथा वाले (Prince Albert of Saxe coberg and gotha) भारतेश्वरी विक्टोरियाके पति थे स ई १८१९ म सैक्सको बगके ड्यूकके घर इनका जन्म हुआ ये उन सैक्सन लोगोंके वंश धर थे जिन्होंने अपने देशकी स्वतंत्रताको जमनीवालोंके आक्रमणसे बड़ी वीरतासे बचायाथा

इनके बड़े दो भाई थे—दुभाग्य वश इनके जन्मके पश्चात इनके मातापिताने विवाहका बंधन तोड़ दिया था और इसलिये राजकुमारको माताका संग त्याग पिताके साथ रहना पड़ा था दादीने इनका पालन पोषण किया पर वह भी इनको १२ वर्षका छोड़कर मरगइ राजनीतिसे साथन्त साहित्य संगीत इत्यादि नाना शास्त्रोंकी शिक्षा पाकर इन्होंने देशाटन किया—हालैंड जर्मनी, आस्ट्रिया, इंग्लैंड, इटाली, स्वीटजरलैंडका अवलोकन किया इनकी दादी विक्टोरियाकी नानीथी—उसने इन दोनोंमें बचपनहीसे मेल जोल करादिया था स ई १८४० में दोनोंका विवाह हुआ, और पार्लियामेंटने ३ लाख रुपया वार्षिक वेतन आपका नियत किया और ब्रिटिश सेनाके"फील्डमार्शल"का पद तथा "हिजरायलहाइनेस" की उपाधि दी और राज्यमें आपका दर्जा सब्बास्य रहा पर महारानी विक्टोरियासे सदे विवाहने एकही वषबाद १ कन्या और दूसरीही वर्ष प्रिंसएलबर्ट एडवर्ड जो आजकल एडवर्ड सप्तमके नामसे राज्य करतेहैं पैदा हुये—पतिपत्नीमें अत्यंत प्रेम था और प्रिंस ऐल्बर्ट अपनी पत्नी श्रीमती विक्टोरियाको राजकाजमें बड़ी सहायता देते थे वे परमनीतिज्ञ विद्वान चतुर और संगीतविद्याके रसिक थे—स्वभाव शान्तियुक्त था देशोन्नतिके उद्योगी ,और स्वरूपवान् थे स इ १८६१ म आपका स्वास्थ्य बिगड़ा, इलाज बहुत कुछ हुआ पर रोग दिन प्रति दिन बढ़ताही गया—परिणाम यह हुआ कि, १४ वीं दिसंबरकी रातको आपका देहांत होगया—प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ सी ग्रेविल साहिबने अपनी पुस्तकमें लिखाथा कि "प्रिंसऐल्बर्ट मानो स्वय राजा हो गये हैं, उन्हें काम करना बहुत पसंद है, रानी विक्टोरिया चाहे रानीकी उपाधि धारण करती हैं परंतु वास्तवमें शासन तो प्रिंस ऐल्बर्टहीका है, सब प्रकारसे वही इंग्लैंडके राजा हैं" इंग्लैंडके प्रधान अमात्य लार्ड बीकन्स फील्डने राजकुमारकी मृत्युके बाद स्पष्ट कहा था कि "प्रिंसऐल्बर्टके साथ मानो हमने इंग्लैंडके राजाको दफ्न कर दिया " जिस समय प्रिंसऐल्बर्ट का शरीर

भूमिसमर्पण किया गया सो प्रजागणने एक स्वरसे "सद्गुणी राजकुमार" इ नामसे पुकारकर हृदयका दुःख दरसा किया आपकी समाधि फ्रागमोर मैदानमें संगममरकी बड़ी दर्शनीय बनीहै-समाधि पर लेटिन भाषामें य लेख अंकित है-"वियोगिनी विधवा रानी विक्टोरियाने प्रियपति प्रिंसएल्बर्टके यावत् नश्यमान पदार्थ यहां रखवाये ! यहीं पर वेभी अंतसमय पतिके सा सुखकी निद्रा लेगी"

कनफ्युशिअस (Confucius) चीनके रहनेवाले प्रसिद्ध तत्व विज्ञानी और उपदेष्टा थे पिता इनको ३ वर्षका छोडकर मरगयेथे-माता इनके पालन पोषण और शिक्षाका प्रबंध कियाथा-१९ वर्षकी उम्रमें इन्हें शादी की पर पठन पाठनमें बाधा पडते देख स्त्रीको त्याग दिया-राजाने चीनने इनको सुयोग्यपाकर कृषिविभागका अफसर नियत किया औ कुछ दिन बाद नाजकी मंडिया, भेडाके गल्ले तथा चरागाहोंका इन्स्पेक्टर बनादिया-राजसेवा ये बडे परिश्रमसे करतेथे २१ वर्षकी उम्रमें माताके स्वर्ग स होने पर राजसेवा छोड़ ३ वर्ष पर्य्यंत शोकमें रहे और फिलासोफी पढतेरहे पश्चात् राज्यसम्बन्धी कार्य्योंका विचार ठाना और लोगोंको उपदेश करना शुरु किया, अनेक मतलब इनके समाजविरुद्ध्ये गये जातिवालोंने इनको छोडदिया पर ये दृढतासहित उपदेश करतेहीं रहे, बादको ये देशाटन करने चले, अनेक सूबाके हाकिमोंने इनको उपदेशक नियत किया-इसी समय इनको किसी सूबेकी सूबेदारी मिलगई और थोडेही समय उस सूबेकी इतनी उन्नति इन्होंने की कि अन्यसूबेदार इनसे ईर्षा करनेलगे-सबने मिलकर सम्राट चीनसे इनकी शिकायत की जिससे उक्त सम्राटने इनको पदच्युत करदिया १३ वर्ष तक इधर उधर घूमकर उपदेश देतेरहे-अंतमें निज जन्मभूमिको लौट और परलोकको सिधारे-इनके बहुतसे चेले होगये थे-चीन, कोरीन और कोरियावासी इनके स्वधर्मप्रवर्त्तक अथवा धातुर्वेताकी भांति जानते हैं इन्होंने कोई नया मत नहीं चलाया पर राज्य प्रबंध, देशरीति, नहिन सहिन इत्यादिमें सम्बंधमें बहुतसे उपयोगी सुधार किये, देशोन्नतिकी इनको ध्यान थी, किसी मतपर नहीं चलतेथे पर नास्ति न थे-चीनमें इनके संबंधकी अनगिन प्रतिष्ठाहैं प्रत्येक नगरमें इनके नामका मंदिर है जिसमें प्रति वर्ष राजा तथा प्रजा इनकी मूर्तिकी पूजा करतेहै। कहतेहैं-य सदैव उपदेश करतेथे कि किसीका मत सताओ सबका आदरकरो, परिश्रम करो और मेल मिलापसे रहो

स ई स ५५१ पूर्व पूर हुये

स ई स ४७९ पूर्व पूर मरे.

कनिष्क इसका राज्य काबुल कंधारसे लेकर आगरा और गुजरात तक था चीन तकके बादशाह इसका हुकुम मानतेथे और ह्वेनथ सङ्गके लेखानुसार ये चीनापति कहिलाताथा बौद्ध मतानुगामी था और उत्तरीय बौद्धोंकी सभा इसके समयमें हुई इसने बौद्ध मतके उपदेश करनेके लिये दूर२ उपदेशक भेजे राजधानी इसकी काश्मीरमे थी और ये तूरानका रहिनेवाला यूर्चीकौमका था—स ई ७८ में ये कश्मीरके राज्यसिंहासन परबैठा इसने बौद्धमतकी धर्मपुस्तकोंका पुनर संस्कार कराया जिनका रिवाज अबतक तिब्बत, ततार, और चीन इत्यादिदेशोंमें है इसके दादा हुविष्कने जो काबुलमे राज्य करताथा, कश्मीर विजय किया हुविष्कके बाद हुष्क और हुष्कके बाद कनिष्कने राज्य किया—कनिष्कने निजपूर्वजोंका राज्य बहुत बढायाथा

कपिलदेव मुनि (तत्त्वसमास सांख्यसूत्रोंके कर्ता) कर्दम ऋषिके घर देवहूतिके उदरसे जन्मे कपिलके बडे होनेपर कर्दम ऋषि उस समयकी प्रणालीके अनुसार वनको चलेगये और थोडेही दिन पीछे मृत्युवश हुये कपिलने तत्त्वसमास सांख्यसूत्रोंका उपदेश करके निजमाताको शोकरहित किया औरआप कलकत्तेके पास गंगासागरको चलेगये वहां रहिकर योगाभ्यास करते रहे और शुकादिऋषियोंको सांख्ययोग पढाते रहे सांख्ययोगका मुख्य उद्देश्य यह है कि, आत्माको अविनाशी और शरीरको नाशवान् जानकर संसारी मायाम चित्त न लगाना चाहिये कपिल दर्शनकारोंमें सबसे प्राचीन हैं महाभारतसे पहिले हुये क्योंकि गीतामें सांख्यका निम्नस्थ उपदेश पाया जाताहै:— " एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगेत्विमां शृणु " पुरातत्त्ववेत्ताओंकी सम्मति है कि कपिलदेवहीने गौतमबौद्धकी जन्मभूमि " कपिलवस्तु " नामक नगरको बसाया था और इन्हींके सांख्यसूत्रोंके आशयपर बौद्धने अपना मत चलाया— छःअध्यायोंमे सांख्यसूत्रोंके बनानेवाले कपिल दूसरे थे और महाभारतके पीछे हुये येही दूसरे कपिल फिरङ्गी विद्वानोंके मतानुसार स ई से प्रायः ७०० वर्ष पूर्व हुये

कवींद्र—देखो उदयनाथ भाषाकवि—

कबीर (कबीर पन्थ संस्थापक) वि स १५४५ में इनका विद्यमान होना सिद्ध है ये वास्तवमें किसजातिके थे ठीक विदित नहीं केवल इतना मालूमहै कि एकदिन " नीमा " जुलाहिन निजपति नूरीके साथ किसी विवाहोत्सवमें गईथी रास्तेमें लहिरतारा झीलमें, जो काशीके पासहै, पानी पीने गई। वहां एक सुर्तका पैदाहुआ बच्चा पड़ा पाया, नीमा उसे उठा लाई और बडे प्रेमसे पाला, और कबीर नाम रक्खा बडे होकर कबीर जुलाहे

का पेशा कर अपना समय व्यतीत करने लगे, उनके हृदयमें भगवद्भक्ति तथा अतिथिसेवाका अंकुर जन्महीसे पाया जाताथा "गुरुरूपी कर्णधार (खिवैया) के बिना भवसागरमें ईश्वररूपी नौकाको कौन पार लगावेगा !" यह भव सर्वदाही उनके मनमें उदय हुआ करता था, और अकसर उनको व्याकुल करदेता था–पश्चात् कबीर गुरु रामानन्दके शिष्य होगये और निज योग्यताके कारण मुख्य शिष्योंमें गिने गये गुरुने इनको शब्दयोगकी शिक्षा दी–सद्गुरुको प्राप्त हो कबीरसाहिब महत्व साधू और सिद्ध पुरुष हुये, और हिंदू मुसल्मानोंके बीच मतादिपर तीव्र प्रतिवाद करनेमें प्रवृत्त हुये, दिल्लीके बादशाह सिकन्दर लोदीके यहां कबीर साहिबके नाम मुसल्मान धर्मकी निन्दा करनेका अभियोग उपस्थित हुआ, पर बादशाहने उनकी करामात देख उनसे मित्रता करली कबीरपंथमें शब्दयोगका उपदेश किया जाताहै कबीरका कथन है कि "भगवान् शब्दरूपसे सबके घटमें विद्यमान है शब्दयोगी जन साधन करके अपने २ शरीरके भीतरही उस शब्दको सुनते और शुद्धरूपी ईश्वरका दर्शन करते हैं, मनुष्य भगवान्को इन्द्रियोंद्वारा किसी तरह ध्यानमें नहीं ला सकता न देख सकता है, इसी कारण परमेश्वर जीवके उद्धारके लिये गुरुरूपसे अवतार लेकर दर्शन देते हैं, ऐसेही गुरुको सद्गुरु कहिये है सद्गुरुकी खोजमें प्रत्येक मनुष्यको रहना चाहिये, सद्गुरुकी पहिचान ये है कि, इनके ईश्वरत्वका आभास पाखण्डीसे अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा प्रगट होन ठगताहै, सद्गुरुके अतिरिक्त संसारमें प्रत्यक्ष ईश्वर और कोई नहीं है" कबीर साहिबने बहुतकालतक जीवन धारण करके बंगाल, पंजाब, आसाम इत्यादि देशोंमें निरन्तर प्रचार किया–अंतमें कुछदिन निजशिष्योंको उपदेश करते देह त्यागदी–हिंदू मुसल्मानोंमें मृतकशरीर पर झगडा हुआ, परन्तु जब कपडे चादर उठाकर देखा तब लाशकी जगह फूलोंका ढेर पाया–कबीरकी कविता जगत् प्रसिद्ध है, साखी, बीजक इत्यादि इनके बनाये ग्रंथोंमेंसे मुख्य है–कबीरमा

जिससे दोनामे विरुद्ध होगया–पश्चात् कमलाकरने तत्त्वविवेक नाम एक ज्योतिष सिद्धात रचा जिसमे अनेक उपपत्तियां और युक्तियां मुनीश्वरके मतके खण्डनार्थ लिखीहैं–याद्को मुनीश्वरने यहांका स्पष्टस्थान जानने केलिये "भङ्गी" नाम एक क्षेत्रक्रिया रची–कमलाकरने उसके खण्डनके लिये अपने छोटे भाई रङ्गनाथसे "भङ्गीविभङ्गी" नामकग्रंथ रचवाया कमलाकरने भास्करीय बीजगणितके अनेक प्रकारोंकी उपपत्तियां अपने बुद्धिबलसे बहुतही उत्तम कीहैं–जिस अंकका वर्गमूल पूरा २ नहीं निकलता उसके मूलकाभी दर्जा ऊपरसे पूरा २ विचार है–सूर्यसिद्धांतमें भी अनेक प्रकारोंका समर्थन खूबही कियाहै और महामारी भूकम्प इत्यादिकाभी अपने ग्रंथमें भलीभांति निरूपण किया है–निर्णयसिन्धु धर्मशास्त्रका ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआहै–इनके पूर्वजोंका निवास स्थान गोदावरीतट गोल नामक ग्राममें था पर इनके पिता बालबच्चोंसहित काशीमें आ बसेथे

जन्म इनका शाके १५३८ में हुआ

कमलावती रानी ये राजपूत जातिका गौरव बढानेवाली जगतप्रसिद्ध सुंदरी गुन्नौरकी रानी थी निम्नन्य दोहा इसके विषयमें मशहूर है–

दो०–ताल तो भूपाल ताल, और सब तलैयां।
रानी तो कमलावती, और सब बिलैयां।

इसका वृत्तांत भूपाल राज्यके संस्थापक सर्दार दोस्त मुहम्मदखांके सम्बन्धमें देखो

कमाल–देखो कबीर

कर्ण (महादानी) सूर्यके वीर्यसे कुन्तीको गर्भ रहा जिससे कर्ण पैदा हुआ–कुन्तीका विवाह उस समय राजा पांडुके साथ नहीं हुआथा एवं उसने बच्चेको संदूकमे बंद करके जमुनानदीमें छोड़दिया धृतराष्ट्रके रथवानको यह संदूक बहिता मिला सन्दूकको पाकर उसने बच्चेको निकाल लिया और उसका पालन पोषण किया जब कर्ण जवान हुआ तब दुर्योधनने उसको अङ्ग देशका राज्य दिया महाभारतकी लडाईमें कौरवोंकी तरफसे लडा और अर्जुनके हाथसे मारागया प्रसिद्ध है कि, राजा कर्ण सवामन सोना रोज पुण्यकरता था–ये बड़ा वीर और धनुर्धारीथा–द्रौपदीके स्वयंवरमें पहिले इसीने बांस पर टँगी चक्रमें नाचतीहुई सोनेकी मछलीकी परछांई पृथ्वीपर रक्खे हुए तेलके कटोरेमें देखकर ऊपरको तीर चलाकर मछलीकी आंखमें निशान लगाया था पर प्रतिष्ठित वंशावली न दिखला सकनेके कारण द्रौपदीको न विवाहसका

कल्याणवर्म्मा (ज्योतिषकार) होरा शास्त्रमें सारावली नाम बहुत बड़ी पुस्तक इनकी रचीहै–ये रीवांके बघेलवंशी राजाओंके मूल पुरुष थे और हंटर साहिबके लेखानुसार स ई ६१५ में रीवां में राज्य करतेथे–इनके बापका नाम व्याघ्रदेव था–देवग्राममें इनकी राजधानी थी

कल्हण पंडित (कश्मीर राजतरङ्गिणीके कर्ता) इनके पिता चम्पक कश्मीर कुवारम मंत्रीथे-इन्होंने पांडवोंके समकालीन आदिगोनर्दसे लेकर राजा जय सिंह तकका कश्मीरका इतिहास राजतरङ्गिणीमें लिखाहै-यह ग्रंथ इन्होंने स ई ११४८ में सम्पूर्ण किया-नीलमत नामक ग्रंथ भी इन्हींका बनाया हुआहै-कश्मीर राजतरङ्गिणीका दूसरा भाग जोनराजने बनाया और तीसरा भाग श्रीवरने स ई १४७७ म सम्पूर्ण किया-चौथा भाग प्राज्ञभट्टने बादशाह अकबरके वक्तमें लिखा-कल्हणजीने राजतरङ्गिणीके लिखनेमें ११ प्राचीन इतिहास ग्रंथ तथा अनेक दानपत्र अनुशासनपत्र और शिलालेख आदिकी लिपी भी देखीथीं-इनके रचे ग्रंथोंके देखनेसे प्रतीत होता है कि ये बडे उद्धत और अभिमानी थे और गवेषणा इनकी अत्यंत गंभीरथी इनके मतानुसार ३५० वर्ष कलियुग बीतने पर, महाभारतका युद्ध हुआ था

कश्यप-इनकी गणना सात ऋषियों तथा १० प्रजापतियोंमें है-ऋग्वेदकी ऋचाओंमें इनका नाम आया है-एक ज्योतिष सिद्धांत इनका बनाया प्रसिद्ध है-कश्यपमेरु जिसका अपभ्रंश कश्मीर है इन्होंने बसाया दक्ष प्रजापतिकी १३ कन्यायें इनको विवाही गई थीं जिनसे बहुत संतति उत्पन्नहुईथी इनका कथन है कि " क्षमा धर्म है, क्षमाही यज्ञ है क्षमाही तप है और क्षमाहीसे यह जगत् स्थिर है"

कात्यायन वररुचि (पाणिनीय सूत्रोंके वार्तिककार) मोक्षमूलर मैक्स मूलरके मतानुसार ये ख ई स प्राय ३५० वर्ष पूर्व मगधदेशाधिपति महाराज नन्दके कुवारम मंत्रीथे-ये गोतम ऋषिके वंशमें थे निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-

ऋग्वेदकी अनुक्रमणी, ऋग्वेदीय श्रौत सूत्र २६ अध्यायमें, पाणिनीय वार्तिक, धर्मप्रदीप, कात्यायनस्मृति, सामवेदीय गृह्यसूत्र, अथर्वणकारिका, कात्यायनी तर्पण,

कात्यायन (धर्मसूत्रकार) इन्होंने सूत्ररचनामें अत्यंत प्राचीन समयमें विश्व ऋषिके वंशमें उत्पन्न होकर धर्म सूत्र ग्रंथके पश्चात् इन्हीं धर्म सूत्रोंके आधारपर कात्यायन ऋषिने कात्यायन स्मृति रची गृह्यसूत्रोंकी भाष्येन्दनी आलोचना प्रमाणादिक भी जिसमें चान्द्रोक्त्यापणके नियम हैं इन्हींका बनाया हुआ है-

कार्नवालिस (मार्क्विस आफ कार्नवालिस) Marquis of Cornwallis) इंग्लैंड देशवासी लंदन और केम्ब्रिज कालिजोंमें इन्होंने विद्या पढी-ख ई १७८८ म अङ्गरेजी सेनामें कप्तानके पदपर नियत हुये स ई १७८६ में एक्स्ट्रा गवर्नरका आहृदा पाया। और निज निवास स्थानपर अम कार्नवालि

सकी पदवी प्राप्त की–स० ई० १७७० में कोटाधीश हुये और सात वर्ष बाद अमेरिकाके युद्धमें सेनापति नियत कर भेजे गये वहां इन्होंने बड़े २ वीरताके काम किये इन सेवाओंसे प्रसन्न होकर स० ई० १७८६ में बृटिश गवर्नमेंटने इनको हिंदोस्तानका गवर्नरजेनरल तथा कमांडर–इन–चीफ नियत कर भेजा हिंदोस्तान आकर इन्होंने बङ्गलोर विजय किया और मैसोरके नवाब टीपूसुलतानको परास्त किया–इसके बाद इंग्लैंडको वापिस गये और मार्क्विसकी पदवी पाई–स०ई० १८०४ में दूसरी दफे गवर्नर जनरल नियत होकर हिंदोस्तान आये पर दूसरीही साल ६७ वर्षकी उम्रमें मर गये

कालिदास–(कविकुलचक्रचूडामणि) लोकविदित है कि कालिदासकी कविता जगतसाहित्य में अनुपम सामग्री है–किसी महात्माने कहा है कि 'कालिदासकविता नव वय सम्भवन्तु मम जन्मजन्मनि' इन्होंने अपने कवित्व शक्ति और नाटकगत–चरित्र चित्रण तथा अन्यान्य सौंदर्य और कल्पनाकी सृष्टिद्वारा भूमंडलके समस्त कविकुल चक्रमें उच्चासनको पाया है–वैज्ञानिक, राजनैतिक तथा सामाजिक तत्त्वोंके दर्शानेमें कोई कवि इनकी बराबरी नहीं करसका उपमाके विषयमें प्रसिद्ध ही है कि "उपमा कालिदासस्य" मानवचरित्राको तथा चित्तके सूक्ष्म भावोंको इन्होंने ऐसी स्पष्ट रीतिसे दरसायाहै कि मानों चरित्र खैंचकर प्रत्यक्ष दिखा दिया है–जो ग्रंथ कालिदास प्रणीत मिलते हैं वे कालिदास नामके ३ कवियोंने भिन्न २ समयमें होकर बनाये थे और उपरोक्त कथन उन तीनोंकी कवितापर घटता है–कालिदास नामके ३ कवियोंका होना विक्रमी संवत्की १२ वीं शताब्दीमें होनेवाले राजशेखर कविके निम्नस्थ श्लोकसे सिद्ध होता है–श्लोक–"एकोपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्। शृंगारे ललितोद्गारे कालिदास त्रयी किमु" इनमेंसे प्रथम कालिदास तो विक्रमादित्य शकारीकी सभाके अलंकार थे और कश्मीरके रहिनेवाले किसी सामान्य ब्राह्मणके घर जन्मे थे लड़कपनमें कुछपढालिखा न था केवल एक राजकन्यासे विवाह हो जानेके कारण अमोल विद्याधन इनके हाथ लगा–कहते हैं कि राजा शारदानन्दकी कन्या विद्योत्तमाका प्रण था कि जो शास्त्रार्थमें मुझे हरावेगा उसी को मैं वरूंगी–दूर २ से बडे २ पंडित आये पर सब हारे–निदान लज्जित हो पंडितोंने एका किया और किसी निरक्षर मूर्खसे राजकुमारी की शादी करादेनेका विचार ठाना–यह ठान उन्होंने एक अत्यंत मूर्खको तलाश किया और उसको समझा दिया कि राजकुमारीके सामने कुछ बोलना नहीं, जो बातकरना हो सो संकेतद्वारा करना इस प्रकार समझाय वे उस मूर्खको सभामें लाये और राजकुमारीसे कहा कि ये हमारे गुरु आपसे शादी करने आये हैं, पर आज कल्ह मौनी साधे हुये हैं, इसलिये संकेतद्वारा शास्त्रार्थ करलीजिये राजकुमारीने इस अभिप्रायसे कि, एक परमेश्वर है एक उंगली

चढाई-मूर्खने समझा कि, मेरी एक आँख फोडनेको कहती है एवं उसने २ उंग
लिये इस विचारसे दिखलाई कि, मैं तेरी दोनों फोड़ देऊंगा परंतु पंडितोंने
उसमें ऐसे २ अर्थ निकाले कि राजकुमारीको हारमाननीपड़ी-दोनोंका विवा-
ह होगया और राजभवनमें रहिने लगे-ये ग्रामीण मूर्ख बोलता नहीं था और
पशु समान रतिक्रीड़ा करता था बहुत दिनोंतक राजकुमारी पर इसका कुछ
भेद विदित नहीं हुआ एक दिन रातको सोतेपर ऊंटकी चिल्लाहट सुन
राजकुमारी चौंक उठी और पूंछने लगी "क्या है?" मूर्ख जो कि ओष्ठशब्दका भी
ठीक उच्चारण नहीं करसकता था अपने मौनव्रतको भूल कहिने लगा उट!
उट!! उट!!! तब तो पंडितोंका छल राजकुमारीको मालूम हुआ और
उसने क्रोधमें आ मूर्खका बड़ा निरादर किया मूर्ख भी लज्जित हो आत्मघात करने
लगा पर कुछ समझसोच विद्या पढने चल दिया-विद्या पढ पंडित हो करके
लौटा, जब मकानपर आया तो किंवाड़ खोलनेके लिये अपनी स्त्रीको
पुकारकर कहा "अनावृतकपाटं द्वारं देहि" विद्वत्तमाने पतिकी वाणी
पहिचान पूंछा "अस्ति कश्चिद्वाग्विशेषः" अर्थात् क्या आप कुछ बोलनाभी
आये कालिदासजीने निजपत्नीका प्रश्न सुन उसका एक २ पद ग्रहण करके
कुमारसम्भव, मेघदूत और रघुवंश नाम काव्य बनाये पश्चात् कालिदासजी
उज्जैनके राजा विक्रमादित्य सभारत्न कुमारत्न आये और वहीं मातृगुप्तके
भागी हुये काश्मीरके राजा प्रवरसेनके निमित्त इन्होंने महाराज विक्रमकी आज्ञासे
"सेतुबंध" नामक काव्य बनाया

कालिदासद्वितीय-(अभिज्ञानशाकुन्तल आदि नाटकोंके कर्ता) इनके
निम्नस्थ श्लोकसे विदित होता है कि ये नाटकोंके कर्ता कालिदास और भव-
भूति कवीश्वर एकही समयमें हुयाकरते थे-"नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।
उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते॥" भवभूति कवीश्वरका वि० सं० की छठी
व सातवीं शताब्दीमें होना इतिहासोंमें सिद्ध है, इसी समय उज्जैनकी गद्दी
पर महाराज विक्रमादित्य हर्ष राज्य करते थे जिससे प्रतीत होता है कि ये
द्वितीय कालिदास महाराज विक्रमादित्य हर्षकी सभाके अलंकार थे-निम्नस्थ
नाटकग्रंथ इनके रचे हुये हैं-शाकुन्तल, विक्रमोर्वशी, मालविकाग्निमित्र,
नागानन्द, हास्यार्णव और कुमारसंहार अभिज्ञानशाकुन्तल एक नाटक प्रपंचमें
सर्वोत्तम है, इसके नाटककर्ता रचनाकी कुशलतासे कालिदास भूमंडलमें प्रसिद्ध
हुए इनके नाटकोंमें ग्रीक देशीय नाटकोंका आदर्श सौंदर्य, जर्मन देशीयोंका
रचनाकी मनोहरता आध्यात्मिकता और परमार्थता तथा हिंदुदेशीय नाटकों
का सर्वांगसौन्दर्यस्वभाव पूर्णतया पाया जाता है इनके नाटक पात्र सब धर्म
परायण धीर, वीर और नीतिनिपुण हैं-विक्रमादित्य हर्षके पूर्वोक्त

नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडित थे जिनमें से कालिदासजी सर्वोत्तम गिने जाते थे, विक्रमने कालिदासको अध्यक्ष नियतकर्के सब प्राचीन ग्रंथोंको ढुंढवाकर शुद्ध श्रेणीबद्ध कराया था–

कालिदास तृतीय–महाराज भोजके दर्बारमें थे,भोजने उज्जैनकी गद्दी पर वि० सं० की १० वीं शताब्दीमें राज्य किया, भोजकी सभामें जो कोई नया श्लोक बनाकर लाता था १लक्ष मुद्रा इनाम पाता था,परंतु श्लोक का नया ठहिराना कठिन था, क्यों कि दर्बारके पंडित कहिदेते थे कि इस श्लोकको तो हम जानते हैं यह देख कालिदासने २ नये श्लोक बनाय राजाकी भेंट किये, उनका आशय यह था, कि महाराज आपके पिताने जो रत्न मुझसे कर्ज लिये थे वह दीजिये नहीं तो इन श्लोकोंको नया ठहिराकर मुद्रादानदीजिये राजाने श्लोक सुन दर्बारके पंडितोंसे पूछा कि कालिदासको क्या उत्तर देना चाहिये एक पंडितने कहा कि"महाराज,आपके पिताके हस्तलिखित एक ग्रंथमें यह लेख है कि हमने हमारी नदीके तीर उतरते आषाढ दुपहरके वक्त बगीचेके मध्य ताल वृक्षपर अनेक रत्न रक्खे हैं सो हमारे पुत्रको बड़े होनेपर मिलेंगे, सो आप कालिदाससे कहदीजिये कि पड़पर रक्खे हुये स्वर्गवासी महाराजके रत्न हैं लेवें" भोज यह सुन प्रसन्न हुआ और निज पिता का लेख कालिदासको देकर कहा "जाओ यह रत्नलेलो" कालिदास उस कविताका आशय समझ चलदिये और वृक्षकी जड़मसे २ कलस २ कोटिरत्नोंसे भरे खोदलाये भोजने पूंछा कि कवितामें तो"वृक्षके ऊपर रत्न रक्खे हैं" यह लेख है, आपने जड़ कैसे खोदी कालिदासने उत्तर दिया कि, मध्यान्हके समय चोटीका साया जड़पर पड़ता है इसलिये जड़को खोदा, भोजने प्रसन्न हो वे सब रत्न कालिदासको देदिये, पश्चात् भोजने कालिदासको अपने दर्बारके मुख्य पंडितोंमें नियत किया और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा की,इनका स्वभाव मसखरापुक्त था जिसके अनेक उदाहरण मिलते हैं निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हैं– श्यामलादंडक, शृंगारतिलक, श्रुतबोध, नलज्ञानवर्जन और प्रश्नोत्तरमाला

कालिदास त्रिवेदी–(भाषाकवि) ग्राम बनपुरा (अन्तरवेद) के रहनेवाले थे हरिद्वार और प्रयाग के बीचका मुल्क अन्तरवेद कहलाता है पहिले पादिक बादशाह औरंगजेबके साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिणी देशोंमें बहुत दिनोंतक रहे, पश्चात् जोगजीतसिंह जम्बूनरेशके दर्बारम गये और "वधूविनोद" नाम अद्भुत ग्रंथ बनाकर उनकी भेंट किया "कालिदासका हजारा" नामक ग्रंथभी इन्हींका संग्रहीत है, एक और ग्रंथ जंजीराबंद इनका बनाया हुआमिलता है, इनके पुत्र कवीन्द्र उदयनाथ और पौत्र कवि दूल्हभी भाषाके सुकवि हुये हैं जन्म इनका वि० सं० १७४९ में हुआ

कालिदास–(ज्योतिषी) "ज्योतिर्विदाभरण" नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्त्ता वि, सं० की १६वीं शताब्दीमें हुये, ज्योतिर्विदाभरणहीके एक श्लोकमें विक्रमादित्यके नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडितोंके निम्नस्थ नाम लिखे हैं–कालिदास क्षपणक, धन्वन्तरि, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहिर और वररुचि–

कालीप्रसाद मुंशी–(कायस्थ पाठशाला प्रयागके संस्थापक) इनके बाप शाहिजादपुर जिला इलाहाबादके रहने वाले जौनपुरमें नौकर थे–कालीप्रसादका जन्म सं० ई० १८४० में जौनपुरमें हुआ बचपनहीसे बुद्धितीव्र थी और बड़े होनहार मालूम होते थे, १२ वर्षकी उम्रमें फारसीकी शिक्षा सम्पूर्ण करके फर्मा [illegible] पगड़ी पाई, इसके बाद बहुत वक्ततक संस्कृत पढी और बनारसमें रहे पश्चात् मजिस्ट्रेटोंकी वकालतका इम्तिहान पास किया और लखनऊमें रहकर वकालत करने लगे सं० ई० १८८६ में बीमार होकर दिल्ली गये, इलाज बहुत हुआ पर वक्त आ पहुँचा था। इनके उद्योगसे कायस्थ जातिमें निज सुधारकी उत्तमता उत्पन्न हुई, कायस्थ सभाएं स्थापित हुईं सं० ई० १८७३ में "कायस्थसमाचार" नामक कौमी पत्र इन्होंने जारी किया और "कायस्थपाठशाला" नामक स्कूल प्रयागमें खोला, "कायस्थ ट्रेडिङ्ग कम्पनी" लखनऊमें स्थापित की और कायस्थोंको क्षत्री सिद्ध करनार्थ "कायस्थ एथनोलोजी" नामक ग्रंथ रचा अंतमें उम्रभरकी कमाई प्रायः ६ लाख रुपये कायस्थसमाचार तथा कायस्थपाठशालाको भेंटकर दिये जिससे यह स्कूल स्थिर रहेगे

काशीनाथत्र्यम्बकतैलङ्ग–(भारतवर्षीय प्रसिद्ध राजनीतिविशारद) ये महाराष्ट्र शेणवी ब्राह्मण सं० ई० १८५० में पैदा हुये १७ वर्षकी उमरमें बी० ए० पास किया और बादको आनर्सके एम० ए० तथा एल० एल० बी० की भी परीक्षा उत्तीर्ण की–सं० ई० १८८? में एडवोकेटका इम्तिहान पास किया और व्यवहारशास्त्र और संस्कृतके पूर्णविद्वान और धर्मशास्त्रके प्रसिद्धज्ञाता थे–सं० ई० १८८९ में बम्बई हाईकोर्टके जजके पदपर नियुक्त किये गये बम्बई युनिवर्सिटीके [illegible] [illegible] मेम्बर [illegible] पसंद [illegible] उपदेशादेश और इनको [illegible] धनोंका इतना बड़ा शौक था इनकी [illegible] धूम [illegible] इन्होंने भगवद्गीता, भर्तृहरि और मुद्राराक्षसनाटक इत्यादि संस्कृत ग्रंथोंका अनुवाद अंग्रेजीमें किया अनेक सभाओंके मेम्बर सेक्रेटरी तथा प्रसिडेन्ट रहे–शिक्षासम्बन्धी गवर्नमेंटके मेम्बर रहते [illegible] सं० ई० १८८३ में सी० आई० ई० की उपाधि पाई–सनातनधर्म पर आरूढ़ता और [illegible] में [illegible] [illegible] हुए–[illegible] नाम [illegible] है

कुतुबुद्दीन ऐबक (दिल्लीका पहिला मुसल्मानबादशाह) शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीका गुलाम था और हिंदुस्तानमें उसके राज्यका नायब था गोरीके मा

मे पर इसने दिल्लीमें अपनी राजधानी नियत की और हिंदोस्तानका सुलतान बनबैठा सब सर्दार तथा सिपाही सिंधसे लेकर बगालतक इसका हुक्म मानसेथे और इससे प्रसन्न रहिसेथे ये बड़ा बहादुर, चतुर सेनापति था, स० ई० १२११ में मरा, दिल्लीमें कुतुब मसजिद तथा कुतुबकी लाट इसीकी बनाई हुई हैं कुतुब मसजिदके खम्भोंपर अनेक देवताओंके चित्र खुदे हुये हैं और उसके दर्वाजेपर अंकित है कि २७ मंदिरोंको तोड़ उन्हींके मसालेसे यह मसजिद बनाई गई थी कुतुबकी लाट दिल्लीसे ११ मीलकी दूरीपर है, पृथ्वीकी सब लाटोंमें ऊंची है प्रथम इस लाटको पृथ्वीराजने बनवाना आरंभ किया था, परन्तु मुसल्मानोंकी चढाईके कारण वह पूरी नहोसकी कुतुबुद्दीनने निज स्वामी शहाबुद्दीनगोरीकी विजयका स्मारक चिन्ह स्थापनकरणार्थ इस लाटको ऊंचाकराके उसपर अपने स्वामीका नाम खुदवा दिया

कुमनदास–(भाषाकवि, अष्टछाप) गोवर्धनके पास जमुनावते गांवके रहिनेवाले ब्राह्मण थे श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे और ऐसे सुकवि थे कि, अष्ट छापम गिनेगये इनके ७ बेटे थे जिनमेंसे चतुर्भुजदासजी अच्छे कवि थे और अष्टछापमें गिने गये थे वल्लभाचार्यने श्रीनाथजीकी सेवा गोवर्धनके शिखरपर पधराकर कुंभनदासको कीर्तनियां नियत किया था ये अत्यंत दरिद्री और त्यागी थे जयपुरनरेश मानसिंहने इन्हें बहुत कुछ देना चाहा था परंतु इन्होंने कुछ भी ग्रहण नहीं किया था एक समय इनके गानेंकी प्रशंसा सुन बाद-शाह अकबरने इनको फतेपुरी सीकरी बुलाया, वहा जाय इन्होंने निम्नस्थ पद गाया था–

भक्तनको कहा सीकरी सों काम।
आवत जात पनैंहिया टूटी बिसरगयो हरनाम।
जिनको मुख देखत दुख उपजत तिनको करनी पड़ी सलाम।
कुंभनदास लाल गिर्धर बिनु और सबै बे काम ॥
कुंभनदासजी बहुत वृद्ध होकर मरे थे॥

कुमारिलभट्ट–(मीमांसादर्शनके आचार्य) इनका समय वि० स० ६५७ से ७ ७ तक प्रतीत होता है विहारके रहिने वाले ब्राह्मण थे जैन तथा बौद्ध मतवादियोंको इन्होंने अनेक दफे शास्त्रार्थमें परास्त करके उनके मतकी मूल उखाड़दी और वैदिक मतका पुन संस्कार किया इस महत्कार्यके बदले सब लोगोंने एक मत होकर इनको ' भट्टपाद ' उपाधि दी एकदफे भट्टपाद और बौद्ध पंडितोंमें शास्त्रार्थ ठहिरा और एक बड़े ऊंचे महिलपर शास्त्रार्थ करनेको बैठे भट्टने अपनी तीव्रबुद्धिसे प्रतिवादियोंके युक्ति जालको छिन्न भिन्न करदिया निदान बौद्धोंने भट्टको परास्त करना असम्भव जान छतपरसे नीचे ढकेल दिया पर वे जीते और वैदिक धर्मकी धूम मचा इन्होंने मीमांसा

दर्शनपर वार्तिक भाष्य किया है श्लोकरूपवार्तिक "श्लोकवार्तिक (भट्टवार्तिक)" कहिलाता है और गद्यरचनायुक्त वार्तिक "तंत्रवार्तिक" कहाता है पुरी, द्वारका, सेतुबंधरामेश्वर इत्यादि तीर्थोंमें भी इन्होंने भ्रमण किया था प्रभाकर तथा मुरारि मिश्र मीमांसादर्शनके विद्वान् इनके शिष्य थे भट्टपाद अंतमें अग्निमें प्रवेश करके मरे थे

कुम्भकर्णसिंह–(महाराना चित्तौड़) निज पिता राना मोकलदेवके रणशाई होनेपर स० ई० १४१९ में चित्तौड़की गद्दीपर बैठे उस समय मालवा तथा गुजरातके राजे बड़े प्रबल थे दोनोंने मिलकर राना पर चढ़ाई की, रानाने दोनोंको हराया और गुजरातके मुसल्मान राजा महमूदको कैद कर लिया परंतु थोड़ेही दिनों बाद बहुत कुछ धन लेकर छोड़ दिया और निज उदारताका परिचय दिया–मेवाड़में कुम्भलगढ़ किला तथा ३१ और किले बनवाये और आबू पहाड़की चोटीपर ८ लाख रुपयेके व्ययसे ऋषभदेवजीका मंदिर बनवाया चित्तौड़में भी इनका बनवाया एक बहुत बड़ा मंदिर अब तक है जिसमें इनकी अष्टधातुकी मूर्ति रक्खी हुई है, ये भाषाके सुकवि थे गीतगोविन्दका तिलक भाषा पद्यमें इनका बनाया लिखित है–संक्षेपसे ये बड़े धीर वीर, पराक्रमी विद्वान् और अनुभवशील पुरुष थे, इन्होंने अपने देशके शत्रुओंको परास्तकर अपने राज्यको पुष्ट किया–स० ई० १४६० में इनका पुत्र ऊदासिंह इनको मारकर गद्दीपर बैठा

कुरु–(चन्द्रवंशी राजा) धृतराष्ट्र तथा पांडु इन्हींके वंशमें हुये–धृतराष्ट्र के १०० पुत्र इन्हींके नामसे कौरव कहिलाये

कुश–महाराज रामचंद्रजीके ज्येष्ठ पुत्र थे–कुशावतीका राज्य इनको मिला था–इनके वंशमें कछवाहे कहिलाते हैं और जयपुर तथा अलवरमें अबतक राज्य करते हैं–

कूर्मदेवी–पटनाकी राजकुमारी चित्तौड़के राना समरसिंह (समरसी) की ब्याही थी–राना समरसीके संग्राममें जो स० ई० ११९३ में शहाबुद्दीन और पृथ्वीराज दिल्लीनरेशमें घोर हुआ मारा गया–पृथ्वीराजकी बहिन पृथा बाई भी सती होगई थी–कूर्मदेवी रानीके साथ सती होना चाहती थी परंतु पुत्रके बालक होनेके कारण न हो सकी पुत्रकी बाल्यावस्थामें राज्यकार्य बड़ी सावधानीसे चलाया और अपनी सेनासहित कुतुबुद्दीन को घायल किया–

केशव (ज्योतिषकार) वि० सं० की १६ वीं शताब्दीमें हुए–इनके पिता कमलाकरजी पश्चिमसमुद्रतीरवर्ती नन्दिग्राममें रहनेवाले विश्वनाथ ज्योतिषी भी इनके गुरु थे और प्रसिद्ध गणेशदैवज्ञ इनके पुत्र थे–निम्नग्रन्थ ग्रंथ इनके

बनाये हैं प्रश्नकौतुक, वर्षग्रहसिद्धि, जातकपद्धति ताजकपद्धति, सिद्धांतवासनापाठ, मुहूर्ततत्त्व, कायस्थादिधर्मपद्धति, कुण्डाष्टकलक्षणम्, गणितदीपिका और तिथिसिद्धि

केशवचन्द्रसेन (ब्रह्मोधर्मप्रवर्तक) स ई १८३८ में प्यारी मोहन सर्कारके घर कलकत्तेमें जन्मे बचपनहीसे दयालु थे हिन्दूकालिज कलकत्तामें प्रथम श्रेणीतक शिक्षापाई थी स्वभावके गंभीर थे, बोलते कम थे, इनकी वक्तृताकी बडे २ लोग प्रशंसा करते थे, २० वर्षकी उम्रमें इन्होने ब्रह्मोसमाजमें नाम लिखाया और एक वर्ष पश्चात् ब्रह्मो समाजके मैंत्रीके साथ सङ्गलद्वीपिको गये—पश्चात् इन्होंने अपना तन मन पूर्णरीतिसे ब्रह्मोसमाजकी उन्नति करनेमें लगाया–स ई १८६२ में भारतवर्षीय ब्रह्मोसमाजोंके प्रधान आचार्य्यके पद पर नियत किये गये फिर तो पंजाब, बम्बई, मद्रास, बङ्गाल प्रांतोंमें भ्रमण करके इन्होने हजारों व्याख्यान दिये जिससे ब्रह्मोधर्मका बहुत कुछ प्रचार हुआ स ई १८७० में इग्लैंड गये और सामाजिक नियमोंपर उपदेश दिये वहां सब लोगोंने इनकी प्रतिष्ठाकीमहारानी विक्टोरियासेभी मुलाकात हुई महाराजा कूचबिहारके साथ इनकी बडी लडकीका विवाह हुआथा स.ई १८८४ में परलोकगामी हुये

केशवदास (भाषाकवि) इनके दादे मिश्रकृष्णदत्त तथा इनके बाप काशीनाथ, टेहरा (बुंदेलखंड) के रहिनेवाले सनाढ्यब्राह्मण थे और उड़छानरेशके दर्बारमें उनका आदर होता था केशवजी स० ई० १५६७ में पैदा हुये, और बड़े होकर मधुकर शाह उड़छानरेशके दर्बारमें आये मधुकरशाहके बाद इंद्रजीतसिंहने गद्दीपर बैठकर इनको २१ गांव संकल्प करके दिये, तबसे ये कुटुम्ब सहित उड़छामें बसते भाषाकाव्यके दशोअङ्ग पहिले पहिल इन्होंने "कविप्रिया" नामक ग्रंथम वर्णन किये थे–इनके रचे ग्रंथोंको देखनेसे ज्ञात होताहै कि ये अलङ्कार, लक्षणा, व्यञ्जना, कोष इत्यादि काव्यके अङ्गोंमें सिद्ध थे उड़छानरेश इन्द्रजीतके पास 'प्रवीणराय' नामक पातर बडी सुंदरी तथा कविता करनेमें परमचतुर थी अकबर बादशाहने उसकी प्रशंसा सुन अपने दर्बारमें तलब किया परंतु यह दर्बारमें हाजिर न हुई इसपर क्रुद्ध हो अकबरने इन्द्रजीतपर १ करोड़ रुपया जुमाना किया इस अवसरपर केशवदासजीने अकबरके मंत्री राजा बीरबलको निम्नस्थ सवैया सुनाकर जुमाना माफ करा दिया, पर प्रवीणरायको दर्बारमें हाजिर होना पड़ा—

सवैया–पावक,पक्षि, पशु, नग, नाग, नदी, नद, लोक रच्यो दश चारी।
केशवदेव अदेवरच्यो नरदेवरच्यो रसना न निवारी।

केनरनाह वही बरबीर भयो कृतकृत्य महामृतधारी ।
देिकर्तार पन आपन ताहि दियो कसार दो कक्रतारी ।

केशवदासजीके बनाये ग्रथोका आशय कठिन है और वे यह हैं-कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामचन्द्रिका, विज्ञानगीता और रामालंकृतिमंजरी

केशवदासकी कविता अर्थगांभीर्यके लिये प्रसिद्ध है

दो०-उत्तम पद कवि गगको, उपमाको बलबीर ।
केशव अर्थ गंभीरको, सूर तीन गुणधीर ॥

दो०-सूर सूर्य तुलसी शशिन, उडुगन केशवदास ।
अबके कविखद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकाश ॥

प्राचीनलोगोंका कथन है कि, "रसिकप्रिया" के किसी कवित्तके एकचरण "मखतूलके झूलझुलावत केशव भानु मनो शनि अंकलिये" म केशवजीन अस म्भव उपमा लिखी है, जिसके कारण राधिकाजीने इनसे स्वप्नमें एकदिन कहा कि, तुम्हारी भैतोंकीसी बुद्धि है, इसके बाद केशवजीने उड्छेम प्रेतयज्ञ किया और कुछ काल पीछे मरकर प्रेतहुये बिहारीलाल भाषाकाव्य सतसईके कर्ता इनके पुत्र थे

केशवार्क-(ज्योतिषी) भारद्वाज गोत्री महाराष्ट्र्य ब्राह्मण जनार्दनजीके प्रपौत्र थे श्रियादित्य इनके दादा नमन्तातटके वासी थे इनके पिताका नाम राणग था "विवाहवृन्दावन" तथा "गणकडी" नाम ज्योतिषग्रंथ इनके रचे हुये हैं स ई १२४२ में जन्मे थे

कैकेयीरानी-अयधनरेश दशरथजीकी सबसे छोटी रानी, राजा अश्व पति कैकयाधीशकी राजकुमारी थी भरतजीका जन्म इसके उदरसे हुआ,ये जै सी रूपलावण्यमें सुंदर थी वैसीही बुद्धिमती थी अन्यरानियोंकी अपेक्षा राजाकी इसपर कुछ विशेष कृपा थी एकसमय रणभूमिमें रथका पहिया निकलनेसेरोक कर इसने निजपतिकी प्राणरक्षा की थी, जिसके पुरुस्कारम दशरथजीने इसको कोईसे २ वचन मांगनेकी आज्ञा दीथी और इसने कहदिया था किवो और अव सरपर मॆंगा जायगा वृद्धहो जब दशरथजीने रामचद्रजीको युवराज नियत करना चाहा तब इसने मंथरादासीके बहिकानेम आकर राजासे उपरोक्त दोनों वचन इसतरह पूर करनेको कहाकी कि भरतको युवराज और रामचंद्रको बनो वास दियाजाय राजानेकैकेईको, जो इससे पहिले कौसल्यादि रानियोंमें कुछ भेद नहीं मानती थी, बहुत समझाया, पर उसन एक न माना दासीकी सिखावनका ऐसा प्रभाव उसके चित्तपर पड़ा था कि उसनसाक्षात् कठोरताका रूपधारण कर लिया और त्रियाके सहज स्वभावपर आगई राजा सत्यमनिष्ठ था क्यों उस

रामवियोगमें प्राणत्यागना स्वीकार किया पर वचन न तोड़ा कैकेई भी अंतमें अपने कसष्प पर बहुत पछिताई परन्तु कलङ्क का टीका उसके माथे अमरहो चुका था भरतजीने निजमाताको उसके कर्तव्यपर अनेक कुवाक्यकहे और जीतेजी उससे कभी बात नहीं की यथा तु० कृ० रामायणे गीतावली–

"कैकेई जबलौं जिअतरही–भरत भूल मुख सन्मुख कुछ कबहू न कही"

कैकेईके चरित्रसे यही नीति निकलती है कि कुसंगतिमें पड़कर सज्जन भी दुराचरण करने लगते हैं–

कुसंगतिका सर्वथा त्याग करना उचित है

कैनिङ्ग (लार्डजार्ज कैनिंग Lord George Canning) स ई १८१२ में इंग्लैंडमें पैदा हुये–१८३७ मे माताका देहांत होनेपर नायट कौंट" की पदवी पाई स इ १८४७ में विदेशी मामलातके सीक्रेटरी–आफ–स्टेटके पद पर नियुक्त किये गये पश्चात् जंगलोंके कमिश्नर तथा पोस्टमास्टर जेनरल रहे–स ई १८५६ में लार्डडेलहौसीके पश्चात् हिंदोस्तानमें गवर्नर जेनरल होकर आये–सन ५७ का गदर इन्हींके शासनकालमें हुआ स ई १७५८ मे इंग्लैंडको लौटगये और "अर्ल" की पदवी पाई–गदरकी चिन्ता के कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था पर्श्चवर्ष और जीकर स.ई १८६२ मे परम धामको सिधारे, बड़े न्याई थे, गदरके बाद सब अंगरेज यही पुकारते थे कि हिंदोस्तानियोंको जबर्दस्ती ईसाई करलेना चाहिये अधिकांशको प्राणदंड देना चाहिये पर इनके न्यायके प्रभावसे हिंदोस्तानियोंके धर्ममें कुछ हस्ताक्षेप नहीं किया गया और केवल उन्हींको मौतकी सजा मिली जो अंगरेजोंके वधकरनेम शरीक थे

कैय्यट पंडित (भाष्यप्रदीपके कर्ता) कश्मीरवासी जैय्यट उपाध्यायके पुत्र थे, विद्या इन्होंने अपने बड़े भाई मम्मटसे पढीथी–यजुर्वेदभाष्यकार प०औवट भी इनके सहोदर थे–वि०स०की ११ वीं शताब्दीके अंतमें तथा १२ वीं शताब्दीके आरंभमें हुये–व्याकरण महाभाष्यपर भाष्यप्रदीप नामक व्याख्या इनकी बनाई हुई है

कोण्डभट्ट (संस्कृत वैयाकरणी) महाराष्ट्र ब्राह्मण ' काशीवासी थे इनका समय भट्टोजीदीक्षितके पीछे है क्योंकि इन्होंने भट्टोजी दीक्षितकृतकारिका "वैय्याकरणभूषण सार"नाम ग्रन्थपर टीका रचा है–२० और ग्रंथ भी इनके बनाये हैं जो खण्डविंशति कहिलाते है। न्यायशास्त्रपर भी एक बृहत् ग्रंथ "पदार्थ-दीपिका" इन्हींका बनाया हुआ मिलता है

कोपरनी कस (Copernicus) प्रुशिया वासी एक ज्योतिषी हुए हैं इनका पेशा विशेष था प्रथम कोपरनीकसने डाक्टरी सीखी और फिर गणित विद्या सीखने की ओर विशेष ध्यान दिया तदुपरांत कुछ काल राम (इटेली) में गणिताध्यापक रहे अंतमें अपनी जन्मभूमिको लौट आये और ग्रहोंकी चालके विषयमें एक बहुत बड़ी पुस्तक रची इस पुस्तकके छपनेसे २ घंटे बाद मरगये

स ई १४७३ में जन्मे

स ई १५४३ मे मरे

कोलम्बस (Christopher Columbus) चारसौ वर्ष पहिले पृथ्वीके पूर्वीगोलार्द्ध अर्थात् एशिया, यूरुप और अफरीकाके रहनेवाले यह नहीं जानते थे कि अटलांटिक महासागरके दूसरी ओर भी दुनियां है इस वस्तीको सबसे पहिले कोलम्बसने ढूंढा और इसीसे इसको नई दुनियां कहिते हैं–कोलम्बस इटेली देशके जेनोआ नगरका रहिनेवाला था, इसका बाप कंगाल था इसलिये लड़कपनमें इसको ठीक शिक्षा नहीं मिली कुछ तरुण होकर कोलम्बस पेरिसमें आया और वहां उसने लेटिन भाषा, गणित तथा भूगोल और खगोल विद्या सीखी–पढना छोडनेके बाद मल्लाहीका काम सीखा और धीरे २ एक जहाजका मालिक होगया स० ई० १४७० में पुर्तगालका राजधानी लिस्बनमें आया और अपना विवाह इटेलीनिवासी एक जहाजके कर्मचारी लड़कीसे किया–उनदिनों यूरुपके लोगोंको हिंदोस्तानका ठीक पता नहीं मालूम था केवल अनुमान करते थे कि हिंदोस्तान अटलांटिक महासागर से पश्चिम में है निदान कोलम्बसने कई बादशाहोंसे प्रार्थनाकी कि मुझे अपनी ओर से हिंदोस्तानका पता लगानेकेलिये भेजिये स्पेनके बादशाह फर्डीनेन्डने यह बात स्वीकारकी और३जहाज कोलम्बसको देकर प्रतिज्ञाकी कि जितने देश तुम ढूंढ कर शासनमें लाओगे उनके तुमही वायसराय नियत किये जाओगे और उनकी आमदनी का दशांश तुमको मिलेगा–स० ई० १४९२ में बादशाहकी आज्ञा लेकर कोलम्बस जहाजका लंगर उठा पश्चिमकी ओर चलताहुआ चलते २ दो महीने होगये पर थोड़ा टापू नहीं मिला तब तो मल्लाह बहुत बिगड़े और कोलम्बसके मारडालनेकी चेष्टा करने लगे–कोलम्बसभी जैसी हवा देखता वैसी ही पीठ देता था समय २ पर उनको समझाता बुझाता और धमकाता था–इसके थोड़ेहीदिन पीछे कोलम्बसने टापुओंमें झुंडके झुंड पाये जिनमें से बहुधा तथा हटी नामके टापू मुख्य हैं इन टापुओंसे छः मनुष्योंको साथ लेकर कोलम्बस स०ई० १४९३ में स्पेनको लौटा और बादशाहने उसका बड़ा आदर किया–इसप्रकार

कोलम्बसने ३ दफे यात्रा औरकी और बहुतसे टापू ढुंढे स० ई०१४९८ में तीसरी बार गया और एक टापूमे पहुंचा जहां लोग छटमिट रहेथे—कोलम्बसने उनमें मेळ मिलापकराया, परंतु यहांके कुछ लोगोंने बादशाह स्पेनके पास निवेदन पत्र भेजा जिसमें कोलम्बसकी अत्यंत निन्दाकी और उसपर अनेक दोष झूठे लगाये—इसको पढ बादशाहने क्रोधमें आकर कोलम्बसको पदहीन किया और उसकी जगह दूसरा आदमी भेजकर हुक्म दिया कि कोलम्बसके पैरोंमें बेडी डालकर हमारेपास भेजदो—यद्यपि बादशाहने कोलम्बसका मुख देखतेही उसे छुड़वादिया और बहुत कुछ इनाम दिया, पर कोलम्बसने उन बेडियोंको सावधानीसे अपने पास रख लिया और मरनेसे पहिले आज्ञादी कि इनको मेरे साथ गाड़ देना—स० ई० १५०४ में चौथी बार यात्रा की और स०ई० १५०६ में परलोकको सिधारा—कोलम्बसके ढुंढे द्वीप अब वेस्टइन्डीज और दक्षिणी अमेरिका कहिलातेहैं कोलम्बस इन देशोंको हिंदोस्तानका भाग समझता था और उसके समयतक कोई दूसरामी नहीं जानताथा कि ये हिंदोस्तानके भाग नहीं हैं—

कौपर (विलियमकौपर. William Cowper) प्रसिद्ध अंगरेजी कवीश्वर व पत्रलेखक था हट फोर्डशायर अंतर्गत बर्कम्स्टेड नामक ग्राममें एक पादरीके घर स ई १७३१ में पैदाहुआ इसके दादा प्रसिद्ध जजस्पें सर कौपरथे—माताइसको ६ वर्षका छोड़के मरगई थी वेस्ट मिनिस्टर स्कूलमें लैटिन ग्रीक और अंग्रेजीके प्राचीन ग्रंथ पढे और दुनियाका थोड़ासा हाल जो इसको मालूम था वह यहींकी शिक्षाका प्रभाव था स ई १७५४ म कानून का इम्तिहान पास किया लेकिन वकालतका पेशा नहीं किया स्वभाव डरपोक और वहेमी था एकदफ किसी नातेदारकी सिफारिशसे हौस-आफ-लार्डसके क्लार्कका ओहदा पाया पर ओहदेका कठिण काम चलानेकी फिक्रसे पागल होगया आराम होकर स ई १७६५ म "हनटिंगडन" नामक स्थानमें जा बसा वहां रहिकर इसकी मित्रता अनविनके घरानेसे होगई अनविन साहिबके मरजानेपर कौपर और अनविन साहिबकी मेम ओलनी नामक स्थानको उठगये ओलनीमें रहिकर अनेक और स्त्रियांसे भी मित्रता होगई इन्हीं दिना ये दुबारा पागलहुआ मेम अनविनने बीमारी की हालतमे इसकी पुत्रवत् रक्षाकी आराम होनेपर मम अनविन तथा अन्य स्त्रीमित्राने इसका चित्त स्थिर करने और किसी कामम लगानेके लिये पद्यरचना की ओर इसको लगाया पस "टास्क" नामक प्रसिद्ध पुस्तकें तथा छोटे २ अनेक और ग्रंथ इसने बेसुरीतानम रचडाले—स ई १७८६ म ओलनीसे वेस्टनअंडरवुड नामक एक पासके गांवको उठगये और तीसरीदफे पागलहुये यहीं स ई १७९६ में इसकी परम मित्र मेम अनविनका देहांत हुआ जिससे इसकी बड़ाईखेद हुआ निदान ४ वर्ष शोकग्रसित जीकर स ई १८००

में इसने भी देहत्यागदी ६ वर्षकी उमरसे अर्थात् जबसे इसकी माता मरी इसको सदैव किसी न किसी आपत्तिमें रहिनापड़ा कभी कोई रिस्तेदार मए कभी नौकरी छोड़नापड़ी, कभी पागलहुआ और कभी किसी मित्रसे वियोग हुआ बचपनहीसे इसका हाल विलक्षण था, कभी तो बिलकुल पस्त हिम्मत होजाता जिससे चित्तमें अशांति और भय फैला रहिता था और कभी इस दर्जे साहस बढ़ आजाता कि सोचने लगता था कि मौतभी मेरा कुछ नहीं करसकती इसके लिखे पत्रोंसे ज्ञातहोताहै कि ये साफ दिल था और बनावटका लेशमात्र भी इसमें न था. तुच्छ बातोंको जोश भरी इबारतमें लिखनेकी इसकी शक्ति अद्य धारण थी इसके खतोंकी इबारत सरल साफी और मजाकरेदार है बहुधा स्त्रियों से इसकी मित्रता होनेके कारण लोग इसको जनानाबताते है, परस्त्रियां जना नेको धिक्कार करती है और मित्रता करती है तो मर्दनेसे इसलिये इसका जनाना होना सिद्ध नहीं

कौलादेवी–गुजरातके राजा रायकरणकी परमसुंदरी रानी थी स ई १२९७ में अलाउद्दीन खिलजीने गुजरात विजय किया इसी मारकेमें कौलादेवी उसके हाथ पड़ी जिसको उसने अपनी औरत बना लिया देवलदेवी इसीकी प्रसिद्ध सुंदरी बेटी थी जो स ई १३०६ में गुजरातसे पकड़कर आई और अलाउद्दीनके गुलाम मलिक काफूरसे विवाही गई

कौसल्या–(महाराज रामचन्द्रकी परम पूज्यमाता) इनके चरित्रोंमें धर्म और धीरजका पालन जो राम सरीखे पुत्रको वनजाते समय इन्होंने किया प्रधान है ये उत्तर कौशलके राजा रविसेनकी पुत्री थी रविसेनने अपना राज्य दशरथजीको दहेजमें दियाथा राम वनगमनसे सबलोग अत्यंत अप्रसन्नथे और यदि इशारा भी पाते तो तुरंत बिगड़बैठते और घोर उपद्रव होजाता पर कौशल्याजीके धर्म और धीरजके प्रभावसे कोई उपद्रव न होने पाया क्योंकि उस नीतिनिपुण माताने यही विचारा कि "राखौं सुतहि करौं अनुरोधू-धर्मजाय और बंधुविरोधू" कौशल्याजीमें उस सहज वैरको जो सौतोंमें हुआकरताहै मात्रामात्रभी नथी, वरन ऐसा स्नेह था कि जो सगोंमें होना दुर्लभहै जैसाकि रामजीके प्रति वनोवासके अवसरपर कौशल्याजीके इस वचनसे स्पष्ट प्रतीत होताहै

' जो केवल पितु आयसु ताता तौ जिनजाहु जानिबड़ि माता "
"जो पितुमातुकहेउ वन जाना तौ काननशत अवधसमाना"

अब इस नीतिपर ध्यान दीजिये कि कौशल्याजीने निजपुत्र रामको "पितुर्दशगुणा माता गौरवेणातिरिच्यते । मातुर्दशगुणा मान्या विमाता धर्मभीरुणा ' अर्थात् पितासे माताका दशगुणा गौरव और मातासे सौतेली माताका दशगुण अधिक गौरव रखनेको कितना सशोभित कियाहै धन्यहै कौशल्याजीके धीरज और

नीतिनिपुणताको कि उन्होंने सीता माता सरीखी पुत्रवधूको, इतना प्रेम होतेभी कि "जीवन मूरिजिमि जुगवतरहहूं दीपबातनहिं टारनकहहूं॥" मोहत्याग पतिव्रतधर्म निर्वाह करनेके लिये रामजीके साथ भेजादिया कौशल्याजीका वैर की जगह सौतोंसे अत्यंत प्रेम रखना इस बातसेभी सिद्ध है कि जब सुमित्राजीने रामवनवासकी खबरसुनी तब उन्होंने विकलहो निजपुत्रलक्ष्मणसे कहाकि

"तात तुम्हारि रामवैदेही पितराम सबभांति सनेही",
"जो पै सियरामबनजाहीं अवध तुम्हारि काजकछुनाहीं"

रामके वनको विदा होते समयकी कौशल्या महारानीकी दशा पाषाणाके हृदयको भी टूक २ करदेनेवाली है जब रामजी बनको जाने लगे तब कौसल्या महारानी यथा तु० कृ० रामायणे "बहु विधि विलपचरण लपटानी-परम अभागिनि आपुहिजानी। दारुण दुसह दाह उरव्यापा-बरणि न जाइ विलाप कलापा। फिरयहिदशा विधि बहुरि किमोरी-देखिहौं नयन मनोहर जोरी। सुदिन सुघटि तात कब होई जननी जिअत बदन विधुजोई

कृष्ण (अवतार) यदुवंशी वसुदेवके घर मथुरामें भा०कृ० ८ को देवकीके उदरसे अबसे ५ हजार पहिले अवतरेथे-बाबा नन्द तथा यशोदा रानीने आपका पालन पोषण गोकुलमें रहिकर किया जिसकी कथा लोकविदित है-आपके ईश्वरत्वका आभास अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा बचपनहीसे प्रगट होने लगा थी जिसका वृत्तांत भागवतादि पुराणोंमें वर्णित है-बचपनके खेलोंमें आपने अनेक ऐसे कार्य किये जो बड़े२शूर वीरोंसेभी होना असम्भव है बड़े होकर आपने अपने मातु मथुराके अन्याइ राजा कंसको बध किया और अपने नाना उग्रसेन को गद्दीपर बैठाया-मगधके राजा जरासन्धने अपने जामात कंसका बदला लेनेके लिये श्रीकृष्णजीपर मथुरामें चढ़ाईकी पर परास्त होकर मारागया-एक समय अत्यंत वृष्टि हुई जिससे सब मकान बहिगये तब आपने गोवर्धन पर्वत एक उंगलीपर उठाकर उसके तले ब्रजवासियोंको शरण देकर उनके प्राणोंकी रक्षा की और गिरिवरधारीनाम पाया-कौरवों तथा पांडवोंसे आपकी रिश्तेदारी थी-महाभारतकी लड़ाइ में आपने पांडवोंकी सहायता की और आपहीकी राजनीतिके प्रभावसे पांडवलोग कौरवोंकी वीर सेनासे जीतनमें समर्थ हुये भगवद्गीताका उपदेश इसी युद्धके अवसर पर आपनेअर्जुनके प्रति किया था-पश्चात् आप द्वारिकाको चलेगये और वहीं बस रहे-आपके १६००० रानी और ८ पटरानी थीं जिससे बहुत सन्तति उत्पन्न हुईथी और "यादव" कहिलातीथी-यादवोंमें आपसमें फूट पड़गइ जिससे वे सब आपसमें कट मरे-जब आप द्वारिकामें रहते थे तब सुदामा नामक १ दीन ब्राह्मण जो बाल्यावस्थामें आपका सपाठी रहथा दारिद्रतासे दुःखी हो आपके

में इसने भी देहत्यागकी ६ वर्षकी उमरसे अर्थात् जबसे इसकी माता मरी इसको सदैव किसी न किसी आपत्तिमें रहनापडा कभी कोइ रिश्तेदार मरा कभी नौकरी छोडनापडी, कभी पागलहुआ और कभी किसी मित्रसे विपाग हुआ. बचपनहीसे इसका हाल विलक्षण था, कभी तो बिलकुल पस्त हिम्मत होजाता जिससे चित्तमें अशांति और भय फैला रहता था और कभी इस दर्जे साहस बढ जाताथा कि सोचने लगता था कि मौतभी मेरा कुछ नहीं करसकती इसके लिखे पत्रोंसे ज्ञातहोताहै कि ये साफ दिल था और बनावटका लेशमात्र भी इसमें न था. तुच्छ बातोंको जोश भरी इबारतमें लिखनेकी इसकी शक्ति असाधारण थी इसके खतोंकी इबारत सरल सादी और मजेदार है बहुधा स्त्रियों से इसकी मित्रता होनेके कारण लोग इसको जनानाबतातेहैं, परस्त्रिया जनानेको धिकारत करती हैं और मित्रता करती है तो मर्दनेसे इसलिये इसका जनाना होना सिद्ध नहीं

कौलादेवी--गुजरातके राजा रायकरणकी परमसुंदरी रानी थी ई. स. १२९७ म अलाउद्दीन खिलजीने गुजरात विजय किया इसी मारधाड़में कौलादेवी उसके हाथ पडी जिसको उसने अपनी औरत बना लिया देवलदेवी इसीकी प्रसिद्ध सुंदरी बेटी थी जो स ई १३०६ में गुजरातसे पकडकर आई और अलाउद्दीनके गुलाम मलिक काफूरको विवाही गई

कौसल्या--(महाराज रामचंद्रकी परम पूज्यमाता).इनके चरित्रोंमें धर्म और धीरजका पालन जो राम सरीखे पुत्रको बनजाते समय इन्होंने किया प्रधान है ये उत्तर कौशलके राजा रविमंतकी पुत्री थी रविमंतने अपना राज्य दशरथजीको दहेजमें दियाथा रामचंद्रजीसे सबलोग अत्यंत प्रसन्नथे और यदि इशारा भी पाते तो मुल्क बिगड़बैठता और घोर उपद्रव होजाता पर कौशल्याजीके धर्म और धीरजके प्रभावसे कोई उपद्रव न होने पाया क्योंकि उस नीतिनिपुण माताने यही विचारा कि "राखौं सुतहि करौं अनुरोधू-धर्मजाय और बंधुविरोधू।" कौशल्याजीमें उस सहज सरकी जो सौतोंमें कुअवसरसांढ आमीमात्रभी नथी, वरन ऐसा स्नेह था कि स्त्री मात्रमें होना दुर्लभहै जैसाकि रामजीके प्रति बनोवासके अवसरपर कौशल्याजीके इस वचनसे स्पष्ट प्रतीत होताहै

'जो केवल पितु आयसु ताता तौ जिनजाहु जानिबडि माता"
'जो पितुमातुकहेउ बन जाना तौ काननशत अवधसमाना"

अब इस नीतिपर ध्यान दीजिये कि कौशल्याजीने निजपुत्र रामको "पितुर्दशगुणा माता गौरवेणातिरिच्यते । मातुर्दशगुणा मान्या विमाता धर्मभीरुणा" अर्थात् पितासे माताका दशगुणा गौरव और मातासे सौतेली माताका दशगुण अधिक गौरव रखनेको कितना उत्तेजित कियाहै धन्यहै कौशल्याजीके धीरज और

नीतिनिपुणताको कि उन्होंने सीता माता सरीखी पुत्रवधूको, इतना प्रेम होतेभी कि "जीवन मूरिजिमि जुगवतरहहूं दीपवातनहिं टारनकहहूं ॥" मोहत्याग पतिव्रतधर्म निबाह करनेके लिये रामजीके साथ भेजदिया कौशल्याजीका वैर की जगह सौतोंसे अत्यंत प्रेम रखना इस बातसेभी सिद्धहै कि जब सुमित्राजीने रामवनवासकी खबरसुनी तब उन्होंने खिन्नहो निजपुत्रलक्ष्मणसे कहाकि

"तात तुह्मारि रामवैदेही पिताराम सबभांति सनेही",
"जो पै सियरामवनजाहीं अवध तुह्मारे काजकछुनाहीं"

रामके वनको बिदा होते समयकी कौशल्या महारानीकी दशा पाषाणोंके हृदयको भी द्रव २ करदेनेवाली है जब रामजी वनको जाने लगे तब कौशल्या महारानी यथा तु० कृ० रामायणे "बहु बिधि विलपचरण लपटानी–परम अभागिनि अपुहीजानी। दारुण दुसह दाह उरव्यापा–वरणि न जाइ विलाप कलापा। फिरहिदशा विधि बहुरि किसोरी–देखिहों नयन मनोहर जोरी। सुदिन सुघटि तात कब होई जननी जिअत वदन विधुजोइ

कृष्ण (अवतार) यदुवंशी वसुदेवके घर मथुराम भा०कृ० ८ को देवकीके उदरसे अबसे ५ हजार पहिले अवतरेथे–बाबा नन्द तथा यशोदा रानीने आपका पालन पोषण गोकुलम रहिकर किया जिसकी कथा लोकविदित है–आपके ईश्वरत्वका आभास अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा बचपनहीसे प्रगट होने लगा था जिसका वृत्तांत भागवतादि पुराणाम वर्णित है–बचपनके खेलोंमें आपने अनेक ऐसे कार्य किये जो बड़े२शूर वीरोंसेभी होना असम्भव है बड़े होकर आपने अपने मामु मथुराके अन्याई राजा कंसको बध किया और अपने नाना उग्रसेन को गद्दीपर बैठाया–मगधके राजा जरासन्धने अपने जामात कंसका बदला लेनेके लिये श्रीकृष्णजीपर मथुराम चढ़ाईकी पर परास्त होकर मारागया–एक समय अत्यंत वृष्टि हुई जिससे सब मकान बहिगये तब आपने गोवर्धन पर्वत एक उंगलीपर उठाकर उसके तले बृजवासियोंको शरण देकर उनके प्राणोंकी रक्षा की और गिरिवरधारीनाम पाया–कौरवों तथा पांडवोंसे आपकी रिश्तेदारी थी–महाभारतकी लड़ाइ म आपने पांडवोंकी सहायता की और आपहीकी राजनीतिके प्रभावसे पांडवलोग कौरवोंकी वीर सेनासे जीतनम समर्थ हुये भगवद्गीताका उपदेश इसी युद्धके अवसर पर आपनेअर्जुनके प्रति किया था–पश्चात आप द्वारिकाको चलेगये और वहीं बस रहे–आपके १६०० रानी और ८ पटरानी थीं जिससे बहुत सन्तति उत्पन्न हुईथी और "यादव"कहिलातीथी–यादवोंमें अंतम फुट पड़गई जिससे वे सब आपसमें कट मरे–जब आप द्वारिकाम रहते थे तब सुदामा नामक १ दीन ब्राह्मण जो बाल्यावस्थाम आपका सपाठी रहथा दरिद्रतासे दुःखी हो आपके

पास पहुँचा, उसको आपने निहाल कर दिया-अंतसमय श्रीकृष्ण भगवानके पैरमें एक शिकारीका तीर लगा और परम धामको सिधारे अर्जुनने अंतेष्टी क्रिया की.

कृष्णा कुमारी—राना भीमसिंहदेव उदयपुराधीशकी कन्या सं० ई० १७९२ में पैदाहुई अत्यंत रूपवती और सुलक्षिणी थी-उसका मंदगमन, मृदुभाषण ऐसा मनोहर था कि बहुधा लोग उसे 'राजिस्थानका कमल' कहिते थे-प्रथम कृष्णाकुमारीका विवाह जोधपुरके राजाके साथ ठहिराया, परंतु विवाह होनेसे पहिलेही राजाका देहांत होगया निदान जयपुरके महाराजने उसके साथ विवाहके संबंधसे भेजे तिलक चढनेकी तय्यारी थी कि महाराज मानसिंहने जोधपुरकी गद्दीपर बैठकर रानासे कहिलाभेजा कि कृष्णाकुमारी पहिले हमारे भाईको ठहिरीथी, अब हम उनकी जगह हैं, अब उसकी शादी हमसे होनी चाहिये इसप्रकार जयपुर तथा जोधपुरके राजे विवाह करनेके लिये उपस्थित होगये और रानाको धमकाने लगे कि यदि कन्या दान न दोगे तो तुम्हारा राज्य विध्वंस करडालेंगे रानावंश पदवीमें और सबराजोंसे बड़ा मानाजाताथा पर समयके हेर फेरसे उसवक्त इनके सामना करनेका बल पौरुष नहीं रखताथा-दोनों राजाओंने अपनी सेना तथा पिंडारी इत्यादि अनेक लुटेरोंसहित रानाके राज्यमें जाकर लूट मार मचादीथी राना बड़ी दुविधामें था कि किसतरह पति बचे इस अवसर पर पिंडारियोंके सर्दार निर्दई अमीरखांने रानाको प्रचंड अग्निके शांति करनेका यह उपाय बताया कि कृष्णकुमारीको नष्ट करके सब झगडा मिटादिया जाय भावी बलवान राना इस म्लेच्छके मतमें आकर अपनी कन्याकी घोर हत्या कर नेको उद्यत होगया जब कन्याके मारनेके लिये किसीका हाथ न उठा तब विष देनेका विचार हुआ कर्तव्यके विषका प्याला पीनेके बाद वह निरपराधिनी कन्या सदैवके लिये सोगई उसने निजजननीका विफरहोते देख कहा था "माता ! क्यों दुखी होती हो, उचितही है कि मेरे पक्षके मारे जानसे पिताका राज्य बचे और प्रजाका भय दूरहो, पिताकी अत्यंत कृपाथी कि उन्होंने अभीतक जीतारक्खा, क्योंकि राजपूत तो अपनी लडकियोंको जन्मतेही मारडालतेहैं" कृष्णाकुमारीकी माता निजकन्याके शोकमें रोते२ पागल होगई और थोडेही दिनों बाद मरगयी

कृष्णचन्द्रसिंह [नदिया (बंगाल) के राजा] निज पिता रघुरामके बाद गद्दीपर बैठे और बादशाह दिल्लीसे हुक्मसे महाराजका खिताब पाया-इन्होंने चारोंसे पंडितोंको बुलाकर ४० लाखसे खर्चसे अग्निहोत्र और बाजपई यज्ञ किये, यहांसे अंतमें पंडितोंने "अग्निहोत्री बाजपेई श्रीमान् महाराज राजेंद्र कृष्ण

चन्द्रराय" की पदवी इनको दी-ये उन सब छात्रोंको,जो दूर२से नदिया शान्तिपुरमें न्यायदर्शन पढनेको आतेथे वजीफा देते थे और इसीकारण न दिया इनके समयमें न्यायदर्शनका देश विद्यालय गिना जाता था-इनके दर्बारमें बहुत पंडित विद्वान रहते थे, हजारों जागीर तथा मिल्के इन्होंने विद्वान लोगोंको दे रक्खींथीं-प्रसिद्ध पंडित कृष्णानन्द सार्वभौम के मर्यादिकतथा(आगमवगीश,)बंगालमें"काली-पूजा "तन्त्रसार" नाम पुस्तकके कर्ता इन्हींके दर्बारमें रहिते थे-महाराजकृष्णचंद्र सङ्गीततथा शिल्प विद्याकेभी अनुरागीथे, काशीमें ज्ञानवापीकूपके भीतर जानेके लिये सीढियां इन्होंने बनवाई थीं,स० ई० १७५७ में पलासीकी लडाईके अवसरपर सरकार अंग्रेजबहादुरकी मदद की थी जिसके बदलेमें "राजेंद्रबहादुर" की पदवी और १२ तोप मिली थीं जो अबतक नदिया राज्यवंशमें मौजूद हैं ७० वर्षकी वयम परमधामको सिधारे और आपके पुत्र शिवचन्द्रसिंह गद्दीपर बैठे

कृष्णदास (भाषाकवि-अष्टछाप) श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे व्रजके ८ सुप्रसिद्ध भाषाकवियोंमें इनकी गणना है-चौरासी वैष्णवोंकी वार्ताके लेखानु सार ये वर्णके शूद्रथे-वल्लभाचार्यने श्रीनाथजीकी सेवा गोवर्धनके शिखरपर पधरा कर वहांका प्रधान अधिकारी इन्हींको नियुक्त कियाथा-इनमें और गंगाबाई खत्रानीमें जो कवितामें अपनी छाप विठ्ठल गिर्धरिन रखतीथी स्नेह था, इसपर वल्लभाचार्यजीके पुत्र गो० विठ्ठलनाथजीने कुछ असन्तोष प्रकाश किया, कृष्णदा-सने इस बात पर चिढकर गोशाईजीकी श्रीजीद्वारमें ड्यूढी बंद करदी,एवं गोशाई जी६ महीनेतक गोवर्धनके तले परसोली ग्राममें पडे रहे-राजा बीरबलने यह समा चार सुन कृष्णदास को कैद कर दिया-गोशाईजीने यह खबर पातेही अन्न जल छोड दिया और हाय २ कर कहिने लगे कि "पिताके शिष्यको यह कष्ट"बीरब लको जब यह मालूम हुआ तब उन्होने कृष्णदासको कैदसे छुडा गोशाईजीके पास भेजदिया-गोशाईजी उनको आता सुन आगे बढकर मिले, कृष्णदासजी चरणों पर गिरपडे गोशाईजीने फिर उनको श्रीनाथजीके मंदिरका प्रधान अधिकारी नियत किया-अंतमे कृष्णदासजी एक कूपमें गिरकर मरे- ये बडे भक्त थे भक्तिभावकी इनकी अनेक कथानकें भक्तमालादि ग्रंथोंमें हैं निम्नस्थ ग्रंथ इन्हींके रचे हैं-गुरुधनचरित्र, पञ्चाध्याई, रुक्मिणीमंगल और प्रेम रसराज ! यह कृष्णदास साधु दूसरे थे जिनका वृत्तांत रीवानरेश महाराजा रघु राजसिंहकृत "रामरसिकावली" ग्रंथमें इस तरह लिखाहै कि उन्होने महाराज रघुराजसिंहके सामने अबसे ५० वर्ष पूर्व एक वैश्यके मृतक शरीरपर खडे होकर सितारके साथ सूरदासजीका निम्नस्थ पद गाकर मृतकको जिला दियाथा:-

पद-हमारे प्रभु अवगुण चित्त न धरो
समदर्शी प्रभुनाम तुम्हारो वैसेही पार करो
एक लोहा पूजामे राहतो एक तो जाय बधिक घर परो
सो दुविधा पारसनाहिं जानत कंचन करत खरो
एक नदिया एक नार कहावत मैलोही नीर भरो
सो जब जाय मिलत गंगामे सुरसरि नाम परो
एक माया एक जीव कहावत सूर श्याम झिगरो
कीयाको निर्वाह करो प्रभु नाहीं तो है प्रणजात टरो

कृष्णदैवज्ञ (ज्योतिषकार) ये काशीवासी बल्लालजीके पुत्र दक्षिणी ब्राह्मण थे और दिल्लीके बादशाह जहांगीरके दर्बारके प्रधान पंडित थे-निम्नस्थ ज्योतिष ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-भास्करीय बीजगणित टीका, नवांकुरा, श्रीपति पद्धति टीका और छादकनिर्णय एक दफे जहांगीरने इनसे राज्यके अहिमकों की सूची बनानेको कहा, तलाशकर ५० अहिमकोंके नाम इन्होने लिखे-जब बादशाहके साम्हने सूची पेशकरनेको चले तो सुना कि बादशाहने कुछ दिन हुये अजनबी सौदागरोंको एक लाख रुपया घोडोंके वास्ते दिया है, बस सूची निकाल पहिले नाम बादशाहका लिख लिया-बादशाहने देख कारण पूछा, पंडितजीने उत्तर दिया कि उससे ज्यादह कौन अहिमक होगा जो अनजान मुसाफिरोंको लाखों रुपये घोडोंके वास्ते दे दे बादशाहने कहा कि यदिवे घोड़े ले आय? पंडितजीने कहा कि तौभी अहिमकोंकी तादाद ५१ ही रहेगी क्युकि आपका नाम काटकर उनका नाम लिख दिया जायगा

कृष्णानन्दव्यासदेव (राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुमके संग्रहकार) बंगालके रहिनेवाले बडे महात्मा ब्राह्मण कवीश्वर थे इन्होंने रागसागरोद्भवमें सूरदास, तुलसीदास कृष्णदास, हरीदास, अग्रदास, तानसेन, मीराबाई, हितहरवंश विट्ठलनाथ, कुम्भनदास इत्यादि प्रायः दोसो वैष्णव कवियोंके पदसंग्रहकिये हैं-यह ग्रंथ कभी कलकत्तेमें छपा था और१०० रु में बिकता था, अब नहीं मिलता-वि० सं० १९०० में यह ग्रंथ संपूर्ण हुवा डा०राजेन्द्र लालमित्र लिखते हैं कि कृष्णानन्दव्यासगीत विद्यामें निपुण होकर हरवक्त मदमस्तसे गाते रहते थे लेकिन गानेबजानेका पेशा नहीं करते

क्रामवेल (आलीवर क्रामवेल-Oliver Cromwell) सर हेनरी क्रामवेलके घर स० ई० १५८८ में इंग्लैंड हंटिंगडन नामक नगरमें पैदा हुये-इनके माता पिता दोनोंहीका वंश प्रतिष्ठित था स० ई० १६२८ में इंग्लिस्तानकी पार्लियामेंटके मेम्बर किये गये-स०इ०१८३६में मामूके मरनेपर ५०० पौंड वार्षिक आमदनी भूसम्पत्ति इनको मिली-जब स० ई० १६४२ में इंग्लैंडके

बादशाह चार्लस प्रथम और पार्लियामटम झगड़ा हुआ तब ये पार्लियामेंटकी तरफ होकर बादशाही फौजसे लड़े और बादशाह चार्लसका शिर काटनेमें समय हुये–तदुपरात प्रजागणने इंग्लैंडका राज्य पञ्चायती ठहिराया, और क्रामवेलको उस पञ्चायती राज्यका सरपञ्च नियत किया–ये बड़े सुप्रबंधकर्ता साहसी और वीरपुरुष थे–स० ई० १६५८ में ज्वरसे पीडित होकर मरे–

क्लायव (लार्ड राबर्ट क्लायव–Lord Robert Clive) इन्होंने हिंदोस्तानमें अङ्गरेजी राज्यकी मूलरोपणकी बचपनमें पिताने इनको पढानेका अत्यंत उद्योग किया पर इन्होंने कुछ भी ध्यान न दिया निदान इनकी उद्दंडतासे थककर पिताने ईस्ट इण्डिया कम्पनीके दफ्तरमें ६०) रु० मासिकपर लेखककी नौकरी कराके इनको हिंदोस्तान भेजादिया–स०ई०१७४७में ये फौजमें भरती हो गये और तंजोरके राजाका किला विजय करके "कमीसेरीजेनरल" के पदपर तरक्की पाई पश्चात् इन्होंने शहर अर्काटको बडी वीरतासे लड़कर फरासीसोंके फुंगलसे बचाया–स० ई० १७५३ में जलवायु बदलनेके लिये इंग्लैंड गये २ वर्ष पीछे मदरासके गवनर नियत होकर हिंदोस्तानमें वापिस आये–स० ई० १७५७ में थोडेसे सिपाही लेकर पलासीके मैदानमें सिराजुद्दौला नव्वाब बंगालाकी विकराल सेनाको परास्तकिया,जिससे अंग्रेजोंका बल पराक्रम सबत्रदेशमें विदित होगया–इसीसमयसे हिंदोस्तानमें अंग्रेजी अमल्दारी की बुनियाद पड़ी क्योंकि इससे पहिले अंग्रेजलोग केवल व्यापारियोंकी तरह रहते थे और केवल थोडेसे सिपाही अपनी हिफाजतके लिये रखते थे–स० ई० १७५९ क्लायवने "डच" लोगोंको परास्तकिया और एकवर्ष बादही जलवायु बदलनेके लिये फिर इंग्लैंडगये–स० ई० १७६४ में गवर्नर जेनरल हिंद नियत होकर तीसरी दफे हिंदोस्तान को आये और ३ वर्ष इस पदपर रहिकर अन्तिम दफे इंग्लैंडको गये और पार्लियामेन्टमें हौस–आफ–कामन्सके मेम्बर होगये–७० हजार पौंड इन्होंने फौजके बीमारोंको दानकिया– स० ई० १७७३ में हौस–आफ– कामन्सने इनको यह दोष लगाया कि इन्होंने ईस्टइंडिया कम्पनीकी चाकरीमें अपने अधिकार का अनुचित व्यवहार किया–इसीबातके रंजमें इन्होंने स० ई० १७७४ में आत्मघात किया

खटाङ्गदलीप–अयोध्याके सूर्यवंशी राजा भागीरथका पुत्र था, इसने पिता– व ... ए समय देव और दानवोंकी लडा ईमें इसने देवताओंकी सहायता की देवताओंने इसकी वीरतासे प्रसन्न होकर कहा "वरमाँग "इसने कहा कि मुझे यह मालूम होजाय कि मेरी आयु कितनी है यह सुन देवताओंने तपोबलसे विचारकर कहा "तेरी अवस्थामें एकदिन शेष है " राजाने तुरंत एकाग्रचित्तहोकर तपस्या करना आरंभ किया और मोक्षपाई

खड्गसिंह–पंजाबकेशरी महाराजा रणजीतसिंहका ज्येष्ठपुत्र स० ई० १८३९ में निजपिताके देहांत होनेपर पंजाबकी गद्दीपर बैठा–इसने अपने पिताकी रानियोंको बड़ी २ जागीरें देनेका वायदा करके सतीहोनेसे बहुत रोका पर उन्होंने एक न माना सतीहोनेसे पेश्तर रानीकुंदनने ध्यानसिंह वजीरका हाथ मृतक महाराज रणजीतसिंहकी छातीपर रखवाकर यह कसम ली कि खड्गसिंहके साथ कभी दगा नहीं करूंगा और इसीतरह खड्गसिंहसे ध्यानसिंहके साथ दगा न करनेके लिये कसम ली परंतु खड्गसिंहका मन ध्यानसिंहकी तरफसे अनेक कारणोंसे महाराज रणजीतसिंहके जीतेजीही बिगड़गया था, एवं उसने गद्दीपर बैठतेही ध्यानसिंहका महिलाके अंदर जाना बंद करदिया–इस बातसे नाराज होकर ध्यानसिंहने सिक्खोंमें यह झूठा अफवाह उड़ा दिया कि, खड्गसिंह अंग्रेजोंको पंजाबमें लाकर इसकी, छ आना मुकर्रर किया चाहता है इस बातको सुनकर सब सिक्खलोग खड्गसिंहकी तरफसे फिर गये–पश्चात् ध्यानसिंहने छिपे २ खड्गसिंहके पुत्र कुँवर नौनिहालसिंहको पशावरसे बुलाया और उसको ऐसा सिखाया पढाया कि, उसने अपने बाप खड्गसिंहको कैद करवादिया और राजकाज खुद करने लगा–इसी अर्सेमें खड्गसिंह बीमारपड़ा और विरुद्ध दवा मिलनेसे जल्द मरगया–कहते हैं कि बीमार ध्यानसिंहने आप बैठके लिये इस कदर रोक दिये थे कि नौनिहालसिंह मरते वक्त भी अपने बापके पास नहीं गया लेकिन् खड्गसिंहकी लाश जलनेसे पेश्तर ही नौनिहालसिंहपर एक दरवाजा टूटकर गिरा जिससे वहभी मरगया–सत्य है स्वजनोंसे विरोधकरके गैरोंसे मिलनेवालोंकी यही दशा होती है

खफीखाँ (इतिहासकार) मुगलराज्यके उत्तरार्द्धकी एक विश्वासयोग्य तवारीख इसने फारसीमें लिखी है–बादशाह औरङ्गजेबका हुकम था कि, मेरे समयकी कोई तवारीख न लिखी जावे पर मीरमुहम्मदने औरंगजेबके समयमें अंदाजन ई० स० १७०० के लगभग छिपे २ एक तवारीख लिखी और इसीलिये "खफीखाँ" लकब पाया

खानखानाँ–देखो अबदुलरहीम खानखानाँ, बैरमखाँखानखाना

खुमान (भाषाकवि) चरखारी बुन्देलखण्डके वासी भाट जन्मांधहोनेके कारण कुछ लिखे पढे न थे–दैवयोगसे इनके घर कोई महापुरुष सन्यासी आये और ४ महीनेतक ठहिरे चलते समय अनेकलोग उनको विदा करनेके लिये दूर २ तक आये पर खुमान साथही चलगये और सन्यासीके समझानेपरभी न लौटे और कहिने लगे कि "महाराज हम अंधे अपढ, निकम्मे घरके किसी कामके नहीं हैं इसलिये आपहीकी सेवामें रहेंगे" सन्यासीने यह सुन खुमानकी जिह्वापर सरस्वतीमंत्र लिख दिया और कहा कि, हमारे कमंडलुकी प्रशंसामें कवित्त बनाओ खुमानने वहींही २५ कवित्त कमंडलु पर बनाये और सन्यासीके चरण छूकर घर

आये और संस्कृत तथा भाषा कविता करने लगे–पश्चात महाराजा सेंधियाके दरबारमें ग्वालियर गये, सेंधियाने रातभरमें एक संस्कृतग्रंथ बनानेकी आज्ञादी, एव इन्होंने रात्रिभरमें ७०० श्लोक बनाये–लक्ष्मणशतक और हनुमन नखशिख इनके रचे ग्रंथ हैं सं० वि०१७४०में विद्यमानथे–अमरकोषका भाषा छन्दोंमें उल्था करनेवाले सुमान कोई दूसरे थे

गणेश (ज्योतिषकार) भारद्वाजगोत्री गुजरब्राह्मण गोपालके पुत्र थे–इन के दादे कान्हजी गुजरातके राजाकी सभामें कवीश्वर थे–इन्होंने ३५ वर्षकी अवस्थामें "जातकालङ्कार" नाम जोतिषग्रंथ बनाया–जन्म इनका शाके १५०० में हुआ

गणेशदैवज्ञ (ज्योतिषकार) वि० सं० की १६ वीं शताब्दीमें हुये पश्चिम समुद्रतीरवर्ती नन्दीग्रामनिवासी पं० केशवके पुत्र थे माताका नाम लक्ष्मी था–निम्न रूप ग्रंथ इनके बनाये हैं–ग्रहलाघव (१४ वर्षकी उम्रमें बनाया), लघुतिथिचिन्तामणि, बृहत्तिथिचिन्तामणि, सिद्धांतशिरोमणिटीका, विवाहवृन्दावनटीका, महूर्ततत्त्वटीका, श्राद्धनिर्णय, सुधीरञ्जनतर्जनीयंत्र, कृष्णाष्टमीनिर्णय, होलिकानिर्णय, लीलावतीटीका और छन्दोर्णवटीका–गणेशदैवज्ञको इस देशके लोग गणेशजीका अवतार मानते थे

गदाधर (नैयायिक पंडित) वि०सं० की १७ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें बङ्गदेशमें हुये–रघुनाथ शिरोमणि रचित "दीधित" ग्रंथपर इन्होंने गदाधरी, व्युत्पत्तिवाद, शक्तिवाद इत्यादि ६४ वाद ग्रंथ रचे हैं–रसकुसुमाञ्जलि और बौद्धाधिकार की व्याख्या तथा अनेक और ग्रंथभी इनके बनाये मिलते हैं–इनकी विलक्षण बुद्धिको वेही जानसक्ते हैं जिन्होंने इनके गदाधरी आदि पूर्वोक्त ग्रंथोंको देखा है–

गफ (सर ह्यू गफ–Sir Hugh Gough) इंग्लैंडके रहिनेवाले वीरपुरुष सं० ई० १७९४ में अंगरेजी फौजमें भरती हुये–एकवर्ष बाद केप गुड होप विजय करनेके लिये भेजे गये–बादको पश्चिमी हिंदके अनेक द्वीपोंमें ब्रिटिशसेनाके अफसर रहे और तालवेराकी प्रसिद्ध लड़ाईमें घायल हुये–इसीतरह अनेक साहस पूर्ण काम करनेसे बढते२ सं०ई०१८३० में मेजर जेनरलके पदपर पहुँचे–सं०ई० १८३७ में इनकी बदली हिंदोस्तानको हुइ पर थोडेही दिन बाद सेनापति नियत करके चीन भेजेगये–वहां केन्टनके धावेमें जो बहादुरी इनसे हुइ उसके बदलेमें जी० सी० बी० की पदवी पाई–सं० ई० १८४० मे कमाण्डर–इन–चीफ नियत होकर पुन: हिंदोस्तानको आये–महाराजपुर,मुदकी, फीरोजशाह और सुबराउनकी लड़ाइयाँ जिनमें इन्होंने हिस्सा लिया–कम्पनीकी विजय हुइ इन्होंकी मौजूदगीमें हुइ थी सं० ई० १८४८ में पेन्शन लेकर इंग्लेंड गये–

सं० ई० १७७९ में जन्मे–

सं० ई० १८६९ में मरे–

गर्गपुरोहित-वास्तवमें क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे परंतु अपने शुभ आचरणोंके कारण ब्राह्मण होगये-इनके वंशज गार्गेय कहिलाये और उनकी गणना ब्राह्मणोंमें हुई इनके पिताका नाम रितथ था-गर्गसंहिता नाम ग्रंथ इनका बनाया हुआ है-ये श्रीकृष्ण आदि यदुवंशीयोंके पुरोहित थे

गलीलियो-(Galileo) इटेली निवासी एक अनुभवशील ज्योतिर्षी हुये हैं-दूरदर्शक यंत्र, सूक्ष्मदर्शकयंत्र, तथा थर्मामेटर (गर्मी नापनेका यंत्र) पहिले पहिल इन्होंने बनाया-२५ वर्षके उमरमें गलीलियो बाहिर पिसाके कालिजमें गणित अध्यापक हुये पश्चात नौकरी छोड़ घर आये-खगोल तथा ज्योतिष विद्यामें इनकी बड़ी रुचि थी, रातभर नक्षत्रोंको निरीक्षण करते थे स० ई० १६१२ में इन्होंने बृहस्पतिग्रहको पहिचाना और यहभी प्रकट किया कि पृथ्वी सूर्यके चारोंतरफ घूमती है-निजकृत दूरदर्शक यंत्रके सहारेसे इन्होंने बृहस्पतिके आस पास४ चन्द्रमा देखे और यह भी जाना कि चन्द्रमाकी तरह शुक्रभी रूप बदलता है औरकि आकाशगंगामें बहुत छोटे २ नक्षत्र हैं-अपने इन सब सिद्धांतोंको गलीलियोने पुस्तकाकार करके छपवाया, पादरियोंने पृथ्वीके घूमनेको अपने धर्मके विपरीत समझकर, मिथ्यामत फैलानेका इनको दोषी ठहिराया और ७० वर्षकी उमरमें इनको कैद करादिया परंतु १ वर्ष पीछे टस्कनीके राजाके कहिनेसे छोड़दिये गये-इसी मानहानिके शोकमें ७८ वर्षकी उमरमें अंधे होकर मर गये ज्यों २ विद्या और कलोंका प्रचार बढ़ता गया विचारशील विद्वानोंने इनके अनुभवों और सिद्धांतोंको जो इनके समयमें झूठे और धर्म विरुद्ध समझे जाते थे सच्चा पाया

स० ई. १५६४ में पैदा हुए
स० ई. १६४२ में मरे.

गांधारी-(कौरवोंकी माता) कंधारके राजा सुबलकी पुत्री थी विवाह इसका चंद्रवंशी महाराज धृतराष्ट्रके साथ हुआ था इसके पेटसे १ कन्या और १०० पुत्र जो कौरव कहिलाते थे, पैदा हुए-यह बड़ी पतिव्रता थी, अपनी आँखोंमें सदैव पट्टी बांधे रहिती थी, क्योंकि पति अंधा था और यह पतिसे बढ़कर किसी बातमें भी नहीं होना चाहती थी महाभारतकी लड़ाईके बाद जिसमें इसके सब पुत्र मारेगये तपस्या करनेके लिये पतिके साथ वनको चली गई और वहां आग लगनेसे पतिसहित जलकर मरगई

गिरिधर कविराय-जयपुरनरेश जयसिंहसवाईकी सभामें थे जाति के भाट थे महाराज जयसिंहने इनकी बुद्धिकी चमत्कारी देख कविरायकी उपाधि दी थी इनकी नीति सम्बंधी कुंडलियें विख्यात हैं प्राचीनमनुष्योंका कथन है कि, जिसको इनकी १०० कुंडलियें याद हों उसको मंत्रीके उपदेश

हेनेकी आवश्यकता नहीं रहिती इन्होंने कुंडलियोंका एक ग्रंथ लिखना आरंभ किया था पर समाप्तिसे पूर्वही इनका देहांत होगया, बादको इनकी स्त्रीने उस ग्रंथको पूरा किया जिन कुंडलियोंमें साई शब्द पड़ा है, वे इनकी स्त्रीकी कही हुई है

स० ई १७१३ में विद्यमान थे

गिरिधरबनारसी–देखो गोपालचंद्र कवि

गुणाढ्य–इन्होंने पिशाची भाषामें बृहत्कथा नाम ग्रंथ लिखकर दक्षिणदेश वर्ती प्रतिष्ठानपुरके राजा सत्यवाहनकी भेंट किया था, बृहत्कथाका संक्षेप सोमदेवने संस्कृतमें प्रांय स०ई ११२५ में किया और "कथासरित्सागर" नाम रक्खा

गुमानमिश्र–(भाषाकवि) भाषा साहित्यमें महानिपुण और संस्कृत विद्यामें परम प्रवीण थे–काव्य इन्होंने मिश्र सर्वसुखसे पढा था, प्रथम दिल्लीमें बादशाह मुहम्मदशाहके दर्बारमें (स ई १७१९–४८) राजा जुगलकिशोर भट्टके पास रहे, पश्चात् मुहम्मदीनरेश राजा अलीअकबरखाँके पास गये और उनकी आज्ञासे श्रीहर्ष कृत नैषध काव्यको श्लोक प्रति भाषा छन्दबद्ध करके "काव्यकलानिधि" नाम ग्रंथ रचा, और पचनलीको भी जो नैषधकाव्यमें कठिन स्थल है सलिल करदिया–इस ग्रंथके दर्शनसे गुमानमिश्रका पांडित्य विदित होताहै–"कृष्णचन्द्रिका" नाम ग्रंथ भी इन्होंने वि० सं० १७८८ में बनाया–जि०हरदोईके किसी गाँवके रहिनेवाले थे

गुरुदत्त–(ए गुरुदत्त विद्यार्थी एम् ए) इनके पिता मु० रामकृष्ण, पंजाबके रहिनेवाले मिडिल स्कूल झंगमें ६०) मासिकपर शिक्षक थे गुरुदत्तने गवर्नमेंट कालिज लाहौरसे स० ई० १८८७ में एम् ए. का इम्तिहान पास किया, बी ए और एफ् ए के इम्तिहानोंम यूनीवर्सिटी भरम अव्वल आये थे–थोड़े दिनके लिये इन्होने गवर्नमेंट कालिज लाहौरमें विज्ञानके असिस्टेन्ट प्रोफेसर तथा प्रोफेसरके पदपर काम किया पर यह नौकरियां चंदरोजह थीं फिर इन्होने "वैदिक मेगजिन" नामक एक पत्रिका निकाली जिसको सवमान्य और परम उपयोगी बनानेके लिये इन्होंने वेद, उपनिषद् और अनेक धर्मशास्त्र ग्रंथ थोड़े ही कालमें घोर परिश्रमकरके पढ लिये,ये शुरुहीसे गणितशास्त्रमें ऐसे तीव्र थे कि बड़े २ सवाल जबानी हल कर लिया करते थे और सैकड़ा नाम बिना किसी क्रमके सुनकर फिर सुना दिया करते थे बुरी संगतिसे बचते थे और बेहूदा बातचीत कभी नहीं करते थे मांसभक्षणका निषेध करते, पुष्टदायक भोजन खाते, और कसरत किया करते थे प्रथम कन्हैयालाल अलखधारीकी किताबें पढकर नास्तिक होगये थे, पश्चात आर्य्यसमाज लाहौरमें दाखिल होकर इनके ख्याल बदलगये थे, दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालिजलाहौरका चंदा दयाने तथा

साहिब बनाई औरंगजेबसे इनकी सख्त लड़ाई हुई जिसमें हजारों सिक्ख और इनके २ पुत्र काम आये ये भी देश छोड परदेश बहुत दिनातक धर्मोपदेश करते हुये भ्रमण करते रहे बंदानामक फकीरको जिसको बंदी गुरु, कहते हैं इन्होंने उपदेश करके पंजाबमें अपने बाप और बच्चोंका बदला मुसल्मानोंसे लेनेके लिये भेजा था बंदा साहिब जब पंजाब आये तो लाखों सिक्ख जो अपने गुरुके नुकसानों पर आंसू बहा रहे थे हथियार ले २ कर निकल पडे—फिर तो बन्दा साहिबने मुसल्मानोंकी यह गत की कि, न कहना बेहतर है, नाकचने चबा दिये, लाखों औरत मर्द बच्चे बुड्ढे काट डाले—गाँवके गाँव फूंक दिये माल लूटलिया बडे २ मकान ढादिये—जब गुरु गोविंदसिंहने बंदाकी कर्तूत सुनी तो यही कहा "वाह गुरुकी इच्छा!" गुरु गोविंदसिंहको उनके मुसल्मान नौकरने छुरी भोंककर मारडाला गुरुने मरनेसे पेस्तर फरमाया कि "गुरुआकी परम्परा हमसे खतम है हमारे पीछे केवल ग्रंथ साहिबही गुरु करके माने जाँयगे

सं० ई० १६६६ में जन्मे
सं० ई० १७०७ में मरे.

गोरखनाथ(गोरक्षनाथ)—ये योगशास्त्रके प्रसिद्ध सिद्ध हुये है बहुतोंका विश्वास है कि, अभी जिन्दह हैं, महाराज भर्तृहरी इन्हींके उपदेशसे योगी हुये, नागालोग इनके आधिक चेले हैं और नेपालके रहिनेवाले इन्हींके नामसे गोरखिया कहिलाते है गोरखपुर इन्होंका बसाया हुआ है और वहां इनका एक मन्दिर अभीतक विद्यमान है ये गुरु जलंधरके शिष्य थे तंत्रविद्याका सिद्ध इनके समान आजतक दूसरा नहीं हुआ अनेक संस्कृतग्रंथ इन्होंने बनाये थे जिनमेंसे कामशास्त्र अबतक मिलता है * नाथ तथा ८४ सिद्धोंमें इनकी गणना है, ये तनु पर विभूति रमाये, सिद्धरूप बनाये, दिगंबर वेष किये, हाथमें कमण्डलु लिये, शृंगीनाद बजाते, निष्पापहिय पाद्र नियलकरतेये रुपेटे वगैरह अबतक गुरुगोरखनाथकी दुहाई अपने मंत्रोंमें लगाते हैं

गोल्डस्मिथ—(आलीवर गाल्डस्मिथ-Oliver Goldsmith) ये अंग्रेजी कवि आयर्लैंडके लांगफोर्ड प्रदेशांतर्गत पैलसके रहिनेवाले थे प्रथम ट्रिनिटी कालिज डबलिनमें इन्होंने शिक्षा पाई, पश्चात डाक्टरी पढने एडिनबरानगर को गये, फिर डाक्टरी छोड़ कानून पढने लगे लेकिन् कानूनकाभी अधूराही छोड़ा सं० ई० १७५५ में जेबमें केवल एक गिनी (१५ ८० भरका सिक्का), पीठपर एक कुर्ता और हाथमें बँसुरी लिये हुए एकएक अनेक देशोंकी यात्रा लिये पैदल निकले—इस यात्रासे लौटकर ऐडन नगरमें ठहिरे और स्कूलमास्टरी करली, समाचारपत्रोंको मजमूनभी लिखा करते थे पश्चात् एक साप्ताहिकपत्र जारी किया लेकिन् वह चला नहीं—उसके बाद गोल्डस्मिथने स्वरचित "वीनीवका"-की स्तुति जानिय "वकलियरूजर" नामक समाचारपत्रमें छापनेको भेजा.

सं० ई० १७६५ में सौंदर्यसे परिपूर्ण इनका रचा एक उपन्यास छपा जिसकी बिक्रीसे इनकी हालत माकूल होगई पर इनको स्वाभाविक लापर्वाही, बेहूदगी और जुआ तथा शराबपीनेकी ओर रुचि होनेके कारण सर्दव अनेक आफतोंमेंही पड़ा रहिना पड़ा यह शराबखानों और चंडूखानोंमें पड़े रहिकर १। २ पैसे पर अपनी पद्य रचना सुनाया करते थे इसीसे इनकी इज्जत न हुई-इनके बाप पादरी थे, जिनसे ४० पौंड वार्षिक आयकी जायदाद इनको मिली थी-डिज़र्टेड विलेज (उजाड़गांव) और ट्रेवलर (पथिक) इत्यादि अनेक ग्रंथ इनके रचे रोचक और एलिस हैं-इबारत साफ सादी और सरल है-विचार प्रहसन नम्रता और खूबीसे युक्त हैं-सं० ई० १७७४ में लंदनमें मरे.

गौतमऋषि-(न्यायदर्शनकार)इनका दूसरा नाम शतानन्द था-पितृमेधसूत्र तथा सामवेदके गृह्यसूत्र इन्होंने रचे थे और न्यायदर्शन शास्त्रभी इन्होंने निर्माण किया था-इनका समय सांख्यदर्शनकार कपिलसे प्राय २००वर्ष पीछेका है-सामवेदीय धर्म सूत्रभी इनके कहे मिलते हैं-भूमण्डलपर ये सबसे पहिले न्यायशास्त्रके आचार्य हुये और इन सरीखा दूसरा "न भूतो न भविष्यति"-इनकी स्त्री अहल्या और राजा इंद्र तथा चन्द्रमाके मुर्गा बनकर बोलनेकी पुराणोक्त अलंकाररूप क कथा जगत्प्रसिद्ध है

गौतमबुद्ध-देखोबुद्ध

गंगकवि-(भाषा कवि) जिला इटावाके रहिनेवाले ब्राह्मण सं०ई० १५९५ में जन्मे थे,पूरानाम गंगाप्रसाद था अकबरके दर्बारमें इनका बड़ा आदर सत्कार होता था कविता करनेकी शक्ति दैवी थी, इनके बनाये पद्य अत्युत्तम होते थे जिसके विषयमें प्रसिद्ध है कि,

दोहा-उत्तम पद कवि गंगको-उपमा को बलबीर।
केशव अर्थ गंभीरको-सूर तीन गुणधीर॥

बादशाह अकबर, अब्दुलरहीम खानखानाँ तथा जयपुरनरेश मानसिंहने इनको अनेक अवसरोंपर बहुत कुछ इनाम दे २ कर निहाल किया था और बहुने इनको छप्पयमें १ लाख रु०इनाम दियाहीथा अकबरके बाद जहांगीरने भी दिल्लीके तख्तपर बैठकर इनको कईदफे इनाम दिया था एकदिन ये जहांगीरको कवित्त सुना रहे थे जहांगीर उस वक्त अपने पाइजामेमें हाथ डाले गुप्त स्थानको खुज ला रहा था, यह देख गंगने कहा "बादशाह सलामत, कवीश्वरोंके कवित्त सुन कर मर्दोंका हाथ मूंछपर जाता है, आप यह क्या कर रहे हैं "इस बातसे चिढ़कर जहांगीरने कवि गंगको हाथीसे चिरवाडाला-यह देख दर्बारके अमीरोंने शोक किया और बादशाहसे अर्जकी कि, गंगके समान दैवीशक्ति रखनेवाला दूसरा कवि पैदा नहीं होगा, बादशाहने भी अफसोस किया और गंगके १० वर्षके

छड्केको अपने दरबारमें गुलखाना-इस मसेने दरबारमें आतेही बादशाहका निम्नस्थ पद सुनाया और फूट २ कर रोता हुआ लौट गया-

गां_को हत कहा-कल्लरको खेत कहा
वेश्याको विश्वास कहा गुप्त बात पाइये
रोगके रुपैयाको कहांली परखाइये
सोसे कहा गां_नको गही ठहिराइये
गुलामनके गुलाम ..तियाके बादशाह
कवि गंगसे गुणीको क्या जंगसे चिराइये

गंगेशउपाध्या-(नैयायिक पंडित) इन्होंने न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों का सारांश लेकर चारभागोंमें चिन्तामणि ग्रंथ रचा-यह ग्रंथ ऐसा उपयोगी है कि इसने अल्पकालहीमें न्याय वैशेषिक आदि प्राचीन ग्रंथोंका तिरस्कार कर दिया-इस ग्रंथपर उत्तरोत्तर क्रमसे १० तिलक रचेगये हैं-गंगेशजी उत्तमकुल मैथिल ब्राह्मण थे प्रसिद्ध पंडित वर्धमान उपाध्या इनके पुत्र थे

ग्लैडस्टोन-(The Right Hororable William Gladstone) महाराणी विक्टोरियाके समयमें यह बहुतदिनतक प्रधान मन्त्री रहे-इनकी राजनीति ऐसीथी कि जिससे शत्रुभी इनकी प्रशंसा करते थे वर्तमानकालके सुप्रसिद्ध राजप्रबंधकर्ताओं तथा उपदेष्टाओंमें इनकी गणना है-महाराणी विक्टोरियाकी इनपर पूज्य बुद्धि थी-येबड़े उच्चस्वरसे वक्तृता देते थे जिसका प्रभाव तुरंत चित्त पर पड़ताथा,बड़े योग्य परिणामदर्शी और विचारशील थे-६४ वर्ष बराबर पार्लीमेंटके मेम्बर रहे-सदैव सोचसमझविचारसे रहते थे, चालढाल सादी थी इतने वृद्ध होगये थे पर परिश्रम करनेकी बान नहीं छोड़ते थे-ऐसे इनमें रहितेरजब थक जाते तो अपने ग्रामकी चर्चगाका में चलेजाते और वहां १० । १५ दिन रहिकर शाहबलूतके दरख्त काटाकरतेथे जिससे उनके बदनमें खूब फुर्ती और चुस्ती आजाती थी-इतने अमीरहोनेपर भी रहिन सहिन इतनासादा था कि बहुधा पैदल चलतेथे-होमरूल इत्यादिके कारण इनकी बहुत प्रसिद्धी हुई-यह उदारविचारों के पुरुष थे-आयर्लैंडवालोंको पृथक् पार्लीमेंट देनेकी तयार इन्होंने प्रगट की थी यह अंग्रेजीग्रंथभी रचे थे-लिवरपूलके एक सौदागरके घर स०ई०१८०९में जन्मे स० ई० १८९८ में मरे

ग्वाल (भाषा कवि) मथुराके रहिनेवाले भाट स० ई० १८०० में विद्यमान थे, साहित्यमें परमचतुर थे निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-

नखशिख, गोपीपच्चीसी, यमुनालहरी, साहित्यदूषण, साहित्यदर्पण, भक्तिभाव, शृंगारदोहा, शृंगारकवित्त, हमीरहठ इनके सिवाय २ ग्रंथ इनके संग्रहीत भी मिलते हैं-नीचे लिखा प्रसिद्ध दोहा इन्हींके हमीरहठका है-

दोहा–सिंहगमन सापुर्षबचन–कदली फल एकबार
त्रियातेल हमीरहठ–चढे न दूजी बार

घटकर्पर–ये विद्वान् महाराज विक्रमादित्य हर्ष उज्जैनवालेके दर्बारके नवरत्नोंमेंसे था इसने एक ग्रंथ संस्कृत पद्यमें, जिसमें वर्षाऋतुका मनोहर वर्णन है, अपने नामसे रचा था ये वर्णके ब्राह्मण थे.

घाघ–(भाषा कवि) जिला कानपुरके किसी गांवका रहिनेवाला कान्य कुब्ज ब्राह्मण वि० सं० १७५३ में विद्यमान था इसके बनाये दोहे, छप्पय, लोकोक्ति, ग्रामीण बोलचालमें विख्यात हैं–घाघशब्द आजकल चतुरपुरुषवाची होरहा है, निम्नस्थ दोहा इसीका है–

दोहा–ढीलोबेंट कुल्हाडी औरे–हसके मांगे दम्मा
ये हो करके मार बुलावें–घघ्या तीन निकम्मा

चङ्गेजखाँ–(तातारका बादशाह) इनका बाप पिस्केखाँ मुगल सर्दार इसको १३ वर्षका छोड़कर मरगया था २० वर्षकी उम्रमें इसने वांगखाँ तातारी सर्दारकी बेटीसे शादी की, यह बात और सर्दारोंको बुरीलगी, एवं उन्होंने वागखाँपर चढाई की, पर चङ्गेजखाँने मदद करके उसको बचालिया, पश्चात् वाग खाँने कृतघ्नी होकर चङ्गेजखाँके पकड़नेका इरादा किया, परचङ्गेजखाँने उसको परास्तकर मारडाला और तातारका तख्त अपने कब्जेमें करलिया–फिर चङ्गेजखाँने निजसेनाका सुधार किया, जिसमें छः लाखसे अधिक सिपाही भरती किये और उत्तरीय चीन तथा तातार प्रदेशान्तर्गत अनेक देशोंको जीता इस तरह तातारके छोटेसे राज्यको पूरब पश्चिम ६ हजार मील और उत्तर–दक्षिण ३ हजार मीलम फैलाया ऐसा बृहत राज्य इतनी शीघ्रतासे किसी दूसरे बादशाहने आजतक नहीं विजय किया–स० ई०१२१७में हिंदोस्तानपर हमला किया और ईरानसे लेकर सिंधु नदीके किनारेतक जो साम्हने पड़ा उसको मारडाला शहर तथा गांव जलादिये और लूटलिये–जब चङ्गेजखाँ पूरबी देशोंम विजय प्राप्त कर रहा था उसने अपने प्यारे पुत्रके मरनेकी खबरपाई जिससे उसको बड़ा शोक हुआ और ज्वर आगया अंत समय उसने अपने सब पुत्र पौत्रादिकोंको बुलाकर कहा कि सब मिलजुलकर रहना,ऐसा न हो कि,आपसके बिगाड़से राज्य नष्ट होजाय, ये बड़ा विजयी निर्दयी रणकुशल और कानून बनानेम दक्ष था

स० ई० ११६२ में जन्मा
स० ई० १२२७ मे मरा

चतुर्भुजदास–(भाषाकवि–अष्टछाप) गोस्वामी विट्ठलनाथजीके शिष्य थे और श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य कुंभनदासके सप्तमपुत्र होकर जमनावते ग्राममें रहने-

चाले थे–इनकी भक्तगौरवा थी–ये पिता पुत्र अत्यंत धनहीन थे और बड़े सुकवि ए साधु महात्माओंके यथाशक्ति सनमानी थे–इनके बनाये अनेक पद जो भक्ति भावसे भरपूर हैं, कृष्णानंदव्यास देवकृत रागसागरोद्भवमें है

चंदा–(पंजाबकेशरी रणजीतसिंहकी सबसे छोटी रानी) महाराज रणजीत सिंहके मरते समय इसकी उम्र बहुत छोटी थी और इसका पुत्र दलीपसिंह दूधमुंहा था सं०ई०१८४३ मे दलीपसिंह ५ वर्षकी उम्रमे गद्दीपर बैठा–हीरासिंह और जवाहिरसिंह क्रमशः दीवान नियत हुये और फौजके सिपाहियोंके हाथसे मारे गये–तब तो रानीने दर्बारमें बैठकर राजकाज करना स्वयं आरंभ करदिया और लाल सिंहको दीवान नियत किया–लालसिंहपर रानीकी विशेष कृपाथी, पर यहां रानीके दोषोंको छोड़, जो स्त्रीमें स्वतंत्र होनेसे पैदा होजाते है, उसकी बुद्धिमानी हीका वृत्तांत लिखनेसे प्रयोजन है–रणजीतसिंहके बाद खालसा फौज बड़ी उपद्रवी होगई थी इसलिये दूसरी ओर ध्यान बटानेकेलिये रानीने फौजको ब्रिटिश अंग्रेज सरकारसे लड़नेके लिये भेजा–यथार्थ में इस कार्यवाहीसे रानीका विचार अंग्रेजोंसे लड़नेका न था बरन इस बहानेसे उपद्रवी फौजको नष्टकराके अपने प्राण और राज्यकी रक्षा करनेका था–फौज तो आधीसे अधिक कटमरी पर पंजाबमें अंग्रेज रजीडेंट मुकर्रर किया गया रानीको राजकाजसे अलहिदा करके डेढ़लाख रुपये वार्षिक पेन्शन् दीगई और लालसिंहको २ हजाररुपया मासिक पेन्शन देकर रानी से अलहिदा होकर बृटिशराज्यमें बसनेका हुकम दियागया–यह बात रानीको पसंद न आई एवं उसने बृटिशराज्यकी दुश्मन बनकर काबुल, कंधार, काश्मीर और राजपुतानाके सबराजाओंको अपनीतरफ मिलाया और अंग्रेजोंकी सिक्ख फौजको बिगड़नेके लिये उकसाया उससमय कोई सिक्ख सर्दार ऐसा नहीं था कि जिसके दिलमें यह उपाय न पैदाहोगया हो कि अवश्य सिक्खोंका झंडाफिर फहरावे–पर ठीक समयपर यह भेद खुलगया, रानीकी पेन्शन घटाकर ४ हजार करदीगई और उसको कैदकरके बनारस भेजदियागया–वहांसे रानी शियाजो मरद टेकीतरह टोकरेमें छिपकर निकलभागी और नेपाल पहुंची–नेपाल दर्बारने उसका १ हजार मासिक पेन्शन नियत की और बाकी उम्र उसने यहीं काटी–बृटिश गवर्मेंटने नेपालदर्बारको हठपूर्वक रानीके वापिस करनेको लिखा पर उक्तदर्बारने साफ जबाब देदिया कि "शरण आयेहुयेको अशरण करना हमारे धर्मके विरुद्ध है बृटिश गवर्नमेंटको इससे कुछ भय नहीं रखनाचाहिये हम उसकी पूरी खबरदार रक्खेंगे"

चंद्रासाहिब–(नवाबकर्नाटक) कर्नाटकके नवाबकी लड़की इसकी विवाहिता थी–कर्नाटकमें आरकेमें इसके समान वीर पुरुष कोई दूसरा नथा–सं०ई० १७३६ में ट्रिचनापलीका राज्य इसने जबर्दस्ती छीन लिया–सं०ई० १७४१ में मरा

रहने के साथ पकड़गया और सतारा के किलेमें कैदकियागया—फरासीसी गव-र डूप्लेसाहिबने इसे कैदसे छुड़ाकर कर्नाटककी गद्दीपर बिठलाया—सं०ई० ७५२ में मरहट्टोंने इसका शिर काटडाला

चंदबर्दाई—(कविचंद) दिल्लीके अन्तिम हिंदूपति महाराज पृथ्वीराजका धान मंत्री तथा राजकवि जातिका भाट असलमें लाहौरका रहनेवाला था—इसके पुरुषभी कवीश्वर थे और अजमेर तथा रणथम्भोरके चौहान उनके यजमान थे चंदच-। सं० वि० ११२० में रणथम्भोरसे दिल्लीआकर पृथ्वीराजके दर्बारमें उच्चपदको प्राप्तहुआ—कवीश्वरहोनेके सिवाय बुद्धिमान, धीर, चतुर, रणकुशल, नीतिज्ञ और स्वामिभक्तभी था और विद्वानहोनेमतो कुछ शकही नहीं सबलड़ाइयोंमें महाराज पृथ्वीराजके साथही रहा—इसका बनवाया एक कुँवा अबतक कूंचजिला हमीरपुरमें है यह उसवक्त बनवायागया था जब राजापरमालके साथ युद्धमें घायलहोकर पृथ्वीराज कूंच में ६ महीनेतक पड़ारहा था—चंदका ज्येष्ठपुत्र कवि जल्ह पृथ्वीराजकी बहिन पृथाबाई के दहेजमे चित्तौड़के राना समर्सीको दियागयाथा—जल्हकी संतति अबतक मेवाड़में है और वहांके राज्यमें उसकी प्रतिष्ठा है—कहतेहैं कि कविचंद और पृथ्वीराजका जन्म तथा मरण साथ २ एक ही दिनहुआ—पृथ्वीराजका जन्म वि० सं० १२०५ में और मृत्यु वि० सं० १२४९ में हुई चंदने पृथ्वीराजके वृत्तांतमें " पृथ्वीराजरायसा" ग्रंथरचकर स्वामिभक्तिका पूर्ण परिचय दियाहै—१ लक्ष श्लोकोंका यह ग्रंथ ६९ खण्डोंमें विभागित है—इसमे पृथ्वीराजके जीवनकालकी मुख्य घटनायें, क्षत्रियोंकी वंशावली, आबूपर्वतका माहात्म्य, दिल्ली इत्यादि राजधानियोंकी शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव, चलन व्यवहार आदिका विस्तारपूर्वक वर्णनहै—यह ग्रंथ वीररससे परिपूर्ण है—भाषा इसकी प्राकृतके अन्तिमरूप और हिंदीके आदिरूपसे मिलतीहै—इसमे दिये सन् संवत् आनन्द विक्रमीसंवतके अनुसारहैं—आनन्द विक्रमीसंवत् प्रचलित विक्रमीसंवत्से ९० वर्ष पूर्व शुरूहोताहै कवि चंदके १२ पुत्र थे

चन्द्रगुप्त—(मगधनरेश) महाराज नन्दका पुत्र मुरानामक नाइनके पेटसे था इसकी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) में थी प्रसिद्ध पंडित चाणक्यने तिरस्कृत होकर महाराज नन्दको ८ पुत्रों सहित नाशकिया और चन्द्रगुप्तको गद्दीपर बिठलाया और आप प्रधान मंत्री बना चन्द्रगुप्त बड़ा धीर वीर पुरुष था,उसने भारतवर्षसे परदेशियोंको निकाल दिया था यूनानके बादशाह सेल्यूकसने उसपर चढ़ाई की पर हारकर अपनी लड़की,५००हाथी तथा सिन्धनदीके किनारेका मुल्क देकर संधि करली और मैगेस्थनीज् नामक राजदूतको पटनाके दर्बारमें छोड़कर यूनानको लौटगया इस राजदूतने अपनी पुस्तकमें चन्द्रगुप्तके राज्य प्रबंधका सविस्तर वृत्तांत लिखाहै जिसका सारांश यह है कि पटना उस समय अत्यत

रमणीक शहिर्र था सफाइ तथा पुलिसका प्रबंध अच्छाथा, रथोंमें ... घोड़े और चलते समय बैल जोते जाते थे सड़कोंका जीर्णोद्धार होता रहता था और खेत सींचनेके लिये नहिरें जारी थीं जमीनकी पैदावारसे चौथा हिस्सा राजकोशमें जाता था फौजमें ६ लाख पैदल, ३० हजार सवार और ८ हजार हाथी थे इसका पुत्र बिन्दुसार इसके बाद गद्दीपर बैठा प्रसिद्ध बौद्ध मतानुगामी राजा अशोक इसका पौत्र था

सं० ई० से ३१५ वर्ष पूर्व गद्दीपर बैठा
सं० ई० से २९१ वर्षपूर्व मरा

चन्दनराय–(भाषा कवि) पुवायां जिला शाहजहाँपुरका रहिनेवाला भाट महा विद्वान् और संतोषी था और राजा केशरीसिंह गौड़के यहां रहता था केशरीप्रकाश, शृंगारसार, कल्लोलतरङ्गिणी, काव्याभरण, चन्दनसतसई और पथिकबोध इत्यादि ग्रंथ इसके बनाये हुये हैं–मनभावन आदि इसके ११ शिष्य महा कवि हुये हैं, चन्दनराय पुवायां छोड़ कहीं नहीं गया–एक दफे किसी बुन्देल खण्डी राजाने इसको बुलवाया था पर ये नहीं गया और निम्न दोहा लिखकर भेज दिया–

दोहा–चन्दन ... खरतुआ खारीनोन संयोग।
पेतो जो घरही मिलै चन्दन छप्पन भोग।

वि०सं० १८१० में विद्यमान था

चरकमुनि–(चरकसंहिताके रचयिता) कहिते हैं कि आयुर्वेदके प्रणेता चरक, सुश्रुत और वाग्भट, तीनो धन्वंतरि वैद्यके शिष्य थे चिकित्सा ग्रंथोंमें चरकसंहिता सर्वोत्तम है यथा–"निदाने माधवः श्रेष्ठः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः। शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तःचरकस्तुचिकित्सके" चरकके बिना पढे अन्य सैकड़ों ग्रंथोंके अवलोकनसे भी वैद्य निपुण नहीं होसकता,यहांभी है "चरकःसा लोचितो येन स वैद्यो धर्मकिंकरः" चरकसंहिता निम्नस्थ ८ भागोंमें विभागित है–सूत्रस्थान, निदानस्थान,विमानस्थान, शरीरस्थान इन्द्रियस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, और सिद्धिस्थान इनका समय बहुत प्राचीन है पर आर० सी० दत्त सी० यस स्वरचित भारत इतिहासमें इनका सं० ई० से छठे शतक में होना सिद्ध करते हैं–चरकसंहितापर चक्रपाणि व्याख्यान प्राचीन हैं और विक्रमकी १२ वीं शताब्दीसे पूर्वकी मालूम देती है

चरणदास–(भाषाकवि) इन्होंने नारायणके भजन, स्मरण, ध्यान और गुणानुवादमें एक बड़ा ग्रंथ "चरणदाससागर" बनाया है और "स्वरोदय" नामकी एक छोटीसी पुस्तक भी, जिसमें २२७ छन्द हैं और जिसका साधन बहुत ज्ञानी, ध्यानी, योगी, जती लोग करते हैं इनकी रचित है, ये डेहरा ग्राम

ारियासत मळवरके रहनेवाले मुरलीधर दूसर वैश्यके पुत्र वि० सं० १७६० में ा जन्मे थे इनका नाम पहिले रणजीत था और एक पेरसे लंगड़े थे–कुछ बड़े हो- ि कर माताके साथ अपने नानाके घर दिल्ली गये–दिल्लीमें एक दिन कोइ महात्मा ा मिल गये, उनके पैर इन्होंने पकड़ लिये और कहा "प्रभो! मुझ अपंगको पार ा लगामी मैंने आपके चरणोंकी शरण ली है" महात्मा इनको कंधेपर रखकर कुछ दूर लेगये और चरणदास नाम रखकर अपना परिचय दिया और राम मंत्रका उपदेश किया

दोहा–गुरु शुकदेव मंत्र यह दीना राम नाम तत्सारा।
चरणदास निश्चयसे जपके उतरै भवनिधि पारा ॥

गुरूपदेशके प्रभावसे चरणदासजी कुछ दिन बाद बड़े महात्मा हुये, बहुतसे इनके शिष्य हुये जिनकी परम्परा दिल्ली, लखनऊ, बांदा आदि नगरों मे अबतक चलती है–इनके मतानुगामी फकीर चरणदासी कहिलाते हैं दिल्लीमेंही वि० स०१८३९ में इनका देहांत हुआ–जहां दाह दीगई थी वहां इनकी समाधि बनी है और उसपर हर बसंत पंचमीको मेला होताहै

चांदबीबी–अहिमद नगरके नव्वाबकी बेटीथी और बीजापुरके नवाब अली आदिलशाहको विवाही गई थी स० ई० १५८० में विधवा होनेके कारण राज काज इसको खुद सम्भालना पड़ा बादशाह अकबरके बेटे मुराद्ने स०ई० १५९५ में इसके किलेका घेरा किया परंतु चांद सुल्तानाने बड़ी वीरतासे सामना किया मुगलोंने हारकर संधि करली–अपने समयकी मुख्य राजनीति विशारद स्त्री थी- और बड़ी निडर तथा हौसलेमंद थी

स० इ० १५९९ में दक्षिणी लोगोंने इसे मारडाला

चाणक्य पंडित–पूरा नाम इसका विष्णुगुप्तचाणक्य था नीति, वैद्यक, ज्योतिष, रसायनादि विद्या पढ़कर ब्रह्मचर्य धारण कियेहुये पटना नगरकी ओर आया था और विवाह करनेकी इच्छा रखता था शहरके बाहर ही पैरमें कुश गड़ जानेसे इसके मनोरथ में विघ्न हुआ और इसको बड़ी तकलीफ हुई, एवं रास्तेंमें से कुशाको उखाड़ २ उनकी जड़ में मठा इस गरजसे डालने लगा कि, फिर न उगें — मगधनरेश महाराज नन्दके तिरस्कृत मंत्री शाक्टायरने इसको ऐसा कर- ते हुये देख कारण पूछा-चाणक्यने कहा कि, जबतक रास्तेमें उगे हुये इन कुशाकी जड़- तक न नाश करलूंगा तबतक शहरम न जाऊंगा–शाक्टारने इस दृढमतिवान् पुरुष को महाराज नंदसे उलझाकर अपनी मानहानिका बदला लेना चाहा–एवं मज- दूर लगाकर कुशा सब खुदवाके फिकवा दिये और चाणक्यको समझा बुझाके शहरमें लेआया और एक पाठशाला खुलवादी–कुछ दिनोंबाद महाराज नन्दके यहां श्राद्ध हुआ जिसमे बहुतसे ब्राह्मण निवतेगये शाक्टारने इसको

शुभअवसर जान महाराज नन्दकी आज्ञा विना चाणक्यको निठला देदिया उसने विचारा कि, महाराज नन्द इस कुरूप बैठनेवाले ब्राह्मणको देखकर जरूर उठावेगा जिससे बदलेमें यह अवश्यही उसका नाश करदेगा और ऐसाही हुआ महाराज नन्दने आतेही चाणक्यको उठादिया और इस मानहानिके कारन चाणक्यने भी नंदको आठों पुत्रों सहित नाश करनेकी प्रतिज्ञा की-निदान चाणक्यने नन्दके पुत्र चंद्रगुप्त को जिसको नायनके पेटसे उत्पन्न होनेके कारन और भाइयोंकी अपेक्षा पिताके बाद गद्दी मिलनेकी कुछभी आशा न थी,अपनी तरफ मिलालिया और महाराज नन्दको आठ पुत्रों सहित विष खिलाके नाश करदिया पश्चात् चाणक्यने चन्द्रगुप्तको राजसिंहासनपर बिठलाया और आप उसका मंत्री बना ये राजनीतिका पूर्ण ज्ञाता, चतुर और विद्वान् पुरुष था इसने मंत्री होकर राज्यप्रबंध ऐसा किया जिससे चन्द्रगुप्तका प्रताप भारतवर्ष भरमें तथा अन्य टापुओंमें भी फैलगया-चाणक्यकी राजनीति विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस नाटकसे प्रगट होसकती है. चाणक्यसूत्र तथा चाणक्यनीति इसके रचे ग्रंथ हैं

चार्वाक–(प्रसिद्धनास्तिक) महाभारतमें लिखाहै कि, ये राक्षस था और कौरव पाण्डव युद्धके अंतमें इसने यह अफवाह फैलाकर कि भीम मारागया, पांडवोंका नाश करनाचाहा था-इसने एक शास्त्र रचकर नास्तिकताका प्रचार किया, वास्तवमें अनीश्वरवादी शास्त्रके मुख्य नियम जिनको "बार्हस्पत्यसूत्र" कहतेहैं, पहिले पहिल बृहस्पतिने निर्माण किये थे, चार्वाकने केवल उनका अधिक प्रचारकिया और उनको श्रेणीबद्ध किया

चार्ल्सब्राडला–(Sir Charles Bradlaugh) ये प्रख्यातमासिक नास्तिक थे सं० ई० १८३३ में लंडनमें पैदाहुआ ऐसा तथा वक्तृताद्वारा यथाशक्ति नास्तिकता फैलानेमें उद्योग किया पहिले निर्धनी होनेके कारण थोड़ेसे वेतनपर भी छोटी २ नौकरियाँ करता था-पश्चात् २ वर्ष मासिकपर एक वकीलकी नौकरी करली थी-इस नौकरीपर रहकर इसने न्यायविद्या ऐसी हस्तगत करली कि, उसने अपना कार्य इसको बनालिया-इस नौकरीपर रहकर थोड़ेही कालमें बहुतसी कानूनकी बातें इसको मालूमहोगई और ये अच्छी वक्तृताभी देनेलगा-सं० ई० १८५० में इसने और जोसेफबार्कर साहिबने मिलकर "नेशनल रीफार्मर" नाम का साप्ताहिक पत्र जारी किया और कुछदिनबाद यह उसका स्वयंभ सम्पादक बन गया-सं० ई० १८८० में हिंदोस्तानकी तरफसे पार्लियामेण्टका मेम्बर हुआ दूसरी साल नेशनेल कांग्रेसमें शरीक होनेको हिंदोस्तान आया,उनदिनों इसकास्वास्थ्य अच्छा न था-थोड़ेही दिनोंबाद मरगया

चासर–(ज्योफ्री चासर, Geoffrey Chaucer) ये अंग्रेजी भाषाके आदिकवि थे-इनका बाप लंडन नगरका रहनेवाला बड़ा अमीर सौदागर था

कैम्ब्रज और आक्स फोर्डके कालिजोंमें इन्होंने पढ़ा था इंग्लैंडके बादशाह एड्वर्ड तृतीयके समयमें ये फरासीसोंसे लड़े, बाद अनेक पदों पर रहे, २ दफे मतविवादका दोषी ठहर कर कैद भुगतनी पड़ी थी अंतमें आक्स फोर्ड नामक शहरमें बस रहे थे "कैन्टर बरीटेल्स" नामक पुस्तक अंग्रेजी पद्यमें इनकी रची हुई है, स० ई० १३२८ में लन्डनमें जन्मे स० ई० १४०० में मरे–

चिन्तामणि त्रिपाठी (भाषाकवि) टिकमापुर जिला कानपुरके रहनेवाले ब्राह्मण थे इनके पिता रोज टिकमापुरसे एक मीलके फासलेपर बनकी भुइयाँ नामक देवीके मंदिरमें दुर्गापाठ करनेको आया करतेथे–एक दिन भगवतीने प्रसन्न होकर ४ मूँड दिखाय वर दिया कि, तेरे ४पुत्र होगे–ऐसाही हुआ क्योंकि पंडितजीके चिन्तामणि, मतिराम, भूषण और जटाशंकर ४ पुत्र हुये–ये चारों भाई बड़े पंडित और कवीश्वर थे चिन्तामणिजी बहुत दिनोंतक मकरंद्शाह भोंसलाके दर्बारमें नागपुरमें रहे और उन्हींके नामसे छन्दविचार नाम पिङ्गल बनाया–काव्यविवेक, कविकुलकल्पतरु, काव्यप्रकाश तथा रामायण आदि ग्रंथभी इनके बनाये हुये हैं, रुद्रसाहिसुलकी तथा दिल्लीके मुगलबादशाह शाहजहाँनेभी इनको बहुत इनाम दिया था इन्होंने कवितामें कहीं २ अपना नाम मणिलालभी लिखा है–

चूडामणि जाट (भरतपुरराज्यके संस्थापक) जब बादशाह आलमगीरकी फौज दक्षिणसे लौट रही थी तब इन्होने फौजका सब सामान रास्तेमें लूट लिया और मालदार होकर भरतपुरका किला बनवाया और जाटोंके सर्दार बन बैठे–बड़े साहसी और वीर पुरुष थे भरतपुरका राज्य अबतक इस प्रभावशाली पुरुषके वंशमें है–स० ई० १७२० में मुगल बादशाह दिल्लीकी फौजसे लड़ कर मारेगये और बदनसिंह इनके पुत्र गद्दीपर बैठे

चूडामणि कवि–काशीवासी बाबू हरिश्चन्द्र भारतेंदुने कविचूडामणि नामसे पदपूर्ति की है–देखो हरिश्चन्द्र भारतेंदु

चेतसिंह (काशीनरेश) स० ई० १७७० म निज पिता बलवंतसिंहके पीछे गद्दीपर बैठे, बलवंतसिंहके पीछे नव्वाब वजीर अवधने बनारसका राज्य खालसा कर लेना चाहा था पर इस्ट–इन्डिया–कम्पनीने जोर लगाकर चेतसिंहको गद्दी दिलवाई– बलवंतसिंहको बनारस, जौनपुर तथा चिनारकी जागीर और राजा बहादुरका खिताब बादशाह दिल्लीकी तरफसे स० ई० १७३९ म मिला था लार्ड वारन हेस्टिङ्गस गवर्नर जनरल हिंद और महाराज चेतसिंहम कुछ दिनबाद झगड़ा हुआ क्योंकि जरूरत पड़नेके कारण राजासे मामूली खिराजसे सिवाय अधिक रुपया मागा गया था, जिसके देनेसे उसने इनकार किया था इस झगड़ेका नतीजा यह हुआ कि, महाराज चेतसिंहको अधिकार रहित करके

उनके भाजे महीपनारायणको राजा बनायागया, चेतसिंहने शेष उमर ग्वालियरमें महाराजा साधियाके पास रहकर गुजारी स० ई० १८१० में मरे-महाराज महीप नारायणके बाद क्रमशः उदितनारायणसिंह, ईश्वरीनारायणसिंह व सर प्रभुनारायणसिंह के सी यस आइ (वर्तमान काशीनरेश) गद्दीपर बैठे महाराज चेतसिंहका जीवनचरित्र 'चेतचन्द्रिका' नामक ग्रथमें है जो उनके पुत्रका बनाया हुआ है।

चैतन्यमहाप्रभु (वैष्णवधर्मके प्रचारक) मि० फा० सु० १५ वि० सं० १५४२ को सन्ध्यासमय बंगदेशके नवद्वीपनगरमे इनका जन्म हुआ-उस दिन चन्द्रग्रहण था पिताका नाम जगन्नाथ मिश्र और माताका शची देवी था विद्यामें यह केशवपुरीके शिष्य थे और दीक्षागुरु इनके माधवइ थे-बालकपनमें यह बडेही उपद्रवी थे इनके माता पिताको सदा उलहिना मिला करता था-पिता इनको छोटा छोड मरे थे और बडे भाई विश्वरूप पहिलेसेही संन्यासी होगये थे, इनका विवाह वल्लभाचार्य्यकी कन्या लक्ष्मी देवीसे हुआ था इनकी विद्याकी प्रशंसा अकथनीय है बचपनहीमें परम विद्वान् केशव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मणको धर्मसंबंधी शास्त्रार्थमें हराया था इनकी पहिली स्त्री सॉपके काटसे मर गई तब माताके अनुरोधसे इनका विवाह नवद्वीपके प्रधान राजपंडितकी कन्या विष्णुप्रियासे हुआ उन दिनों सबंग बंगदेशमें शाक्तधर्मका प्रचार था और तंत्र मंत्रका बड़ा जोर था २४ वर्षकी अवस्थामें गृहत्यागी हो इन्होने वैष्णवमतका प्रचार किया पहिले सो ६ वर्षतक व्रज तथा जगदीशपुरीमें भ्रमण करके निज मतका प्रचार किया और उपयुक्त शिष्यमंडली संग्रहण की फिर व्रजमंडलमें अपने शिष्यरूप सनातन गोस्वामीपर और बंगदेशमें अद्वैत और नित्यानन्द महाप्रभुपर धर्मप्रचारका भार छोड़कर आप १८ वर्षतक श्रीजगन्नाथजीकी सेवामे नियुक्त रहे

अंततो ४८वर्षकी उमरमें एक दिन समुद्रके तीर नहाने गए थे वहाँसे नहीं लौटे निम्नस्थ संस्कृतग्रंथ इनके बनाये हुये है-गोपालचरित्र, तत्त्वसार, प्रेमामृत, संक्षिप्तभागवतामृत, हरिनामकवच चैतन्यदेवको बंगवासी प्रायः कृष्णका अवतार मानते है

चौंडा-ये राना लक्षाराम चित्तौड नरेशके ज्येष्ट पुत्र बड़े पराक्रम और दृढ प्रतिज्ञ हुये है इन्होने निजपिताके किसी कुवाक्यपर असंतुष्ट होकर चित्तौडका राज्य त्याग करअपने छोटे भाई मोकलदेवजीको इस शर्तपर दे दिया था कि, चौंडा और उसकी संततिका चित्तौड दरबारमें सरदारोमें सदैवपहिले सर्वोच्चपद रहेगा और उसका चिह्न भाला सदैव राना चित्तौडके दस्तखतके साथ खिंचा जायगा राना लक्षारामके पश्चात् स० ई० १३९८ में राना मोकलदेव अपने बड़े भाई

चौंडाकी दोनों शर्तोंको स्वीकार करके चित्तौडकी गद्दीपर बैठे अबतक महाराना उदयपुरके दस्तखतोंके साथ चौंडाका भालो चिह्न लिखाजाता है और साळुंबरके रावत जो चौंडाके वंशज हैं अबतक उदयपुर दर्बारके सर्वोच्च सरदारोंमें गिने जाते हैं

चौंडा (चौंडियाराय) पृथ्वीराज अन्तिम दिल्लीपतिका मुख्य सेनापति था ये बड़ा चालाक कलाकौशल्यादिमें निपुण, रणकार्यमें दक्ष, वीर पुरुष था बहुधा वेष बदल २ कर स्त्रियोंके वस्त्र और आभूषण पहिनकर शत्रुओंके दळमें घुस जाता और प्रधान शत्रुको वध करता था एक दफे पृथ्वीराज घायल होकर कूचमें ६ महीनेतक अपनी सेनासहित पडारहा था उसीवक्तकी बनवाई चौंडाकी बैठक अबतक कूचम विद्यमान है अंतमें पृथ्वीराज और परमालके युद्धमें ऊदल आदि अनेक वीर सावन्तोंको मारकर चौंडा रणशायी हुआ मक्कार और दिलबढी स्त्रीको अबतक चौंडरा कहते हैं

चन्द्रसखी—ये भाषा कवि सं० ई० १५८१ के लगाए ब्रजमें जन्मे। इनके बनाये अनेक भजन देश भर में प्रसिद्ध हैं। इनका छाप यह है—"चंद्रसखी भज बाल कृष्णछबि"

च्यवन ऋषि—ये भृगुऋषिके पुत्र थे नर्मदातटपर बैठ कर इन्होंने बहुत दिनोंतक तप किया था एक दिन राजा अजात शिकार खेलता हुआ सुकन्या नामक राजकुँवारीसहित च्यवनऋषिके स्थानपर जा निकला—सुकन्याने च्यवनऋषिको मट्टीका ढेला समझकर उनके नेत्रोंमें जो दो सूराखसे मालूम पडते थे उनमें लकड़ी चुभोदी—जब रुधिर बह चला तब ज्ञात हुआ कि, यह तो कोई ऋषि है जो तप करते २ देहानुसन्धान रहित हो गये हैं राजाने यह देख राजकुमारीको ऋषि के स्थानपर छोड़दिया और खुद अपनी राजधानीको लौटगया कुछ दिनों बाद अश्विनीकुमार वैद्य वहां आनिकले और सुकन्याके यौवन पर तरस खाकर च्यव नऋषिकी आँखोंको आराम करदिया और एक ओषधि (च्यवनरसायन) उनको खिलाकर बूढ़ेसे तरुण करदिया बादको च्यवन ऋषिने बहुतसमय तक गृहस्थाश्रम धारण किया उनकी सन्तति दूसर कहलाई आराम करनेके बदले च्यवनऋषिने अश्विनीकुमारका यज्ञोंमें भाग नियत कराया इनका नाम वेदकी अनेक ऋचा ओंमें भी पायाजाता है "जीवदान" नाम चिकित्सा ग्रंथ इन्होंने बनाया था

छीत' स्वामी—(भाषाकवि—अष्टछाप) ये गोस्वामी विट्ठलनाथजीके शिष्य अच्छे कवि थे ब्रजके ८ प्रसिद्ध कवीश्वरोंमें इनकी गणना है २५२ वैष्णवभ- क्तोंकी वार्त्ता तथा राजा नागरीदासकृत पदप्रसङ्गमालामें लिखा है कि,ये मथुराके चौबे थे पहिले बड़े गुंडे थे लोगोंसे छेडछाड किया करते थे और गोस्वामी विट्ठल- नाथजीकी प्रशंसा सुनकर बाबा जलभुन जाते थे एक दिन तंग करनेकी इच्छासे खो-

धनी हाकर नष्ट होगया, जगतसेठ कृष्णचन्द्रको ब्रिटिशगवर्नमेंटसे एक हजार रुपया मासिक पेन्शन गुजरानके लिये लेना पड़ी, ये काशीमें आ बसे थे और सं० १० १८९० में विद्यमान थे इनके कोइ औलाद न थी एवं इनके पीछे जगतसेठके वंश में कोइ न रहा सत्य है-

दो०-सदा न शाहूकी रही, पीतमके गल बाँह । ढुरती २ या गइ, ज्यों तरुवरकी छाँह ॥

जगनायक कवि-ये महोबा (बुंदेलखंड) वासी कवि सं० ई० ११९१ मे राजा परमालके दर्बारमें मौजूद था । आल्हखण्ड इसीका बनाया हुआ है ।

जगन्नाथ त्रिशूली, पंडितराज-तैलङ्गदेशवासी पेरुभट्टके पुत्र थे माताका नाम लक्ष्मी था ये सम्पूर्णशास्त्र निजपिताहीसे पढ़े थे कनौजके राजाको अनेक श्लोक बनाकर इन्होंने भेंट किये पर उसने कुछ ध्यान न दिया निदान ये जयपुर चले आये जयपुरनरेशने पाठशालामें इनको अध्यापक नियत किया और पंडित राज उपाधि दी उसीसमय दिल्लीमें संस्कृतका ज्ञाता एक काजी था उसने धर्मविषयकशास्त्रार्थमें अनेक पंडितोंको हरा लिया था पंडितजीने यह बात सुनकर एक वर्षमें सब यवनधर्मके ग्रंथ पढ़े और फिर दिल्ली जाय उक्त काजीको परास्त किया मुगलबादशाह शाहजहाँने इनको अपने शाहजादे दाराशिकोहका शिक्षक नियत किया थोड़ेही दिनोंमें बादशाहसे इनका इतना मेल होगया कि, यह महलोंमें जाने लगे, ये बड़े खूबसूरत हृष्ट पुष्ट और अभिमानी पुरुष थे ये एक दिन बादशाहके साथ शतरंज खेल रहे थे बादशाहकी लड़की लवंगी इनको देख मोहित होगइ और निजपिताको पानी पिलानेके बहानेसे खानकी सुराइ लेकर प्यारी आइ बादशाहने पंडितजीसे कहा कि, हमारी शाहजादीपर श्लोक बनाओ पंडितजीने तुरंत यह श्लोक पढ़ा-

श्लो०-इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा कुसुम्भारुणंचारुचेलं दधाना ।
समस्तस्य लोकस्य चेतःप्रवृत्तिं गृहीत्वा घटं स्थापिता भातिभाति ॥

बादशाहने प्रसन्न हो कहा कि, "माँगो इनाम" पंडितजीने उत्तरमें यह श्लोक पढ़ा-

श्लो०-न याचे गजालिं न वा वाजिराजिं न वित्तेषु चित्तं मदीयं कदाचित् ।
इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा लवङ्गी कुरङ्गी दगङ्गीकरोतु ॥

निदान लवंगीका विवाह पंडितजीके साथ बड़ी धूमधामसे होगया और एक महलभी रहनेके लिये दिया गया कुछ दिनों तो दिल्ली रह पीछे काशी चले आये-यहाँके पंडितोंने यवनीके त्याग करने तथा यथाविधि प्रायश्चित्त कर लेनेको बहुत समझाया पर इन्होंने नहीं माना इनके रचे १२ संस्कृतग्रंथोंमेंसे गंगालहरी, करुणालहरी, मनोरमाकुचमर्दन भामिनीविलास और रसगंगाधर मुख्य हैं-गंगालहरीकी रचना बड़ी सरस और प्रमाणी है, इसके रचनेका कारण यो सुननेमें आता है कि, जब काशीके पंडितोंने इनका बड़ा अपमान

किया तो इन्होंने काशीके मणिकर्णिका घाट पर बैठकर गंगाजीकी स्तुति पढ़ी प्रति श्लोक गंगा एक सीढ़ी बढ़ती गई ५२ श्लोक पूरे होनेपर गंगा उसी सीढ़ीपर पहुंच गई जहाँ पंडितजी शाहजादीसमेत बैठे थे और हजारों मनुष्योंके देखते २ वे दोनों गंगाजीमें लोप होगये इनके समान संस्कृतकवीश्वर इनके बाद आजतक दूसरा नहीं हुआ

जगन्नाथ सम्राट् (जयपुरराजगुरु-रेखागणितके कर्त्ता) ये जयपुरनरेश महाराज जयसिंह कछवाहेकी सभामें प्रधानपंडित थे मिजास्ती नामक ज्योतिषसिद्धांतका अरबीसे संस्कृतमें इन्होंने उल्था किया और सम्राट्सिद्धांत उसका नाम रक्खा उक्तग्रंथमें १० अध्याय और १४१ प्रकरण हैं उन सब यंत्रोंकाभी जो महाराज जयसिंहने जयपुर, दिल्ली, मथुरा, काशी और उज्जैनके आकाशालोचनार्थ बनाये थे उक्तसिद्धांतमें साविस्तर वृत्तांत लिखा है शाके १६४० (स० ई० १६६१) में उकलैदसके १५ हों अध्यायका अनुवाद अरबीसे संस्कृतमें करके रेखागणित नाम रक्खा यह रेखागणित अबतक जयपुरराज्यके पुस्तकालयमें मौजूद है-रेखागणित बनानेके इनाममें ५ गाँव इनको मिलेथे जिनपर अबतक इनकी संततिका जयपुरमें अधिकार है-ये अर्बी, फारसी, संस्कृत इत्यादिके पूर्ण ज्ञाता थे, जन्म इनका शाके १५७४ में हुआ

जतींद्रमोहन टागोर-(महाराजा सर जतींद्रमोहन टागोर बहादुर, के सी यस आई) कलकत्ताके प्रतिष्ठित टागोर (ठाकुर) वंशमें बाबू हरकुमार टागोरके ज्येष्ठ पुत्र हैं-प्रसिद्ध संगीतज्ञ राजा सुरेंद्रमोहन टागोर आपके कनिष्ठ सहोदर हैं-आप ठाकुर नहीं हैं वरन वर्णके ब्राह्मण हैं-ठाकुर (जिसका अपभ्रंश टागोर है) आप इस लिये कहलाते हैं कि, पहिले पहिल उन सब लोगोंसे जिनका काम काज ईस्ट इंडिया कम्पनीसे पड़ता था अंग्रेजलोग ठाकुर (टागोर) कहते थे हिंदूकालिज कलकत्तेमें आपने बंगला, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओंकी शिक्षा पाई, आपने अनेक नाटक रचे हैं जिनमेंसे विद्यासुंदरनाटक बंगलामें बहुत अच्छा है, बंगालप्रांतमें बड़ी भारी जमींदारीके भी मालिक हैं, आसामियोंपर बड़ी दया रखते हैं, अकालके समय प्रजागणकी रक्षाके लिये अपना धन लुटाते हैं, ब्रिटिश इंडियन ऐसोसिएशन के प्रधान हैं, और बंगालकी लेजिसलेटिव कौन्सिल तथा वायसरायकी कौन्सिलके मेम्बर अकसर बनाये जाते हैं, निम्नस्थ खिताब आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी ओरसे पाये हैं-

" राजा बहादुरका खिताब स० ई० १८७१ में
महाराजाका खिताब स० ई० १८७७ में
सी यस आई का खिताब स० ई० १८८० में
के सी यस आई का खिताब १८८२ में "

महाराजा महादुरकी पदवी सदैवको उत्तराधिकारियातकके लिये स० ई० १८९० में–

आप बडे दातार और उदारभी है–

मेयो हस्पताल बनने के लिये जमीन तथा १० हजार रुपये दिये थे,–अनक वजीफे तथा सोने चांदीके पदक अपने बाप तथा चाचाके नामसे इम्तिहान पास करनेवाले लडकोंको दिये जानेके लिये कलकत्ता युनीवर्सिटीको पूरी १ रकम प्रदान की है–

निज माता शिवसुंदरी देवीके नामसे हिंदू विधवाओंके पालन पोषणार्थ १ लाख रुपया प्रदान किया है–बहुतने और ऐसेही परोपकारके काम करके आपने अपने अनेक पूर्वजोंकी अचल कीर्ति स्थापन की है-महाराज कुँवार प्रद्योत कुमार टागोर आपके पुत्र है-वलिहार होनेका मौका होता है जब आपका छो भाई राजा सुरेंद्रमोहन टागोरसरीखे प्रधान पुरुष आपके चरणोपर गिर जाते है

जनक–मिथिलादेश (तिरहुत) के राजा थे इनकी राजकुमारी जानकी माताका विवाह स्वयंवरविधिसे रामचंद्रमहाराजके साथ हुआ ऋषि याज्ञवल्क्य इनके पुरोहित तथा मंत्री थे–राजा जनक बडे विद्वान् तथा धर्मशील थे और निजयोग्यताके कारण राजऋषिपदको प्राप्त हुये थे बहुधा देहानुसन्धान रहित होजाते थे, इसीलिये विदेह कहलाते थे

जनमेजय–चंद्रवंशी महाराज परीक्षितके पुत्र तथा अर्जुनके पौत्र थे-महाराज परीक्षित बचपनहीमें सांपके काटेसे मरकर इनको राज पाट सौंपगये थे-बडे होकर इन्होने वैशम्पायन मुनिसे महाभारतकी कथामें सुना कि महाराज परीक्षित् सांपके काटेसे मरेथे, एवं इन्होन सर्पमध यज्ञ किया और करोडों सांपोंके कुल्ले कुए जलवादिये जनमेजयने भारतवर्षका सत्छत्र राज्य किया था

जमदग्नि ऋषि–यमधर्ममें अत्यंत निपुण थे जिसके कारण अबतों कहते है कि, अमुक मनुष्य कम धम म जमदग्निके समान निपुण है भृगुवंशोत्पन्न ऋचीक ऋषिके पुत्र थे, माताका नाम सत्यवती था वेदविद्याके ज्ञाता हायर त्रिकालज्ञ थे, योगबलसे जो चाहते थे करते भारतमें गम ऐसे थ पुराणो म आपकी अनेक कथायें वर्णित है और वेदकी ऋचाओंमभी आपका नाम आया है आपके ५ पुत्रोंमेंसे परशुरामजी प्रसिद्ध क्षत्रियकुलद्रोही सबसे छोटे थे

जमशेद (ईरानका बादशाह) निजचरित्रा वहमूरसके बाद इससे प्रायः २ हजार वर्ष पहिले फारिस (ईरान) की गद्दीपर बैठा इसके समयमें फारिसम कृषिका प्रचार हुआ गाँव आबाद हुये जैसे साफ किये गये, सडकें और नहरें निकाली गई बहुतसे देव इसके यहां नौकर थे जिन्होंने इसकी

प्रजाको कपड़ा बुनना, सीना, मकान बनाना, आग लगाना, लोहे वगैरहकी चीजें बनाना तथा पढना लिखना इत्यादि सिखाया था और इसके वास्ते एक उड़नखटोलना (विमान) तथा एक प्याला जिसमें पृथ्वीभरका हाल मालूम पड़ता था बना दिया था यह प्याला सम्भवतः पृथ्वीका ऐसाही गोला होगा जैसे कि आज दिन स्कूलोंमें प्रचार है, और यह बातभी अयुक्त नहीं है कि, जमशेदके यहाँ जो देव नौकर थे वे शायद भारतवासी विद्वान् ही हों क्योंकि भारतवासी अपने विद्वानोंको देव और उनकी बोलीको देववाणी कहते हैं जमशेद अग्निपूजक था और उसकी प्रजा ४ वर्णोंमें विभागित थी अंगूर खानेका उसको बड़ा शौक था अंगूरी शराब बनानेका तरीका उसीके समयमें दरियाफ्त हुआ जमशेद अंतम ईश्वरसे विमुख हुआ प्रजागण इससे फिर गये, अरबके बादशाह जुहाकने इसपर चढाई की जिसके कारण ये अफगानिस्तानकी तरफ भागा और वहाँके राजाकी लड़कीसे विवाह किया पश्चात् हिंदोस्तानमें भाग आया पर यहांसे पकड़कर जुहाकके पास इरान भेज दिया गया और वहाँ वध किया गया

जमशेदजी जीजीभाई बेरन नायट (Sir Jamsedji Jiji Bhai Bart.) स० ई० १७८३ में पैदा हुये माता पिता इनको छोटाईसा छोड़कर मरगये थे एवं सुसरालियोंने इनकी परवरिश की थी स० ई० १७९९ में एकनाते दारके साथ ये १२०) रु० लेकर चीनको गये और वहां व्यापार किया कुछ दिन बाद स्वदेश को लौटे और १५ हजार रुपयां कर्ज लेकर फिर चीनमें जाकर तिजारत शुरू की और इतना रुपया पैदा किया कि, थोड़ेही दिनोंमें कर्जा अदा होगया और करोड़ों रुपयेके आदमी होगये–ईमानदारीके कारण इनकी तिजारत आफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलिया आदि देशोंमेंभी फैलगइ थी स० ई० १८०७ में ये बम्बईमें आकर बसे उस वक्त इनके पास कई करोड़ रुपये थे इन्होंने कभी किसीपर नालिश नहीं की और जितनी आमदनी बढ़ती गई ये उतनीही अधिक खैरात करते गये–सैंकड़ोंही उदारताके काम इन्होंने किये जिनमसे निम्नस्थ मुख्य हैं–

१५ हजार रुपयेके खर्चसे एक मंदिर बनवाया–

आग लगनेसे नुकसान उठायेहुये पूनावासियोंको ३५ हजार रुपये दिये–

पूनामें पानीके नल जारी करनेके लिये १० लाख ७० हजार रुपये दिये

१ लाख रुपयेके खर्चसे १ धर्मशाला, २ लाख रु० के व्ययसे एक चिकित्सालय तथा ४० हजार रु० के खर्चसे एक दूसरा मंदिर बनवाया–

आपकी पत्नीने भी प्रायः ११ लाख रुपयेके खर्चसे बम्बईमें एक पुल बनवाया था

उपरोक्त औदार्यके कामाके पुरुस्कार मे ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपको नायट तथा बैरोनेटकी असाधारण अंग्रेजी उपाधियां दीं–यह उपाधियें आजतक किसी दूस-

रे हिंदास्तानीको नहीं मिली है–स० ई० १८५० म परमधामको सिधार–इनके
आपकी पाषाणमूर्त्ति स्थापन कीगई है–

जयचन्द्र राठौर–(अन्तिम महाराजा कन्नौज) विजयपाल राठौरके
वि० सं० १२२५ म कन्नौजकी गद्दीपर बैठे पृथ्वीराज दिल्लीनरेशसे इनक
ईर्षा द्वेष था, जब इन्होंने राजसूय यज्ञ किया जिसमें अतद्दीम अपनी कन्या सं
गताका स्वयंवरभी रच दिया–इस यज्ञम सब राजे आये थे पर समर्थी रा
चित्तौड़ और पृथ्वीराज दिल्लीनरेश नहीं आये थे क्योंकि उनको जयचंद्रका दा
दासकृत करना स्वीकार न था, निदान जयचद्रने अन्यराजाओंकी दृष्टिमें नी
चा दिखानेके लिये उन दोनोंकी सुवर्णमूर्त्ति बनवाकर एकको बतन धोनेकी जग
पर और दूसरीको ड्यूढीपर खड़ा करदिया था, संयोगता जब सभाम हुमा
ई गई वा उसने सब राजाओंको देख भाल अपमाल पृथ्वीराजकी मूर्त्ति
म जो ड्यूढीपर खड़ी थी डालदी, पृथ्वीराज और संयोगतामें आन्तरि
प्रेम था एवं पृथ्वीराज पहिलेहीसे दिल्लीम छिपा हुआ मौजूद था
अवसर पाकर अपनी प्राणवल्लभाको घोड़ेपर लाद दिल्लीकी तरफ चल पड़ा,क
न्नौज और दिल्लीके बीच रास्तेम ७ दिनतक दोनों राजाओंकी फौजोंमें घोर
युद्ध हुआ पर पृथ्वीराज संयोगतासहित दिल्ली जीता पहुँच गया यह अपमा
महाराज जयचंद्र सहन न करसके पर अकेले कुछ करभी न सकते थे निदान उन्हों
शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीको काबुलसे पृथ्वीराजपर चढाई करनेके लिये बुला
भेजा शहाबुद्दीनने कई दफे चढ़ाई करनेके बाद पृथ्वीराजको रणशायी किया
जिससे हिंदुओंका बल बहुत घट गया यह देख स० ई० ११०४ (सं० वि० १२५१)
में शहाबुद्दीनने कन्नौजपरभी चढाई करदी जिसमें महाराज जयचंद्र चंदवार
... र मारे ... कान्हैया ...

छपर्वतके समीप तपोवनमें जाबालि ऋषिको अशोकवृक्ष के तले बेंतके आसनपर बैठा देखा, ये उन दिना अत्यंत बूढे थे पर उनका तेज सूर्य्यकासा था ये तपस्वी थे और पर्व क्षमाशील शान्ति अक्रोध और शतपथदर्शकताके अवतार मालूम होते थे उनके देखनेसे चित्तमें भय और विस्मय दोना पैदा होते थे त्रिकाल-दर्शी थे और ज्ञानदृष्टिद्वारा संसार उनके करतल पदार्थकी भाति था-अनेक शिष्य उनसे विद्या पढ़ते थे और बहुतसे मुनीश्वर लोग तपोवनमें रहकर तप करते थे और फुर्सतके वक्त वेदशास्त्रके सूक्ष्म विषयोंपर उनसे वार्तालाप करते थे, वैद्यकग्रंथ हारीतसंहिताके कर्त्ता हारीत मुनि उनके पुत्र थे ऋषि जाबालिके प्रतापसे तपोवनके वृक्ष, फल फूल और पत्तोंसे ढके हुये थे इलाइची और लवगके वृक्षोंपर भौराके झुंडके झुंड रहते थे सुगंधि चारों ओर छाई रहती थी

अनेक लताओं और वृक्षाकी डालियोंके मिलनेसे स्थान २ पर सुदर रमणीय गृह बनगये थे जिनमे धूप नहीं जाती थी-बड़े २ ऋषि लोग वेद मंत्र पढ २ कर होम करते थे वायु होमकी सुगंधिसे व्याप्त होकर धीरे २ बहती थी-कोइ ऋषि-कुमार उच्चस्वरसे वेद और कोई शान्तभावसे धर्मशास्त्र पढ़ते थे-वृक्षोंकी शाखाओंमें मुनीश्वरोंके मृगचर्म, कमण्डलु और माला लटकरही थीं और तले बैठनेको वेदी बनी थीं, तपोवनके गऊ, मृग, सिंह और शृगाल इत्यादि अनेक पशु, पक्षी सहज वैरको भूलकर सङ्ग २ निर्भय चरते थे हिंसा, द्वेष, वैर और मात्सर्य्यका वहाँ लेशमात्रभी न था कामधेनु गायें घर आतेही बतनोंको दूधसे भर देती थीं यह सब जाबालिऋषिके तपका प्रभाव था, न्यायशास्त्र तथा वैद्यकशास्त्रके ये पूर्ण ज्ञाता थ और "नेत्रसार" नामक चिकित्साग्रंथ इनका रचा हुआ है, ये अवधनरेश दशरथजीके पंडित थे रामवनवासकी सम्मति इन्होंनेभी इस कारण दी थी कि, रामजी राक्षसाको मार ऋषि मुनियाका सकट दूर करेंगे

जालीनूस (Galen) ये यूनानी हकीम स० ई० के दूसरे शतकमें पैदा हुआ वैद्यकशास्त्र पढ़नेके लिये इसने देश विदेश बहुत भ्रमण किया मिश्र और यूनानक सब बड़े २ वैद्यक स्कूला और हस्पतालोंमें जाकर रहा वैद्यकशास्त्रकी भाषा ५०० पुस्तकें इसने लिखी थीं अंतमें ये रोम में जाबसा अनेक असाध्य रोगियोंको चंगा करके प्रसिद्धि पाई इसके रचे बहुतसे ग्रंथ रोमके एक मदिरमें जलगये अपने समयके यूनानी हकीमामें अद्वितीय गिना जाता था स० ई० १९३ में ९० वर्षकी उमरम मरा

जीयाजीराव सेंधिया, के० सी० बी०, जी० सी० यस० आई० (ग्वालियरनरेश) महाराज जनकोजीराव सेंधियाकी अपुत्रविधवाने इनको ८ वर्षकी उमरमें गोद लिया नाबालिगीकी हालतमें अंग्रेज रजीडेन्ट रियासतका

काम करता रहा स० ई० १८५४में रियासतका पूरा अधिकार आपको दे दियागया आपके समयमें रियासतमें अनेक सुधार हुये और मुल्कमें अमन चैन फैलाया गया, आपका मन्त्री सर दिनकरराव, के० सी० एस० आई० एक सुयोग्य ब्राह्मण था सन् ५७ के गदरमें महाराजने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मदद की जिसके पुरस्कारमें पुत्र गोद लेने तथा फौज और तोप बढानेका अधिकार तथा कुछ मुल्कभी और आपको दिया गया स० ई० १८८५ में ग्वालियरका किला जो दौलतराव सेंधियाके समयमें अंग्रेजोंने फतह करलिया था महाराजको झांसीके बदलेमें वापिस मिला आपने बड़ा खजाना जमा किया था जिसका अब निर्णय नहीं मालूम था आपके बाद उसमें ६ करोड़ २० लाख रुपया नकद पाया गया और जवाहिरातका ढेर इतना बड़ा निकला कि,पृथ्वीपर दूसरी जगह नहीं होगा ५२ वर्षकी उमरमें स० ई० १८८६ के साल एक पुत्र माधौराव सेंधिया (वर्तमान नरेश) को छोड़ आप स्वर्गगामी हुये आपका स्वभाव सुन्दर और सरल था, चित्त उदार और निष्कपट था, गुणीजनोंका सत्कार करते थे और प्रजापालनमें दत्तचित्त रहते थे ग्वालियरराज्यका विस्तार ३० हजार वर्ग मील है १० लाख पाउंड वार्षिक आय है अनेक स्कूल और कालिज रियासतमें जारी हैं

जुगलकिशोरभट्टराजा (भाषाकवि) ये दिल्लीनरेश मुहम्मदशाह मुगलके मुसाहिब थे वि० स० १८०३ में 'अलंकारनिधि' नामक ग्रंथ इन्होंने बनाया जिसमें ९६ अलंकार उदाहरणसहित वर्णित हैं इसी ग्रंथमें निम्नस्थ दोहे इन्होंने अपने विषयमें लिखे हैं–

दोहा–ब्रह्मभट्ट हौं जातिको, निपट अधीन निदान ।
राजापद मोकों दियो, मुहम्मद शाह सुजान ॥
चार हमारी मभाम, कोविद कविमति धार ।
सदा रहत आनँद बढे, रसको करत विचार ॥
मिश्र रुद्रमणि विप्रवर, औ सुखलाल रसाल ।
सतंजीव सुगुमान है, शोभित गुणनि विशाल ॥

ये कैथलके रहनेवाले थे

जेनर–(डाक्टर जेनर–Doctor Jenner) ये इंग्लैंडके किसी गाँवके रहनेवाले थे प्रथम जब ये वैद्यकशास्त्र पढ़ते थे तब स०ई०१७७६ में इनको एक ग्वालिनसे यह भेद मिला कि, ग्वालियाओंको चेचक बहुत कम निकलती है डाक्टर साहिबने बड़े परिश्रमसे दर्याफ्त किया कि, मनुष्यकी तरह गायोंमें कभी २ यह रोग थनोंके ऊपर फैलकर जल्द भरे फफोलोंके सदृश देख पड़ता है जिसको गऊ चेचक शीतला कहते हैं इन फफोलोंका मवाद ग्वालियोंके हाथमें लगकर उनको सदैवके लिये चेचकसे निर्भय करदेता है जब यह निश्चय हो गया तो इस वर्षकी

परीक्षा आदमियोंपर की गइ और उसम सफलता प्राप्त हुई, पर गवओंके धनासे यह चेप थोड़ाही मिलता था और इसीकारण चेपका अभाव रहता था निदान सोचते २ डाक्टर साहिबने निश्चय किया कि, टीका लगानेसे जो बाछ-कभी बाहेंमें फफोले पड़ते है उनमेंसे जो ७ व या ८ वे दिन चेप निकलता है वहही टीका लगानेका काम दे सकता है अब दुनियाभर इसी चेपका प्रयोग टीका लगानेमें करती है ब्रिटिश पार्लियामेंटने स० इ०१८०२ की सालम डाक्टर जेनरको चेचकके टीकेकी इजादके पुरस्कारमे एक लाख रुपया दिया और स० इ० १८०७ में २ लाख और दिये जबतक डाक्टर साहिबको इस काममें सफलता प्राप्त नहीं हुइ थी लोग उनपर हँसते थे और अनेक प्रकारके कष्ट उनको देते थे परंतु जब मालूम हुआ कि, उन्होंने एक बड़ीभारी ईजाद की है तब तो सब के दाँत खुलगये

जेम्सवाट–(Games watt) इन्होंने न्युकोमन साहिबकी बनाइ धुयकी कलको पूर्णरीतिसे बनाकर सुधारा ये स्काटलैंडके रहनेवाले थे बुद्धि बचपनहीसे अद्भुत थी ६ वर्षकी उम्रमें युक्लिडकी १ साध्य इन्होंने सिद्ध की थी पदार्थ तथा विज्ञानशास्त्रके तजरुबे करते रहते थे जिस खिलौनेको खरीदते उसको तोड़कर देखते थे कि, कैसे बना है १८ वर्षकी उम्रमें लन्डन नगरको गये और १ वर्ष वहां रहकर अनेक प्रकारके औजार व यंत्रोंका बनाना सीखा फिर स्काटलैंडको वापिस आये और एक कारखाना जारी किया इन्होंने बहुकालतक धुयकी प्रकृति और उससे पहियोंमें हरकत पैदा करनेकी तरकीबपर गौर करके लोकोमोटिव एञ्जिन (धुयेकी कल) बनाई दो और कलेंभी इन्होंने बनाई थीं एक तो खत छापनेकी दूसरी भाप सुखानेकी जो काम हजारो लाखों घोड़ों बैलोंसे लेना कठिन था वह अब इनकी बनाइ धुयकी कलसे रेल जहाज और पुतलीघरोंम लिया जाता है स० इ० १८१९ में ८३ वर्षकी उम्रमें मरे. असभ्य मनुष्य सब काम अपने हाथसे करते हैं अद्ध सभ्यलोग दूसरे लोगा और जानवरोंसे काम लेते है, सभ्यलोग जैसे आज कल्हके यूरोप और अमेरिकादेशवासी बड़े २ काम जल, वायु और अग्निसे चलनेवाली कलोंके द्वारा करते है और सभ्यताके सर्वोच्च शिखरपर पहुँचकर मनुष्य सब कठिन और असम्भव काम पलक मारतेमे योग अथवा तपोबलसे करलेते हैं जैसें इस देशके प्राचीन ऋषि मु॰

जैमिनि ऋषि–(पूर्वमीमांसाशास्त्रके रचयिता) ये महर्षि व्यासके शिष्यथे–हाथीने इनको मारडाला–

जैयट उपाध्या–ये काश्मीर वासी प्रसिद्ध वैद्य हुये है, मम्मट, कैयट तथा औवट तीनो इनके पुत्र महाविद्वान् हुये है–सुश्रुतसंहिताका टीका सबसे

पहिले इन्होंने किया-विक्रमी संवत्की १२ वीं शताब्दी इनका समय है। अपभ्रंश जेजट भी कहीं २ लिखा पाया जाता है-

जैसाल-(रावल जैसाल जैसलमेर राज्यके संस्थापक) माघ सु० १ १२१५६ में इन्होंने जैसलमेर बसाकर वहां एक किला बनवाया-इनसे १७ वीं बाद बरारसिंहने होकर फरीदकोटका राज्य स्थापन किया, बरारसिंहसे तीसरी पीढीमें फूलसिंह एक वीर पुरुष हुये जिनकी संतति अबतक भींद, नाभ माहौर और पटियालामें राज्य करती है, फूलसिंहके द्वितीय पुत्र रामसिंहने प टियाला राज्यवंशकी मूलरोपण की-रामसिंहके पुत्र आल्हासिंहने पटियाला शहर बसाया और अहमदशाह दुर्रानीसे राजाका खिताब सं० ई० १७६२ में पाय

जोधबाई- ये जयपुर नरेशकी बेटी बादशाह अकबरको ब्याही थी बचपनमें इसने स्वप्न देखा था कि, चाँद इसकी गोदसे निकलकर आसम नकी तरफ ऊंचा हुआ और ये उसके पीछे उड़ी-जब चांद बहुत ऊंचा होगर तब ये गिरपड़ी-पंडितोंने इस स्वप्नका फल यह बताया कि, ये किसी अन जातीय बादशाहको ब्याही जायगी और अपने पुत्रके गद्दीपर बैठनेसे पहिले मर जायगी पंडितोंका कथन ठीक हुआ-सं० ई० १५६९ में इसका विवाह बाद शाह अकबरसे हुआ और आगरानिवासी फकीर शेख सलीम चिश्तीकी दुआसे इसके "सलीम" नामक शाहजादा पैदा हुआ जो बादको जहांगीर नामसे तख्त पर बैठा जोधबाईको प० रामानन्द महरम माफर पढाते थे पश्चात् कुछ दिनों बी बीरबल पढाते रहे-शाहजादे सलीमके पैदा होनेपर पढना लिखना छोड़ पुत्र पालन पोषणमें लगी और खुदही दूध पिलाया-जोधबाई भाषा कविता भी करती थी और इसके महलमें खानाखिन सभा स्त्रियोंकी हुआ करती थी अत्यंत सुन्दरी और गुणवती होनेके कारण अकबरको अन्यबेगमों की अपेक्षा अधिक प्यारी थी अकबरसे ११ वर्ष ६ महीने छोटी थी और राजपूतों से अ मरातम निजपतिको बहुधा सम्मति दिया करती थी ये बड़ी उदार, दयामय और शीलस्वभावकी अच्छी थी घोड़े पर चढ़ना मेंढा दौड़ाना खूब जानती थी और बड़ी निर्लोभ थी मरते दमतक हिंदुओंके त्योहारोंको मानती रही इसके पूजा करनेका मंदिर अबतक आगरेके किलेमें है-सं० ई० १६०० में घर्षणी होकर मरी-शाहजादा सलीम इसका जनाजा पकड़कर रोया जिसे देख बादशाह अकबर भी रोनेसे न रुकसका इसके मरनेपर बादशाह अकबरने सब राजपूतोंको भद्र करानेकी आज्ञा दी और १० दिन तक सब कचहरियां बंद रहीं-अकबरके बेटे जहांगीरको भी रायमालदेव जोधपुर नरेशकी जोधबाई नामक राजकुमारी ब्याही थी, पर वह विशेष प्रसिद्ध नहीं

जोधासिंह राठौर-(रावजोधा जोधपुर नरेश) राव रणमलके २४ पुत्रोंमें सबसे बड़े थे, इन्होंने जोधपुर शहर बसाया और सं० ई० १४५

में उसको अपनी राजधानी बनाया-अपने समयके अत्यंत पराक्रमी और साहसी राजा हुये हैं-इनके छठे पुत्र बिकासिंहने बीकानेर बसाया-

जोराष्टर-(Zoraster) इन्हींका दूसरा नाम जर्दस्त है इन्होंने अग्निपूजकोंका मत चलाया-इनके बाप पोशस्प बलखके रहनेवाले थे स० ई० से ३ हजार वर्ष पहिले इनका समय है, पर फिरङ्गी विद्वान् स० ई० से ५२५ वर्ष पूर्व इनका होना सिद्ध करते हैं, पठन पाठनकी तरफ बचपनहीसे इनकी अधिक रुचि थी प्रतीत होताहै कि, इन्होंने भारतवर्षमें आकर विद्या पढी थी क्योंकि इनके मतके नियम वैदिक मतके नियमोंसे बहुत मिलते हैं और इनकी निर्माण की हुई पुस्तक"जेंदावस्ता"मे वेदोंका हवाला भी मिलता है और उसकी भाषा भी कुछ २ संस्कृतसे मिलती है, जरदस्त अत्यंत विद्वान् होकर ज्योतिषशास्त्रम निपुण थे बादशाह कैखुसरो ईराननरेश इनके मतके विरुद्ध था एवं उसने इनके मरवाडालनेके अनेक उपाय किये पर एक न चला कैखुसरोके बाद गुस्ताशपने ईरानकी गद्दीपर बैठकर इनका मत ग्रहण किया और अस्फादियार पहिल्वान द्वारा अपने राज्यभरमें जो काबुलसे यूनानतक था और जिसमें अरब तथा तुर्किस्तान भी शामिल थे, इनके मतका प्रचार कराया जब सिकंदर आजमने ईरानके राज्यको नष्ट किया तब अग्निपूजक लोग स्वदेश छोडकर अन्यदेशोंमें जा बसे अब इस मतके अनुगामी बम्बईमें थोडेसे फारसी लोग रहगये हैं जो बडे धनाढ्य हैं अग्निपूजकोंकी " दसातीर" नामक पुस्तकमें लिखा है कि, एक यूनानी ब्रह्मज्ञानीको जरदस्तने अपनी जन्मकुण्डलीके ग्रह दिखलाकर विश्वास करा दिया था कि, मैं मक्कार नहीं वरन सत्पथ बतानेवाला महात्मा पुरुष हूं हिंदोस्थानसे भी एक जैनी विद्वान् और दूसरे महर्षि वेदव्यास जरदस्तसे शास्त्रार्थ करने ईरानको गये थे शास्त्रार्थसे पहिलेही एक शिष्यने"जेंदावस्ता" खोल वे सब प्रश्नोत्तर जो ऋषिलोग करनेको थे दिखलाये जिससे दोना जरदस्तकी प्रशंसा कर लौट गये जरदस्तकी पुस्तकमें यहभी लेख था कि, जब ईरानी अधर्मी होजायँगे तब यूनानका एक बादशाह उनको परास्त करेगा जब सिकंदरने यूनानियोंको जीता तब किसी आदमीने उक्त लेख उसको दिखलाया जिससे वह जरदस्तके मतपर विश्वास करनेलगा ७० वर्षकी उम्रमें तुर्किस्तानके बादशाह अजासपके एक सरदारने जरदस्तको घायल करके मारडाला

जयदेव मिश्र (गीतगोविंदके रचयिता) थे किन्तु बिल्वगाँम जिला बारभूमिमें जन्मे पिताका नाम भोजराज और माताका नाम रमादेवी था ये दोनों इनको छोटाही छोडकर मर गये थे जयदेव ऐसे तीव्र बुद्धि थे कि, गुरुसे एकसमय में ही पक्षभरका पाठ पढलेते थे जिसके कारण इनका नाम पक्षधर मिश्र पडगया था

विद्या पढ़नेके बाद राजा लक्ष्मणसेन बंगालाधिपतिके दरबारमें ५ पदको प्राप्त हुये यह बात महाराज लक्ष्मणसेनके सभास्थानके द्वारपर लगे हुये पत्थरपर अंकित निम्नस्थ श्लोक से विदित होती है-

श्लो०-गोवर्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः ।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य च ॥

स० ई० १२०१ में जब राजा लक्ष्मणसेन सुलतान मुहम्मद गोरीके सेनापति मलिक काफूरसे परास्त होकर उड़ीसाको भागे तो जयदेवजी भी उनके साथ उड़ीसा चले गयेथे और जगन्नाथ स्वामीकी सेवामें बहुत दिन रहे-वहीं इनका विवाह एक ब्राह्मणकी पद्मावती नामक कन्यासे हुआ और यहीं रहकर गीतगोविंद बनाया-उड़ीसानरेश इनकी बड़ी प्रतिष्ठा करता था-बहुत दिनोबाद जब इनकी पतिव्रता स्त्रीका देहान्त होगया तो यह दुःखी हो अपनी जन्मभूमि विंदुबिल्वको लौट आये और एक पाठशाला स्थापन करके पढ़ाने लगे-भजन बहुत किया करतेथे और परम वैष्णव थे-विद्यार्थी इनका नाम सुनकर दूर २ से आते प्रसिद्ध पंडित रघुनाथ शिरोमणि इत्यादि इनके शिष्य थे-विंदुबिल्व (केंदुली) गाँवमें अबतक इनकी समाधि है, जिसपर मकरकी संक्रांतिके दिन बड़ा मेला होता है हजारों वैष्णव इकट्ठे होकर संकीर्तन करते हैं-भक्तमालसे इनके विदित होताहै कि, ये परमयोगी और तपस्वी,क्षमा,दया, शील और उदारताके अवतार थे अपने अपकारियोंका भी उपकार करतेथे गीतगोविंदके समान किसी दूसरे संस्कृतग्रंथकी रचना मधुर कोमल रसीली और मनोहर नहीं है-प्रत्येक पदमें प्रेमरस भरी भक्ति झलकती है-गीतगोविंदका अनुवाद अनेक फरंगी तथा हिंदुस्थानी भाषाओंमें होगया है

जयपाल-(पंजाबका प्राचीन राजा) य ब्राह्मणवंशोत्पन्न राजा हितपालका पुत्र था-समग्र पंजाब में इसका राज्य था-लाहौर राजधानी थी स० ई० ९७७ में इसने गजनीपर चढ़ाई की पर हारा और गजनी के सुलतान सुबुक्तगीनको ५० हाथी देकर और लाख लाख रुपया देनेका वायदा करके हिंदुस्तानको लौट आया-मंत्रियोंकी राय थी कि, वायदा पूरा किया जाय पर ब्राह्मण पंडितोंकी राय थी कि म्लेच्छोंको रुपया देनेसे धर्म नष्ट होगा-ब्राह्मणोंकी मति मानकर राजाने रुपया नहीं भेजा तब सुबुक्तगीन हिंदुस्तानपर चढ़ाई कर और पेशावरपर अधिकार जमाएथा स० ई० ९९७ में सुबुक्तगीं मरगया और उसके बेटे महमूदने हिंदोस्तानपर १२ हमले किये जिनमेंसे १३ तो केवल पंजाब ही पर किये दिल्ली अजमेर कालिंजर और कन्नौज के राजे महाराज जयपालकी मददके लिये आयेथे पर ब भी महमूदकी सेनाके सामने युद्ध में परास्त निदान जयपाल फिर हारा और उस समय की रीत्यानुसार २ दफे हारनेके कारण आगमें जलकर मरगया और राज

पाट निजपुत्र अनङ्गपालको सौंपदिया–अनङ्गपालके समयमें भी महमूदने कई हमले किये पर सफलता नहीं हुई क्योंकि अनङ्गपालके राजपूत सिपाही जीतोड़-कर लड़े और राजपूत स्त्रियोंने अपने पति पुत्रादिकोंकी जो फौजम सिपाही थे, आभूषण और वस्त्र बेच २ कर तथा अपने शिरके बालोंकी रस्सियें बना २ कर सहायता की स० ई० १०१२ में महाराज अनङ्गपालके बाद उनका पुत्र जयपाल द्वितीय लाहौरकी गद्दी पर बैठा स० इ० १०२२ में महमूदने जयपाल द्वितीयको परास्त करके पंजाबका राज्य छीन लिया

जयसिंह कछवाहे–(अम्बरनरेश) ये महाराज मानसिंहके दत्तक पुत्र स० ई० १६१५ में गद्दीपर बैठे दिल्लीके बादशाह शाहजहांके समयमें इन्होंने अनेक साहसपूर्ण काम किये स० ई० १६२८ में काबुलम जाकर उपद्रव शान्त किय औरंगजेबके समयमें मिर्जा राजाके नामसे यही प्रसिद्ध थे स० इ० १६६४ में औरंगजेबने इनको दक्षिण की सूबेदारी दी स० इ० १६६६ में इन्होंने मरहट्ठा वीर शिवाजीको फुसलाकर औरंगजेबके दबारमें हाजिर किया और इस तरहसे बड़ा भारी युद्ध जो होनेको था मेटा स० ई० १६६७ में दक्षिणसे लौटती समय रास्तेमें बुरहानपुरके मुकाम मृत्युवश हुये गुणीजनोंका सत्कार करते थे ज्योतिष तथा गणितशास्त्रके पूर्ण ज्ञाता थे, संस्कृत, हिंदी, तुरकी, अर्बी, फारसी खूब पढे थे, इमारत बनवानेके शौकीन थे कवि विहारीलाल सतसईके कर्ता तथा पं० जगन्नाथ सम्राट् रेखागणितके रचयिता इन्हींकी सभामें थे सतसईमे ७०० दोहे हैं, प्रत्येक दोहेके बदले महाराजने विहारीलालजीको १ । १ अशर्फी इनाम दी थी रेखागणित रचनेके पुरस्कारमें जगन्नाथको कई गाव दिये थे दिल्ली, मथुरा, जयपुर, बनारस व उज्जैनमें आकाशलोचन बनवाये थे जो अबतक विद्यमान हैं आगरेमें जयसिंहपुरा नामक मुहल्ला इन्हींके नामसे प्रसिद्ध है इस स्थान पर महाराजने बहुत से मकान बनवाये थे, जिनका अब पता नहीं है

जयसिंह सवाई–(जयपुरनरेश) निजपिता विष्णुसिंहके बाद स० ई० १६९९में अपने पूर्वजोंकी गद्दीपर बैठे उस वक्त इनकी उम्र कम थी जब औरंगजेबके सामने पेश होनेको जाने लगे तो इन्होंने अपनी मातासे पूछा कि, यदि बादशाह कुछ हमसे पूछे तो हम क्या कहें? माताने उत्तर दिया कि, मौकेके मुवाफिक बात कहना निदान जब ये औरंगजेबके रोबरू गये तो उसने इनके दोनों हाथ पकड कर कहा कि,तेरे बापने मेरे समयम अनेक उपद्रव किये अब तू क्या कहताहै? इन्होने उत्तर दिया कि,शादीके वक्त मर्दका एक हाथ पकड़ाजाताहै जिसकी लाजसे स्त्री उसको जिंदगीभर निबाहती है सो आपने तो मेरे दोनों हाथ पकड़े हैं इस उत्तरसे खुश होकर औरंगजेबने इनको सवाई तथा राजाका खिताब दिया और पूर्वजोंका राज्य इनको सौंप दिया और २ हजारी मन सब इनका मुकर्रर किया औरंगजेबके बाद बहादुरशाहके समयमें इनके भाई

विजयसिंहने राज्यका धावा किया. बहादुरशाह ने किसी भाईको भी गोद करनाचाहा एवं इनका राज्य जप्त करके एक मुसलमान सर्दारके सुपुर्द करदिय थोडेही दिनबाद बहादुरशाहकों उपद्रव शान्ति करनेके लिये दक्षिण जानापडा यान अवसर पाकर जयसिंहने अपना राज्य छीन लिया पश्चात फरुखसियरने दिल्लीके तख्त पर बैठकर इनको महाराजाधिराजका खिताब दिया और मुहम्मदशाहने तख्त पर बैठकर इनको मालवाका सुबेदार मुकरर किया. सं ई० १७२० मे जयसिंह परगना जिला मथुरामें इन्होने बसाया स०ई० १७२८में जयपुर शहर बनवाकर बसाया और अम्बरकी जगह उसको अपनी राजधानी बनाया स०ई० १७४३ म सिधारे और इनके पुत्र ईश्वरीसिंह गद्दी पर बैठे कुण्डलियोंके कर्ता गिर्धर कविराय इन्हीके दर्बार म थे "जयसिंहके १०१गुण" इनकी बनाई पुस्तक भाषाम अच्छी है और "जयसिंहकल्पद्रुम" नामक ग्रन्थ जिसमें साल भरके व्रतोंकी विधि विधान, उद्यापन आदिहै इन्हीके आश्रित पंडिताका बनाया हुआ

जयादित्य पंडित—इन्होने तथा पंडित वामनजी मिलकर पाणिनीय सूत्रों पर सूत्रक्रमसे "काशिका" नामक अत्यंत सरल वृत्ति बनाई है यहवृत्ति महाभाष्यके पीछे की बनी प्रतीत होतीहै क्योंकि उसके शुरूमें "वृत्तौ भाष्ये" इत्यादि स्थलमें भाष्यका नाम लिखाहै

जरदश्त—देखो जोरास्टर.

जरासन्धु—(मगधदेशका राजा).इसकी लड़की मथुराक राजा कंसको ब्याही थी. कंसके मारेजाने पर जरासन्धुने अपनी लड़कीके कहनेसे कंसका बदला लेनेके लिये १८ दफे मथुरामें श्रीकृष्ण परचढाई की पर अंतम हारा और श्रीकृष्णके इशारेसे भीमसेनने उसको चीरडाला तहसील जलेसर जिला एटाम जरासन्धुका बनवाया किला अबतक टूटाफूटा पड़ा है जब जरासन्धुने मथुरा पर चढाई की थी तब अपनी फौजके ठहरने के लिये यह किला बनवाया था हिन्दू विद्वानोंके मतानुसार ईसासे १२८० वर्ष पूर्व जरासन्धु गद्दी पर बैठाथा

जस्वंतराव हुल्कर(इन्दौरनरेश) मुकोजीराव हुल्करके पुत्रथ निज पिताके बाद बहुतसे झगड़े के गरक गद्दीपर बैठे इन्होने स० ई०१८०२ म संधिया तथा पेशवाको परास्त किया और अपना अधिकार बहुत कुछ बढाया

पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेंटसे इनकी छिड़ी बहुत दिनातक लड़ाई जारी रही जिसमें कभी इनको और कभी ब्रिटिश गवर्नमेंटको हार हुई-अंतम स०ई० १८०५में सन्धि होगई-स० ई० १८११ मे मल्हरराव हुल्कर नामक बालकपुत्र छोड़कर मरे-मल्हररावके समयमें रियासत इन्दौरने ब्रिटिश गवर्नमेंटका आधिपत्य स्वीकार किया

जस्वंतसिंह—राठौर हफ्त हजारी (जोधपुर नरेश भाषाभूषणके कर्ता) निज पिता गजसिंहके रणशायी होनेपर मारवाड़ राज्यके वारिस हुये—दिल्लीनरेश शाहजहांने खुद अपने हाथसे इनको राजतिलक किया—उस वक्त इनकी उम्र १२वर्ष की थी ये ४२ वर्ष बराबर माळवा, गुजरात, दक्षिण, दिल्ली, पंजाब और काबु लकी सूबेदारी पर रहे और अनेक मुहिम्मोंपर गये मनसब इनका हफ्त हजारी था जिसके वेतनमें १७लाख रुपये वार्षिक आयका मुल्क मारवाड़, गुजरात, हांसी, हिसार इत्यादिमें मिला था और सवापांच लाख रुपया सालाना बादशाही खजानेसे मिला करता था काबुल तथा ईरानके फल फूलों के बीज लाकर इन्होंने जोधपुरके बा गोंमें बोये थे, जिनमेंसे अनारका बीज अबतक कायमहै-ये बड़े स्वामीभक्त और उदार चित्त थे भाषाकविताभी अच्छी करते थे—संस्कृत खूब जानते थे "भाषाभूषण" तथा भागवतका तिलक इनके रचे ग्रंथहैं—बर्नियरसाहब निज यात्राके ग्रंथमें लिखते हैं कि "शाहजहांके बीमार होनेपर जो झगड़ा तख्तके लिये उसके बेटोंमें हुआ उसमें औरंगजेब और मुरादकी मिली हुई फौजोंके मुकाबिलेके लिये महाराज जस्वंतसिंह भेजे गयेथे उज्जैनके मैदानमें सामना हुआ, फौजके मुसल्मान अफ सर औरंगजेबसे मिलगये, महाराज अकेलेही लड़तेरहे जब थोड़ेही साथी रहे तो व्यर्थ प्राणदेना समझ अपने राज्यकी तरफ कूच किया महाराजकी रानीने जो राना उदयपुरकी बेटीथी किलेके फाटक बंद करा दिये और कहा कि, वह जो रणम पीठ दिखावे महाराना उदयपुरसे वीर क्षत्रीका जवाई कहलाने योग्य नहीं—तुरंतही रानीने चिता प्रचंड करनेका भी हुक्म दिया क्योंकि उसने विचारा कि, मेरा पति कभी रणमें पीठ दिखानेवाळा नहीं है वह तो अवश्य जूझ गया होगा—थोड़ेही देर बाद संदेह मिटगया—महाराज महलपर पहुंचगये रानी कई दिनतक कोपभवनमें पड़ी रही और सेवक निज माताके मनानेस जो उदयपुरसे इसी कामके लिये आईथी, मानी औरंगजेबने तख्त पर बैठकर महाराजको काबुलकी सूबेदारी पर जहां उन दिनों उपद्रव फैलरहाथा भेज दिया—निरंतर नंगी तलवार हाथमें रखकर महाराजने काबुलकी क्रूर प्रजाको सूधही सीधा किया औरंगजेबने महाराजके जीतेजी हिंदुओंके मंदिर नहीं तोड़े क्योंकि एक दफे महाराजने कह दिया था कि, मंदिरोंके बदले मसजिदें ढाई जायँगी—सं०, वि० १७३५ में ५२ वर्षकी उम्रमें जमरोद (पंजाबमें) मरे—सिवाय २ गर्भवती रानियोंके और सबने सत किया—सुविख्यात अजीतसिंह आपहीके पुत्र थे

जस्वतसिंह—(महाराजाधिराज सर जस्वंतसिंह बहादुर, जी सी यस आई जोधपुरनरेश) निज पिता महाराज तख्तसिंहके बाद स० ई० १८७३ म ३६ वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठे इनके समयमें राज्य प्रबंध प्रशंसनीय रहा, प्रजाको सुख चैन मिला, रियासतमें गाँव २ स्कूल जारी हुये जिसके कारण प्रजाका अधिक भाग

हिंदी लिखना पढना सीख गया-जसवंतकालिज जोधपुर आपहीने जारी था-प्रजाके हितार्थ अनेक-और कामोंमें भी लाखों रुपया सालाना खर्च किया जाता था कवि मुरारीने जसवंतयशोभूषण ग्रंथ रचकर १ लक्ष मुद्राके ४ गांव इनाम पाये थे ब्रिटिशगवर्नमेंट आपके राज्यप्रबंधसे सदैव प्रसन्न रही-आपके वैकुंठवास होने पर महाराज कुमार सर्दारसिंहजी (वर्तमान जोधपुरनरेश) गद्दी पर बैठे-रियासतका विस्तार ३७ हजार वर्गमील और आबादी प्राय सवा अट्ठाईस लाख मनुष्योंकी है-

जहाँगीर (मुगल बादशाह दिल्ली) बादशाह अकबरका बेटा स० ई० १५६९ में पैदा हुआ-कहते हैं कि, नामी फकीर शेखसलीम चिस्तीकी दुआ व फतहपुर सीकरीमें इसका जन्म हुआ-निजपीताके मरने पर स०ई० १६०५में गद्दी पर बैठा बड़ा शराबीथा लेकिन दूसरों को शराबपीनेसे बहुत रोकता था इसी लिये कोई इसका कहना ठीक २ नहीं मानता था-इसने रेशमकी डोरीमें बाँधकर सोनेकी घंटियाँ अपने महिलमें लटका रक्खी थीं-डोरीका दूसरा सिर महिलसे बाहर लटकता था-इन घंटियोंके बजावेनेसे हरकोई फरियादी बादशाहके पास हुजूर बुलाया जाता था-तख्त पर बैठतेही इसने शेरअफगानखाँ बंगालके सूबेदारको मरवाडाला और उसकी बीबी नूरमहलको अपनी बेगम बनालिया और नूरजहां नाम रक्खा जहांगीर नूरजहांका वशीभूत था-सर्कारी कागजोंकोभी नूरजहांही सुना करती और हुक्म दिया करती थी नूरजहांका चेहरा जहांगीरके साथ सिक्के पर भी छपता था और उसके बापको वजीर का ओहदा दिया गया था अंतमें महाबतखाँ पंजाबके सूबेदारने जहांगीरको कैद कर लिया, पर नूरजहां बड़ी चालाकी से उसको छुड़ा लाई थोड़ेही दिन बाद स० ई० १६२७ में लाहौरको जाते वक्त रास्तेमें जहांगीरमरगया और किलेके बाहर नूरजहांके बागमें दफनाया गया ये विद्याशौकीन था व खूब सूरत [illegible] भी जिन्दा खाल इसने खिंचवाडाली थी

जंगबहादुर-(सर जंगबहादुर, जी० सी० बी० जी० सी० एस आई० राज्य नेपालके मंत्री) नेपालके रहनेवाले एक प्रतिष्ठित वंशोत्पन्न क्षत्री थे स० ई० १८४६ म नेपाल राज्यके वजीर हुए. स० ई० १८५० में इंगलेंड की सफर गये तबसे नेपाल दर्बार और ब्रिटिशगवर्नमेंटमें गाढी मित्रता हो गई स० ई० १८५६ में नेपाल दर्बारने इनको महाराजकी उपाधि दी स० ई० १८५७ के गदरमें दर्बार नेपालने अपनी गोरखा पल्टनसे खूब अवधमें बगावत मिटवादी इस सहायताके पुरस्कारमें जंगबहादुरको जी० सी० एस० आई०, जी० सी० बी० की उपाधियां ब्रिटिशगवर्नमेंटने प्रदान कीं. स० ई० १८७५ में जब प्रिन्स आफ वेल्स नेपाल पधारेथे तो जंगबहादुरने [illegible] पेश कियाथा ब्रिटिशराज्यमें इनकी प्रमा

मी तोपके १९ फैरोंकी थी स० ई० १८७७ मे व मुकाम पिथौरा घाट तराई पल-कमारतेमे मरगये शीरम्बीसेका शिकार खूब करते थे अनेक प्रकारके जनावरोंके पाल-नेका शौक था जिसमानी कर्तबों और खेलोंमें अद्वितीय थे अब इनके पुत्र रियासत मेपालके सुयोग्य मंत्री हैं टामसरो (सरटामसरो–Sir Thomas Roo) स० ई० १६१४ में इंग्लैंडके बादशाह चार्लस प्रथमने इनको राजदूत नियत करके मुगलबादशाह जहांगीरके दर्बारमें हिंदोस्तान भेजा-सरटामसरोने यहां ४ वर्ष रहकर अंग्रेजोंकी तिजारती कोठियां बंगाल, मद्रास इत्यादि में स्थापन करनेकी आज्ञा प्राप्त की–इंग्लेंड लौट कर इन्होंने अपने सफरका मनोहर वृत्तांत छपवाया–हिंदोस्तानसे सरटामसरो बहुतसी हस्तलिखित पुस्तकें संग्रह करके ले गये थे, जो इन्होंने स० ई० १६२८ में किसी पुस्तकालयकी भेंटकर दीं हस्तलिखित सिकंदर की बैबिल भी ये यहांसे लेगये थे, जो इन्होंने बादशाह इंग्लैंडकी भेंट की–स० ई० १६३९ मे इनके उद्योगसे पोलैंड और स्वीडेन के बादशाहोंमें संधि हुई स० ई० १६४१ मे राजदूत नियत होकर रहिस्बन गये–वहासे लौटने पर प्रिवी कौंसलके मेम्बर इग्लैंडमें होगये-स० ई० १६४४ में ६४ वर्षके होकर मरे.

टीपू सुल्तान–निज पिता हैदरअलीके बाद स० ई० १७८२ में मैसोरकी गद्दी पर बैठे–उस समय मैसोर राज्यम १ लाख फौज थी और कोशमें ३करोड़ रुपया और बहुतसी जवाहिरात थी–पुरनिया नामक ब्राह्मण इनका मंत्री था–टीपू निज पिताके समान रणकुशल और निर्दयी था– ३० हजार ईसाइयोंकी इसने सुन्नत करवाई और १लाख हिंदुओंको मुसल्मान किया प्रजा इस निर्दयीके अन्यायसे अकुलाय उठीथी–स० ई० १७९० में मरहटा, निजाम और अंग्रेजोंने मिलकर इसकी राजधानी श्रृंगापट्टनका घेरा किया–२वर्षतक लड़ाई जारी रही–अंतमें संधि हुई, जिसके अनुसार टीपू को अपना आधा राज्य और ३ करोड़ रुपया लड़ाईका खर्चा देना पड़ा–इस लड़ाईके बाद टीपूका बल पराक्रम बहुत घटगया था पर उसके दिलमें बदला लेनेकी आग भभकतीथी निदान उसने फरासीसोंसे मेल किया–यह देख लार्डवेलिजली ब्रिटिश गवर्नर जेनरल हिंदने टीपूकी राजधानीका स० ई० १७९९ में घेरा किया और टीपू बड़ी वीरतासे लड़कर मारागया–अंगरेजों मरहटों और निजामने उसका राज्य आपसमें बांट लिया और मैसोरके आसपासके थोड़ेसे मुल्क पर मैसोरके प्राचीन हिंदू राज्यवंशका एक लड़का बिठलाकर मैसोर की रियासत बनादी

टेनीसन–(Alfred Tenneyson)इनका पूरानाम एल्फ्रेड टेनीसन था.इनके बाप लिन्कनशायरके पादरी थे कैम्ब्रिज वेश विद्यालयमें पढकर इन्होंने बी० ए० की परीक्षा पास की थी पहिले पहिए स० ई० १८३० में इन्होंने निजकवितांकी एक पुस्तक छपवाई और स० ई० १८४२ के बाद इनके रचे अनेक और

प्रथमी छपे, जिनसे इनकी प्रसिद्धि दिन प्रति दिन बढ़ती गई, यहां तक कि, अंग्रेजीके उत्तम कवीश्वरोंमें इनकी गणना हुई सं० ई १८५१ में कवि वाईसवर्थ मरने पर इंग्लैंडके राजकविका पद इनको दिया गया स० ई० १८५५ में आक्सफोर्ड विश्व विद्यालयने डी० सी०एल की पदवी इनको प्रदान की० और स० ई० १८८३ मे ब्रिटिशगवर्नमेंटने पीअरेज (Peerage) की पदवी इनको प्रदान की स० ई० १८९० में ८० वर्षकी उमरम मरे.

टोडरमल–(अकबरके दीवान आला) दरबार अकबरीके नवरत्नोंम इनकी गणना है लाहौरमें एक खत्रीके घर जन्मे थे और ५ ही वर्षकी उमरम पितृविहीन हो गये थे निदान माताने इनको अपने मायकेम रहकर गुजरातकी किसी ग्रामीण पाठशालाोंम पढाया था ११ वर्षकी उमरम ये राजा हरवंसरायके यहां नौकर होकर लाहौर गये ३ वर्ष बाद हरवंसरायके मरनेपर इन्होंने शेर शाह सूरके यहां मुंशियोंमें नौकरी करली शेरसूरके मरने पर बादशाह अकबरकी फौजमें नाम लिखाया योग्य पुरुष तो थेही थोड़ेही दिनोंमें वख्शी मेजरके पदपर पहुंचगये और दाऊदखाँ सूबेदार बंगालाको जो बागी होगया था बड़ी वीरतासे परास्त किया स० ई० १५८० में अकबरने इनको बंगालका सूबेदार नियत किया वहां रहकर इन्होंने निम्नस्थ सुप्रबंध किये जिनके कारण इनका नाम अबतक लोगोंकी जबान पर है–

१ ईरानदेशके अनुसार हिसाब किताबका तरीका जारी किया
२ खेताकी पैमायश कराके सीमाबन्दी की और लगान लगाया
३ रुपयेके ४० दाम ठहराये जिससे सर्व साधारणको लेन देनेमें सुभीता हुआ
४ राज्यभरमें डिपुटी कमिश्नर नियत किये
५ सरकारी घोड़ोंके दाग लगवाये
६ सहस्त्रों लौंडी और गुलामोंको बंधनमुक्त कराया अंतमें

बादशाह अकबरने इनको दीवान आलाके पदपर नियत करके दिल्ली बुलालिया पंजाबी क्षत्रियोंम तीन शाखा सिपाहियोंकी रसमको उठाकर वार्षिक रसम इन्होंने जारी की ये फारसी, अरबी और संस्कृतके पूर्ण विद्वान् थे. भाषाकविताभी अच्छी करते थे भागवतका फारसीम तर्जुमा किया था निजपूर्वजोंके धर्मको दृढतासे मानते थे काशीवासी पं० रामदेवजीने, "टोडरानन्द" ज्योतिषग्रंथ इनके नामसे रचा था

स०ई०१५८९ म ७२ वर्षके होकर लाहौरम मरे. इनका इकलौता बेटा धारासिंधकी किसी लड़ाईमें मारागया लहरिपुर ग्राम जि०सीतापुरके रहनेवाले टोडरमल कायस्थ, शाहजहांके दरबारमें वजीरथे

टोलेमी प्रथम–(Ptolemey) सिकंदर आजमका सौतेलाभाई था सिकंदरके मुख्य सेनापति रहा और उसके साथ देश विदेश घूमा सिकंदरके निःसन्तान मरनेपर राज्य सेनापतियों और रिस्तेदारोंमें बाँटा गया और मिश्रदेशका राज्य

टोलेमीके हिस्सेमें आया इसने बड़े न्याय और प्रबंधसे राज्य किया और उत्तरीय अफरीकाको विजय किया इसकी राजधानी अस्कंदरिया पृथ्वी भरकी तिजारती मंडी थी अस्कंदरियामें एक रोशनीका मीनार, एक अजायबखाना और एक पुस्तकालय इसने खोलाथा इस पुस्तकालयमें ६० लाख पुस्तकें करोड़ों रुपयेके खर्चसे भूमण्डलके अनेक भागोंसे ढूँढ़वाकर संग्रह करलीगईथा जब मुसलमानोंने मिश्रदेश फतेह किया तो खलीफा उमरके हुकमसे यह पुस्तकालय जलाकर बरबाद किया गया टोलेमी बड़ा विद्याअनुरागी था उसने स्वयं कई ग्रंथ रचेथे जिनमसे एक सिकंदरके जीवनचरित्रकी पुस्तक थी स० ई० से २८५ वर्ष पूर्व मरा और उसके पुत्र टोलेमी द्वितीयने गद्दी पर बैठकर अपने दो भाइयोंको वध किया, अपनी भार्जी तथा बहिनसे शादी की, रोमनलोगोंसे मेल किया, व्यापारकी उन्नति की, लालसागरपर एक शहिर बसाया, जहाजों केबेड़े बनवाये, विद्वानोंका सत्कार किया, बाइबिलका अनुवाद ग्रीक भाषामें कराया और ६ वर्षकी उमरमें स० ई० से २४७ वर्ष पहिले मरा

टोलेमी–(ज्योतिषी) स०ई० १४० में मिश्रमें हुआ–ज्योतिष और भूगोल पर इसने बड़ी२ पुस्तकें रची थीं–"मजस्ती" नाम ज्योतिषसिद्धांत इसका रचा हुआहै–इसी सिद्धांत के अनुसार फिरङ्गी लोग हजारों वर्षतक मानते रहे कि, पृथ्वी ठहरी हुई है और उसके चौगिर्द सूर्य्य चंद्र इत्यादि ग्रह घूमते हैं इसीका दूसरा नाम बतलीमूस है

डफरन–(मार्कुइस-आफ डफरन Marquis of Dufferin) इनका असली नाम फ्रेडरिक टेम्पिल-ब्लैक वुड था–स० ई० १८२६ में पैदा हुये–यटन और आक्स फोर्ड के कालिजों में उच्च श्रेणीकी शिक्षा पाई, स० ई० १८४१ में पिताके मरने पर डफरनके बैरनका पद पाया–स० ई० १८५९ में आयर्लैंड (बर्फिस्तान) की सैरको गये और उक्त यात्रा का वृत्तांत एक पुस्तक में छपवाया–स० ई० १८६० में कमिश्नरके पद पर नियुक्त होकर स्यामद्वीपको गये और ईसाइयोंके कतलकी तहकीकात की और वापिस आनेपर के० सी० बी० उपाधि पाई–स०ई० १८६४ से ६६ तक हिन्दोस्तानके उपमंत्री और फिर रणविभागके उपमंत्री हुये पश्चात् पोस्ट मास्टर जेनरल रहे–

स०ई० १८७२ में कनाडाके गवर्नर जेनरल हुये–थोड़ेही दिनबाद महाराजा रूसके दर्बारमें राजदूत नियत करके भेजेगये स० ई० १८८१ में शाह रूमके दर्बारमें राजदूत बनकर गये–दूसरी साल झगड़ा शांति करनेके लिये मिश्र भेजे गये–स० ई० १८१४ में वायसराय नियत होकर हिंदोस्तान आये–इस पद पर४ वर्ष रहकर स० ई० १८८८ में इस्तीफा देकर इंग्लैंडको वापिस गये–इनके समय में उपरी ब्रह्मा विजय हुआ अमार काबुलसे मित्रता भाव जारी हुआ और आइनसभायें स्थापित हुई–हिंदोस्तानसे वापिस जाकर मार्कुइसकी उपाधि पाई और

शाहरूमके दर्बारमें राजदूत नियत करके भेज दियेगये–अर्ल लिटनके मरने पर ये फ्रांसके दर्बार में राजदूत नियत किये गये–स० ई० १९०२ में मरनेसे पहिले इनको व्यापारमें बड़ा घाटा बैठा था जिससे इनको व्यथा लगी थी–इनकी पत्नी लेडी डफरन ने हिंदोस्तानमें सब जगह जनाना हस्पताल जारी किये–राजा महाराजा रईस अमीरोंने दिल खोलकर जनाना हस्पतालोंके लिये चन्दा दिया था और बड़े२ खिताब पाये थे–

सबसे पहिले जनाना हस्पताल जारी करनेकी प्रेरणा इस प्रकार हुई एक समय महारानी पन्ना बहुत बीमार हुईं रोग ऐसा था कि, जिसका इलाज लज्जाके कारण पुरुष डाक्टरसे नहीं करा सकती थीं बहुत कष्ट सहन करनेके पीछे एक डाक्टर मेमने लखनऊसे आकर महारानीको आराम किया इन्हीं मेमको महारानीने लंडन भेजकर राजराजेश्वरी विक्टोरियासे जनाना हस्पताल जारी करनेके विषयमें विनती की–इस विनतीपर करुणामय होकर कैसरे–हिन्दने लेडी डफरनसे जिनके पति उन दिनों वायसराय होकर हिंदोस्तान आनेको थे जनाना हस्पताल जारी करनेको कहा था लेडी डफरनने हिंदोस्तानमें आर्डर चन्दा उठानेका उद्योग निज पतिकी मददसे किया जिसके द्वारा हिंदोस्तानके सब बड़े शहरों और कसबोंमें जनाना हस्पताल खोल दियेगये, जिनके द्वारा अब लाखों स्त्रियां उन रोगोंसे मरनेसे बचती हैं जिनका इलाज पहिले लज्जाके कारण डाक्टरों या हकीमोंसे नहीं करासकती थीं–

डागीर–(Dowgore) एक फरासीसी था जिसने स० ई० १८२९ में फोटोग्राफी (अक्सी तस्वीरें खींचनेका इल्म) अन्वेषण किया

डामाजी गैकवाड़ प्रथम–(बरोदा राज्यके संस्थापक) ये केरोजी मरहट्टाके पुत्र राजा साहू सतारा गढधारके दर्बारमें सेनापति थे मुगलों तथा अन्यशत्रुओंसे ये बड़ी वीरतासे लड़े थे जिसके पुरस्कारमें साहूने इनको मरहट्टा दलमें दूसर दर्जेका पद, शमशेर बहादुरका खिताब और गुजरात प्रांतमें बड़ी जागीर दी थी, स० ई० १७२० में डामाजी गैकवाड़का देहांत हुआ बरोदामें अबतक इन्हींकी सन्तति राज्य करती है–पहिले पहिल डामाजी गैकवाड़ पेश्वाके दर्बारमें छोटे दर्जेके नौकर थे बालापुरकी लड़ाईमें इन्होंने बड़ी वीरतासे लड़कर मुगलसम्राट् दिल्लीकी फौजके दांत खट्टे करदिये निदान मरहट्टा दलके सेनापतिकी सिफारिशपर राजा साहूने इनको उपसेनापति नियत किया.

डामाजी गैकवाड़ द्वितीय–(बरोदानरेश) पिलाजीके पुत्र तथा डामाजी गैकवाड़ प्रथमके पौत्र थे स० ई० १७३१ में पिलाजीके बाद इन्होंने गद्दीपर बैठकर ४० वर्ष पर्यन्त एकाधिकार गुजरात तथा आसपासके देशोंको स्वराज्यमें मिलाया–स० ई० १७३१ की साल पानीपतकी लड़ाईमें इन्होंने

बडे २ दारासके काम किये और स० ई० १८२२ में इंग्रेजोंने हाथसेद्द किया-पश्चात् शहर पट्टन और गुजरातकी प्राचीन राजधानी अहिमदाबादपर अधिकार जमाया अन्तमें काठियावाड्के सब राजोंने परास्त होकर इनको राजस्व देना स्वीकार किया-इनके पीछे इनके २ पुत्र गोविंदराव तथा फतेहसिंह क्रमशः बरोदाकी गद्दीपर बैठे-स० ई० १८०३ में रियासत बरोदाने ब्रिटिश गवर्नमेंटका आधिपत्य स्वीकार किया तबसे एक ब्रिटिश रेजीडेन्ट राजधानी बरोदामें रहता है और गवर्नमेंट हिंदको राजस्व दिया जाता है-कई पीढ़ी बाद इस गद्दीपर स० ई० १८७५ में महाराज सैय्याजीराव तृतीय (वर्तमान नरेश) सुशोभित हुये आप सबगुणसम्पन्न प्रतापी नरेश हैं-

डिकेन्स-(चार्लस डिकेन्स-Charles Dickens) ये पृथ्वी प्रसिद्ध उपन्यासकार पोटस मौथ (इंग्लैंड) के समीप लैंड पोर्टमें जन्मे-इनके बाप जान डिकेन्स ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सामुद्री सेनाके बखशीके दफ्तरमें क्लर्क थे चार्लस डिकेन्स ८ भाई बहिन थे, एवं इनके बापका गुजारा कठिनतासे होता था और इसी लिये इनको किसी स्कूलमें शिक्षा देनकी जगह निज परिश्रमसे ही विद्योपार्जन करना पड़ा था बड़े होकर इन्होंने कुछ दिन-तक किसी वकील की मुहार्रिरी स्वल्प वेतन पर की पश्चात् अखबारोंके लिये मजमून लिखना आरम्भ किया और स० ई० १८४५ में अखबार "डेलीन्युज" के सम्पादक हो गये कुछ दिनबाद उपन्यास रचना की तरफ इनका ध्यान झुका जिससे जगत्में प्रसिद्धि पाई और धनाढ्य हो गये फिर तो रोचेस्टरके समीप इन्होंने " गेडशीलभवन" खरीदा इनका कुटम्ब बड़ा था और ये उन सबका पालन पोषण करते थे कई दफे अमेरिका गये और वहाँके निवासी इनके उपदेशोंसे कृतार्थ हुये निर्भय होकर अन्याय, कपटता, कमीनेपन इत्यादिकी निन्दा करतेथे और सहनशीलता, न्याय इत्यादि सुकर्मोंकी प्रशंसा करतेथे स्वरचित ग्रंथोंमें इन्होंने महसनके साथ २ चातुर्यता और सरलताके उपदेश संयुक्त किये हैं हजारों मनुष्य इनकी वक्तताको सुनकर प्रसन्न होते थे और लाभ उठाते थे २० वर्ष निर्वाह होनेके बाद इनमें और इनकी स्त्रीमें अनबन हुई और सम्बंध टूट गया स० ई० १८७० में १ दिन बीमार रहकर ५८ वर्षकी उमरमें मरे और वेस्ट मिनिस्टर ऐबीके कबरस्तानमें दफन किये गये

डेलहौजी-(James Andrew Lord Dalhowsie) इनका पूरा नाम जेम्स ऐन्ड्रू लार्ड डेलहौजी था हारो और आक्सफोर्डमें पढ़कर एम० ए० की परिक्षा पास की थी स० ई० १८४३ में बोर्ड-आफ-ट्रेडके उपप्रधान हुये स० ई० १८४७ में गवर्नरजेनरल नियत होकर हिंदोस्तान आये पंजाब इन्हींके समयमें सर्कारी अमलदारीमें मिलाया गया नागपुर, सतारा, झांसी, बरार, और अवध इन्हींके समयमें खालसे किये गये नहिरें, सड़कें, रेल, तार इत्यादि

इन्हींके वक्तमें हिंदोस्थानमें जारी हुआ ये चाहते थे कि, शनैः २ सब देशी राज्य ब्रिटिश राज्यमें मिलालिये जावें और किसी राजाको गोदलेनेकी सनद न दी जावे

स० ई० १८५७ के गदरके कारणोंमें लार्ड डेलहौजीकी यह राजनीतिभी मानी जाती है-अन्तमे ५ हजार पाउण्डकी वार्षिक पेन्शन पाई

स० ई० १८६० में ४८ वर्षकी उम्रमें मरे.

ड्यूक-आफ वेलिङ्गटन (Sir Arthur Wellesley Duke of Wellington) पूरा नाम सर आर्दर वेलिज़ली ड्यूक-आफ-वेलिंगटन था-इन्होंने कुछ दिन इंग्लैंडमें और फिर फ्रांसमें रहकर विद्या पढ़ी-स० ई० १७८७ मे अंग्रेजी सेनामें भरती हुये स० ई० १७९७ में हिंदोस्तान आकर मैसोर के गवर्नर नियत हुये-असाईकी लड़ाईमें जो स० ई० १८०३ में हुई, इन्होंने ८०० सिपाहियोंसे सेंधियाकी ४० हजार फौजको परास्त किया-स० ई० १८०५ में इंग्लैंडको वापिस गये और अनेक कठिन अवसरोंपर राज्यसेवा प्रशंसनीय और पर की-नेपोलियन बोनापार्टको वाटरलूकी लड़ाईमें परास्त करके ड्यूक-आफ वेलिङ्गटनकी उपाधि पाई-पश्चात् बड़े २ ओहदों पर रहे-युद्ध में कभी पीठ न दिखलानेवाले प्रामाणिक और पूरूपम परम प्रतिष्ठा प्राप्त महा पुरुष थे-

स० ई० १८५२ में ८३ वर्षकी उम्रमें मरे-महारानी विक्टोरियाने मृत्युकी हृदयविदारक खबर पाकर कहा 'आज इंग्लैंडका नहीं ग्रेटब्रिटेनका गय कीर्ति महापुरुष नहीं रहा इसके समान कोई दूसरा न हुआ न होगा" श्रीमतीने स्वयं इस वीर पुरुषके विषयमें लिखा है "स्मरणीय योधा ड्युक मरनेपरभी अपने सुकार्यों से चिरंजीव रहेगा-उसमें भूमण्डलमें सन्मानका समावेश था-प्रजागणमें सर्व सर्वोत्तम था दोनों दल उसका आदर करतेथे-राज्यका परम मित्र होनेपर भी बड़ा सादा था- सब काम धैर्य और निर्भयतासे करता था इस राज्यको कभी ऐसा स्वामीभक्त महात्मा नहीं मिलेगा-यह सर्वदा सुसम्मति और कठिनताके समय सहायता देनेका तय्यार रहता था ऐसा कोई मनुष्य न होगा जो उसकी मृत्युपर न रोया हो !" पार्लियामेंटने अपने खर्चसे इसको वरुली ठाठसे दफनाया लार्ड वेलिजली गवर्नर जेनरल हिंद इनके बड़े भाई थे

ड्रेक-(सरफ्रान्सिस ड्रेक-Sir Francis Drake) इस प्रसिद्ध इंग्लैंडवासी अर्माकुल वहिरने रानी एलिजावेथके समयमें स० ई० १५७९ की साल ३ वर्ष १० महीनेमें पृथ्वीकी परिक्रमा कीथी स० ई० १५८९ में पार्लियामेंटके मेम्बर होगये

स० ई० १५४९ में जन्मे

स० ई० १५९५ में मरे.

ढोलाराउ इन्होंने जयपुर प्रान्तमे कछवाहोंका राज्य स०ई०९६७में स्थापन किया इनके पुत्र अथवा पौत्रने पुरानी राजधानी अम्बरको मीना लोगोंसे फतेह कियाथा स० ई० १७२८ में जयसिंह सवाईने जयपुर बसाया और अम्बरकी जगह उसको अपनी राजधानी बनाया मारु नामक स्त्रीसे ढोलाका अत्यंत प्रेम था, जिसके विषयमें गीत अबतक गायेजातेहैं ढोलाके पश्चात् इस गद्दीपर बैठने वाले राजोंमें सवाइ माधौसिंहजी (वर्तमाननरेश) १०६ वें हैं

तख्तसिंह—(रावल सर तख्तसिंह, जी० सी० यस० आई०, यल० यल० डी०) भावनगर (काठियावाड़ नरेश) स० ई० १८५८ में जन्मे निजपिता महाराजा जस्वंतसिंहके बाद स० ई० १८७० में गद्दीके वारिस हुये स० ई० १८७१ में राजकोट कालिजमें पढनेके लिये भेजेगये कालिजके अध्यापक आपके परिश्रमी स्वभावसे खुश रहे स० ई० १८७४ मे आपके ३ विवाह हुये और ३ विवाह और पीछे किये स० ई० १८७५ में कालिज छोड़नेके बाद लफटेन्ट करनैल नट साहबके साथ हिंदोस्थानका दौरा किया और उक्त साहबसे विशेष शिक्षा भी पाई स०ई०१८७७ के दिल्लीदर्बारमें आपकी सलामी तोपके ११ फैरसे १५ फेर किये गये स० ई० १८७५ में राजका पूरा अधिकार आपको सौंपागया आपने २ रेल्वे लाइन्स १२० मीललम्बी ८० लाख रुपयेके खर्चसे बनवाई स० ई० १८८१ मे के० सी० यस० आई० और स० ई० १८८६ मे जी० सी० यस० आई० की उपाधि पाइ इनके समयमें ९५ लाख रुपये देश सुधारनेमें खर्च हुये शिक्षा विभागपर आपकी विशेष दृष्टि थी स्त्रीशिक्षाके भी उद्योगी थे पानीके नल आपही के समयमें भावनगरमें जारी हुये १ लाख रुपया नार्थब्रुक इण्डियन क्लबको चंदेम दिया इस क्लबका उद्देश इग्लैंड और इण्डियामें मेल मिलाप कराना है स० ई० १८९३ में इंग्लैंड जाकर यल० यल० डी० की उपाधि कैम्ब्रज विश्व विद्यालयसे प्राप्त की स० ई० १८९६ में मृत्यु हुये और आपके ज्येष्ठ पुत्र महाराजा भावसिंहजी (वर्तमान नरेश) २१ वर्षकी उमरमें गद्दी पर बैठे राज्यका विस्तार २८६० वर्गमील है सालियाना आमदनी ४१ लाख रुपयेकी है इस रियासतके राजे गोहेलवंशी हैं गोहेल वंश चन्द्रवंशकी एक शाखा है गोहेल वंशी राजोंका स० ई० ८१२ के बहुत पहिलेसे सौराष्ट्र (काठियावाड़) मे अधिकार है पहिले राजधानी सीहोर थी स० ई० १७२३ में रावलभावसिंहने भावनगर बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया

ताजबीबी—(इसका असली नाम अर्जुमंदबानु बेगम था और शाहजहां बादशाह दिल्लीके साथ शादी होनेपर मुमताजमहल लकब पायाथा ये नूरजहांके भाई आसफ़ख़ाँ वजीरकी बेटी थी स० ई० १५९२ में पैदा हुई—स० ई० १६१२ में शाहजहांके साथ इसकी शादी हुई स० ई० १६३१ में बुरहानपुरमें

मरी-मरते समयका इसका वृत्तांत यों है कि, ये उन दिनों हामला थी दैवगति
१ दिन गर्भमें बच्चा रोया-जिसके गर्भमें बच्चा रोता है वह स्त्री जीती नहीं
निदान ताजबीबीने बादशाहको बुलाकर गले लिपट रोकर कहा कि, बादशा
सलामत मैं आपसे रुखसत होती हूं, आपकी बादशाहीका मैंने थोड़ाही सुख
भोग पाया क्योंकि आपको तख्तपर बैठे पूरे ४ वर्ष भी नहीं हुये हैं और मालि
ककी मर्जीमें कुछ वश नहीं, लेकिन दो बातें मैं आपसे कहती हूं एक तो आ
अब दूसरी शादी न करें क्योंकि आपके दाराशिकोह आदि ४ बेटे और
बेटियें मौजूद हैं और दूसरी बात यह है कि,आप मेरा मकबरा ऐसा बनवावें कि
उसकी समान पृथ्वीपर दूसरा न निकले शाहजहांने इन दोनों बातोंपर अम
किया-दूसरी शादी नहीं की और जमनाके किनारे आगरेमें ताजबीबीका रोज
संगमर्मरका ऐसा बनवा दिया कि जिसकी समान भूमण्डलपर दूसरा मकब
नहीं है-पहिले तो ताजबीबीकी लाश बुरहानपुरमें गाड़ दी गई थी फिर ज
आगरेमें रोजा बनकर तैयार होगया तो वहांसे हड्डियें उखाड़कर रोजेमें द
नाई गई

तांतियाटोपी-(सन् ५७ के गदरका प्रसिद्ध बागी) ये पूनाके ज
लोंमें घूमता पकड़ा गया और१८अप्रेल स०ई०१८५९को फांसी दिया गया फांस
दियेजानेसे पहिले जो इसने अपना बयान लिखाया वह यह है "मैं पूनाका रहने
वाला ब्राह्मणहूं ३० वर्ष हुए तब पूनासे मध्यहिंदमें आया और तोपखानेमें चाक
करली बादको बिठूर (कानपुर)आकर नाना साहिबके यहां नौकरी की गदर
समयमें मैं नाना साहिबहीका नौकर था कानपुरमें मेरेही उपसानेसे मेमा औ
उनके बच्चोंको बागियोंने मारडाला नाना साहिब मेरी इस कारस्वाईपर बहु
नाराज हुये क्योंकि वे उनकी हिफाजतका वचन दे चुके थे १० आक्टूबर स
५७ को बागियोंकी ८ हजार सेनाने जो आगरेमें अंग्रेजोंपर धावा किया था
सबका सेनापति मैंही था यदि मैं धोखा न खा जाता तो अंग्रेज साहिब नहीं जीत
पाते बसवाकी लड़ाई में मेरे पास २२ हजार सेना और १३० तोपें थीं, इस
अधिक फौज मेरे अधिकारमें और कभी नहीं रही थी

तांतिया भील-(डॉकू) जिला नीमर मुल्क बरोदाके किसी गांव
में स० ई० १८४२ की साल पैदा हुआ माता इसको छोटासा छोड़ मरी थी औ
इसका बाप भाऊसिंह कृषिकारथा लड़कपनहीं से पराक्रमी मालूम होता थ
बापके खेलनेवाले लड़के आतंक मानते थे लड़कपनमें इसने खेती करन
तीर कमान चलाना और निशाना लगाना सीखा था जब ये १० वर्षक
था तब इसका बाप मर गया बापके जोत जी इसने शराब पीने और मार्क
गानेमें अपना समय बिताया था गरीबों फकीरोंकी सहायता करनेकी आदत इसं

शुरूहीसे पाई जाती थी बापके मरनेसे कुछ दिनाबाद एक दफे तांतियासे माल-गुजारी अदा न हो सकी इस लिये सरकारने उसके खेत नीलाम कर दिये तब तो लाचार होकर यह बरोदासे पोखड़को चलागया क्योंकि वहाँ उसके बापकी कुछ जमीदारी थी पर यहाँके जमीदार शिवपटैलने बहुतसे लोगोंसे मिलकर उसकी वहभी जमीदारी छीन ली सर्कारि अफसरोंने भी बहुतसे लोगोंकी गवाही पर ' ' उसके खिलाफ फैसला कर दिया पश्चात् 'शिवपटैल और उसके साथियोंने मिल मिलाकर निर्दोष तांतियाको कैद करा दी कैदसे छूटकर यह बेचारा हुल्करकी रियासतमें बसकर खेती करने लगा परंतु पोखड़वासी उसके शत्रुओंने पुलिससे मिलकर चैन नहीं लेने दिया, मुकद्दमें बनार अकसर उसको सजा कराते रहे—इन कमीनेपनकी चालोंसे तंग आकर तांतियाके दिलमें पोखड़वासी शत्रुओं तथा पुलिससे बदला लेनेकी आग भवक उठी, पर कोई उपाय न देख उसने डांकूका पेशा इख्तियार करलिया और मध्य हिंदके जंगलोंम रहने लगा—उसकी चातुर्यता और उदारताको देख बहुतसे डांकू उससे आमिले—फिर तो तांतियाने शिवपटैल और उसके बहिकानेसे उत्पन्न हुये अनेक पोखड़वाशी शत्रुओंको नाक चने चबादिये उनके घर फूक दिये, माल असबाब लूट लिया अनेकोंकी नाक काट डाली और उनकी बहिन भाजी, बहू बेटियोंके सतीत्व भंग कर दिये, बहुतसे शत्रुओंके प्राण हर डाले शिवपटैलका बीज बकला नष्ट कर दिया, पुलिस उसके पकड़नेकी फिकरमें मुद्दतों तक रही, पर उसने अनेक सिपाहियों को नासिका हीन करदिया, पुलिस अफसरोंके सामनेसे उनके घोड़े छेर कर भाग गया, और कितनी दफै हवालातसे निकल चम्पत होर गया—भोर लोग तांतियाके सुशील स्वभावसे बहुत प्रसन्नथे, वे उसका पता किसीको नहीं बताते थे और वहभी उनकी सब प्रकार मदद करताथा—लूटका माल अपने साथियोंमें बराबर २ बांट देताथा—अमीरोंको लूटता और गरीबोंको देता था—एक दफे टापटी नदीके तीर एक दिन म भूखोंको ६ हजार रुपये दे दिये थे—अतमें जब पुलिस कुछ न कर सकी तो फौज को तांतियाके पकड़नेका हुक्म हुआ सर लेपिल ग्रेफिन और रिसालदार मेजर ईश्वरीसिंह इस कामपर तईनात हुये निदान एक सुन्दरी स्त्रीकी मददसे, जिससे कि, तांतियाकी मुलाकात थी, ये डांकू सं० ई० १८८९ में पकड़ा-गया जब्बलपुरमें उसका मुकद्दमा हुआ और फांसीका हुक्म मिला—अपने बयानमें झूंठ नहीं बोला अन्तमें केवल यह प्रार्थना की कि, मुझको फांसी देनेकी जगह गोलीसे मार दिया जाय, लेकिन कुछ सुनाई न हुई जब फांसीको लाया गया तो उसको कुछ करना बाकी नहीं था मुखपर प्रसन्नताके चिह्न मालूम देते थे क्योंकि दुष्ट शत्रुओंसे यथोचित बदला लेकर परम धामको सिधारता था

मरी–मरते समयका इसका वृत्तांत यों है कि, ये उन दिनों हामला थी दैवगति १ दिन गर्भमें बच्चा रोया–जिसके गर्भमें बच्चा रोता है वह स्त्री जीती नहीं है निदान ताजबीबीने बादशाहको बुलाकर गले लिपट रोकर कहा कि, बादशा सलामत मैं आपसे रुखसत होती हूं, आपकी बादशाहीका मैंने थोडाही सुख भोग पाया क्योंकि आपको तख्तपर बैठे पूरे ४ वर्ष भी नहीं हुये हैं और मालि ककी मर्जीमें कुछ वश नहीं, लेकिन दो बातें मैं आपसे कहती हूं एक तो आ अब दूसरी शादी न करें क्योंकि आपके दाराशिकोह आदि ४ बेटे और बेटियें मौजूद हैं और दूसरी बात यह है कि,आप मेरा मकबरा ऐसा बनवाएं कि उसकी समान पृथ्वीपर दूसरा न निकले शाहजहांने इन दोनों बातोंपर अमल किया–दूसरी शादी नहीं की और जमनाके किनारे आगरेमें ताजबीबीका रोजा संगमर्मरका ऐसा बनवा दिया कि जिसकी समान भूमण्डलपर दूसरा मकबरा नहीं है–पहिले तो ताजबीबीकी लाश बुरहानपुरमें गाड दी गई थी फिर आगरेमें रोजा बनकर तैयार होगया तो वहांसे हड्डियें उखाडकर रोजेमें दफ नाई गई

तांतियाटोपी–(सन् ५७ के गदरका प्रसिद्ध बागी) ये पूनाके जं गलोंमें घूमता पकडा गया और१८अप्रेल सन्ई०१८५९को फांसी दिया गया फांसी दियेजानेसे पहिले जो इसने अपना बयान लिखाया वह यह है "मैं पूनाका रहने वाला ब्राह्मणहूं ३० वर्ष हुए तब पूनासे मध्यहिंदमें आया और तोपखानेमें चाकरी करली बादको बिठूर (कानपुर)आकर नाना साहिबसे यहां नौकरी की गदरके समयमें मैं नाना साहिबहीका नौकर था कानपुरमें मेरेही उकसानेसे मेमा और उनके बच्चोंको बागियोंने मारडाला नाना साहिब मेरी इस कारवाईपर बहुत नाराज हुये क्योंके वे उनकी हिफाजतका वचन दे चुके थे १० आक्टुबर सन् ५७ को बागियोंकी ८ हजार सेनाने जो आगरेमें अंग्रेजोंपर धावा किया था, इसका सेनापति मैंही था यदि मैं धोखा न खा जाता तो अंग्रेज साहिब नहीं जीतने पाते बेतवाकी लडाई में मेरे पास २२ हजार सेना और १२० तोपें थीं इससे अधिक फौज मेरे अधिकारमें और कभी नहीं रही थी

तांतिया भील–(डॉकू) जिला नीमर मुल्क बरोदाके किसी गांव में सन् ई० १८४२ की साल पैदा हुआ माता इसको छोटासा छोड मरी थी और इसका बाप भाउसिंह कृषिकारथा लडकपनहीसे पराक्रमी मालूम होता था साथके खेलनेवाले लडके आतंक मानते थे लडकपनमें इसने खेती करना तीर कमान चलाना और निशाना लगाना सीखा था जब ये ३० वर्षका था तब इसका बाप मर गया बापके जीते जी इसने शराब पीने और नाचने गानेमें अपना समय बिताया था गरीबा फकीरोंकी सहायता करनेकी आदत इसमें

अफगानलोग तामिर्योंमें लवलीन थे पृथ्वीराजने अवसर पाकर लैलापर चढाई की ताराबाई अस्त्र शस्त्र कस पुरुषका रूप धर निजपतिके साथ रणभूमिमें गई, फौजको शहरके बाहर छोड़ तारा और उसके पतिने अकेले जाकर लैलाका काम तमाम किया और फिर बड़ी होशियारीसे अपनी सेनामें आ मिले लैलाके मारे जानेसे उसकी फौजके दिल टूटगये और सिपाही इधर उधर भाग निकले, जिनमेंसे बहुतोंको पृथ्वीराजकी सेनाने काटडाला-इस तरह ताराने अपने बापका राज्य अफगानोंके हलकमें उंगली डालकर निकाल लिया-पश्चात् २३ वर्षकी उम्रमें सब उपकार भूल पृथ्वीराजको उसके सालेने किसी तुच्छ निरा दरका बदला लेनेके लिये मलावारके समीप मिष्टान्नम विष मिलाकर देदिया-माया देवीके मंदिरके पास पहुंचते २ उसके पैर लरखड़ाने लगे और जीभपर कांटे लग आये तब तो उसको मालूम हुआ कि, छलसे मेरे प्राण जाते हैं-निदान तारा अपनी रानीको तुरंत सहला भेजा कि, मेरा अन्त समय है, आनेमें जरा भी विलम्ब न कर. विष तीक्ष्ण था, रानीके पहुंचनेसे पहिलेही पृथ्वी राजका देहांत होगया-रानीने पहुंचकर पतिके मृतक शरीरको गोदमें लेकर सत् किया-इन दोनों वीरोंके नामकी राजस्थानमें अबलौं बड़ी प्रतिष्ठा है-

तुकोजीराव हुल्कर-(इन्दौरकी महारानी अहिल्याके सेनापति) इन्दौ-रराज्यके संस्थापक मल्हरराव हुल्करके वंशमेंसे मल्हररावके बाद जब उनकी पुत्रवधू अहिल्याके शिर राजकाजका भार आन पड़ा तो उसने तुकोजीको सुयोग्य समझ अपना सेनापति नियत किया और अनेक काम जो स्त्री होनेके कारण महारानी खुद नहीं करसक्ती थी इनको सौंपे ये बड़े स्थिर प्रकृति, धर्म-भीरु, रणकुशल और राजनीतिनिपुण थे महारानी अहिल्याको मातुश्री कहकर बोलते थे और वह भी इनको पुत्रवत् मानती थी-

ये ईश्वरसे डरते रहते थे-कभी कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे इनकी स्वामिभक्तिमें शंका उत्पन्न होती स० ई० १७९५ में महारानीके बाद इन्दौरका राज्य इन्हींको मिला स० ई० १७९७ में सिधारे और इनका पुत्र प्रसिद्ध जस्वंत राव हुल्कर गद्दीका मालिक हुआ

तुञ्जीन-(काश्मीरनरेश) निजपिता राजा जलौकके बाद वि० स० से १२६ वर्ष पहिले गद्दीपर बैठा-३२ वर्ष राज्य किया-ये अपुत्र था और इसकी रानी वाक्यपुष्टा नाम्नीने अग्निमें प्रवेश करके देह त्यागी थी धानकी खेती मारे जानेसे एक समय इसके राज्यमें अकाल पड़ा था तब इसने कोशका सब रुपया प्रजाका दुःख मेटनेमें खर्च करदिया था-माड़वाड़ देशमें इसने सड़कोंके किनारे दोनों तरफ वृक्ष लगवाये थे हिमालयकी चोटीपर तुङ्गनाथ शिवका मन्दिर इसका बनवाया हुआ अबतक विद्यमान है-प्रसिद्ध पंडित चन्द्रक इसीके वक्तमें हुआ

तानसेन–(गवैया) इतिहासकर्त्ताओंकी राय है कि, इस तानसेनकी समान दूसरा गवैया नहीं हुआ इनके पूर्वजों का निकास पंजाब का था, पर इनके बाप मकरंद पांडे गौड़ब्राह्मण ग्वालियर में रहतेथे संगीतशास्त्रकी प्रथम शिक्षा इन्होंने निज पितासे पाई विशेष विद्यापठनार्थ मथुरा संगीतज्ञ गोकुलस्थस्वामी हरिदासजीको गुरु किया और बादको मशहूर गवैया शेख मुहम्मद गौस फकीर को अपना उस्ताद बनाया–शेखजीने अपनी जीभ इनकी जीभ में लगादी, जिसके प्रभावसे आवाज खूब खुलगई और ये मुसल्मान होगये तानसेनने योग्य होतेहुये भी अपने को सदैव तुच्छ ही समझा जिसको संगीत शास्त्रका विद्वान् जाना उसीके पास गये और नम्रहो जिसप्रकार होसका विद्या पढ़ी– ऐसेमें संगीत शास्त्रके पूर्ण विद्वान् बन बादशाह अकबरके दरबारमें पहुंच नौकर होगये–बादशाह अकबर तथा दर्बारीलोग इनकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करतेथे–इतिहासोंमें इनके गानेकी बड़ी प्रशंसा कीगइहै–जब गाते तो पशु, पक्षी छीन होजातेथे, हिरन चौकड़ी भूलजातेथे-एक दफे बादशाह अकबरके सामने सहस्रों मनुष्यों के देखते इन्होंने जमुनाजीमें खड़े होकर एक राग गाया जिसके प्रभावसे जलमेंसे लपट निकलकर दूर २ फैलनेलगीथीं इन्होंने सूरदासजी की प्रशंसा में यह पद कहा था–

दो०–किधौं सूरको सर लग्यो, किधौं सूरको तीर ।
किधौं सूरको पद लग्यो, तन मन धुनत शरीर ॥

सूरदासजीने इसके उत्तरमें कहा–

दो०–विधना यह जिय जानके, शेष न दीने कान ।
धरामेरु सब डोलते, तानसेनकी तान ॥

ग्वालियरमें २ इमलीके दरख्त अबतक तानसेनके नामसे प्रसिद्ध हैं, गवैये उनके पत्ते खसोट २ के खाते हैं और कहते हैं कि, उनके खानेसे आवाज खुल जाती है–कई पुत्र छोड़कर दिल्लीमें स० ई० १५८८ की साल सिधार गये

ताराबाई–रायसूरसेन बिजनौरवालेकी कन्या चित्तौड़ नरेश रायमलके पुत्र पृथ्वीराजको बियाही गई थी ऐराअफगानने बिजनौरके सिवाय सब मुल्क रायसूरसेनसे छीन लिया ताराने निजपिताको राज्यक्षीण होनेसे दुःखित देखकर स्त्रियोंके व्यसन सब त्याग दिये और घोड़ेपर चढ़ना तथा तीर कमान चलाना इस अभिप्रायसे सीखना शुरू किया कि, कभी अपने पिताका गया हुआ राज्य अफगानोंसे वापिस लेलूंगी अवसर पाकर सूरसेनने अफगानपर चढ़ाई भी की, तारा निज पिताके साथ घोड़ेपर सवार होकर धनुष बाण लेकर गई पर हारही नजर आई अंतमें ताराने पृथ्वीराजके साथ शादी इस शर्तपर की कि, उसको अपने ससुरका राज्य अफगानोंसे छीन देने होगा मुहर्रमके दिनोंमें जब

अफगानलोग सामियोंमें लवलीन थे पृथ्वीराजने अवसर पाकर लैलापर चढाई की तारावाई अस्त्र शस्त्र कस पुरुषका रूप भर निजपतिके साथ रणभूमिमें गई, फौजको शहरके बाहर छोड तारा और उसके पतिने अकेले जाकर लैलाका काम तमाम किया और फिर बडी होंशियारीसे अपनी सेनामें आ मिले लैलाके मारे जानेसे उसकी फौजके दिल टूटगये और सिपाही इधर उधर भाग निकले, जिनमेंसे बहुताको पृथ्वीराजकी सेनाने काटडाला–इस तरह ताराने अपने बापका राज्य अफगानोके हाथमें ठेगली डालकर निकाल लिया–पश्चात् २३ वर्षकी उमरमें सब उपकार भूल पृथ्वीराजको उसके सालेने किसी तुच्छ निरादरका बदला लेनेके लिये महावारके समीप मिठाइमें विष मिलाकर देदिया–माया देवीके मंदिरके पास पहुचते २ उसके पैर एरसडाने लगे और जीभपर कांटे लग आये तब तो उसको मालूम हुआ कि, छलसे मेरे प्राण जाते हैं–निदान तारा अपनी रानीको तुरंत कहला भेजा कि, मेरा अन्त समय है, आनेमें जरा भी विलम्ब न कर. विष तीक्ष्ण था, रानीके पहुंचनेसे पहिलेही पृथ्वी राजका देहांत होगया–रानीने पहुंचकर पतिके मृतक शरीरको गोदमें लेकर सत् किया–इन दोनों वीरोंके नामकी राजस्थानमें अबकी बडी प्रतिष्ठा है–

तुकोजीराव हुल्कर–(इन्दौरकी महारानी अहिल्याके सेनापति) इन्दौरराज्यके संस्थापक मल्हरराव हुल्करके वंशमेंसे मल्हररावके बाद जब उनकी पुत्रवधू अहिल्याके शिर राजकाजका भार आन पडा तो उसने तुकोजीको सुयोग्य समझ अपना सेनापति नियत किया और अनेक काम जो स्त्री होनेके कारण महारानी खुद नहीं करसकती थी इनको सौंपे ये बडे स्थिर प्रकृति, धर्मभीरु, रणकुशल और राजनीतिनिपुण थे महारानी अहिल्याको मातुश्री कहकर बोलते थे और वह भी इनको पुत्रवत् मानती थी–

ये ईश्वरसे डरते रहते थे–कभी कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे इनकी स्वामिभक्तिमें शंका उत्पन्न होती सन० ई० १७९५ में महारानीके बाद इन्दौरका राज्य इन्हींको मिला सन० ई० १७९७ में सिधारे और इनका पुत्र प्रसिद्ध जस्वंत राव हुल्कर गद्दीका मालिक हुआ

तुञ्जीन–(काश्मीरनरेश) निजपिता राजा जलौकके बाद वि० सं० से १२६ वर्ष पहिले गद्दीपर बैठा–३२ वर्ष राज्य किया–ये अपुत्र था और इसकी रानी वाक्पुष्टा नामीने अग्निमें प्रवेश करके देह त्यागी थी धानकी खेती मारे जानेसे एक समय इसके राज्यमें अकाल पडा था तब इसने कोशका सब रुपया प्रजाका दुःख मेटनेमें सर्व करदिया था–माडवाड देशमें इसने सडकोंके किनारे दोनों तरफ वृक्ष लगवाये थे हिमालयकी चोटीपर तुङ्गनाथ शिवका मंदिर इसका बनवाया हुआ अबतक विद्यमान है–प्रसिद्ध पंडित चन्द्रक इसीके वक्तमें हुआ

तुलसीदास गोस्वामी–(रामायणके कर्ता) राजापुर रहनेवाले सर्जूपारी ब्राह्मण वि० सं० १५८९ में जन्मे थे तु० कृ० रा० की शलीमें लिखा है कि, इनका यथार्थ नाम रामबोला था, पिताका नाम आत्माराम मातका हुलसी, सशुरका दीनबन्धु पाठक और स्त्रीका रत्नावली था. ज्योतिः शास्त्रके मतानुसार मूलनक्षत्रके प्रथम चरणमें जन्मनेके कारण माता पिता तत्क्षण इनको त्यागदिया था, तु० कृ० विनय पत्रिकामें लिखा है–

"जननी जनक तज्यो जनम, करम बिन विधि सिरज्यो अवडेरे."

नरसिंहदास नामक एक साधु इनको पढ़ापाप उठाकर सोरोंमें ले आये थे–पश्चात् उक्त साधूने इनको रामकथाका प्रेमी बनाया और सचेत होनेपर चेला करलिया कुछ दिनोंबाद महात्मा दीनबन्धु पाठकने इनको सुयोग्य जान अपनी कन्या विवाह दी ये ऐसे स्त्रैण थे कि, १ दिनको भी अपनी स्त्रीकी विदा नहीं करते थे निदान इनका साला अवसर पाकर अपनी बहिनका एक दिन लिवा लेगया घर आकर जब इनको हाल मालूम हुआ तब ये तुरंत सुसरालको चलदिये अभी मिलभेंट भी नहीं पाई थी कि, ये जापहुंचे, निदान लज्जित हो बोली "जितनी प्रीत तुमको मेरे हाड़ मांसके शरीरमें है, इतनी प्रीति यदि रामचन्द्रमें होती तो क्या बात थी" स्त्रीका वचन सुन गुसांईजीको वैराग्य उत्पन्न हुआ और उसी क्षण घरसे निकल काशीकी राह ली और ईश्वराराधनमें तत्पर हुए पश्चात् चित्रकूट, प्रयाग, अयोध्या, जगन्नाथपुरी और ब्रजमें विचरे–रामायणकी रचनाका आरंभ अयोध्याजीमें रहकर कियाथा यथा तु०कृ० रामायणे बालकाण्डे

"संवत सोलहसौ इकतीसा । करौं कथा हरिपद धर सीसा ॥ नौमी भौमवार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा" ॥ कवि बेनीमाधवदासजी जो इनके साथ बहुत दिनोंतक विचरते रहे थे लिखते हैं कि, गुसांईजी बड़े महात्मा, रामोपासक, महायोगी और सिद्ध थे सिद्धताके विषयमें अनेक उदाहरण नाभाजीकृत भक्तमालमें लिखे हैं राजे, महाराजे, सेठ, साहूकार, पंडित, विद्वान् सबही इनकी प्रतिष्ठा करते थे और वैसीही प्रतिष्ठा इनके नामकी अबतक है और रहेगी इनके रचे ग्रन्थोंके देखनेसे विदित होता है कि, ये ४ वेद, ६ शास्त्र, १८ पुराण तथा अनेक और विद्याओंके पूर्ण ज्ञाता होकर परम नीतिज्ञ थे उन दिनों बादशाह अकबरका राज्य था, पर इनको राजदर्बारमें रहना पसंद न था अपनी मृत्युके विषयमें यह दोहा कई वर्ष पहिले कह दिया था–

दो०–संवत सोरहसौ असी, असी गंगके तीर ।
श्रावणशुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ॥

गुसांईजीके अन्तिम वचन यह थे

दो०–राम नाम यश वर्णिकै, भयो चहत अब मौन ।
तुलसीके मुख दीजिये, अबही तुलसी सौन ॥

गुसाँइजीका जन्म राम उपासनाके प्रचारार्थही इस जगत्में हुआ था, जब नारसमें इनके रहिनेसे रामचर्चा चारोंतरफ फैली तो वहाँके बडे २ पंडित विद्वान् इनसे शास्त्रार्थ करने आये और कहा कि, आपका प्रमाण बतलाइये उसरमें इन्होंने निम्निस्थ दोहा पढ़ा–

दो०–हर हरि यश सुरनर गिरा, बरणहिं संत सुजान।
हांडी हाटक चारु चिर, राधें स्वादसमान॥

जब पंडितोंने उससमयके प्रसिद्ध विद्वान् मधुसूदनाचार्य दण्डी स्वामीसे जाकर यह बात कही तो स्वामीने यह श्लोक पढ गुसाँइजीको धन्यवाद दिया–

श्लो०–परमानंदपत्रोऽयं जंगमस्तुलसी तरुः।
कवितामञ्जरी यस्य रामभ्रमरभूषिता॥

अकबरके मंत्री रहीमखानखाना गुसाँईजीके परममित्र थे एकदफे गुसाँईने उनके पास यह समस्या लिखकर भेजी– "सुरतिय नरतिय, नागतिय, येचन चहि सबकोय" खानखानाने निम्निस्थ पद बनाय दोहा पूरा किया–

"गर्भलिये हुलसी फिरै कि तुलसी सो सुत होय" कुछ विशेष वृत्तांत गुसाईजीका होळराय कवीश्वरके सम्बंधमें है (देखो होळराय) निम्निस्थ ग्रंथ छु कृ मिलते हैं–

मानसरामायण, दोहावली रा०, कवितावली रा०, छंदावली रा० बरवै रा० सप्पय रा०, कुण्डलिया रा०, रमाज्ञाप्रश्न, कलिधर्मा धर्म निरूपण, हनुमान् बाहुकीउ, हनुमान्बाहुक, संकटमोचन, रामशलाका, कृष्णगीतावली, रामगीतावली, सतसइ, जानकी मंगल, पार्वतीमंगल, राम नेहछू, वैराग्यसंदीपनी, कड़खाछंद, रोलाछंद, झूलाछंद, सूर्यपुराण और अनेक भजन। इन सब ग्रंथोंमें मानसरामायण मुख्य है उसका प्रचार इस देशमें घर २ है पंडितसे मूर्खतक सब लोग उसको पढ़ते हैं और निजबुद्धिके अनुसार अर्थ लगाते हैं "अक्षरकामधेनु" की कहावत उस ग्रंथपर ठीक २ घटती है

तेगबहादुर–(सिक्खोंके गुरु) ये गुरु हरगोविंदके कनिष्ठ पुत्रथे और नानकजीके वंशसे अमृतसरमें पैदा हुयेथे–९ बरसकी उम्रमें इनका विवाह हुआ स० ई० १६६४ में गुरुभाईकी गद्दीपर बैठे औरंगजेबने इनको दिल्ली बुलाकर मुसल्मान हो जानको कहा जब इन्होंने नहीं माना तो उस दुष्टने इनको मरवा डाला सिक्खोंके अंतिम गुरु गोविंदसिंहजो इनके पुत्रथे स०ई०१६१५ की, साल ५४ बर्षकी उम्रमें मारेगये

तैमूरलङ्ग–(अमीर तैमूर तुर्किस्तानका बादशाह) चंगेजखाँ तातारीके वंशमें स०ई०१३३६ की साल समरकंदमें पैदा हुआ बाप इसका गडरियका काम करताथा बचपनके खेलोंमें ये लड़कोंका सर्दार बनकर एडाउ किया करताथा स्वप्नफल तथा प्रश्न निकालने और ज्योतिष पढनेका इसको शौक़ था.

धर्मसम्बंधी शिक्षाभी कुछ पाईथी मुसलमानी मतको मानताथा पहिले अनेक कठिनाइयोंका सामना दृढता सहित करके लडकाइके शुरूमें इसने कंदके बादशाहके दर्बारमें राजदूतका पद पाया बादशाह योंदेही इसकी वीरता और सुंदर स्वरूप देखकर खुश होगया, और उसने अपनी इसको विवाहदी बादशाहके मारे जानेपर तैमूर लड भिडकर समरकन्दका शाह बन बैठा फिरतो इसने एशियाके प्राय सबही मुल्क लूटे और उजाडे ईरान,अफगानिस्तान,तुर्किस्तान और हिंदोस्तानपर चढाइ की-ये निदइ जहां वहांके लाखों मनुष्योंको वध कराके तमाशा देखा-इसका कथन था कि, आस्मानपर एक बादशाह है वैसेही पृथ्वीपर एक बादशाह होना चाहिये स्तानपर चढाई करके दिल्लीनरेश मुहम्मद तुगलकको परास्त किया और धन लूटा कि, ९० हाथियोंपर लादकर समरकंद भेजा मेरठसे ? लाख मनुष्य करके लेगयाथा पर जब उनके खान पीनेका प्रबंध न बन पडा तो उन सबके सिर कटाए पश्चात् इसने मुल्क शामपर चढाई की और वहाके बादशाहको कैद लाया स इ १४०५ में चीनपर चढाइ करनेके लिये १ लाख सेना सहित किया पर रास्तेहीमें बर्फमें फँसकर ७१ वर्षकी उम्रमें मरगया इसने कोई सल्तनत नहीं स्थापनकी पर अनेकदेशोंपर चढाई करके माए असबाब लूटा और लाखो मनुष्योंको नष्ट किया हिन्दोस्तानके मुगल बादशाह इसी वंशोत्पन्नथे ।

दण्डी–(संस्कृत कवि) राजा भोजके समयमें हुये भोजका समय राजेंद्रलाल मित्रने बहुत वादानुवादके बाद स इ १०२६ से १०८३ तक किया है दशकुमार चरित्र तथा काव्यादर्श आदि साहित्य ग्रंथ इनके हुयेहैं पदलालित्यके विषयमें प्रसिद्धही है कि, "दण्डिन: पदलालित्यं" एक बहुत बडी सभा हुईथी उसमें दण्डीजीने अपनेको कालिदाससेभी श्रेष्ठ कथन किया, पर इन दोनोंके न्यूनाधिक्यका निर्णय कौन करसकताथा, निदान सरस्वतीका आवाहन कियागया और घटमेंसे यह आवाज निकली "कविर्दण्डी कविर्दण्डी, कविर्दण्डी न संशय"

१ दत्तकवि– देखो देवदत्त कानपुरनिवासी

दत्तात्रेय–अत्रिमुनिके पुत्र अनुसूयाके उदरसे जन्मेथे ये बडही पाओंहे जिनके चरण परम पुनीत मान सीतामाताने वनोवासके समय दत्तात्रेयके ३ पुत्र दत्त, सोम और दुर्वासा हुये दत्तात्रेय बडे विवेकी व निर्मल २४ गुरु उन्होंने कियेथे पृथ्वी, वायु, आकाश, जल अग्नि, चंद्रमा, सूर्य, कपोत अजगर, भ्रमर, पतङ्ग, शहद की मक्खी, मस्त हाथी, भौंरा, हिरन, मछली, पिंगला, गिद्ध, बालक, कन्या, तीर बनानेवाला, सर्प और मकडी

दधीच ऋषि–अथवण ऋषिके पुत्रथे इनका नाम वेदोंमे आयाहै ये उससमयमें हुये जब हड्डीके शास्त्रोंका प्रचार था दधीचके हाड अत्यंत पोढे और लम्बे थेहैये एवं देवताओंने असुरोंसे तंग आकर बुड्ढे दधीचिसे प्रार्थना की कि, आप अपने जिस्मकी हड्डिया हमको वज्र बनानेके लिये दीजिये, ताकि हम उनसे असुरोंके मारनेमें समर्थहों दधीचिने धर्मकार्य जान अपने प्राण देना स्वीकारकिया

दमयन्ती–इसका पूरानाम भुवनमोहनी दमयन्ती था ये विदर्भ (बिरार) राजा भीमसेनकी कन्याथी विवाह इसका निषध (मगधदेश) के राजा नलके साथ हुआथा विवाहके बाद १२ वर्षतक समय सुख चैनसे बीता और इसी अवसरमें १ पुत्र तथा १ पुत्री भी पैदा होगई पश्चात महाराज नलपर विपत्ति पडी और उस कुसमयमें रानी दमयन्तीने निज पतिका खूब साथ दिया, जिसका वृत्तात नलके चरित्रमें लिखागया है (देखो नल) दमयन्ती अत्यंत सुशील, गुणवती और पतिव्रता थी

दयानन्द सरस्वती–(आर्य्यसमाजके संस्थापक) वि सं १८८१ में काठियावाड़के एक धनी अवदीच्य ब्राह्मणके घर जन्मे और मूलशङ्कर नाम पडा बचपनहीसे पढने लिखनेका बडा चाव था और बुद्धि अत्यंत तीव्र और चपलथी जब १९ वर्षके हुये तो इनकी छोटी बहिन तथा इनके चचा मरगये, जिससे इनको वैराग्य उत्पन्न होगया यह देख मातापिताने विवाहकी तैय्यारी करदी विवाहके बखेडेसे जन्मभरको बचनेके लिये ये स० वि० १९०३ में घरसे सदैवके लिये निकल गये मार्गमें बडे बडे विद्वानोंसे मिले और पूर्णानन्दसरस्वतीके शिष्य हो संन्यासी होगये और दयानन्दसरस्वती नाम पाया इसीप्रकार विचरते हुये ३० वर्षकी उम्रमें प्रथमकुंभ हरिद्वारका किया पश्चात् प्रायः ४ वर्षतक उत्तराखण्डमें विचरते रहे वि० स० १९१६ में मथुरा आकर विरजानन्दसरस्वतीसे कई वर्षतक विशेष विद्या पढी, जिसका वृत्तांत विरजानन्दसरस्वतीके सम्बधमें देखो फिर युक्तप्रदेश, पंजाब, बम्बई, बंगाल और राजपूताना आदि प्रान्तोंमें घूम २ कर वैदिक मतका उपदेश किया, आर्य्यसमाजोंकी बुनियाद डाली और अजमेरमें स्वरचितग्रंथोंके छापनेके लिये एक यंत्रालय खोला–

स ई १८८३ में स्वामीजीने अपने वस्त्र, पुस्तकें, धन और यंत्रालयादिकका अधिकार त्रियोविंशत् उपकारिणी सभाको देकर वैदिकमतका प्रचार तथा अनाथोंकी रक्षा करनेकी आज्ञा दी इसी साल स्वामीजीका देहांत हुआ इन्दौर, उदयपुर, जोधपुर तथा शाहपुरानरेशोंने आपकी बडी प्रतिष्ठा कीथी–शाहपुराहीमें प्रथम जुकामसे पीडितहो स्वामीजी अधिक बीमार होगयेथे–बीमार होनेका विशेष कारण कुछ औरहै जो यहां नहीं लिखा जायगा–रोग निवृत्तिकेलिये शाहपुरासे आबू और वहांसे अजमेर पधारे, पर रोग बढताही गया–अन्तिम

दिन स्वामीजीने अजमेरसमाजके सभासदोंके सामने ईश्वरकी स्तुति करते हुये इस लोकका सम्बन्ध छोड़दिया–आपकी यादगारमें लाहौरमें ऐंग्लोवेदिक कालिज और बरेली तथा फीरोजपुरमें अनाथालय जारी कियेगये–यजुर्वेद ऋग्वेदका भाष्य और सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक ग्रंथ आपके रचे हुये हैं

दयाराम ठाकुर–ये जातिके जाट थे–इनके पूर्वज ठा मक्खनसिंह पूनानासे आकर माय स इ १६०० में मुरसान जिला मथुराम बसे–मक्खनसिंहके प्रपौत्र ठा नन्दराम स इ १६९६ में १४ पुत्र छोड़कर मरे, जिनमसे करनसिंहकी संताने अबतक मुरसानमें राज्य करतीहैं और जयसिंहके ठाकुर दयाराम हाथरसवाले थे–ठा दयारामके पास जागीरमे माट, महावन, हसनगढ, सहमऊ और पीडोली इत्यादि ग्राममें–इनकी गढी हाथरसमें मज़बूत बनी हुइथी–स इ १८१७ में अंगरेजी फ़ौजने दयारामकी गढी आ घेरा–दयाराम बड़ी वीरतासे लड़े, पर अतमें हारे और भागकर भरतपुर पहुंचे ब्रिटिश गवनमेंटने उनकी जागीर जप्त और खर्चके लिये १००० रु मासिक पेन्शन दी–व्योमसार तथा सुजान नामक दो पुस्तकें ठा दयारामहीके किसी नौकरकी रची हुई हैं स इ १८४१ में ठा दयाराम परमधाम सिधारे–सन ५७ के गदरकी खैरख्वाहीमें दयारामके पुत्र ठा गोविंदसिंहको हजार रुपया नकद और १२ गांव तथा कोयलकी जमींदारी और खिताब मिला था गोविंदसिंहके पुत्र रा० हरिनारायणसिंह अबतक विद्यमान हैं

दलीप–सूर्यवंशी राजा रघुके पिता थे रामचंद्र महाराज इनकी चौथी पीढ़ीमें अवतरेथे–कालिदासकृत रघुवंशमें इनका पूर्णवृत्तांत है–ये बड़े यशस्वी थे

दलीपसिंह–महाराजा, जी सी एस आइ (पजाबनरेश) पंजाबके महाराज रणजीतसिंहके कनिष्ठ पुत्र रानी चंद्रांके उदरसेथे महाराज शेरसिंहके मारेजानेपर स इ १८४३ की साल १० वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठे इनके बचपनमें इनकी माता रानी चंदा राज्यका सब काम करतीथी लहेनासिंह हीरासिंह, सुचेतसिंह और जवाहिरसिंह क्रमशः वजीर हुए और खालसा फौजके हाथसे जवाहिरसिंहके बाद पंजाबमें पूरी बदअमली फैलगई और कोइ वजीर मुकर्रर हुआ फौज पर [illegible] होगई थी [illegible] अंग्रेजासे [illegible] नष्ट [illegible] मुचि [illegible] अंग्रेजों और सिक्खोंकी सेनामें [illegible] हुई आखिर [illegible] [illegible] नष्ट होगया और १२ मार्च स इ० १८४९ को [illegible] [illegible] जेनरल [illegible] पास हाजिर [illegible] होगया [illegible] २९ मार्चको [illegible] [illegible] किया हुक्म पंजाबकी [illegible] हुआ [illegible] में ब्रिटिशगवर्नमेंटका [illegible] ५ लाख रुपये [illegible] पेन्शन मिली और [illegible] यहांसे [illegible]

० ई० १८३५ में इंग्लैंड चलेगये और एक मिश्रकी सुंदरीसे शादी करली इंग्लैंडमें नकी प्रतिष्ठा बडे२ लार्डोके बराबरथी स० ई० १८८७ में इनको पंजाब देखनेकी ाज्ञा मिलीथी पर इन्होंने जहाजपर सवार होतेही सिक्ख धर्म धारण किया ससे इनकी तरफसे शक हुआ और हिंदोस्तान आनेसे रोक दिये गये इसबात र नाराज होकर दलीपसिंहजी फ्रांस और रूसको गये पर वहां कहीं ठिकाना-पाकर इंग्लैंडको लौटे, और क्षमा मागनेपर माफ्करदिये गये इसीसमय पहि ी स्त्रीके मरजानेसे इन्होंने दूसरी शादी की प्रिंस दलीपसिंह विक्टर इनकापुत्रहै ौर इंग्लैंडमें रहिताहै-

दशरथजी-(अवधनरेश) सूर्यवंशी राजा अजके पुत्रथे-कौसल्या सुमित्रा ौर कैकेईनाम तीन रानियोंसे इनके रामचंद्र लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न ४ पुत्र थे इनके सुमंतआदि ८ प्रधान मंत्रीथे और वसिष्ठ ऋषि राजपुरोहितथे दशरथ-जीका अपनी तीनो रानियोंपर प्रेम था, पर कैकेई सबसे छोटीपर कुछ विशेष था यों एकदफे युद्धके समय रणभूमिमें दशरथजीके रथका पहिया निकलनेही लगा कि, कैकेईकी दृष्टपड़ा कैकेईको आसान बनपड़ा पर उसने पहियेको निक लनेसे रोक पतिकी प्राणरक्षा की इसबातपर प्रसन्नहोकर दशरथजीने कैकेईको २ वचन मांगलेनेकी आज्ञा दी, पर कैकेईने कहा कि, किसी और अवसरपरदेखा-जायगा बृद्ध हो जब दशरथजीने रामजीको युवराजनियत करना चाहा तब रानी कैकेईने निज पुत्र भरतको युवराज तथा रामजीको १४ वर्षके लिये वनोवास देनेका हठ किया और कहा कि, रणभूमिमें दिये हुये दोनों वचन अब पूरे कीजिये-दशरथजीको रामचन्द्रपर इतना प्रेमथा कि, वे उनको क्षण मात्रभी जुदा नहीं करसकतेथे इसलिये उन्होंने रानीको बहुत समझाया पर उस अभागिनीने एक न माना-दशरथजी सत्यप्रतिज्ञ थे, निदान उन्होंने रामवनोवास सरीखे अनर्थ होनेपरभी " रघुकुलरीति सदा चलि आई। प्राण जायँ पर वचन न जाई " इस अपने वचनको पूराकिया और रामवियोगमें हा राम २ कह प्राण त्याग दिये-दशरथजीके वृतांतसे यही नीति निकलती है कि, विना पूर्वापर विचारे किसी मनुष्यसे वायदा नहीं करना चाहिये और वायदा करलेनेपर उसका निवाह मरणपर्य्यंत करना चाहिये

दक्ष प्रजापति-ब्रह्माजीके मानसी पुत्रथे-ब्रह्माजीने इनको सब प्रजाप-तियोंका सर्दार मुकर्रर कियाथा प्रसूति नामक स्त्रीसे इनके ६० कन्यायें उत्पन्न हुई जिनमेंसे१३ कश्यपजीको वियाहीगईथीं जिनसे देव असुर मनुष्य,पशेरू इत्यादि उत्प न्न हुये इसीप्रकार इनकी और कन्यायेंभी वियाही गई जिनसे बहुत सृष्टि उत्पन्न हुई पश्चात् दक्षने दूसरा विवाह किया जिससे सती आदि अनेक कन्या उत्पन्न हुई सतीका विवाह शिवजीसे हुआ-एक रूपे ब्रह्मसभामें शिवजी और दक्षप्रजा

पतिमें किसीबातपर झगड़ा होगया पीछे जब ब्रह्माजीने दक्षको सब यों का सर्दार नियत किया तो दक्षने गंगातट हरिद्वारमें एक महायज्ञ किया यज्ञमें शिवजी तथा सतीजीको दक्षने द्वेषके कारण नहीं बुलाया-सतीमी यह खबर पाकर शिवजीके बरजनेपरभी निजपिताके घर बेबुलायेही चलीगई पहुंच जब सतीजीने शिवजीकी तथा अपनी अप्रतिष्ठा देखी तो हवनकुण्डमें कूद कर देह त्यागदी-सतीजीके जलमरनेकी खबर जब शिवने पाई तो उन्होंने वीर भद्रको कोप करके भेजा-वीरभद्रने यज्ञ विध्वंस करदिया और दक्षका शिर काट डाला-इन्हीं दक्षप्रजापतिके वंशमें सूर्यवंशीयोंके मूल पुरुष महाराज सूर्य हुये

दाऊद-(इसराइल जातिके दूसरे बादशाह) पहिले निजपिता जसीकी भेड़ बकरियोंकी देखभाल रखतेथे-बादशाह शावके मरने पर कौम यहूदीके राजा हुये-४०बरसतक राज्य किया और जुरूसलम तथा आसपासकी कौमोंको परास्त किया-जुरूसलम इनकी राजधानी उस समयमें बड़ी रौनकपर थी इन्होंने अपनी प्रजाकी गिनती कराइयी-आखिर निजपुत्र सुलेमानको अंतमें राजपाट सौंप विरक्त होगये-ईसाइयोंकी धर्मपुस्तक बेबिलका एक भाग इनका बनाया हुआहै-

स ई से १०७४ वर्ष पूर्व जन्मे
स ई से १००१ वर्ष पूर्व मरे-

दादाभाई नौरोज़जी(एम पी)-सबसे पहिले और केवल एकही पे हिंदोस्तानी हैं जो पालियामटके मेम्बर हुए हैं-नेशनल कांग्रेसहिंदके बड़ा सहायक हैं जब कांग्रेस पजाबमें हुई थी तब आप इंग्लैंडसे आकर उसके प्रेसीडेन्ट बनेथे लाहौर स्टेशनसे शहिर तक बड़े २ रईसोंने आपकी गाड़ी खींचीथी पार्लियामटके मेम्बर होकर आपने इस देश की बड़ी मददकी [illegible] स ई १८२५ में एक पारसीघरानेमें बम्बईमें जन्मे एल्फिन्स्टन कालिजमें विद्या पढ़ी और बादको इसीकालिजमें प्रोफेसरीका ओहदा पाया अनेक सभाओंके मेम्बर रहे स्त्रीशिक्षाका प्रचार किया "रास्तगुफ्तार" नामक एक समाचार पत्र जारी किया था स ई १८५१ में इंग्लैंडसे तिजारत करनेवाली एक व्यापारिक कम्पनी स्थापन की और उसमें शरीक हुये स ई १८५५ में इंग्लैंड चले गये और वहीं रहिनेलगे स्वभाव ऐसाहै कि, सैकड़ों दोस्त आपके वहां भी होगये हैं हिंदोस्तानसे जानेवालोंकी सदैव मदद करतेहैं एक दफे किसी मित्र सौदागरका बिगड़ता देख आपने उसको २ लाख रुपयेसे मदद कीथी स ई १८७४ में महाराजा गायकवाड़ बरोदाके दीवान नियत होकर हिंदोस्तानको आये पर थोड़ेही दिन पीछे इस्तेफा देदिया स ई १८७५ में बम्बई कौंसलके मेम्बर होगये और एकहो बरसबाद बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सलकी मेम्बरी पाइपश्चात् फिर इंग्लैंडको चले गए और फिन्सबरीकी तरफसे मेम्बर पार्लियामेन्ट हुये

दारा—(Darius Hystaspes) ये इरान (फारिस) का बादशाहथा इसका राज्य फारिससे अफगानिस्तान तक फैला हुआथा जरदश्तके मतको मानताथा सेना इसकी ५ लाखसे भी ज्यादह थी सिकंदर आजमके बाप फिलियसे इसकी लडाई रहीथी १२ वष राज्य करके मरगया और उसका बेटा दाराद्वतीय तख्तपर बैठा फिलियके बाद सिकंदर आजमने तख्तपर बैठ कर दाराद्वतीयपर २ दफे चढाई की दारा तीनों दफे हारा आखिर स ई से ३३० वर्ष पहिले दाराको उसके एक सर्दारने मारडाला और सिकंदरको खबर की सिकंदरने दाराकी लाशपर आकर गम किया और नमकहराम घातकोंको सख्त सजा दी उसके मुल्क और मालपर अधिकार करलिया और उसकी लडकी रौशनकसे शादी करली और उसकी बेगमों तथा सर्दारोंके रुतबे बहाल रक्खे

दाराशिकोह— दिल्ली नरेश शाहजहाँका ज्येष्ठ पुत्र ताजबीबीके उदरसे स० ई० १६१५ में पैदा हुआ आलमगीर, शुजाअ तथा मुराद इसके तीनों भाई दूर २ सूबेदार थे, पर ये दिल्लीमें रहता था और वलीअहिद (युवराज) था—सब लोग जानते थे कि, शाहजहांके बाद येही गद्दीपर बैठेगा ये दीन मुहम्मदीको नहीं मानता था और हिंदू मतानुगामी था—शाहजहाँ स०ई० १६५७ में बीमार पड़ा—यह खबर सुनकर आलमगीर, शुजाअ तथा मुरादने तख्तके वास्ते चढाइ की—दाराशिकोहने उनका मुकाबिला किया पर दारा—आलमगीरने गद्दीपर बैठनेसे दूसरी वष स०ई० १६५९ में दाराको परास्त करके पकड़ लिया और उसका काला मुंह करके हाथीपर बिठलाकर तमाम शहरमें घुमाया और मरवाडाला दाराको इस हालतमें हाथीपर सवार देख महिलकी बेगमोंकी किलकारियें निकलती थीं दारा बड़ा साहसी और उदार था, पर मिजाजमें क्रोध और जल्दी अत्यन्त थी सुलेमाँशिकोह और सिपहिरशिकोह उसके २ पुत्र थे

दासकवि—देखो भिखारीदास, बेनीमाधो दास,

दिनकरराव—(राजा मुशीरे खासलर दिनकरराव बहादुर, के सी यस आई) महाराष्ट्र ब्राह्मण बड़े मिलनसार और उदार चित्त थे-इनके पूर्वज बम्बईप्रान्तके रहनेवाले थे जब स०ई० १८५४ में महाराज जीयाजीराव सेंधिया ग्वालियरकी गद्दीपर बैठे तो सर दिनकरराव वजीर थे महाराज जीयाजीने इनकी सुसम्मतिको मान रियासतमें अनेक सुधार किये सन् ५७ के गदरमें ग्वालियर राज्यकी तरफसे जो मदद ब्रिटिश गवर्नमेंटको दीगई उसके पुरस्कारमें महाराज साहिबको तो बहुत कुछ मिला लेकिन सर दिनकररावको भी के सी यस आई, की उपाधि मिली-ये बड़े सुप्रबन्धकर्त्ता थे कानपुर, आगरा और बनारसमें इनके अनेक मकान हैं स० ई० १८५९ तक ग्वालियरमें प्रधान मंत्री रहे, पीछे

रियासत धौलपुरके सुपरिटेंडेंट नियत किये गये बरोदा नरेशके रजीडेन्टको विष देनेके मुकद्दमेमें जो कमीशन बैठा था उसका मेम्बर ब्रिटिश गवर्नमेंटने इनको भी मुकर्रर किया था इन की रायमें राजा निर्दोष था महारानी विक्टोरियाके कैसरेहिंदका खिताब लेनेपर जो दर्बार दिल्लीमें हुआ था, उसमें सर दिनकरावको राजा मुशीरे खास बहादुरका खिताब मिला और पश्चात् गवर्नमेंटकी आज्ञासे यह खिताब सदैवके लिये इनके उत्तराधिकारियोंको दिया गया इनके पुत्र रघुनाथराव दिनकर सं० इ० १८५८ में जन्मे और ग्वालियरमें रहते हैं-

दीनदयालगिर-(बाबा दीनदयाल गिर गुसाँई) ये बरसाना जिले मथुराके रहनेवाले महात्मा जातिके ब्राह्मण वि सं० १९०० के लगभग विद्यमान थे-महाराजा रीवाँ इनको बहुत मानते थे-उत्तम कवियोंमें इनकी गणना है-निम्नलिखित ग्रंथ इनके रचे हुये हैं-अनुरागबाग, दृष्टांततरङ्गिणी, अन्योक्ति कल्पद्रुम, काशीपंचरत्न, चकोरपंचक, दीपपंचक-

दीनदयाल-(राजा दीनदयाल मुसव्वरजंग) ये हिंदोस्तानी फोटोग्राफरोंमें अत्यंत प्रसिद्ध हैं-लाला हिम्मतराय अग्रवाल वैश्यके घर सधना जिला मेरठमें सं०ई० १८४६ के साल पैदा हुये मुख्य निवासस्थान सिकन्दराबाद है प्रथम शिक्षा सधनाके तहसीली स्कूलमें पाई और सं० ई० १८६६ में टामसन कालेज रुड़कीसे ओवरसियरीका इम्तिहान पास किया-

पश्चात् २२ वर्ष तक इन्दोरके सरिस्ते तामीरातमें नौकरी करके पेन्शन ली तब से खास तौरपर अच्छी तस्वीर खींचनेका पेशा इख्तियार किया है-सं०ई०१८९४ में निजाम हैदराबादने आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर आपको राजा मुसव्वरजङ्गका खिताब दिया और बड़ी प्रतिष्ठाकी आपका कारखाना बम्बईमें बहुत बड़ा है और देखने लायक है बड़े मिलनसार और योग्य पुरुष हैं जो काम आपके करनेलायक हो तो तुरंत मदद करनेको तय्यार होजाते हैं आपके कई एक लायक बेटे हैं

दीनदयालुशर्म्मा-ये पंडितजी झज्जरके रहिनेवाले एक विद्वान् ब्राह्मण हैं, इनके सारगर्भित उपदेश जिसने नहीं सुने होंगे हरजगहकी धर्मसभाकी यही इच्छा लगी रहती है कि, पंडित दीनदयालुजी पधारकर उपदेश दें परंतु पं दीनदयालुजी एक हैं और धर्मसभायें बहुत पंडितजीके उद्योगसे भारत धर्ममहामंडल स्थापन हुआहै और उसकी रजिस्ट्री करायगई है और अनेक राजे महाराजे उसमें शरीक हुये हैं

व्याख्यान पंडितजीकी ऐसी सदयग्राहिणी और युक्तिपूर्वक होती है कि, जिसको सुनकर बड़े २ अंग्रेजी विद्वान् आश्चर्यमें आजाते हैं और तारीफ किये बिना

नहीं रहसकते लाखों ही मनुष्य पंडितजीके उपदेशोंको सुन धमपगपरसे डिगआनेसे रुक गये हैं

दुर्गावती–(गढमंडलकी मरदानी रानी) बुंदेलखण्डकी प्राचीन राजधानी महोवाके चंदेलराजोंकी बेटी और गढमंडलके गोंड राजा दलपतशाहकी रानी थी–गढमंडलमें गोंडोंका राज्य किसी जमानेमें बड़ा प्रबल था अब यह राज्य नष्ट भ्रष्ट होकर अंग्रेजी अमलदारीके सूबे नर्मदा और सागरमें मिलाहुआहै दुर्गावती और दलपतशाह दोनों अत्यंत स्वरूपवान् थे और इनका विवाह आसुरी विधिसे हुआ था दलपतशाह विवाहसे ४ वर्ष बाद एक ३ वर्षका पुत्र छोड़कर मरगया रानी दुर्गावतीको बालक पुत्रके निमित्त राजकाज सम्हालना पड़ा जब लड़का कुछ बड़ा हुआ तो सन् ई १५६४ में बादशाह अकबरने गढमंडल पर चढाई की–दुर्गावती १५०० हाथी ७ हजार सवार और बहुतसे प्यादे लेकर धनुषबाण तथा अन्य अस्त्र शस्त्र धारण कर रणभूमिमें मुगलोंसे युद्ध करने आई २ दफे उसने मुसल्मानोंकी फौजका मुँह फेरदिया और दाँत खट्टेकरदिये तीसरी दफे रानीका पुत्र जो अभीतक बड़ी वीरतासे लड़ा था घायल हुआ और जब बहुत रुधिर बहिनेसे उसको मूर्छा आने लगी तब रानीने आज्ञा दी कि कुँवरको सम्भूमें लेजाओ कायरोंको भागनेके लिये यह अच्छा बहाना मिला यहांतक कि, रानीके साथ केवल ३०० आदमी रहिगये पर रानी तो भी रणसे नहीं हटी–एक तीक्ष्ण बाण उसकी आँखमें लगा जिसको उसने हाथसे पकडकर खींच लिया–फिर १ तीर उसकी गर्दनमें लगा, रानीने उसकोभी खींचकर निकालडाला पर अत्यंत रुधिर बहिनेसे रानी को हाथीके हौदेपर मूर्छा आनेलगी तब तो वैरीके हाथमें पड़नेके भयसे रानीने छातीमें बर्छी भोंककर प्राणत्याग दिये–सेनापतिलोग रणसे भागनेकी लाजसे बचनेके लिये अपनी स्वामिनीके मृतक शरीरपर टुकड़े २ होकर कटमरे–स्लीमेन साहिब लिखते हैं कि, दुर्गावती की समाधि अबतक उन पर्वतोंके बीचमें बनी हुई है जहां युद्ध हुआ था २ पत्थरके खम्भे समाधिके समीप खड़े हुये हैं–लोग कहते हैं कि, वे रानीके ढोल थे जो अब पाषाण होगये हैं–लोग यह भी कहते है कि, आधी रातके समय पर्वतोंमें उन ढोलोंका भयंकर शब्द लड़ाईमें मार गये हुये वीरसेना पतियों की आत्माओंको समाधिके निकट बुलानेके लिये हुआ करताहै पथिक लोग जो उस निर्जन वनमें होकर निकलते हैं बिल्लौरके टुकड़े जो यहाँ अधिक तासे मिलते हैं रीत्यानुसार समाधिपर चढाते हैं–रानी दुर्गावतीने भाषा कवि,हरनायको सवालक्ष रुपया इनाम दिया था, रानी दुर्गावतीके बनवाय मदन महिलके खंडहर अबतक बिल्लौरकी चट्टानोंके बीच जबलपुरसे ११ मील दूर पड़े हैं

दुर्वासा ऋषि–अत्रि ऋषिके पुत्र, पुराणोंमें इनके क्रोधकी सूचक अनेक कथायें हैं–इन्होंने अनेकोंको शाप दिया था

दुर्योधन—धृतराष्ट्रके सौपुत्र कौरवोंमें सबसे बड़ा था—जब धृतराष्ट्रने अपने सबसे बड़े भतीजे युधिष्ठिरको युवराज नियत करना चाहा तब दुर्योधनने विरोध करके युधिष्ठिर आदि पांचों पांडवोंको १४ वर्षके लिये वनोवास दिलवा दिया जब पाण्डव वनोवाससे वापिस आये तो धृतराष्ट्रने उनको आधा राज सौंप दिया, पर दुर्योधनने जुआ खिलाकर उनका राज्य फिर जीत लिया और १४ वर्षके लिये फिर वनोवास दिलवा दिया—वनोवासके समय दुर्योधनने पांडवोंको मरवा डालनेके अनेक उपाय किये पर वे भी गाफिल न थे, सब निष्फल दूसरीबार वनोवाससे लौटकर जब पांडव लोग आधे राज्यके दावेदार हुये तो दुर्योधनने देनेसे इनकार किया—लाचार महाभारतकी लड़ाई शुरू हुई जो १८ दिनतक रही इस युद्धमें हिंदोस्तानके सब राजे शरीक थे—कोई कौरवोंका और कोई पांडवोंका तरफदार था १८ वें दिन जब सब कौरवदल शान्त होचुका था तो दुर्योधन और भीममें मल्लयुद्ध हुआ, जिसमें दुर्योधन मारा गया—रणभूमिमें पड़े सिसकते दुर्योधनको देख अश्वत्थामा उसके पास गया दुर्योधनने उससे भीमका शिर काट लानेको कहा—निदान अश्वत्थामा पांडवोंके डेरेमें घुसगया पांडव लोग तो वहाँ न मिले पर उनके ५ पुत्र जो द्रौपदीके उदरसे थे मिलगये—अश्वत्थामा उनहींके शिर काट दुर्योधनके पास लेगया—दुर्योधनका दम उस वक्त निकल रहाथा बच्चोंके शिर देख उसने कहा "मेरी शत्रुता तो भीमसे थी, हाय ! इन बच्चोंका गला वृथा काट क्यों वंशनष्ट किया"।

दुष्यंत—(चंद्रवंशी प्राचीन राजा) महाभारत तथा पद्मपुराणमें लेख है कि दुष्यंत नामक चंद्रवंशविभूषण, महातेजस्वी वेदवेदाङ्ग पारङ्गत, सर्वराजगुणान्वित पौरव राजर्षि था—वह धनुर्विद्यामें निपुण, रूपमें कामदेव, धैर्यमें हिमालय, गांभीर्यमें समुद्र, ऐश्वर्यमें कुबेर, प्रतापमें इन्द्र तेजमें सूर्य, स्नेहमें चंद्रमा और यमासंयममें मनुके समान था—उसने अपनी प्रजाओंका निजपुत्रोंकी समान पालन किया था " शकुन्तलाके गर्भसे राजा दुष्यन्तके भरत नामक पुत्र बड़ा प्रतापी हुआ जिसके नामपर इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा—प्राचीन नाम आर्यावर्त था.

दूलह त्रिवेदी—(कवि दूलह) बनपुरानिवासी उदयनाथ कवींद्रके पुत्र तथा कालिदासजूके पौत्र सं० सं० १८०३ में विद्यमान थे भाषाकाव्य उत्तम करते थे—इनका बनाया "कविकुलकण्ठाभरण" भाषासाहित्यमें प्रमाणिक ग्रंथ है

दुशासन— धृतराष्ट्रके सौपुत्र कौरवोंमेंसे एक बड़ा धूर्त था—जब पांडवोंने अपना राज्य तथा रानी द्रौपदीको दुर्योधनके पास जुयेमें हारदिया तब दुःशासनने द्रौपदीको सरेदर्बार बाल पकड़कर घसीटा और उसके बदनपरसे चीर खींच डालना चाहा, पर श्रीकृष्णकी कृपासे चीर इतना बढगया कि, दुशासन खींचते

थक गया. यह देख भीमसेनको क्रोध आया और उसने शपथ खाइ कि, मैं दुशा-सनका रक्त पिऊगा–महाभारतकी १६ वें दिनकी लडाईमें भीमने दुशासनको मार कर खून पिया और शपथ पूरी की

देवकवि–देखो देवदत्त

देवजानीसकल्बी–(Diogenes) बडा मशहूर त्यागी हकीम सिकंदर आजमके वक्तमे यूनानमें हुआ है सिकंदरके तख्तपर बैठनेके समय सब विद्वान् हकीम लोग मुबारिकबादी देनेको हाजिर हुये, पर देवजानीस नहीं गया–सिकंदरको बडा आश्चर्य हुआ निदान इसके मकानपर दर्शनोंको गया और इसको दिगम्बर बैठापाकर कहा " जो मांगना हो सो मॉंगो" इसने कहा " मेरे सामनेसे चलाजा केवल यही मांगता हूं " स्वभावका बडा चिडचिडा था। या तो किसीसे बातही नहीं करता और यदि करता क्रुद्ध होकर इसीलिये कल्बी अर्थात कुत्तेकी तरह टांग लेनेवाला इसका नाम पडगया था–कभी ? अर्द्धरात्रिके वक्त पुकारता कि, कोइ है–लोग यह जान कि, किसी चीजकी जरूरत है दौडते–ये उनमें सोंटे लगाता और कहता "चलेजाओ" तुम आदमी नहीं हो, तुम तो इन्द्रियोंके वशीभूत कुत्ते हो "

देवदत्त–(भाषाकवि) समाना ग्राम जिला मैनपुरीके रहनेवाले ब्राह्मण सि० स० १६६१ में विद्यमान थे अपने समयमें भाषाकाव्यके अद्वितीय आचार्य थे. इनके रचे ग्रंथोंकी गिनती७२ मालूम हुई है, जिनमेंसे कुछके नाम नीचे लिखे हैं प्रेमतरंग,भावविलास,रसविलास,रसानन्दलहरी,सुजानविनोद काव्यरसायन,पिंगल,देवमाया,प्रपंचनाटक,प्रेमदीपिका,सुमिल विनोद और राधिकाविलास। औरंगजेबके पुत्र आजमका यश इन्होंने गाया है और कवितामें अपना भोगदेव कहा है।

देवदत्त त्रिपाठी–(भाषा कवि) कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौजके समीप कुसुमहा ग्रामके रहनेवाले लखनऊके नवाब शुजाउद्दौलाके समयमें वि स १७०३ के लगभग विद्यमान थे शुजाउद्दौला इनकी खातिर किया करता था और कुछ वार्षिक निबन्ध भी करदिया था शब्दरसायन और अष्टयामनाम पुस्तकें इनकी बनाई हुई हैं कवितामें अपना भोगदेव कहते थे।

देवदत्त–(भाषाकवि) वर्णके ब्राह्मण जिला कामपुरके रहनेवाले प्राय वि सं १८३६ म विद्यमान थे राजा सुमानसिंह चर्खारीनरेशके यहा रहते थे पद्माकर तथा ग्वालकविसे इनकी खूब छेडछाड रहती थी"धारा बाँधि छूटत फुहारा मेघमालासों" इत्यादि कवित्तमें राजा सुमानसिंहने दत्तजीको बहुत इनाम दिया था इन्होंने कवितामें अपना भोगदत्त कहा है।

देवलदेवी-गुजरातके राजाकी बेटी थी अपने समयम हिंदोस्तानमरमें परम सुन्दरी गिनी जाती थी हिन्दोस्थानके सबही राजे महाराजे इससे शादी किया चाहते थे जब स०ई०१२९७ में सुल्तान अल्लाउद्दीनने गुजरात फतेह किया सो इत्तिफाकसे देवलदेवी उसकी फौजसे हाथ पड़कर दिल्ली लाई गई और शाहजादे खिजरखाँसे उसका विवाह हुआ इन दोनोंके प्रेमकी कहानी फारसी कवि अमीर खुसरोने लिखी है पश्चात् जब खिजरखाँको मारकर मुबारिक खिल्जी गद्दीपर बैठा तब उसने भी देवलदेवीको अपनी जोरू बनाया कुछ दिनों बाद मुबारिक खिल्जीको वधकरके उसके गुलाम खुसरोने तख्तपर बैठकर देवलदेवीको अपनी बेगम बनाया खुसरो स० ई० १३२० में मारा गया देवलदेवीको देवलदेरानी भी कहते हैं ।

दोस्त मुहम्मदखाँ सरदार-(रियासत भूपालके संस्थापक)ये अफगानिस्तानसे आकर सूबे मालवामें किसी राजाके यहां नौकर हुए पश्चात् कुछ दिन तक एक बड़ी जागीरकी ठेकेदारी करते रहे थोड़ेही दिनोंमें जगदीशपुर (इसलामनगर) आदि कई स्थान अपने अधिकारमें करके भूपालकी शहर पनाह बनवाई और उसको फिरसे बसाया स० हि० ११५३ में मरे और अपने बनवायेहुए किले फतेहगढ़में दफन हुए-

प्राय: स० हि० १२०० में इनके पौत्र शरीफमुहम्मदखाँने गुन्नौरके किलेपर चढ़ाई की किला तो छलसे लेलिया और गुन्नौरकी राजपूतवंशोत्पन्न अगर्व अद्वितीय सुन्दरी रानी कमलावतीकी प्रतिष्ठा नष्ट करनेको उपस्थित होगया रानी का नहीं करना व्यर्थ था क्योंकि वह बलपूर्वक उसे अपने घरमें डाललेता निदान रानीने कोई उपाय न देख अमूल्य वस्त्र और आभूषण खांसाहिबके लिये भेजे और २ घंटेके बाद निकाहका वक्त नियत किया नियत समयपर खाँ साहिब आ पहुँचे और रानीका मोहिनी रूप देख कामातुर हो बार बार वार्तालाप करने लगे इतनेहीमें रंगमें कुछ औरही भंग होने लगा खाँ साहिबका मुख नीला पीला होगया, गर्मीसे मूर्च्छा होनेलगी, जल्द २ पुकारने लगे ,कपड़े फाड़ २ फेंकने लगे, पसे होने लगे, गुलाब छिड़के जाने लगे, तोबा सिल्दा मचगई, भागड़ पड़गई, पर क्या होसकता था, खाँसाहिब शहीद हो चुके थे, रानीने जो कपड़े भेजे थे तीक्ष्ण विषमें रंगेहुयेथे-खाँसाहिबकी यह दशा देख रानी किलेकी बुर्जपरसे नर्मदा नदीमें कूदपड़ी और डूब गई

दौलतराव सेंधिया-(ग्वालियरनरेश) माधोजी सेंधियाके बाद स० ई० १७९४ में १५ वर्षकी उमर ग्वालियरकी गद्दीपर बैठे माधोजी सेंधिया इनके दादाके भाई थे शुरूहीसे दौलतरावमें निमकहरामकी धोखा औरचालाकी ढंगमें

लगी थी माधौराव पेश्वाके मरनेपर जो झगडा गद्दीके लिये हुआ उसमें इन्होंने बाजीरावका पक्ष लेकर उसको गद्दीपर बिठादिया- पश्चात् जस्वंतराव हुलकरसे इनकी ठनी जिसमें बहुतसा मुल्क इनके हाथ लगा कुछ दिनोंतक जैसा इनका बलपराक्रम था वैसा हिन्दोस्तानभरमें किसी दूसरे राजाका न था- स० ई० १८२० में जब पेश्वाने ब्रिटिश गवर्नमेंटसे मेल मिलाप किया तो दौलतराव को यह बात बुरीलगी, निदान उन्होंने यह उद्योग करना शुरू किया कि,मेल कायम न रहै. यह देख ब्रिटिश गवर्नमेंट इनसे लडनेको उपस्थित होगई अलीगढ,दिल्ली,असाई, आगरा, लस्वारी और अरगांवकी लडाइयोंमें दौलतरावकी हार हुई आखिर सुलह हुई, परबहुतसा मुल्क इनके हाथसे निकल गया यहांतक कि, ग्वालियर और गोहदका किलाभी इनके अधिकार में न रहा-४६ वर्षकी उमरमें स० ई० १८२७की साल बैजाबाइ अपनी अपुत्रविधवाको छोडकर दौलतरावका देहांत हुआ बैजाबाईने जनकोजीराव सेंधियाको गोद बिठाया, जनकोजीकी अपुत्रविध वा रानीने महाराज जीवाजीराव सेंधियाको गोद लिया-महाराज जीवाजीके पुत्र वर्तमान ग्वालियरनरेश महाराज माधौराव सेंधिया हैं॥

द्राह्यायण-इनके रचे सामवेदके श्रौतसूत्र मिलतेहैं, जिनमें विविधभांतिके यज्ञ करनेके नियमहैं-

द्रुपद-पंजाबका प्राचीन राजा इसकी कन्या द्रौपदीको अर्जुननेस्वयंवरमें जीता था महाभारतके युद्धमें चौदहवें दिन राजा द्रुपद द्रोणाचार्यके हाथसे मारागया दूस रेही दिन द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नने द्रोणको मार अपने बापका बदला लिया.द्रोणके पुत्र अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नको मारडाला-द्रुपदके शिखंडन नामक पुत्र तथा शिखंड नी नामक कन्या और भीथी। जब द्रुपदने द्रौपदीका स्वयंवर रचा तब दूरसे शूरवीर पराक्रमी राजा आ उपस्थित हुये स्वयंवर का प्रण यह था कि,जो कोई बांसके ऊपर चक्रमें नौचती हुई सोनेकी मछली की परछाई पृथ्वीपर रक्खे हुये तेलके कटो- रेमें देख ऊपर को तीर चलाकर मछली की आंखमे निशाना लगावे वह द्रौपदी को वरे-जब द्रौपदी जयमाल लेकर सभामें आई तो सब राजे उसके रूपको देख मो- हित होगये, पर कोईभी अंकित चिह्नके वेधनेमें समर्थ नहीं हुआ-राजा द्रुपद कहिनेहीको था कि,"वीरविहीन मही मैं जानी"कि, इतनेहीमें भिखारीके वेषमें एक- धीर पुरुष उठा जिसकी छवि प्रशसनीय थी और जिसको देख द्रौपदी मोहित होगइ-इस धीर पुरुषने धनुष उठा क्षणभरमें नियमानुसार मछलीको बेधदिया- द्रौपदीने तुरंत जयमाल उसके गलेमें डाल दी-ये पुरुष अर्जुन पांडव था जो बनो- वासमें होनेके कारण भिखारीका वेष धारण कियेहुये था

द्रोणाचार्य-भारद्वाज ऋषिके पुत्र थे भीष्म पितामहकी सौतेली बहिन कृपासे इनका विवाह हुआथा-अश्वत्थामा इनका पुत्र था-कौरवों तथा पांडवोंको धनुर्वेदकी

देवलदेवी-गुजरातके राजाकी बेटी थी अपने समयमें हिन्दोस्तानभरमें परम सुन्दरी गिनी जाती थी हिन्दोस्थानके सबही राजे महाराजे इससे शादी किया चाहते थे जब स०ई०१२९७ में सुलतान अल्लाउद्दीनने गुजरात फतेह किया तो इत्तिफाकसे देवलदेवी उसकी फौजके हाथ पड़कर दिल्ली लाई गई और शाहजादे खिजरखाँसे उसका विवाह हुआ इन दोनोंके मैमवी कहानी फारसी कवि अमीर खुसरोने लिखी है पश्चात् जब खिजरखाँको मारकर मुबारिक खिल्जी गद्दीपर बैठा तब उसने भी देवलदेवीको अपनी जोरू बनाया कुछ दिनों बाद मुबारिक खिल्जीको वधकरके उसके गुलाम खुसरोने तख्तपर बैठकर देवलदेवीको अपनी बेगम बनाया खुसरो स० ई० १३२० में मारा गया देवलदेवीको देवलदेरानी भी कहते हैं।

दोस्त मुहम्मदखाँ सरदार-(रियासत भूपालके संस्थापक) ये अफगानिस्तानसे आकर सूबे मालवामें किसी राजाके यहां नौकर हुए पश्चात् कुछ दिन तक एक बड़ी जागीरकी ठेकेदारी करते रहे थोड़ेही दिनोंमें जगदीशपुर (इसलामनगर) आदि कई स्थान अपने अधिकारमें करके भूपालकी शहरपनाह बनवाई और उसको फिरसे बसाया स० हि० ११५३ में मरे और अपने बनवायेहुए किले फतेहगढ़में दफन हुए-

माघ स० हि० १२०० में इनके पौत्र शरीफमुहम्मदखाँने गुन्नौरके किलेपर चढ़ाई की किला तो छलसे लेलिया और गुन्नौरकी राजपूतवंशोत्पन्न जगत प्रसिद्ध सुन्दरी रानी कमलावतीकी प्रतिष्ठा नष्ट करनेको उपस्थित होगया रानीका नहीं मरना व्यर्थ था क्योंकि वह बलपूर्वक उसे अपने घरमें डाललेता निदान रानीने कोई उपाय न देख अमूल्य वस्त्र और आभूषण खांसाहिबके लिये भेजे और २ घंटेके बाद निकाहका वक्त नियत किया नियत समयपर खाँ साहिब आ पहुँचे और रानीका मोहिनी रूप देख कामातुर हो बार बार वार्त्तालाप करने लगे इतनेहीमें रंगमें कुछ औरही भंग होने लगा खाँ साहिबका मुख नीला पीला होगया, गर्मीसे मूर्च्छा होनेलगी, जल २ पुकारने लगे ,कपड़े फाड़ २ फेंकने लगे पसे होने लगे, गुलाब छिड़के जाने लगे, शोवा सिल्हा मचगई, भागड़ पड़गई, पर क्या होसकता था, खाँसाहिब शहीद हो चुके थे, रानीने जो कपड़े भेजे थे तीक्ष्ण विषमें रंगेहुयेथे-खाँसाहिबको यह दशा देख रानी किलेकी गुमटीपरसे नमदा नदीमें कूदपड़ी और डूब गई

दौलतराव सेंधिया-(ग्वालियरनरेश) माधोजी सेंधियाके बाद स० ई० १७९४ में १५ बरसकी उम्रमें ग्वालियरकी गद्दीपर बैठे माधोजी सेंधिया इनके दादाके भाई थे शुरूहीसे दौलतरावमें निजपूर्वजोंकी धीरता और वीरता लग्न करके

लगी थी माधौराव पेश्वाके मरनेपर जो झगडा गद्दीके लिये हुआ उसमें इन्होंने बाजीरावका पक्ष लेकर उसको गद्दीपर बिठादिया– पश्चात् जस्वंतराव हुलकरसे इनकी ठनी जिसमें बहुतसा मुल्क इनके हाथ लगा कुछ दिनोंतक जैसा इनका बलपराक्रम था वैसा हिन्दोस्तानभरमें किसी दूसरे राजाका न था– स० ई० १८२० में जब पेश्वाने ब्रिटिश गवर्नमेंटसे मलमिलाप किया तो दौलतराव को यह बात बुरीलगी, निदान उन्होंने यह उद्योग करना शुरू किया कि,मेल कायम न रहै- यह देख ब्रिटिश गवर्नमेंट इनसे लडनेको उपस्थित होगई अलीगढ,दिल्ली,असाई, आगरा, लस्वारी और अरगांवकी लडाइयामें दौलतरावकी हार हुई आखिर सुलह हुइ, परबहुतसा मुल्क इनके हाथसे निकल गया यहांतक कि, ग्वालियर और गोहदका किलाभी इनके अधिकार में न रहा–४६ वर्षकी उम्रमें स० ई० १८२७की साल बैजाबाइ अपनी अपुत्रविधवाको छोडकर दौलतरावका देहांत हुआ बैजाबाइने जनकोजीराव सेंधियाको गोद बिठाया, जनकोजीकी अपुत्रविध वा रानीने महाराज जीवाजीराव सेंधियाको गोद लिया–महाराज जीवाजीके पुत्र वर्त्तमान ग्वालियरनरेश महाराज माधौराव सेंधिया हैं॥

द्राह्मायण–इनके रचे सामवेदके श्रौतसूत्र मिलतहैं, जिनमें विविधभांतिके यज्ञ करानेके नियमहैं–

द्रुपद्–पंजाबका प्राचीन राजा इसकी कन्या द्रौपदीको अर्जुनने स्वयंवरमें जीता था महाभारतके युद्धमें चौदहवें दिन राजा द्रुपद द्रोणाचार्यके हाथसे मारागया दूस रेही दिन द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नने द्रोणको मार अपने बापका बदला लिया.द्रोणके पुत्र अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नको मारडाला–द्रुपदके शिखंडन नामक पुत्र तथा शिखंड नी नामक कन्या और भीथी जब द्रुपदने द्रौपदीका स्वयंवर रचा तब दूरदूरसे शूरवीर पराक्रमी राजा आ उपस्थित हुये स्वयंवर का प्रण यह था कि,जो कोई बांसके ऊपर चक्रमें नाचती हुई सोनेकी मछली की परछाई पृथ्वीपर रक्खे हुये तेलके कटो- रेमें देख ऊपर को तीर चलाकर मछली की आंखमें निशाना लगावे वह द्रौपदी को वरे–अब द्रौपदी जयमाल लेकर सभामें आई तो सब राजे उसके रूपको देख मो- हित होगये, पर कोईभी अंकित चिह्नके वेधनेमें समर्थ नहीं हुआ–राजा द्रुपद कहिनेहीको था कि,"वीरविहीन मही मैं जानी"कि, इतनेहीमें भिखारीके वेषमें एक वीर पुरुष उठा जिसकी छवि प्रशंसनीय थी और जिसको देख द्रौपदी मोहित होगइ–इस वीर पुरुषने धनुष उठा क्षणभरमें नियमानुसार मछलीको वेधदिया– द्रौपदीने तुरत जयमाल उसके गलेमें डाल दी–ये पुरुष अर्जुन पांडव था जो वनो- वासमें होनेके कारण भिखारीका वेष धारण कियेहुये था

द्रोणाचार्य–भारद्वाज ऋषिके पुत्र थे भीष्म पितामहकी सौतेली बहिन कृपासे इनका विवाह हुआथा–अश्वत्थामा इनका पुत्र था–कौरवो तथा पांडवोंको धनुर्वेदकी

शिक्षा इन्होंने दीथी—महाभारतके युद्धमें द्रोणाचार्य कौरवोंके तरफसे भीष्मके मारेजानेपर सेनापति नियत कियेगये थे—इस पदको प्राप्तहोनेसे ५ दिन बाद द्रोणने पाञ्चालाधिपति द्रुपदको वध किया—द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न दूसरेही दिन द्रोणको मार गिराया—द्रोणके पुत्र अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्न रणशायी किया

द्रौपदी—पंजाबके राजा द्रुपदकी बेटी पांडवोंको स्वयंवररीतिसे विवाही थी इसके स्वयंवरका वृत्तांत राजा द्रुपदके सम्बन्धमें हुआ है (देखो द्रुपद) द्रौपदीका रंग गोरा न था, पर छबि अत्यंत मनोहरण थी जब पांडव लोग द्रौपदीके घर आये तो उन्होंने अपनी मातासे कहा कि, हम एक अपूर्व वस्तु लाये माताने सहज स्वभावसे कह दिया कि, पांचो आपसमें बांट लो इसी वास्ते द्रौपदी पांचो पांडवोंकी पत्नी बनी और पंचभर्ताका कहिलाई बारी २ से दो दिन पांचो भाइयोंके पास रहती थी इसने अपने शुभआचरणोंके द्वारा पांचों पतियोंको वशमें करलिया था, वे इसका मानभंग होना कदापि नहीं देख सकते थे और इसके कहिनेका प्रभाव उनके चित्तपर बहुत पड़ता था एक दफे जब युधिष्ठिरने अपना राज्य तथा द्रौपदीको कौरवोंके पास हार दिया था दु शासनने द्रौपदीका चूड़ा पकड़ कर दरबार घसीटा था और मानहानि की थी मानहानिका ख्याल पांडवोंको अत्यंत था जिससे उनके और कौरवोंके बीच में ईर्षा द्वेष बढ़कर सर्वनाश हुआ गिर्धर कविरायने भी लिखा है

> "नारि बखिल्ल होत है, छोरू दल्लनको नाश ।
> कौरव पांडववंशको, कियो द्रौपदी नाश" ॥

एक दफे जब श्रीकृष्णजी अपनी पटरानी सत्यभामा सहित पांडवोंको कुशल पूछने वनमें पधारे थे तब सत्यभामाने द्रौपदीसे पूछा कि, सखि किस प्रकार तुम अपने पतियोंको वशमें रखती हो यह हमभी बताओ द्रौपदीने उत्तर दिया कि, स्त्रीका पातिव्रत धर्म निबाहना ही एक वशीकरण मंत्र है ऐसा करनेसे ससुराल और मायकेकी लाज रहती है और ईश्वरके यहांभी पर गति मिलती है हम काम क्रोध छोड़ निजपतियोंकी सेवा करती हैं घमंड छोड़ उनकी आज्ञा मानती हैं, कुवाक्य और कुचालसे बचती हैं, बेढंगे रूपसे कभी नहीं रहतीं, निजस्वामीके विचारके अनुसारही काम करती हैं, सिवाय पतिके अपने पुत्रसे भी एकान्तमें बात नहीं करती हैं और न किसी की ओर आंख उठाकर देखती हैं, मीठी बोली नम्रता भावसे सबसे बोलती हैं, छोटे दर्जेके स्त्री पुरुषोंको मुंह नहीं लगातीं, बुरे चाल चलनवाली स्त्रियोंमें मेल नहीं रखतीं, अपनी स्त्रियोंकी सेवा करती हैं गैरपदिमान स्त्रियोंसे हेल्मेल नहीं करतीं सदैव पति

के बाद भोजन करती हैं और दास दासियोंके होते हुये भी पतिके बाहिरसे आने पर खड़ी होजाती हैं और पानी पंखा लेकर दौड़ती है भोजनादि पदार्थ शुद्ध रखती हैं और सब गृहस्थीके काम उचितसमयपर करलेती है, बिना बात हँसने टार तथा छत आदिपर खड़े होकर झांकनेसे और वन उपवनमें जानेसे परहेज करती है पतिके परदेश रहिने पर बुरी कामनाओंको त्याग उपवास और हरि भजन करती हैं जिस वस्तुको पति नहीं चाहते उसको हम भी नहीं चाहतीं और पतिसे कुछ भी दुराव नहीं रखती हैं बड़ोंकी आज्ञा पालन करती हैं, पतिके द्रव्यका इन्तिजाम करती हैं और आमदनी खर्चका हिसाब रखती हैं सबसे पहिले उठती, सबसे पीछे सोती हैं—महाभारतके युद्धके अंतम द्रौपदीके पांच पुत्रोंको अश्वत्थामाने मार डाला था बादको बहुकालतक राजसी सुख भोगकर महारानी द्रौपदी पांडवोंके साथ हिमालयपर जाकर बर्फमें सीजगई

धन्वन्तरिवैद्य—(आयुर्वेदके प्रकट करनेवाले) पुराणोक्त कथानुसार समुद्रके मथेजानेपर १४ रत्न निकले जिनमेंसे एक आयुर्वेदके प्रकट करनेवाले धन्वन्तरि वैद्य भी थे जिनको भारतवासी ईश्वरका अंशावतार मानतेहैं इनसे कुछ काल पीछे दिवोदास नाम काशिराज आयुर्वेदका बड़ा विद्वान् धन्वन्तरि नामसे प्रसिद्ध हुआ इस दिवोदास धन्वन्तरि द्वारा आयुर्वेदका बहुत कुछ प्रचार हुआ और इसने चिकित्सातत्त्वविज्ञान, चिकित्सादर्पण, तथा चिकित्साकौमुदी नामके ग्रंथ रचे जो अब लुप्त होगये हैं इसके बाद आत्रेय, पुनर्वसु, च्यवन, अगस्त्य, जाबालि, अश्विनीकुमार आदि ऋषियोंने ब्रह्मवैवर्त पुराणांतर्गत ब्रह्मखण्डके १५ वे अध्यायमें वर्णित अनेक वैद्यक ग्रंथ रचे थे जो अब नहा मिलते हैं बादको चरक, सुश्रुत, वाग्भट्टऋषियोंने आयुर्वेदपर अपन २ नामकी बड़ी २ संहितायें बनाई जो अब वृद्ध त्रयी नामसे प्रसिद्ध हैं यह तीनो संहिता परम उपयोगी हैं और इसीकारण इनके सामने प्राचीन वैद्यकग्रंथोंका प्रचार रुकतेरे उठगया और आखिरको वे लुप्तही होगये अंतमें अबसे पहिले ४ और ५ सौ वर्षके बीच अनेक वैद्यक ग्रंथ बने जिनमेंसे माधवनिदान, शार्ङ्गधरसंहिता और भावप्रकाश मुख्य हैं और लघुत्रयी नामसे विदित हैं

धृतराष्ट्र—चंद्रवंशी राजा विचित्रवीर्यके निर्वंश मरजानेपर उस समयकी रीत्यानुसार विधवा रानियों अम्बिका और अम्बालिकामें व्यासजीसे गर्भाधान कराया गया, जिससे धृतराष्ट्र और पांडु २ पुत्र हुये और चंद्रवंश नष्टहोनेसे बचा धृतराष्ट्र जन्मांध थे, अतः राजा पांडु राज्य करते थे जब पांडु राज्य छोड़ बनको चले गये तो लाचार धृतराष्ट्रको काम सम्हालना पड़ा धृतराष्ट्रके दुर्योधन आदि १०० पुत्र थे जो कौरव कहिलाते थे और पांडुके युधिष्ठिर आदि ५ पुत्र थे जो पां-

ड्य नामसे प्रसिद्ध थे जब धृतराष्ट्रके पुत्र तथा भतीजे समर्थ हुये तो उन्होंने आधा राज्य अपने पुत्रों और आधा अपने भतीजोंको बाँटकर दे दिया कौरवोंने इस बातपर विरोध किया और सब राज लेनाचाहा, निदान अनेक प्रकारसे पांडवोंको दुःख देने और इनकी प्रतिष्ठा भंग करनेका उपाय करने लगे महाराज धृतराष्ट्र बड़े परिणामदर्शी थे और जिनको अपने संबंधियोंमें झगड़ा होना अत्यन्त दुःखदाई ख्याल पड़ता था बहुत दिनोंतक टालते रहे, किंतु होतव्यता बड़ी प्रबल है, निदान अंतमें कौरवों और पांडवोंमें छिड़ी कुरुक्षेत्रके मैदानमें युद्ध हुआ जो १८दिन तक जारी रहा और जिसका सविस्तर वृत्तांत वेदव्यास कृत महाभारतमें लिखा है इस लड़ाइमें भारतके सब छोटे बड़े राजे महाराजे शरीक हुये थे कोई कौरवों का और कोइ पांडवोंका तरफदार था अंतमें सब कौरवे और सब राजे महाराजे जो दोनों तरफ शरीक हुये थे मारे गये पांचों पांडव श्रीकृष्णमहाराजकी मदद से जीते बचे, जिनमेंसे सबसे बड़े युधिष्ठिर गद्दीपर बैठे महाराजधृतराष्ट्र अपने उपद्रवी पुत्रोंके मारेजानेसे दुःखी हो तपोवनको चले गये वनमें एक दिन आग लगी उसीमें स्त्रीसहित जल मरे. इनके चरित्रोंसे यही उपदेश निकलता है कि, आपसका विवाद वंशको नष्टकर देता है और दूसरोंके झगडेमें कूदनेवालोंकाभी नाश होता है जैसे इस युद्धमें सैकड़ों भारतवासी राजा, महाराजाका हुआ और कि उपद्रवी पुत्र छठी उंगलीके समान है जिसके रहिनेसे भी दुःख और काटनेसे भी दुःख

नकुल (पांडव) महाराज पाँडु हस्तिनापुराधीशके चतुर्थ पुत्र रानी माद्रीके उदरसे थे सहदेव इनके सगे भाई थे और युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन सौतेले भाई थे नकुलका रंग सांवला और डील डौल भारी था इनकी माता रानी माद्री निज पतिके साथ सती होगई थी निदान सौतेली माता रानी कुन्तीने इनको पाला था ये पशुचिकित्सामें निपुण थे "वैद्यकसर्वस्व" इनका बनाया ग्रंथ अब नहीं मिलता है अंतमें पांचों पांडवें हिमालयपर जाकर बर्फमें सीजगये नकुल अश्व शास्त्र भी खूब चलाना जानतेथे और ज्योतिषविद्यामें निपुण थे द्रौपदीके सिवाय इनकी दूसरी रानीका नाम विजया था जिससे सुहोत्रनामक पुत्र उत्पन्न हुआ था

नग्नस्वामी—ये चित्रकार विक्रमादित्य द्व महाराजा उज्जैनके दर्बारमें था इसने राज्यदर्बारको सुशोभित करनेके लिये उस वक्तकी जगत् प्रसिद्ध सुंदरियोंके चित्र खींचे थे

नन्द—(महाराजनन्द मगधनरेश) इनके बापका नाम महानन्दिन था ख० ई० से ३७० वर्ष पूर्व गद्दीपर बैठे और ५० वर्ष राज्य करके विष दिलाकर मार डाले गये इनके वजीर शकटारने अपमानित होकर एक महाक्रोधी, हठमतिश विद्वान् ब्राह्मण चाणक्य नामकसे इनके विरुद्ध अपनी मानहानिका बदला लि या. इसका पूर्णवृत्त चाणक्य संबंधमें हुआ है (देखो चाणक्य) चाणक्यने

एक दासीकेद्वारा महाराज नन्दको आठों पुत्रसहित विष दिलवाकर ख० ए० से ३२० वर्ष पहिले नष्ट करदिया और चंद्रगुप्तको जो महाराज नन्दके वीर्यसे मुरा नामक नायनस उत्पन्न हुआ था गद्दीपर बिठलाया नन्दकी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) मेंथी और शाक्टार तथा राक्षस उसके वजीर थे-महाराज नन्दके पुत्रोंसहित नष्ट होनेका वृत्तांत कवि विशाखदत्तने "मुद्राराक्षस" नाटकमें विस्तृत रूपसे लिखा है।

नन्ददास-(भाषाकवि, अष्टछाप) अष्टछापका विवरण विठ्ठलनाथके प्रसङ्गमें पढो-इनकी रासपञ्चाध्यायीमें वही आनन्द आता है जो जयदेवरचित गीत गोविंदमें-इनकी कविताके विषयमें यह उक्ति प्रसिद्ध है कि, "और सब गढिया नन्ददास जडिया" गोस्वामी विठ्ठलनाथजी इनके गुरुथे २५२ वैष्णवोंकी वार्त्तामें लिखाहै कि, ये पूरबके रहिनेवाले सनाढय ब्राह्मण बडे पंडितथे बडे भाईका नाम तुलसीदास था-एकदफे अपने ग्रामके लोगोंके साथ द्वारिकापुरी-के दर्शनोंको गये रास्तेमें स टगया, निदान भटकते हुये सिन्धुनदीपर पहुंचे-वहां एकरूपवती क्षत्रानीपर मोहित हो उसके घरका फेरा करन लगे जब यह बात फैलगई तो उस स्त्रीके घरके लोग लोकनिन्दाके भयसे नगर छोड गोकुलको चलदिये-नन्ददासजीभी पीछे होलिये-गोकुल पहुंच गो० विठ्ठलनाथके दर्शन और उपदेशसे चित्तकी वृत्ति लौटगई, निदान शिष्य हो वहीं रहिने लगे-इन्होंने समग्र भागवतका भाषानुवाद कियाथा, परन्तु यह सोच कि, ब्रजवासी व्यासोंके साम्हने मेरी कथाका कौन आदर करेगा समग्र ग्रंथ जमुनाजीमें डुबादिया-केवल रासपञ्चाध्यायी गो० विठ्ठलनाथजी के आग्रह करनेपर रहिनेदी अकबरने इनकी प्रशंसा सुन अपने दर्बारमें इन्हें बुलायाथा-वहां पहुंच इन्होंने एक रासका पद सुनाया, जिसके अंतमें था कि, "नन्ददास तहां ठाढो निपट निकट" यह सुन अकबर पीछे पडगया कि, "निपट निकट" का भेद कहो नन्ददासजीने उसी समय वहीं प्राणत्याग दिये-भक्तमालमें इन्हें रामपुरवासी चंद्रहासका पुत्र लिखाहै-डाक्टर ग्रीयर्सन ने इनके बनाये निम्नस्थ ग्रंथोंके नाम लिखे हैं-नाममाला, अनेकार्थपञ्चाध्याई, रुक्मिणीमंगल, दशमस्कंध, दानलीला और मानलीला इनका सिद्धान्त था कि,सत्संग करनेसे अवश्य मोक्ष होजाता है-प्राय वि०सं० १५८५में जन्मेथे

नन्दवबा-(नन्दराय) महावन जिला मथुराके रहिनेवाले आभीर सर्दार थे-श्रीकृष्ण महाराजको पुत्र करके इन्होंने पाला था-इनकी रानीका नाम यशोदा थी-इनके अनेक गऊ बछडे थे और अपनी जातिके लोगोंके नायक थे नन्दगाँव जिला मथुरा इन्हीं का बसाया अबतक विद्यमान है-नन्दगांवमें रूपसिंह जाटका बनवाया नन्दबाबाका एक मंदिर है महावनमें नन्द-

यज्ञाके महिलके असली खम्भे अबतक मौजूद है-खम्भे पत्थरके हैं, और इनपर अतिसुंदर खुदाइ है।

नरहरि-(भाषाकवि) असनी ग्राम जि० फतेहपुरके रहिनवाल भाट महापात्र थे-दर्बार अकबरीके बड़े कवीश्वरोंमें इनकी गणना था अकबरने असनी ग्राम इनको जानकार दियाथा-इन्होंने निजग्राम असनी कुलधान कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंको बसाया और जजमानीका कामभी न किया-इनके वंशके लोग अबतक भाटोंमें सर्वोत्तम गिने जाते हैं-कह इन्होंने बहुतसे कहेहैं-निम्नस्थ छप्पय गौआके गलेमें बाँध अकबर सामने पेश करके इन्होंने गोवध बंद करायाथा-

छप्पय-अरिहु दंत तृन धरहिं ताहि नहिं मारसकैकोइ।
हम संतत तृन चरहिं बचन उच्चरहिं दीन होइ॥
अमृतपय नित स्रवहिं बच्छ महिथम्भन जावहिं।
हिन्दुन मधुर न देहिं कटुक तुरकन न पियावहिं॥
कहि नरहरि सुन शाहपद बिनवत गऊ जोरे करन।
केहि अपराध मोहि मारियतु मुयेऊ चाम सेइयतु चरन॥

नरहरिजीने रीवाँनरेश रामसिंहके यहाँ आदरभी मान सन्मान पायाथा-इनके पुत्र भाषाकवि हरनाथभी बड़े प्रतापी हुये हैं- नरहरिजी स० ई० १५५० विद्यमान थे बादशाहने इनको "महापात्र"की उपाधि दीथी और कहाया कि आपके सिवाय जो और भाट हैं वे गुणके पात्र हैं इनके वंशज अबतक बनारस तथा बेटी जिला रायबरेलीमें मौजूद हैं। ग्राम असनी पर अब इनके वंश जा अधिकार नहीं है और इनका मकान भी गंगाजीने कटालिया।

नरसीमेहता- (प्रसिद्धभक्त) भक्तमालके लेखानुसार ये जूनागढ (गुजरात) के रहिनेवालेथ एक दिन भावजके तानेपर इनको दुःख हुआ और घर छोड भगवद्भक्तिमें मग्नहुये-इनका कृष्ण भक्तथा और जातिके नागर ब्राह्मणथे-समय इनका वि० स० १५५० व १६५० के भीतर होना निश्चय है-र बिताभी करनथे और विष्णुपद खूब गानेथे-श्यामलिशाह (श्रीकृष्ण) इनका वेशधर घर जाकर भात पहिनान तथा इनके बेटकी शादी करनेकी कथा भक्तमालमें लिखी है इनकी भगवद्भक्तिकी सूचक है

नल-ये निषध (मगधदेश) के राजा वीरसेनके पुत्र थे विदर्भ (बरार नरेश भीमसेनकी कन्या भुवनमोहनी दमयन्तीसे इनका स्वयंवररीति विवाह हुआ था ये बड़े धीर वीर सर्वगुणसम्पन्न धर्मात्मा राजा वेदविद्या, धनुर्विद्या और अश्वविनोदमें निपुण थे घोडोंको हांकने

उनपर सवार होनेमें अद्वितीय थे और पाँसा खेलनेके रसिकथे विवाह होनेके बाद १२ वर्षतक खूब सुख चैनसे बीती और इंद्रसेन नामक पुत्र तथा इंद्रसेना नामक कन्या पैदाहुई इसके बाद राजा नलपर विपत्ति पड़ी, निदान एक दिन निजभ्राता पुष्करके साथ पाँसा खेल कर अपना सर्वस्व हारगये पुष्करने राज्याधिकार पाय ढंढोरा पिटवादिया कि, नलको राज्यभरमें कोई शरण न देवे राजा नलने निर्धन और निस्सहाय हो बच्चोको तो ननिहाल भेजदिया और आप रानी दमयन्तीको साथले केवल एक धोती पहिने हुये जंगलका रास्ता लिया रास्तेमें ३ दिन रात बिना अन्न जलके बीते तब तो भूखसे व्याकुल हो नलने पखेरुओंके पकडनेके लिये अपनी धोती फेंकी पखेरू धोती भी लेकर उड़ गये, निदान रानी दमयन्तीकी साडीके २ टुकडे कर काम चलाया पश्चात् कुछ मछलियें पकड़कर भूनीं लेकिन जब राजा नल नहाने लगे तो भूनी हुई मछलियें तालाबमेंको चल पड़ीं तबहीसे मसल मशहूर हुई कि, "विपत्तिके समय भूजी खाले जाती है" ऐसी आपदाके समय नलने दमयन्ती को नैहर चलेजाने को बहुत कुछ समझाया, पर उसने पतिका साथ त्यागना स्वीकार न किया और भूखसे व्याकुल हो पतिके गलेमें हाथ डाल एक पेडकेतले सोगई विपत्तिके समय अकलभी उलटी होजाती है निदान राजा नल सोती हुई पतिव्रता रानी दमयन्ती को अकेला वनमें छोड़ चलते हुये रानी जब जागी तो उसने निज पतिको न पाकर छाती कूट२ कर विलाप किया जिससे पाषाणभी पसीज जाता फिर इधर उधर ढूंढती हुई अनेक आपत्तियोंसे बचती पतिवियोगमें बिलपती सुबाहुनगरनरेशके यहां पहुंच रानीकी दासियों में नौकर होगई और वहांसे उसके पिताके भेजे हुये दूत उसको विदर्भको लगये उधर नल घूमते २ राजा ऋतुपर्ण अवधनरेशके द्वारमें पहुंच घोड़ा हांकनेपर नौकर होगये थे पश्चात् दमयन्तीके पिताने नगर २ गांव २ नलकी खोजमें दूत भेजे अयोध्यासे लौटकर एक दूतने कहा कि, राजा ऋतुपर्णके यहां बाहुक नाम घोड़ा हांकनेवालेके आंसू दमयन्तीका नाम सुन्तेही, बही चले थे यह सूचना पाकर दमयन्तीके पिताने राजा ऋतुपर्णको उनके कोचवान् सहित बुला भेजा विदर्भ पहुंच राजा नलने जो कोचवान्के भेसमें थे, अपनी रानी और बच्चोंका पाया सबको आनन्द हुआ राजा भीमसेनने नलको अपना राज्य दे विदर्भहीमें रहनेको कहा, परंतु नलने सुसरालमें रहिना अंगीकार न किया तब तो राजा भीमसेनने अनेक रथ, घोडे, हाथी, प्यादे, सहित राजा नलको बिदा किया और दमयन्तीको अपने पासही रहिने दिया–निषध देश पहुंच राजा नलने पुष्करको बुला फिर चौंसर खेलने पर आमादा किया–ऋतुपर्णके यहां रहिकर नलको चौंसर खेलना खूब आ गया था, निदान उन्होंने अपना राज्य पुष्करसे जीत लिया, पुष्कर मारे डरके

कांपने लगा-तब नलने समझाया कि, जो हुआ सो भाग्यवश हुआ, पहिले काम करतेथे वैसेही काम करते रहो-फिर दमयन्तीको भी बालकों समेत बुलालिया और बहुत दिनोंतक राज्य किया

नहुष-चंद्रवंशी महाराज पुरूरवाके पुत्र थे पुराणोक्त कथानुसार इन्होंने भूमण्डलका एक छत्र राज्य किया परम प्रभावशाली राजा ययाति इनके पुत्र थे नहुषने अपनी पालकी ब्राह्मणऋषियोंसे उठवाई, अतएव ब्राह्मणोंने शाप दिया जिससे राजा नहुष सांप होगया

नागरीदास-(भाषाकवि) कृष्णगढनरेश महाराज यशवंतसिंह उपनाम नागरीदास था कवितामें कहीं २ नागर तथा नागरिया नामभी लिखा है ये वल्लभीय संप्रदायके वैष्णव थे अनेक बड़े २ मंदिर इनके बनवाये अब तक कृष्ण गढमें मौजूद हैं इनके हृदयमें राज करते हुये भी विरक्तता समाई हुई थी देखो इनका निम्नस्थ पद-

पद-जहां कलह तहां सुख नहीं, कलह सुखनको शूल ।
सबहि कलह एक राजमें, राज कलहको मूल ॥
अपने या मन मूढ तें, डरत रहत हौं हाय ।
वृन्दावनकी ओरतें मत, कबहूं फिरजाय ॥
देत नहुष्य हरिभक्तिको, सकल सुखनको सार ।
कहा भयो नृपहू भये, ढोवत जगबेगार ॥

वि० सं० १८०८ में मुगलसम्राट् दिल्लीने इनको उपद्रव शान्ति करनेके लिये कुमायुं पर्वतपर भेजाथा वहां बड़ी वीरतासे लड़े और सन्धि करके दिल्ली लौटे- दिल्लीसे विदा हो फिर आप कृष्णगढ नहीं पधारे, परंतु संसारका राज पाट समस्त वैराग्य धारण करलिया, राजकुटुम्बसे मुहँ मोडा और राज ठाट त्याग वृन्दावनकी ओर गमन किया- इस विषयमें आप लिखते हैं कि-

फिर वदेनोय राजसमयाद- गये इंद्रप्रस्थ हिये विरहदाह ॥
सब दियो तहां सब प्रभुत संग- भय प्रजस हुल फिर चढयो रंग ॥
तब चले चरण बरसाने ओर- लिये संग २ सारथ घराह ॥
देखो बरसानो निरख-चित्र आयो पुनि प्रम ॥
करत दंडवत लुटतरज- छुटि गये राजसनम ॥

इससे पहिले कई दफे और जब आपने व्रजके तीर्थोंकी यात्रा की थी बड़े २ साधु महात्मा लोग आपको महाराज कृष्णगढ जान कर अलग रहते थे, लेकिन जब सुना कि, नागरीदास येही हैं तब तो दौड़ २ कर आपसे लिपट गये थे, जैसा कि, आपने इस दोहेमें लिखा है-

दो०-सुन व्यवहारिक नाममो, ठाढ़े सूर सवास।
सौंदमिले भरनैन सुन, नाम नागरीदास॥

प्रसिद्ध भाषा कवि आनन्दघनसे आपकी बड़ी मित्रता थी-
निम्नस्थ ग्रंथ आपके बनाये हैं-

बिहारचंद्रिका (वि० सं० १७८८), निकुञ्जविलास (वि० सं० १७९४) व्रजसार (वि० सं० १७९९) स्वजनानन्द (वि० सं० १८०२) भक्तिमगदीपिका, युगलभक्तिविनोद (वि० सं० १८०८), बनविनोद (वि० सं०१८०९) बालविनोद, तत्त्वमाला, तीर्थानन्द (वि० सं० १८१०), बनजनप्रशंसक (वि० सं० १८१९)

आपकी कविता माधुर्य और गूढ भाव तथा प्रेमरससे भरी हुई है

नागेश- (पं०नागेश प्रसिद्ध विद्वान्) काशीके रहिनेवाले महाराष्ट्र ब्राम्हण थे पं० हरदीक्षितजी इनके गुरुथे वि० सं० की १८ वीं शताब्दीमें हुये ये अनेक शास्त्रोंके पूर्ण विद्वान् थे विविधशास्त्रापर इनके बनाये ग्रंथ मिलते हैं और वे नीचे लिखे हैं-

विवरणनामक व्याख्यान भाष्यप्रदीपपर, मंजूषा, लघुशब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर, तीर्थेन्दुशेखर, प्रायश्चित्तेन्दुशेखर, काव्यप्रदीप, रसगंगाधरव्याख्यान, सप्तशतीटीका, सप्तशतीप्रयोग, वाल्मीकिरामायणकी टीका और सांख्य तथा योगशास्त्रोंपर वृत्ति

नागोजीभट्ट-(मनोरमा शेखरके कर्ता) ये संस्कृतविद्याके पूर्ण ज्ञाता थे-परतापगढ (अवध) के राजा रामबक्ससिंहने इनका मान सत्कार किया था-इनका बनाया मनोरमा शेखर नामक व्याकरण ग्रंथ देशमान्य है-स० ई० १७०० के लगभग इनका समय है-

नाथकवि-उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ,शम्भूनाथ, हरनाथ कवीश्वरोंने अपना भोग नाथ लिखाहै-पृथक् २ देखो

नादिरशाह- (बादशाह ईरान) खुरासानके एक गडरियेका बेटाया-बचपनहीसे लड़ने भिड़नेका इसको शौक था-युवा होकर कुछ लुटेरोंको संग्रह करके आसपासके गांव लूटने लगा-पश्चात् एक बड़ी फौज संग्रह करसका और खुरासानके अफगानोंको मार भगाया-फिर ईरानके बादशाहको गद्दीपरसे उतारकर इसने सूफीवंशके एक शाहजादेको तख्तपर बिठलाया और कुछ दिनों पीछे आपही ईरानका बादशाह बनबैठा और काबुलकंधारतक राज्य बढाया-स० ई० १७३९ म ६५ हजार सेना लेकर हिंदोस्तानपर चढाई की मुगलसम्राट् मुहम्मदशाहने करनालके मैदानमें मुकाबला किया पर हारा और नादिरशाहके साम्हने चलागया-नादिरशाहने उसके साथ दोस्तीका बर्ताव

किया और अपनी सेनासहित दिल्ली देखनेको आया प्रथम नादिरशाहका इरा कुछ दिन मेहमानके तौरपर दिल्लीमें रहकर इरानको लौट जानेकाथा, परं एक दिन दिल्लीमें लोगोंने यह खबर उडादीथी, नादिरशाह मरगया यह खबर पाकर दिल्लीकी प्रजा नादिरशाहके सिपाहियोंपर टूटपडी और कितनोंको मारडाला प्रन्तु यह हाल दखकर जब नादिरने यह हाल देखा तो कतले-आमका हुक्म दिया-जब प्रजाका अधिक भाग कटगया तो मुगलसम्राट् मुहम्मदशाहने नादिरके पास हाजिर हाकर प्रार्थना की कि, यदि सब प्रजा काटडाली जायगी तो फिर बादशाहत किसपर की जायगी-इसपर नादिरने कत्ल मौकूफका हुक्म दिया-हुक्म पातेही फौजके सिपाहियोंने तलवारें जहांकी तहा रोकली नादिरशाहकी सेना उसका हुक्म ऐसे फुर्तीसे मानतीथी कि, जिसकी मसलहै "हुक्म नादिरशाही," प्रसिद्धहै-पश्चात् नादिरने दिल्लीको लूटा और ३२ करोड रुपयेसे अधिकका धन लेगया, जिसमें तख्ते-ताऊस और कोहनूर हीरा भी शामिल था-सिंधसे इस पारका मुल्क मुगल सम्राट् मुहम्मदशाहको अपनी तरफसे देगया और बड़े २ सर्दारोंको समझा गया कि, बादशाहका हुक्म माना नहीं तो तुम्हारे समझानेको मैं फिर हिंदोस्तान दौडूंगा इसके बाद इरानकी तरफ कूच किया जिस गाँव और शाहिरमें होकर नादिरशाह और उसकी फौज निकलतीथी प्रजागण अपनी जान लेकर भागते थे-भागते रास्तेमें कांगडेके समीप एक साधु अपनी गुफामेंसे निकल निर्भय नादिरशाहके साम्हने चलागया और कहा कि," बाबा अगर तू देवताहै तो देवताके कामकर और जो पंडितहै तो लोगों को मुक्तिका रास्ता बता और यदि तू बादशाह है तो प्रजाको सुखदे " इसके उत्तर में नादिरने कहा कि, मैं न देवता हूं,न पंडित हूं न बादशाह हूं जो उनके काम करू, मुझको तो परमेश्वर अधर्मी और पापी लोगों को समझानेके लिये भजताहै शुरूमें नादिर दयालु था, परंतु हिंदोस्तान से लौटनेके बाद बडा निर्दयी होगयाथा, यहांतक कि,एक दिन क्रुद्ध होकर अपने बेटेकी आखें निकलवा डालीं स० ई० १७४७ में प्रजागणने उसको मारडाला नादिरशाह जबतक जीतारहा किसीसे नहीं हारा-इसीकारण इस नाम पर यह उक्ति अबतक प्रसिद्ध है "जबतक जियें नादिर शाह तबतक सीस नवाय बादि"

नानहक-(सिक्खोंके प्रथम गुरु-नानकपंथके संस्थापक) जिला लाहौर के तलवण्डी नामक गाँवमें कालूमल खत्रीके घर वि०सं० १५२६ में कार्तिक सुदी१५ को जन्म इनके पिता तलवण्डी गाँवके पटवारी थे इनके बाल्यकाल की पढनेसे मालूम होता है कि, बुद्धि शुरूहीसे अत्यंत तीव्र थी और मन संसारी कामोंसे विरक्त था थोडेही दिनोंमें इन्होंने कुछ फारसी और हिसाब किताब सीखली-तीरासीपाथा जब ये बड़े हुये तो पिताने बालाजामक [illegible] इन्हें साथ इनको ४०८० देकर व्यापार करनेके लिये बाहर भेजा रास्तेमें ८

साधु मिलगये उनके खिलाने पिलानेमें चालीसों रुपये खर्च कर नान्हकजी घरको लौट आये, निदान पिताने निराश हो इनको बहिनके घर सुलतानपुर भेजदिया, और बहिनोईने सिफारश करके इनको नवाब दौलतखाँ लोदीका खजाञ्ची करादिया और थोड़ेही दिन बाद जिला गुरदासपुरमें एक खत्रीकी बेटी सुलखनीसे इनकी शादी करादी, जिससे श्रीचंद व लक्ष्मीदास २ पुत्र हुए श्रीचंदसे बेदी सम्प्रदाय और लक्ष्मीदाससे उदासी सम्प्रदाय चली पुत्र होनेके बाद गुरुके चित्तमें विशेष वैराग्यका उदय हुआ, निदान एक दिन घरबार छोड़ जंगलको चलते हुये और सुलखनीजीको पुत्रों सहित नैहर पहुँचा दिया मला और मर्दाना २ जन गुरुके साथ रहितेथे मर्दाना जो बहावी मुसल्मान था बाजा बजाताथा और गुरुज्ञानमार्गके भजन गातेथे हिंदू मुसल्मानोंको मिला कर एक करदेनाही इनका मुख्य उद्देश था इनका सिद्धांत था कि,ईश्वर एक है जाति पांति कुछ नहीं है,और पन्थ वा मत कोई पदार्थ नहीं है ये उत्तम साधु थे जीवन अच्छे कामोंमें बितातेथे अनेक तीर्थोंकी यात्रा कीथी, मक्का भी गयेथे हिंदू मुसल्मान दोनों इनके चेले हुये थे वि० सं०१५९६ में ७० वर्षके होकर सिधारे इनके मृतक शरीरपर हिंदू मुसल्मानों में झगडा हुआ परन्तु चादर उठाकर देखा तो लाश नहीं पाई नान्हकजी जन्मभूमिपर एक मंदिर बनाहै जिसको नान्हकाना कहिते हैं बाबरने जब हिंदोस्तानपर चढाई की थी तो गुरुसे उसकी मुलाकात पंजाबमें हुईथी इनके बनाये अनेक साखनी व भजन हैं और "गुरुकी साखी" नामक ग्रंथभी इन्हीका बनाया हुआ है

नानाधन्धूपथ-(नानासाहिब) ये पूनाके अन्तिम पेशवा बाजीराव द्वितीयका गोद लिया बेटा साक्षर और मशहूरनीय बाल डालका सुडौल हृष्टपुष्ट,मिष्ठ नसार, अपने पूर्वजोंके धर्मपर आरूढ और वर्णका ब्राह्मण था कानपुरके निकट बिदूरमें रहिता था पेश्वा बाजीरावके बाद बृटिश गवर्नमेंटने वह पेन्शन जो बाजीरावको मिलती थी नानासाहिबको नहीं दी, इसी वजहसे नानासाहिब दिलमें बृटिश गवर्नमेंटसे शत्रुता मानता था पर कानपुरमें रहिनेवाले अंग्रेजों तथा मेमोंसे खुब मिलता और मित्रताभाव रखता था स० ई० १८५७ के गदरमें नानासाहिबने कानपुरवासी सब अंग्रेजों, मेमों और इनके बच्चोंको बचानेका वायदा किया था पर अफसोस है कि, बागियोंने उन सबको मार डाला गदरके समय नानासाहिब जिधर होकर निकल जाता था सब म्लेच्छ घाग टेक जाते थे और दशा लगिर्ये मुर्देमें देकर प्राण बचातेथे अंतमें सर हेनरी हैवलाकसे परास्त होकर नानासाहिब फतेहपुरके मुकामसे भागा और आजतक नहीं मिला गदरके बाद बृटिश गवर्नमेंटने नानासाहिबको कानपुरके फिसादोखूनका दोषी ठहराया और फांसीका हुक्म दिया लेकिन नाना

साहिबका पता कहीं नहीं लगा अनेक लोग साधुके भेसमें पकड़ २ कर फांस दे दिये गये परंतु विश्वास है कि, उनमसे कोईभी नानासाहिब न था

स० ई० १८२४ में जन्मे

नानाफर्नवीस-(मरहटासर्दार) जातिके महाराष्ट्र ब्राह्मण थे अंग्रेज इतिहास लेखकगण इस बातपर एक मत हैं कि "नानाफर्नवीस बड़े सुमब धकार गा नीतिनिपुण और चतुर पुरुष थे" नरायण राव पञ्चम पेश्वाने इनको अप वर्जीर बनाया। कुछही दिनों बाद अनन्द्री बाईने अपने भतीजे नरायणरावको दि देके मरवा दिया और नरायणरावके चचा रघुनाथराव पेश्वा बन बैठे। मगर कुछही महीने बाद नरायणरावके माधौराव नारायण नामक पुत्र हुआ जिस रघुनाथरावने तो हराम कर ठहिराया लेकिन नानाफर्नवीस आदि सब मरा सर्दारोंने मिलकर उसको गद्दीपर बिठलाया और रघुनाथरावको उतार दिय इस पर रघुनाथरावने अंग्रेजोंसे मदद ली और नानाफर्नवीस फरासीसोंसे मि गये, निदान युद्ध हुआ नतीजा यह निकला कि, माधौराव नाराय तो पेश्वा रहे और रघुनाथरावको भी खर्चके लिये पेन्शन मिली माधौर व नारायणकी नाबालिगीमें नानाफर्नवीसका अधिकार पूनादर्बारमें म कुछ बढ़ा हुआ था इसी कारण सेंधिया हुल्कर, भोंसला तथा गैकवा जो पेशवाके आधीन होकर राजस्व देते थे नानाफर्नवीससे जलने ल और स्वाधीन होनाना चाहते थे लेकिन जो २ इनमेंसे सर उठाता गया नान फर्नवीसकी राजनीतिसे उसीको खूब नीचा होना पड़ा। सबसे पहिले महादाजी सेंधियाने सर उठाया और पूना दर्बारका आधिपत्य त्याग किया लेकिन अन्त कालहीमें स० ई० १७९४ की साल उसने मरकर नानाफर्नवीसकी फिक्र सहजहीं मिटादी इसी समयके लगभग नानाफर्नवीसने निजाम हैदराबादपर राजस्व वसूल न होनेके कारण चढ़ाई की और फतेहपाई स० ई० १७९५ में माधौराव नरायणने २१ वर्षकी अवस्था आत्मघात किया और बाजीराव द्वितीय अन्तिमपेश्वा गद्दीपर बैठे.इनके समयमें गैकवाड़, भोंसला और निजामने पुनः दर्बारसे मुँह मोड़ा यह देख बाजीरावने नानाफर्नवीसकी रायसे अंग्रेजोंसे बाहिदी पैमान किया जिसके अनुसार पेशवाको कुछ अंग्रेजी फौजका खर्चा गवारा करना पड़ा औ अंग्रेजोंने पूनादबारसे शत्रुओंको परास्त करनेका वचन दिया निदान द्वितीय म रहटायुद्ध शुरू हुआ जिसमें गैकवाड़, भोंसला और निजामको परास्त होकर अ पने २ मुल्कका आधिपत्य देकर संधि करनी पड़ी फिर हुल्करने सिर उठाय लेकिन उसको भी अन्तमें भोंसला और गैकवाड़की तरह अंग्रेजी फौजके मुका बलेमें ढीला होना पड़ा आखरमें ईष्टइंडियाका पद यह हुआ कि, मरहटोंका स पराक्रम नष्ट होकर उनको दूसरोंका आधीन बनना पड़ा

नानाफर्नवीस स० ई० १८०० में मरे इनका असली नाम जनार्दन बालाजी था

नाभाजी–(भक्तमालके कर्ता) इनका असली नाम नारायणदास था इनके बाप रामदास ब्राह्मण तैलङ्ग देशमें गोदावरी तट ऊपर रामभद्राचल पर्वतपर रहिते थे और हनुमानोपासकथे बचपनहीमें नाभाजीके पिताका देहांत होगया और जब ५ ये वर्षके हुये तब इस देशमें घोर अकाल पड़ा, जिसमें बेचारी माता इनको वनमें छोड़कर चली गई दैवयोगसे गुरु रामानन्दकी गद्दीके महन्त कील्हजी अपने पुत्र अग्रदाससहित उधरसे निकले और इनको अपने स्थानपर, जो जयपुरके निकट गलतामें है लेआये वहां रहिकर साधुओंकी जूठन खाते २ इनकी बुद्धि निर्मल होगई तब अग्रदासजीने इनको अपना शिष्य करलिया और नाभादास नाम रक्खा वि० स १६४१ और १६८० के बीच नाभाजीने निज गुरुकी आज्ञासे भक्तमाल नामक ग्रंथ १०८ छप्पय छन्दोंमें लिखकर पूरा किया भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदायके अनुसार इनकी गुरुपरम्परा यों है–

गुरु रामानन्दके शिष्य आशानन्द, उनके कृष्णदास पय अहारी, उनके कील्हजी, उनके अग्रदास और उनके नाभाजी प्रसिद्ध महात्मा मलूकदासजी इनके गुरुभाई थे पश्चात् स्वा० प्रियादास वृंदावनीने भक्तमालका तिलक कवित्तोंमें किया इसके बाद भक्तमालके अनेक तिलक तथा अनुवाद बने और बनते जाते हैं एक दफे मथुरामें साधुसमाज हुआ था तब नाभाजीको गुसांईकी पदवी मिली थी, नाभाजी जन्मांध थे–

नारायणभट्ट गोस्वामी–इनके पिताका नाम भास्कर तथा गुरुका नाम सनातन गोस्वामी था गुरुमुखसे भागवतकी कथा सुनकर इनको बृजके रूप गुप्तस्थानोंके प्रकट करने तथा भगवतलीला दर्शन करनेकी उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई तब इन्होंने पुराणोंसे पता लगाकर बृजके सब प्राचीन स्थानोंको प्रकट किया और रासलीलाका आरंभ कराया आज कल लोग इन्हींके प्रदर्शित पथसे बृजयात्रा करते हैं और इन्हींके आविष्कृत स्थान तथा देवता इस समय पूज्य हैं वि० स १८१० में इन्होंने "ब्रजभक्तिविलास" नाम ग्रंथ रचा जिसमें ब्रजके स्थानों और उनके माहात्म्य का वर्णन है इस ग्रंथमें १३३ वनो का वर्णन है जिनमेंसे ४२ जमुनाजीके पार हैं भक्तमालमें लिखा है कि, ये बड़े पंडित थे और ज्ञान तथा स्मार्तवादके खण्डनमें परम निपुण थे ये दीक्षित भृगुवंशमें मथुरासे ११ कोस पर मन्द्राज नामक ग्राममें जन्मे थे और १२ वर्षकी उम्रमें गुरुकी आज्ञासे राधाकुंडपर आबसे थे ७ वर्ष पीछे फिर बरसानेके पास ऊँचे गाँवमें आरहे इन्होंने वर्तमान शैलीकी रासलीला का प्रचार ब्रजमंडलमें किया डाक्टर ग्रिअर्सनके मतानुसार स० ई० १५६२ में जन्मे खेड़ागांव जिला मथुरा ■ कदम्बखण्डी के समीप इनका बनवाया नारायण-सरोवर नामक तालाब अबतक मौजूदहै

नारायणराव–(पञ्चम पेश्वा) बालाजी बाजीराव तृतीय पेश्वा इनके बाप थे अपने बड़े भाई माधोराव चतुर्थ पेश्वाके बाद स०ई० १७७२ में ये गद्दीपर बैठे लेकिन् इनके चचा रघुनाथरावकी स्त्री आनन्दी बाईने स०ई० १७७४ में इनको विष दिलवाके मरवादिया.इनकी मृत्युके कुछ महीनेबाद माधोराव नारायणनामा इनके पुत्र हुआ जो पेश्वाकी गद्दीपर बैठा इनका वजीर नाना फडनवीस बड़ा स्वामिभक्त और सुप्रबन्धकर्ता था इन्हींके वक्तमें मरहट्ठों ने दिल्लीपर चढ़ाई करके मुगलसम्राट् शाह आलम द्वितीय को कैद करलियाथा

निपट निरञ्जनस्वामी–(भाषाकवि) दिल्लीके रहिनेवाले ब्राह्मण वि० सं० की १६ वीं शताब्दी में हुये ये गो०तुलसीदासकी समान महान् विद्वान् हुये हैं इनके रचे ग्रंथोंकी संख्या ठीक नहीं मालूम होती, परंतु पुरानी संग्रहोंमें पुस्तकों में इनके बनाये कवित्त सैकड़ों मिलते हैं "शान्तिसरसा" तथा "निरञ्जनसंग्रह" इनके रचे ग्रंथहैं इनकी कविता ऐसी प्रभावशालीहै कि उसके श्रवण कीर्तनसे काम, क्रोध,लोभ, मोह से मनुष्य निस्संदेह छूटजाताहै निम्नलिखित प्रसिद्धपद इन्हीं का है–

> ऐसे भये यादव सगर सुत ऐसे भये।
> जातहू न जाने ज्यों तरैया प्रभातकी॥
> बलु वणु अम्बरीष मानधाता प्रहलाद।
> कहाँलौं गनाईं कथा रावण ययातिकी॥
> तेऊ न बचे [illegible] दाय।
> भाँति २ रचो सेन सहे दुःख पातकी॥
> चार २ दिनाको चाव सबकोऊ करै।
> अंत लुटजैहै जैसे पुतरी बरातकी॥

निवासदास–(हिंदीभाषाके सुलेखक) मथुराके सेठ लक्ष्मीचंदके मुनीम लाला मंगीलाल अग्रवाल वैश्य इनके पिताथे। वि०सं० १९०८ में इनका जन्म हुआ, इनके दो बड़े भाई और थे। ये महाजनीकाममें बड़ेही चतुरथे, थोड़ीही उमरमें दिल्ली जाकर सेठ लक्ष्मीचंदको कोठीका उत्तम प्रबंध कियाथा। पंजाब गवनर्मेंटने इनको दिल्लीका म्युनिसिपैलकमिश्नर नियत कियाथा और दर्बारियोंकी सूचीमें इनका नाम दर्ज कियाथा। ये वैष्णव थे लेकिन सम्प्रदायका संकीर्णता इनमें नहीं पाईजातीथी। हिंदीभाषाके सुलेखकों में इनकी गणनाहै। तप्तासम्वरणी, संयोगताखयंवर, रणधीर प्रेममोहिनी तथा परीक्षागुरु इनके रचे ग्रंथ अच्छे हैं। जिन्होंने इनको देखाथा वे कहतेहैं कि, "निवा-

बुद्धि, धन, प्रतिष्ठा, सहृदयता, रसज्ञता, व्यवहारकुशलता, देशभक्ति तथा ईश्वरभक्ति इत्यादिगुणों के लिहाजसे लाला श्रीनिवासदास उत्कृष्टश्रेणीके पुरुष थे। वि० स० १९४४ में परलोकगामी हुये।

निम्वार्कस्वामी-(सनकादिक अर्थात् निम्बार्क सम्प्रदायके आचार्य) ये महाराष्ट्रब्राह्मण अरुण ऋषिके पुत्रथे माताका नाम जयन्तीथा गोदावरी तट मुंघेरमें रहतेथे परमविद्वान् होनेके सिवाय बड़े सिद्ध भी थे वेदान्तसूत्रोंपर इन्होंने भाष्य रचाथा अनेक स्तोत्रभी बनायेथे, जिनमें ईश्वरके रूप, जीव और मायाका निर्णय कियाहै इन स्तोत्रोंपर व्याख्यायें भी रची हैं और उपासनाके लिये पद्धति बनाई हैं एक "दशश्लोकी स्तोत्र" भी निर्माण किया है, जिसमें यह सिद्ध कियाहै कि, ईश्वर द्वैताद्वैतहै, जैसे सर्पका कुंडल सर्पसे भिन्न नहीं, जलकी तरङ्ग जलसे भिन्न नहीं, ऐसेही यह जगत् ईश्वर से भिन्न नहीं, केवल नाममात्रका फर्क है। निम्बार्कस्वामीकी सम्प्रदायके २ मुख्य स्थानहैं, जिनमेंसे एक अरुण (दक्षिण) में और दूसरा सलेमाबादमें-इनका नाम निम्बार्क पड़नेका यह कारण हुआ कि,एक दिन कोई अतिथि सन्यासी इनके घर आया उसके लिये भोजन तैय्यार होते २ सूर्य छिपगया-सूर्यास्तके बाद स न्यासीने अपने नियमानुसार भोजन करनेसे इनकार किया यह देख इनको खेद हुआ और इन्होने ईश्वरसे प्रार्थनाकी थोड़ीही देरमें निम्बवृक्षके ऊपर सूर्य चमकने लगा-संन्यासीने सूर्यको देख भोजन करलिया-तबहीसे इनका नाम निम्बार्क (निम्ब = वृक्ष + अर्क = सूर्य) स्वामी पड़ा-स० ई० की १४ वीं शताब्दीमें हुये। इनकी संप्रदायके लोग श्रीकृष्णके युगलरूपका ध्यान पूजन करते हैं

निहालसिंह-(महाराज राना निहालसिंह, सी० बी० धौलपुरनरेश) स० ई० १८६२ की साल धौलपुरके जाटवंशोत्पन्न राज्यवंशमें जन्मे आपके पूर्वजोंने स० ई० की ११ वीं शताब्दीमें चम्बल नदीके किनारे कुछ मुल्क विजय किया था दिल्लीके सम्राट् सिकंदर लोदीने इस घरानेको रानाकी उपाधि दी और स० ई० १७७९ में बृटिश गवर्नमेंटने महाराज रानाकी उपाधिसे विभूषित किया महाराज निहालसिंह अपने दादे महाराज भगवन्तसिंह,के०सी० आई० ई० के बाद स० ई० १८७३ में धौलपुरकी गद्दीपर बैठे। स० ई०१८९९ में तीराकी चढ़ाईमें संयुक्त होनेकी अभिलाषा प्रकट करनेके बदले मे आपने वायसराय महोदयसे सी० बी० की पदवी पाई अङ्गरेजी तथा संस्कृतके पूर्ण ज्ञाता होकर अपने पूर्वजोंके सनातन धर्मपर आरूढ थे एक समय ग्वलती गोलियाके बीच घुसकर आपने डाकुओंको पकड़ा था आप अपनी प्रजाके भक्तिभाजन तथा

उदार, गुणग्राही और सर्वप्रिय थे स०ई०१८७७ के अकालमें आपने प्रजाकी बड़ी रक्षा की थी आप सद्व्यवहार कुशल थे और अंग्रजोंसे आपका बड़ा मेल था घुड़दौड़ तथा पोलोका शौक था महाराज पटियाला आपके परम मित्र थे उनकी मृत्युकी खबर सुनकर आप बीमार पड़ गये, और कुछ दिनबाद शिमलेमें स० ई० १९०१ की साल परमधामको सिधारे. आपकी महारानी बड़ी पतिव्रता थी, निदान महाराजकी मृत्युकी खबर पातेही उसने भी देह त्यागदी धौलपुर राज्यका विस्तार १२०० वर्गमील है बस्ती प्राय २५ लाख मनुष्योंकी है राज्यमें १३९ सवार, १५८८पैदल और ३१ तोपें हैं तोपके १५ फैरोंकी सलामी महाराज को दीजाती है– महाराज निहालसिंहके सुशिक्षित पुत्र (वर्तमान नरेश) निज पिताके समानही सुयोग्य हैं

नीलकंठ अध्वरी–(संस्कृत कवि) प्रसिद्ध पंडित आचार्य दीक्षितकेपौत्र वि०सं०१७की बीसशताब्दीके आरम्भमें द्राविड़ देशमें हुए थेबड़े पंडित,कवीश्वर तथा टीकाकार थे श्रीकंठ मतपर चलनेसे अनेक यज्ञ करके इन्होंने "सर्वस्ववेदी" पदवी पाई थी दक्षिण देशस्थ एक राजाके दर्बारसे इनका सम्बंध था निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं– व्याकरण भाष्यप्रदीपव्याख्या, शिवतत्त्वरहस्य, शिवलीलार्णव महाकाव्य, नीलकण्ठविजयचम्पू

नीलकण्ठ दैवज्ञ–(ज्योतिषकार) प्रसिद्ध ज्योतिषी अनन्तदैवज्ञ इनके पिता थे ये गर्गगोत्री ब्राह्मण थे इन्होंने नीलकण्ठी नामक ज्योतिष ग्रंथ जिसमें वर्षफलका विचार है ३० वर्षकी उमरमें बनाया. "मुहूर्तचिंतामणि के रचयिता पं० रामदैवज्ञ इनके भाई थे नीलकण्ठजी बादशाह अकबरके दर्बारमें प्रधान पंडित थे पं० गोविंददैवज्ञ जिन्होंने पीयूषधारा नाम मुहूर्तचिन्तामणि का तिलक रचा इनके पुत्र थे

शाके सालिवाहने १४९९में जन्मे

नीलाम्बर शर्म्मा–(ज्योतिषी) ये मैथिल ब्राह्मण शम्भुनाथजीके पुत्र पटनाके रहिनेवाले शाके १७४५में जन्मे पं० रुआजांबर ज्योतिर्विदसे विद्या पढ़ी पं० जीवनाथशर्म्मा इनके ज्येष्ठ भ्राता थे पं० नीलाम्बरजी अलवरराज महाराज शिवदानसिंहकी सभाके प्रधान पंडित थे राज्य अलवरके पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान टामस मैं डेल साहिबके कहिनेसे यूरोपदेशकी रीतिअनुसार इन्होंने "गोलप्रकाश" नामक ग्रंथ रचाथा. लीलावतीपर एक तिलक भी बनायाथा शाके १८०५में मणिकर्णिका घाट काशीपर परमधामको सिधारे अपना तमाम धन सीतारामके मंदिर बनवाने और उसकी प्रतिष्ठा करनेमें लगा दियाथा.

नूरजहाँ-(दिल्लीके मुगलसम्राट् जहांगीरकी पृथिवी प्रसिद्ध सुंदरी बेगम) इस का बाप मिर्जा ग्यास ईरानके वजीरका बेटाथा समयके हेर फेरसे गरीब होकर नौकरीकी तलाशमें हिंदोस्तान आया रास्तेमें कंधारके समीप उसके येही लड़की पैदा हुइ मिर्जा ग्यासके पास उसवक्त खानेतकको न था और बीबी सहित पैदल सफर करताथा, निदान कलेजेपर पत्थर रख लड़कीको सड़कपर छोड़ आगेको चलदिया पीछे २ सौदागरोंका एक काफिला आताथा काफिलेके सर्दारने बच्चेको सड़क पर पड़ा देख उठा लिया आगे बढ़कर मिर्जा ग्यास बीबी सहित जाते मिले काफिलेके सर्दारने ग्यासकी बीबीको लड़की की दाया नियत करके सवारी बैठनेको दी और खाना मुकर्रर किया मिर्जा ग्यास और उनकी बीबीने अपने बच्चेको पाकरें और उसकी खुशनसीबी देखकर परमेश्वरको लाख २ धन्यवाद दिया हिंदोस्तान पहुंच ग्यास बादशाह अकबरके यहां नौकर होगये जब यह लड़की, जिसका नाम मेहरुन्निसा था बड़ीहुइ तो अकबरके बेटे सलीमकी इसपर आंख पड़ी अकबरने यह बात पहिचान मेहरुन्निसाका विवाह अलीकुलीखाँ एक इरानीसे करके उसको बंगालका सूबेदार बना दिया अकबरके बाद शाहजादे सलीम (जहांगीर) को तख्तपर बैठ कर मेहरुन्निसाकी याद आइ निदान उसने अलीकुलीखांके मारनेका इन्तजाम किया पहिले तो अलीकुलीखाँ खूनी हाथीसे लड़ायागया, लेकिन उसने हाथीको मार भगाया फिर निहत्थे होकर शेरसे लड़नेका हुक्म मिला, परंतु उसने शेरकोभी पछाड़"शेर अफगन" खिताब पाया जब यह कोइ तरकीब न चली तो जहांगीरने फौज भेज अली कुलीको मरवाडाला, और कुछ दिनबाद उसकी विधवाके पास शादीका पैगाम भेजा जवाबमें मेहरुन्निसाने आँसू बिटोरकर कहा कि "शेर अफगनसे खसमको गमाकर अब मैं क्या शादी करूंगी बादशाह सलामतसे कहिदेना कि, मुझ रांड पर अधिक जुल्म करना लाजिम नहीं है" इस उत्तरपर जहांगीरने निराश होकर मेहरुन्निसाको अपनी मांके खवासोंमें रखवादिया और पश्चात् शोक शान्ति होनेपर उससे शादी करली, और नूरमहिल तथा कुछ दिन पीछे नूरजहांका खिताब दिया जहांगीर नूरजहांका वशीभूत था, एक पलभी बिना उसके कल नहीं पड़ती थी, सिक्कोंमेंभी उसका नाम खुदता था, राजकाजमें उसका पूरा अधिकार था और सर्कारी कागजों परभी वोही हुक्म देती तथा दस्तखत करती थी उसके बाप मिर्जा ग्यासको वजीरका ओहदा मिला था और उसका भाई आसफुद्दौलाके पदपर नियत कियागया था स० ई० १६२७ में जहांगीरने लाहौरके समीप परलोक गमन किया शाहजहांने तख्तपर बैठकर २५ लाख रुपये वार्षिक आमदनी जागीर नूरजहां को दी परंतु उसकी नजरमें संसार स्याह था विधवा होनेके बाद रंगीन कपड़ा कभी नहीं पहिना

और इसी तरह शोकमें दिन काटती हुई १२ वर्ष पीछे आप भी परलोकवासी और लाहौरमें अपने पतिके मकबरेके पास दफन हुईं यह हाजिरजवाब थी और फारसीकाविता भी अच्छी करती थी

नूह–(Noha) मुसल्मानों तथा ईसाइयोंकी धर्मपुस्तकोंके लेखानुसार इनके वक्त स० ई० से० १६५६ वर्ष पूर्व एक दफे २४ दिनतक वर्षा मूसलधार हुई, सर्वत्र पृथ्वी जलमें डूबगई और तूफान आगया, केवल हजरत नूह एक नौकापर सवार होकर अपने ७ बेटों सहित बचे जिनकी सन्तति बादको पृथ्वीपर सब जगह फैलगई मुख्य काबुल और यूनानकी प्राचीन पुस्तकोंसे भी इस तूफानके आनेका पता लगता है भागवतमें भी लिखा है कि, राजा सत्यव्रतके समयमें एक तूफान आया जिसमें सब पृथ्वी जलमें डूबगई थी केवल राजा सत्यव्रत सप्तऋषियों सहित एक नौकामें बैठकर बचाथा आधुनिक विद्वान् लोग ऊंचे २ पहाडोंकी चोटियोंपर मछली आदि समुद्री जन्तुओंकी हड्डियें पानेसे भी इस तूफानका आना सिद्ध करते हैं नूहके पुत्र सामकी औलादमें अरब और श्यामके लोग हैं और उसके द्वितीय पुत्र हामके वंशमें अफरीकाके हबशी हैं और उसके तीसरे पुत्र याफिसके वंशमें एशिया और यूरुपके रहनेवाले हैं–पहिले पहिल नूहकी सन्तति फरात और दजला नदियोंके बीच मेसोपोटेमियामें रहतीथी, बहुत अधिक होजानेसे भिन्न २ देशोंमें जाबसी और राज्य स्थापन करनेमें समर्थ हुई।

नेपोलियनबोनापार्ट–(Napolean Bonaparte) मुल्क फ्रांसका जगत् विजयी, परम पराक्रमी और बडा बहादुर बादशाह हुआहै–इसने सब यूरुपको हिलादियाथा–यूरुपीय देशोंमें माता अपने बच्चोंको यह कहकर डरानेसे चुपकरती थीं कि "बोना आया"। इसका वचन था कि, उद्यमीके आगे कोई बात नामुमकिन नहीं है। ये कार्सीका टापूमें चार्लस बोनापार्टके घर स० ई० १७६९ में पैदा हुआ–१६ वर्षकी उमरतक लिखा पढा और अस्त्र शस्त्रकी शिक्षा पाई–पश्चात् फ्रांस सर्कारकी फौजमें भरती हुआ और लेफ्टिनेन्ट कर्नलके पदपर पहुंच कर टोलोनका किला फतेह किया–बादको ब्रिगेडियर जेनरलका ओहदा पाया और स० ई० १७९५ में फौजका कमान्डर बनादिया गया–इसके बाद फ्रांसदर्बारने इसको कमान्डर इनचीफ नियत करके इटली भेजा वहां पहुंच इसने ४ दफे आस्ट्रियाके बडे भारी दलका सामना थोडीसी फौजसे करके विजय प्राप्त की–इन लडाइयोंमें इटली, लोम्बार्डी का मुल्क + हुआ और बहुतसा धन दौलत इसके हाथ लगा स० ई० १७९७ में फ्रांसको आया और दूसरे साल मिश्रदेश विजय करनेको ३० हजार फौज लेकर चढाई और सुदर शाम तथा मिश्रको विजय किया यहां दिनों कायम हुआ १७

हुआ, निदान नेपोलियन फौजको छोड़ अकेला फ्रान्स आया और पञ्चायती राजको तोड़ सब राजकाज निज अधिकारमें करलिया स०ई०१८०२ में फ्रान्सवालाने सब भरके लिये इसको "कान्सल" नियत किया स०ई० १८०५में इसने शाहन्शाही ताज शिरपर रक्खा और सख्तपर बैठा थोड़ेही दिन पीछे जमनीपर चढ़ाई की और ३० हजार आस्ट्रिया वासियोंको कैद किया स०ई० १८०५ मे पुर्तगाल्या विजय किया और महाराजा रूसको परास्त किया तथा पुर्तगाल पर अधिकार जमाया स०ई०१८०७में स्पेन विजय किया। जिन२मुल्कोंको फतेहकरता गया उनपर अपने भाइ भतीजोंको बादशाह बनाता गया स०ई०१८१२में रूसके शहिर मास्को को भस्माकर बरबाद करदिया अंतमें रूस, आस्ट्रिया, प्रुशिया और इग्लैंडकी फौजोंने मिलकर इसपर चढ़ाइ की। नेपोलेयनको परास्तहो, तख्त छोड़ पेंशन ले,एलबाके टापूमें जाकर रहिना पड़ा परन्तु इससे खाली न बैठागया निदान एकही वर्ष पीछे फ्रान्समें आया बहुत लोग इसके इर्द गिर्द इक्ट्ठे होगये औरएक बड़ी सेना तैयार होगई यह खबर पाकर स०ई०१८१८ में इग्लैंड, जरमनी और रूसकी फौजोंने मिलकर इसे चारोंतरफसे घेरा और वाटरलू की प्रसिद्ध लड़ाइमें वोल्टिजली साहिब अंग्रेजीसेनापतिने इसको परास्त करके ड्यूक आफ वेलिङ्गटनका खिताब पाया और इस को पकड़कर सेन्ट हेलिनाके टापूमें कैद किया,जहां पेटमे फोड़ा निकलनेसे बीमार होकर स०ई०१८११ में मरगया फ्रान्सको लाश लाईगई और बड़ी धूम धामसे दफन हुई

नेलसन-(लार्ड होरेशियो नेलसन Lord Horatio Nelson) बृटिश गवनमेन्टकी समुद्री फौजका सव्वोच्च सेनापति था इसके बाप पाद्री थे १२वर्षकी उम्रमें इसने जहाजपर नौकरी की और निजयोग्यताके कारण मल्लाहसे ऐडकर एडमिरलके पदतक पहुंचा स्पेन तथा फ्रान्सके जहाजों के बेड़ेको इसने ट्राफलगारकी लड़ाईमें वीरतासहित नष्ट करके प्रसिद्धि पाई। इसी लड़ाइ मे नेलसनके गोली लगी थी, जिससे कुछ दिन बाद उसके प्राण नष्ट हुये। नेलसनकी वीरताके बदलेमें उसके भाई, बहिनोंको पार्लियामेंटने पेन्शन, इनाम और जायदाद दी नेलसन बड़ा साहसी, वीर, और स्वदेशभक्त विचारशील पुरुष था

स०ई० १७५८ में जन्म

स०ई० १८०५ में मृत्यु

नैपियर-(सर चार्लस नैपियर Sir Charles Napier) अंग्रेजी सेनामें बचपनहीसे भरती होगयेथे और पहिले पहिल आयर्लैंडके उपद्रव शान्ति करने में इनसे काम लियागया था। स०ई० १८०६ में कमान पाकर कोरन्नाकी लड़ाई

पर स्पेन भेजगये इस लड़ाईमें नेपियरके कई घाव लगे, स०ई० १८१ ... को उत्तरीय अफरीकामें भेजागया, यहां इन्होंने बड़े २ बहादुरी और ... काम किये स०ई० १८४१ में ब्रिटिश सेनाके कमान्डर इनचीफ नियत होकर हिंदोस्तानको आये स०ई०१८४३ में बड़ी वीरतासे मियानी की लड़ाईमें सिंधके अमीरोंको परास्त किया और सिंध विजय किया स० ई० १८४७ में इंग्लैंडको वापिस गये जब ब्रिटिश गवर्नमेंट और सिक्खोंमें लड़ाई शुरू हुई तो नेपियर साहिब हिंदोस्तान फिर भेजगये-स० ई० १८५० में दूसरी दफे इंग्लैंडको वापिस गये-इनका मिजाज चिड़चिड़ाथा

स० ई० १७८२ में लन्दनमें पैदा हुये

स० ई० १८५३ म मरे.

नौशेरवाँ- (ईरानका न्यायकारी राजा) कैकुबादका पुत्र स० ई० ४८. में जन्मा-इसका असली नाम कैखुसरो था, लेकिन मजागण इसमें बचपनहीसे बड़प्पनके लक्षण पाकर नौशेरवाँ नामसे पुकारतेथे-कैकुबादने एक दिन नौशेरवाँ से कहा "बेटा मैं तुममें सब शुभ लक्षण पाताहूं, लेकिन एक अवगुण है कि, तुम दूसरोंको तुच्छ समझते हो, देखो जिवन तुम्हारे विस्वासरहित होनेसे होते हैं उतने विस्वास सहित होनेसे नहीं" स०ई० ५३१ मे कैकुबादके बाद नौशेरवाँ ईरानका बादशाह हुआ थोडेही दिन पीछे रूमपर चढाई की, बहुतसा मुल्क निज अधिकारमे किया और शहन्शाह रूमसे खिराज वसूल किया.इसके बाद जीहूं नदीके उत्तर तातारके कई जिले तथा हिंदोस्तानके पश्चिमोत्तरसे बहुतसा मुल्क और अरबके भी अनेक सूबे स्वयश्यम मिलाये फिर नौशेरवांने अपनी राजधानीमें बनाउ सुधारम मन लगाया यहांतक कि हिंदोस्तानके राजे नौशेरवाँके प्रसन्न रखनेके लिये अपने २ देशके तोहफे भेजा करते थे अंतम स० ई० ५७९ की साल नौशेरवां शाह रूमसे एक लड़ाईमें हारकर भागा और बीमार होकर मरगया और हुरमुज उसका बेटा तख्तपर बैठा *नौशेरवां बड़ा न्यायकारी था-यह कहा करता था कि, तरुणावस्थामें मैंने* एक दिन देखा कि,एक मनुष्यने कुत्तेके ढेला मार कर उसकी टांग तोड़दी। मनुष्य थोड़ीही दूर गया था कि उसके एक घोड़ेने लात मारी घोडा थोड़ीही दूर गया था कि उसकी टांग एक सूराखमें फँसकर टूट गई उस दिनसे ईश्वरके भय कर मैं न्याय करनेपर कटिबद्ध हुआ जरदश्तके मतपर चलता था और विद्याका रसिक था इसका वज़ीर बुजुर्ग मेहर बड़ा चतुर था मैंद्नाय नामक ईरानी हकीमको इसीने हिंदूस्थान भेजकर "पंचतंत्र" नामक ग्रंथ मंगाया और उसका अनुवाद पारसी भाषामें कराया था बदयाय हिंदोस्तानसे शतरंज। खेल भी ईरान गयाथा नौशेरवाँका दूसरा नाम किसरा था

न्युकोमन-(New Coman), डाटमौथ (इंग्लैंड) मेरहिते थे और ताला प- नानेका पेशा करतेथे, पहिले पहिल इन्हींने साथ' सं० ई०१६८५ में एक धुवेंसे चलनेवाली कल बनाई थी, जो अबतक इनके नामसे प्रसिद्ध है पश्चात् इसी कल को जेम्सवाट साहिबने पूर्ण रीतिसे सुधारकर बनाया, जो आज कल्ह रेलकी गा ड़ियोंमें जोती जाती है (देखो जेम्सवाट)

सं० ई० १७१३ में मरे

न्युटन- (सर ऐसक न्युटन Sir Issac Newton) लिङ्कन शायर इंग्लैंड) में जन्मे बाप इनको छोटासा छोड़ मरे थे १२ वर्षकी उम्रमें माताने इनको ग्रेन्थमके महाविद्यालयमें पढ़नेको भर्ती कराया वहां रहिकर ये यंत्रकलामें अत्यंत निपुण हुये और फुर्सत पानेपर जलयंत्र तथा वायुयंत्र इत्यादि की रच- नामें नियुक्त रहतेथे इससे २ इन्होंने एक पवनचक्की तथा एक पवनघड़ी बनाई थी १८ वर्षकी उम्रमें न्युटन केम्ब्रिजके विश्वविद्यालयमें विशेष विद्यापढनार्थ गये, वहां रहिकर इन्होंने दर्याफ्त किया कि, मोटे कांचके टुकड़ेके छिद्रमें से बाहर निकले हुये प्रकाशका कैसा रूप होता है और कि, प्रत्येक प्रकाशमान पदार्थ के किरणोंमें वैसही ७ रङ्ग होतेहैं जैसे इंद्रधनुषमें। इन्होंने २२ वर्षकी उम्रमें बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की सं० ई० १६६५ में महामारीके फैलनेपर न्युटन केम्ब्रिजसे अपनी जन्मभूमिको लौट आये और एक दिन बागमें बैठे हुये फलोंको दरख्तोंपरसे पृथ्वीपर गिरते हुये देख पृथ्वीकी मध्याकर्षणशक्तिका रहस्यभेद क्रिया और यह सिद्धांत स्थिर किया कि, आकाशमें जितने ग्रह और पिंड हैं वे सब परस्परके आकर्ष णसे निराधार घूमते हैं सं०ई०१६६७में इन्होंने केम्ब्रिज आकर एम०ए० की परीक्षा पास की, और २ वर्ष पीछे केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें इनको गणितशास्त्रके प्रधान प्रोफेसरकी जगह मिलगई न्युटनमें इतने विद्वान् होते हुये भी गर्वका लेशमात्र न था और इसीलिये सबप्रिय थे

सं० ई० १७२७ मे ८५ वर्षकी उम्रमें २० दिन बीमार रहिकर मरे

नृसिंहदैवज्ञ-(प्रसिद्धगणक) इनके पिताका नाम कृष्णदैवज्ञ और छोटे भाईका नाम शिवदैवज्ञ था विष्णु, मल्लार, केशव और विश्वनाथ इनके चचाथे। दिवाकर, कमलाकर, गोपीनाथ और रङ्गराज इनके पुत्रथे नृसिंह दैवज्ञने गोदावरीतट गोल नामक ग्रामसे आकर काशीजीमें वेदान्तशास्त्र पढ़ा और पश्चात् वहीं मकान बनालिया और सूर्यसिद्धांत आदि कई ग्रंथोंकी टीका बनाई आज कल जितने ज्योतिष (फलित) ग्रंथ मिलतेहैं उनमेंसे अधिक इसी घरानेके लोगोंके बनाये हुये हैं नृसिंहजीका जन्म शाके १५०८ में हुआ

९

थी इसकी सुंदरताईके विषयमें इतनाही कहिना काफी है कि, "न भूतो न
ति" चित्तौड़दर्बारसे राघव नामक पंडित निकाले जानेपर दिल्ली गया
हाके बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजीको पद्मिनीके स्वरूपकी प्रशंसा सुना
त्तौड़पर चढ़ाई करनेको उद्यत किया निदान अल्लाउद्दीनने चित्तौरपर
की,पर जब अपनी अभिलाषा पूर्ण करनेका कोई उपाय न देखा तो रानासे
पूर्वक कहा कि, यदि आप रानी पद्मिनीके दर्शनमात्र मुझको करावें तो मैं
को लौट जाऊँ–राजपूतोंमें उस समय पर्दा न होनेके कारण रानाने इसमें
कुछ अप्रतिष्ठा नसमझ दूरसे रानी पद्मिनीका दर्शन करादिया और
ाहकी मीठी २ बातें सुनते हुये किलेके बाहर बादशाहके लशकरतक
गये बादशाहने लश्करमें पहुँच रानाको कैद करलिया और निर्लज्ज
कहिदिया कि, जबतक तुम रानी पद्मिनीको हमारे हवाले न करोगे
क नहीं छोडे जाओगे–रानी पद्मिनीने यह सुन कुटुम्बियोंसे सलाह की और
शाहसे कहिला भेजा कि, आप खाइयोंके इस पार लशकर उठालाइये
ब सहेलियों सहित आपसे शादीकरने आती हूं, निदान ८०० डोलियाँ
पार हुई, जिनमेंसे प्रत्येकके भीतर एक एक शस्त्रधारी रणधीर क्षत्री और
र२।२ रानाके मरने मारनेवाले सिपाही कहारोंके भेसमें लशकरको चलते
लशकरमें पहुंच रानी पद्मिनीको आध घंटेका अवकाश रानासे अन्तिम-
र मिलनेके लिये दियागया अल्लाउद्दीनकी खुशीका कुछ ठिकाना न था
ोंकि समझताथा कि, आध घंटे बाद रानी पद्मिनीसे शादी हो जायगी-
रंतु पलक मारतेमें कुछ और ही कौतुक दीख पड़ा राना और रानी अत्यंत
ीघ्रगामी घोड़ोंपर सवार हो चित्तौड़की तरफ उड़ चले और रणकरशस्त्री
पटरूप त्याग बादशाहके लशकरपर तलवारें लेकर टूट पड़े लशकरमें
दपड़ फैलगई, कोई किधर जान लेकर भागा और कोई किधर–बहुतसे मारे
ये, अल्लाउद्दीन अपनासा मुहँ लेकर दिल्ली चले आये, परंतु नाकोंसे कान कटानेकी
ही लाज थी निदान दूसरी दफे स० ई० १३०३ की साल फिर चित्तौड़पर
ढाई की जब राजपूतोंने देखा कि,म्लेच्छोंके टीडीदलके सामने कुछ पेश नहीं
ाती, तो वे अन्तिम जुहार करनेको तैय्यार होगये, जिसके मुताबिक एक बड़े
ोजातेहैं किलेके भीतर गुफामें प्रचंड अग्नि प्रज्वलित कीगई जिसमें सब क्षत्रा-
नेयें सुकुमार पद्मिनीसहित जलकर राख होगई दूसरे दिन राना और उसके
ाजपूतोंने केसरिया वस्त्र पहिन किलेके फाटक खोल दिये और वीरता सहित
लड़कर कटमरे पश्चात् राना हमीरसिंहदेवने चित्तौड़की गद्दीपर बैठकर ६४
वर्षके राज्यमें निजपूर्वजोंका राज्य फिर विजय किया

परमानन्ददास–(भाषाकवि–अष्टछाप) ये जातिके कान्यकुब्ज ब्राह्मण
श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे,अष्टछापमें इनकी गिन्ती है अष्टछापका विवरण विट्ठल

नायके सम्बन्धमें देखो ये पहिले स्वय स्वामीये लोगोंको चेला बनाताथ और परमानन्ददेव कहिलातेथे पीछे वल्लभाचार्यके शिष्य होकर परमानन्ददास नामसे हुये सूरदासकी तरह इन्होने भी बहुत पद बनायेथे, जिनके संग्रहका नाम। नाथने परमानन्दसागर रक्खाथा। इनके भक्त पदकों सुनकर ऐसे प्रेममग्न होगयेथे कि, कई दिनतक देहकी सुधि नहीं रहीथी इनका पर... यथा-महाप्रभु वल्लभाचार्य सूरदासादि अपने शिष्योंसहित एकसमय ... नपर कन्नौज गयेथे। "संस्कृतरत्नमाला" नामक ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआ है श्रीकृष्णचंद्रमें गोपियोंकी भांति प्रेम रखतेथे और इनके नेत्रोंसे ... रहताथा और रोमांच खड़े होते रहितेथे वि० सं० १५८० में विद्यमानथे

परशुराम- (प्रसिद्ध क्षत्रीकुलद्रोही) जमदग्निऋषिके पुत्र रेणुकाके ... दरसे थे-एकसमय जमदग्निने रेणुकापर क्रुद्ध होकर क्रमशः अपने चारों पुत्रों ... उसके मारडालनेको कहा, पर उन्होंने माताके वध करनेसे इनकार किया ... दान जमदग्निने उनको शापदिया कि, म्लेच्छ होजाओ। जब कनिष्ठ पुत्र परशुराम मजी मकानपर आये तो इन्होंने पिताकी आज्ञा पाय माताका शिर काटडाला-इस पर प्रसन्न होकर पिताने परशुरामसे कहा "मांगो" परशुरामने कहा कि, हमारी माताको जिलादीजिये निदान जमदग्निने तपोबलसे उनकी माताय। जि... दिया-मग्धदके राजा सहस्रबाहु क्षत्रीने जमदग्नि ऋषिके आश्रमपर आकर बड़ा अपमान कियाथा-परशुरामजीने सहस्रबाहुको परिवारसहित जानसे मारडाला और कइबार क्षत्रीविहीन पृथ्वीको किया और मुलक छीन २ कर ब्राह्मणों को सौंपा परंतु ब्राह्मणोंको ब्रह्मविद्याके प्रचार तथा साधनसे इतनी फुरसत न हां थी जो राजकाज संभालते-अन्तम महाराज रामचंद्रसे विवादमें तेजहत होकर परशुरामजी वनको तपस्या करने चलेगये-यह विवाद शिवधनुषके धनुष टूटनेपर हुआथा

परशुराम-(भाषा कवि) ब्रजके रहिनवाले ब्राह्मण थाय वि० सं० १६६० मे जन्मे इनके बनाये पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें बहुत हैं, य श्रीम... और हरव्यासजीके मतावर चलते थे बडे भक्त थ इनकी कविता ... और सुंदर है निम्नस्थ दोहे इन्हींके है -

दो०-माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार।
परशुराम इस जीवका, सगा सो सिरजनहार॥
दो०-राजा योगी अगिन जल, इनकी उलटी रीत।
डरतारहिय परशुराम, थोडी पालै प्रीत॥

१ "वैराग्य निर्णय" नामक इनके रचे ग्रंथमें संसारकी अनित्यताका वर्णन ... यह शिक्षा है कि पुनर्जन्मके दुःखोंसे बचनेके लिये धर्म कर्म करना चाहिये

पराशर–निरुक्तके अनुसार ये वासिष्ठ ऋषिके पुत्र थे और महाभारत तथा विष्णुपुराण के लेखानुसार वसिष्ठजी इनके दादा थे ये वैद्यक, ज्योतिष तथा धर्मशास्त्रोंमें निपुण थे व्यासजी पुराणोंके कर्ता इन्हींके वीर्यसे उत्पन्न हुये थे–पराशर मुनिके बनाये अनेक ग्रन्थ अबभी प्रचलितहैं।

परीक्षित्–(चंद्रवंशी राजा) अर्जुनके पौत्र तथा अभिमन्युके पुत्र थे अभिमन्युतो महाभारतके युद्धमें मारे गये थे, निदान पांडवोंने हिमालयको जाते समय परीक्षित् अपने पोतेको राज पाट सौंपा– इन्होंने भारतवर्षका एक छत्र राज्य किया अंतमें सांपके डसनेसे मरे शुकदेवजीने भागवतकी कथा प्रथम इन्हींको ७ दिनमें सुनाइ थी–दिल्लीमें परीक्षितपुरा इन्हींका बसायाहुआहै।

पांडु–चंद्रवंशी राजा विचित्रवीर्य्यके निर्वंश मरजानेपर उनकी विधवा रानी अम्बालिकामें व्यासजीसे गर्भाधान कराया गया, जिससे पांडु उत्पन्न हुये पांडु रोग होनेके कारण इनका रंग पीलाथा और इसीलिये इनका नाम पांडुपड़ा। बड़ेहोकर हस्तिनापुरकी गद्दीपर बैठे कुन्ती तथा माद्री इनकी२रानियें थीं जिनसे युधिष्ठिर आदि ५ पुत्र हुये जो पांडवनामसे प्रसिद्ध हैं कुछ कालतक राज्य करनेके पश्चात् राजा पांडुके हाथसे १ ब्राह्मण ऋषि मरगया, निदान राजा पांडु राज्य अपने बड़े भाइ धृतराष्ट्रको सौंप वनको तपस्या करने चलेगये एक दिन पश्चात् मारसेमें राजा पांडुने देह त्याग की मुनीश्वरोंने उनकी अन्त्येष्टि क्रिया कराई रानी माद्री सती होगई दूसरी रानी कुन्तीने युधिष्ठिर आदि पाँचों पुत्रोंका पालन पोषण किया

पाणिनि ऋषि–(संस्कृत व्याकरण के कर्ता) ये पणन ऋषिके वंशमें देवल मुनिके पौत्रथे माताका नाम दाक्षीथा पिङ्गलाचार्य इनके छोटे भाई थे और शालातुर(कंधार) के रहिनेवालेथे इनकासमय संस्कृतविद्वानोंके मतानुसार कलियुगके आरम्भ से ७०० या ८०० वर्ष पीछे है क्योंकि इन्होंने जनमेजय नामके सिद्ध करने के लिये "येन सश्" सूत्र बनायाहै राजा जन्मेजय पाश्चात्यपंडितोंके लेखानुसार कलियुगके आरम्भसे ६०० वर्ष पीछे हुये अगरेजी विद्वान् स० ई० से केवल ८०० वर्ष पहिले इनका होना निश्चय करतेहैं निम्न-रूप ग्रंथ इनके बनाये हुयेहैं–व्याकरण अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ। शिक्षा पाणिनिके छोटे भाई पिंगलकी बनाई हुई है, परन्तु व्याकरण से पहिले पढ़ाइ जानेके कारण पाणिनिजीके नामसे प्रसिद्ध है

पाणिनि द्वितीय (पाटलाविजय काव्यके कर्ता) स० इ० से प्राय ४०० वर्ष पहिले महाराज नन्द मगधनरेशके समयमें हुये कहित हैं कि, जब पटनामें महाराज नन्दका राज्य था तो वहां उपवर्ष नामक पंडित रहिते थे

जिनके व्याडि, वररुचि और पाणिनि ३ शिष्य थे इन पाणिनिजीने पाताल विजय नामक काव्य रचा है, जिसमें अत्यंत कठिन पदोंका प्रयोग किया गया है पाणिनि द्वितीयका गोदाम आकर भी कुछ समयतक रहनेका पता लगता है

पारखजी– (मथुराम द्वारकाधीशके मंदिरके बनवानेवाले) इनका जन्मनाम गोकुलदास था बोलनेमें चालनेका नाम राधामोहनथा, ये गुजराती वैश्यथे और ग्वालियरकी महारानी बैजाबाईके यहां रहिकर रत्नोंकी परीक्षा किया करतेथे और इसीलिये पारखजी कहिलातेथे । ये बड़े दयालु तथा धार्मिक होकर वल्लभसम्प्रदायके वैष्णव थे, धर्मात्मा महारानी बैजाबाईकी भी इनपर इसीसबब कृपाथी । सेंधियाकी फौज जब उज्जैनकी लूटका माल ग्वालियरमें लाई तो महारानी बैजाबाईने उसका अपने कोषमें नहीं रखने दिया क्योंकि उसमें ब्राह्मणों तथा देव मन्दिरोंका भी धनहोनेकी सम्भावनाथी और आज्ञादीकि, पारखजी इसको ब्रजमें लेजाकर पुण्यार्थ व्यय करदें । पारखजी करोड़ों रुपयेका माल लेकर मथुरा आये, साथमें उनके एक बड़भागी खण्डेलवाल वैश्य आया जिसका नाम मनीराम था और जो धर्मका दिगम्बर जैनथा । मथुरामें पारखजीने द्वारकाधीशका मंदिर बनवाया जो स०१०१८२५में तैयार हुआ, इसके खर्चके लिये २५ हजार रुपये वार्षिक आमदकी जायदाद लगाई । सिवाय एक छोटे भाईके पारखके कोई रिश्तेदार नहीं था लेकिन पारखजी भाईसे प्रीत न होकर अपने कारन्दा मित्र मनीराम तथा उनके ३ पुत्र लक्ष्मीचंद, राधाकृष्ण तथा गोविन्ददासके अधिक ममता । अन्तको पारखजीने अपनी समस्त सम्पत्तिका उत्तराधिकारी मनीरामके ज्येष्ठपुत्र लक्ष्मीचन्दको बनादिया । मनीराम जब अपनी जन्मभूमि जयपुरसे आये थे तब पासमें धेलेको लोटातक पास नहीं था, अब इन्हींका पुत्र करोड़ा रुपयेकी सम्पत्तिका मालिक होगया वर्तमान इनको सेठ कहते हैं । अंतमें पारखजीको दस्तोंकी बीमारी हुई और सिधारे । सामुनी इनकी जमुनाबाग मथुरामें देखने लायक बनी हुई है । पारखजीका शरीर स्थूल था, दस्तोंके कारण अन्तमें शक्ति इतनी घटगई थी कि, बिना किसीके सहारे करवटभी नहीं लेसकते थे । ब्रजमें अबतक यह कहावत प्रसिद्ध है

लालाबाबू मरगये घोड़ा दोष लगाय ।
पारखके कीड़ा पड़े विधिकी यही दिखाय ॥

पार्श्वनाथ(जैनियोंके २३ वें तीर्थंकर) ये वेदमें विश्वास नहीं रखते थे, यज्ञकर्मको मिथ्या मानते थे- ईश्वरके बिना कर्मका फल बतलाते थे पूजा पाठका खण्डन करते थे गुरुओंका तथा तीर्थंकरादिके माननेका उपदेश

करते थे जैनधर्मकी अत्यंत उन्नति इनके उपदेशोंसे हुई जैनियोंके मंदिरोंमें इनकी नगी मूर्ति पुजती है स०ई०से प्राय ६००वर्ष पूर्व हुये

पिङ्गलाचार्य (पिङ्गलशास्त्रके रचयिता) पिङ्गलशास्त्र जिसको छंदशास्त्र भी कहिते हैं इन्हीका रचा हुआ है व्याकरणशिक्षाभी जो इनके बड़े भाई पाणिनि ऋषिके नामसे प्रसिद्ध है इन्हीकी बनाई हुई है इनका विशेष वृत्तान्त पाणिनि के सम्बंधमें देखो

पिथागोरस–(Pythogoras) इन्होंने यूनान तथा इटेलीम तत्त्वविज्ञान (साइन्स) और ब्रह्मज्ञान (फिलासोफी) की मूलरोपण की और यूरूपके अन्य मुल्कोंमें इन्हींकी देखा देखी इन विद्याओंका प्रचार हुआ यूनानस सैमोसटीपम एक सुहर खोदनेवालेके घर स० ई० से ५८० वर्ष पूर्व इनका जन्म हुआ पहिले इन्होंने मिश्रदेशमें शिक्षा पाई, पश्चात् एशियाके अनेक देश देशान्तरोंमें भ्रमण किया और हिंदोस्तानमें बहुत दिनोंतक रहिकर अनेक शास्त्र पढे। इस देशवासियोंने इनका नाम यवनाचार्य रक्खा था भारतवासियोंके १८ ज्योतिषसिद्धांतोमेंसे एक यवनाचार्यकृत है। ये गणितशास्त्रके पूर्णज्ञाता थे और रेखागणितके अनेक साध्य इन्होंने सिद्ध किये थे हिंदोस्तानसे छोड़कर पिथागोरस यूनान गये और थोड़ेही दिनोंबाद इटेलीमें जा बसे और पाठशाला जारी की ३०० से अधिक इनके शागिर्द हुये, जिनको अंतमें १ बिरादरीही पृथक् बनगई थी पिथागोरसका रहिन सहिन और धर्मसम्बंधी विचार हिंदुओंकेसे थे मांस नहीं खाते थे और आवागमनका मानते थे अपने अनेक पूर्वजन्मोंका हाल इन्हें याद था इन्हें कयास भी खूब करते थे और ज्योतिष तथा सङ्गीतशास्त्रके पूरे विद्वान्थे, इनके मतानुसार संसारचक्रका बिन्दु सूर्य है और पृथ्वी तथा अन्यग्रह इनके उसके चारों तरफ घूमते हैं इनकी रची ५० पुस्तकें अबलुप्त होगई हैं अन्तमें शत्रुओंने इनको अनेक चलों सहित एक मकानमें बंद करके आग लगादिया स० ई० से ५०० वर्ष पूर्व ८० वर्षकी उम्रमें जलकर मरे. फीथागोरस भी इन्हींको कहिते हैं

पीटरदीग्रेट–(Peter the Great) यह बड़ा परिश्रमी,विचारशील, प्रतापी और देशहितैषी मुल्क रूसका बादशाह हुआहै और इसी कारण पीटर दि ग्रेट अर्थात् महान् पीटर इसको कहिते हैं इसका बाप अलेग्जडर स० ई० १६७८ इसको ५ वर्षका छोड़कर मरगया अनेक झगड़ाके बाद पीटर १०वर्षकी उम्रमें तख्तपर बैठा–उस समय रूसका राज्य इतना बड़ा न था और बिलकुल उजाड़था, प्रजागण असभ्यथे और राज्यके अनेक विभाग नियमबद्ध न थे–पीटरने तरुण हो सुधारकी ओर ध्यान दिया, निदान उसने प्रुशिया, हालैण्ड, इटेली,

जिनके व्याडि, वररुचि और पाणिनि ये शिष्य थे इन पाणिनिजीने पाताल विजय नामक काव्य रचा है, जिसमें अत्यंत कठिन पदोंका प्रयोग किया गया है पाणिनि द्वितीयका गौडामें आकर भी कुछ समयतक रहिनेका पता लगता है

पारखजी– (मथुरामें द्वारकाधीशके मंदिरके बनवानेवाले) इनका जन्मनाम गोकुलदास था, बोल्नेमें चालनेका नाम राधामोहनथा, ये गुजराती वैश्यथे और ग्वालियरकी महारानी बैजाबाईके यहां रहिकर रत्नोंकी परीक्षा किया करतेथे और इसीलिये पारखजी कहिलातेथे। ये बड़े दयालु तथा धार्मिक होकर वल्लभसम्प्रदायके वैष्णव थे, धर्मात्मा महारानी बैजाबाईकी भी इनपर इसीकारण कृपाथी। साधियाकी फौज जब उज्जैनकी लूटका माल ग्वालियरमें लाई तो महारानी बैजाबाईने उसका अपने कोषमें नहीं रखने दिया क्योंकि उसमें ब्राह्मण तथा देव मन्दिरोंका भी धनहोनेकी सम्भावनाथी और आज्ञादीकि, पारखजी इसको ब्रजमें लेजाकर पुण्यार्थ खर्च करद्। पारखजी करोड़ों रुपयेका माल लेकर मथुरा आये, साथमें उनके केवल एक बड़भागी खण्डेलवाल वैश्य आया जिसका नाम मनीराम था और जो धर्मका दिगम्बरी जैनथा। मथुरामें पारखजीने द्वारकाधीशका मंदिर बनवाया जो स०१०१८२५में तैयार हुआ, इसके खर्चके लिये २५ हजार रुपये वार्षिक आयकी जायदाद लगाई। सिवाय एक छोटे भाईके पारखके कोई रिश्तेदार नहीं था लेकिन पारखजी भाईसे मेल न होकर अपने वफादार मित्र मनीराम तथा उनके ३ पुत्र लक्ष्मीचंद, राधाकृष्ण तथा गोविन्दासमे अधिक प्रेमथा। अन्तको पारखजीने अपनी समस्त सम्पत्तिका उत्तराधिकारी मनीरामके जेष्ठपुत्र लक्ष्मीचंदको बनालिया। मनीराम जब अपनी जन्मभूमि जयपुरसे आये थे तो पानी पीनेको लोटातक पास नहीं था, अब इन्हींका पुत्र करोड़ा रुपयेकी सम्पत्तिका मालिक होगया, यह सेठ इसके वंशज हैं। अंतमें पारखजीको दस्तोंकी बीमारी हुई और सिधारे। इनकी जमुनाबाग मथुरामें देखने लायक बनी हुई है। पारखजीका शरीर स्थूल था, दस्तोंके कारण अन्तमें शक्ति इतनी घटगई थी कि, बिना सिर्ढीका छाता पकड़े प्रबटमी नहीं टेसगते थे। ब्रजमें अबतक यह कहिन मशहूर है

एकपापु भरगये पांड़ा दोष लगाय।
पारखपे कीरा पड़ विधिका भला विचाय॥

पार्श्वनाथ(जैनियोंके २३ व तीर्थंकर) ये यज्ञमें विश्वास नहीं रखते थे। यज्ञकर्मको मिथ्या मानते थे ईश्वरके बिना जगतका एक बतलाते थे। पूजा पाठका खंडन करते थे गुरुओंका तथा तीर्थंकरादिके माननेका उपदेश

कर कहा कि तनम प्राणरहिते ऐसा कदापि नहीं होने दगे यह सुनतेही राजाके प्राण मुक्त होगये निम्नस्थ सोरठा मेवाडम अबलों प्रसिद्ध है,

सोरठा–हिंदूपति परताप, पति राखी हिंदुवानकी।
सहे विपत संताप, सत्यशपथकर आपनी॥

प्रतापसिंह–(महाराजाप्रतापसिंह, इन्द्र महेंद्र बहादुर, जी सी यस आई कश्मीर व जम्बूनरेश) महाराज रणबीरसिंह, जी सी यस आई के घर ई १८५० म जन्मे पिताके परमधामको सिधारनेपर स ई १८८५ में कश्मीकी गद्दीपर बैठे, उस समय राजकाजकी दशा अच्छी न थी निदान आपने ५ वर्षके लियेश्सदारोंकी कौन्सल सहित जो ब्रिटिश गवनमेन्टकी तरफसे स्थापन की गई थी, राज्य करना स्वीकार किया-इस कौंसलने अनेक सुप्रबन्ध किये-फेर तबसे महाराजा साहिब बिना किसी मददके प्रशंसनीय राजप्रबन्ध कर रहे है-अपने पूर्वजोंके सनातन धर्मपर आरूढ हैं-पंडित विद्वानोंका सत्कार करते है और प्रजापालक हैं। रियासतका विस्तार ७९७८४ वर्ग मील है और सालाना आमदनी आय ९० हजार पौंडकी है-८००० फौज और३८८ तोपें हैं, महाराजकी सलामी तोपके २१ फैरोंकी है। पंजाबकेसरी महाराज रणजीतसिंहके घरानेसे पंजाब फतेह होनेके बाद स ई १८४६मे ब्रिटिशगवनमेंटने आपके दादेसरदार गुलाबसिंहको जो खाल्सा फौजके मुख्य अफसर थे,कश्मीर व जम्बूका राज्य सौंपा था। महाराज गुलाबसिंहजीके पूर्वजभी कश्मीरके राजा थे परन्तु कुछ कालसे राज्य छिन गयाथा-कश्मीरकी तारीफमें किसी फार्सी कवीश्वरने कहा है कि, पृथ्वीपर साक्षात वैकुंठ है-कश्मीरके शाल दुशाले और मेवे प्रसिद्ध है और वहांके मनुष्य खासकर कश्मीरी पंडितोंकी स्त्रियाँ अत्यन्त सुन्दरी हैं

प्रतापसिंह–(महाराजा सर कनल प्रतापसिंह,जी सी यस आई इडरनरेश)ये जोधपुरनरेश महाराजा जसवंतसिंह, जी सी यस आइ के छोटे भाई है। महाराज तख्तसिंहके मरनेपर स० ई० १८७३ म महाराज जसवंतसिंहजी जोधपुरकी गद्दीपर बैठे और महाराज प्रतापसिंहजी मंत्रीके पदपर नियुक्त हुये। आपके कामसे ब्रिटिश गवर्नमेन्ट तथा महाराज जसवंतसिंहजी खुब प्रसन्न रहे ब्रिटिश गवनमेंटने आपको मंत्रीके पदपर रहतेही राजोंकी समान जी० सी० यस० आइ० की पदवी प्रदान की थी और महाराजा जसवंतसिंहजीने अपने बराबर महाराजा का खिताब आपको दिया था ब्रिटिशसेनाके आप अवैतनिक कर्नल हैं तीराकी चढाईपर, चितरालकी लड़ाईपर तथा चीनके युद्धपर आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मददके लिये जोधपुरकी सेना लेजाकर अपनी वीरता और साहसका पूर्ण परिचय दिया था श्रीमान् केसरीसिंहकी मृत्युसे इडरकी गद्दी खाली होनेपर

था तथा गुजरात पंजाब इत्यादिके राजोंको पराभव करके उनके मरग आधिपत्य स्वीकार कराया था पृथ्वीराजके वंशजोंने इधर उधर जाकर और १ राज्य स्थापन करलियेथे जिनकी सन्तति अबतक सिरोही, नजौर इत्यादिमें राज करती है। महाराज पृथ्वीराजका मंत्री चन्दबरदाई बड़ा वीर वफादार था, उसने "पृथ्वीराज रासो" बृहत ग्रंथ रचकर अपनी स्वामिभक्तिका पूर्ण परिचय दिया है पृथ्वीराज महान् शूरवीर, धर्मी तथा पराक्रमी राजा थे, शब्दभेदी तीर मारते थे और हाथ उनके इतने लम्बे थे कि पृथ्वीसे छूतेथे

पृथुयश–(ज्योतिषी) षट्पञ्चाशिका ज्योतिष ग्रंथ इन्होंका बनाया हुआ है ये वराहमिहिरके पुत्रथे (देखो वराहमिहिर)

प्रजापति–ब्रह्माजीके १० मानसीपुत्रोंको प्रजापति कहते हैं। देव, मनुष्य इत्यादि सब उन्हींसे उत्पन्न हुये। प्रजापतियोंके नाम मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, दक्ष, भृगु और नारद हैं।

प्रतापसिंह राना–(चित्तौड़नरेश) इनके पिता उदयसिंहके वक्त मेवाड़राज्यका अधिकांश मुगलोंने छीन लियाथा यहांतक कि चित्तौड़ भी छूट गया था-वि० सं० १६२८ में राना उदयसिंहके मरनेपर प्रतापसिंहजी गद्दीपर बैठे लेकिन इनको अपने पूर्वजोंके मुल्क छिन जानेका बड़ा अफसोस था और अकबर बादशाहकी सेवा करना भी मंजूर नथा निदान इन्होंने मुगलोंसे लड़ाई जारी रक्खी-बादशाहने बहुत चाहा कि, अन्यराजोंकी तरह या नाममात्रको कुछ थोड़ीहीसा राना भी हुक्म उठावें, अर्थ भेज और खिलअत तथा मनसब लेवें परन्तु रानाने यह बात बिल्कुल नहीं मंजूरकी-लाचार हारकर वि० सं० १६३३ में अकबरने राजा मानसिंहको रानाके दमन करनेको भेजा हल्दीघाटपर रानाने मुकाबिला किया पर हारा और गोगूंदा तथा उदयपुर भी छूटगये और रानाको कुंभलमेरमें जाकर रहिना पड़ा-२ वर्ष पीछे कुंभलमेर भी छूटगया और तमाम मुल्क बादशाही थाने बैठगये-६ वर्षतक राना बड़ी विपत्तिमें रहा, मेवाड़के पहाड़ोंमें भी उसे रहिनेको जगह न मिली निदान आबूके पास एक पहाड़में छिपाहुआ सेना एकत्र करतारहा-फिर मौका पाकर रानाने चित्तौड़, मंडलगढ़, उदयपुर इत्यादि अपना सब मुल्क जीतलिया और बादशाही थानेदारोंको मारकर भगादिया। इसके पीछे १० वर्षतक न्यायपूर्वक राज्य करके वि० सं० १६५३ में रानाका देहपात हुआ-अंतसमय रानाका दम नहीं निकलता था तब सब सरदारोंके रायतने पूछा कि, आपके प्राण अटक रहे हैं? कहा कि मैंने निज पूर्वजोंके राज्यको छीननेमें बड़ा कष्ट भोगा है तो मुझ फिकर है कि मुसलमान फिर न छीन लें, पै कर अमरसिंह का तो मुझे विश्वास नहीं। तब सरदारोंने फिर इतना कष्ट उठावें-यह बात सुन सब सरदारोंने प्र

कर कहा कि तनम प्राणरहिते ऐसा कदापि नहीं होने देंगे यह सुनतेही राजाके प्राण मुक्त होगये निम्नस्थ सोरठा मेवाड़में अबलों प्रसिद्ध है,

सोरठा-हिंदूपति परताप, पति राखी हिंदुआनकी।
सहे विपत संताप, सत्यशपथकर आपनी॥

प्रतापसिंह-(महाराजाप्रतापसिंह, इन्द्र महेन्द्र बहादुर, जी सी यस आई कश्मीर व जम्बूनरेश) महाराज रणधीरसिंह, जी सी यस आई के घर स ई १८५० में जन्मे पिताके परमधामको सिधारनेपर स ई १८८५ में कश्मीरकी गद्दीपर बैठे, उस समय राजकाजकी दशा अच्छी न थी निदान आपने ५ वर्षके लिये सर्दारोंकी कौन्सल सहित जो ब्रिटिश गवनमेंटकी तरफसे स्थापन की गई थी, राज्य करना स्वीकार किया-इस कौंसलने अनेक सुप्रबन्ध किये-फिर तबसे महाराजा साहिब बिना किसी मददके प्रशंसनीय राजप्रबन्ध कर रहे है-अपने पूर्वजोंके सनातन धर्मपर आरूढ हैं-पंडित विद्वानोंका सत्कार करते है और प्रजापालक है। रियासतका विस्तार ७९७८४ वर्ग मील है और सालाना आमदनी प्राय ९० हजार पौंडकी है-८००० फौज और१८८ तोपें हैं, महाराजकी सलामी तोपके २१ फैरोंकी है। पंजाबकेसरी महाराज रणजीतसिंहके घरानेसे पंजाब फतेह होनेके बाद स इ १८४६में बृटिशगवनमेंटने आपके दादेसदार गुलाबसिंहको जो खालसा फौजके मुख्य अफसर थे,कश्मीर व जम्बूका राज्य सौंपा था। महाराज गुलाबसिंहजीसे पूर्वभी कश्मीरके राजा थे परन्तु कुछ कालसे राज्य छिन गयाथा-कश्मीरकी तारीफमें किसी फार्सी कवीश्वरने कहा है कि, पृथ्वीपर साक्षात बैकुंठ है-कश्मीरके शाल दुशाले और मेवे प्रसिद्ध हैं और यहाके मनुष्य खासकर कश्मीरी पंडितोंकी स्त्रियाँ अत्यन्त सुन्दरी हैं

प्रतापसिंह-(महाराजा सर पनल प्रतापसिंह,जी सी यस आई इडरनरेश)ये जोधपुरनरेश महाराजा जस्वंतसिंह,जी सी यस आई के छोटे भाई है। महाराज तख्तसिंहके मरनेपर स० ई० १८७३ मे महाराज जस्वंतसिंहजी जोधपुरकी गद्दीपर बैठे और महाराज प्रतापसिंहजी मंत्रीके पदपर नियुक्त हुये। आपके कामसे ब्रिटिश गवनमेन्ट तथा महाराज जस्वंतसिंहजी खूब प्रसन्न रहे ब्रिटिश गवनमेंटने आपको मंत्रीके पदपर रहितेही राजोंकी समान जी० सी० यस० आई० की पदवी प्रदान की थी और महाराजा जस्वंतसिंहजीने अपने बराबर महाराजा का खिताब आपको दिया था ब्रिटिशसेनाके आप अवैतनिक कर्नल हैं तीराकी चढाईपर, चितरालकी लड़ाईपर तथा चीनके युद्धपर आपने ब्रिटिश गवनमेंटकी मददके लिये जोधपुरकी सेना लेजाकर अपनी वीरता और साहसका पूर्ण परिचय दिया था श्रीमान् केसरीसिंहकी मृत्युसे इडरकी गद्दी खाली होनेपर

ब्रिटिश गवर्नमेंटने महाराज प्रतापसिंहको ईडरका राज्य सन् ई० १९०२ ई०
दिया आप सुशिक्षित सहज वीरपुरुषत्व और उदारता, न्यायपरता इत्या-
दि सर्वगुण सम्पन्न हैं आप सूर्यवंशी राठौर राजपूत हैं, सम्राट् एडवर्ड सप्तमके
राज्याभिषेकमें आप इंग्लैंड बुलाये गयेथे–

प्रवरसेन प्रथम–(काश्मीरनरेश) इन्होंने सेतुबंध नामक प्राकृत महाका-
व्य रचा है, जिसका नाम बाणभट्टकृत श्रीहर्षचरितके निम्न श्लोकमें आया–

श्लो०–कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥

सेतुबंधकी प्रदीप नाम्नी व्याख्यासे मालूम होताहै कि, प्रवरसेन भूमिके
निमित्त छत्रधारी राजा विक्रमादित्य हर्ष उज्जयिनी [illegible] आज्ञासे कवि कालिदा-
सने सेतुबंध काव्य रचा था हिरण्य तथा तोरमाण इनके २ पुत्र थे हिरण्य
इनके बाद काश्मीरकी गद्दीपर बैठा और ३० वर्ष राज्य करके निःसंतान मरा
प्रवरसेन द्वितीय गद्दीपर बैठा और छत्रधारी राजा हुआ ([illegible])

प्रवरसेन द्वितीय–(काश्मीरनरेश) प्रवरसेन प्रथमका पोता था यह हि-
रण्यके भाई तोरमाणका पुत्र था इसकी माता अञ्जना इक्ष्वाकुवंशी राजा धर्म-
सूर्यकी बेटी थी जब हिरण्य गद्दीपर बैठा तो तोरमाण उसका मंत्री बना और
तोरमाणने अपने नामके सिक्के चलवाये, इसलिये हिरण्यने उसको कैद करलिया
इसके कुछही महीने बाद तोरमाणकी स्त्री अञ्जनाने हिरण्यके भयसे एक कुम्हार-
के घरमें छिपकर प्रवरसेन नामक पुत्र जना–जब यह कई बरसका हुआ तो इसकी
विलक्षण बुद्धि और अपने पहिनावेकी रीतिसे मिलती सूरत देख राजा जयेन्द्रको
संदेह हुआ कि यह मेरा भांजा है जब पता लगाकर आप उस कुम्हारके घर
गया जहां प्रवरसेन रहता था तो अपनी बहिनका पाया–भाई बहिन मिलकर
बहुत रोये इसी अवसर हिरण्यने तोरमाणको कैदसे छोड़ दिया, पर यह
कैदसे निकलतेही मर गये– इस अवसर पर प्रवरसेनने माताके
सती होनेसे शोक और आप तीर्थाटनको चलागया कुछही दिनबाद
हिरण्यने भी अपुत्र मरकर काश्मीरका सिंहासन खाली करदिया उस
समय चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य दूसरा उज्जैनमें राज्यका निशान करने आये
दरबारमें आये हुए एक गरीब कवि मातृगुप्तको काश्मीरका राज्य देदिया जब
मातृगुप्त करीब ४ वर्ष राज्य करचुकाथा तो प्रवरसेन तीर्थसे लौटा और त्रिग-
(कोटकांगडा) इलाकेके देश जीतकर महाराज विक्रमके [illegible] आप यहां
[illegible] रहते चक्रवर्ती राजा विक्रमके मरनेके समाचार सुन और दूसरे
दिन मातृगुप्त राज छोड़कर [illegible] मालूम किया –इसने [illegible]

वरसेन कश्मीरकी गद्दीपर बैठा, सब राजोंको जीत चक्रवर्ती राजा हुआ और महाराज विक्रमके पुत्र शिलादित्य प्रतापशीलको जिसको शत्रुओंने राज रहित करदियाथा उज्जैनकी गद्दीपर बिठाया और निज पूर्वजोंका ३२ पुतलियोंका सिंहासन जिसको विक्रम (सम्भवत: विक्रमादित्यसकारी) कश्मीरसे उज्जैनमें ले आयाथा फिर कश्मीरमें पहुँचाया। प्रवरसेनने झेलम नदीके तीर छोटे बड़े सब मिलाकर ३६ लाख मह्लोंका एक विचित्र नगर बसाया था, जिसके बीचमें बड़े ऊँचे २ मकान तथा एक पहाड़ी और प्रवरेश्वर महादेवका मंदिरथा और नगरके दर्वाजोंपर श्रीआदि देवियोंके मंदिरथे। ६० वर्ष राज्य करनेके पश्चात् जब एक दिन राजा प्रवरसेन प्रवरेश्वर महादेवपर खड़ा रहाथा तो कलशमेंसे ताम्रपत्रपर लिखा हुआ यह श्लोक गिरा

श्लोक–कृतकृत्यं महद्दत्तं भोगा भुक्ता वयो गतम्।
किमन्यत्करणीय ते एहि गच्छ शिवालयम्॥

श्लोकका अर्थ समझ राजा राज त्याग कैलासको चलदिया। इसकी रानीका नाम रत्नप्रभाथा। इसका पुत्र युधिष्ठिर इसके बाद कश्मीरकी गद्दीपर बैठा। राजा प्रवरसेन द्वितीय रागद्वेषरहित था।

प्रवीणराय पातर (भाषाकवि) उड़छानरेश इंद्रजीतसिंहके यहांय पातर रहितीथी–कविता करनेमें परम चतुरथी–बादशाह अकबरने इसकी तारीफ सुन दर्बारमें हाजिर होनेका हुक्म दिया–जब हाजिर न हुई तो इंद्रजीतपर १ करोड़ रुपया जुर्माना किया। कवि केशवदासजीने जो इंद्रजीतके दर्बारमें रहितेथे आगरे आकर अकबरके मंत्री राजाबीरबलको एक सवैया सुनाया और सिफारिश कराके जुर्माना माफ करादिया (देखो केशवदास), परंतु प्रवीणके हाजिर होनेका हुक्म जारी रहा निदान प्रवीणने इंद्रजीतके साम्हने आकर निम्नस्थ कवित्त पढ़ा–

कवित्त–आइ हौं बूझन मंत्र तुम्हें प्रभु शाश्वतभे सब विधि मति गोइ।
प्राण तजौं कि भजौं सुलतानैं मैं न लजौं लाजि है सब कोइ॥
स्वारथ परमारथ स्वारथ चित्त बिचार कहौ प्रभु सोइ।
जामें रहै प्रभुकी प्रभुता और मोर पातिव्रत भंग न होई॥

इस कवित्तको सुनकर भी जानेहीकी आज्ञा देनी पड़ी जब प्रवीण अकबरके साम्हने लाइ गई तो अकबरने उससे कहा– "ऊँचे है सुर बश किये, सम है नर बश कीन" प्रवीणने उत्तरम कहा "अब पताल व शिवश करन ,उल्टट पयानो कीन।" इस प्रकारके अनेक प्रश्नोत्तर होनेके बाद प्रवीणके चित्तमें स्त्री होनेके कारण संदेह हुआ, निदान उसने अकबरसे कहा–

दो०–विनती राय प्रवीणकी, सुनियो शाह सुजान।
जूंठी पातर भखत हैं, बारी बैस और स्वान॥

यह सुन अकबरने प्रवीणको विदा करदिया—कवि केशवदासजीने प्रवीणके नामसे "कविप्रिया" ग्रंथ बहुत उत्तम रचा है और उसके शुरूमें प्रवीणकी बड़ी तारीफ की है ओड़छा (बुन्देलखण्ड) में वि० सं० १६४० में जन्मी

प्रभाकर—(मीमांसादर्शनके आचार्य) कुमारिलभट्टके प्रधान शिष्य इनका समय वि० सं० ६४७ से ७०७ तक निश्चय है जब कुमारिलभट्ट सेतुबन्ध रामेश्वरके दर्शनको गये थे तो दक्षिण देशमें किसी ग्रामके समीप मार्गमें बाल्यकालके बहुत बालकोंको खेलते देख पूछने लगे कि "गाँव यहाँसे कितनी दूर है"? यह सुन उनमेंसे एक लड़का हँसकर बोला कि, आप यह नहीं जानते कि बाल्यकालके बहुत लड़के गाँवसे कितने कोस दूर खेलनेको चले जाते हैं. कुमारिलजी लड़केका ऐसा वचन सुन विस्मित हुये और उसके मकानपर ठहिरे. कुछ देरबाद कुमारिलजीने भोजन बनानेके लिये उसी लड़केसे अग्नि मँगवाई—लड़केने चारों तरफ देखा जब अग्नि रखनेको कुछ न पाया तो हाथ पर रेता बिछा उसपर अग्नि रखलाया—ऐसी विलक्षण बुद्धि देख कुमारिलजीने उस लड़केको उसके बापसे माँगलिया—यह लड़का प्रभाकरही था जो कुमारिलजीसे पढ़कर सब शास्त्रोंका पारगामी होगया एक दिन कुमारिलजी स्वरचित कोई ग्रंथ शिष्योंको पढ़ारहे थे, उस समय उस ग्रंथकी "अत्र तु नोक्तं तत्रापि नोक्तमिति द्विरुक्तम्" पंक्तिको बहुत देर विचारा परंतु समझ न आई, तब तो कुमारिलजीने मध्याह्नका समय जान उस पाठको वहीं छोड़दिया यह देख प्रभाकरने उस पंक्तिके "अत्र तुना उक्तं तत्र अपिना उक्तम्" पदच्छेद लिख पुस्तकपर रखदिया जब कुमारिलजी फिर पढ़ानेके लिये पुस्तक देखने लगे तो पदच्छेदोंको देख तुरन्त अर्थ समझ लिया और यह भी निश्चय करलिया कि प्रभाकरके सिवाय इसप्रकार पदच्छेद कोई नहीं कर सकता। तबसे कुमारिलजीने प्रभाकरजीका नाम गुरु प्रसिद्ध करदिया प्रभाकर ऐसी विलक्षण बुद्धिके थे कि, इन्होंने मीमांसादर्शनके सम्पूर्ण अधिकरण कुमारिलजीसे विपरीत योजन किये हैं

प्रतापनारायण सिंह (आयोध्याके राजा प्रतापनारायण सिंह, के० सी० आइ० ई० आनरेरी) सन् ई० १८५५ में श्रीमान् नाना महाराज मानसिंहके यहाँ अयोध्याकी गद्दीपर बैठे। आप विद्वान् सौभाग्य धर्मात्मा, गुणग्राही तथा शिष्टाचारी पुरुष हैं। गवर्नमेंटने आई हुई आपको पुत्र मानकर लफ्टिनेन्ट गवर्नरकी व्यवस्थापक सभाका मेम्बर बनाया है और के० सी० आइ० ई० की उपाधिसे विभूषित किया है। रसकुसुमाकर पूर्ण महिमाका ग्रन्थ तथा राम भक्तोंके रसमय बनाया है और उसमें शृंगार रसकी, नायिकाभेद तथा हेर्ज़ानेज़ इत्यादिका उत्तम प्रबन्ध है। राजभवन इस रीतिसे,

ा हुआ है कि, उसका प्रत्येक भाग सबकी आखोंके सामने होनेपर भी जो जो उसमें गुप्त रखने लायक हैं उन्हें कोइ नहीं देख सकता। भवनके देखनेकी ई साधारणको इजाजत है, नित्यप्रति यात्रियोंकी भीड़ लगी रहिती है जो आप तिखे ऋषिसन्तानको "अवधनरेश" महा पवित्र नामसे विभूषित जान हुगण मासहित साष्टाङ्ग दंडवत करना अपना सौभाग्य समझतेहैं। भवनके भीतर रीतनीतिसे आपका बनवाया तथा सजाया हुआ श्रीराधाकृष्ण इत्यादि देवता ोंका मंदिर है जिसकी नियत समयपर झौंकी होती है और जहाँ बैठकर नित्यप्रति ाप पक्ष महायज्ञ करते हैं। झांकीके समय शृङ्गार विलक्षण होताहै दर्शकोंकेचित्त रमानन्दमें मग्न होजातेहैं और स्मरण होता है कि–"मिम मसाद्रा चरणी धरोह ोम मसाद्रा रुकमळा धरोहं"। आपके महिलके सामने मुसल्मानोंका एक प्राचीन ला कबरिस्तान था जो रास्ता रोककर यात्रियोंको बड़े कष्टका कारण होता था, ापने नया राजभवन बनवाते समय, किसीके बिना कान हिलाये हुये, बेधड़क सको खुदवाकर फिंकवा दिया और उसकी जगह सुंदर सड़क निकलवाकर सकी रोशनी तथा फुव्वारे इत्यादिका प्रबन्धकरके प्राचीन अयोध्या नगरीकी ोभा बढ़ाई और भारतको कृत्य २ किया। आपका आतङ्क असाधारण है, बिना ाज्ञा आपके सन्मुख कोइ नहीं बोलता है और सब लोग भय, मतिष्ठाकी दृष्टिसे ा मेमसे भी रिक्त नहीं है आपको देखत हैं। अयोध्या में नये घाटकी सड़कपर ी बगीचेके भीतर आपका बनवाया श्रीराधाकृष्णका एक छोटासा अत्यत मनो- र मंदिर है जो बिलकुल संगमरमरका है। आपके समयका अधिक भाग जापाठ तथा देवदर्शन करने और इलाकेके मामलातकी देख भाल रखनेमें बीतता । आप आमदनी तथा खर्चपर सदैव दृष्टि रखते हैं।

आपके रचे निम्नस्थ ग्रंथ देखने योग्य हैं–रसकुसुमाकर सचित्र (भाषासाहित्य, मांसदर्शादिका (मीमांसाविषय), द्विजदेवकृत शृङ्गारलतिकाका तिलक। १० ई० १९०३ म महाराज प्रतापकी उम्र प्राय ५० वर्षको मालूम होताहै, अभी क आपके कोइ पुत्र नहींहै। परमेश्वर आपको चिरायुकरे और पुत्रका सुख खलावे।

प्रतापसिंहसवाई–(जयपुरनरेश) ये सुप्रसिद्ध राजा जयसिंह सवाईके पुत्र थे। कविता अच्छी करतथे और वैद्यक शास्त्र पारंगतथे। अमृतसागर इन्हीं ा रचाहुआहै। स्नेहसंग्राम (सं०ई० १७९५) इत्यादि ग्रंथ भी इन्हींके रचेहुये हैं। ृपति "ब्रजनिधि" नामसे करतेथे। अलवरके राव इन्हींके समयमें जयपुर ज्य की आधीनता त्याग स्वाधीन हुये। सं०ई० १८०३ में सिधारे।

प्रिन्सेप–(जेम्सप्रिन्सेप–JamesPrinsep) युवावस्थामें इंग्लैंडसे िन्दोस्तान आकर बनारस में टकसालमें नौकर हुये और "स्केचेस–आफ

बनारस " नामक पुस्तक अङ्गरेजीमें लिखी स० ई० १८३२ में एशियाटिक . इटी कलकत्तेके दैनिक समाचार पत्रके सम्पादनका काम इनके सुपुर्द हु कुछ महीने पीछे एशियाटिक सुसाइटी कलकत्तेके मंत्रीका ओहदा इनको मि उक्त ओहदेपर रहिकर इन्होंने संस्कृतविद्याके अनेक प्राचीन तथा गुप्त ग्रन्थ खोजकिया और सिकंदर आजमसे लेकर अपने समयतकके सब बादशा सिक्के एकत्र किये स० ई० १८४० में ४० वर्षके होकर मरे.

प्रियादासनामा-(भक्तमालके टीकाकार) वृन्दावनके रहिनवाल महात्मा ब्राह्मण थे नाभाजीकी आज्ञासे भक्तमालकी टीका भाषा कवितोंमें ए वि० स० १७६९ की साल इन्होंने सम्पूर्ण किया

फतेहसिंह-(महाराना सर फतेहसिंहजी, जी सी एस आई मेवा रेश) स ई १८५० में जन्मे और महाराना सज्जनसिंहके बाद स० ई० १८ उदयपुरकी गद्दीपर विराजे। आपके समयमें राज्यमें सड़कें तथा नहिरें ब और स्कूल, छापाखाना, कचहिरी, जेल, सिपाहियोंकी बारक व बडी २ इमारतें बनवाई गई। सिर्फ़ोंपे छिये भी कई छापाखाने खाऐगये और डाक्टर नौकर रक्खेगये- आपकी बड़ही शादी हुई है जिससे यहां व शादी तथा गमीके खर्चोंके घटानेका श्रीमान् अपने राज्यमें उद्योग कर क्योंकि, मध्यमश्रेणीके मनुष्य इन खर्चोंके कारण बहुधा ऋणी हाजा महाराना फतेहसिंहजी बड़े विवेकी तथा न्यायकारी हैं। रहिन सहिन साधा शिकारका शौक है और प्रजागण श्रीमान्को प्यार करते हैं। ब्रिटिशगवर्नमें मेवाड़ राज्य की तरफसे २० हजार पौंड वार्षिक राजस्व दिया जाता है। इमस्दारीमें महारानाकी उठामी तोपके २१ फैरोंका है। सवार पैदल मि २१॥ हजार फौज रियासतमें है जिसमें भीलोंकीभी १ पल्टन शामिल नेपाल, प्रतापगढ, डूंगरपुर, बांसवाडा अलीराजपुर, और धरमपुर के महाराज, महाराना साहबके कुटुम्बी हैं-अकबर इत्यादि मु बादशाहके समयमें अन्य सब राजपूत राजाओंने बादशाहोंसे स करना स्वीकार किया था परंतु राना चित्तौड़न सत्तमें मान रहिन ऐसा करना स्वीकार न किया था। महाराना फतेहसिंहजी भी प्रजा प्रजाका विचार रखते हैं, "कुछ दिन हुये आपके इकलौते पुत्रको पक्षाघा जब अनेक उपाय करनेपर भी राजकुमारको आराम न हुआ तब सर्दारोंने राना साहबको सलाहदी कि मेवाडके किसी करामाती मुसल्मान फकीरको देकर कहा कि, राजकुमारको इसके हाथसे अवश्य आराम होजायगा, भाग्य है केवल इसकीतिश करेगा। जिसने स्पष्ट कह दिया कि, मुसल

छोड़ना तो हमारे वंशकी प्रतिष्ठाके विरुद्ध है" । महाराना फतेहसिंहजीका रानीके रहिते दूसरी शादी न करनेका दृढ मत है । १९ बड़े दर्जेके और १२ दर्जेके सर्दार श्रीमान्को राजस्व देते हैं । महाराना मेवाड़ श्रीरामचंद्रजीके वंशज सूर्य्यवंशी हैं, इस वंशमें होने वाले नरेश सदासे क्षत्री धर्मका पालन अपने वंशकी प्रतिष्ठाकी रक्षा करते आयेहैं और इसीलिये यह वंश हिंदो- भरके राज्यवंशोंसे अधिक प्रतिष्ठित समझाजाता है ।

फर्रुखसिअर–(मुगलसम्राट् दिल्ली) जहांदारशाहके मारे जानेके पीछे ई० १७१३ में दिल्लीकी गद्दीपर बैठा, इसके समयमें अजीतसिंह जोधपुर ने अपने राज्यकी सब मसजिदें गिरवा दी थीं और उनकी जगहपर र बनवा दिये थे फर्रुखसियरके दर्बारमें ईस्ट–इण्डिया–कम्पनीकी तरफसे जदूत भेजे गयेथे, जिन्मेंसे एक डाक्टर हैमिल्टन नामकने फर्रुखसियरको नरोगसे चङ्गा किया था जिसके बदलेमें कम्पनीको बंगालमें ३८ गांव- जमींदारी खरीद लेनेकी आज्ञा मिली और अंग्रेजी मालपर महिसूल माफ ा गया सिक्खोंके गुरु बंदासाहब इसीके वक्तमें मारेगये, ये बड़ा बेअकल इसके समयमें सदैव फिसादरहा जिससे सल्तनत तबाह हो चुकी थी- र्ष राज्य करनेके पीछे मारडाला गया

फातिमा–(बीबीफातिमा) मुसल्मानोंके पैगम्बर मुहम्मद साहिब की इक- ी बेटी थी प्राय: स०ई० ६०६ में मक्कामें पैदाहुई, मुहम्मद साहिबसे ६ महीने स०ई० ६३२ में मदीनामें सिधारी हजरत अलीसे इसका विवाह हुआ था न और हुसेन इसीके पुत्र थे

फाह्यान–(चीनीसन्त) ये चीनका रहनेवाला बौद्धसाधु प्राय:स०ई० ४००में पशियामें होताहुआ हिंदोस्थानआया पहिले काबुलकंधारमें ठहिरा और देखा बौद्ध मत खूब उन्नतिपर था पश्चात् पेशावरमें आया और बौद्धमतका एक बड़ा देखा पादको सिन्धुनदी पारकर मथुरा गया और देखा कि वहां उस समय जार बौद्ध साधु रहितेथे पश्चात् राजपूताना और मध्यहिंद गया और वहांके राजाओंको बौद्धमतानुगामी पाया फाह्यान लिखता है कि सबसब राज्योंमें पराधियोंको जिस्मानी सजाके बदले जुर्माना किया जाता था, फकदफके अप- ीका सीधा हाथ काटाजाता था, चांडालोंके सिवाय कोइ शिकार नहीं करता न खाता था,न बेचताथा, न सुअर,मुर्गे इत्यादि पालताथा,शराबकी भट्टी नाम भी कहीं न थी और बौद्धोंके स्तूप सब जगह बने हुए थे जिनके खर्चके लिये ो २ जायदादें मुकर्रर थीं, स्तूपोंमें रहिनेवाले या आकर ठहिरनेवाले साधुओं भोजन, वस्त्र, दूध, मठाई इत्यादि आवश्यक चीजें मिला करती थीं. ात फाह्यान कन्नौज, अयोध्या, गया, कपिलवस्तु, पाटलीपुत्र तथा अनेक और

राजधानियोंमें, जिनके अब नामतक मिटगये हैं विचरता फिरा–पाटलीपुत्र (पटना) में फाहानने १ वर्ष रहकर बौद्धमतकी अनेक धर्मपुस्तकोंका जो चीनमें नहीं मिलती थीं पालीसे चीनी भाषामें अनुवाद किया–इसके बाद एक व्यापारी जहाजपर सवार होकर फाहान १४ दिनमें सिंहलद्वीप पहुंचा–सिंहलद्वीपमें फाहानके लेखानुसार उस समय एक ४७९ फिट ऊंचा था तथा एक स्तूप भी था जिसमें ५ हजार बौद्धसाधु रहितेथे सिंहलद्वीपमें ठहरके फाहानने विनयपताका नामक बौद्धोंकी धर्मपुस्तककी एक प्रति लिखी–फाहान लिखताहै कि, पहिले सिंहलद्वीपमें कोई नहीं रहिता था, धीरे २ इधर उधरसे व्यापारीलोग आवसे और सिंहलद्वीप एक बड़ा राज्य बन गया–पश्चात् उपदेशकोंने हिंदोस्तानसे आकर उनको बौद्धमत ग्रहण कराया–स्वदेश छोड़े हुय कई वर्ष होगये थे, सो एक दिन सिंहलद्वीपके किसी मंदिरमें एक व्यापारीके चीनका बनाहुआ पंखा बुद्धकी २२ फिट ऊंची जमुरदकी मूर्तिको भेंट करते हुये देख फाहानको स्वदेशका स्मरण हो आया और उसके आंसू निकल आये निदान कुछेक दिनबाद यह एक व्यापारी जहाजपर सवार हो चीनको चल दिया–रास्तेमें तूफान आनेसे जहाजकी पदीमें छेद होगया और फाहानको महीनेके करीब, सुमात्रा तथा जावाके टापुओंमें पड़े रहिना पड़ा फाहानके लेखानुसार उक्त टापोंमें उस समय वैदिकमतका प्रचार था, और गणेश, देवी, शिव इत्यादिकी पूजा होतीथी पुनः एक व्यापारी जहाज पर सवार होकर जिसपर वैदिकमतानुगामी २०० मनुष्य और सवार थे फाहानने यात्रा की और ८२ दिनमें चीन पहुंचगया–उपरोक्त लेखसे प्रतीत होताहै कि, उन दिनों हिंदोस्तान और चीनके बीच खूब व्यापार होता था इस यात्राके वृत्तान्तमें फाहानने एक पुस्तक रची थी जो बड़ी रोचक है–फाहान जब हिंदोस्तान आयाथा तब बौद्धमत यहांपर उन्नतिके उच्च शिखरपर था, पर वैदिकमतभी बिल्कुल नष्ट नहीं होगया था–

फिर्दौसी–(फार्सी कवि) पूरा नाम इनका हकीम अबुलकासिमहसन फिर्दौसी था, और इनके बाप इसहाक, तूस (ईरान) के रहिनेवाले कृषीकार थे फिर्दौसीको शुरूहीसे पढ़ने लिखनेका बड़ा व्यसन था और कविता तारीफके एक करतेथे, इन्होंने सुलतानमहिमूद गजनवीके हुकमसे "शाहनामा" नामी फार्सी पुस्तक रची थी महिमूदने प्रतिशेर (दोहा) फिर्दौसीको १ अशर्फी देना कहा था, परंतु जब ३० वर्षबाद १२०००० शेरों (दोहा) का पुस्तक ग्रंथ रचकर फिर्दौसीने पेश किया तो महिमूद घबराया और देने दिलानेकी कुछ बात नकी–बहुत दिनोंबाद जब फिर्दौसीने याद दिलाई तब महिमूदने १२०००० रु० भेजे–फिर्दौसीने उनसे इन्कार किया और महिमूदकी निन्दा लिखी जिस

को देख महिमूदने १२०००० अशर्फियें भेजीं लेकिन् अफसोसकी बात है कि शाहिरके एक दर्वाजेसे तो महिमूदके सिपाही अशर्फियोंके तोड़ेलेकर घुसे और दूसरे दर्वाजेसे फिर्दौसीका जनाजा निकला–फिर्दौसीके कोइ बेटा था नहीं, निदान सिपाही अशर्फियें लेकर उसकी इकलौती बेटीके पास गये बेटीने लेनेसे इनकार करदिया–

फिर्दौसी स० ई० १०२० में ८० वर्षके होकर मरे

फिरिश्ता–(इतिहासकार) इसका असलीनाम मुहम्मदकासिम था इसके बाप मौलाना अलीहिंदुशाह, येराबादसे रहिनेवाले बड़े विद्वान् थे और इसको बचपनहीमें लेकर हिंदोस्तान चले आये थे और अहिमदनगर (दक्षिण) के नव्वाबके यहां पढानेपर नौकर हो गये थे, परंतु थोड़ेही समय पीछे मरगये थे। बड़े होकर फिरिश्ता नव्वाब बीजापुरके दर्बारमें गया और उन्हीं-के कहिनेसे उसने तारीख फिरिश्ताल़िखी–फिरिश्ता बीजापुरके नव्वाब इबराहीम आदिलशाह द्वितीयके दर्बारमें स० ई० १५८९ से १६१२ तक रहा तारीख फिरिश्तामें स० ई० ९७५ से १६०५ तकका हिंदुस्तानका इतिहास लिखा है–इस तवारीखका अङ्गरेजी अनुवाद डोसाहिबने किया है–

स० ई० १५५० में पैदा हुआ

स० ई० १६१२ मे मरा

फीरोजशाहतुगलक (सम्राट्‌दिल्ली) मुहम्मदतुगलक सम्राट्‌दिल्लीका चचेरा भाईथा–इसने स० ई० १३५१ से १३८८ तक दिल्लीके तख्तपर बादशाहत की–येबड़ा रहिमदिल था, फौज और प्रजा सब इससे प्रसन्नथी, अन्याय इसके समय में नहीं होने पाताथा–विद्वान् भी था, "फुतूहाते फीरोजशाही" नामक फार्सी पुस्तक इसीकी बनाई हुई है–इसके समयमें बहुतसा मुल्क फतेह हुआ था और इससे अधिक नम्र होनेके कारण बङ्गाल और दक्षिणके सूबे स्वाधीन होगये थे अमीरोंकी साजिशोंके कारण तथा सदैव रोगी रहिनेकी वजहसेभी इसको बड़ा कष्ट भोगना पड़ाथा, इसने बहुतसे पुल, सरायें, तालाब, पाठशाला, जमुनाकी नहिर, शफाखाने और मसजिदें बनवाईथीं पुरानी दिल्लीमें फीरोजाबादका किला इसीका बनवाया हुआहै स०ई० १३८७ में राजपाट अपने बेटेको सौंप विरिक्त होगयाथा परंतु बेटा निकम्मा निकला और थोड़ेही दिनबाद तख्तसे उतार दिया गया निदान इसको फिर तख्तपर बैठना पड़ा–स० ई० १३८८में ८० वर्षका होकर मरा–पुरानी दिल्लीमें इसकी कबर है

फ्रैंकलिन–देखो बेंजमिन फ्रैंकलिन–

बन्दीगुरु (बंदासाहिब)-इनके बाप रामदेव राजपूत, इलाके पूंछके रजा-री ग्रामके रहिनेवाले थे १६ वर्षकी उमरमें बंदीगुरु, जिनका नाम प्रथम लक्ष्मणदेव था किसी बैरागीके शिष्य होगये और बैरागी साधुओंकी मंडलीके साथ तीर्थ यात्रा करते फिरे. पश्चात् पञ्चवटीपर रहिकर बहुत दिनातक जप तप करते रहे फिर सिक्खोंके गुरु गोविंदसिंहजीके पास पहुँच गुरुदीक्षा ली और खालसापथ धारण करके बन्दा नाम पाया कुछ दिनबाद गुरुने इनको पंजाबकी तरफ मुसल्मानोंको नीचा करनेके लिये भेजा जहाँ २ बन्दासाहिब पहुँचे वहां २ सिक्ख लोग, जो अपने गुरुओंके दुःखोंपर आंसू बहा रहे थे, हथियार ले २ कर मददको आगये फिर तो बन्दासाहिबने लाखों मुसल्मान बूढ़े, बच्चे, औरत, मर्द कटवाडाले, लाशें जलवादीं, मसजिदें गिरवादीं, मुसल्मानोंके गाँवके गाँव फुंकवादिये और लुटवालिये, खुलासा यह है कि,मुसल्मानोंको नाक चने चबा दिये पंजाबके पहाड़ी राजे बंदा साहिबसे डरते थे, मुसल्मान इनके नामसे काँपते थे बन्दासाहिब घोड़े पर खूब सवार होते थे, शिकार खूब खेलते थे और करामाती साधू थे इनके २ विवाह हुये थे और इनका वंश अबतक वजीराबाद (पंजाब) में है फर्रुखसियर मुगलसम्राट दिल्लीने २० हजार फौज भेजकर इनको बड़े जोड़ तोड़से पकड़वा लिया और मरवाडाला परंतु इनको जो कुछ करना था करचुके थे

स० ई० १६५० में जन्मे-

रहे सच्चेमित्र, परमेश्वरसे डरनेवाले, सुन्दर स्वभावके और दानी थे शिल्पविद्या, कृषि और इमारतका इनको शोक था अंतमें पार्लियामेंटके मेम्बर होगये इनकी वक्तृता प्रभावशाली होतीथी कई ग्रंथभी अंग्रेजीमें इन्होंने रचेथे

स० ई० १७३० में जन्मे

स० ई० १७९७ में मरे.

वरदराज १ (तार्किकरक्षाके कर्ता)–सूक्ष्मविचारसे इनका समय वि० सं० १०४१ और ११४७ के बीच निर्णय किया जासकताहै।

वरदराज २ (लघुकौमुदीके रचयिता)–ये तैलङ्ग ब्राह्मण दक्षिणसे आकर काशीमें बसेथे। सिद्धांतकौमुदीके कर्ता भट्टोजीदीक्षित इनके विद्यागुरु थे। वि० सं० १६७६ और १७१६ के बीच इनका समय निर्णय किया जासकता है। सिद्धांतकौमुदीको बालकोंके लिये कठिन जान इन्होंने मध्यकौमुदी, लघुकौमुदी तथा सारकौमुदी रचीथीं।

वरदराज ३ (सामवेदीयकल्पसूत्रकी व्याख्याके कर्ता) ये कौशिक गोत्रि पं० वामनाचार्यके पुत्रथे। अब (स० ई० १९०३) से ५०० वर्ष पूर्व इनका समय प्रतीत होताहै।

वरदराज ४ (मीमांसक)–नैविवेकग्रंथकी टीका इन्होंने बनाई थी। इस टीकाकी एक प्रति बनारस संस्कृतकालिजमें ४०० वर्षसे कुछ अधिक पुरानी मिलतीहै। इनके गुरुका नाम सुदर्शनाचार्य और पिताका नाम रङ्गनाथ था।

वर्धमान गुरु–देखो महावीर स्वामी–

वर्नियर–(फ्रैंसिसवर्नियर–Francis Bernier) आंजू (फ्रांस) के रहिनेवाले प्रसिद्ध पथिक और डाक्टर हुये हैं ये हिंदोस्तान आकर १२ वर्षतक औरङ्गजेबके दर्बारमें रहे थे जिसमेंसे प्राय ८ वर्षतक औरङ्गजेबके राज्य वैद्य रहे अमीरदानिशमंदखांके साथ इन्होंने कश्मीरकी सेर की थी स्वदेश लौटकर इन्होंने अपनी यात्राके वृत्तांतमें एक पुस्तक रची

पेरिसमें स० ई० १६८८ में मरे

वररुचि–विक्रमहर्षके दर्बारके नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडितोंमें इनकी गणना है इन्होंने " प्राकृत व्याकरण " रचा था जिस में महाराष्ट्री, सूरसेनी, पिशाची तथा मगद्धी भाषाओंका, जो संस्कृतसे विगडकर बनी है, वर्णनहै

वराहमिहर (ज्योतिषी)–इनके बाप आदित्यदास सिंहलद्वीपी ब्राह्मण (मगध) पटनाके रहिनेवाले बड़े ज्योतिषी थे पितासे विद्यापढ वराहमिहरजी

आजीविकाके लिये विक्रमहर्षके दर्बारमें उज्जैन गये पावती आपभी जानते थे, विक्रमने इनकी प्रतिष्ठा की और दर्बारके नवरत्न नामक प्रसिद्ध पंडितोंमें इनको रक्खा। निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं--

पञ्चसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, बृहज्जातक, लघुजातक, योगयात्रा, विवाहपटल, समाससिद्धांत और होराशास्त्र पञ्चसिद्धांतिकाम वराह मिहरने निम्नस्थ ५ प्राचीनसिद्धांतोंके आशयको संग्रह किया है-- पौलिश सिद्धांत, रोमकसिद्धांत, वशिष्ठसिद्धांत, सूर्य्यसिद्धांत और पितामहसिद्धान्त। वराहमिहरकृत "बृहत्संहिता" में १०६ अध्याय हैं जिनमें सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, ग्रह, मेघ, वायु, भूकम्प, उल्कातारा, इन्द्रधनुष, बिजली, आँधी, वनस्पति, जीव जन्तु, अनेकधातु, जवाहरात और बाग लगाने तथा मूर्त्ति, मकान बनाने और खजानेका वर्णन है वराहमिहरने ज्योतिषशास्त्रके कई ग्रंथ प्राकृत तथा भाषाम भी रचेथे और उनमें केवल अनुभवसिद्धबातें लिखीथीं जिन्हें लोग भड्डली कहितेहैं आजकल भड्डली शब्द उन जोशियोंके लिये इस्तेमाल किया जाता है जो उपरोक्त ग्रंथोंके अनुसार फल बताते फिरते हैं वराह मिहराचार्यके पुत्र पं० पृथुयशा भी बड़े भारी ज्योतिषी थे (सो देखो)

स० ई० ५०५ में जन्मे और स० ई० ५८७ में मरे, अनेकोंकी सम्मति है कि १०० वर्ष जीकर स० ई० ६०५ म मरे थे

बलदेवजी (श्रीकृष्णचंद्रके ज्येष्ठ भ्राता) वसुदेवजीके पुत्र रोहिणीके उदरसे थे मथुराके राजा कंसके डरसे रोहिणीजी गोकुलम नन्दबाबाके घर रहिती थीं बलदेवजीका विवाह राजा रेवतकी कन्या रेवतीसे हुआथा जिससे २ पुत्र हुये बलदेवजी बड़े बलवान् थे हल तथा मूसल इनके हथियार थे बलरामजी सब लड़ाई झगड़ामें श्रीकृष्णजी के साथ रहे और श्रीकृष्णजीसे पहिलेही द्वारकामें परमधामको सिधारे.

बलभद्रमिश्र (ज्योतिषी) कन्नोजवासी दामोदरके पुत्र थे प्रसिद्ध ज्योतिषी। रामदेवज्ञ इनके गुरु थे ये बङ्गालके सूबेदार शाहशुजाके पास राजमहिल (बंगाल) मे रहा करते थे शाहशुजा दिल्लीके बादशाह शाहजहाँका पुत्र था "हायनरत्न" नामक ताजकग्रंथ वर्षफल विचारमें इन्होंने शाके १५६४ म रचाथा ज० शा० १५१७

बलभद्र-(भाषाकवि) ये प्रसिद्ध कवि केशवदास सनाढ्यब्राह्मणके भाई थे० सं० १६१० में विद्यमान थे-इनका बनाया नखशिख सब कवियोंकी चित्तोंम प्रमाणित है, बालकृष्णत्रिपाठी तथा काशीनाथ इनके दोनों पुत्रभी अच्छे कवि थे। विशेष वृत्तान्त इनका कवि केशवदासके सम्बंधमें देखो।

वल्लभाचार्यमहाप्रभु (गोकुलस्थ सम्प्रदाय प्रवर्त्तक) इन के पिता लक्ष्मणभट्ट तैलङ्ग ब्राह्मण थे और इनकी माताका नाम इल्लमगारू था। जब इनके माता पिता काशीको आरहे थे तो मिती वैशाख वदी ११ को वि० सं १५३५ की साल चम्पारन-छारनके पास चौरागाँवमें इनका जन्म हुआ। काशीमें ५ वर्ष की अवस्था में इन्होंने सुप्रसिद्ध पं० माधवाचार्यसे विद्याध्ययन किया। इनके दो भाई औरथे, बड़े रामकृष्ण और छोटे रामचंद्र, ये दोनों संस्कृतके अच्छे कवियें। पिताके देहांतके बाद वि० सं० १५४८ की साल १३ वर्षकी अवस्थामें इन्होंने दक्षिणकी ओर गमन किया और विजयनगरके राजा कृष्णदेवकी सभामें पहुंच शाङ्कर मतवालोंको शास्त्रार्थमें जीता। डाक्टर ग्रिअर्सन अनुमान करते हैं कि ये कृष्णदेव सम्भवतः कृष्णारायलू हैं जो स० ई० १५२० में राज्य करते थे। उस समय विष्णु स्वामीकी गद्दी खाली थी, तब महन्त आचार्योंने इन्हें उस गद्दीपर बैठाया और वल्लभाचार्य इनका नाम हुआ। इस दिग्विजयके पीछे इन्होंने काशीमें आकर यहांके पंडितोंको शास्त्रार्थमें जीता फिर ब्रजगये और गिरिराजपर श्रीनाथजीकी स्थापनाकरके सेवाकी वात्सल्यभावसे एक नवीनही प्रणाली निकाली। कुछ दिन पीछे औरंगजेबके उपद्रवके कारण श्रीनाथजीकी मूर्तिको मेवाडमें उठा लेगये जहां अब उनका बड़ा भारी वैभव है तथा लाखों रुपया वार्षिक भोगरागमें व्यय होताहै। इसके बाद महाप्रभुने तीन दफे भारत भ्रमण करके निज मतका प्रचार किया। भारतवर्षके प्रायः सब तीर्थों तथा देव स्थानोंमें महाप्रभुकी बैठक है। जहां २ बैठकर एक सप्ताहमें श्रीमद्भागवतका सम्पूर्ण पारायण किया है वहीं २ बैठक स्थापित हुई। ऐसी ८४ बैठके हैं। Catalogus Catalogorum के अनुसार इन्होंने ५२ संस्कृत ग्रंथ बनायेथे। भागवतपर सुबोधिनी तिलक, ब्रह्मसूत्रपर अणु भाष्य और जैमिनीय सूत्रपर भाष्य इनके बनाये हुये हैं। इनके मुख्य शिष्य ८४ थे जिनका वृत्तान्त इनके पौत्र गोस्वामी गोकुलनाथजीने "चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता" नामक ग्रंथमें लिखा है। इनमेंसे बहुतेरे हिंदीके प्रसिद्ध कविथे। सूरदास, परमानन्द कृष्णदास और चतुर्भुजदास तो ऐसे प्रसिद्ध हुये कि अष्टछापमें गिनेगये। इनकी स्त्रीका नाम लक्ष्मीबहूजीथा और इनके दो पुत्र थे गोस्वामीगोपीनाथजी और गोस्वामी विठ्ठल नाथजी। गोपीनाथजीका वंश नहीं चला। गोस्वामी विठ्ठलनाथजी बहुत प्रसिद्ध हुये (सो देखो)। महाप्रभुने मिती आषाढ वदी २ को वि० सं० १५८७ की साल काशीजीमें हनुमान घाटपर देहत्यागी। उस समय सन्यास लेलिया था और सशरीर गंगाजीमें अपने पुत्रोंको उपदेश करके प्रवेश किया। महाप्रभु भाषा कविताके बड़े उत्साहकथे परंतु स्वयं भाषाकविता नहीं करते थे। ब्रजवासियोंसे तथा ब्रज भूमिसे महाप्रभुको बड़ा प्रेम था, बहुधा कहा करते थे कि "ब्रजवासी वल्लभ सदा मेरे जीवन प्रान"।

वल्लभ रसिकजी-(भाषाकवि) ये स्वामी हरिदासजीके शिष्य थे और ब्रजमें रहतेथे। जन्म इनका स० ई० १६२४ में हुआ। " मौंझ " नामक ग्रंथमें इन्होंने राधाकृष्णका विहार वर्णन किया है।

वल्लभन्यायाचार्य-(न्यायलीलावतीके कर्त्ता) बनारसकालिज के मासिकपत्र " पंडित " में इनका समय स० ई० की ११ वीं तथा १४ वीं शता ब्दीके बीच निर्णय कियाहै।

बलि-(राजाबलि) पौराणिक कथानुसार ये वैरोचनके पुत्र थे-प्रल्हाद इनके पितामह थे और हिरण्यकश्यप प्रपितामह-ये दैत्यवंशोत्पन्न पाताल (अमेरिका) के राजाथे विष्णुने वामनरूप रखकर इनसे ३ पैग पृथ्वी मांगी थी-परन्तु तीनही पैगमें सब पृथ्वी मापली।

वशिष्ठऋषि-१० प्रजापतियों तथा सप्त ऋषियोंमें इनकी गणना है ऋग्वेदमें लिखाहै कि, ऋषि मित्रावरुणके वीर्यसे जो उर्वशी अप्सराको देखकर पतनहुआ वशिष्ठ तथा अगस्त्य ऋषि जन्मे थे-सूर्यवंशकी पुरोहिताई पीढ़ीतक इनके वशमें रही और इनकी सन्तति अनेक पीढ़ीतक वशिष्ठनामसे पुकारी जाती रही योगवाशिष्ठ ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआहै-ये राजा दशरथ तथा रामचंद्रमहाराजके समयमें मौजूद होकर पुरोहित के पदको मानते और यज्ञ कराया करते थे तथा मन्त्रीका भी काम देते थे। नन्दिनि गऊके पीछे इनसे और राजा विश्वामित्रसे लड़ाई हुई थी (देखो विश्वामित्र)-एकज्योतिष सिद्धांत इनका बनाया हुआहै और ऋग्वेदका सातवाँ मंडल इन्होंने प्रगट किया था-इनके गोत्रके ब्राह्मण अबभी बहुतेरे हैं-इन्होंने ऋग्वेदीय धर्मसूत्र भी रचेथे तपोबल द्वारा इन्होंने सब सृष्टि मानसी थी, ये त्रिकालदर्शी थे संसार इनके करतल पदार्थ की भांतिथा।

वसुदेव-(श्रीकृष्णके पिता) शूर नामक यदुवंशीके पुत्रथे-पांडवोंकी माता कुन्ती इनकी बहिन थी-इन्होंने कंसके चचा आहुककी ७ लड़कियोंसे, जिनमेंसे सबसे छोटी देवकीथी विवाह किया-देवकीके उदरसे श्रीकृष्ण जन्मे थे और दूसरी स्त्री रोहिणीके उदरसे बलदेवजीका जन्म हुआथा-इनका घर मथुरामें था परंतु श्रीकृष्णके द्वारकाको सिधारनेपर यहभी कुटुम्बसहित द्वारका चलेगये थे-वहीं इनका देहांत हुआ और ४ स्त्रिय इनके साथ सती हुई।

बहिरामगोर (ईरानका बादशाह) स० ई० ४२० में विद्यमान था-२१वर्ष राज्य करके एकदिन शिकारफो गये घोड़ासहित गढ़ेमें गिरकर मरगया-गोरस रके शिकारका इसको बड़ा शौक था इसीलिये बहिरामगोरनामसे मशहूर हुआ-

वाकपति (गौड़वध प्राकृत महाकाव्यके रचयिता) विक्रमकी ७ वें शताब्दीमें हुये थे यकन्नौजके राजा यशोवर्म्मनकी सभाके भलङ्कार थे-गौड़वध काव्यमें राजा यशोवर्म्मनहीके दिग्विजयका वर्णन है-

वाग्भट्ट (आयुर्वदकी अष्टाङ्गहृदय संहिताके निर्माणकर्ता)–" रसरत्न समुच्चय" वैद्यक ग्रंथभी इन्होंका बनायाहै इनकी बनाई अष्टाङ्गहृदयसंहितामें सूत्रस्थान आदि छ: स्थान और काय आदिवैद्यकके ८ अंगोंका वर्णन है पुरातत्त्ववेत्ता डाक्टर रायल साहिबने लिखाहै कि, भारतमें वाग्भट्टकी चिकित्सा सर्वोत्तम है और अरब देशके हकीमोंने यह विद्या इसीसे सीखीथी रायट आ नरेबिल एलफिन्सटन साहबने अपने सुविख्यात भारतवर्षके इतिहासमें लिखा है कि "भारतवर्षहीके वाग्भट्टसे यूनानी आदि यूरोपदेशवासियोंने हिकमत सीखीथी" वाग्भट्टकी विक्रमकी१२ वीं शताब्दीसे पहिले हुये क्योंकि इनकी रची वैद्यक संहिताके सबसे प्राचीन टीकाकार पं० हेमाद्रिये जो वि० सं० के १२ वें शतकमें हुये

वाचस्पति मिश्र (न्यायवार्तिक तात्पर्यके कर्ता)–ये वि० स० १०१२ में जीवितथे"खण्डनोद्धार" नामक ग्रंथ भी इन्हीं का रचा हुआ है जिसम श्रीहर्षकृत "खण्डनखण्डखाद्य" का समाधान किया है।

बाजीराव प्रथम–(द्वितीय पेश्वा) निजपिता बालाजी विश्वनाथके बाद स० ई० १७२० में पूनाकी गद्दीपर बैठे इन्होंने दक्षिणदेशवर्ती उस सब मुल्कको, जिससे चौथ वसूल करनेका अधिकार दिल्लीदरबारसे इनके पिताको दिया था, अपने राज्यमें पूर्ण रीतिसे मिला लिया और १५ वर्ष निरन्तर लड़कर स० ई० १७३६ में मालवेका सूबा तथा विन्ध्याचल पर्वतके उत्तरोत्तर चम्बल और नर्मदानदियोंके बीचका मुल्क अपने अधिकारमें करलिया स० ई० १७३९ में पेश्वाने पुर्तगालवालोंसे वैसीनका शहिर छीन लिया अवम पेश्वाने निजाम हैदराबादपर चढ़ाइकी पर सन्धिकरने पड़ी स० ई० १७४० में पेश्वा बाजीरावका देहांत हुआ–

बाजीराव २ (अन्तिम पेश्वा) यह रघुनाथराव पेश्वाके पुत्र थे और षष्टम पेश्वा माधवराव नारायणके आत्मघात करनेपर स० ई० १७९५ में पूनाकी गद्दी पर बैठे इतिहास प्रसिद्ध नाना फनवीस ब्राह्मण इनका वजीर था इनके समयमें हुल्कर आदि मरहठा सरदारोंने जो पेश्वाके आधीन होकर राजस्व दिया करते थे ब्यावह सर उठाया, निदान इन्होंने बृटिश गवनर्मेंटके साथ अहिद नामा करके २६ लाख रुपये सालाना अंग्रेजीफौजके खर्चके लिये देना स्वीकार किया और अंग्रेजोंने इनकी मदद करने तथा इनके शत्रुओंको परास्त करनेका वचन दिया हुल्कर, सेंधिया और भोंसला नामक मरहठा सर्दार मिलकर उक्त अहिदनामाके तोड़नेको कटिबद्धहुये–इसी वजहसे अंग्रेजों और मरहठोंमें युद्ध ठना जो स० ई० १८०३ से १८०४ तक जारी रहा और जिसका नतीजा यह हुआ कि, सेंधिया तथा भोंसला आदि मरहठा सर्दारोंको परास्त

होकर अपने २ मुल्कका अधिकांश अंग्रेजोंको देना पड़ा-इसके बाद कुछ समय तक सब झगड़े दबगये परंतु स० ई० १८१८ में पेशवा, हुल्कर और नागपुरके भोंसलाने पृथक २ बृटिश गवर्नमेंटसे फिर युद्ध ठाना पर परास्त हुये पेशवाने परास्त होकर बृटिश गवर्नमेंटकी शरणली, निदान उनका राज्य सूबे बंबईमें मिला लिया गया और उनको ८ लाखकी पेन्शन देकर कान्हपुरके समीप विठूरमें रहिनेका हुकम दिया गया जहां उन्होंने अपनी बाकी उम्र आरामसे काटी-नाना साहिब जिनका स० ई० १८५७ के गदरके बाद कुछ पता नहीं पेशवा बाजीरावके दत्तक पुत्र थे। "राज्यच्युत होनेपर पेशवा बाजीरावके पास वह भारी सेना तथा वीर मंडली नथी जो उनको सदा घेरे रहा करती थी परंतु वह विप्र मंडली साथथी जिसने उनके प्रचंड प्रतापका समय अपनी आंखोंसे देखा था और जो उनकी उदारताके सामने भूमण्डलके राजामहाराजाओंको कुछ नहीं समझतेथे। दूर २ से बड़े २ पंडित विद्वान आते थे और योग्यताके अनुसार पेशवासे पुरस्कृत होते थे, वेदपाठकी ध्वनिसे विठूर उनके समयमें भरपूर रहिता था"।

बाणभट्ट—(प्रसिद्ध उपन्यासकार) इनके बापका नाम चित्रभानु और माताका नाम राज्यदेवी था। भद्रनारायण ईशान इत्यादि इनके बालापनके मित्रथे। १४ वर्षकी उम्रमें इनके पिताका देहांत होगयाथा बड़े। होकर इन्होंने 'शिलादित्य हर्षवर्धन महाराज कन्नौजके दर्बारमें प्रतिष्ठा पाई। शिलादित्य हर्षवर्धन का राजकाल स० ई० ६१० से ६५० तक है इसीसे इनका समयभी निर्णय होसक्ता है। निम्नस्थ ग्रंथ इनके रचे हुये हैं-

रत्नावली, नागानन्दनाटक, कादम्बरी, हर्षचरित्र, चंडिकाशतक और पार्वतीपरिणय नाटक।

इन सब ग्रंथोंमें कादम्बरी बहुतही उत्तमहै उसके विषयमें विद्वान् लोग कहिते हैं कि "कादम्बरीरसज्ञेभ्य आहारोपि न रोचते" नलचम्पूके टीकाकार गुणविनय नामक जैनने कादम्बरीको 'मुष्टचाइया' नामसे लिखाहै-

सूर्यशतकके कर्ता पं० मयूर भट्टकी बेटी पं० बाणभट्टको विवाही थी। ये ससुर जमाई दोनों महाराज श्रीहर्षकी सभामेंथे (देखो मयूरभट्ट तथा श्रीहर्ष)। श्रीहर्षने बाणको कादम्बरी तथा श्रीहर्षचरित लिखनेके पुरस्कारमें "महाकवि चक्रचूड़ामणि" की उपाधि दीथी।

वात्सायन—पद्मपुराणमें इनका नाम अकसर आया है-आधुनिक तत्त्ववेत्ताओंके मतानुसार वात्सायन नामक ऋषि स०ई० ६००में विद्यमानथे जिनका दूसरा नाम मल्लनागथा वात्सायन ऋषिने कामसूत्र रचेथे-

बादरायण—देखो व्यास।

बापूदेव शास्त्री, पंडित महामहोपाध्याय, सी० आइ० ई० (गणितशास्त्र

पारगत)-इनके परदादे प० चिन्तामणिदेव परांजपे, कोंकणप्रदेशसे रत्नागिरि जिलेके वेलणेश्वर नामक ग्राममें आकर बसे थे। वेलणेश्वरसे कुछ दिनोंबाद गोदावरी तट अहिमदनगरके टोंका गाँवमें जा रहे थे। चिन्तामणिदेवके पुत्र सदाशिवदेव हुये जिनके पुत्र सीतारामदेवके घर सत्यभामाके उदरसे स० ई० १८१९ की साल नृसिंहदेव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका उल्लापन नाम बापूदेव शास्त्री है। पं०सीतारामदेव अच्छे विद्वान्थे और लेन देन तथा अन्यान्य व्यापार करनेके निमित्त कभी पूना और कभी नागपुरमें रहते थे। इनके ३ पुत्र थे जिनमें बापूदेव सबसे छोटे थे। १६ वर्षकी उमरतक बापूदेवको अष्टाध्याई, अमरकोष, सिद्धांतकौमुदी, पिंगलसूत्र, ऋग्वेद, शिक्षा तथा रघुवंश पढ़ाया गया था जिससे व्युत्पत्तिज्ञान वास्तवमें इनको अच्छा होगया था। बादको ये पूनाकी महाराष्ट्री पाठशालामें गणित पढ़नेके लिये गये, गणितमें इनका खूब मन लगा, गुरुकी सब विद्या थोड़ेही दिनोंमें हरली। पश्चात् ये पिताके साथ नागपुरको चले आये और पं० ढुंढिराज मिश्रसे भास्करकृत लीलावती तथा बीजगणित पढने लगे। फिरतो इनको गणितशास्त्रका व्यसन लगगयाथा अहिर-निश उसीमें लवलीन रहिते थे। स० ई० १८४० में सीहोरके पोलीटिकेल एजेन्ट विल्किन्सन साहबने इनकी ख्याति सुनी और परीक्षा करनेके बाद सीहोरकी पाठशालामें ज्यक्ति गणित पढ़ानेकी २०) रु० मासिककी जगह इनको दी और हुक्म दिया कि, सिद्धांती पंडित सेवारामजीसे सिद्धांत शिरोमणि पढ़ाकरो। हररोज तीसरे पहिरको साहबभी खुद इनसे रेखागणित तथा पदार्थ विज्ञान पढ़ाया करते थे। इस प्रकार थोड़ेमें इनकी खूब विद्योन्नति हुई। स० ई० १८४२ में विल्किन्सन साहबने सिफारिश करके बनारस संस्कृत कालिजमें मे गुरुल फिलासोफी तथा गणितका प्रोफेसर इनको करादिया। बनारसमें आकर इन्होंने अंग्रेजी पढ़ी और दामोदरशास्त्रीसे षटदर्शनकी शिक्षापाई। स० ई० १८५० में मैकलौड साहब बनारसके कलेक्टरकी आज्ञानुसार इन्होंने हिंदी बीजगणित रचकर लोकलगवर्नमेंटसे दोहजार रुपये इनाम पाया, इसी बीज-गणितको जब दूसरी दफे छपवाया तौ म्यूरसाहब लफ्टिनेन्ट गवमरने १ हजार रुपया तथा १ दोशाला इनाम दिया। लन्दनकी रायल एशियाटिक सुसायटी, बंगालकी एशियाटिक सुसायटी और कलकत्ता तथा प्रयागके विश्वविद्याल याने इनको अपनी २ सभाओंका मेम्बर नियत किया था। बृटिशगवर्नमेंटने अपूर्वविद्याके पुरस्कारमें इनको महामहोपाध्याय तथा सी० आई० ई० की उपा धियें दी थीं। वि० सं० १९३५ के साल काशीके सब लोगोंने सभाकरके इनको अभिनन्दनपत्र दिया था जिससे प्रतीत होता है कि, जैसी प्रतिष्ठा इनकी सर्कारमें थी वैसेही लोकसभामें भी आदर था। स० ई० १८७३ म चन्द्र तथा सूर्य ग्रहणका शुद्ध गणित करके इन्होंने महाराजा काश्मीरके पास भेजा था जो

ठीक यहींसे मिला, महाराजने प्रसन्न होकर१हजार रुपये तथा५०० रु० का एक दोशाला इनाममें दिया । वि० सं० १९११ से काशी नरेशकी आज्ञानुसार प्रति वर्ष पञ्चाङ्ग बनाकर१००रु० इनाम पाया करतेथे।काशीकी पंचकोशी यात्रामें कई वर्षसे गड़बड़ थी, लोग भिन्न २ मार्गोंसे यात्रा करने लगे थे, एवं काशी नरेश तथा इञ्जिनियर साहबकी आज्ञासे यंत्रादिद्वारा इन्होंने शुद्ध मार्ग निर्णय किया । सं० ई० १८५८ में इन्होंने भास्कराचार्यकृत सिद्धांत शिरोमणिके कतिपय उदाहरणोंको चलनकलनसे उत्पन्न कर सिद्ध किया था कि, भारतके प्राचीन लोग चलनकलनसे भी खूब वाकिफथे।सं०ई०१८६१में बंगाल एशियाटिक सुसाइटीकी " बिबलीओथीकाइन्डीका " नामक ग्रंथमालामें इन्होंने "सूर्यसिद्धांत सोपपत्ति तथा सटिप्पण" छपवाया था । सं० ई० १८८९ में १०० रु० मासिककी पेन्शनली और १४ महीनेबाद ७ जून सं० ई० १८९० को परलोक गामी हुये । ३ स्त्रियोंके निस्सन्तान मरनेपर इन्होंने चौथा विवाह किया था जिससे दो पुत्र और१कन्या है।पं०बापूदेवशास्त्री तकके बड़े पाबन्द थे,शरीर वृद्धावस्थातक दृढ रहा,प्रात ३बजेका गंगास्नान मरणतक नहीं छोड़ा।वे स्वभावके सीधे,अहंकार का स्पर्शभी उनमें नहीं था और अपनेको यहांतक तुच्छ जाना करतेथे कि बातचीतमें विद्यार्थियों तकसे आप कहकर बोलतेथे । परपर भी विद्यार्थियोंको पढ़ाते रहते थे, पं० महामहोपाध्याय सुधाकर दुबे, पं०चन्द्रदेव पांड्या, विनायक शास्त्री इत्यादि काशीके वर्त्तमान विद्वान् आपहीके शिष्य हैं । एक दिन विनोदमें आपने एक यंत्र निर्माण कियाथा और उसका नाम अतुल्ययन्त्र रक्खा था निम्नलिखित पद्यमें उक्तयंत्रका उपयोग दिखाया है-

दिनमिति यथाभीष्टे काले नतं च समुन्नतं । निरयणतनुं स्वांशां भानोश्चाप-मदिग्वलयान् । सपदि नरभाप्रेक्षामाभावतोविनयोपलम् । तदिदमतुलं यंत्रं कार्यं जयत्यतिशं स्फुटम् ।

निम्नस्थ ग्रंथ बापूदेव कृत हैं- विचित्र प्रश्न संग्रह, तत्त्वविवेक परीक्षा ज्योतिषाचार्याशयवर्णन, सायनवाद, फलित विचार और मानमंदिर वर्णन ।

बापूदेव शा० की जं० कुं०



बाबरशाह–(हिंदोस्तानमें मुगल राज्यके संस्थापक) इन्होंने सि०सं०१५५० में फरगाना(मध्यएशिया)का राज्य अपने बाप उमरशेख मिर्जासे पाया। इसके बाद ११वर्ष पर्य्यंत तुर्किस्तानमें अपने सपिंडियों तथा उजबक जातिके सर्दारोंसे इनका झगडारहा। अंतमें इनके पैर वहांसे उखडगये और ये भागकर काबुलमें आये वहां कुछ दिन ठहिरकर इन्होंने फौज एकत्र की और अपने दादा अमीरतैमूरकी राजधानी समरकंदको विजय किया, परंतु उजबक लोगोंने इनको कुछ दिन बाद वहांसेभी निकाल दिया तब तो इन्होंने अपने पूर्वजोंके मुल्कका ख्याल छोड हिंदोस्तान फतेह करनेका इरादा किया–हिंदोस्तानमें उस वक्त आपधापधी, आपसमें फूट थी, बाबरने इसको सुअवसर जान हिंदोस्तानपर चढाई करदी और वि० सं १५८१ में सुलतान इबराहीम लोदीको पानीपतके मैदानमें परास्त करके दिल्लीका राज्य छीन लिया और आगरेकी तरफ कूंच किया। राजपूत राजाओंमेंसे चित्तौडनरेश राना सांगाके सिवाय और कोइ साम्हने न पडा। रानाके राजपूतोंने बाबरकी फौजके दांत खट्टे करदिये तब तो बाबरने अपने सर्दारोंके साम्हने कसम खाई कि, अगरे रानापर फतेह पाऊं तो शराब पीना छोड्दूं और दाढीवढाऊं। अंतमें फतेहपुर सीकरीके मैदानमें कई नमकहराम सर्दारोंके बिगड जानेसे रानाकी हार हुई। दूसरीही वर्ष बाबरने चंदेरीका किला मेदनीरायसे फतेह किया। कुछ दिनोंबाद पठानोंने पूर्वमें इकट्ठे होकर फिसाद करना चाहा निदान बाबरको उनके दमन करनेके लिये भोजपुर और पटनातक जाना पडा। इसके कुछ दिन बाद शहिजादे हुमायूंके, जो अपनी जागीर सम्भलमे रहिताथा, बीमार होनेकी खबर आई। बादशाहने तुरत उसको राजधानी आगरेमें बुलालिया, जब उसके बचनेकी कोई सूरतन देखी तो बाबर उसके पलंगका परिक्रमाकरके ऊपरको मुख और दोनोंहाथ उठाकर ईश्वरसे प्रार्थी हुआ कि, " या मौला! इसको आरामकर और मुझको ले " उसी घडीसे हुमायूंको आराम हो चला और बाबर बीमार पडकर मरगया ये बडा न्यायकारी, ज्योतिष तथा रमलविद्याका जाननेवाला और प्रजापालक बादशाहथा रात तथा दिनको अकसर वेष बदल २ कर प्रजागणका हाल दरयाफ्त किया करताथा अपने बच्चोंसे इसको अधिक प्रेमथा मरतेवक्त अपने ज्येष्ठपुत्र हुमायूंसे कहिगया था कि, अपने छोटे भाइयोंको किसी तरहकी तकलीफ़ न देना–

इसने स०ई० १५२६ की साल अयोध्याके रामकूट मंदिरको विध्वंसकर रघुवंशियोंकी जन्मभूमिपर मसजिद बनवाई थी जो अबतक मौजूद है।

सि० स० १५८७ में ४८ वर्षकी उमरमें मरा–

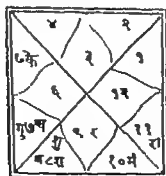
बामन पंडित–इन्होंने वृत्तिसहित काव्यालंकार सूत्रोंको रचा था काश्मीर राजतरङ्गिणीके लेखानुसार बामनजी काश्मीरनरेश जयापीडके मंत्रीथे.

विक्रमकी ८ वीं व १० वीं शताब्दीके बीच इनका समय है काशिकाके भी कुछ अध्याय वामनजीके बनाये हुये हैं काशिका उस सरलवृत्तिका नाम है जो पाणिनीय सूत्रोंपर सूत्रक्रमके अनुसार है-

बालशास्त्री (काशीवासी वेद वेदाङ्गके अद्वितीय पंडित) गोविन्दभट्ट रानाडे नामक ब्राह्मण कोंकणप्रदेशसे काशीमें अस्सीघाटपर आकर रहे थे. इनके घर वि० सं० १८९६ में काशीबाईके गर्भसे विश्वनाथ नामक पुत्रका जन्म हुआ जो बालशास्त्री नामसे जगत्में विख्यात हुआ। गोविंदभट्ट अपने पुत्र बालको ५ वर्षका छोड़कर मरगये, घरमें कोई और था नहीं एवं मरती समय उन्होंने अपने मित्र पं० रामकृष्ण दीक्षितको बुलाकर कहा कि " भाई ! हमतो अब जाते हैं, ये लड़का नादान है घरमें जो है सो तुम जानतेही हो, अब तुम्हारा ही भरोसा है, जहांतक होवके इनको पीठ नहीं देना" । यह कहि गोविन्दभट्ट ५ वर्षके लड़के और २१ वर्षकी विधवाकी नौका मँझधारमें छोड़ चलबसे । पं० रामकृष्णने मैत्रीधर्म खूब निबाहा, पिताका सबकार्य यथाशास्त्र कराये बालकको अपनी शिक्षामें लिया और उसको तथा उसकी माताको कोई कमी न रखकर किसीके द्वारपर नहीं जाने दिया । बालकी बुद्धि तथा धारणाशक्ति ऐसी प्रबलथी कि, बहुत थोड़ी उमरमें चारोंवेद सबे कंठाग्र होगयेथे औरपं०रामकृष्णके साथ राजच्युत पेशवा बाजीरावके दरबारमें बिठूरजाकर उसने अपने वेदज्ञानसे बड़े २ पंडितोंको चकित कियाथा । पेशवाने भी प्रसन्न होकर उसको "बाल सरस्वती" कहिकर पुकाराथा और कुछ आर्थिक सहायता भी दीथी । चित्रकूटके पेशवा विनायक रावके दर्बारमें भी इसी प्रकार उसका आदर हुआथा । इसीसमय विद्याधरभट्टने ज्योतिष्टोमयज्ञ कियाथा और बाल सरस्वतीकी विलक्षण ख्याति सुन यज्ञमें मैत्रावरुणका कठिन प्रयोग उनको दियाथा जो उन्होंने बड़ी सफाईके साथ कियाथा । पश्चात् बालसरस्वती माता सहित ग्वालियर गये, वहांके श्रीमूजरित पं० कृष्णाशास्त्रीने उनका कुछ निर्बंध कर दिया और शास्त्र तथा व्याकरण पढ़नेका उपदेश किया निदान उन्होंने बापाशास्त्री आपटेसे सिद्धान्तकौमुदी और पुनःकै ओरशास्त्रीसे, जो उन दिनों ग्वालियरमें थे, न्याय तथा मीमांसाशास्त्र पढ़े । इस वक्त व एकसरस्वतीकी उमर १६वर्षकी थी निदान ग्वालियरके सामुद्रिक पंडित यशाशास्त्रीने अपनी कन्या उनको विवाह दी। पश्चात् काशीमें आकर उन्होंने पं०राजाराम शास्त्रीसे समस्त व्याकरणके ग्रंथ पढ़े और वि०सं०१९१ में संस्कृत कालिज बनारसमें साहबके असिस्टेंट प्रोफेसरका पद पाया तथा वि० सं० १९११ में तरक्की पाकर धर्मशास्त्रके प्रोफेसर उसकालिजमें होगयेथे।शास्त्रीजी घरपरभी विद्यार्थियोंको पढाते रहिते थे । म० म० पं० शिवकुमार शास्त्री, म० म० पं० गंगाधर शास्त्री सी आई ई, म० म० पं० दामोदर शास्त्री तथा तात्याशास्त्री आदि आपहीके प्रसिद्ध

विद्वान् अपनेको बालशास्त्रीका शिष्य बतलाते हैं। काशीमें आनेवाले राजे महाराजे बाल शास्त्रीजीका दर्शन किये विना नहीं जातेथे, काशीराजके यहांभी इनकी निर्णीत व्यवस्थाका आदर होताथा, काशीस्थ ब्राह्मणदलके यह शिरमौरथे, यज्ञ करानेवाला दूसरा पंडित इनके समान नहीं था, यज्ञके सब बडे २ प्रयोग इन्होंने किये थे, एक निर्धनी दक्षिणी ब्राह्मण इनके उपकारसे यज्ञ करनेमें समर्थ हुआ था। जब विद्यासागरके उद्योगसे बंगालमें और वहांकी देखा देखी दक्षिणमें विधवा विवाहकी चर्चा अत्यंत प्रबलहुई थी तो इन्होने देश देशान्तरोंमें पूज्यपाद गुरु पं० राजाराम शास्त्री तथा अनेक शिष्योंके सहित जाकर धर्मविरुद्ध चर्चाके प्रवाहको रोका था। वि० सं० १९३१ में पं० राजाराम शास्त्रीकी मृत्युसे इनको वैराग्य उत्पन्न हुआ, वि० सं० १९३४ में इन्होंने कालिजकी नौकरी छोड़दी और व्याकरण तथा न्यायादिशास्त्रोंके बदले वेदान्त पढ़ाने तथा अग्निसेवा करनेमें शेष समय विताया। मण्डी (पंजाब) के राजा विजयसेन शिष्य होकर आपको आर्थिक सहायता देते थे। सन्तान के सिवाय आपको कोइ दुःख नथा, दो स्त्रियें मर जानेपर इन्होंने तीसरा विवाह किया था लेकिन् सन्तान नहीं थी। वि० सं० १९३७ में शास्त्रीजीने शीतला घाटपर यज्ञशाला बनवाई और अग्निष्टोम याग किया। वि० सं० १९३९ में शास्त्रीजी बीमार पड़े साथही पतिव्रता पत्नी भी बीमार होगई। शास्त्रीजीको तो आराम हो गया लेकिन् वह चलबसी। मृत्युसे पहिले सब लोगोंने सोच विचारकर एक ब्राह्मणके ४ वर्षके लड़केको उसकी गोदमें बिठाल विष्णुदीक्षित नाम रक्खा। इसके बाद शास्त्रीजीने समय निकट समझ यज्ञ शालामें पुष्पवाटिका तथा शिवमंदिर बनवाया और १ महीना ८ दिनबाद आप भी चलबसे। माता काशीबाई जो १३ वर्षकी उमरमें विधवा हुइ थी अपुत्र हुई और घर छोड़ दत्तकको लेकर यज्ञशालामे आरहीं शास्त्रीजीके शिष्योंने यज्ञशालामें "बालसरस्वतीभवन" नामक पुस्तकालय स्थापन किया और इसमें शास्त्रीजीकी सब पुस्तकोंको रख दिया।

बालशास्त्रीकी ज० कुं०



बालाजीविश्वनाथ (प्रथम पेशवा)—मुगल सम्राट् औरंगजेबके मरनेपर महाराज शिवाजीके पौत्र राजाशाहू मुगलोंकी कैदसे छूटकर तथा दिल्लीके तख्तका आधिपत्य स्वीकार करके अपने राज्यमें लौटकर आये लेकिन प्रजागण थोडेही दिनोंमें उनसे उकता उठे निदान घोर उपद्रव रोकनेके लिये राजा शाहूने ई० स० १७१४ के साल महाराष्ट्र देशका सर्वत्र राज्य अपने मन्त्री (पेशवा) बालाजी विश्वनाथ नामक विद्वान् तथा राजनीति निपुन ब्राह्मणको दे दिया । पेशवाने राज्याधिकार पाय पूनामें अपनी राजधानी स्थापन की और ऐसे न्याय तथा योग्यतासे राजकाज चलाया कि,पेशवाका पद पुश्तैनी होकर ७ पीढ़ितक उसके वंशमें चला । शाहू तथा उनके उत्तराधिकारी सतारामें रहकर नाम मात्रके राजाये, महाराष्ट्र देशका शासन यथार्थ में पेशवा पूनामें रहकर करता था । स० ई० १७१८ म बालाजी विश्वनाथने मुगल सम्राट् दिल्लीको फौजकी मददकी थी, इसके बदलेमें दक्षिण देशसे चौथ उठानेकी आज्ञा तथा पूना और सताराके बीचका मुल्क पाया था । स० ई० १७२० में इनका देहान्त हुआ ।

बालाजी बाजीराव (तृतीय पेशवा)—यह द्वितीय पेशवा बाजीरावके ज्येष्ठ पुत्रथे । इनके समयके समान मरहठाराज्यकी उन्नति किसी पेशवाके समयमें नहीं हुई । हुल्कर, सिंधिया, भोसला तथा गैकवाड़आदि मरहठे सर्दार इनको राजस्वदेतेथे और इन्हींकी कृपासे बहुत नीचे दर्जोंसे उच्च पदोंको प्राप्तहुये थे । निजामहैदराबादने भी परास्त होकर अपने मुल्कका उत्तरी- पश्चिमी भाग इनको दे दिया था तथा वार्षिक भेंट भी देना स्वीकार किया था । स०ई०१७६१ में काबुल कन्धारके बादशाह अहिमदशाह अबदालीने मरहठोंको पानीपतके मैदानमें परास्त किया । इसी शोकसे पेशवा बालाजी बाजीरावजो बड़े साहसी वीर शासक थे परलोक गामी हुये । स०ई० १७४० में राज्य सिंहासन पर बैठे और स०ई०१७६१ म परलोक गमन किया ।

बालादित्य (काश्मीरके गोनर्द वंशका अन्तिमराजा)—यहराजा रनादित्यका पुत्र वि० स०५३० में काश्मीरका राजाहुआ । बंगालदेश विजय करके वहांपर इसने एक पथिकाश्रम बनवाया था तथा काश्मीरमें भी एक अग्रहार बनवाया था और इसकी रानीने बिम्बेश्वर नामक शिव मन्दिर निर्माण किया था । राजाबालादित्यके अनङ्गलेखा नामक एक अत्यन्त सुंदरी कन्या थी जिसकी जन्मपत्री देख किसी ज्योतिषीने राजासे कहा था कि " आपके पीछे आपका जामाताकाश्मीरका राजा होगा " । इस भविष्यद्वाणीको सुन राजाने अनङ्गलेखाका विवाह अपने अश्वशालाके दरोगा दुर्लभवर्द्धन नामक एक स्वरूपवान् परन्तु सामान्य कायस्थसे करदिया । अनङ्गलेखा निज पतिको कुरूप

गाठकर मुख्यमंत्री खड्गसे फँसीहुई थी और पुंश्चलीके निम्नस्थलक्षण उसमें पाये जाते थे

"पीछे हँसते खेलते रहना और पतिके आतेही उदासीनहो जाना। विना-कारण उठ खड़े होना और मुसकुराके मार्गकी ओर देखने लगना। पतिके कोपकरनेपर भौं, नेत्र, ठोढ़ीनचानेकी चेष्टाकरके अवज्ञा करना। पतिकुछ बुराकहैं तो हँसकर आँखें मींचलेना। पतिके गुण सुन उदास होना और उसके शत्रुकी स्तुतिमें प्रसन्न होना। पतिके कहनेपर ध्यान न देना पतिके चूमने पर गर्दन हलका देना और उसके आलिङ्गनसे घबराके भागना। पतिके संगसे क्लेशमानना और उसकी शय्या पर लेटतेही सोजाना।"

एकदिन रात्रिके समय जब दुर्लभवर्द्धन महलोंमें आया तो मंत्री खड्ग और अनङ्गलेखाको पलँग पर पड़े एकसाथ सोते पाया। कुचों तथा अन्यान्य अङ्गोंके फड़कनेसे विदित होता था कि, रतिक्रीड़ासे छुट्टी पाकर अभी सोये हैं। पहिले तो दु० वर्द्धनने खड्गके मारनेका इरादा किया परन्तु कुछ शोच विचार उसके दामनपर निम्नस्थ अक्षर लिख चुपकेसे चला आया'—"स्मरण रखना कि आज तुझको वध योग्य होनेपर भी छोड़ दिया है"। दोनों भमिट हैं, थोड़ेही दिन पीछे राजाबालादित्य निर्वंश मरगये और कुलक्रमंत्री खड्गने जोड़ तोड़ लगाकर दु० वर्द्धनको काश्मीरका राजा बना दिया। दुर्लभवर्द्धनसे काश्मीरका कर्कोटक राज्यवंशचला।

वाल्मीकिऋषि(आदि काव्य रामायणके कर्ता)—किसी भीलने एक मुनिके जन्मे बालकको घासपर पड़ा देख उठालिया और निःसन्तान होनेके कारण पुत्रवत उसको पाला बड़े होनेपर उसका विवाह होगया जिससे कई बच्चेहुये और वह चिड़ी-मारका पेशाकरनेलगा। एकदिन अकस्मात् उसकी कई ऋषियोंसे भेंट हुई जिन्होंने उसको ज्ञान उपदेश किया और उसने भी एकाग्र चित्तहो "राम" मन्त्रके जपनेमें मन लगाया। चित्तके स्थिर होनेसे उसकी बुद्धि निर्मल होगई और तभीसे उसका नाम वाल्मीकि जगतमें प्रसिद्ध हुआ। वाल्मीकि ऋषिने २४ हजार श्लोकोंमें उत्तरकाण्ड सहित रामायण रची, उत्तरकाण्डमें जो कुछ लिख दिया था उसीके अनुसार रामचंद्र महाराजने अवतक सब काम किये। वाल्मीकिजी मिथिलाके राजा जनकसे भाईका नाता मानते थे और राजा दशरथसे भी उनकी मित्रतायी, इसी कारण महाराज रामचन्द्रने लोकापवादके भयसे सीताजीको त्यागकर उनके आश्रमके समीप छुड़वा दिया था, उन्होंने भी गर्भवती सीताकी पुत्रीके समान रक्षाकी थी और उनके कुश व लव नामक जुरिहा पुत्रोंका पालन पोषण कर अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा दी थी। जब रामचंद्र महाराजने नैमिषारण्यमें अश्वमेधयज्ञ किया तब वाल्मीकिऋषि भी सीताजीको तथा लव व कुश दोनों

बालकोंको साथ लेकर आये थे। सीताजीने तो उस अवसरपर देहत्याग दिया था और कुश तथा लवके मुखसे वाल्मीकि ऋषिने स्वर सहित रामायण २० अध्याय प्रति दिनके हिसाबसे ३०॥ दिनमें रामचन्द्र महाराज को सुनवाई थी जिससे सन्तुष्ट होकर महाराजने उन दोनोंको १८। १८ हजार अशर्फियें देनेकी आज्ञा की थी लेकिन् उन्होंने लेनेसे इनकार किया था और कहा था कि, हम ऋषि आश्रमपर वनमें रहनेवाले धनको लेकर क्या करेंगे। यज्ञके अन्तमें महाराज रामचंद्रने वाल्मीकि ऋषिके समझाने पर अपने दोनों पुत्रोंको अङ्गीकार किया था। वाल्मीकिऋषिकी जन्मभूमि प्रयागके समीप कडामानकपुरमें थी। पश्चात् गंगातट बिठूर जिला कानपुरमें इन्होंने अपना आश्रम नियत किया था जिसके निकट अनेक ऋषि मुनि बालबच्चा सहित पर्णशाला बनाकर रहतेथे। रामायणके लेखोंसे ज्ञातहोताहै कि " उससमय विन्ध्या पर्वतके उत्तरोत्तर आर्य्यावर्तदेशमें पंजाब, मत्स्य, कौशल, मिथिला आदि मण्डलोंके भिन्न २ आर्य्यराजे थे जिनकी अयोध्या, अवन्ती आदिराजधानियें सबप्रकारकी सम्पत्तियोंसे भरपूरथीं और देशके दोषभागमें जहां तहां ऋषि मुनियोंके आश्रम थे, विन्ध्यासे दक्षिणका देश प्रायः तथा गोड, भील आदि असभ्य जातिके मनुष्योंका निवासस्थान होकर सघन जंगलसे ढका हुआ था। सबसे पहिले महाराज रामचंद्रहीने दक्षिण देशके असभ्य राक्षसादिकोंको जीतकर सर्वत्र हिंदोस्तानका एकछत्र राज्य किया। उस समय वेद शास्त्रमें अत्यंत कुशलता तथा स्त्री पुरुष दोनोंहीमें विद्यामें तत्परता और कला कौशल्यादिमें निपुणता पाईजातीहै और यहभी ज्ञान होताहै कि, उस समय आर्य्यपुरुष संस्कृतभाषण करते थे और असभ्यलोग कोइ अन्यभाषा "।

वास्तुपालतेजपाल–इन दोनों भाइयोंने आबू पर्वतपर देवलवाड़ेमें जैनियोंके तीर्थंकर नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथका मंदिर स० ई० १२१६ में बनवायाथा। विमलशाहके मंदिरको छोड़कर और दूसरा जैनमंदिर इसके समान नहीं है देखो विमलशाह। कहितेहैं कि जिस स्थानपर यह मंदिर बनाहै वहांपर पहिले एक प्राचीननिय मंदिरके खण्डहर थे। वास्तुपाल तेजपालने बड़ी कठिनता सहित सिरोही दर्बारसे उक्त स्थानको खरीदा, रुपयेभर जमीनका एक रुपया देना पड़ा। पश्चात् उक्त स्थानको सीधे कराने तथा भरवाने में ५६ लाख रुपये खर्च हुये और उसपर मंदिर बनवाने में १८ करोड़ रुपये लगे। मंदिर सुंदरता तथा कारीगरीमें निहायत उमदाहै, उसमें संगतराशीके १० हाथी हैं जिनपर मंदिर बनवानेवालोंकी तथा उनके चाचा आदि अन्य कुटुम्बियोंकी मूर्तियें सवारहैं यह मंदिर १४ वर्षमें बनाया। वास्तुपालतेजपाल दोनोंभाई अनहिल (पट्टन) के रहिनेवाले पोरवाल वैश्य थे और गुजरातके बघेलाराजाके यहां दीवानी पदपर नियुक्तथे।

विक्टोरिया कैसरे हिन्द (Victoria Empress of India)—आ-पका जन्म स० ई० १८१९ की साल २४ तारीख मईको एडवर्ड ड्यूक आफ़ केन्टकी पत्नी मेरीलुयसाके गर्भसे हुआ था। जन्मसे एकवर्षके भीतरही आपके पिताका देहांत होगया था और जार्ज ४ तथा विलियम ४ नामक उनके दो बड़े भाईयोंने क्रमश राज्य भोगकर स० ई० १८३८ की साल निःसन्तान मरकर इङ्गलैण्ड इत्यादिके राज्यका वारिस आपको बनाया था। छ: वर्षकी उम्रसे आपको शिक्षा देना आरम्भ करदिया गयाथा और तबहीसे पार्लियामेन्टने आपके वार्षिक व्ययके लिये छ: हजार पौन्ड नियत किये थे। वंशमें सिवाय आपके कोई दूसरा बालक न होनेके कारण प्रथमहीसे आशा की जाती थी कि, किसी दिन आपको तख्त मिलेगा और इसीलिये देशकी वर्तमानस्थितिके अनुसार आपको शिक्षा दीगई थी। ग्रीक, जर्मन, लैटिन तथा इटेलीकी भाषायें और गणितशास्त्र, नाचना, गाना, तीर-न्दाजी, घोड़ेपरचढ़ना आदि आपको सिखाया गया था। स० ई० १८४० में श्रीमतीने राजरीतिके अनुसार पार्लियामेन्टसे आज्ञा लेकर अपने फुफे-रे भाई प्रिन्स ऐल्बर्ट आफ सैक्सीको वर्ग ऐन्डगोथाके साथ शादी की (देखो ऐल्बर्ट)। दम्पतिमें अत्यंत प्रेमहुआ और प्रिन्सऐल्बर्ट बहुधा श्रीमतीको राजकाजमेंभी मदद देते थे। सन ५७ के गदरके बाद पार्लियामेन्टने हिंदो स्थानका राज्यभी ईस्ट इण्डिया कम्पनीके अधिकारसे निकालकर श्रीमतीको सौंपा। उन दिनों श्रीमतीको सब सुख प्राप्त थे। धन, मनुष्य, सुहाग, सन्तति, स्वास्थ्य, देशप्रियता इत्यादि सब कुछ प्राप्त था लेकिन् सुखके बाद दु:खकी बारी आई अर्थात् स० ई० १८६१ में राज्ञीपति ऐल्बर्टका देहांत होगया, यह दु:ख श्रीमतीके शरीरके साथहीगया। पश्चात् ४ पुत्र तथा ५ पुत्रियोंमेंसे दोपुत्र १ पुत्री तथा कई पौत्र पौत्रियोंका दु:ख श्रीमतीको सहना पड़ा। स० ई० १८७७ में श्रीमतीने कैसरेहिन्द (Empress of India) का खिताब धारण किया। कैसरेहिन्दका राज्य पृथ्वीके प्रत्येक भागमें इतना बढ़गया था कि "उसपर सूर्य्य कभी नहीं छिपताथा"। आपके वृहत् राज्यका प्रत्येक स्थानें रेलकी सड़क, भापसे चलनेवाले जहाज तथा बिजलीके तारसे जोड़ागयाथा। यूरोप अमेरिका, एशिया, अफरीका, आस्ट्रेलिया तथा अन्यान्य द्वीपोंमें सबही जगह आपका राज्य होगयाथा जिसके चिरस्थाई रहनेकी सबप्रकार पूरण आ-शा है। विद्या, शिल्प तथा व्यापारकी असाधारण उन्नति आपके समयमें हुई। प्रजागणके दहिन सुदिनमें पहिलेकी अपेक्षा जमीन आसमानका फर्क पड़गया। बृटिशगवर्नमेन्टकी सेना आपके वक्तमें ७॥ लाख थी। आप बड़ी दयामयीथीं,

सेनापतियों तथा अन्यान्य कर्मचारियोंको आपसे बड़ी उत्तेजना मिलती थी और प्रजाके दुःखपर आप आँसू बहातीथीं । ग्लैडस्टनकार्लाइलने आपहीसे उत्तेजना पाकर हिंदोस्थानमें अनाना हस्पताल खोलेथे (देखोडफरन)। सं० ई० १९०१ में अशक्ति बढजानेसे श्रीमतीका देहांत हुआ, ३५॥ हजार पौंड अन्त्येष्टिक्रियामें लगे, पति की समाधिके पास समाधिपाई, ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड सप्तम उत्तराधिकारी हुए और राज्यभरमें आपके,स्मारकचिह्न स्थापित हुये।श्रीमतीके समयम जितने युद्ध हुये उनमें बृटिशगवर्नमेन्टकी पराजय बहुत कमहुई । इग्लैंडमें राजकोशका धन प्रजाका समझा जाताहै, इसी प्रथाके अनुसार श्रीमतीको ३७१८०० पौंड वार्षिक वेतन मिलताथा और राज्यघरानेके अन्य पुरुषोंकाभी इसीप्रकार वेतन नियतथा। टेलीफोन, माइक्रोफोन, गैसकी रोशनी, गैसके पंखे, गैससे चलनेवाली गाड़िये तथा फोनोग्राफ आदिकाभी आविष्कार आपहीके समयम हुआ जिससे पृथ्वीकी काया पलट होगई । आपका शासनकाल सर्वाधार उन्नतिका समय था ।

विक्रमादित्यशकारी (सम्वत्कार)-यह धारानगरीके राजा धारके दौहित्रथे, भर्तृहरि इनके बड़े भाई थे और इनके पिताकानाम गंधर्वसेन था । धारानरेश अपुत्रथे एवं उन्होंने अपने दौहित्रको पालकर राजकी शिक्षा दिलवाई थी । धारा नरेशके मृत्युको प्राप्त होनेपर भर्तृहरि राजा हुये और विक्रमादित्य राजमंत्री । भर्तृहरि स्त्रैण थे राजकाजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देते थे विक्रमादित्यने उनको जब सचेत करना चाहा तो रानीकी कुमंत्रणा मान उन्होंने विक्रमका अपने पास आना भी बन्दकर दिया । इसप्रकार अपमानित हो विक्रमादित्य देशाटनको चलेगये और विविध जातीय शिल्पशिक्षा तथा राजनीति सीखते फिरे । उन्हीं दिनों दाक्षिणमागम जाकर विक्रमपुर बसाया था । इससे थोड़ेही दिनों पीछे राजा भर्तृहरि योगी होगये । यह समाचार पाकर विक्रमादित्य लौटे और राज्यसिंहासनपर बैठकर उज्जैनको उन्होंने अपनी राजधानी बनाया । फिर तो महाराज विक्रमने बंगाल, मृच्छविहार, गुजरात, सोमनाथ तथा उड़ीसा प्रभृति नानादेशोंका ओतम्पि और दिल्ली, मगध तथा कन्नौजके राजाओंको परास्त करके अपने आधीन बनाया तथा शक, हून म्लेच्छ जातियोंको स्वदेशसे बाहर निकालकर शकारी नाम धारणकिया और अपने नामका सम्वत् चलाया जो अबतक जारी है । अन्तमें प्रतिष्ठानपुर (प्रयागके समीप) के राजा शालिवाहन से विक्रमका युद्ध हुआ जिसमें वृद्ध राजा विक्रमादित्य मारेगये। राज्यधारी राजा होनेपर भी विक्रमादित्य सामान्य शय्यापर सोते थे, मट्टीके बर्तनोंमें खान पान करते थे, हीमानदीसे जल भर लाते थे,

प्रजाका हाल जाननेके लिये रात्रिमें वेश बदलकर घूमा करते थे और ऐसे न्यायसे शासन करते थे कि, जिससे उनकी विमल कीर्ति आजतक प्रकाशित है। राजा विक्रम बड़े धीर, साहसी, विद्वान्, स्वरूपवान्, दानी, चतुर तथा धार्मिक नरेशथे। प्राचीन अयोध्या नगरीका उन्होंने जीर्णोद्धार किया था। पुराणोंसे पता लगाकर अयोध्या, मथुरा, काशी आदि पवित्र स्थानोंमें तीर्थस्थापन किये थे और बहुतसे मन्दिर बनवायेथे जो महमूदगजनवी तथा शहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी आदि बादशाहोंके द्वारा नष्ट किये गये। इन्होंने कालिदास प्रथमको अध्यक्ष नियतकर्के पंडितोंकी एकसभाके द्वारा प्राचीन ग्रंथोंको शुद्ध श्रेणीबद्ध कराया था। सिंहासन बत्तीसी आदि ग्रंथोंमें लेख है कि इन्द्रने कञ्चन की ढली हुई ३२ पुतलियोंका सिंहासन राजा विक्रमको दिया था और कल्हण कृत काश्मीर राजतरङ्गिणीके अनुसार उक्त सिंहासन महाराजा काश्मीरके यहांसे विक्रमको प्राप्त हुआ था। इससे प्रतीत होताहै कि काश्मीर नरेशोंको पूर्वकालमें इन्द्र कहते थे। अयोध्यामें रघुवंशियोंकी जन्मभूमिपर रामकूट नामक मन्दिर मथुरामें श्रीकृष्णकी जन्मभूमिपर कृष्णकूट नामक मन्दिर और बनारसमें विश्वेश्वरनाथका मन्दिर जिनको बाबर तथा औरंगजेब बादशाहोंने विध्वंस किया महाराज विक्रमही के बनवाये हुये थे। बैताल पचीसी तथा सिंहासन बत्तीसीकी कहानिय इन्हींके विषयमें हैं।

विक्रमादित्य हर्ष (उज्जैननरेश)-यह विक्रम शकारीके वंशमें राजा श्रीहर्षके पुत्रथे। स० ई० ५१५ में उज्जैनकी गद्दीपर बैठे हिंदोस्थानके अनेक राजे इनके आधीन थे, इस कारण यह छत्रधारी राजा थे।

यह बड़े विद्वान्, दानशील, गुणग्राही तथा स्वच्छंद गामी नरेश थे। पंडित मातृ गुप्तको इन्होंने काश्मीर मण्डलका राज्य दिया था (देखो मातृ गुप्त)। नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडित इन्हींके दर्बारमें थे। इनके नाम कालिदास, वररुचि, शङ्कु, बेतालभट्ट, धन्वन्तरि, घटकर्पर, क्षपणक, वराहमिहिर और दण्डीथे। इनके समयमें पदार्थ, साहित्य, काव्य, गणित तथा शिल्पादि विद्याओंकी असाधारण उन्नति हुई थी। नग्नहार नामक चित्रकारने इन्हींके राज्य दर्बारको सुशोभित करनेके लिये जगतकी प्रसिद्ध सुंदरियोंके चित्र खींचे थे। विक्रम हर्षने एक भूगोलका ग्रंथ रचा था, यह शिवपूजकथे परन्तु बौद्धों तथा ब्राह्मणोंका समान आदर करते थे। इनके पश्चात् शिलादित्य प्रताप शील इनके पुत्रको शत्रुओंने राज्यरहित करदियाथा लेकिन काश्मीर नरेश प्रवरसेनने मदद देकर इनको फिर उज्जैनकी गद्दीपर बिठलाया

था और विक्रम शकारीको निज पूर्वजोंका दिया हुआ ३२ पुतलियोंका सिंहासन उज्जैनसे कश्मीरको लेगया था।

विक्रमसाह (चरखारीनरेश)–देखो विजयबहादुर।

विग्रहराज–अजमेरके राजा अर्णराज इनके पिताथे और अन्तिमहिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहानके बाप सोमेश्वरराज इनके भाईथे। इनके विषयमें दिल्लीशिवालकपर अंकित शिलालेखका आशय यहहै कि, "राजा विग्रहराजने हिमालय और विन्ध्याके बीचका देश जीतकर कईवार म्लेच्छोंको नष्ट कियाथा और इस देशको आर्य्यावर्त बनायाथा"।

विचित्रवीर्य्य–यह चंद्रवंशी राजा शान्तनुके पुत्र थे। अपने बड़े भाई चित्राङ्गदके निःसन्तान मरनेपर हस्तिनापुरकी गद्दीपर बैठे काशी नरेशकी अम्बिका तथा अम्बालिका नामक दो राजकुमारियोंसे इनका विवाह हुआ था विवाहसे ९ वर्ष बाद इनका देहांत होगया। वंश नष्ट होता देख इनकी माता सत्यवतीने अपने सौतेले पुत्र भीष्मकी सम्मतिके अनुसार इनकी विधवा पत्नियोंमें व्यासजीसे गर्भाधान कराया जिससे धृतराष्ट्र तथा पाण्डु दो पुत्र जन्मे।

विजयबहादुर (भाषाकवि)–विक्रमसाहि बुंदेला चरखारीनरेशका उपनाम विजयबहादुर था। इन्होंने विक्रमविरदावली तथा विक्रमसतसई नामक ग्रंथ भाषापद्यमें रचेथे। सन् ई० १७८५ में जन्मे, सन् ई० १८२८ में मरे। भाषाकवि बेताल इनके दरबारके कवीश्वरथे।

विट्ठलनाथ गोस्वामी–गोकुलस्थसम्प्रदायके आचार्य महाप्रभु वल्लभाचार्यजी इनके पिताथे। वि० सं० १५७२ में इनका जन्म चिनार जि० मिर्जापुरमें हुआथा यह बड़े विद्वान् महात्मा थे। Catalogus Catalogorumके अनुसार इनके बनाये ४९ संस्कृत ग्रंथहैं। भाषा कविता यह नहीं करतेथे परंतु भाषाकाव्यका प्रोत्साहन इनके द्वारा बहुतकुछ हुआ। इनके मुख्य शिष्य २५२ थे जिनका चरित्र इनके पुत्र गोकुलनाथजी ने "२५२ वैष्णवनकी वार्ता" नामक ग्रंथमें कियाहै। इनशिष्योंमेंसे गोविन्ददास, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास भाषाके प्रसिद्ध कवीश्वरथे। गो० विट्ठलनाथजीने इनचारोंको तथा अपने पिताके सूरदासादि ४ शिष्योंको अष्टछापकी उपाधि दीथी जो अबतक प्रख्यात है। श्रीनाथजीके मंदिरका प्रबंध इनके समयमें बहुत शुद्ध था। दो विवाहोंसे इनके ७ पुत्र थे जिनमेंसे प्रत्येकको भागवत और वल्लभाचार्यके सात मुख्यप्रादुर्भावोंमेंसे १।१ बाबा और श्रीनाथजीके मंदिरपर बराबर अधिकार रहा। इसप्रकार गोकुलस्थियोंकी ७ गद्दियें स्थापित हुईं

जिनमेंसे मेवाड़में ३, कोटामें १, कामवनमें २, और गोकुलमें १ है। प्रत्येक गद्दीका खर्च अबतक ५० । ६० हजार रुपया वार्षिकहै, इनगद्दियोंके मंदिरोंमें पहिलेतो पूजासेवाके समय सबलोग केवल संस्कृतही बोलतेथे अब भाष' व्रज भाषा बोलतेहैं विधर्मियोंका नामतक नहीं लियाजाता, गाजीपुरको गुलाबका गाँव, मिर्जापुरको मिर्चका गाँव, मुसलमानोंको बड़ीजाति और ईसाइयोंको टोपीवाले कहितेहैं। गो० विट्ठलनाथजी बड़े क्षमाधारी और सहन शील थे, वि० सं० १६३२ म परलोकगामी हुये। कृष्णदास तथा छीत स्वामीके सम्बंधमें इनका कुछ विशेष वर्णन है सो देखो।

विद्यारण्यस्वामी—इन्होंने वेदांत शास्त्रका पंचदशीनामकग्रंथ १५ प्रकरणमें निर्माणकिया था। ये सन्यासीथे, पूर्वनाम इनका सायणाचार्यथा सो देखो।

विदुर-(प्रसिद्धनीतिज्ञ)—चंद्रवंशी राजा विचित्रवीर्यकी शूद्रादासीके उदरसे इनका जन्म हुआ। यह बड़े ज्ञानी, विद्वान् और चतुर हुये, महाराज पांडु तथा धृतराष्ट्रने क्रमश: इनको अपना मंत्री नियत किया। महाभारतके युद्धमें पांडवोंकी तरफसे लड़े, अंतमें महाराज धृतराष्ट्रको नीति सुनाई और उन्हींके साथ वनको चलेगये और वहीं अग्निमें जलकर मरे। श्रीकृष्णजीको इनसे बड़ा प्रेमथा।

विप्रगुप्त—ब्रह्मगुप्तज्योतिषीका दूसरा नाम विप्रगुप्तहै (देखो ब्रह्मगुप्त)॥

विवेकानन्दस्वामी—कलकत्तेमें एक नामी वकीलके घर जन्मेथे। पूर्व नाम इनका नरेन्द्रनाथथा, अंग्रेजीमें बी ए पासथे और रामकृष्ण परमहंसके शिष्य होगयेथे। गुरुके समाधिस्थहोनेके पीछे भारतके अनेक स्थलोंमें भ्रमण करतेहुये ये मद्रासमें गये, वहाँ सर्व मिलकर इनसे संसारके समस्त धर्मोंकी पार्लियामेंटमें जो शिकागो (अमेरिका) में होनेवाली थी हिंदूधर्मका प्रतिनिधिबनकर जानेका अनुरोध किया जिसको इन्होंने स्वीकार किया। इनका विवाह नहीं हुआ था, ब्रह्मचर्य अखंडथा काव्यसंगीत वेदादि विद्याओंके ज्ञाताथे और नाचना तसवीरें व नक्शे बनाना जानतेथे। ढंगचाल दिव्यपुरुषोंकीसी और सूरत लुभानेवालीथी। अमेरिका पहुँचनेपर वहाँके सर्वसाधारणका अनुराग इनकी ओर बहुत कुछबढा, लोग अहर निश इनको घेरे रहतेथे, पार्लियामेंटम इनके लिक्चर सर्वोत्तम ठहिराये गये, वहांके समाचार पत्रोंने भी बड़ी प्रशंसा की,पक्षेसे पक्के क्रिश्चियन भी यह बिना कहे न रहसके कि " विवेकानन्द मनुष्यमंडलीमें राजाके सदृशहैं।" पार्लियामेंट हो चुकनेपर अमेरिकन लोगोंने स्वामीजीको आग्रहपूर्वक ठहिराया, शीघ्रही इनके प्रेमियोंकी एक मंडलीका संगठन हुआ और स्वामीजीने अमेरिकाके अनेक नगरोंम भ्रमणकरके वेदवेदांतका उपदेश किया। पश्चात् न्यूया

र्कमें ठहरकर वेदांत फिलासोफी तथा भगवद्गीता आदि ग्रंथोंकी शिक्षाके लिये एक स्कूल जारी किया जिसमें छात्रोंकी योग्यताके अनुसार ४ दर्जे नियतकिये, इस स्कूलमें शिक्षा ग्रहणकरनेवालोंकी इतनी भीड़ हुई कि स्थानका अभाव होगया जो लोग प्रथम प्रेमी बनेथे उन्होंने सबसे पहिले स्वामीजीके शिष्योंकी सूची में नाम लिखाया, फिर पीछे तो हजारों स्त्री पुरुष विश्वास लाये। २ वर्षपर्यंत इसतरह अमेरिकामें रहकर स्वामीने निरंतर परिश्रम किया। वेदांत स्कूलमें शिक्षा देने, धर्मोपदेश करने, दुनियाके अनेक भागोंसे आये पत्रोंका उत्तर देने लिखने, अनेक भ्रमोच्छेदन करने, और विद्यार्थियोंके लिये धर्मसम्बन्धी सरल पुस्तकें रचनेमें रातदिन बीतताथा। स्वामी योगकी शिक्षाभी देतथे, मिसेस डा कटर स्ट्रीट साहब योगी होकर योगानन्दनामको प्राप्त हुयेथे। पश्चात् स्वामी इंग्लैंडको पधारे और लन्दनमें ठहिरे,यहांभी शिक्षा और उपदेशोंकी वैसीही धूम रही जैसी अमेरिकामें हुईथी। सब श्रेणीके मनुष्य आये और वैदिक मतके ग्रंथोंका अंग्रेजी अनुवाद हेड ऐकर पढ़ने लगेथे २ पादरी तथा पंडितोंने लेकचर सुनकर स्वामीकी प्रशंसा की अंग्रेजी अखबारोंके कालमके कालम स्वामीकी प्रशंसा और करतूतसे भरे हुये निकलने लगे। उनके डेलीक्रानीकिलने छापाथा कि "विवेका नन्द स्वामी नामक महाशय जो भारतके आर्योंके प्राचीन धर्मका उपदेश करने शि कागो(अमेरिका) की धर्मसम्बन्धी महासभामें आकर बड़ा नाम पाचुके हैं आज कल इंग्लैंडमें ठहिरे हैं और आगामी सितम्बरमें भारतको लौटेंगे। इस महापु रुषकी स्थिर ढंगचाल मनोहर सूरत, सरलताके संग गूढ़ ब्रह्मविद्याके प्रकट करने की शक्ति और अंग्रेजी भाषा धाराप्रवाह बोलनेकी योग्यताने अमेरिकन लोगोंसे ऐसा असाधारण आदर सत्कार स्वयंही कराविया —"। पश्चात् स्वामी हिंदोस्तान को लौटे और कोलम्बो (लंका) में जहाजसे उतरे, स्वदेशियोंने स्वामीके आ गमन पर देशहितका परिचय दिया। फिर स्वामी हिमालय पर्वतांतर्गत अनेक स्थलों तथा पंजाब में भ्रमण करके अमेरिकाको फिर चलेगये। पेरिसमहाप्रदर्शनीमें विद्यमान रहिकर स्वामीने अनेक लेकचर दियेथे। पेरिससे काम्स्टेन्टीनोपिल होते हुये स्वामी बम्बई को पधारे और वहांसे कलकत्ते पहुँचकर सन् १९०२ की ४ जुलाई शिधारगये। स्वामीके निरंतर उद्योग से न्यूयार्क, ब्रुकलिन कैलीफोर्निया, सैनफ्रान्सिस्को, शिकागो तथा बस्टन इत्यादि नगरोंमें वेदांतका जो स्कूल जारी हुये जो चलते रहेंगे। कैलीफोर्नियामें एक शांति आश्रमभी खोलाथा तथा वहां एक मंदिर बनवानेका इरादा कियाथा परंतु कालकी गति कराल है। अमेरिकामें स्वामीके रोपण किये हुये धर्मोपवनका काम अब गुरुभाई अभयानन्द फरासीस तथा तुरीयानन्द इसको सम्पादन करतेहैं। मुर्शिदाबादमें एक अनाथालय, बनारसमें १ आतिथ्यालय, अल्मोड़ा इत्यादि स्थानोंमें वेदोंकी शिक्षाके केंद्र और हरिद्वारके समीप कनखल व ऋषिकेश नामक ग्राममें रोगि

साधुओंको भक्षक तथा औषधि देनेके लिये "रामकृष्ण सेवाश्रम" स्वामीजीके उद्योगसे खुले थे। स्वामीके अमेरिकन तथा फिरंगी शिष्य जो गुरुभाई या गुरु बहिन कहिलाते है हिंदुओंकी तरह नाम धारण करतेहैं, तिलक लगातेहैं, भक्ष्य अभक्ष्यका ख्याल रखकर चौकेमें भोजन करतेहैं, धोती बांधते और वेद शास्त्र तथा उपनिषदोंके वाक्योंको मानतेहैं। स्वामीने पुराणोंकी शिक्षा नहीं की। लोग आक्षेप करतेहैं कि, स्वामीकी शिक्षामें बौद्ध मतके सिद्धांतोंका सम्मिलन है परंतु स्वामीने स्वयं एकदफे अपने व्याख्यानमें कहाथा कि "मैं बौद्ध नहीं हूं लेकिन महात्मा बुद्धसे विमुख भी नहीं जिनको हिंदूलोग विष्णुका अवतार मानकर बुद्ध भगवान् कहिते हैं"।

विमलशाह—इन्होंने आबू पर्वतपर देवलवाड़ेमें जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देवजीका मंदिर बनवाया था जो वि० सं०१०८८ की साल बनकर तैयार हुआ। ये मंदिर संगमर्मरका बना हुआ है। लोग कहिते हैं कि आगराके ताज महिलको छोड़कर भारत वर्षमें कोई दूसरी इमारत इसके समान नहींहै। मंदिरके आगे एक मंडपम प्राय' ४ फीट ऊंचे संगमर्मरके ९ हाथी हैं जिनपर विमल शाह तथा उसके वंशके लोगोंकी मूर्तियें सवार हैं। विमल शाहकी मूर्तिको मुसल्मानोंके वक्तमें खंडित करदियाथा, वर्तमान मूर्ति चिकनी मट्टी की बनी हुई है। उक्त हाथियोंपर नकाशीकाकाम है, पत्थर काटकर विचित्र फूल पत्तिय निकाली गई हैं विमलशाह गुजरातके रहिनेवाले जैनी व्या पारी बड़े धनाढ्य थे।

विष्णुशर्मा (पचतंत्रके रचयिता)—यह नौविझ ब्राह्मण थे ई की छठी शताब्दीमें दक्षिणदेशमें हुयथे। इनका रचा ग्रंथ पंचतंत्र राजनीतिसे भरपूर है। पंचतंत्रका फारसी अनुवाद ईरानके बादशाह नौशेरवाँने करायाथा। फारसी से अरबीमें और अरबीसे प्राय' स० ई० १०८० की साल ग्रीक भाषामें इसका अनुवाद हुआ। ग्रीकसे लैटिनमें और लैटिनसे हेबरुभाषामें स० ई० ११५० के लगभग इसका अनुवाद कियागया। पश्चात् सब फिरङ्गी मुल्कोंने अपनी २ भाषोंमें इसका अनुवाद करलिया। अनवारसुहेली कलेलाव्दमना और हितोपदेश ग्रंथ फारसीके फारसी, अरबी तथा संस्कृतअनुवादोंके नामहैं।

विश्वनाथसिंह महाराजारीवाँ (भाषाकवि)—आपके पिता महाराजा जयसिंह बघेलेने एक बृहत् ग्रंथ "हरिचरितामृत" नामक भाषापद्य में रचाथा जिसमें विष्णुके २३ अवतारोंकी कथा वर्णितहै। महाराजा विश्वनाथ सिंह भाषाके सुकवि होनेके सिवाय संस्कृत विद्याके भी अपूर्व विद्वानथे तथा ग्रंथ रचनाम सिद्धहस्तथे। आप कवियोंके कल्पतरुथे और आपके आश्रयसे उत्तमोत्तम ग्रंथ रचे गयेथे। निम्नस्थग्रंथ आपके रचेहुयेहैं—

सर्वसंग्रह (संस्कृत), कबीरके बीजक तथा तुलसीकृतविनय पत्रिका का तिलक, रामचन्द्रकी सवारी, परमतत्त्वप्रकाश, आनन्दरघुनंदन नाटक, विहार्य गद्यमें धनुर्विद्या का तिलक, अष्टयामका आह्निक (वि० सं० १८८१), गोस्वामी तुलसीदास अपमान प्रमजीवन कृतगीत रघुनन्दन पर "प्रमाणिका" नामक टीका (वि० सं० १९०१)।आपके पुत्र जगत् प्रसिद्ध महाराजा रघुराज सिंहने स० ई० १८३४ की साल आपके सत्ताधिकारी हुये (सो देखो)। महाराज विश्वनाथसिंहने स० ई० १८११ से १८३४ तक राज्यभोगा।

विसाहूराम—(भाषाकाव्य कृष्णायणके कर्ता) इनका उपनाम रसिक शिरोमणि दासहै। जन्म इनका स० ई० १८६८ की साल रायपुर (मध्य प्रदेश) के किसी ग्राममें बसोंती पोतदारके घर हुआ। जिसका जि० रायपुरके चरनेक्यूलर स्कूलमें अब (स० ई० १९०१) में हेडमास्टरहैं। बचपनही से हरिकथा तथा कीर्तनके प्रेमीहैं। तुलसीकृत रामायणके ढंगपर इन्होंने निम्नस्थ ७ काण्डों में कृष्णायण रची है—

बालकाण्ड, रहस्यकाण्ड, मथुराकाण्ड, मंगलकाण्ड, पाण्डवकाण्ड, उद्धवकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

यद्यपि भाषा पद्यमें श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलाओंके निरूपक प्रन्थविद्यावारि अनेक ग्रंथ हैं लेकिन कृष्णायण अपने ढंगकी निराली होकर उन सबसे अधिक आदरणीयहै।

बिस्मार्क शाहिजादा (Prince Bismark)—यह प्रुशिया प्रधान जर्मनीराज्यके मुख्य मंत्रीथे। बर्लिनके विश्वविद्यालयमें इन्होंने शिक्षा पाईथी और पश्चात् फ्रांस तथा आस्ट्रियामें जर्मनराज्यकी तरफसे राजदूत रहेथे।सन् ई० १८६१में जर्मनीके महाराजाने इनको विदेशी विभागका मंत्री नियत किया औरसन् ई० १८६५में प्रेसीडेन्टकी पदवी इनको दी। आस्ट्रिया तथा जर्मनीके राज्योंमें जो घोर युद्ध हुआथा उसमें बिस्माकने बड़े २ साहसपूर्ण काम करके असाधारण उपाधि प्रिंस (शाहिजादा) की पाई। प्रिंस बिस्मार्क बड़े चतुर और दूरदर्शी थे,महाराजा जर्मनी सदैव इनकी सम्मतिसे काम करतेथे।इनका कथनहै कि आजकलके राजकाज बातोंसे नहीं परन् खड्गसे फैसलकरनाचाहिये। स ई १८९० में जर्मनी

विश्वामित्र (महर्षि)—वाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग ५१-५२ में लिखाहै कि, प्रजापतिके पुत्र कुश हुये, कुशके पुत्र कुशनाभ, कुशनाभके पुत्र परमोजसे राजा गाधि और राजागाधिके पुत्र विश्वामित्र हुये। राजा विश्वामित्र बहुत दिनोंतक बड़े धर्म तथा न्यायसे राज्य करनेके बाद् भ्रमणके देश देशान्तरोंमें भ्रमण करते हुये वशिष्ठजीके आश्रमपर पहुंचे। वशिष्ठजीने सेना सहित उन

की दावत की । चलते समय राजाने वशिष्ठजीसे नन्दिनीगौ मांगी जिसका त्याग करना उनको स्वीकार न हुआ निदान गौको बलपूर्वक छीन लेनेकी राजाने आज्ञा दी किसीतरह न मानने पर वशिष्ठजीने ब्रह्मबलसे राजाकी सब सेना तथा उसके १०० पुत्र नष्टकर दिये। परास्त होकर राजाने अपने एक पुत्रको राज्य सौंपदिया और आप तप करणार्थ हिमालयके समीप चलेगये वहां रहकर साङ्गोपाङ्ग उपनिषद्, रहस्य सहित धनुर्वेद और देव,दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्ष सादिकोंकी युक्तिय तथा उनके अस्त्र शस्त्र चलाने की रीतियोंका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। ऐसा होनेपर राजा विश्वामित्र को अहंकार हुआ एव वशिष्ठजीके आश्रम पर जाय उसके नष्ट करनेके लिये अस्त्र शस्त्र बरसाने आरम्भ किये लेकिन वशिष्ठजीने एक ब्रह्म दण्डहीके द्वारा उन सबका निवारण किया और राजाको परास्त किया। यह देख राजाने ब्रह्मबलकी अपेक्षा क्षत्रिय बलको तुच्छ जाना और रानी सहित दक्षिण दिशाकी ओर तप करने पधारे जिसके प्रभावसे राजर्षि पद पाया और हविष्पन्द, मधुष्पन्दादि अनेक महारथी पुत्र उत्पन्न किये। उन्हीं दिनों वशिष्ठजीसे सूर्यवंशी राजा त्रिशंकु कोई ऐसी यज्ञ क्रिया करानेका प्रार्थी हुआ कि,जिससे वह सशरीरस्वर्गमें चलाजाय। वशिष्ठजीने ऐसा होना असम्भव बतलाया एवं उसने वशिष्ठजीके १०० पुत्रोंके पास जाकर, जो दक्षिणमें तप करते थे, अपनी इच्छा प्रकट की। इस बातसे पिताके वचनका अनादर होता जान वशिष्ठ पुत्रोंने त्रिशंकु को चांडाल होजानेका शापदिया। ऐसी दशामें त्रिशंकुने ऋषि विश्वामित्रकी शरण गही, विश्वामित्रको उसपर दया आगई निदान उन्होंने वशिष्ठपुत्रोंको डोम होजानेका शाप दिया और गुरुशापित त्रिशंकुका स्वर्गमें स्थान पाना असम्भव जान दक्षिण दिशामें एक नया स्वर्ग स्थापन किया और उसके लिये नये सप्त ऋषि तथा अनेक छोटे २ नक्षत्रों सहित अश्विन्यादि २७ नक्षत्र कायम किये और उन सबके बीचमेंसे कोशिर किये हुये एक देदीप्यमान त्रिशंकु नाम नक्षत्र रूप ठहरा दिया। त्रिशंकु अपने साथके अन्य नक्षत्रों सहित जो उसके पीछे घूमतेहैं दक्षिण दिशामें स्थितहै और ज्योतिषशास्त्र वर्णित नक्ष त्रोंके विचरनेके "वैश्वानर" नामक सनातन मार्गसे बाहरहै। ऋषि विश्वामित्रके तेजसे डरकर सबने त्रिशंकु आदि उनके स्थापन किये हुये नक्षत्रोंको स्वीकार करलियाथा। पश्चात् विश्वामित्रने साथके सब ऋषियों मुनियों सहित पुष्करमें जा कर तप किया। उन्हीं दिनो सूर्यवंशी राजा अम्बरीषने यज्ञ करना आरम्भ किया और उत्तम बलिदानदेनेको वह ऋचीकमुनिसे मोल लिये हुये उनके शुनःशेफनामक मँझले पुत्रको साथ लियेहुये पुष्करमें आया। शुनःशेफने रोकर ऋषि विश्वामित्रके चरण पकड़ लिये और शरण चाही निदान ऋषि विश्वामित्रने मधुष्पन्दादि अपने पुत्रोंमेंसे किसी एकको राजाके साथ जाकर शुनःशेफकी जान बचानेकी आज्ञा दी। ऋषिपुत्रोंने पिताकी आज्ञाका निरादर किया

जिससे अप्रसन्न होकर विश्वामित्रने वसिष्ठ पुत्रोंकी सदृश निजपुत्रोंकोभी श्व होजानेका शाप दिया और शुनःशेफको ऐसी युक्ति बतलाई जिससे राजाका तो यज्ञ पूरा होगया और शुनःशेफकेभी प्राण बचगये। पश्चात् मेनका नामक अप्स-राने पुष्करमें पहुंचकर विश्वामित्रको कामसे मोहित किया और शकुन्तलानामक कन्या उत्पन्न कराई मदन मद घटनेपर अपना तप क्षीण होता जान विश्वामित्र पुष्कर से चलकर उत्तराखण्डमें कौशिकी नदीके तीर पहुँच ब्रह्मचर्य धारण कर ब्रह्मर्षि बननेके लिये पुनः तप करने लगे। कुछदिनों बाद रम्भा अप्सराने आय उनको मोहित करना चाहा लेकिन बुद्धिमानों (देवताओं) की चाल समझके ऋषिविश्वामित्रने क्रोधमें आकर उसको फटकार दिया। फिर ऋषिविश्वामित्र यहांसे भी चल दिये और पूर्व दिशामें जाय घोर तप करने लगे और क्रोधको तपकी क्षीणताका कारण जान भोजन करना, बोलना तथा श्वास लेना बन्दकर दिया और अनेकविघ्न उपस्थित होनेपरभी अन्तःकरणमें क्रोध न आने दिया। ऐसाकरनेसे ब्रह्मर्षि पद तथा बड़ी आयुष उनको प्राप्त हुई और वसिष्ठजीसे भी मेल होगया। महर्षिविश्वामित्र वेदविद्या, वायुव्यकला, धनुर्वेद व सङ्गीत शास्त्रके पूर्ण ज्ञाताहोकर बड़े वीर्यवान् थे और बुद्धि उनकी ऐसी निर्मल थी कि कोई काम उनके लिये कठिन नहीं था। सर्वत्र पूर्वापर इन्होंने भ्रमण किया था और रामलक्ष्मणको धनुर्विद्या सिखाईथी। सहस्रोंऋषि मुनि व राजे महाराजे उनको शीशनवातेथे। अनेकअवसरके फल फूल तथा अन्नभी इन्होंने प्रकट कियेथे और ऋग्वेदके तीसरे मण्डलकी ऋचाओंका संग्रह कियाथा।

विरजानन्द सरस्वती (प्रज्ञाचक्षु)—यह पंजाबदेशान्तर्गत कर्तारपुरके गंगापुरनामक ग्राममें नारायणदास सारस्वत ब्राह्मणके घर जन्मेथे ५ वर्षकी उमरमें चेचक निकलनेसे अन्धे होगये थे, ११ वर्षकी उमरतक पिताने इनको सारस्वतचंद्रिका पढ़ाईथी। १२ वर्षकी उमरमें इनके मातापिताका देहांत होगया और १५ वर्षकी उमरमें भावजसे दुःखित हो घरसे निकल ऋषीकेश पहुँचे। यहाँ तीनवर्षपर्यंत रहकर इन्होंने गायत्रीका जप करके शान्ति लिया और पश्चात् हरिद्वारमें आकर पूर्णानन्दसरस्वतीसे संन्यासधर्मकी दीक्षा ली और विरजानन्द सरस्वती नाम पाया। हरिद्वारमें कुछकालतक ठहरकर स्वामीजीने विद्यार्थियोंको पढ़ाया और स्वयं भाष्य तथा सिद्धान्तकौमुदीका विचार किया। हरिद्वारसे स्वामीजी गंगाके किनारे २ बनारसको गए और वहाँ रहकर इन्हों-ने मनोरमा, शेखर, न्याय तथा वेदान्तके ग्रन्थ पढ़े और महाप्रभु उपाधि पाई। बनारससे चलकर गया होतेहुये कलकत्ता गयेथे और वहांसे लौट कर सोरों निकट गढ़ियाघाटमें कुछदिनोंके लिये ठहिरे। पश्चात् अलवर, भरतपुर, मुरसान इत्यादिमें विचरते हुये स्वामीजी वि० सं० १८९३ की साल मथुरा पहुँच और यहां पाठ-

शाला स्थापन करके अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, निघण्टु आदिग्रंथोंके पठनपाठनमें आयु बिताई। वि० सं० १९१७ में स्वामी दयानन्दसरस्वती इनके पास विशेषविद्या पढ़ने आए, कईवर्ष बाद जब शिक्षा सम्पूर्ण हुई तो गुरुफलमें उनसे स्वामी विरजानन्दजीने यह बात चाही कि,स्वार्थपरता तथा मूर्खताफैला ने वाले सम्प्रदायिग्रंथोंकी जड़पर कुल्हाड़ीफेरकर ऋषिकृत ग्रंथोंका प्रचार करना और अन्धकारको मिटाना। वि० सं० १९२५ की साल ७५ वर्षकी उम्रमें स्वा० विरजानन्दका देहान्त हुआ, स्वा० दयानन्दने यह समाचार सुन कहा कि"आज भारतसे विद्याका सूर्य अस्त होगया"और उसरोज् दिनभर जल तक नहीं पिया। स्वा० विरजानन्दकी स्मरणशक्ति ऐसी निर्मलथी कि, जो ग्रंथ एकदफे ध्यानसे सुनलेतेथे वह उनको याद होजाता था। भिन्न २ ऋतु ओंमें स्वामीजी वैद्यकशास्त्रानुसार कोई २ विशेषवस्तु खाना छोड़देतेथे।

बिल्वमंगलसूर–देखो सूर।

बिल्हणइतिहासकार–यह काश्मीरवासी ब्राह्मण आप' स० ई० १०८१ में विद्यमानथे। विक्रमाङ्कचरित्र १८ सर्गोंमें इनका रचा ग्रंथ उत्तम है। विक्रमाङ्कचरित्रमें कश्मीरके बड़े २ शहरों, प्रसिद्ध पुरुषों और कश्मीरके चालोक्यराजवंशका सविस्तर वृत्तांत है।

विशाखदत्त (मुद्राराक्षसनाटकके कर्ता)–यह सामन्तवटेश्वर दत्तके पौत्र तथा महाराज पृथुके पुत्रथे। राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द लिखते हैं कि पृथु दिल्लीके अन्तिम हिंदूपति पृथ्वीराज चौहानका दूसरा नाम है। वि० सं० की १२ वीं शताब्दी में विशाखदत्तका जीवनकाल है। मुद्राराक्षस अन्यनाटकों की अपेक्षा अधिक विलक्षण हैक्योंकि उसमें राजनीतिका अंश बहुतही उत्तमतासे दरशाया गयाहै।

विशुद्धानन्दसरस्वती(भारत विख्यात विद्वान् सन्यासी)–संगमलाऊशुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण जिला सीतापुरके बाढ़ी नामक ग्रामसे भाजीवन तथा देशभ्रमणके लिये दक्षिणकी तरफ गयेथे। हैदराबादके समीप कल्याणीमें पहुँच वहांके नवाब मोहनशाहके सेनानायक छबीरामसे इनकी भेट हुई। छबीरामजी अवध प्रान्तके रहिनेवाले कान्यकुब्जब्राह्मणथे उन्होंने अपनी बहिन यमुनाका विवाह इनके साथ कर दिया जिसके गर्भसे बंसीधर नामक पुत्रका जन्म हुआ जो देशमें स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वतीके नामसे विख्यात हो। संसारभरके बालक प्रथम जिनशब्दोंका उच्चारण करते हैं वे गृहस्थोपियोगी "मामा बाबा"आदि शब्द इन्होंने नहीं बोलेथे किन्तु सबसे पहिले एकदिन अकस्मात् यह कहा था कि"मेरी पुस्तक कहां है"औरफिर कई मासतक यही रट

रहीथीं। ११ वर्षके होनेके पहिलेही माता पिताका देहांत होगया और निःसंतान मामा भाई ने इनको पुत्रवत् पाला था बालकपनमें ये बड़े उद्दण्ड थे और नवाबमोह-नशाहके लड़कोंके साथ कई वर्षतक कुश्ती, दण्ड, पटा, तीरन्दाजी, बांकब दीवार आदिका फांदना और घोड़ोंका फेरना इत्यादि फौजी व्यवसाय सीखते रहेथे। उनदिनों इनकी उम्र १९ वर्षकी थी, लेकिन सुंदर सुडौल बलिष्ठ शरीर देखनेसे २५ वर्षके जवान मालूम देतेथे और नवाबके लड़कोंसे सब कसरतों-बाजी भारीकरतेथे, इसीकारण एकदिन द्वेषवश उन्होंने एक घोड़ा मरजानेके अप-राधमें इनको थोड़ी देरके लिये हवालात करादी। यद्यपि मामा सुनतेही इनको छुड़ा,लायेथे लेकिन इस घटनासे इनकामन संसारसे उदास होगया निदान उसीरातको चुपचाप घरसे निकल नासिकक्षेत्र को चलते हुये। वहां पहुंच ३ वर्षमें इन्होंने संहिता, अष्टाध्यायी, अमरकोष आदि ग्रंथ कंठ किये पश्चात् विशेष विद्यापढनार्थ उत्तरकी ओर गमन किया और दौलताबाद ओंकारनाथ, उज्जैन तथा, ग्वालियर होते हुये बिठूर (कानपुर) में आये समय उनदिनों आजकलकासा नहीं था एवं इनको इस सफरमें बड़े २ कष्ट सहन करने पड़े, लेकिन कभी नहीं घबराये, मूल मंत्र सदैव येही रहा कि "कार्य्यं वा साधयेयं,शरीरं वा पातयेयं"। बिठूरमें ३ वर्ष रहकर प्रसिद्ध पंडित राघवेन्द्राचार्यसे व्याकरणके समस्त ग्रंथपढ़े और अपने एक सपाठीको बढ़ीबढ़ीहुई सेगंगामें डूबनेसे बचाया। बिठूरसे उत्तराखण्डको सिधारे और जोशीमठ, हृषीकेश,कनखल तथा हरिद्वारमें ३ वर्षपर्यंत ठहिरकर स्वामी गोविन्दाश्रम आदि महात्माओंसे योग तथा ब्रह्मविद्याका अभ्यास किया। इन तीनवर्षोंमें इन्होंने अनेक तीर्थोंके दर्शन,बहुतसे योगियों सन्यासियोंका सत्संग अनेक प्रकारके चांद्रायणादि व्रत तथा गायत्री आदि मंत्रोंका जप भी कियाथा कि जिससे अन्तःकरणकी शुद्धि होकर बुद्धि निर्मल हो और ब्रह्म विद्याका प्रकाशहो। स ई १८५० में बाद उत्तराखण्डसे लौटकर काशीजी आये और महात्मा गौड़ स्वामीसे सन्यास धर्मकी दीक्षा लेकर अनेक शास्त्रोंका अध्ययन उनसे किया। वि सं १९११ में सब लोगोंके कहिनेसे गौड़ स्वामीकी गद्दीपर बैठना तथा दशाश्वमेध घाटपर भट्टाचार्यकी धर्मशालामें रहकर विद्यार्थियोंको पढाना इन्होंने स्वीकार किया (देखो गौड़स्वामी)। इनके पढाये हजारों विद्वान आजकल देशभरमें वर्तमान हैं। भारत विख्यात वक्ता पं० दीनदयालु शर्म्मा तथा महामहोपाध्याय पंडित शिवकुमार शास्त्री सरीखे अद्वितीय विद्वान् अपनेको स्वामी विशुद्धानन्द का शिष्य बतलाने में गौरव समझते हैं। स्वामीजी धनिकोंसे सदैव दूर भागे लेकिन अन्ततक उनके साथही रहे, इसीको कहते हैं "भोक्ताके भोगकी प्रबलता" काश्मीर, जयपुर,इन्दौर, दरभंगा आदिके राजामहाराजा शिष्य होकर स्वामीकी पाठशालाके खर्चके निमित्त लाखों रुपये दिये पाठशालामें सैकड़ों सन्या-

वेदान्तका सूक्ष्म विचार करते तथा अभ्यासपाते थे। सैकडो ब्रह्मचारी तथा गृहस्थभी अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा पातेथे और आवश्यकता होनेपर उनको भी भोजन वस्त्र दिया जाताथा। काशीके सब ब्राह्मण तथा साधु अपना अग्रगण्य समझ स्वामीजीके कहेमें चलतेथे। उनके होते हुये कोई विद्वान शास्त्रार्थमें काशी से जीतकर नहीं गया। उनकासा तेजस्वीपन तथा आतङ्क काशीमें किसी दूसरे विद्वानका नहींथा। वि० सं० १९५६ की साल ९३ बरसकी उम्रमें स्वामीजीका देहपात हुआ कलकत्ता आदि नगरोंमें उनके नामसे विद्यालय खोले गये। उनके मृत्युकी खबर सुनकर सबने येही कहा कि "विद्याका सूर्य अस्त होगया! काशीका कलश गिरगया !!"

बिहारीमल कछवाहा (जयपुरनरेश)–इनका भारमल तथा पूरणमलभी कहतेथे, आमेर इनके वक्तमें राजधानी थी, यह निज पिता पृथ्वीराजके बाद गद्दीपर बैठेथे और दिल्लीके तख्तको राजस्व देतेथे। नारनौल इन्होंने शुल्लामशे रखोंसे फतेह कियाथा और हे मूसकालकी पराजयके समयभी यह मौजूदथा। पहिले पहिल जब मुगलसम्राट् अकबरने इन्हें अपने दर्बारमें बुलाया तो यह पागलहाथी पर सवार होकर गयेथे, अकबरको इन्होंने अपनी बेटीका डोला दियाथा और पञ्च हजारी मनसब पायाथा। राजाभगवानदास इनके पुत्रथे और दर्बार अकबरीके नव रत्न महाराजा मानसिंह इनके पौत्रथे (सो देखो) | बिहारीमलकी रानी मथुरामें दशावतारकी गलीके साम्हने जमुनातट जहाँ सतीहुईथी वहांपर लालपत्थरका ५० फीट ऊंचा सतीबुर्ज अबतक मौजूदहै। इसबुर्जको मुगल सम्राट् औरङ्गजेबने ऊपरसे तुड़वादियाथा जिसके चिन्ह अबतक पायेजातेहैं।

बिहारीलाल (भाषाकवि) परम्परासे इनके विषयमें प्रसिद्धहै कि–

दो० जन्म ग्वालियर जानिये, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुणाई आई सुभग, मथुरा बस ससुराल ॥

खड्ग विलासप्रेस बाँकीपुरसे मुद्रित बिहारीलालके जीवनचरित्रकी पुस्तकमें सुयोग्य लेखकने उपरोक्त दोहे तथा सतसइके अनेक प्रमाणोंके आधारपर सिद्ध कियाहै कि यह भाषा कवि केशवदासके पुत्र धर्मके ब्राह्मण नामाकेपर ग्वालियरम जन्मेथे। अनुमान १८ बरसकी उम्रतक पिताके पास ओड़छा (बुंदेलखण्ड) में रह, जब इनके पिताका देहान्त होगया और उनके सत्कारकरनेवाले नरेशकी जगह भी दूसरा राजा ओड़छाकी गद्दीपर बैठगया तो बिहारीलालजी अपनी कविताका यथार्थ आदर नपाय ओड़छासे अपनी ससुरालको मथुरामें चलेआए। पश्चात् मथुरासे जयपुरनरेश जयसिंहके दर्बारमें गये, राजासाहब उनदिनों अपनी नवयौवना रानीके प्रेममें ऐसे मुग्ध थे कि रातदिन रनवासमें रहकर राजकामकी ओर कुछ ध्यान नहीं देतेथे। यह देख बिहारीलालने निम्नस्थ दोहा लिख राजाके पास पहुंचा या–

दो०नहीं पराग नहिं मधुरमधु, नहिं विकास यह काल।
अली कलीहीसों रम्यो, आगे कौन हवाल ॥

इसदोहेका मतलब समझ जयसिंहनेरा तुरंत बाहिर निकल आये और विहारीलालको १०० मुहरे इनामदी। बादको विहारीलालजी जयपुरमें रह रहे और समय २ पर दोहे बनाकर सुनातेरहे तथा इनाम पातरहे। स० ई० १६६२ में ७०० दोहे बनजानेपर विहारीलालजीने सबको एकत्रकिया और सतसईनाम रक्खा। सतसइके दोहोंपर 'अक्षरकामधेनु' की कहावत पर तीहि, ४८ मात्राके छंदमें ऐसी सुन्दरतासे इतने गम्भीरभावोंको भरकर मूर्ति मान बना आंखके साम्हने खड़ाकरदेना सहजकाम नहीं है, विद्वानलोग कहतेहैं —

दो० सतसैयाके दोहरा, ज्यों नावकके तीर।
देखनके ओछे लगैं, करैं घाव गम्भीर ॥

राजा जयसिंहका प्रेम विहारीलालके साथ इतना बढ़गयाथा कि,बहुधा युद्धके अवसरपरभी वह इनको अपने साथही रखतेथे। स० ई० १६२५ में काबुलकी चढ़ाईपर दोनों साथहीसाथ गयेथे और विहारीलालजीने इसअवसरपर कहाथा कि–

दो० यो दलकाढे बलखते, तैं जय साह भुआल।
उदर अघासुरके परे, ज्यां हरिगायग्वाल ॥

स० ई०१६६६ में राजा जयसिंहके उद्योगसे शिवाजीमरहट्टा और औरंगजेबमें सन्धि होकर बड़ा भारी युद्ध मिटाथा,उस अवसरपर विहारीलालजीने कहाथाकि–

दो० घर २ हिन्दुनितुरकनी, देहिं असीस सराहि ॥
पतिनराख चंदर चुरी, तैराखी जयसाहि ॥

स० ई० १६६७ में राजा जयसिंहका देहांत हुआ और इसके बाद विहारी लालजीका भी कुछ पता नहीं लगता। सतसईको विचारसहित पढ़नेसे ज्ञात होताहै कि, विहारीका स्वभाव उच्च और सराया। इन्हें गुणग्राही सब कृष्णोपासकसे हृदय उदार भावोंसे परिपूर्णथा,मतमतांतरोंके झगड़ों तथा दुराग्रहको नापसंद करतेथे। संस्कृतके पूर्णविद्वानथे,फारसीभी भलीभांति जानते होंगे कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि, फारसीके शब्द बड़े चोजसे और मौकेसे इनकी कविता में पायेजातेहैं और हिंदीमें तो ऐसी बोलचाल तथा ऐसे गढ़ेहुये शब्द किसी अन्यकविकी कवितामें मिलतेही नहीं। विहारीलालदोहेमें जिसरसको उतारते थे उन्हेंही हैं विहारीने सागरको गागरमें भराहै –

दोहा–कितीन गोकुलकुल वधू, काहिन केहि मुखदीन।
कौने तजी न कुल गली, ह्वै मुरली स्वरलीन॥

विज्ञानेश्वर–(नीतिविशारद) यह बड़े महात्मा थे, धर्मशास्त्र तथा राजनीतिके मर्मोको खूब जानतेथे। याज्ञवल्क्यस्मृतिका मिताक्षरा नाम तिलक इन्होंने रचाया। मिताक्षराका बना राजा भोजके समयसे पहिले सिद्ध है क्योंकि भोजके समयमें मिताक्षराका व्यवहार सर्वत्र न्यायालयोंमें था। पांडित्य इनका मिताक्षराके देखनेसे प्रकट होताहीहै और इसमेंभी कुछ शक नहीं कि, यह वर्णके ब्राह्मण थे।

बीकासिंह(राव बीकाजी बीकानेर राज्यके संस्थापक)–मारवाड़नरेश रावजोधाजी इनके बापथे। बीकाजीने पिताके किसी कटुवचनपर नाराज होकर अपने पूर्वजोंके राज्यका भाग छोड़दियाथा और निजभुजबलसे मारवाड़का उत्तरीयभाग जैसलमेरके भाटियोंसे विजयकरके वि० सं० १५४२ में बीकानेर बसायाथा और इधर रेवाड़ी फतेहकरके दिल्लीकी सलहिदीतक और उधर हाँसीहिसारतक स्वराज्यको बढ़ायाथा और कई लड़ाइयोंमें मुगलसम्राट देहलीपरभी विजय पाई थी। रावजोधाजीके पश्चात् भाइयोंकी मददपर जाकर इन्होंने अजमेरके सूबेदारको परास्त कियाथा। इनका देहान्त वि० सं० १५६१ में हुआ। श्रीमहाराज गंगासिंहजी वर्तमान बीकानेरनरेश आपहीके वंशधर हैं।

बीरबर–देखो बीरबल

बीरबल(अकबरके मन्त्री)–यह जिला हमीरपुरके किसीग्राममें और अनेकोंकी सम्मतिके अनुसार काल्पीमें स० ई० १५१० की साल एक साधारण कान्यकुब्जब्राह्मणके घर जन्मेथे और महेशदास इनका नाम पड़ाथा। माता इनको ७ वर्षका छोड़कर मरगईथी और पिताने इनको बचपनहीमें अनेक कवित्त तथा श्लोक ऐसे कण्ठकरादियेथे जो राजा महाराजाओंके साम्हने पढ़े जातेहैं। कईवर्षबाद इनके पिताका भी देहान्त होगया और तब इन्होंने सुन्दर लाल एक विद्वान् ब्राह्मणसे अल्पकालहीमें संस्कृत तथा फारसीके बड़े २ ग्रंथ पढ़े। एकदिन सुंदरलाल छत्तपरसे गिरकर मरगये, इसके बाद इन्होंने जयपुरनरेश भगवानदासके दरबार कवीश्वरमें नौकरी करली। भगवानदासने इनकी विलक्षणबुद्धिपर रीझकर सौगातके तौरपर इनको बादशाह अकबरकी भेंट करदिया। अकबरने प्रथम इनको कविरायकी पदवी दी और कुछही दिनाबाद इनको सर्वगुण सम्पन्न पाकर अपना मुशीरिआला बनालिया और पञ्चहजारीका मनसब तथा साहिबदानिश्वर राजा बीरबलका खिताब दिया। इन्हींदिनो कांगड़ेके राजा जयचन्द किसी, कारण कैदकियेगये, अकबरने उनका राज्य जागी

रमें इनको देनाचाहा लेकिन् इन्होंने स्वीकार न किया निदान कालिंजरके धर्मा एक बड़ी जागीर इनको दीगई । गुजरातकी लड़ाईमें बीरबलने अपना सबसे पुण्य दिखलाकर बड़ी प्रशंसा पाईथी, यह अकबरके साथही रहतेथे और जब कोई भारीसेभारी काम आनपड़ताथा तो यह इन्हींको सौंपाजाताथा । सं० ई० १५५६ में काबुलके अफगानोंने सरउठाया, अकबरने एक सैने फदल उनकी सरखोबीको बीरबलकी मातहितीमें रवाना किया, परन्तु कपहुंच बीरबल संयोगवश पहाड़की एक घाटीमें फँसगये और शत्रुसे सुना स्वीकार नकर सेनासहित कटमरे । अकबर अपने सखाकी मृत्युके समाचार सुन शोकाकुलहो ज्ञानशून्य होगया, कइदिनतक खाना नखायाथा। और सच पूंछो तो मरणपर्यन्त इसदुःखको नभूला, जब कभी बीरबलकी याद आजातीथी तो कहाकरताथा कि "सब शोभा दरबारकी गई बीरबल साथ" बीरबलकी लाश नहीं मिलीथी, इसी आधारपर बादशाहका शोक घटानेके लिये लोगोंने कहदके यह बात उड़ाई कि, बीरबल मारेनहीं गयेहैं किन्तु संन्यासीके भेषमें कांगड़ेमें विचरतेहैं । अकबरने विश्वासकरके अनुसन्धान कराया परन्तु यह सब झूंठी गप्प निकली । मौल्वीन साहब अपने हिंदोस्तानके इतिहासमें लिखतेहैं कि " बीरबल बड़ा सुमधुरभाषी था, राजका स्तंभ, सभ्य, उचित और दीर्घआशयवान पुरुष था । मधुरभाषी था पर सुमतिप्रकाशका बड़ा ध्यान रखताथा। स्वभाव मसखरायुक्त था लेकिन ऐसा मसखरा नहीं करता था जो सभ्यता और राज्यप्रतिष्ठासे बाहरहो " ऊँचे २ मनसबधारी अमीर, बेगमें और शाहिजादेतक बीरबलकी कृपादृष्टिको अपना सौभाग्य समझतेथे क्योंकि, यह बादशाहके मुसाहबथे और बादशाह इनकी सिफारिशको मानताथा । बीरबल अनेक शास्त्रोंके ज्ञाता होकर बीरतामें समुद्र, दानमें कर्ण, धर्मकर्ममें जमदग्नि और बुद्धिमें बृहस्पतिके सदृशथे । कविगंगको छप्पयमें १ लाख रुपया इन्होंने इनाम दियाथा और इंद्रजीत उड़छानरेशका १ करोड़रुपया जुर्माना कविकेशवदासकी सिफारिशपर अकबरसे कहकर माफकरादियाथा (देखो केशवदास) । जि० बांदपुरमें घाघरामऊपरपुर इन्हींका बसायाहुआहै। इनके उद्योगसे गोवध बंदहोकर हिंदूमुसल्मानोंमें मेलजोल बढ़ाया, लेकिन मुसल्मान इनसे सदैव नाखुशरहतेथे क्योंकि, उनको गुमानथा कि, यह अकबरको हिन्दूमतकी तरफ झुकाते हैं । इनके टूटे फूटे महल तथा, इनकी बेटीके, जो बड़ी चतुरथी-महलोंके खंडहर अबतक फतेपुरसीकरी जि० आगरामें पड़े हैं और इनका इकलौता बेटा लाल इनसे कुछही दिन पीछे अपना सर्वस्व लुटाकर संन्यासी होगयाथा । यह कवितामें अपना भोगनाम रखतेथे । प्रसिद्ध है कि-

दो०—उत्तम पद कविगंगको, उपमाको बलवीर।
केशव अर्थगंभीरको, सूर तीनगुण धीर॥

राजा वीरबलकी मृत्युके शोकमें कविकेशवदासजीने कहाथा कि—
पापके पुंज पखावज केशव, शोकके शंख सुने सुखमामें।
झूटकी झालर झाँझ अलोककी, कौतुक भौ कलिके कुनबामें।
भेदकी भेरि बड़ेडरके डफ, आयत शुरधन जानी जमामें।
जूझतही बलबीर बजे बहु, दारिदके दरबार दमामे।

वीरसिंह (बुंदेलोंके मूल पुरुष)-इनके पिता हेमकरन जो बनारसमें राज्य करतेथे मुसलमानोंसे परास्त होकर स ई के १२ वें शतकमें इधर आयेथे। वीरसिंहने बड़े होकर "बुन्देला गोत्र" धारण किया और इसी कारण इसदेशका नाम बुंदेलखण्ड पड़ा। इनके वंशज अबतक पन्ना, अजयगढ, चर्खारी, बिजावर, उडछा तथा दतिया इत्यादिमें राज्य करते हैं।

वीरसिंहदेव बुंदेला (उड़छानरेश)—मुगलसम्राट जहाँगीरके वक्तमें बड़े प्रतापी हुयेथे, इन्होंने शहर झांसीको फिरसे बसायाथा और ३३ लाख रुपयेके खर्चसे मथुरामें केशवदेवजीका मंदिर बनवायाथा। इनके पिताका नाम मधुकरसाहि था (सो देखो)।

वीरसेन (बंगालका राजा)—इन्होंने स ई ९८६ से स ई १०६ तक बंगालमें राज्य किया, राजधानी इनकी ढाकाके समीप विक्रमपुरमें थी। डाक्टर राजेन्द्रलालमित्र, एल एल डी के मतानुसार इन्हीका दूसरा नाम अदीसुर था। कहतेहैं कि, अदीसुरनरेशने कन्नौजसे ५ ब्राह्मण तथा ५ कायस्थ बुलाकर बंगालमें बसायेथे जिनकी औलादमें बंगालके कुलीन ब्राह्मण और कुलीन कायस्थहैं। राजा लक्ष्मणसेन जो स ई ११०२ में बख्तियारखिलजीसे परास्त होकर पुरीको भागगये, इसीवंशके अन्तिम राजाथे।

वीसलदेव चौहान (महाराजा अजमेर)—शाकम्भरी भूपति आविल्लदेव इनके पिताथे और दिल्ली अजमेरके राजा पृथ्वीराजचौहान इनकी छठी पीढ़ीमें हुयेथे। कवि नरपतनाल्ह "वीसलदेवरासो" में लिखताहै कि, वीसलदेवकी ६० रानियोंमेंसे एक धारानगरीके राजा भोजकी कन्या राजमतीभी थी, जिसके दहेजमें वीसलदेवको सैंभर, टोंक तथा गढ़मंडलके इलाके मिलेथे। " पृथ्वीराजरासो " में कविचंद लिखताहै कि " वीसलदेवने वि सं १०२२ से १०८६ तक अजमेरकी गद्दीपर बड़ी अनीतिसे राज्य किया। इन्होंने गुजरात विजय किया था, उड़ीसाके राजाको परास्त कियाथा

और अनेक अमीरउमरावोंने मिलकर किसीतरकीबसे इनको नपुंसक करादि-
याथा। इस दशामें वीसलदेवने बहुत दुःखोंसे गुजरात जाय गोकर्णेश्वर महा-
देवके दर्शन किये जिसके प्रभावसे पुंस्त्वको पुनः प्राप्त होकर वहाँ एक देव
दर्शन मठ बनवाया और अपने नामका वीसलनगर बसाकर नागरब्राह्मणोंको
दान किया। अजमेरके समीप एक तालाब इनका बनवाया अबतक मौजूद है
और जयपुर राज्यांतर्गत राजमहलके निकटभी "वीसलपुर" नामक ग्राम
इन्होंका बसाया हुआ है। अंतमें वाजीकरण की औषधिपाक वा कुकर्मोंके कर-
ने तथा साँपके काटनेसे वीसलदेव पागल होगयेथे और इस हालतमें अपने
इकलौते पुत्र सारङ्गदेवको वध कियेथे। वीसलदेवके बाद सारङ्गदेवका पुत्र
आनाराजा गद्दीपर बैठा जिसका बनवाया आनासागर अबतक अजमेरके स-
मीप विद्यमान है।

बुकरातहकीम (Bippocrates)-प्राचीन इतिहासोंमें लेख है कि बुक-
रातके वंशमें ३०० वर्षसे हिकमतका पेशा होताथा। इनके पूर्वज एस्कुला-
पियस प्रथमने यूनानी चिकित्साकी मूल रोपणकीथी जिसका पूर्णतया सुधार
बादको इन्होंने किया। एस्कुलापियस प्रथमसे पहिले रोगियोंका इलाज मंत्र
तन्त्रादिद्वारा हुआ करता था। बुकरातने पथ्य निदान, जलवायुइत्यादि नियम
अन्वेषणकरके ७२ पुस्तकें रचीथीं और इसकारण येही प्रचलित यूनानीहि-
कमतके प्रथम आचार्य गिने जाते हैं। बुकरातके कथनानुसार रोगके दोकारण
हैं, एक तो ऋतु तथा स्थानका प्रतिकूल होना; दूसरे भोजन और नियमोंमें
फर्क पड़ना। स० ई० से ४६० वर्ष पहिले यूनानमें जन्मे; स० ई० से १५७
वर्ष पहिले मरे।

बुद्ध (बौद्ध मतके आचार्य)- शाक्यसिंह, शाक्यमुनि, सर्वार्थ-
सिद्ध तथा गौतम बुद्ध इन्हींके नाम हैं। पृथ्वीके धर्मप्रचारकोंमें इनका
दर्जा सबसे ऊंचा है। किसी समय तो इनके मतका प्रचार सर्वत्र भूमंडलपर
होगयाथा लेकिन अब भी दुनियाके एकतिहाईलोग इसमतपर चलते हैं। चीन,
जापान, लंका, ब्रह्मा और तिब्बतमें इसीमतके माननेवाले हैं। यह कपिल-
वस्तुके सूर्यवंशी राजा शुद्धोदनके घर स० ई० से ५५७ वर्ष पहिले जन्मे,
माता मायादेवी इनको ७ वर्षका छोड़कर मरगईथी निदान मौसी गौतमीने
इनको पालाथा। बड़े होकर धनुर्वेदादि अनेक विद्या इन्होंने सीखीं। बाल्याव-
स्थाहीसे,संसारकी तरफसे इनका चित्त शुरूहीसे विरक्त मालूम पड़ताथा निदान
पिताने इन्हें संसारके बन्धनमें फसानेके लिये इनके विवाहकी फिक्र की।
राजा सोमराजकी कन्यासे इनका विवाह स्वयंवर विधानसे होगया जिसके पश्चात्
१०वर्षतक इन्होंने राजसी सुख भोगा पर मनमें यही विचार रहा कि, संसार

असार है और मनुष्यके जीवनका कुछ ठिकाना नहीं। ३० वर्षकी उम्रमें इनके एक पुत्र हुआ, इससे कुछही दिन पीछे एकरात आधीरातक वक्त अपनी स्त्री तथा पुत्रको सोते छोड़, राजसीसुखसे मुँह मोड़, घोड़ेपर सवारहो यह तपोवनको सिधारे। घरसे कुछ दूर पहुँच इन्होंने अपने वस्त्र किसी पथिकके चिथड़ोंसे बदललिये थे, घोड़ा तथा आभूषण नौकरके हाथ पिताके पास भेज दिये और आप चलते हुये। गयामें पहुँच ५ वर्षतक तप किया और बुद्धपदको प्राप्त हुये। ४० वर्षकी उम्रमें काशीमें आये और निजमन्तव्योंका उपदेश करना प्रारम्भ किया। कौशल तथा मगधके राजे इनके चेले होगये और मगधकी राजधानी राजगृहमें ठहरकर इन्होंने बहुतदिनोंतक धर्मोपदेश किया। स०ई०से ५२१वर्ष पहिले ये गेरूआ वस्त्र पहिने अपने पितासे मिलनेको आये, पिता इनकी दशा देख अप्रसन्नहुये लेकिन इन्होंने कुछ ख्याल न किया। इनके आगमनकी खबर सुन सब नातेदार तथा प्रजागण दर्शनोंको धाये केवल इनकी धर्मपत्नी ने मान किया लेकिन उसके चित्तकी बात समझ यह उसके पास खुदही चलेगये पतिव्रतापत्नीके नेत्रोंसे स्वामीको देखतेही अश्रुधार बहनिकली और वह द कर इनके चरणोंसे लिपटगई। राजा शुद्धोदनके मरनेके पीछे इनकी पत्नी तथा मौसीने बौद्धमत ग्रहण करलिया और इनके पुत्र राहुलानेभी ९ वर्षपीछे राजपाट त्यागदिया ८० वर्षकी उम्रमें बुद्धजी किसीगाँवमें उपदेश करनेगये थे,वहां मीठे चाँवल रोटी खाकर उदरशूलसे पीड़ितहुये और निर्वाणपदको प्राप्त हुये। इनका मुख्यस्थान गयामें उस जगह था जहाँ अब बुद्धगयाका मन्दिर बनाहुआहै, बरसातके ४ महीने गयामें रहिते थे और वर्षके शेष ८ महीने देशदेशान्तरोंमें उपदेश करते विचरतेथे। भिक्षाकरके भोजन करतेथे और अनेक चेलेभी इधर उधर उपदेकरणार्थ भेजेथे। बौद्धमत जो सांख्ययोगशास्त्रानुकूलहै इनके जीवनकालहीमें दूरदूर फैलगयाथा और बादको अशोक,कनिष्क तथा शिलादित्य प्रतापी नरेशान होकर उसका प्रचार बहुत कुछ किया। इसमतमें वर्णव्यवस्था नहीं मानीजाती, कर्म प्रधान समझाजाता है और सचाई,सफाई, ईमान्दारी, दान देने और प्राणीमात्रकी रक्षाकरनेका उपदेश कियाजाताहै। पुराणोंके अनुसार बुद्धजी विष्णुका अवतार श्रीकृष्णजीके बाद हुये लेकिन बुद्धजीने स्वयं ऐसा कभी नहीं कहा।

बुअलीसईना हकीम (Avisina) यह मुसल्मानोंमें सबसे पहिले हकीम हुये हैं। बलखके समीप किसी गाँवमें स ई० ९८५ का साल जन्मे और शहिर बुखारामें रहकर इन्होंने विद्या पढ़ी तथा वैद्यक (सिबाबत) सीखी। २० वर्षकी उम्रमें एक औषधालय खोला और अनेक असाध्यरोगियोंको जिनमें बादशाह खारेजका हाकिमभी था चङ्गाकरके बड़ी प्रतिष्ठा पाई। बादको

और अनेक अमीरउमरावोंने मिलकर किसीतरकीबसे इनको नपुंसक करवाया। इस दशामें वीसलदेवने बहुत दुःखीहो गुजरातमें जाय गोकर्णेश्वर महादेवके दर्शन किये जिसके प्रभावसे पुंसत्वको पुनः प्राप्त होकर यहाँ एक देवदर्शन मठ बनवाया और अपने नामका वीसलनगर बसायकर नागरब्राह्मणोंको दान किया। अजमेरके समीप एक तालाव इनका बनवाया अबतक मौजूद है और जयपुर राज्यांतर्गत राजमहलके निकटभी "वीसलपुर" नामक ग्राम इन्हींका बसाया हुआ है अंतमें वाजीकरणकी औषधियोंके खाने कुकर्मोंके करने तथा साँपके काटनेसे वीसलदेव पागल होगयेथे और इस हालतमें अपने इकलौते पुत्र सारङ्गदेवको वध कियेथे। वीसलदेवके बाद सारङ्गदेवका पुत्र आनाराजा गद्दीपर बैठा जिसका बनवाया आनासागर अबतक अजमेरके समीप विद्यमान है।

बुकरातहकीम (Hippocrates)—प्राचीन इतिहासोंमें लेख है कि बुकरातके वंशमें ३०० वर्षसे हिकमतका पेशा होताथा। इनके पूर्वज एसक्युलेपियस प्रथमने यूनानी चिकित्साकी मूल रोपणकीथी जिसका पूर्णतया सुधार बादको इन्होंने किया। एसक्युलेपियस प्रथमसे पहिले रोगियोंका इलाज मन्त्रतन्त्रादिद्वारा हुआ करता था। बुकरातने पथ्य निदान जलादि इत्यादिके नियम अन्वेषणकरके ७२ पुस्तकें रचीथी और इसकारण येही प्रचलित यूनानीतिब्बके प्रथम आचार्य गिने जाते हैं। बुकरातके कथनानुसार रोगके दोकारण हैं, एक तो ऋतु तथा स्थानका प्रतिकूल होना दूसरे भोजन और निद्रामें फर्क पड़ना। स. ई. से ४६० वर्ष पहिले यूनानमें जन्मे, स. ई. से ३५७ वर्ष पहिले मरे।

बुद्ध (बौद्ध मतके आचार्य)—शाक्यसिंह, शाक्यमुनि, सर्वार्थसिद्ध तथा गौतम बुद्ध इन्हींके नाम हैं। पृथ्वीके धर्मप्रचारकोंमें इनका दर्जा सबसे ऊंचा है। किसी समय तो इनके मतका प्रचार समस्त भूमण्डलपर होगयाथा लेकिन अब भी दुनियाके एकतिहाईलोग इसमतपर चलते हैं। चीन, जापान, लंका, ब्रह्मा और तिब्बतमें इसीमतके माननेवाले हैं। यह कपिलवस्तुके सूर्यवंशी राजा शुद्धोदनके घर स० ई० से ५५७ वर्ष पहिले जन्मेथे, माता मायादेवी इनको ७ वर्षका छोड़कर मरगईथी निदान मौसी गौतमीने इनको पालाथा। बड़े होकर धनुर्वेदादि अनेक विद्या इन्होंने पंडितोंसे सीखली, संसारकी तरफसे इनका चित्त लड़कपनसे विरक्त मालूम पड़ताथा निदान पिताने शीघ्रही संसारके बन्धनोंमें फंसानेके लिये इनके विवाहकी फिक्र की। राजा [illegible] कन्यासे इनका विवाह स्वयंवर विधानसे होगया जिसके बाद १०वर्षतक इन्होंने राजसी सुख भोगा पर मनमें यही विचार रहा कि, संसार

असार है और मनुष्यके जीवनका कुछ ठिकाना नहीं। २० वर्षकी उम्रमें इनके एक पुत्र हुआ, इससे कुछही दिन पीछे एकरात आधीरातके वक्त अपनी स्त्री तथा पुत्रको सोते छोड़, राजसीसुखसे मुँह मोड़, घोड़ेपर सवारहो वह तपोवनको सिधारे। घरसे कुछ दूर पहुँच इन्होंने अपने वस्त्र किसी पथिकके चिथड़ोंसे बदललिये थे, घोड़ा तथा आभूषण नौकरके हाथ पिताके पास भेज दिये और आप चलते हुये। गयामें पहुँच ५ वर्षतक तप किया और बुद्धपदको प्राप्त हुये। ४० वर्षकी उम्रमें काशीमें आये और निजमन्तव्योंका उपदेश करना प्रारम्भ किया। कौशल तथा मगधके राजे इनके चेले होगये और मगधकी राजधानी राजगृहमें ठहरकर इन्होंने बहुतदिनोंतक धर्मोपदेश किया। स०ई०से ५२१वर्ष पहिले ये गेरुआ वस्त्र पहिने अपने पितासे मिलनेको आये, पिता इनकी दशा देख अप्रसन्नहुये लेकिन इन्होंने कुछ ख्याल न किया। इनके आगमनकी खबर सुन सब नातेदार तथा प्रजागण दर्शनोंको धाये केवल इनकी धर्मपत्नी ने मान किया लेकिन उसके चित्तकी बात समझ यह उसके पास खुदही चलेगये पतिव्रतापत्नीके नेत्रोंसे स्वामीको देखतेही अश्रुधार बहनिकली और वह दौड़कर इनके चरणोंको लिपटगई। राजा शुद्धोदनके मरनेके पीछे इनकी पत्नी तथा मौसीने बौद्धमत ग्रहण करलिया और इनके पुत्र रहुलानेभी ९ वर्षपीछे राजपाट त्यागदिया ८० वर्षकी उम्रमें बुद्धजी किसीगाँवमें उपदेश करनेगये थे, वहां मीठे चाँवल रोटी खाकर उदरशूलसे पीड़ितहुये और निर्वाणपदको प्राप्त हुये। इनका मुख्यस्थान गयामें उस जगह था जहाँ अब बुद्धगयाका मंदिर बनाहुआहै, बर्षातके ४ महीने गयामें रहिते थे और वर्षके शेष ८ महीने देशदेशान्तरोंमें उपदेश करते विचरतेथे। भिक्षान्नके भोजन करतेथे और अनेक चेलेभी इधर उधर उपदेकरणार्थ भेजेथे। बौद्धमत जो सांख्ययोगशास्त्रानुकूलहै इनके जीवनकालहीमें दूर२ फैलगयाथा और बादको अशोक, कनिष्क तथा शिलादित्य प्रतापी नरेशाने होकर इसका प्रचार बहुत कुछ किया। इसमतमें वर्णव्यवस्था नहीं मानीजाती, कर्म प्रधान समझाजाता है और सचाई, सफाई, ईमान्दारी, दान देने और प्राणीमात्रकी रक्षाकरनेका उपदेश कियाजाताहै। पुराणोंके अनुसार बुद्धजी विष्णुका अवतार श्रीकृष्णजीके बाद हुये लेकिन बुद्धजीने स्वयं ऐसा कभी नहीं कहा।

बुअलीसईना हकीम (Avisina) यह मुसल्मानोंमें सबसे पहिले हकीम हुये हैं। बलखके समीप किसी गाँवमें स० ई० ९८५ का साल जन्मे और शाहिर बुखारामें रहकर इन्होंने विद्या पढी तथा वैद्यक (तिबाबत) सीखी। २० वर्षकी उम्रमें एक औषधालय खोला और अनेक असाध्यरोगियोंका जिनमें से बलख बादशाहका शाहजादाभी था अच्छाकरके बड़ी प्रतिष्ठा पाई। बादको

हाकिमोंसे बलख बुखाराके कुतुबखानेके देखनेकी आज्ञा मांगी। जिस दिन यह कुतुबखानेकी सब पुस्तकोंको पूर्णरीतिसे देख चुके, इत्तफाकसे उसमें आग लगी जिससे वह जलगया। लोगोंने हाकिमको बहुत कुछ समझाया कि, बुअलीने अपनी रची हिकमतकी पुस्तकोंका प्रचार करनेके लिये कुतुबखानेको नष्टकिया है लेकिन हाकिमने यह बात कान नहीं की। इससे कुछही दिन पीछे हाकिम मरगया, तब ये बुअली ख्वारज्मके हाकिमके दरबारमें जाय सत्कार प्राप्त करनेमें समर्थ हुए। बहुत समय नहीं बीतने पायाथा कि, सुल्तान महमूदगजनवीने ख्वारज्मपर चढ़ाई करके वहाँके हाकिमको परास्तकिया और इनको बुअलीको शियामतानुगामी होनेके कारण वधकरडालना चाहा लेकिन यह भाग बचे और नैशापुर आदिस्थानोंमें बहुतदिनोंतक छिपेरहे। इन्हींदिनों इन्होंने शाहकाबूसके एक नातेदारको आराम किया उसका रोग किसीकी समझमें नहीं आताथा। निदान इन्होंने उसका नाड़ीपर अंगुलीरख शहरके सब मुहल्लोंके नाम लिये। उस मुहल्लेके नामपर कि जिसमें रोगीका प्रेमी रहताथा नाड़ी भड़कउठी। फिर एक जानकार आदमीसे उस मुहल्लेके रहनेवालोंके नाम लिवाये। जिस स्त्रीके नामपर नाड़ी भड़की उसीके कटाक्षसे रोगीको घायल हुआ जान हकीमजीने पलक मारतेमें इलाज करदिया क्योंकि, रोगी लज्जाके कारण अपना हाल किसीको बतलाता नहीं था। शाहकाबूसने हकीमजीका उचित सत्कार किया और अपने दरबारमें रख लिया लेकिन कुछ कालपीछे शाहकाबूसको अभाग्यके उपद्रवसे राज्यरहित होनापड़ा। इसके बाद हकीमजी हमेदां तथा अस्फहानके हाकिमोंके दरबारमें रहे लेकिन किसीको इनका आगमन शुभ न हुआ। अंतमें ५१ वर्षकी उम्रमें ज्वरसे पीड़ित होकर मरे। प्राय १०० पुस्तकें इन्होंने भिन्न २ शास्त्रों पर रचीथीं।

बेञ्जामिनफ्रेंकलिन (Benjamin Franklin)– यह एक साधारण अमेरिकावासी अंग्रेजके १७ बच्चोंमेंसे थे। दरिद्रताके कारण स्कूलमें नहीं जा पायाथा। जो कुछ विद्या इनको आयीथी वह निजके तौरपर परिश्रम करके इन्होंने सीखलीथी। इनके बड़े भाईने एक छापाखाना खोलाथा। निदान पिताने इनको १२ वर्षकी उम्रमें काम सिखानेके लिये बड़े भाईको सौंपदिया। दिन भरतो यह छापेखानेमें काम करतेथे और रात्रिको पढ़ा करतेथे। भोजनके लिये जो दाम इनको बड़े भाईसे मिलताथा यह उसमेंसे कुछ बचाकर पुस्तकें मोल लेलेतेथे और जो पुस्तकें नहीं खरीद सकतेथे उनको औरोंसे मंगनी ले आतेथे। लेकिन इनका भाई निठुर था वरं इनको कुछही दिनबाद बोस्टन गांवसे फिलेडेल्फियानगरको आना पड़ा और वहाँसे लन्दननगरमें आ

किसी छापेखानेमें नौकर होगये। समयपर उपस्थित रहकर ध्यान तथा फुर्तीसे काम करनेके कारण स्वामी इनसे सन्तुष्ट रहताथा। इसीतरह माय डेढवर्ष लन्दनमें रहकर इन्होंने खर्चके बन्धेजसे कुछ धनसञ्चय करलिया औरफिलेडेल्फियामें जाकर एक छापाखाना खोला तथा एक समाचारपत्र जारी किया। फिर तो दिनप्रतिदिन इनकी आय बढतीगई। जितना धन इनके पास बढता गया यह उतनेही नम्र होगये और कभी न इतराये बादको इन्होंने अपना विवाह किया, स्त्री शीलस्वभावकी अच्छी मिली और दम्पतिमें खूब प्रेम रहा। पश्चात् इन्होंने एक पुस्तकालय स्थापनकिया जिसमें चन्दादेनेवालों को पुस्तकें मिलतीथी और जो अपनी भाँतिका पहिलाही पुस्तकालयथा फिर इन्होंने पुलिसविभागकी दशा सुधारनेके लिये अनेक चेष्टायें कीं और आगका बीमाकरनेवाली सभायें स्थापन कीं, एक स्कूलभी खोलाया और स्वदेशरक्षाके लिये गवर्नमेंटसे प्रयत्नकरके सेना रखवानेमेंभी सफलता पाईथी। इसी समय इन्होंने " दी वेट्र वेल्थ " नामक ग्रंथ छपवाया जिसकी खूबही बिक्री हुई। अंतमें इन्होंने विज्ञानकी तरफ मन लगाया और सिद्धकर दिखाया कि,कृत्रिम तथा अकृत्रिमबिजलीमें कुछ भेद नहीं है। जब यह बात निश्चय होगई तो इन्होंने बड़े २ मकानोंको बिजलीसे बचानेकी युक्ति सोची। युक्ति यहथी कि, मकानोंमें कांसेलोहेकी छड़ लगाईजावे जिसका एक सिरा धरतीमें गड़ारहे और दूसरा मकानके ऊपर निकलारहे, बिजली ऊपरके सिरेपर गिरकर मकानको हानिपहुंचायेबिना छडकी रास्ताधर्तीमें समजायगी।विद्वान् तथा वैज्ञानिक होनेके अतिरिक्त यह देशहितैषी भी पक्केथे। यूनायटेड स्टेट (अमेरिका) की राजकीयसभामें इनको कुर्सी मिलतीथी और सन्धि तथा विग्रहमें भी इनकी अनुमति लीजाती थी।अमेरिकावासी अंग्रेजापर प्रथम इङ्गलैंडका आधिपत्य थालेकिन इन्होंने उद्योग करके उनको स्वतन्त्र कराया निदान उनसबने एकमत होकर इनको अपना प्रेसीडेन्ट (प्रधान) नियतकिया, इसस्वतंत्रताके विषयमें जो सन्धिपत्र लिखागयाथा उसपर फ्रैंकलिनमहोने हस्ताक्षरकियेथे। एकदफे किसी परदेशीमनुष्यने इनको खतलिखकर सहायता माँगी, इन्होने उसको १० अशर्फियें भेजीं और लिखा कि जब तुमको उऋणहोनेकी सामर्थ्यहो तो यह रकम किसी ऐसेही मनुष्यको देदेना जो तुम्हारीसी वर्तमानदशामें हो और जो कुछ मैंने तुमको लिखाहै सो उस को भी बतादेना। ऐसा करनेसे तुम उऋणहोजाओगे और इसरकमसे बहुतों का काम निकलेगा। स० ई० १७९० में ८५ वर्षके होकर मरे।

वेतालभट्ट—यह विक्रमादित्य हर्ष महाराजा उज्जैनके दर्बारके नवरत्ननामक ९ प्रसिद्ध पंडितोंमेंसे थे। "नीतिप्रदीप" नामक संस्कृत ग्रंथ इनका रचा हुआहै। वेतालपंचविंशतिका जिसका लल्लूलालजीने भाषानुवाद करके बेतालपचीसी नाम रक्खाहै, इनकी रचीहुई नहींहै, उसके कर्ता कोई शिवदासकवि हुयेहैं।

बेताल (भाषाकवि)-यह भाट थे ई. १८२० में राजा विक्रमसाह उरछा नरेशके दरबारमें थे। इनका पूरानाम सन्तोष राय बेताल्या और ये उर्दू भी खूब जानतेथे। इनके बनाये नीति सामयक छप्पय सुन्दरहैं।

बेदपाय-यह ब्राह्मण पंडित नौशेरवाँबादशाहइरानके दरबारमें था ई. की छठीशताब्दीमें था। वजीर बुजुर्गमेहरने इसके द्वारा हिंदोस्तानसे पंचतंत्र नामक ग्रंथ मंगाकर उसका अनुवाद पहिलुईभाषामें कराया। शतरंजके खेलका प्रचार भी प्रथम इसीने इरानमें किया।

बेनीमाधवदास (भाषाकवि)-यह महात्मा ब्राह्मण जि० गांडाके रहनेवाले वि. सं. १६५५ में जन्मे। गो० तुलसीदास इनके गुरुथे और इनही ने साथ रे बहुतदिनातक भ्रमण किया था। तुलसीदासजीका जीवनचरित्र इन्होंने "गुसाँईचरित्र" नामक पुस्तकमें लिखाहै। पद्पूर्तिके लिये यह अपना नाम "दास" लिखतेथे। वि. सं. १६९९ में सिधारे।

बेनीसिंह हुजूरी-यह पन्नानरेश हि दुपतिके दरबारमें दीवानके पदके भार थे और बड़े साहसी, दानी तथा वीर होकर कविकोविदोंके सम्मानीये। मरहठों तथा बाँदाके मुसल्मानोंको इन्होंने कई दफे परास्त किया। बुंदेलखण्डके भाट तथा कवीश्वर अबतक इनका यश गातेहैं। बिजयगढ़ौगढ़ (सप्पमदेश) के ठाकुर जगमोहनसिंह इन्हींके वंशज हैं।

बेला (रायपिथौराकीबेटी)-यह महावीर राजा परमालके पुत्र ब्रह्माको विवाहीगईथी। इसके गौनेपर विशापर परमाल तथा पृथ्वीराज (रायपिथौरा) की फौजमें घोर संग्राम हुआ जिसमें राजा परमालका सर्वनाश होगया और बेलाका पति ब्रह्मा भी मारागया। बेलाके वह आदमी मारे गये और पृथ्वीराजके बड़े २ वीरसामन्त चौंडियारायादि रणशाई हुये। बेला निजपतिका सिर गोदमें लेकर सतीहोगई। जिसस्थानपर सती हुईथी उस जगह बेलौन नामक नगर बसगया है और वहांपर एक मन्दर बनाहै जिसमें लाखों मनुष्योंसे बेलाभवानीनामसे पूजी जातीहै। दिल्लीमें एक लाटको बनवाई इसने राज्य ... थाईथी लेकिन मुसल्मानोंके हमलेके कारण वह पूरीतौरसे न बनसकी पश्चात् कुतुबुद्दीनने उसको पूरा ... कुतुब ...

बेकन (फ्रांसि ...)-यह इंग्लैंडनिवासी सरनि... गोल्डबेकनके पुत्र ... । मनुष्यों यशपनईमें दोनों हार ... देतेथे, ... रूप और ब्रिटिश ... ... ई० १६१० में ... वि ...

अंग्रेजी साहित्यमें अनुपम सामग्रीहैं, उक्त निबन्धोंका आशय कठिनहै। लार्ड-की पदवीभी इनको ब्रिटिशगवर्नमेंटने प्रदान कीथी। अन्तमें नमकहरामनौकरोंके कारण इनको घूसलेनेका दोषी ठहरनापड़ाथा।

वैजाबाई (दौलतरावसेंधियाकी रानी)—यह मरहठा सर्दार श्री जीरावघटकेकी बेटी ग्वालियरनरेश दौलतराव सेंधियाको ब्याहीथी। सेंधियाने यह विवाह ऐसी धूमधामसे कियाथा कि, खजानोंमें फौजकी तनख्वाह चुकाने तकको रुपया न रहाथा। बैजाबाई बड़ी मोहनीरूपथी एवं महाराजासेंधिया का उसपर बड़ा प्रेमथा। स० ई० १८२८ में बैजाबाई विधवा होगई, उसके कोई पुत्र न था और उसकी उम्रभी उससमय बहुतथोड़ीथी, सेंधियाने अपने जीतेजी किसीको गोदभी नहीं लियाथा, बाईकी इच्छा अपने पिताके वंश-मेंसे किसीको गोदलेकर गद्दीपर बिठलानेकी थी परन्तु सेंधियाके वंशमेंसे मुगत रावको उसे गोदलेनापड़ा। मुगतरावके बचपनमें बाई राजकाज बड़ीबुद्धि मानीसे करतीरही लेकिन जब बड़े होकर मुगतरावने सबकाम अपने अधिकारमें करनाचाहा तो रानीको यह स्वाकार नहुआ निदान मुगतरावने ब्रिटिशगवर्नमेंटकी शरण ली, उक्तगवर्नमेंटने बीचम पड़कर निबटारा किया और मुगतरावको महाराज जनकोजीसेंधियाके नामसे गद्दीपर बैठलादिया। बाई अपना धन, दौलत, सिपाहीलेकर आगरेमें आवसी, बाद ब्रिटिशगवर्नमेंटने बाईसे उसपदके अनुसार पेन्शन नियत करादी और फर्रुखाबादमें उसे रहिनेका हुक्म दिया। कुछसमयपीछे ग्वालियरदरबार ने बाईको कुछ और अधिक वार्षिक देनेका ठहराव इस शर्तपर किया कि वह द क्षिणमें अपनी जागीरपर जावसे। बाई यह बात मानकर वहीं जारही। स० ई० १८५७ के गदरमें बाईने बागीयासे सेंधियाके कुलबालाकी रक्षा की और उनके प्राण बचाकर क्षिप्रानदीके किनारे भागगई और वाहेंही विनोबाद परलोक सिधारी। फैनीपार्क साहिबकी मेम अपनी यात्राके ग्रंथमें लिखतीहै कि "जब मैं बाईसे मिलनेगई वह सुनहरी गद्दीपर बैठीथी, एकतरफ उसकी पौत्री गज राज साहिबभी विराजमानथी, नौकरनियें दोनों ओर दुशाले तथा सुनहरी वस्त्र लिहे आदरपूर्वक खडीथी, सेंधियाका खड्ग बाईके समीप गद्दीपर रक्खाथा, बाईके बाल सुफेदथे, मुसकान अत्यंत प्रियथी, निस्सन्देह युवावस्थामें वह बड़ीही मोहनीरूप रही होगी, हाथमें सुवणकी एक चूड़ीके सिवाय वह कुछ आभूषण नहीं पहिनेथी और विधवा होनेके कारण बहुतसे शारीरक कष्ट सहती तथा नेमव्रत रखतीथी। उसके मुखपर दैवीज्योति दीप्तमानथी और उसकी चाल ढाल अत्यन्त प्रशंसनीयथी"। रानीबैजा बाईने बनारसमें गंगा-घाट पत्थरका घाट बनवाना शुरू किया था लेकिन वह अधूराही पीछेकी

ओर घसक गया। घसका हुआ घाट अबतक पड़ा है, उसके देखनेसे माल्म होता है कि, यदि बनकर तैयार होजाता तो पृथ्वीपर अद्वितीय घाट होता। जब उज्जैनकी लूटका माल ग्वालियरमें लाया गया था तो रानी बैजाबाईने उसको अपने कोषमें इस विचारसे नहीं रखने दिया था कि, उसमें ब्राह्मणों तथा साधुओंकाभी धन अवश्य ही था और इसी कारण उस अटूट धनको बा... मे खजाँची गोकुलदास उपनाम पारखजीको देकर देवमन्दिर इत्यादि निर्माणकरानेकी आज्ञा दीथी। उसीधनसे पारखजीने मथुरामें द्वारिकाधीशका मंदिर बनवाया तथा मथुराके सेठ वंशकी मूलरोपण की।

बैजूबावरा (प्रसिद्ध संगीतज्ञ)—मशहूर गवैयोंकी सूचीमें इसका भी नाम है। यह बादशाह अकबरके वक्तमें हुआ कुछ पागलसा था और हर वक्त मन्दस्वरसे गाता रहताथा। जातिका ब्राह्मण था और पूरानाम इसका बैजनाथ था।

वैवस्वतमनु (भूमण्डलके प्रथमनरेश)—यह महाराजा सूर्यके पुत्र तथा कश्यपजीके पौत्र सब प्रजाओंके पति सबसे प्रथम राजा हुए। इन्होंने पुत्र इक्ष्वाकुने ४८ कोस लम्बी तथा १२ कोस चौड़ी अयोध्यानगरी बसाकर उसको अपना राजधानी बनवायाथा(देखोवाल्मीकीयरामायणबालकाण्ड७०सर्ग)। वेदोंके अनुकूल राजा तथा प्रजाके हितार्थ वैवस्वतमनुने "मानवधर्मसूत्र" रचा जिनके आशयपर बादको भृगुऋषिने "मनुस्मृति" बनाई। वशिष्ठ तथा गौतमकृतधर्मसूत्रोंमें मानवधर्मसूत्रोंका नाम आयाहै। मानवधर्मसूत्र लुप्तहोगये, अब नहीं मिलतेहैं। मनुका नाम थोड़े हेरफेरसे अनेकदेशोंकी प्राचीनपुस्तकोंमें मिलताहै जिससे ज्ञातहोताहै कि यह, पृथ्वीके पहिले चक्रवर्ती राजाथे। मिस्रदेशकी प्राचीन पुस्तकोंसे पता लगताहै कि वहांका सबसे पहिला बादशाह मेनुस बड़ा उपकारीथा। इसीप्रकार यूनानीभी कहतेहैं कि, मनुस ईश्वरका पुत्र सबसे पहिला हाकिम हुआ। मनुष्यशब्द मनुहीके सम्बन्धसे बनाहै। पृथ्वीपर प्रथम इन्हींने खेतीकरने, मकानबनाने, कपड़ेबुनने, भोजनबनाने तथा आपधर्म सम्बन्धी वार्ता बर्तावकरनेका प्रचार किया। मत्स्यपुराणके प्रथम अध्यायमें तथा महाभारतवनपर्वके १८७ अध्यायमें लिखाहै कि महाराज वैवस्वत मनुके समयमें पानीका तूफान आयाथा जिसमें सब सृष्टिभूपर नष्ट होगई थी केवल सात ऋषियों सहित महाराजा मनु जीते बचेथे। इस तूफानका अन्यदेशोंमें मार्यलि प्रवोगमें उल्लेखहै। ईसाईलोग म ई से३०१६ वर्ष पहिले इस तूफानका आना मानते महाराज मनु बड़े सत्यव्रत थे।

बैरमखाँ खानखाना–इसके पूर्वजोंने जो तुर्किस्तानके रहिनेवालेथे ६ पीढीतक तैमूरवंशमें चाकरी कीथी, इसने बड़े होकर मुगलसम्राट्हुमायूंकी चाकरी स्वीकारकी और सेनापतिके पदको प्राप्तहुआ । तैमूरकी सप्तम पीढ़ीमें हुमायूं हुआहै, इसने हुमायूंका हरहालतमें साथ दिया और इसीके बल पराक्रमसे हुमायूं अपना हिंदोस्तानी राज्य अफगानोंसे वापिसलेनेमें समर्थहुआ। जब हुमायूं शेरशाहसूरसे हारकर ईरानको भागा सो उस अवसरपर बैरम इसके साथ था, ईरानपहुंचनेपर हुमायूंको वहांके बादशाहसहिमासपने फौजकी मददवी और बैरमखांको खानखानाका खिताब दियाफौज लेकर हुमायूं तथा बैरम हिंदोस्तानको वापिसआये, बैरमने मच्छीवाड़ेके मैदानमें सिकन्दरसूर तथा उसके अफगानों को परास्तकरके और पानीपतके मैदानमें हेमूको परास्तकरके स ई १५५६ को बाल हुमायूंको पुन हिंदोस्तानका बादशाह बनादिया, पश्चात् हुमायूंने बैरमको अपने पुत्र अकबरका अतालीक नियतकिया और खानबाबाका खिताब दिया। इसके थोड़ेहीदिनबाद हुमायूं मरगया, अकबरकी उम्र उससमय १३ वर्षकी थी निदान राजकाज बैरम करतारहा । बैरमका राज्यप्रबन्ध अच्छाथा, परन्तु वह अत्यन्तघमण्डी तथा निर्दई होचलाथा, इसलिये सबलोग उससे बिगड़उठेथे । १८ वर्षकी उम्रमें अकबरने सब राजकाज अपने अधिकारमें करलिया, बैरमको यह बात बुरी लगी, एव उसने सर उठाया लेकिन परास्तहुआ । पश्चात् अकबरने उसे माफकरदिया और पेन्शनदेकर मक्काकी यात्राकेलिये भेजदिया। जब बैरम गुजरातके समीप पहुंचा तब एक मनुष्यने उसे मारकर अपने बापका बदला लिया । दर्बार अकबरीके नवरत्न अब्दुलरहीम खानखाना इसके पुत्रथे, इसका बनाया एक फार्सीदीवानभी मिलताहै पहिले इसकी कबर गुजरातमें बनवाईगईथी बादको इसके, अस्थिमानपदार्थोंको उखाड़कर मशहद (तुर्किस्तान) में दफनायागया, जहाँ कबर अबतक मौजूदहै । कहतेहैं कि एकदफे शेरशाहसूरसे हारकर बैरमखाँ गुजरातको भागाजाताथा,अबुलकासिम एक आधीनकर्मचारी साथमेथा, रास्तेमें शेरसूरके एक सेनापतिने आकर घेरलिया और अबुलकासिमकी दिव्यसूरत देख जाना कि यही बैरमहै । बैरमने तुरत आगे बढ़कर कहाकि " नहीं मैं बैरमहूं" । इसपर अबुलकासिम बोला "कि ये मेरा स्वामीभक्त सेवकहै और मेरे बदलेजानदेना चाहताहै" निदान अबुलकासिम मारा गया और बैरम बचगया ।

बैलेन्टायन (डाक्टर जे आर. बैलेन्टायन–Dr J R Wallantyne)– २६ भाषाओंके ज्ञाता विद्वान स० ई० १८४४ में इंगलैंडसे क्वीन्सकालिज बनारसके प्रिंसिपिल नियत होकर आयेथे । संस्कृतके अच्छे पंडितथे। इनकी तस्वीर अबतक क्वीन्सकालिज बनारसमें मौजूद है ।

—

बोपदेव–यह वैदिक धर्मके विरुद्ध चलताथा,वि० सं० की १२ वीं शता-ब्दीमें हुआ। महाभारतभाष्य, भागवतभाष्य, मुग्धबोध व्याकरण तथा पद्य दश इसके रचे ग्रंथहैं। इसका रचा व्याकरण पाणिनीय मतके विरुद्ध है और इसके रचे महाभारत तथा भागवतभाष्यका मतलब भी असली आशयसे विरुद्धही है। इस रचनासे अभिप्राय यह था कि व्यासकृत भागवत तथा महाभारतका प्रचार उठजाय पर वैसा न होसका।

बौद्धायन–इन्होंने वेदान्त सूत्रकी संक्षेपसे एक वृत्ति बनाईथी जो अब नहीं मिलती लेकिन उसका किसीसमय अधिक प्रचारथा।

व्यासमहर्षि–यह पराशरमुनिके पुत्र महाभारतके युद्धके समयमें हुए कविचंद "पृथ्वीराजरासो" में लिखताहै कि महाभारतका युद्ध ८१४ गतकलिमें हुआ और काश्मीरराजतरङ्गिणीकार प० कल्हण ६५० गतकलिमें इस युद्धका होना सिद्ध करतेहैं जिससे व्यासजीका जीवनकाल निर्णयहोसकताहै। यह यमुनानदीके किसी द्वीपमें उत्पन्नहोकर कृष्णवर्णके थे इसीलिये कृष्णद्वैपायन इनको कहते हैं यह वेदविद्यापारङ्गतथे और इसी कारण वेदव्यास कहेजातेथे। बदरिकाश्रममें भी ये बहुत दिनोंतक रहे थे जिससे इनका नाम बादरायण प्रसिद्ध होगयाथा। चारोंवेदोंको संग्रहकरके इन्होंने श्रेणीबद्ध कियाथा, इनसरीखा महाज्ञानी विद्वान् तथा बृहद् ग्रंथकार भूमण्डलपर दूसरा नहीं हुआ कविहोनेके सिवाय यह इतिहासकार, सूत्रकार, भाष्यकार, स्मृतिकार तथा महाविद्याप्रचारक भी थे। दिव्य भादिव्य तथा दिव्यादिव्य सबही चरित्रोंका इन्होंने स्वरचितग्रंथोंमें निरूपण करदियाहै। जैमिनि, वैशम्पायन तथ उग्रश्रवा सूत सरीखे३५०००प्रख्यात विद्वान् इनके शिष्यथे और शुकदेवजी इनके पुत्रथे। इन्होंने वेदोक्त देवासुरसंग्राम तथा ऋषिप्रक्रियादिभेदक आशयपर पुराणसंहिता रचकर अपने शिष्य लोमहर्षण सूतको पढ़ाईथी, पश्चात् लोमहर्षणके पुत्र उग्रश्रवाने पुराणसंहिताम अपन प्रभेत्तर मिलाकर भिन्नभि १८ पुराण पृथक् २ रचे–मत्स्य पु० मार्कडे पु० भविष्य पु० भागवत पु०ब्रह्मवैवर्त पु०ब्रह्माण्ड पु० ब्रह्म पु० वाराह पु०अग्निपु०विष्णुपु० वामनपु० लिङ्गपु० गरुड़पु० कूर्मपु० स्कन्दपु०पद्मपु० शिवपु० और मारद पु० भारतनामइतिहासभी इन्होंने २४००० श्लोकोंमें बनायाथा पश्चात् विद्वानोंने भिन्न २ समयम होकर बढ़ाते और उपाख्यान उसमें मिलादिये, तब १ लक्षश्लोकोंसे पूर्ण होकर यह महाभारतनामसे नामहुआ है सोमकार उपरोक्त १८पुराणोंमेंभी अनेकानेक धर्मविरोधी पण्डितोंने पीछेसे बहुतसी बातें मिलादीहैं कि जिनसे पुराणोंकी मान्यतामें बहुत न्यूनता आपड़ीहै। इन्हीं विधर्मियोंने पुराणोंकी मर्याद अनेकप्रकार गाथाके हेरफेरसे परस्पर विरोधभी करदियाहै कि, जिससे पुराण भिन्न

योग्य दृष्टि गोचर नहोकर आधुनिक प्रतीत होते हैं। वर्तमान काळतक इसतरह की मिलावट पुराणोंमें होतीरहीहै क्योंकि, पद्मपुराणमें अत्यंत नवीन माधवआदि काकी प्रशंसाहै। विजयमुक्तावली तथा वेदान्त सूत्रभी व्यासकृतहै और १८ उप पुराणोंमें वर्णित अनेकविषयभी व्यासप्रणीतहैं परंतु इसमें भी शक नहीं कि, एक हजार वर्षके भीतरही भीतर उपपुराणोंका परिवर्तन अनेक विद्वानोंके द्वारा वर्तमान दशामें हुआहै। पार्सियोंकी धर्मपुस्तक जेन्दावस्तामें लिखाहै कि महर्षि व्यास, जरदश्तसे शास्त्रार्थ करने बल्लखुखारा गयेथे, शास्त्रार्थमें शाहइरान भी मौजूदथा और विषय यह था कि "यदि मनुष्य अन्याय कर सकता है तो देहधारियोंमें सर्व्वोत्तम क्यों है"। इन्होने एक दूरदर्शक यंत्रभी बनायाथा, हिन्दूलोग इनकी गणना अवतारोंमें करतेहैं, वास्तवमें इन्होने ऐसे कामकिये जो मनुष्यको करना कठिनहै। बडे़२ राजा महाराजाओंकी गद्दियें नष्ट होगईं परंतु व्यासगद्दी भारतमें लगी हुईहै, प्रत्येकवर्ष आषाढ शु० १५ के दिन घर २ व्यासपूजा होतीहै और "नमोस्तुते व्यासविशालबुद्धे" की ध्वनि गूंजतीहै। व्यासजी दीर्घजीवीहुये, चन्द्रवंशकी प्राय ५ पीढियोंने इनके सामने राज्यकिया, धृतराष्ट्र तथा पांडूने इन्हीके वीर्यसे राजा विचित्रवीर्यकी विधवा रानियोंके उदरमें गर्भधारण कियाथा (देखो भीष्म पितामह)।

बृजवासीदास (भाषाकवि)—यह वृन्दावनवासी ब्राह्मण स० ई० १७५१ में जन्मे यह बडे़ श्रीकृष्णोपासकथे, स० ई० १७७० में इन्होने ब्रजविलास ग्रंथ भाषापद्यमें रचा ब्रजविलासमें श्रीकृष्णचन्द्रकी अनेक लीलायें वर्णित हैं।

ब्रजनिधिकवि—देखो प्रतापसिंह सवाई।

वृन्दकवि (वृन्दसतसईकेकर्ता)—इन्होने ७५१ नीतिके दोहे बनाकर उनके संग्रहका नाम वृन्दसतसईरक्खा। वृंदसतसई वि० सं० १७६१ की साल ढाके में सम्पूर्ण हुई। "भावपंचाशिका" नामक ग्रंथ भी इन्हींका रचा हुआ है।

ब्रह्मकवि—देखो बीरबल।

ब्रह्मगुप्त (ज्योतिषी)—इनके बापका नाम जिष्णु था, उज्जैनके रहनेवालेथे और चापवंशी राजा व्याघ्रमुखके समयमें हुयेथे। मिस्टर बेन्टली साहब स० ई० ५२७ में इनका होना सिद्ध करतेहैं। ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त तथा खण्डखाद्य नामक ग्रंथ इनके रचेहुयेहैं। इन्होने ब्रह्मकल्पकी गणनाका प्रकार स्थापनकिया कि, जिसपर आधुनिक ज्योतिषका आधारहै और ऐतिहासिक सम्वतोंका भी जिसके अनुसार परिवर्तन हुआहै (vide Asiatic Researches Vol. VIII. P P 236-7)

ब्लैवेटस्की (मेडम ब्लैवेटस्की)--यह थियोसोफी धर्मकी मूल रो पणकर्ता एक फौजी अफसरके घर स ई १८३१ की साल मुल्करूसमें पैदाहुईथी बचपनमें यह बहुधा बीमार रहिसीथी,१७ वर्षकी उम्रम इनकी शादी अमेरिकाके एक गवर्नरके साथ जो६० वर्षका था हुइ लेकिन उक्त सम्बन्ध इनको पसन्द नहीं आया एवं विवाहका बन्धन तोड़ना पड़ा । पश्चात् यह देशाटनके विचारसे हिंदोस्तानको आई और तिब्बतम कईवर्षतक रहकर महात्मासिद्धोंस योगकी शिक्षा पाइ तथा अध्यात्मविद्या (मेस्मेरिज्म) सीखी । बादको मिश्र तथा रूस होती हुई अमेरिकाको वापिस गई और वहाँके लोगोंको अनेक कारम दिख लाये, स० ई० १८७४ मे कर्नल आल्कट साहब इनके शागिर्द हुये जिनकी मददसे इन्हाने थियोसोफिकेल सोसाइटी स्थापन की लेकिन पादरीलोगोंने सफ लता नहीं होनेदी । निराशहोकर यह कर्नल आलकटसाहबसहित स ई १८७९ की साल हिंदोस्तानको वापिसआई, बड़े २ शहरोंम जाकर उपदेश दिये और हिन्दूधर्मकी बड़ी प्रशसा की तथा अनेक करिश्मे दिखलाये, इन मुबबातोंके प्र भावसे मदरास इत्यादिनगरोंमें थियोसोफिकेलसमाजें स्थापनहोगईं जिनमें बड़े २ विद्वान् शरीकहोगये हिंदू मुसल्मान् पार्सी इसाई सबही रूजूहुये । हमारा रुपये फीसके आनेलगे, बड़ी २ किताब तथा समाचारपत्र छपने लगे, और हरतरफ टेबिल टर्निङ्, प्लांचेट तथा मेस्मेरिज्मकी चर्चा फैली । हिंदोस्तान लंदन तथा अमेरिकाम इनके मतानुगामी बहुत हैं । थियोसोफिकेल सोसाइटीके "थियोसो फिष्ट" नामक मासिक पत्रका सम्पादन पहिले कई वर्षतक इन्हीं ने किया था । यह महाभारत, रामायण तथा भागवतादि पुराणोंकी कथानकोंको जो साधारण बुद्धिके मनुष्योंकी समझम न आनेके कारण असम्भवगिनी जाने लगीं, सर्वथा सत्य और सम्भवजानतीथीं । वास्तवमें ब्रह्मबुद्धिकी मानधी, मांसाहार नहीं करती थीं और विद्या तथा बुद्धिबलसे तिब्बत्य ऋषीकी अनेक आश्चर्यजनक बातें लेखके तौरपर करके दिखा देती थीं --

१ नष्ट वस्तुका कइ वर्षपीछे पता लगाना ।

२ जंगलोंम बरसन तथा खानेपीनेकी चीजें तुरन्त मगाऊना ।

३ टूटी रकाबी तथा अन्यपात्र साबितकरदेना ।

४ मुर्दोंकी रूहाको बुलाकर उनसे बात करना तथा उनकी सूरत दिखलाना ।

५ डाकके द्वारा पत्रोंका उत्तर मंगाना ।

भगवतसिंह (सरभगवतसिंह, जे०सी०आइ०ई०, एम०डी०,एम०आर०सी० पी०एफ०आर०, एल०एल०डी० गोंडलनरेश)--यदुवंशी ठाकुर संग्रामजीके घर

स.ई १८६५ की साल आपका जन्म हुआ। पिता आपको४वर्षका छोड़कर सिधारगये थे, ९ वर्षकी उम्रमें आपको राजकोट कालिजमें पढ़नेके लिये भेजागयाथा और वहाँ कईवर्षतक पढ़नेके उपरांत अंग्रेज शिक्षक मैक्नाकसाहबके साथ विशेष विद्यापठनार्थ बृटिश गवर्नमेन्टकी आज्ञासे यह यूरूपको गये। स ई १८८३ मे यूरूपसे हिंदोस्तानको वापिसआये और अपनी यात्राका वृत्तान्त कई भाषाओंमें पुस्तकाकार छपवाया। कुछहीदिनोंबाद स ई १८८४ में आपका राज्याभिषेक हुआ, उसी साल बम्बईकी यूनीवर्सिटीने आपको अपना फेलो नियत किया। राज्याभिषेकके समय प्रजागणपर जो राज्यका ऋणथा वह आपने छोड़दियाथा। स ई १८८६ में आप स्काटलैंडको पधारे और १५ महीने एडिन्बरो यूनीवर्सिटीमें रहकर एल एल डी की उपाधि पानेमें समर्थहुये। श्रीमती विक्टोरियाकी जुबिलीके अवसरपर भी काठियावाड़ी रईसोंकी तरफ़से आप इङ्गलैंडको पधारेथे और इसीअवसरपर के सी आई ई का खिताब आपको मिलाथा। स ई १८८७ मे आपकी सलामी तोपके ११ फैरोंकी नियतहुई। स ई १८९० म रानीसाहब का इलाज कराने आप फिर इङ्गलैंड जाकर दोवर्ष ठहिरे, इस अवसरपर एडिन्बरो यूनीवार्सिटीने एम बी, एम डी तथा एम आर सी की उपाधियें और आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने डी सी एल की उपाधि आपको प्रदान की। स ई १८९१ में आस्ट्रेलिया, अमेरिका, चीन, जापान तथा लंका होतेहुये आप निजराजधानीको पधारे। आपके समयम रियासत गोन्डलमें अनेक सड़कें, स्कूल, हस्पताल, पुंगीघर, धर्मशाला, मुहताजखाने, डॉकघर, तारघर और न्यायालय बनायेगये हैं। भूखो तथा रोगियोंको अन्न वस्त्र और औषधि देनेका आपने स्वराज्यमें अच्छा प्रबन्ध कियाहै, शिक्षा विभागकी भी बहुत कुछ उन्नति आपके शासनमें हुईहै। इन्हीं शुभयत्नोंके कारण बृटिश गवर्नमेन्टने आपके राज्यकी गणना दूसरे दर्जेसे पहिले दर्जेमें कीहै, प्रजागणने भी आपकी अत्यंत सुंदर पाषाण मूर्ति बनवाकर शहिरमें पधराई है। आपने प्रजापरसे अनेक दुःखदाई कर उठादिये हैं और अपने हुक्मसे स्वराज्यमें व्यय बढ़कर दिया है। "भावनगर गोन्डल" तथा "गोन्डल पूर्वन्दर" रेलवे में आप ५० लाख रुपयेके शरीक हैं। जुग २ जियो ! परोपकारी नृप।

भगवन्तदास—देखो भगवान्दास कछवाहे।

भगवान्दास कछवाहे (जयपुरनरेश)—निज पिता बिहारीमल के बाद गद्दीपर बैठे, आमेर आपके वक्तमें राजधानी थी। आपने अकबरके पुत्र शाहिजादे सलीमको अपनी बेटीका डोला दियाथा और अकबरने आपको अमीरुल उमराका खिताब, पंचहजारीका मनसब तथा पंजाबकी सूबेदारी दी थी। गुजरातमें तथा राना चितौड़से लड़कर आपने सफलता पाई थी। अ

नाम अकबरने आपको जाबुलिस्तानका हाकिम नियत किया, वहाँ जाना आपको पसन्द न था लेकिन जानापड़ा, जब अटक पार पहुंचे तौ बीमार हो कर पागल होगये और इलाज करनेके लिये जब हकीम आपके सामने आया तौ आपने छुरी भाकली लेकिन शाही हकीमोंकी कोशिशसे शीघ्रही आरामहोगया। मथुरामें एक बड़ा भारी मंदिर जिसको औरंगजेबने ढवा दिया और गोवर्धनमें हरदेवजीका मंदिर आपने बनवाया था। आप वि० सं० १६४५ की साल लाहौरमें परलोकगामी हुये और राजा मानसिंह आपके दत्तक पुत्र गद्दीपर बैठे।

भगवतीदास (भाषाकवि)—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण सिन्गवाँ ग्राम जि० फीरोजाबादके वासी थे। नासिकेतोपाख्यान वि० स० १६८८ में इन्होंने बनाया। वि० स० १७१४ में मरे।

भगवत रसिकजी (भाषाकवि)—यह हरिदास स्वामीके शिष्य थे, ब्रजमें रहते थे स० ई० १६७४ में जन्मे थे। इनके पिताका नाम माधव दास था। इनके रचे बहुतसे ग्रंथहैं जिनमसे थोड़ोंहीके नाम नीचे लिखतेहैं—

अनन्य निश्चयात्मक, निश्चयात्मक, श्रीनित्य विहार युगल ध्यान, निर्णय मनरंजन, अनन्य रसिका भरन और भगवत रसिकजीकी बाँणी।

भट्टनारायण (वेणीसंहार नाटकके रचयिता)—यह उन ५ ब्राह्मणोंमेंसे थे जिनको बंगालाधिपति आदीसुरने स०ई० १०७२के लगभग कनौजसे बुलाकर बंगालमें बसाया था। यह अच्छेदर्जेके सुकवि थे। काशी मरणमुक्ति विचार, प्रयोग रत्न, वेणीसंहार नाटक और गोभिल सूत्र भाष्य इनके रचे ग्रंथ हैं। इनके वंशोत्पन्न ब्राह्मणोंको बन्धोपाध्याय (बनर्जी) कहते हैं।

भट्टलि (ग्रामीन कवि)—इनके रचे भड्डलि पुराणकी एक प्रति जो वि सं १८६० की लिखी है, विद्या प्रचारिणी जैनसभा जयपुरके पुस्तकालयमें विद्यमान है। भड्डलिपुराण पद्यमें है, उसकी भाषा ग्रामीन हिन्दी है और इसमें ज्योतिषके मुहूर्त्त तथा पानी बरसने इत्यादिके शकुन हैं। भड्डलि एक प्रकारका ज्योतिषी तथा कवीश्वर था और इसके ग्रंथमें उन्हींने मतानुकी बातें भी हैं।

भट्टभास्कर—तैत्तरीयसंहिताका भाष्य, रुद्राध्यायका वार्तिक, वेदान्तसूत्रका भाष्य तथा " ज्ञानयज्ञ " नामक यजुर्वेद भाष्य इन्होंने रचेथे। " ज्ञानयज्ञ " के देखनेसे विदित होता है कि ये वि० सं० की ११ वीं शताब्दीके प्रथमार्द्धमें विद्यमान थे।

भट्टराघव–(न्यायसार विजयके कर्ता) ये वि० सं० ११९६में जीवितथे।

भट्टिकवि–(भट्टिकाव्यके रचयिता) पताळगता है कि, यह वल्लभी राजा श्रीधरसेनके समकालीनथे । बद्रीपुरीमें राजा वीतरागके पुत्र वसन्तरागका एक दानपत्र मिलाहै जिससे विदित होताहै कि, महाकवि तथा प्रसिद्ध वैयाकरण भट्टि वि सं ३८० म विद्यमान थे (देखो प्राचीनलेखोंके विषयमें डाक्टर फीलहहार्नसाहबका अंग्रेजी ग्रंथ) । डाक्टर भाउदाजी अनेक कारणोंसे इनको भर्तृहरिजीका पुत्र अनुमान करते हैं । भट्टिकाव्य वल्लभी भाषामें है, उसमें १२ सर्ग हैं और उसमें रामकथा तथा व्याकरणका साथ २ वर्णन है ।

भट्टपाद–पं कुमारिल भट्टकी उपाधि भट्टपादथी (देखो कुमारिल भट्ट) । भट्टपादके गुरु प गौड़पादाचार्यथे। भट्टपाद प्रयागके रहनेवाले थे।

भट्टोजिदीक्षित–(सिद्धान्तकौमुदीके रचयिता) ये काशीवासी महाराष्ट्रब्राह्मण वि सं की १७ वी शताब्दीमें हुए, इन्होंने पाणिनिसूत्रोंके क्रमसे महाभाष्यका सारभूत " शब्दकौस्तुभ " नामक व्याख्यान रचा और " सिद्धांतकौमुदी " नामक उदाहरणसहित पाणिनिसूत्रवृत्ति रची । सिद्धांतकौमुदीमें प्रस्तुत सन्धिआदिकार्योंके विधायक सूत्रोंको छाँटकर पृथक् २ प्रकरण बनादिये हैं और जिसप्रकरणमें जिन २ सूत्रोंकी आवश्यकता पड़ी है वह सूत्र भी उन्हीं प्रकरणोंमें वृत्तिसहित संयुक्तकर दिये हैं । " मनोरमा " नामक सिद्धांतकौमुदीकी टीकाभी भट्टोजिदीक्षितकृत है । धर्मशास्त्रमें तिथिनिर्णय, तंत्राधिकारनिर्णय इत्यादिग्रंथ इन्हींके रचेहुये हैं । पं० हरदीक्षितजी इनके पौत्र थे (सो देखो) इनके पिताका नाम पं० लक्ष्मीधर था । लघुसिद्धांतकौमुदीके रचयिता पं० वरदराजइत्यादि अनेक विद्वान् इनके शिष्यथे।

भवभूति कवि–इनका दूसरा नाम श्रीकण्ठथा, बरारमें एक ब्राह्मणके घर इनका जन्म हुआथा और कुमारिलभट्ट इनके गुरुथे । महाराजा यशोवर्म्मने कन्नौजनरेशके दर्बारमें इनका सत्कार होताथा, जब ललितादित्य कश्मीर नरेशने कन्नौज विजय किया तो वह इनको अपने साथ लेगया । मालतीमाधवनाटक, महावीरचरित्र तथा उत्तररामचरितनाटक इनके रचेहुये हैं । कविकालिदासने स्वयं उत्तररामचरितनाटककी प्रशंसा की है–

श्लो०–नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा ।
उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते ॥

प्रोफेसर विलसन साहबके मतानुसार भवभूतिकविश्वर स ई ७१८ म विद्यमान थे । यह भवभूति कवि दूसरे थे जिन्होंने काशीसे आकर राजा भोजके दबारम सत्कार पाया था और जिनकी प्रशंसामें कविकालिदास इने कहा था कि–

श्लो०-अहो मे सौभाग्यं मम च भवभूतेश्च भणितम् ।
घटयामारोप्यमपि फलति तस्यां कथमिति ॥

भवानी-(बंगालप्रदेशान्तर्गतनाटोरकी पुण्यात्मा रानी) यह राजशाही जिलेमें छातिनगाँवके चौधरी आत्माराम ब्राह्मणकी पुत्री नाटोरके राजा रामजीवन रायके पुत्र रामकान्तको ब्याहीथी । यह जैसी सुंदरी थी वैसीही सुलक्षणी थी, बचपनहीसे धर्म और परोपकारमें निष्ठावतीथी । दयारामदेवजी राजारामजीवनका पुराना शुभचिन्तक दीवानथा, रामकान्तको रियासतके काममें बेफिक्र देख एकदिन दयाराम समझानेलगा जिससे नाराज होकर रामकान्तने दयारामको निकालदिया । दयाराम जमींदारीके काममें बड़ाआलापकथा निदान बंगालके सूबेदार अलावर्दीखाँके यहां जाकर नौकर होगया । एकदिन अवसर पाकर दयारामने अलावर्दीसे कहा कि "जहाँ पनाह ! राजा रामकान्तके १२ लाखरुपये घरमें जमाकियेहुए हैं और दोलाखरुपयेका एक सरपेच मोललियाहै परंतु सरकारी मालगुजारी नहीं देताहै" । अलावर्दीने तुरन्त हुकम दिया कि रामकान्तका घरबार लूटलिया जावे और उसके चचेरेभाई देवीप्रसादको गद्दीपर बिठलादिया जावे । हुकमपातेही फौजने जाकर राजबाड़ी घेरली, रामकान्त रानी भवानीसहित चोरदरवाजसे निकल मुर्शिदाबादको भागा । भवानी उनदिनों गर्भिणीथी, जिसपरभी पैदलचलनापड़ा लेकिन आपदाकी मारी उसीतरी भागीगई मुर्शिदाबाद पहुँच दम्पतिने जगत्सेठकी शरणली । कईवर्षपीछे एकदिन राजा रामकान्तने खिड़कीमेंसे दयारामको पालकीपर जातेहुवे देख पुकारकर कहाकि "दयाराम ! हमको इस विपत्तिमें कबतक रक्खोगे" । दयाराम तुरंत रामकान्तके पास आया और अपने पुराने स्वामीकी दीनदशा देख कहनेलगा कि, यदि ५० लाखरुपये हो तो थोड़ेहीदिनमें फिर तुमको राज्य दिलवा सकताहूं । रामकान्तने ठंढीसाँसभरकर कहा कि, मैं तो आजकलह रोटीतकको पराधीन हूं । रानीभवानीने पतिको अधीरदेख अपने सब आभूषण उतार दिये और दयारामने उसको अब सब दुकानदारों तथा रास्तेमें बैठनेवालेलोगों और अलावर्दीखाँके समीपरहनेवाले नौकरोंका ५ से ५० तक रुपये बाँटकर कहदिया कि, जब देवीप्रसाद दरबारसे निकलने आवे तो उसे सुनाकर यह कहदेना कि "देखो, यह वही भाग्यहीन जाता है" । जब देवी प्रसाद आया तो हजारों मनुष्योंने उसपर आवाजें कसे निदान यह अलावर्दीके सामने जाकर रोया । अलावर्दीने कहाकि जिसको सबसाधारण भाग्यहीनकहे वह अवश्यही भाग्यहीन है और दयारामसे पूछा कि क्या कोई और रामजीवनके वंशमें गद्दीके लायक नहीं है । उत्तरमें दयारामने कहा कि, उनका बेटाही मौजूदहै । तदोपरान्त रामकान्तको

सम्सर्ग का खिल्लत दियागया और देवीप्रसाद निकाला गया । तबसे रामकान्त दयारामको बहुत मानतारहा और १६ वर्षराज्यकरके सिधारा। रानीभवानीके कोई सन्तानमनथी अत रियासतका काम उसे खुद सम्हालनापड़ा। यह बड़ी पुण्यात्मा थी, दानधर्ममें बड़े २ राजाओंको मातकरतीथी, १ लाख ८० हजार रुपये प्रतिवर्ष पंडित, साधु, सन्त, बैरागियोंको दियाजाताथा और ५ लाख बीघे जमीन मुआफीमें देरक्खी थी, परदेशीयात्रियोंकेलिये ३०० मकान काशीमें मोलालियेथे, अनेक बङ्गवासियोंको जो काशीवास करने आतेथे आजन्म भोजन वस्त्र दिया जाताथा । काशीमें विश्वेश्वरनाथ, अन्नपूर्णा, दुर्गा, तारा, राधाकृष्ण इत्यादिके मंदिर तथा गया, नाटौर, राजशाही और मुर्शिदाबादमें अनेकानेक मंदिर उसने बनवायेथे । काशीमें पञ्चकोसीकी सड़कपर पेड़ लगवायेथे तथा कुँवे खुदवाये थे, कई धर्मशालायें और तालावभी खुदवायेथे, सदाव्रतभी जारी कियाथा जो नित्यप्रति ८ मन भीगे चने तथा २५ मन चाँवल काशीमें बाँटताथा और १०८ मनुष्योंको प्रतिदिन इच्छाभोजन करायाजाताथा । जीवजन्तु पक्षियोंके चुगानेकेलिये तथा चीटीयोंके बिलोंमें शक्करडालनेकेलिये आदमी नौकरथे, ८ वैद्यभी नौकरथे जो रियासतभरमें औषधिलेकर घर २ घूमतेथे और उनके साथ बीमारोंकी टहलकेलिये सेवकभी रहतेथे । हरवक्त महारानीतक दरिद्रीलोग नहीं पहुंचसकतेथे निदान आज्ञाथी कि १ रु० तक पोतदार, ५ रु० तक खजाञ्ची, १० रु० तक मुरशदी और १०० रु० तक दीवान जिसको चाहसमझे विनापूछे देदेंथे महारानीके चाकर भी अपनी स्वामिनीके समानही धार्मिक थे । रियासतभरके ब्राह्मणोंकी कन्याओंका खर्च राज्यकोषसे दियाजाताथा, नवरात्रिमें ५० हजार रु० पंडितोंको और दोहजार वस्त्र तथा नथनिये सुहागिनियों तथा कुमारियोंको दीजातीथी । एकसाल इलाकेकी आमदनी आनेमें देरहुई तब महारानीने वस्त्र आभूषण बेंच जो जिसका निश्चय था वह चुका दिया पर वचन नहीं तोड़ा । महारानी नित्य च्यारघड़ीके तड़के उठकर भजन करतीथी, प्रातःकाल स्नान करके पूजा पाठ करतीथी और धर्मशास्त्र सुन तीथी, फिर कुछ जलपान करके अपने हाथसे रसोई बनाती और १० ब्राह्मणोंको जिमाकर आप भोजन करतीथी । पश्चात् दीवानखानेमें कुशासनपर बैठ काम काम करतीथी और कागजोंपर हस्ताक्षर करतीथी । सन्ध्यासमय च्यार घड़ीतक ईश्वराराधन करके भोजन करती तत्पश्चात् डेढ़पहररात गये तक राजकाजकी सुधि लेती तथा दर्बार करतीथी । ३२ वर्षकी उमरमें विधवा हुईथी और ८९ वर्ष की उमरम ५० करोड़ रु० धर्मार्थ खर्च करके बैकुंठवासिनी हुई । महारानीके दत्तकपुत्र रामकृष्णको मुगलसम्राट् शाहआलमने " महाराजाधिराज पृथ्वीपति बहादुर"का खिताब दियाथा । सन् ई० १७५७ में महारानी मौजूदथी "।

श्लो०—अहो मे सौभाग्यं मम च भवभूतेश्च भणितम् ।
यदस्यामारोप्यमपि फलति तस्यां लयेमनि ॥

भवानी—(बंगालप्रदेशान्तर्गतनाटौरकी पुण्यात्मा रानी) यह राजशाही जिलेमें छातिनगाँवके चौधरी आत्माराम ब्राह्मणकी पुत्री नाटौरके राजा रामजीवन रायके पुत्र रामकान्तको ब्याहीथी । यह जैसी सुंदरी थी वैसीही सुलक्षणी थी, बचपनहीसे धर्म और परोपकारमें निष्ठावतीथी । दयारामसेठी राजारामजीवनका पुराना शुभचिन्तक दीवानथा, रामकान्तको रियासतके काममें बेफिक्र देख एकदिन दयाराम समझानेलगा जिससे नाराज होकर रामकान्तने दयारामको निकालदिया । दयाराम जमींदारीके कामम बड़ाकुशलथा निदान बंगालके सूबेदार अलावर्दीखाँके यहां जाकर नौकर होगया । एकदिन अवसर पाकर दयारामने अलावर्दीसे कहा कि "जहाँ पनाह ! राजा रामकान्तने १२ लाखरुपये घरमें जमाकियेहैं और दोलाखरुपयेका एक सरपेच मोललियाहै परंतु सरकारी मालगुजारी नहीं देताहै" । अलावर्दीने तुरन्त हुक्म दिया कि रामकान्तका घरबार लूटलिया जाये और उसके चचेरेभाई देवीप्रसादको गद्दीपर बिठलादिया जाये । हुक्मपातेही फौजने जाकर राजबाड़ी घेरली, रामकान्त रानी भवानीसहित चोरदुवाजेसे निकल मुर्शिदाबादको भागा । भवानी उनदिनो गर्भवती थी, जिसपरभी पैदल चलनापड़ा लेकिन आपदाकी मारी ज्यौंत्यौं भागेगये मुर्शिदाबाद पहुँच दम्पतिने जगत्सेठकी शरणली । कईवर्षपीछे एकदिन राजा रामकान्तने खिड़कीमेंसे दयारामको पालकीपर जातेहुवे देख पुकारकर कहाकि "दयाभाई ! हमको इस विपत्तिमें कबतक रक्खोगे । दयाराम तुरंत रामकान्तके पास आया और अपने पुराने स्वामीकी दीनदशा देख कहनेलगा कि, यदि ५० लाखरुपये हों तो तीनहीदिनमें फिर तुमको राज्य दिलवा सकताहूं । रामकान्तने ठंडीसाँसभरकर कहा कि, मैं तो आजकल रोटीतकको पराधीन हूं । रानीभवानीने पतिको अधीरहोते देख अपने सब आभूषण उतार दिये और दयारामने उसको सब सब दुकानदारों तथा रास्तेमें बैठनेवालेलोगों और अलावर्दीखाँके समीपरहनेवाले नौकरोंको ५ से ५० तक रुपये बाँटकर कहदिया कि, जब देवीप्रसाद सरकारसे मिलनेको आवे तो उसे सुनाकर यह कहदेना कि "देखो, यह बड़ा भाग्यहीन जाता है" । जब देवी प्रसाद आया तो हजारों मनुष्योंने उसपर आवाजेकसे निदान वह अलावर्दीके सामने जाकर रोया । अलावर्दीने पूछाकि जिसको सबलोग भाग्यहीनकहते वह अभागा आपकाहीहै और दयारामसे पूछा कि क्या कोई और रामजीवनके वंशमें गद्दीके लायक नहीं है ? उत्तरमें दयारामने कहा कि, उनका बेटाहो मौजूद है । तत्काल रामकान्तको

पुष्कलावतनामकपुरी उनके लिये बसादी। फिर कईवर्षतक उस देशमें रहकर भरतजीने निज पुत्रोंका राज्य पुष्ट किया, पश्चात् अयोध्याको लौट आये।

भरत चंद्रवंशी—यह महाराजा दुष्यंतके पुत्र शकुन्तलाके गर्भसे जन्मेथे यह बड़े पराक्रमी नरेश थे, इसदेशका नाम भारतवर्ष इन्हींके सम्बन्धसे पड़ा इनकी ९ वीं पीढ़ीमें कौरव पांडवहुए।

भरत—इसनामके एक विद्वान्ने प्राचीनसमयमें होकर "नाट्य "शास्त्र" रचाया जो अबभी मिलता है।

भर्तृहरि (नीत्यादिशतकत्रयके कर्ता)—इनके पिता गंधर्व सेनको धारानगरीके राजाकी कन्या विवाहीथी जिसके गर्भसे विक्रमादित्य का जन्म हुआ, भर्तृहरिने गंधर्वसेनके वीर्यसे धारानरेशकी एक दासीके उद रमें गर्भधारण कियाथा। धारानरेशके कोई पुत्र नहींथा इसलिये उसने इन दो नो लड़कोंका पालन पोषण किया और अनेकशास्त्रोंकी शिक्षा दिलवाई। जब यह लड़के युवावस्थाको प्राप्तहुये तो धारानरेशने अपनेको अत्यंत वृद्ध समझ राजपाटका भार विक्रमादित्यको सौंपना चाहा लेकिन उन्होंने कहाकि " बड़े भाई भर्तृहरिके होतेहुये हमको राज्य सिंहासनपर बैठना उचित नहींहै एवं हम उनका मंत्रित्व करेंगे" । यह सुन धारानरेशने भर्तृ हरिको राज्य सौंपा और विक्रमादित्यको मंत्रीके पदपर नियुक्तकिया लेकिन भर्तृहरि अत्यंत विद्वान् होनेपरभी ऐसे स्त्रैणथे कि, अहर्निश रनिवासमें रहकर राजकाजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देतेथे। इनके दो रानियें थीं, एकका नाम पिंगला और दूसरीका अनङ्गसेना था, पिंगला पतिव्रता थी, और अनङ्गसेना दुश्चारित्रवाली थी लेकिन राजाको यह हाल विदित नहींथा एवं वह दोनोंको अत्यंत प्रेमकर्ताथा। एक दिन राजाने शिकारसे लौटकर किसी स्त्रीकी सतीपनकी जिसको उसने सती होते देखाथा, पिंगलाने यह सुनकर कहाकि पतिव्रता स्त्री तो पतिकी मृत्युकी खबर सुनतेही प्राण त्यागदेतीहैं, लेकिन राजाको इसबातका विश्वास नहीं हुआ निदान परीक्षाकरणार्थ उसने एकदिन कईकर्म चारियोंके द्वारा रक्तमें भिगोकर अपने कपड़े रानीके पास भेजदिये और कहलाभेजा कि " राजाको शेरने खालिया"। पिंगलाने इसवृत्तान्तके सुनतेही प्राण त्यागदिये। राजाने जब भवनपर आकर हाल सुना तो अत्यंत शोकातुर हुआ लेकिन इसचरित्रसे उसका प्रेम दूसरीरानी अनङ्गसेनाकी तरफ दुगणा होगया क्योंकि दोनोंकी जगह अब एकही रानी रहगईथी जो अपनेको परम पतिव्रता बतलाकर राजाको निरंतर भरमातीरहती थी। निदान राजा उसके प्रेममें मुग्धहोकर पहिलेसभी अपेक्षा अधिक राजकाजकी तरफसे बेपरवाई करने लगा। यह देख विक्रमादित्यने राजाको कई दफे सचेतकिया लेकिन उसने

भरत (सूर्यवंशीनरेश)—यह महाराज रामचंद्रसे अनेक पीढ़ी पहिले हुये। महाराज सूर्यके वृत्तान्तमें इनका वंशवृक्ष देखो।

भरत (राजादशरथके पुत्र)—यह रानीकैकेयीके उदरसे जन्मे, बचपनहीमें नाना अश्वपति केकयाधीशने इनको अपने यहां बुलालिया था और वहीं इन्होंने शिक्षा पाईथी। जब दशरथजीने रामचंद्रको युवराजनियत करनेका विचार किया तो रानीकैकईने हठ करके भरतको युवराज तथा रामचंद्रको वन जानेका हुक्म दिलवाया। दशरथजीके रामवियोगमें देहत्याग देनेपर राजपुरोहित वशिष्ठजीने भरतजीको ननिहालसे बुलाया। अयोध्या पहुंच भरतजीने पिताकी अन्त्येष्टि क्रिया की और माताको उसके कर्तव्यपर धिक्कार तथा दुर्वाक्य कहे, यथा तु० कृ० रामायणे—

दो०—हंस वंश दशरथ जनक। रामलखणसे भाइ ॥
जननी तू जननी भई। विधिसों कछु न बसाइ ॥

पिताके श्राद्धके बाद भरतजी सबलोगोंको साथले रामजीके लौटानेको गये परंतु रामजीने १४ वर्ष व्यतीत होनेके पहिले लौटनेसे इनकारकिया और भरतजीको समझाकर राज्यकी देखभालके लिये अयोध्याको वापिसभेजा। जब रामजी वनवाससे लौटे तो भरतजीने राजपाट उनको सौंपदिया, रामजीने राज्यसिंहासनपर बैठकर जिसदेशका प्रबन्ध भरतजीको सौंपाथा यह देश भरत खण्ड नामसे अबतक प्रसिद्धहै। रामायणादि ग्रंथोंको देख भरतजीके सदाचरण के विषयमें यही कहा जाताहै कि "न भूतो न भविष्यति"। रामजीने स्वयं उनकी प्रशंसा कीहै यथा तु० कृ० रामायणे—

चौ०—जो न होत जग जन्म भरतको। सकल धर्मधुर धरनि धरतको ॥

भरतजीने अपने निष्कपटप्रेम, मृदुलगम्भीर स्वभाव तथा सहनशीलतासे अपनी माताके घोरसे घोर अकर्तव्यरूपी कार्योंतकको अपने परिवार तथा प्रजाके चित्तमेंसे धोकर निर्मूल किया, उनमें सांसारिक सुखोंसे प्रेम तथा राजमद और स्वार्थका लेशमात्रभी नथा, यह बड़े योद्धा थे और धनुर्विद्यामें निपुणथे। रामवनवासके बाद भरतजीने अपनी मातासे कभी बात नहींकी यथा तु० कृ० रामायणे गीतावली—

कैकेइ जबलौं जियतरही। भरत मातु मुख सन्मुख तबलौं कबहुं न कही ॥

भरतजीके मामू केकयदेशके राजा युधाजितके प्रार्थना करनेपर महाराज रामचंद्रने गंधर्वोंका देश विजय करनेके लिये भरतजीको भेजा और हुक्म दिया कि वेकयाधीशकी मदद पहुंचावें। भरतजीने गंधर्वोंको परास्त करके उनका सर्व प्रदेश जो सिन्धके पश्चिमतक था छीनलिया और महाराजकी आज्ञानुसार निज पुत्र तक्षको सिन्धुदेशका राज्य देकर इनके लिये तक्षशिला (Taxila) नाम नगरी बसाई। दूसरे पुत्र पुष्कलको गन्धार (कन्धार) देशका राज्य देकर

पुष्कळावतनामकपुरी उनके लिये बसादी। फिर कईवर्षतक उस देशमें रहकर भरतजीने निज पुत्रोंका राज्य पुष्ट किया, पश्चात् अयोध्याको लौट आये।

भरत चंद्रवंशी—यह महाराजा दुष्यंतके पुत्र शकुन्तलाके गर्भसे जन्मेथे यह बड़े पराक्रमी नरेश थे, इसदेशका नाम भारतवर्ष इन्हींके सम्बधसे पड़ा इनकी ९ वीं पीढ़ीमें कौरव पांडवहुए।

भरत—इसनामके एक विद्वान्ने प्राचीनसमयमें होकर "नाट्य "शास्त्र" रचाया जो अबभी मिलता है।

भर्तृहरि (नीत्यादिशतकत्रयके कर्ता)—इनके पिता गंधर्व सेनको धारानगरीके राजाकी कन्या विवाहीथी जिसके गर्भसे विक्रमादित्य का जन्म हुआ, भर्तृहरिने गंधर्वसेनके वीर्यसे धारानरेशकी एक दासीके उद-रमें गर्भधारण कियाथा। धारानरेशके कोई पुत्र नहींथा इसलिये उसने इन दो-नों लड़कोंका पालन पोषण किया और अनेकशास्त्रोंकी शिक्षा दिलवाई। जब यह लड़के युवावस्थाको प्राप्तहुये तो धारानरेशने अपनेको अत्यंत वृद्ध समझ राजपाटका भार विक्रमादित्यको सौंपना चाहा लेकिन उन्होंने कहाकि " बड़े भाई भर्तृहरिके होतेहुये हमको राज्य सिंहासनपर बैठना उचित नहींहै एवं हम उनका मंत्रित्व करेंगे"। यह सुन धारानरेशने भर्तृ हरिको राज्य सौंपा और विक्रमादित्यको मंत्रीके पदपर नियुक्तकिया लेकिन भर्तृहरि अत्यंत विद्वान् होनेपरभी ऐसे स्त्रैणथे कि, अहर्निश रनिवासमें रहकर राजकाजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देतेथे। इनके दो रानियें थीं, एकका नाम पिंगला और दूसरीका अनङ्गसेना था, पिंगला पतिव्रता थी, और अनङ्गसेना दुश्चारित्रवाली थी लेकिन राजाको यह हाल विदित नहींथा एवं वह दोनोंको अत्यंत प्रेमकरताथा। एक दिन राजाने शिकारसे लौटकर किसी स्त्रीकी तारीफकी जिसको उसने सती होते देखाथा, पिंगलाने यह सुनकर कहाकि पतिव्रता स्त्री तो पतिकी मृत्युकी खबर सुनतेही प्राण त्यागदेतीहैं, लेकिन राजाको इसबातका विश्वास नहीं हुआ निदान परीक्षाकरणार्थ उसने एकदिन कईकर्म चारियोंके द्वारा रक्तमें भिगोकर अपने कपड़े रानीके पास भेजदिये और कहलाभेजा कि " राजाको शेरने खालिया"। पिंगलाने इसखबरके सुनतेही प्राण त्यागदिये। राजाने जब भवनपर आकर हाल सुना तो अत्यंत शोकातुर हुआ लेकिन इसघटनासे उसकी प्रेम दूसरीरानी अनङ्गसेनाकी तरफ दुगणा होगया क्योंकि दोनोंकी जगह अब एकही रानी रहगईथी जो अपनेको परम पतिव्रता बतलाकर राजाको निरंतर भरमातीरहितीथी। निदान राजा उसके प्रेममें मुग्धहोकर पहिलेकी अपेक्षा अधिक राजकाजकी तरफसे बेपरवाई करने लगा। यह देख विक्रमादित्यने राजाको कई दफे सचेतकिया लेकिन उसने

गुप्तरूप सुना और रानीको कुलक्षणा जान उनको अपने पास बुलानाभी बंदकरदिया । इसप्रकार अपमानितहो विक्रमादित्य देशदेशान्तरोंमें भ्रमण करने चल गये, इसके थोडेदिनपश्चात् किसी योगीने राजाको एक अमरफल लाकर दिया, राजाने यह फल अपनी प्यारीरानीके हाथ रक्खा, रानी किसी मावतके प्रेम पाशसे फसीहुइथी एव उसने यह फल उसको देदिया, उसका प्रेम एक वेश्यापर था निदान यह अमूल्य फल उस वेश्याके पास पहुंचा, वेश्याने सोचा कि, इतनीही उम्रमें मैंने क्या थोडा पाप कियाहै जो अमरफल खाऊं निदान धनप्राप्त करनेकी इच्छासे वेश्याने यह फल राजाभर्तृहरिको लाकर दिया राजाने फलको देखकर अनुसन्धानकरना शुरू किया, रानीपिंगलाने इसखबरके सुनतेही भयसे महल कोठेपरसे कूदकर देह त्यागदी । यह सब विपरीत देख कर राजाके चित्तमें वैराग्यका उदय हुआ निदान उसने अमरफल खा लिया और राजपाट छोड वनको चलदिया । यह समाचार पाय विक्रमादित्य आये और राज्यसिंहासनपर बैठे । निम्नस्थग्रंथ भर्तृहरिकृत है -

नीत्यादिशतकत्रय, वाक्यप्रदीप, पतञ्जलिप्रणीत महाभाष्यपर हेतु नामक टीका । मालूम होता है कि, ये ग्रंथ महाराजभर्तृहरिने योगकी हालतमें लिखे थे ।

भायनकवि–इनका असली नाम भवानी प्रसाद था । मौरावाँ जिला उन्नावके रहने वाले थे और आप वि. सं. १८९१ में जन्मेथे । काव्यशिरोमणि (काव्य कल्पद्रुम) इन्हींका रचाहुआहै, इस ग्रंथमें पिङ्गल, अलङ्कार नायकाभेद, दूती, नवरस, षड्ऋतु इत्यादि सबअङ्गोंका वर्णन है ।

भागीरथ (सूर्यवंशीनरेश)–जिनकेपिताराजा दिलीपके बाद राज्यके मालिक हुये । इन्होंने गंगोत्राके समीप हिमालय पर्वतमें स्थित अतुल हिमराशिसे निकलते हुये जलको, जिसके प्रवाहरूप होनेपर किसीदिन भारतवर्षका सदप्रा पत्तियाके नष्टहो जानेका भय निश्चय होता था वास्तुविद्याकी अपूर्व युक्तियोंके द्वारा गोमुखसे निकाला और प्राय १५०० मीलतकका पहिलेसे सुदृढ़कर तैयार कराई हुई नहिरम पहाड़पर बंगालकी खाडीमें मिला दिया । भागीरथके इसकार्यसे हजारों वर्षतक दुष्कर मरनेकी अकालमृत्यु बचगई और भारतके अगणित जनसमुदायको महानपोने. गंगाजीके. मनवहाने

एकबर्फके ढेरसे, जो सागरतटकी अपेक्षा आकाशकी समान अगम्य ऊंचाई पर स्थित है, लगभग २५ फीट चौड़ी तथा १ । २ फीट गहिरी गंगा निकली है।

भावमिश्र (वैद्य)—विल्सन साहबके मतानुसार यह वि सं की १६ वीं शताब्दीमें काशीमें हुये । इनके रचे "भावप्रकाश" में चोपचीनी, फिरङ्गरोग आदि कई नवीन विषय अधिक लिखेहैं जिनका पता प्राचीन ग्रंथोंमें नहीं है । इनके पिताका नाम लटकनमिश्र था।

भारतीचंद (बुन्देलखण्डकेराजा)—यह मधुकर साहिके पुत्रथे (वो देखो)।

भारद्वाज—ये मुनिराज प्रयागम रहतेथे । रामचंद्र महाराज वना वासको जाते समय तथा वहांसे लौटते समय आश्रमपर जाकर इनसे मिले थे । यह बड़े विज्ञानी थे । इनका गोत्र प्रचलित है ।

भारवि (महाकाव्यकिरातार्जुनीयके कर्ता)—इनका रचा महाकाव्य अर्थगाम्भीर्यमें सम्पूर्ण काव्योंसे शिरोमणि है, प्रसिद्ध है कि "भार वेरर्थगौरवम्" । ये वि स की पांचवी व छठी शताब्दीके बीचमें हुये ।

भास्कराचार्य (गणकचक्र चूड़ामणि)—ये शांडिल्यगोत्रोत्पन्न-महेश्वर उपाध्यायके पुत्र स ई १११४की साल बीजापुरमें उत्पन्न हुयेथे । निम्नस्थ पुस्तक इनकी रचीहुईहैं —लीलावती, गणिताध्याय, गोलाध्याय, बीजगणीत,सि द्धांतशिरोमणि, कूर्णकुतूहल, महामुल्य और सर्वतोभद्रयन्त्र । "स्वयंवह" नाम कघड़ी जलके बलसे चलनेवाली इन्होंने बनाईथी जिसका वृत्तान्त गोलाध्यायमें है । इनकेरचे ग्रंथोंके देखनेसे ज्ञात होताहै कि, ये बड़े भारी व्याकरणीहोकर सर्वशास्त्रोंके ज्ञातथे । सिद्धांतशिरोमणिमें इन्होंने ज्योतिष, महन्गणित तथा बीज गणितके वे सब गूढरहस्य अन्वेषणकरके लिखेहैं जो फिरङ्गी विद्वानोंको स०ई० की१७ वी शताब्दीसे पहले नहीं मालूमहुये । यह इनकी भी गयेथे, इस सपरक वृत्तांत रोमकसिद्धांतमें लिखाहै । ७० वर्षकी उम्रमें मरे, कोई पुत्र नहीं रखतेथे केवल लीलावती एक कन्याथी सो वह भी कुँवारीही चलबसीथी । कहितेहैं कि एक दिन जब भास्करजी अपने मकानकी खिड़कीमें बैठे हुयेथे तब एक सागर्मे चनेवाली डलियामें सोये तथा प्यूसेका सागरवसे हुये यह आवाज लगाती हुई निकली कि "सोया प्यूषा" । यह सुन इन्होंने सिद्धान्त किया कि, सोनेसे आदमी मूकताहै और उसी दिनसे सोना त्याग दिया, रात्रिभर तारागणोंको निहारकरतेथे ।

भास्करानन्दस्वामी (जीवनमुक्त)—ये मैथीलालपुर जिलाकान पुरम मिसरीलाल का एकुब्ज ब्राह्मणके घर स० ई० १८३३ में जन्मेथे । माता

दूसरीदफेभी ब्राह्मणको पहिलेहीकी तरह लौटनापड़ा, तबतो राजाने ९ लाख और १० हाथी देनेका हुक्म लिखकर ब्राह्मणको देदिया, हुक्मके देखतेही अधिकारीने तामीलकी ओर लिखदिया कि–

श्लो०–लक्षं लक्षं पुनर्लक्षं दशाश्च दश दन्तिनः ।
दत्ता श्रीभोजराजेन जानुदघ्नं प्रभाषिणे ॥

भारतमें भोजके समान दानशील, विद्योत्साही, गुणग्राही केवल २।१ही नरेश हुयेहैं, डाक्टरराजेन्द्रलाल मित्रके मतानुसार भोजका राजकाल स० ई० १०[illegible] से १०८३ तक सिद्धहै। कविनरपतिनाल्हने भोजकी राजकुमारी राजमती और अजमेरनरेशवीसलदेवके विवाहका वृतांत "वीसलदेवरासो" नामकग्रन्थमें लिखाहै जिससे यहभी विदितहोताहै कि, भोजका राज्य मालवासे लेकर दक्षिणमें [illegible] तक था और गौड़देश (बंगाल) उसके आधीनहोकर अंभर औ[illegible] गढ़मंडल, चित्तौड़ तथा [illegible] राज इनकी रक्षामेंथे। राजधानी इसके [illegible] १ मीलके फासिलेपर भोजके बसाये भोजपुरके खण्डहर अबतक पड़ेहैं [illegible] शहर भोपाल भी राजा भोजहीका बसायाहुआहै तथा वहांका भोपालताल उन्हींका खुदवायाहुआहै, भोपाल अपभ्रंशहै भोजपालका । निम्नग्रन्थ भोजकृतहैं–

धर्मशास्त्रस्मृतिसंग्रह, भोजचम्पू, सरस्वतीकण्ठाभरण, राजमार्तण्ड, [illegible] विक्रमचरित, पातञ्जलयोग सूत्रवृत्ति और चरणव्यूहार्णव । भोजके अन्तसमय [illegible] ने निम्नस्थ श्लोक रचा–

श्लोक०–अद्यधारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती ।
पंडिताः खंडिताः सर्वे भोजराजे दिवंगते ॥

मोकमलकछवाहे–देखोविहारीमल ।

मकरंदज्योतिषी (मकरंदसारणीकेरचयिता)–ये काशीवासी [illegible] वि०सं० १५३२में जन्मे। इन्होंने सूर्यसिद्धान्तके आधारपर सायणगणना [illegible] सारिणी बनाईथी जिसके आधारपर वर्त्तमान कालके पंडित पत्रा बनातेहैं ।

मगेस्थनीज–(Megasthenes)–ये सीरिया (शाम) के राजा सैल्यूकसका राजदूत मगधनरेश चन्द्रगुप्तके दर्बारमें ३०६ वर्ष पू० स० ई० से [illegible] वर्ष पू० स० ई० तक रहाथा । इसने इण्डिकानामकी एक पुस्तक है [illegible] लिखाहै जिससे उससमयका भी स्पष्ट ज्ञान होजाताहै । इसका अनुवाद अंग्रेजीमें भी होगयाहै ।

मङ्खककवि–ये संस्कृतकवि वि० सं० की १२ वीं शताब्दीमें हुए । [illegible] के रहनेवालेथे, श्रीकण्ठचरित नामक इनका रचा काव्य प्रसिद्धहै। [illegible] कोषभी इन्होंने बनायाथा ।

मङ्गलसिंह (महाराजा, सवाई, सरमङ्गलसिंह बहादुर, जी० सी० एस० आइ०)–स० ई० १८७४ में महाराजशिवदानसिंहजीके बाद अल्वरकी गद्दीपर बैठे। रियासतमें आपके समयमें अनेकसड़कें और इमारतें बनाईंगई, शिक्षाविभागकी उन्नति हुई। आपके वक्तमें १०० स्कूल लड़कोंकेलिये और १७ लड़कियोंके लिये राज्यभरमेंथे। राज्यकोषसे खर्चदेकर आप अनेकोंको आगरा मेडिकेल कालिजमें डाक्टरी शिक्षापानेके लिये भेजतेथे, लेडी डफरिनफण्डमेंभी आपने ५० हजाररुपया चन्दा दियाथा, आप बड़े प्रजाहितैषीथे और वृटिशगवर्नमेन्टभी आपसे अत्यंत प्रसन्नथी। राजधानी अलवरमें आपने एक उत्तम न्यायालय बनवायाथा और वृटिशसेनाके आप अवेतनिक लफ्टिनेन्ट कर्नलथे। आपके राज्यका विस्तार ३०२४ वर्गमीलथा जिसमें प्राय ६ लाख ८३ हजार मनुष्य बसतेथे। आपके समयके रुपयेपर आपका नाम फार्सीमें अंकितहै। स० ई० १८९२ में आपका देवलोकहुआ और महाराजा सवाई सर जयसिंह बहादुर गद्दीपर बैठे।

मण्डनकवि– बुंदेलखण्ड प्रदेशान्तर्गत जैतपुरकेवासीथे, भाषा कविता अच्छीकरतेथे। रसरत्नावली, रसविलास और नयनपचासा इनके बनाये ग्रंथ भाषापद्यमें अच्छेहैं। राजामङ्गदसिंह बुंदेलाके दर्बारमें इनका सत्कार होताथा। वि० सं० १७१६ में विद्यमानथे।

मण्डनमिश्र (कर्ममीमांसक पंडित)–इनके पिता रेवानदीके किनारे माहिष्मती (मैसौर) के रहिनेवाले हिमभित्र नामक ब्राह्मण बड़े विद्वान पंडितथे। इनका असली नाम विश्वरूपथा लेकिन अनेकस्थानोंपर इन्होंने बौद्धमतका खण्डन तथा वेदका मण्डन कियाथा इसलिये इनका नाम मण्डनमिश्र पड़गयाथा। प्रयागनिवासी प्रसिद्ध पंडित कुमारिलभट्टसे इन्होंने शिक्षा प्राप्तकीथी। इनका विवाह विष्णुमित्रनामक एकधार्मिक तथा कर्मनिष्ठब्राह्मणकी कन्या लीलासे हुआथा। लीला बड़ीभारी पंडितथी और इसीलिये उसको सरस्वती कहतेथे। मण्डनमिश्रने हिंदोस्थानके सब बड़े २ पंडितोंको शास्त्रार्थमें परास्त करदियाथा। स्वा० शङ्कराचार्यसे पं० कुमारिल भट्टने स्वयं कहाथा कि, यदि तुम मण्डन मिश्रको परास्तकरसकोगे तो और सब पंडित परास्तके तुल्य होजायँगे। मण्डनमिश्रके घरकी दासियेंतक विदुषीथीं। शङ्करस्वामीने उनके स्थानपर पहुंचकर दासियोंसे पूछा कि, क्या मण्डनमिश्रकी हवेली येई है? उत्तरमें दासियोंने निम्नस्थ श्लोकपढ़ा–

श्लो० स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं शुकाङ्गनायत्र गिरो गृणन्ति।
शिष्योपशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम॥

शास्त्रार्थमें शङ्करस्वामीने मण्डनमिश्र और उनकी स्त्रीलीलावतीको पराजयकरदिया इसीकारण तुरन्त देहत्यागदी और मण्डनमिश्र शङ्करस्वामीके शिष्यहोकर सुरेश्वराचार्यनामसे प्रसिद्धहुये। सुरेश्वराचार्य आदिशङ्करके शिष्योंने दक्षिणदेशमें शैव, पाशुपत्य गाणपत्य, तथा शाक्त मतवादियोंको शास्त्रार्थमें परास्त कियाथा और उनको उपदेशकियाथा कि सबदेवता परमेश्वरके अंशहैं उनको अभेदबुद्धिसे पूजना चाहिये। दक्षिणदेशमें अबतक स्मार्तलोग अधिकतासेहैं। "विभ्रान्तमण्डन" नामक ग्रंथ मण्डनमिश्रहीका बनायाहुआहै।

मतिरामत्रिपाठी (भाषाकवि)—ये टिकमापुर जि० कानपुरके वासी कान्यकुब्जब्राह्मण सं० १६५० तथा १६८२ के बीच विद्यमानथे। बहुतदिनोंतक कुमायूँनरेश उद्योतचंद तथा कोटाबूँदी नरेश रावभाऊसिंह और शम्भुनाथ सुलंकी इत्यादि के दरबारमें रहनेके पश्चात् मुगलसम्राट औरंगजेबके दरबारके कवीश्वरोंमें नौकर होगयेथे और अन्तसमयतक वहींरहे। ललितललाम नामक अलंकारग्रन्थ इन्होंने रावभाऊसिंहके नामसे और छन्दसार पिंगल फतेशाहबुन्देला श्रीनगरवालेके नामसे रचाया। नायका भेदमें इनका बनाया " रसराज " अनुपमहै। प्रसिद्धभाषाकवि भूषणत्रिपाठी इनके छोटे भाईथे।

मदनमोहन मालवीय (देशहितैषी)—ये पण्डितजी प्रयागके वासी मालवीय गौड़ ब्राह्मण हैं। आपके पूज्यपाद पिताजी प्रतिष्ठित पंडित होकर अभी विद्यमान हैं। आपने अंग्रेजीमें बी० ए० तथा एल एल बी की उच्च परीक्षाएं उत्तीर्ण कीहैं लेकिन आपको ऐसाकुछ घमंड नहीं है। संस्कृत विद्याके भी आप अच्छे विद्वान् हैं और मातृभाषा हिंदीके आप अनन्य भक्त हैं पहिले कई वर्षतक हिन्दीके दैनिक पत्र " हिन्दोस्थान " का जिसको कालाकांकरसे राजा रामपालसिंह प्रकाशित करते हैं आपने बड़ी योग्यतासे सम्पादन किया था पश्चात् आपने कानून पढ़कर एल० एल० बी की परीक्षा उत्तीर्ण की और तबसे प्रयाग हाइकोर्टमें वकालत करते हैं। औसत आमदनी आपकी दो हजार रुपया माहवार होगी। देशियोंके लाभ पहुंचानेके लिये जितने आन्दोलन इस समय होते हैं उनमें सबसे पहिले आप कदम बढ़ातेहैं। गवर्नमेन्टने आपहीके उद्योगसे इस प्रान्तके स्कूलोंमें शिक्षासम्बन्धी अनेक बातोंका सुधार करके छात्रोंके लिये बड़ी सुभीता कर दियाहै। हाईकोर्टोंमें अक्षरोंके विषयमें मातृभाषा हिंदीके प्रचार ऐक्टिंग लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर एण्टोनी मेकडानेलके पासतक पहुँचानेके मुख्य कारण आपहीहैं। इस अवसरपर ६ महीनेसे अधिक कष्ट झेलकर आपने देशदेशान्तरोंमें भ्रमण करके अनेक विद्वानोंको पुष्टिके लि-

करोड़ों मनुष्योंको सावेत किया था । आपका परिश्रम सफल हुआ, गवर्नमेन्टकोभी न्यायकरनेका साहस हुआ और न्यायालयोंके कागजोंमें नागरी अक्षरोंके व्यवहार करनेका हुक्म दृढ़ता सहित पासकरदिया गया । आपकी वक्तृता हृदयग्राहिणी होतीहै, नेशनल कांग्रेसके आप मुखियाओंमेंसे हैं और आपकी चाल ढाल, रहिन सहिन, खान पान सब ब्राह्मणोंकासाहै । आज कलके विद्वानों तथा देशहितैषियोंका सरमौर आपको कहना सर्वथा उचित है । आपसे देशहितैषियोंकाजीवन सार्थकहै और पवित्र है वह कुक्षाजिसमें आप सरीखे नरसिंह पुत्रने गर्भ धारणकिया ।

मदनमोहन सूर-देखो सूरदास मदन मोहन ।

मदार- देखो शाहमदार ।

मधुकर साहि (बुंदेल खण्डके राजा)-इनके पिता रुद्रप्रतापके १२ पुत्र थे । रुद्रप्रतापको आखेटका बड़ा व्यसन था और इसी में स० ई० १५३१ की साल उनकी जान गई । शहिर उड़छा उन्हींका बसाया हुआ है। रुद्रप्रतापके बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र भारती चंद गद्दीपर बैठे । भारतीचंदके वक्तमें राज्य वृद्धि बहुत कुछ हुई, वार्षिक आय प्राय दो करोड़ रुपये केथी और शेरशाह (स० ई० १५४२-१५४५) ने बुंदेलखण्डजीतना चाहा था पर कृतकार्य नहोसकाथा । भारतीचंद्रके अपुत्रसिधारने पर स० ई० १५४२ में मधुकरसाहि गद्दीपरबैठे । इनके समयमें अकबरने कईदफे बुंदेलखण्ड लेलेनेका उद्योग किया, कभी मुसल्मान जीते और कभी बुंदेले। अंतको स० ई० १५८४ का साल अकबरकाबेटा मुराद बड़ीसेना लेकर चढ़आया लेकिन मधुकरसाहिकी वीरतासे प्रसन्नहोकर जीताहुआ मुल्क फिर वापिस कर दिया । मधुकरसाहिके पीछे उनके वंशका राज्य केवल ओड़छेमें रहा क्योंकि राजारुद्रप्रतापने महोबेका राज्य अपने तृतीय पुत्र उदयाजीतको देदिया था जिससे महोबेकावंश अलगहोगया ।

मधुकरसाहिके बाद इनके दो पुत्र इन्द्रजीतसिंह तथा वीरसिंहदेवने क्रमश ओड़छेमें राज्यकिया । स० ई० १६११ में कविकेशवदासने मधुकर साहि के कहनेसे वीरसिंहदेवके लिये "विज्ञानगीता" नामक ग्रंथरचकर इनाम पायाथा। इन्द्रजीतने राजाहोकर शहिर इटावा बसाया, वीरजनेऊनामसे कविताकी और कविकेशवदासकी कविता पर रीझकर २१ गाम उनको स कल्पकरदिये । प्रसिद्धकविप्रवीणराय पातुरभी इन्द्रजीतहीके दर्बारमेंथी । वीरसिंहदेवने झाँसीका शहिर बसाया और मथुरामें एक बड़ाभारी मंदिर केशव देवजी का बनवाया जिसको औरंगजेबने खुदवाडाला। वह मंदिर शहिर

शास्त्रार्थमें शङ्करस्वामीने मण्डनमिश्र और उनकी स्त्रीलीलावती परास्तकरदिया लीलाने तुरन्त देहत्यागकी और मण्डनमिश्र शङ्करस्वामीके शिष्यहोकर सुरेश्वराचार्यनामसे प्रसिद्धहुये। सुरेश्वराचार्य आदिशङ्करके शिष्योंने दक्षिणदेशमें शैव, पाशुपत्य गाणपत्य, तथा शाक्त मतवादियोंको शास्त्रार्थमें परास्त कियाथा और उनको उपदेशकियाथा कि सबदेवता परमेश्वरके अंशहैं उनको अभेदबुद्धिसे पूजना चाहिये। दक्षिणदेशमें अबतक स्मार्तलोग अधिकताहैं। "त्रिकाण्डमण्डन" नामक ग्रंथ मण्डनमिश्रहीका बनायाहुआहै।

मतिरामत्रिपाठी (भाषाकवि)—ये टिकमापुर जि० कानपुरके वासी कान्यकुब्जब्राह्मण स० ई० १६५० तथा १६८२ के बीच विद्यमानथे। बहुतदिनातक कुमायुंनरेश उद्योतचंद तथा कोटाबूंदी नरेश रावभाऊसिंह और शम्भूनाथ सुलंकी इत्यादि के दरबारमें रहिनेके पश्चात् मुगलसम्राट औरंगजेबके दरबारके कवीश्वरोंमें नौकर होगयेथे और अन्तसमयतक वहींरहे। ललितललाम नामक अलङ्कारग्रंथ इन्होंने रावभाऊसिंहके नामसे और छन्दसार पिंगलफतेशाहबुंदेला श्रीनगरवालेके नामसे रचाया। नायकाभेदमें इनका बनाया "रसराज" अत्युत्तमहै। प्रसिद्धभाषाकवि भूषणत्रिपाठी इनके छोटे भाईथे।

ह्यायके घर चै० शु० ४ वि० सं० १९२१को पं०महावीरप्रसादका जन्म हुआ। आप अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फार्सी, बंगला इत्यादि भाषाओंकेज्ञाताहैं, कुछदिनोंतक पहिले राजपुताना-मालवा रेलवेके डिस्ट्रिक्टसुपरिन्टेन्डेन्टकेदफ्तरमें क्लार्क भी रहिचुकेहैं। पश्चात्स्वतंत्रजीवन व्यतीतकरनेकी इच्छासे नौकरीछोड़ झांसीमें बस रहे और सरस्वतीनामकमासिक पत्रिका हिंदीमें सम्पादनकरने लगे जो आजकल जारीहै और प्रतिष्ठितदेशीसमाचारपत्रोंमें गिनी जातीहै। आपकेगद्यलेखजैसेउत्तम होतेहैं वैसेही पद्यभी। आप आजकलकेउत्तमप्रसिद्धकवियोंमेंहैं जोखड़ीबोलीकीक विताका प्रचारकररहेहैं। आपकीकवितामेंकेवलरसहीनहींहै वरन्शक्तिभीहै। संस्कृत श्लोकभीआपकेबनायेअच्छे हैं। प्रसिद्ध तथा माकूलपुरुषोंमें आपकीगणनाकीजा तीहै। भामिनीविलास, कुमारसम्भव, गंगालहरी, यमुनालहरी, महिम्नस्तोत्रकाअनुवादआपने भाषापद्यमेंकियाहै। अनेकऔरग्रंथभीगद्यपद्यमें आपकेरचेहुयेहैं। २८ अगस्ट सन्१९०२ तककी रचीहुई आपकी फुटकरकविताका संग्रहभी "काव्यमंजूषा" नामसेछपगयाहै।

महावीरस्वामी (जैनियोंके २४ वें अर्थात्अन्तिमतीर्थंकर)—ये महात्माबुद्ध समसामयकथे और उनके पीछेतक जीवितरहेथे। इनके बाप मगधनरेशने थिकानाम सिद्धार्थरक्खाथा और महावीरकी उपाधि इनकोदीथी। माता पिताकेबाद ३० वर्षकीउम्रमें बड़े भाईनन्दीवर्द्धनकोराजपाटसौंप इन्होंने कुछदिनोंतक तीर्थोंमें भ्रमण किया और १२ वर्षतक ऋजुबालुकानदीके तीर घोरतपकाप्रकरनेका साधनकरके जिनत्वको प्राप्तहुये। पश्चात् जैनधर्मका उपदेश करते हुये देशदेशान्तरोंमें विचरना शुरूकिया और अपने अनेक शिष्योंको इधर उधर उपदेश करनेकेलिये भेजा। मुख्यशिष्य इनके ११ थे जो गणधर कहिलातेहैं। इनकेधर्मउपदेशोंसे मुग्धहोकर १ लक्ष श्रावक (गृहस्थजैन) और १४ हजार श्रमण (विरक्तजैन) होगये। महावीर स्वामी वर्षके ८ महीने उपदेश करते विचरते थे और बर्सातके ४ महीने किसी नगरमें निवासकरते थे। ७२ वर्षकी उम्रमें ५२७ वर्ष पू० स० ई० कार्तिक शु० ३० स्वाति नक्षत्रमें उषःकाल इनका देहांत हुआ। इन्होंने कोईग्रंथ नहीं बनाया लेकिन इनके चेलोंने इनके उपदेशोंको एकत्रकरके अनेक ग्रंथ रचलिये जिनको जैनलोग आगम कहिते हैं। वर्द्धमानगुरु, जैनस्वामी, जिनगुरु तथा निर्ग्रंथनाथ भी इनके नाम हैं।

महिमूदगज़नवी—गजनीके बादशाह नासरुद्दीन सुबक्तगीनके घर स० ई० ९६७ में पैदाहुआ और स० ई० ९९७ में तख्तपर बैठा। इसने ३३वर्षके राज्य कालमें अपने छोटेसे राज्यको पश्चिममें ईरानतक और पूर्वमें पंजाबतक

मुल्हारजी राव हुल्करको गद्दी दिलवाई। मुल्हारजीके बाद तुकोजी राव हुल्कर राजा हुये जिनके पुत्र महाराज शिवाजी राव हुल्कर स० ई० १९०३ में राज्यभार अपने बालक पुत्रको सौंप वनको पधारे।

मलिक मुहम्मद जायसी (भाषाकाव्य पद्मावतके कर्ता)-ये महात्मा साधु अवध प्रदेशान्तर्गत जैस नामक ग्रामके वासी थे। जैस ग्राम "अवध रुहेल खण्ड रेल्वे" का एक स्टेशन है और बनारससे प्राय १२१ मील दूर है। अमेठी (सुलतानपुर) के राजाका प्रथम पुत्र इनकी दुआसे हुआथा, उस राजाने अमेठी गढ़के साम्हने इनकी कबर बनवादीथी जो अबतक विद्यमान है। स० ई० १५४० में पद्मावत इन्होंने सम्पूर्ण किया। ग्रिअर्सन साहिब इनकी कविताकी बड़ी प्रशंसा अपने ग्रंथमें करतेहैं। इनके उस्ताद अशरफ जहांगीर तथा शेख बुरहाँ थे। शेरशाह सूरभी इनका आदर करता था।

मलूकदास (प्रसिद्ध महात्मा)-ये वर्णके ब्राह्मण प्रयाग प्रदेशान्तर्गत कड़ा मानिक पुरके वासी बड़े सिद्ध पुरुष हुयेहैं। वि सं १६८५ में इनका जन्म हुआथा। एकदफे इनके मित्र मुरारीदास वैष्णवने जो इनके स्थानसे २० कोस पूर्व गंगातटपरथेये भण्डारा किया परंतु मनुष्य बहुत आजानेसे सामिग्री पूर्ण नहीं हुई। जब मलूकदासको योगबलसे यह बात मालूम हुई तो उन्होंने एक सीकेपर मुरारीदासका नाम लिखकर गंगाजी में जाकर छोड़दिया और कहा " हे गंगे! इसे मुरारीदासकेपास अभीपहुंचादीजिये, क्योंकि मनुष्य ठीक समयपर नहीं पहुंचासकेगा"। मुरारीदास उससमय अपने घाटपर स्नानकररहेथे, सीका उनके पैरमें लगा, जानगयेकि मलूकदासका भेजाहुआहै और सब साधुओंको अच्छी तरहसे भोजन करादिया। मलूकदासजी रामोपासकथे और रामानन्दीयसम्प्रदायके महन्त कीलदासजीके प्रधान शिष्यथे। इनका एक स्वतंत्रमत प्रचलितहै जिसके अनुगामी हजारोंहैं। वृंदावनमें धीराघाटपर इनकी सम्प्रदायकी मुख्य गद्दीहै जिसपर अबतक महन्तलोगहैं। मलूकदासने दूर २ तीर्थोंकी यात्रा कीथी, जगन्नाथपुरीमें महाराजके भोगके साथ इनके नामका रोटीका टुकड़ा प्रत्येक यात्रीको अबतक बँटताहै। अनेक फुटकर पद और दशरत्न तथा ज्ञानबोधनामक ग्रंथ इन्होंने रचेहैं। वि० सं० १७३९ में परलोकगामीहुये। निम्नस्थ प्रसिद्ध दोहा इन्हींकाहै।

दो०-अजगरकरैनचाकरी, पक्षीकरैं न काम।
दासमलूकायकहिगये, सबकेदाताराम॥

महावीरप्रसादद्विवेदी (भाषा कवि)-दौलतपुर ग्राम जि० रायबरेलीमें सुप्रसिद्ध कान्यकुब्ज पंडित हनुमन्तद्विवेदीद्विवेदीथे, जिनके सुत सं०...

हायके घर वै० शु० ४ वि० सं० १९२१को पं०महावीरप्रसादका जन्म हुआ। आप अंग्रेजी,हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फार्सी,बंगला इत्यादि भाषाओंकेज्ञाताहैं,कुछदिनोंतक पहिले राजपुताना-मालवा रेलवेके डिस्ट्रिक्टसुपरिन्टेन्डेन्टकेदफ्तरमें क्लार्क भी रहिचुकेहैं। पश्चात्स्वतंत्रजीवन व्यतीतकरनेकी इच्छासे नौकरीछोड़ झांसीमें बस रहे और सरस्वतीनामकमासिक पत्रिका हिंदीमें सम्पादनकरने लगे जो आजकल जारीहै और प्रतिष्ठितदेशीसमाचारपत्रोंमें गिनी जातीहै। आपकेगद्यलेखजैसेउत्तम होतेहैं वैसेही पद्यभी। आप आजकलकेअप्रसिद्धकवियोंमेंहैं जोखड़ीबोलीकीक-विताका प्रचारकररहेहैं।आपकीकवितामेंकिवलरसहीनहींहै वरन्शक्तिभीहै। संस्कृत श्लोकभीआपकेबनायेअच्छे हैं। प्रसिद्ध तथा मान्यपुरुषोंमें आपकीगणनाकीजा तीहै। भामिनीविलास, कुमारसम्भव, गंगालहरी, यमुनालहरी, महिम्नस्तोत्रकाअ-नुवादआपने भाषापद्यमेंकियाहै। अनेकऔरग्रंथभीगद्यपद्यमें आपकेरचेहुयेहैं। २८ 'गस्ट सन्१९०२ तककी रचीहुइ आपकी फुटकरकविताका संग्रहभी "काव्यमं जूषा" नामसेछपगयाहै।

महावीरस्वामी।(जनियोंके २४ वें अर्थात्अन्तिमतीर्थंकर)—ये महात्माबुद्ध के समसामयकथे और उनके पीछेतक जीवितरहेथे। इनके बाप मगधनरेशाने इनकानाम सिद्धार्थरक्खाथा और महावीरकी उपाधि इनकोदीथी। माता पिताकेबाद ३० वर्षकीउम्रमें बड़े भाईनन्दीवर्द्धनकोराजपाटसौंप इन्होंने कुछदिनोंतक तीर्थोंमें भ्रमण किया और १२ वर्षतक ऋजुपालकनदीके तीर विलपकाप्रकरनेका साधनकरके जिनत्वको प्राप्तहुये। पश्चात् जैनधर्मका उपदेश करते हुये देशदेशान्तरोंमें विचरना शुरूकिया और अपने अनेक शिष्योंको इधर उधर उपदेश करनेकोलिये भेजा। मुख्यशिष्य इनके ११ थे जो गणधर कहिलातेहैं। इनकेधर्मउपदेशोंसे मुग्धहोकर १ लक्ष श्रावक (गृहस्थजैन) और १४ हजार श्रमण (विरक्तजैन) होगये। महावीर स्वामी वर्षके ८ महीने उपदेश करते विचरते थे और वर्षाऋतुके ४ महीने किसी नगरमें निवासकरते थे। ७२ वर्षकी उम्रमें ५२७ वर्ष पू० ख० ई० कार्तिक शु० ३० स्वाति नक्षत्रमें उप:काल इनका देहांत हुआ। इन्होंने कोईग्रंथ नहीं बनाया लेकिन इनके चेलोंने इनकेउपदेशोंको एकत्रकरके अनेक ग्रंथ रचलिये जिनको जैनलोग आगम कहिते हैं। वर्द्धमानगुरु, जैनस्वामी, जिनगुरु तथा निर्ग्रंथनाथ भी इनके नाम हैं।

महिमूदगजनवी—गजनीके बादशाह नासरुद्दीन सुबक्तगीके घर स० ई० ९६७ में पैदाहुआ और स० ई० ९९७ में तख्तपर बैठा। इसने ३३वर्षके राज्य कालमें अपने छोटेसे राज्यको पश्चिमम ईरानतक और पूर्वमें पंजाबतक

फैलाया और १७ हमले हिंदोस्तानपर किये, जिनमेंसे ८ हमले तो केवल पंजाबहीपर हुये। पंजाबकाराजा जयपाल तथा उसका पुत्र अनङ्गपाल परास्त होकर मारागया और अनङ्गपालका पुत्र जयपाल द्वितीयभी स० ई० १०२२ में परास्त होगया, इसकेबाद पंजाबपर महिमूदका अधिकार होगया। ११ वां हमला महिमूदने शहिर मथुरापर स० ई० १०१८-१९ में किया, मंदिर मकान तोड़दिये, २० दिनतक शहिरको लूटा, १०० ऊंटोंपर लादकर लूटका माल गज़नीको भेजा और ५००० से अधिक मनुष्योंको कैदीकरके लेगया। स० ई० १०२६-२७ में १६ वां हमला सोमनाथ महादेवके मंदिरको खण्डित करनेके लिये गुजरातपर हुआ। राजपूत राजे पुष्कल सहित देवस्थानकी रक्षार्थ जिये आडटे, ३ दिनतक घोर युद्ध हुआ जिसमें राजपूत परास्त हुये और महिमूदने करोड़ों रुपयेकी जवाहिरात लूटली। पश्चात् महिमूदने अपनी राजधानी गजनीको सुधारमें चित्तलगाया। महिमूद लालचीथा उसने कवि फिर्दौसीको प्रत्येक शेर (दोहा) के बदले १ अशर्फी देनेका वायदा करके शाहनामा नामक अपने वंशकी तवारीख फार्सी में रचवाई थी लेकिन जब वह बनकर ६० हजार शेरोंमें तैय्यार हुई तो वायदेके खिलाफ महिमूद प्रतिशेर अशर्फीके बदले रुपया देनेलगा लेकिन कविश्वरने लेनेसे इन्कार किया और महिमूदकी निन्दापर पद्यरची (देखोफिर्दौसी)। अत समय महिमूदने सबधन, दौलत जवाहरातका अपने साम्हने ढेरलगवाया और अपनी सेना, घोड़ा, हाथी इत्यादिकोंको अपने साम्हने बुलवाया और उनको देखकर रोया और कहा "हाय इतने थोड़े समयके लिये यह सब। बटोराया"। एकदफे किसी मनुष्यकी माताने महिमूदसे जाकर प्रार्थना की कि मेरे बेटेको ईरानकी सड़क पर लुटेरोंने मार डाला है। महिमूदने उत्तर दिया कि यह स्थान हमारी राज धानीसे इतनी दूर है कि हम कुछ प्रबन्ध नहीं करसकते। यह सुन बुढियाने कहा कि यदि प्रबन्ध नहीं हो सकता तो इतना राज्य क्यों बढ़ाया। महिमूदने कायलहोकर ईरानकी सड़क पर कारवाँकी हिफाजतके लिये गार्द मुकरर किया और लुटेरोंको नष्ट करवा दिया।

महेशचंद्र न्यायरत्न, सी आई ई पं० महामहोपाध्याय–स ई १८८ में महाराणी विक्टोरिया की जुबिलीके अवसरपर आपको ब्रिटिश गवर्नमेन्टने महामहोपाध्यायकी उपाधि प्रदानकीथी जिसके प्रभावसे लार्ड साहबके दर्बारमें राजा महाराजाओंके पास कुर्सी मिलती है। संस्कृत कालिज कलकत्ताके प्रिन्सिपेल बहुत दिनों तक रहिकर आपने पेन्शनपाई है। जो प्रतिष्ठा आपकी भारतकी विद्वान मंडलीमें है वह आपकी पदवी न्यायरत्न प्रकट करती है। तन मन धनसे आपने संस्कृतविद्याका प्रचारका उद्योग किया है अपनी जन्म भूमिके ग्राममें निज व्ययसे एक हार स्कूल खोला है जि

संस्कृत तथा अंग्रेजी साथ२पढाई जातीहै अनेक सड़कैंभी आपके उद्योगसे आपकी जन्म भूमिके ग्राम तक बनगई हैं। इन सबकामोंके उपलक्षमें बृटिश गवर्नमेंटने सं. ई १८८१ कीसाल सी आई ई की उपाधि आपको दीथी। आपकी जन्म भूमि जिला २४परगनाके नारित नामक ग्राममें है। आपके पिता हरि नारायण तर्क-सिद्धान्त तथा आपके चचा गुरुप्रसाद तर्कपञ्चानन और ठाकुरदास चूड़ामणि मशिद्ध पंडित थे। पंडित महेशचन्द्र अनेक प्रतिष्ठित सभाओंके मेम्बर हैं। मम्मटकृत काव्य प्रकाशकी टीका, मीमांसा दर्शन भाष्य, कृष्ण यजुर्वेद भाष्य, मृच्छकटिकनाटककी व्याख्या, दयानन्दकृत वेदभाष्यकी व्याख्या, छुतसम्व-स्सरकी व्याख्या आपने रची हैं। आपके १ पुत्री तथा निम्नस्थ तीनपुत्र हैं जिन्होंने बृटिश गवर्नमेंटकी चाकरीमें बड़े २ ऊंचे पद पाये हैं- मन्मथनाथ विद्यारत्न, एम् ए। मुनीन्द्रनाथ भट्टाचार्य, एम ए., बी यल। महीमनाथ भट्टाचार्य, बी ए.।

स ई १८०३ में पं०महेशचंद्रन्यायरत्न विद्यमान हैं।

महादेव गोविन्द रानडे—देखो रानडे।

माघ पंडित (शिशुपालवध महाकाव्यके कर्त्ता)—इनके दादे सुप्रभदेवजी गुजरात नरेश धर्मदेवके मंत्री थे और इनके बाप का नाम दत्तकजी था। माघजी बड़े माघि पंडित हुये, ये श्रीमालपुर (गुजरात) में रहिकर विद्वानों तथा कंगालोंको खूब धन बाँटते थे और बड़े मान्यवर तथा धनाढ्य कवि थे। धारा नगरीके राजा भोज इनके समकालिक थे परंतु ये बिना बुलाये उनके दर्बारमेंभी कभी नहीं गये। भोज इनकी दानकीर्ति सुन कर स्वय इनसे मिलने एक दफे गया था। माघजीकी जन्मपत्री में एक ज्योतिषीने लिख दिया था के इस कविको दिन२अधिक धन प्राप्त होगा, अन्तमें इसके पैरों पर सूजन आवेगी और ये दरिद्री होजायगा। बहुतकालपश्चात् माघजीकी जन्म पत्रीमें वर्णी हुइ दशा होने लगी और यहाँ तक रङ्क होगये कि खाने तकको न रहा परंतु भि-क्षुकोंकी भीड़ उसहालतमेंभी द्वार पर लगीरहितीथी। एकादिन कंगालोंकी भीड़ द्वारपर देख माघने कहा

श्लो०—दारिद्रानलसन्ताप शान्ति संतोषवारिणा।
दीनाशाभङ्गजन्मा तु केनायमुपशाम्यतु॥

पश्चात् बहुत दुःखीहो माघजी धारा नगरीको पधारे और अपनी स्त्रीके हाथ स्वरचित काव्य ग्रंथ राजा भोजके पास भेजा। राजाने पुस्तकको देख ३ लक्ष रुपया कविकी स्त्रीको देकर सन्मान सहित विदा किया। जब माघकी स्त्री महिलके दरवाजेसे निकली तब राजाके द्वारपाल उसको देख माघ कविकी

बड़ी प्रशंसा करने लगे। माघकी स्त्रीने सब धन उनको देदिया और फिर हाथ भरको लौट आई। इससे थोड़ेही दिनों पीछे धारानगरीमें माघ पंडित का शरीर छूटगया और उनकी स्त्री सती होगई। राजा भोजने दोनोंकी अन्त्येष्टि क्रिया की, इससे प्रतीत होताहै कि अपुत्रथे। शिशुपालवध जिसको माघ काव्यभी कहिते हैं पञ्च महाकाव्योंमें सर्वोत्तमम है। "काव्येषुमाघ" यह उक्ति यथार्थहै।माघकाव्यमें राजनीति आदि विषय बड़ी उत्तमतासे निरूपण किये गये हैं। सबतरहके शब्द प्रयोग और भाषा शैलीका परिज्ञान उसके पढ़नेसे हो जाताहै। एक अनुभवी पण्डितका कथन है कि "नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते"। निम्नस्थ श्लोकसे माघजीकी कविताकी सर्वोत्तमता प्रकट होती है-

श्लो०-उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
'दण्डिनः' पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

माधवजी सेंधिया सं०ई०१७५०कीसाल२०वर्षकी वयमें सिंधकपुरकी जा गीर इनको निजपिता रानोजीसेंधियासे मिलीथी। यह बड़े पराक्रमीथे निदान इ न्होंने थोड़ेहीकालमें बहुतसा मुल्कजीतकर उज्जैनको अपनी राजधानी बनाया। फिर तो दिनर इनका प्रताप बढ़तागया, यहांतक कि सर्वभारतपर इनकाभावबैठगया और यदि चाहते तो सहजहीमें हिंदोस्तानके सम्राट् बन बैठते परन्तु ऐसा इन्होंने कभीनहीं विचारा। दिल्लीके मुगल सम्राट्शाह आलमने शक्तीहीन होनेकेकारण इनको अपना वेटायना लिपाया और येभी धर्म पगसे न डिगनेवाले मरहटावीर उस बलविहीनको सदैव अपना शाहन्शाह मानतेरहे।पूनाका पेश्वाभी इनके प्रतापके आगे कुछ करनसकताथा परन्तु ये उसकोभी मार्यानपूर्याके अनुसार अपना मुखिया मानतेरहे।इनकेसिवाय हिंदोस्तामें उनदिनों अनेक और छोटे २ राजाओं, नवाबों का राज्य था परन्तु उनमेंसे कोईभी इनका सामनाकरनेलायक नथा सं०ई०१७६१ की साल माधोजी बड़ीवीरतासे पानीपतके युद्धमें लड़ेथे। वेश्वा पूनाके दरबारके बड़े २ कर्मचारीगण कहाकरतेथे कि "माधवजी बड़ा साहसी, चतुर तथा वीर शासकहै"। स्वदेशभाषाके सिवाय उर्दू फार्सीभी खूबपढ़ेथे और बड़े हिसाबी थे। मिलनसारतोथे ही,आधीनकर्मचारियोंका अपराध बहुधा क्षमाकरदियाकरतेथे परन्तु रणसे मुहमोड़े हुये कायरोंको कड़ादण्ड अवश्यदेतेथे।सं०ई०१७९४में ज्वरसे पीड़ित होकर पूनाके समीप एकगांवमें देवलोकगामीहुये। भाईके पौत्र दौलतरावसेंधिया इनके उत्तराधिकारीहुये। दौलतरावसेंधियाने ग्वालियरको अपनीराजधानी बनाया।

माधवाचार्य-कर्णाट देशके पश्चिम भागमें उडुपीपुर नामक ग्राम है, वहां सं० ई० की १४ वीं शताब्दीमें मायणकी कुक्षिके घर श्रीमतीजीके उदरसे माधवाचार्यका जन्म हुआ। ये भारद्वाज गोत्री थे। इन्होंने तथा इनके भाई सायणाचार्य (विद्यारण्यस्वामी) ने मिलकर ऋग्वेदभाष्य, तैत्तरीयब्राह्मणभाष्य, और

तैत्तरीयसंहितापर भाष्य रचेथे क्योंकि इन भाष्योंके प्रत्यक अध्यायके अंतमें "इति सायणाचार्यविरचित माधवीयवेदार्थप्रकाशे ... इत्यादि" लेख मिलताहै । बडेहोकर माधवजी करनाटिकके राजावीरबुक्क राजाके दरबारमें जिसकी राजधानी विजयानगरमेंथी प्रधानमंत्री तथा कुलगुरुके पदको प्राप्तहुयेथे। बीरबुक्केबाद उसके पुत्र हरीहरने माधवको जयन्ती पुरका गवर्नरनियत किया था, इस पदको प्राप्त होकर माधवने गोआका घेरा किया और स० ई० १३७० में वहांसे यवद्वषी तुर्कोंको मारभगाया और सप्तकोटीश्वर नामक शिवलिंगकी (जिसकोतुर्कोंने नष्टकरदियाथा) स्थापनाकी । स० ई० १३८१ का अङ्कित एक दानपत्र मिलाहै जिसमें लिखाहै कि सूर्यग्रहणके अवसरपर वैशाखके महीने में महाराजाधिराजमानप्रवर्तकाचार्य श्रीमन्माधवाचार्यने माधवपुरनामक ग्रामबसाकर २४ ब्राह्मणोंको दानकरके दियाथा । अन्तमें माधवने गायत्रीका अनुष्ठान किया और प्रत्यक्ष दर्शन न पानेपर सन्यासी होगये। सन्यासी होतेही गायत्रीने दर्शनदेकर कहा कि " वर मांग" । उत्तरमें माधवने कहा "मातु मैं सन्यासी होगया हूं अब कुछ इच्छा नहीं रखता, परंतु एक प्रार्थना है कि इस देशमें एक पहर सुवर्णकी वर्षा करदो "। इतना कहतेही सुवर्णकी वर्षा होने लगी, उस वक्तके सर्व सुवर्ण-खण्ड पुतली तथा हुण्ड अबतक माळवा इत्यादि दक्षिणीय देशोंमें मिलते हैं। पश्चात् माधवने ब्रह्म सम्प्रदायका प्रचार किया और माधुर्य निष्ठासे राधामाधव युगल रूपके ध्यान पूजनके लिये कई पद्धतें बनाई ।

इनके मतानुगामी दक्षिणमें बहुतहैं और द्वैतवादी होकर ईश्वर तथा जीवको अलग २ मानतेहैं । निम्नस्थ ग्रंथ इनके रचेहुयेहैं—

मीमांसाशास्त्रपर न्यायमालाविस्तार और जैमिनीयन्यायरत्नाधिकरणमाला; धर्मशास्त्रमें कालमाधव, पराशरमाधव, आचारमाधव और व्यवहारमाधव; व्याकरणमें धातुवृत्ति; आयुर्वेदमें माधवनिदान, काव्यमें संक्षेप शंकरविजय; सर्व शास्त्रपर सर्व दर्शनसंग्रह । माधवनिदानकी गणना लघुत्रयीमें है और विद्वान् वैद्य उसके विषयमें कहितेहैं कि—

श्लो०–निदाने माधवः श्रेष्ठः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः ।
शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः चरकस्तु चिकित्सके ॥

खोजकरनेसे विदित हुआहै कि, सन्यासी होकर माधव तथा उनके भाई सायन दोनोंहीने अपना नाम विद्यारण्यस्वामी रक्खा । इन दोनों भाईयोंमें मेल मिलाप प्रशंसनीय था ।

माधवानल (प्रसिद्ध संगीतज्ञ)–पुष्पवतीनगरी (मध्य प्रदेश बिहारी) में राजा गोविंद रावके दर्बारमें वि० सं० ९१९ के लगभग माधवानल ब्राह्मण रहताथा जो संगीतादि अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता होकर ...

पुष्पवतीकी सब सुंदरियें उसपर मोहितथीं, यह देख अनेक मनुष्योंने राजासे आकर शिकायत की, निदान राजाने माधवानलको अपने राज्यसे निकाल दिया। तब तो माधवानल कामवतीके राजा कामसेनके दर्बारमें चला गया और सन्मान प्राप्त करनेमें समर्थ हुआ क्योंकि राजा गाने बजानेका रसिक था। कामसेनके दर्बारमें कामकन्दला नामक वेश्या अत्यंत सुंदरी तथा भावे काममें परमचतुरथी, माधवानल उसीपर मोहित होगया एवं कामसेनने भी माधवानलको अपने राज्यसे निकाल दिया। उन दिनों उज्जैनकी गद्दीपर विक्रम नामधारी कोई नरेश राज्य करतेथे और शरणागतकी प्रार्थना पूर्ण करनेके लिये प्रसिद्ध थे, माधवानलने इन्हींके दर्बारमें आकर शरणली। विक्रमने माधवानलकी दशापर दया करके राजाकामसेनपर चढाई की और उसको परास्त करके माधवानलको कामकंदला दिलवादी। पश्चात् विक्रमकी आज्ञासे माधवानल और कामकन्दला पुष्पवतीमें जारहे, माधवानलने वहां अपनी प्राणवल्लभाके लिये एक महिल बनवाया जिसके खण्डैर डाक्टर राजेंद्रलाल मित्र एम. एल. डी के लेखानुसार अबतक मध्य प्रदेश जि० बिलारीमें विद्यमान है। अनेक संस्कृत तथा भाषाकवियोंने इन दोनोंके प्रेमकी कहानीके विषयमें नाटक रचे हैं।

माधौराव (राजा, सर, टी माधौराव, के. सी यस् आई)—कुम्भकोणम् (तंजोर) में स इ १८२८ की साल जन्मे। इनके बाप रङ्गराव महाराष्ट्र ब्राह्मण तंजोर राज्यमें दीवान थे। माधौरावने स इ १८४१ से १८४६ तक मदरास विश्वविद्यालयमें पढकर अव्वलदर्जेकी सनद पाई। पश्चात् कुछ दिनोंके लिये मदरास विश्वविद्यालयमें गणितशास्त्रके अध्यापक रहे और स ई १८४७ से ४९ तक एकौन्टेन्ट जेनरल मदरासके दफ्तरमें क्लार्क रहे। पश्चात् गवर्नमेंटने इनको ट्रावन्कोरके राजकुमारोंका शिक्षक नियत किया, यह काम इन्होंने ऐसी योग्यतासे किया कि, जिसके पुरस्कारमें राज्यके दीवान पेश्कारका पद इनको दियागया। इस पदपर रहेकर इन्होंने अपने कार्यसे राजा, प्रजा तथा गवर्नमेंट सबहीको प्रसन्न रक्खा जिसके उपलक्षमें स ई १८६६ की साल गवर्नमेंटने इनको के सी यस आई का खिताब दिया। स ई १८७२ में इन्होंने ५००० मासिककी पेन्शनली, इसके कुछ दिन बादही गवर्नमेंटने इनको इन्दौर राज्यमें दीवान नियत करके भेजदिया, इसपदपर दो वर्षभी नहीं रहने पाये थे कि, गवर्नमेंट-आफ-इन्डियाने इनको राज्य बड़ोदामें दीवान नियत करके भेजा। ब्रिटिश गवर्नमेंटका इनपर विश्वास था और जिन ३ राज्योंमें ये रहे वहां प्रजाने इनकी प्रतिष्ठा तथा प्रशंसा की। स० ई० १८७७ में गवर्नमेंटने इनको राजाकी पदवी दीथी। बम्बई तथा मदरास विश्वविद्यालयने इनको फेलो बनाया था। अंग्रेजी भाषा लिखने तथा बोलनेकी शक्ति इनमें प्रचुरथी। ये उच्च

पक्षपात रहित, परिश्रमी तथा मुस्तैद पुरुषथे। वर्तमानकालमें इनकी समान राजनीतज्ञ तथा सुमबन्धकार हिंदोस्तानमें कोई दूसरा नहीं हुआ। स ई १८९० में परलोकगामी हुये।

माधौराव सेंधिया (महाराजा आलीजाह, सर माधौराव सेंधिया, जी० सी० यस्० आइ०, यल० यल० डी०, ग्वालियर नरेश)—महाराजा जीवाजीराव सेंधियाके पुत्र स ई १८७७ में जन्मे और स. ई १८८६में ग्वालियरकी गद्दी पर बैठे। श्रीमान्के बालकालमें कौंसिल आफ-रिजेन्सीका इन्तजामरहा। श्रीमान् संस्कृत तथा अंग्रेजीके पूर्ण ज्ञाता हैं, सैर शिकारके रसिक हैं और चतुर, उत्साही तथा अनुभवी नरेशोंमें गिनेजाते हैं। रेलका यञ्जिन चलानाभी जानते हैं और फोटोकी तस्वीरें उतारनेमें सिद्धहस्त हैं। सम्राट् एडवर्ड सप्तमके राज्याभिषेकके अवसर पर आप इङ्गलैंड पधारे थे और वहां पर ५० हजार रुपये उस सभाको चन्देमें दिये थे जिसका मुख्य उद्देश हिंदुस्तानियों तथा अंग्रेजोंमें मेलजोल बढ़ानेका है। उसी अवसर पर केंब्रुज विश्वविद्यालयने आपको यल यल. डी की उपाधि दीथी। राज्यमें अनेक नये स्कूल आपके समयमें खोलेगयेहैं, और स्त्रीशिक्षाकाभी उद्योग कियागयाहै। पार्सीकी जगह नागरी अक्षरोंका स्वराज्यके दफ्तरोंमें व्यवहारकरनेका हुक्म दे आपने मातृ भाषाका बड़ा उपकार कियाहै। आपके राज्यका विस्तार २९०४६ वर्गमील, बस्ती ३० लाख ३० हजार मनुष्य, सेनामें ५५०४ सवार ११०५० पैदल और ४८ तोपेंहैं। श्रीमानकी सलामी अंग्रेजी अमलदारीमें तोपके १९ फैर और स्वराज्यमें २१ फैरोंकीहै। ब्रिटिशगवर्नमेंट आपके सुप्रबन्धसे प्रसन्नहै और आप स्वयं प्रसन्नचित्त नरेशहैं। परमेश्वर आपको चिरायुकरे।

माधोसिंह सवाई (महाराजा सवाई, सर माधौसिंह, जी सी यस आई जयपुरनरेश)—महाराजा रामसिंहके दत्तक पुत्रहैं। स ई १८६१ में जन्मे, स ई १८८०में गद्दीपर बैठे और दोवर्षके बाद राजपाटका पूरा अधिकार पाया। राजकाजमें श्रीमान् "यतो धर्म्म" ततो जय" इस किम्वदन्तीका प्रयोग करतेहैं और निजपूर्वजोंके धर्मपर दृढ़तासे आरूढ़हैं। आपकी गोपालजीका इष्टहै जयपुरमें माधवसागर नामक तालाब और वृन्दावनमें गोपालजीका बड़ा भारी मन्दिर आपने बनवायाहै। महाराज रामसिंहने जितने सुधार राज्यमें कियेथे उन सबको आपने पुष्ट कियाहै और अनेकनये सुप्रबन्धभी कियेहैं। आप बड़े अनुभवी तथा परिश्रमी नरेशहैं, कितने दिनोंतक राज्यका सब काम आपने बिनादीवानके किया था। प्रजापालनका सदैव चिन्तवन रखतेहैं। राज्यके कर्मचारी तथा प्रजा और ब्रिटिशगवर्नमेंट आपसे सबही प्रसन्नहैं।

पक्षपात रहित, परिश्रमी तथा सुशील आमेरअम्बर आपके समयमें जयपुरराज्य
राजमीवक्ष तथा सुप्रबन्धकार हिंदोवानदासके दत्तकपुत्र थे। सन्ई०१५३५ में आ
में परलोकागमी हुये। नवाबके जीतेजीही बादशाह अकबरने आ
ईका हाकिम नियतकिया था और पश्चात् कुछ

माधोराव सेंधिया (मा... सेंधिया, जी० सी० ... र नरेश)

...ना मतापसिंहके दमनकरनेके लिये भेजाया।
...नाको परास्त किया जिसके उपलक्षमें बाद
—महाराजा ... (पंजाब) का हाकिम नियतकिया। पश्चात् जब
और सन् ई० १८८६में गया मिर्जाहकीमने काबुलसे सिन्धमें आयकर उपद्रव किया
आफ-रीजेन्सीका इन्तजा...को दमनकरणार्थ भेजेगये। सन्धपहुंच आपने मिर्जाहकीं-
...शीकारके रसिक हैं। ...उसके उपलक्षमें आपके पिता राजा भगवानदास (भगवन्त
...को बलानालानवे सूबेदारी तथा सिपहसालारी दी गई। सन् ई० १५७३ में
...वर्ष सत्तमके राज्य काबुलपर चढ़ाई करनेका विचार सुनकर अकबरने
५० हजार रुपये ... वहां पहुंच आपने बादशाही आसह सवपर बिठलादिया
तथा अंग्रेजोंमें मेलजोल ... तथा काबुलकी सूबेदारीपर रहिकर अफ्गानिस्तानकी
आपको यह ... अत्यंत कठोर दण्ड देदेकर खूब ढीलाकिया। कहिते हैं कि,
समयमें खोलेगयेहैं, ... नाम सुनते कांपते थे, उनमें टोपीकी जगह पगड़ी और
...री अफसरोंका स्वराज ... (सम्मान) पहिरनेकी चाल जो अबतक प्रचलित
...का उपकार किया ... जारी हुई थी। बादको आपकी बदली बिहारकी सूबेदारी
...ख १० हजार। आपने पांचवर्ष रहिकर पठानोंको दमनकरके बंगाल तथा उड़ी-
...मानकी सला... ढाक ... गई। सन् ई० १८८८ में राजा भगवानदासके स्वर्ग-
...है। ब्रिटिश ... बड़े समारोहसे आप गद्दीपरबैठे और बादशाहने आपको महा
...। परमेश्वर ... दौलतेमुगलियका खिताब और पंजहजारीका मनसब दिया।
...हजारीका उच्चमनसब आपको मिला। बादशाह अकबरके दर्बार
...माधो ...मन्यसर्दारकी इजत आपके समान नहीं थी। विजय आपसे सघन
...सीगे जिधर भेजेगये जीतहीके लौटे। उड़ीसाके राजाको जिसने बंगालपर
...ई। थी आपने दरियाई लड़ाई में परास्त किया। बादको बादशाह अकबर
... पौत्र सुलतान खुसरो (शाहजहाँ) का अताळीक आपको नियत-
... और शाही दर्बारमें आपका बहुत कुछ अधिकार बढ़ायाअकबरके बाद जहाँ
...तख्तपर बैठकर आपको बंगालकी सूबेदारीपर भेजा और एकही वर्ष पीछे
...नकी सूबेदारीपर बदली करदी। इसीपदपर रहिते हुये सन् ई० १६२२ के
...ग एलिचपुरके समीप आपने परलोक गमन किया। आपके कई सौ रानियें
...जिनमेंसे प्रत्येकके दोदो तीन तीन या इससे भी ज्यादह बच्चे थे। कई रानि-
... आपके साथ सत किया। आपके ज्येष्ठपुत्र जगतसिंहका देहांत आपके
...इने होगया था। उनके नामसे आपने अम्बरमें बहुत बड़ा मंदिर बनवा-

शाहने भी रावसाहबको लिखा कि, यदि आप हुमायूंको पकड़कर मेरे स्वाधीन कर दोगे तो मैं गुजरात फतेह करके आपको देदूंगा, निदान रावसाहबने हुमायूंको उलटे पैरों लौट जानेको कहिदिया लेकिन उसको पकड़ाभी नहीं। इस बातसे नाराज होकर शेरशाहने रावसाहबपर चढ़ाई की, ८० हजार सेना लेकर रावसाहबने उसका साम्हना किया लेकिन कइ नमकहराम सर्दारोंका शेरशाहसे मिल जाना इनकी पराजयका कारण हुआ। साम्हर झीलकी आमदनीसे राव साहबने जोधपुरका राजभवन तथा अनेक किले बनवाये थे। ये अपने समयके राजपूत नरेशोंमें महाबलीथे। बादशाह अकबरके समयमें भी अन्य राजपूतों की समान इन्होंने उससे मेल जोल निजदेहमें मान नहीं किया। जोधबाई के मरने पर अकबरने राजपूतोंकी प्रथाके अनुसार सब राज्योंमें राजपूत नरेशोंकी दाढ़ी मूंछ मूंड़नेके लिये नाई भेजे। जब नाई जोधपुर दर्बार में पहुंचा तो राव मालदेवने उसको निकलवा दिया और कहाकि " शेरोंकी मूंछ कौन मूंड़ सकताहै "। अकबरने यह सुन उपद्रव बढ़जाने के भयसे राव साहबको मनालिया। स० ई० १५८४ में राव मालदेवका देहांत हुआ और राव उदय सिंह इनके उत्तराधिकारीने अन्य रजवाड़ोंकी चालके अनुसार दिल्लीके तख्तको डोला देनेकी रसम जारी की।

माघ गुप्त पंडित—ये कश्मीर प्रान्तसे उज्जैन नरेश विक्रमादित्य इनके दर्बारमें गये थे। विक्रमने इनकी बुद्धिकी परीक्षा करनेके लिये प्रथम कुछ सत्कार नहीं किया परन्तु ये राजाको स्वच्छंद गामी, गुण ग्राही जान राजसेवा निज देहकी समान करते रहे। राजाके प्रसन्नालापकरने पर फूल नहीं जाते थे और क्रुद्ध होनेपर श्रद्धाहीन नहीं होते थे। राजद्वेषियोंसे बात नहीं करतेथे। राजदासियोंकी ओर आंख उठा कर नहीं देखतेथे और न नीचों की बातें राजाके साम्हने कहतेथे। राज निन्दक बहुतेरा बहिकाते थे और आतुर पूर्वक राजसेवाकी विफलता दिखातेथे परंतु ये किसीकी नहीं सुनते थे। इसी प्रकार सब करते २ जब १२ महीने होगये तो एकदिन शरद् ऋतुमें आधीरातके समय राजाने जागकर पवनके झकोरोंसे दीपककी बत्तियें हिलती देख आवाज दी कि " कोईहै "। बाहरसे भीतर तक सब नौकर पड़े सोतेथे केवल माघगुप्त जागते थे। राजाकी आज्ञा पाय तुरन्त भीतर गये और बत्तियें उकसाय जाड़ेसे कांपते हुये ज्योंही बाहर जाने लगे कि, राजाने पूछा " इस वक्त क्या बजा है "। माघ गुप्तने उत्तर दिया कि, दो बजे हैं फिर राजाने पूछा कि " इस वक्त सब नौकर सो रहे हैं तुमको क्यों नहीं निद्रा आई "। माघगुप्तने तुरंत दो श्लोक उत्तर में पढ़े जिनका आशय यह था कि " मुझ अर्द्धे भग्न वस्त्र विहीन ब्राह्मणको महाराजके दर्बारमें बसेहुये चार

ऋतुलौटकर आगई, परवारकी कुछ सुधि नहीं पाई और मेरीभी कुछ सूरत न निकली, इसी चिन्ताके कारण मुझको निद्रा नहीं आई। श्लोकोंको सुनकर राजाने मातृगुप्तसे जानेको कहदिया लेकिन विचारने लगा कि,इस ब्राह्मणका सत्कार अवश्य करना चाहिये। कश्मीर मण्डलका राज्य उनदिनों खाली था निदान प्रभात होतेही राजाने मातृगुप्तको अनुशासनपत्र देकर कश्मीरभेजादिया और वहांके दीवानमंत्रीने पत्रके देखतेही उनका राजतिलक करदिया। गद्दीपर बैठकर राजा मातृगुप्तने कश्मीरके अमूल्य फल फूल तथा शाल दुशाले महाराजविक्रमकी भेटके लिये भेजे और लेजानेवाले दूतको १ श्लोकभी लिखकर दे दिया जिसका आशय यह था कि "महाराज ! आपके चित्तका कृपाभाव मन, वाणी, वचद्वारा किसीतरह प्रकट नहीं होताहै परन्तु आप कृपा करते हैं एव आपकी कृपा भी विलक्षणहै"। ८ वर्ष ९ महीने पर्य्यंत राज्य भोगनेके पीछे राजा मातृगुप्तने महाराजविक्रमके देवलोक होनेकी खबर सुनकर राज्यत्यागदिया और सन्यासीहो काशीको चलतेहुये रास्तेमें राजाप्रवरसेन जिसके चचाके मरनेसे कश्मीरका राज्य खालीहोकर मातृगुप्तको दियागयाथा मिला। प्रवरसेनने मातृगुप्तको बहुत समझाया और कहा कि अब आप मेरी तरफसे कश्मीरका राज्य करें लेकिन उन्होंने येही उत्तरदिया कि जिस सुकृतिके प्रभावसे हम राजपदको पहुँचेथे वह अब इस संसारमें नहीं है। प्रवरसेनने कश्मीरकी गद्दीपर बैठकर बहुतसे मुल्क जीते लेकिन कश्मीर मण्डलकी आमदनी सदैव मातृगुप्तके पास काशी भेजदेतेरहे (देखो प्रवरसेन)। मातृगुप्त इस गलेपड़ी लक्ष्मीको साधु ब्राह्मणोको बॉट देतेथे और आप भिक्षाकरके भोजन करतेथे। इसप्रकार १० वर्ष और जीकर काशीमें स्वर्गवासी हुये। राजा मातृगुप्त ओछेचित्तके आदमी न थे,गद्दीपर बैठकर उन्होंने आज्ञा प्रचारकरादीथी कि कोई किसीतरहकी हिंसा न करे उनकी आज्ञासे सोने चांदीके टुकड़े दीन गरीबोंकोछ्लक्‌डूओंमे मिलाकर गुप्तरीतिसे दिये जातेथे। मातृगुप्तके बनाये श्लोकोंको देखकर येही कहे बनताहै कि वे बड़े भारी पण्डितथे। मेन्ठकविने "हयग्रीववध" नाटिक रचकर उनकी भेंट किया था और इनाममें थाल भर सुवर्ण पायाथा।

मिल्टन (जान मिल्टन–John Milton) इनके बाप बाकिंघमशायर (इङ्गलैंड)के रहिनेवाले बड़े अमीरथे। जान मिल्टनने केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें शिक्षा सम्पूर्ण करनेके पश्चात "कोमस"आदि पांचकाव्य अंग्रेजी पद्यमें रचकर प्रसिद्धिपाई। स ई १६३७ में इन्होंने फ्रान्स तथा इटेलीकी विलायतोंमें यात्राकी, स ई १६४३ म इङ्गलैंड आकर अपना विवाह किया, स ई १६५२ में इनकी मेम तीन कन्यायें छोड़कर मरगई एवं इनको दूसरी शादी करनीपड़ी। दो वर्ष पीछे इनकी दूसरी मेमभी चलबसी एवं इनको कुछही दिनोंबाद तीसरी

शादी करनीपड़ी। बादको ये अंधे होगये, उसीहालतमें इन्होंने "पैरेडायज लास्ट" नामक प्रसिद्ध अंग्रेजी काव्य रचकर स० ई० १६६७ में छपवाया।

उक्तकाव्यको मिल्टन बोलते गये और उनकी बेटियें लिखती गईं थीं और उसके छपनेपर मिल्टनकी आँखें दैवकृपासे खुलगईं थीं। तत्पश्चात् मिल्टनने "पैरेडायजरीगेण्ड" नामक काव्य रचा। मिल्टनकी कविता अत्यन्त कठिन है और उसमें ग्रीक तथा रोमनकथा सरीखा समावेश बहुतायतसे हुआ है। अंग्रेजीकवीश्वरोंमें ये सर्वोत्तम गिनेजाते हैं। ये बड़े स्वरूपवान होकर सङ्गीत विद्याके पूर्ण ज्ञाता थे। स० ई० १६०२ में जन्म, स० ई० १६७४ में मृत्यु।

मीरजाफिर जटल्ली—नारनौल (पटियाला) के रहनेवाले कवि थे। मुगल सम्राट औरंगजेबके शाहिजादे आजमशाहके पास बहुत दिनों तक नौकर रहे थे। फारसी तथा उर्दूमें मज़हब युक्त कविता करते थे। रेख-ताओं में उर्दू शाहिनामा इन्हींका बनाया हुआ है। अन्तमें जब फर्रुखसियर दिल्लीके तख्तपर बैठातो उस अवसर पर इन्होंने एक निन्दा युक्त कविता की थी निदान बादशाह फर्रुखसियरने इनका सर धड़से जुदा करवा दिया। मतलब किये मिलाना ऐसी तुकें मिलानेको चाहते हैं कि जिनके सुननेसे हँसी आवे।

मीराँबाई—जोधपुर राज्यान्तर्गत मेड़तेके राव रत्नसिंहकी बेटी थी और राणा सांगाके कुँवर भोज राजको वि०सं० १५७३ में ब्याही गई थी। भोजराज कुँवर पदहीमें मरकर मीराँको विधवा करगये थे। मीराँके नैहरका कुल वैष्णव था और मीराँ भी बाल्यावस्थाहीसे गिरधरनागर (श्रीकृष्ण) की भक्तिमें तल्लीन थी। इसी लिये उसको पतिवियोगका भी कुछ दुःख नहीं हुआ था। विधवा होनेके बाद मीराँ अपना समय भगवद्भजन तथा साधुसत्संग सहर्ष बिताती थी लेकिन इन बातोंसे लोकनिन्दा होते देख मीराँके देवर रत्नसिंह, विक्रमाजीत तथा उदयसिंहने जो राणा सांगाजीके बाद क्रमशः चित्तौड़ (मेवाड़) की गद्दीपर विराजे, मीराँको अनेक प्रकारसे कष्ट दिये लेकिन उसने एक न माना। अन्तमें ससुरालियोंके दुर्व्यवहारसे मीराँ अपने नैहरको मेड़ते चलीगई और वहांसे कुछ दिनों बाद वृन्दावनको सिधारी और गद्गदस्वर प्रेमसे भगवानके पद बना२ कर गाती हुई विचरती थीं। वृन्दावनमें अकबर बादशाह तानसेनको साथलेकर मीराँके दर्शनार्थ गये थे। पश्चात् मीराँ वृन्दावनसे द्वारिकापुरीको पधारी और वहां रणछोड़जीकी सेवा करने लगीं। इधर मेवाड़में मीराँके चले आनेके बाद कई अकाल पड़े और दिल्लीके मुगल बादशाह भी चढ़ाई करते थे जिससे प्रजा तथा राणा तंग आगये। यह देख सब लोगोंने राणासे कहा कि यह दैवकोप यहांसे मीराँके दुःखी होकर चले जानेसे है। निदान राणाने मीराँको लानेके लिये ब्राह्मणोंको द्वारिका

भेजा ब्राह्मणोंने द्वारिका पहुंच मीरॉसे राणाका सन्देशा कहा लेकिन उसने जानेसे इन्कारकिया तबसो ब्राह्मणलोग मीरॉके द्वारपर अन्नजलत्याग धरनादेकर बैठे । इससे अत्यन्त दुःखी होकर मीरॉने ब्राह्मणाको चलनेकी आज्ञादी और रणछोडजीके मंदिरमें जाकर निम्नस्थपद गाया -

पद-ज्यों जानो त्यों लीजे स्वजन सुधि ज्यों जानो त्यों लीजै ।
तुमबिनुमेरे औरनकोऊ कृपा रावरी कीजे।
वासा भूषण नैन न निद्रा तन तौ पल पल छीजे ।
मीरॉके प्रभु गिर्धर नागर मिलविछुड़न नहिं कीजे ।

जब मीरॉको बहुत देर हुई तब ब्राह्मणोंने मंदिरमें जाकर देखा लेकिन मीरॉको कहीं नहीं पाया, मीरॉकी साडी रणछोडजीमें लिपटी पाइ, मीरॉतो लीन होगइ, गिर्धर लालजीने अपने भक्तकी करुणामय विनती सुनकर उसको अपना लिया । रागगोविन्द तथा जयदेवकृत गीतगोविन्दका भाषा पद्यमें तिलक मीरॉने रचाथा जो अब नहीं मिलते । सैकडा फुटकर पद मीरॉके रचे देश भरमें प्रसिद्ध हैं और भक्तिभावसे भरपूर हैं । चित्तौड़में मीरॉका बनवाया गिर्धर लालजीका बहुत बडा मंदिर अबतक विद्यमान है, लेकिन मूर्तिशून्य है । खोज करनेसे मालूम हुआ कि मानसिंह कछवाहेने जब चित्तौड विजय किया था तो वह गिर्धर लालजीको आमेरम ले आये थे और वहा जगतप्रभूनामसे बडे भारी मंदिरमें उनको पधराया था । कर्नेल टाड साहबने राजपुतानाके स्वरचित अंग्रेजी इतिहासमे राना कुम्भूके मंदिरके पास स्थित हुये मीरॉबाईका मंदिर देखकर भ्रमसे यह लिख दिया है कि मीरॉबाई कुम्भू की रानी थी ।

मुनीश्वरजी (गणक)– इनके पिता रङ्गनाथजी सूर्य्य सिद्धांतके टिप्पणीकार पाठिकपुरान्तगत दधिनामक ग्रामके वासीथे । दूसरा नाम इनका विश्वरूपकर था वि० स० की १७ शताब्दीके भीतर इनका समय है । निष्टार्थदूती नामक लीलावतीकी व्याख्या, मरीचिनामक सिद्धांतशिरोमणिकी व्याख्या, पाठीसार और सार्वभौम इनके रचे ग्रंथ हैं ।

मुबारिक कवि—ये भाषा कवि बिलग्राम जि० हरदोईके रहने वाले थे । जातिके मुसलमान थे और वि० स० १६४० मे विद्यमान थे । अर्बी, फारसी संस्कृत तथा हिंदीके अच्छे विद्वान थे । अलक (जुल्फ) शतक तथा तिलक शतक इनके रचे ग्रंथोके दोहे देखने लायक हैं ।

मुर्शिद कुलीखॉं (बंगालका नवाब)—यह प्रथम ब्राह्मण था, पीछे मुसल्मान होगया था । फारिसमें गुलाम करके पाला गया था । औरंगजेबकी मृत्युकी साल स० ई०१७०७में बंगालका नवाब था । इसने ढाकेसे राम-

धानी बदलकर अपने बसाये मुर्शिदाबादमें कायम कीथी। २१ वर्ष राज्य करके अपने जँवाईको बङ्गालका राज्य दे मरा।

मुरारी मिश्र—अनर्घराघवकाव्यकी प्रस्तावनाके अनुसार ये मौद्गल्य गोत्रोत्पन्न भट्ट वर्धमानके पुत्र थे। कई मीमांसा ग्रंथ तथा अगस्त्य निरुक्त। भाषाविस मनोहर और अनर्घराघव काव्य इन्होंने रचे थे। प्रसिद्ध पंडित कुमारिल भट्ट इनके गुरु थे।

मुहम्मदसाहब (मुसल्मानोंके पैगम्बर)—शहिर मक्का(अरब) के एक सभ्य बेगम अबदुल्लाके घर सं० ई० ५७० में जन्मे। माता पिताकी मृत्यु बचपनहीमें होजानेके कारण चचा अबूतालेबने आपको पाला था। १५ वर्ष की उम्रतक आप भेड़ें चराते रहे थे तथा सुतुर्वानी करते रहे थे। २५ वर्षकी उम्रमें आपने ४० वर्षकी खदीजा नामकी एक अमीर विधवासे शादी की। जो ६५ वर्षकी उम्रमें कई बच्चे छोड़कर मरगई और इतना धन दौलत छोड़ गई कि आप मक्कामें सबसे बड़े अमीर होगये। आपको स्वदेशवासी हीनी हालत देखकर बड़ा शोक होता था एव आपने सोच विचार कर कुरान रचा और उपदेश करना शुरू किया। थोड़ेही दिनोंमें मक्का तथा मदीनामें बहुतसे लोग आपके मतानुगामी हुये। मक्कामें हरसाल एक मेला हुआ करता था।

एकसाल इस मेलेमें आपके अनुयायी बहुतसे आदमी मदीनासे आए और आपको अपने साथ ले गये। इसी सालसे मुसल्मानोंका सन हिजरी शुरू हुआ है। मदीना पहुंच आपने एक मसजिद तथा कितनेही मकान बनवाये और कई और तोंसे शादीकी जिनमेंसे एक ७ वर्षकी थी। पश्चात् आपने युहूदियोंके शहरोंपर कई दफे हमले किये और तलवारके जोरसे उनको मुसल्मान किया और उनका अटूट धन लूटा। फिर आपने दूर २ बादशाहोंके पास मुसल्मान होनेके लिये पत्र भेजे। किसी औरने तो कुछ ध्यान नहीं दिया लेकिन मिश्रदेशके हाकिमने दो लौंडियें तथा एक खच्चर नजरके लिये भेजा। सं० ई० ६३० में आपने शाहिर मक्कापर फतेह किया और वहांके ३६० मूर्तिवाले एक मंदिरको तोड़कर मसजिद बनाया तथा मक्काके रहिनेवाले सब लोगोंको तलवारके जोरसे मुसल्मान करालिया। अपना महत्व प्रकट करनेके लिये आपने उंगलियोंसे पानी बहाया, चंद्रमाके दो टुकडे करके अपनी आस्तीनोंसे निकाले और जानवरों तथा दरख्तोंसे अपनेको पैगम्बर पुकरवाया। सं० ई० ६३१ में १३ दिनकी बीमारीके बाद बेगम फातिमा नामक बेटीको छोड़कर गैम्बर गये। फातिमाकी शादी अलीके साथ हुई थी जिससे हसन और हुसेन दो बेटे थे। शाम तथा अरबस्तान देश और मिश्रदेशका अधिकांश आपके सामने मुसल्मान होगयाथा।

मुहम्मदगोरी—देखोशहाबुद्दीन।

मुहम्मदबहादुरशाह (दिल्लीके सबसे पिछले मुगलबादशाह)—निज पिता अकबरशाह द्वितीयके बाद स० ई० १८३७ में दिल्लीके तख्त पर बैठकर नाममात्रके बादशाह हुये। सन ५७के गदरमें इन्होंने भी बागियोंका साथ दिया और अपने नामका सिक्का चलाया। उपद्रव शान्त होनेपर बृटिश गवर्नमेंटने इनका मुल्क खालसा कर लिया और १२ लाख रुपयेकी वार्षिक पेन्शन देकर रंगून मुल्क ब्रह्मामें कैद करके भेज दिया। इनकी दो बेगमें एक शाहिजादा तथा एक पोता इनके साथ गया और इनके दो शाहिजादों तथा एक पोतेको लार्ड कैनिङ्ग वायसराय हिंदने गोलीसे मार दिया। मुहम्मद बहादुरशाह फार्सी तथा उर्दूमें कविता भी करते थे और उसमें अपना नाम जफर रखते थे। इनका बनाया दीवान दिल्लीमें छपा था।

मूककवि सार्वभौम—ये द्रविड देशवासी जन्मान्ध दरिद्री थे, जब इनके निर्वाहका ठिकाना कहीं नहीं लगा तो काञ्ची पुरीमें कामाक्षा देवीके मंदिरमें जापड़े। इस मंदिरमें विद्याकी इच्छासे एक ब्राह्मण बहुत दिनासे तप करता था, एक दिन अर्द्धरात्रिके समय भगवतीने वेश्याके रूपमें प्रकट होकर कहा " वरमाँग "। विद्यार्थीने भगवतीको वेश्या समझ अपने तप बिगड़नेके भयसे कहा कि यदि तुम मेरी इष्ट देवी भगवती हो तो मुझे उसी स्वरूप से दर्शन दो। देवी यह सुन तुरन्त क्रोध पड़ी और रास्तेमें उस मूक अन्धेको पड़ा देख ठोंकरसे जगाया। मूक जब जागकर चिल्लाने लगा तो देवीने उसके मुंहमें पीक डालदी जिसके प्रभावसे वह बड़ा कवीश्वर होगया। स्वा० शंकराचार्यने सौन्दर्य लहिरीके निम्नस्थ श्लोकोंमें इस कथाका उल्लेख किया है'—

श्लो० कदाकाले माता कथय कलिताऌक्तकरसं ।
विवेयं विद्यार्थी तवचरण निर्णेजनजलम् ॥
प्रकृत्या मूकानामपिच कविताकारणतया ।
यदा दत्ते वाणीं मुखकमलताम्बूलरसताम् ॥

इनका जीवनकाल वि० स० की ७ वीं शताब्दीके लगभग प्रतीत होता है। ' पंचशती ' इनका रचा ग्रंथ है।

मूसा—(यहूदियोंके पैगम्बर)—हजरत ईसासे पहिले भूमण्डल के सर्वथ पश्चिमी भागमें आपका मत प्रचलित था। स० ई० से प्राय दो हजार वर्ष पहिले इबराहीमके वंशमें आपका जन्म हुआ। बाइको हजरत ईसाभी इसी वंशमें पैदाहुये। इबराहीम इसराईल जातिके थे जो किसी आपत्तिके कारण अरबसे मिश्रमें आ बसेथे। पश्चात जब इसराईलकी सन्तति गिनती में बहुत बढ़गई तो मिश्रके बादशाहने हुक्म दिया

करनेका हुक्म देकर प्रजाको कृतार्थ २ करदिया। पश्चिमोत्तर देशके पुलिस तथा शिक्षा विभागका संशोधनभी आपके वक्तमें खूब होगया। आपके बनाये भूमिकर सम्बन्धी आईनभी बम्बई आदि अन्य सूबोंके आईनसे प्रजाके लिये दशगुन कम हानि कारक हैं। प्रजाके भ्रम और संदेहको मिटाना आप अपना मुख्य कर्तव्य समझतेथे। ३६ वर्षतक इस देशमें कठिन परिश्रम करके सन् ई० १९०१ की साल घर पेनूर्टेनी पेन्शन लेकर इङ्गलैंड को पधारे और प्रिवीकौंसलके मेम्बर हुये लेकिन कुछही दिनोंबाद भारतवर्षके सहकारी मंत्रिका पद आपको दियागया। पश्चिमोत्तर देशके रईसों तथा प्रजागणने चन्देसे लखनऊ आदि शहरोंमें आपके स्मारकचिह्न स्थापन किये और हिंदोस्तानके सब समाचार पत्रोंने एकस्वरसे आपको प्रजाहितैषी गवर्नर कहि पुकारा।

मैकाले (टामस बेबिङ्गटन लार्ड मैकाले-Thomas Babuigton Lord Macaulay) ये स्काटलैंडके एक प्राचीन प्रतिष्ठित वंशमें सन् ई० १८०० की साल जन्मे। बचपनहीसे इनकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी पाठ एक दफे पढ़नेहीसे याद होजाताथा और कविता ७ वर्षकी उमरसे करने लगे थे। एम ये की परीक्षाकेम्ब्रिजकालिजसे इन्होंने सन् ई० १८२६ में उत्तीर्ण की थी, पढ़तेसमयमें कई दफे इनाम पाया था, पश्चात् वकालतका इम्तिहान पास किया और पार्लियामेंटके मेम्बर होकर लार्डकी उपाधि पाई थी। सन् ई० १८३४ में सुप्रीमकौंसल कलकत्ताके मेम्बर होकर हिंदोस्तानको आये और बहुत धन उपार्जन करके दो वर्ष पीछे इङ्गलैंडको वापिस गये और फिर पार्लियामेंटके मेम्बर हुये। थोड़े दिन बीमार रहकर सन् ई० १८५९ में मरे। अंग्रेजीमें इनके रचे बहुतसे ग्रंथहैं जिनमेंसे एक इङ्गलैंडका इतिहासभी है। ये बड़े विद्वान तथा विचारशील पुरुष थे, तथापि ये पक्षपाती थे और निर्भय होकर उन पुरुषोंकी जो बड़े २ पदोंमें पाई जातीहैं निन्दाकरते थे।

मैक्समुलर—(फ्रेडरिक मैक्समुलर Fredrich Maxmuller) इनकी जन्म भूमि जर्मनीमें थी और यहां इनके बाप किसी कुतुबखानेके दारोगाथे। इन्होंने बर्लिन तथा पेरिसमें रहकर संस्कृत पढ़ी थी और सन् ई० १८४६ में इङ्गलैंडमें जाबसे थे। पश्चात् ईस्टइंडिया कम्पनीने ऋग्वेदको भाष्यसहित छपवानेका काम इनको सौंपा और आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने इनको नवीन भाषाओंका प्रोफेसर नियत किया। ये अनेक भाषाओंके विद्वान होकर संस्कृतके बड़े भारी पंडितथे। हिंदुओं तथा बौद्धोंके अनेक धर्मग्रंथोंका अंग्रेजी अनुवाद इन्होंने किया था। ऋग्वेदकाभी अंग्रेजी अनुवाद किया था। केम्ब्रिज तथा एडिनबरा की यूनीवर्सिटीओंने एल एल डी की उपाधि इनको दीथी। स्वा० दयानन्द सरस्वती इनको मोक्षमूलर कहा करते थ। सन् ई० १८२३ में जन्म, सन् ई० १८९८ में मृत्यु।

मैल्कम–(सर जान मैल्कम–Sir John Malcolm)–ये युवावस्थामें इङ्गलैंडसे हिंदोस्तानमें आकर बृटिशसेनामें नौकर हुये। स० ई० १८०२ से १८०९ तक शाह ईरानके दर्बारमें बृटिश गवर्नमेंटकी तरफसे राजदूतके पदपर नियुक्तरहे। पश्चात इङ्गलैंड को वापिस गये और पर्शिया(ईरान)का विश्वासनीय इतिहास लिखा जो स ई १८१२ में छपा। स ई १८१७ में सेनापति नियतहोकर फिर आप हिंदोस्तानको आये और मरहठों तथा पिन्डारियोंको अनेक युद्धोंमे परास्तकिया। स ई १८२१ में इङ्गलैंडको वापिसगये और स ई १८२७ में बम्बई के गवर्नर नियतहोकर तीसरी दफे हिन्दोस्तानमें आये। स ई. १८३० में अन्तिम दफे इङ्गलैंड को गये और पार्लियामेंट के मेम्बर बनायेगये। लार्ड क्लायवका जीवनचरित तथा हिंदोस्तानका इतिहास भी इन्हाने अंग्रेजीमें लिखाथा। स ई १७६९ में स्काटलैंडमें जन्मे, स ई १८३३ में मरे।

मोहनदास (भाषाकवि)–यह नैमिषारण्य के समीपकुरसथग्राममें अहिवात कायस्थ श्रीधरके घर जन्मेथे। " स्वरोदयपवन विचार " नामक ग्रंथ इन्होंने स ई १६३० कीसाल गंगातट कन्नौजमें सम्पूर्ण कियाथा। उक्त ग्रंथमें योग साधनेकी क्रियाहै और स्वर, ज्ञान, आसन तथा कुम्भक आदि प्राणायामोंका वर्णनहै।

मृगनयनी–ये गुजरातकेराजा की कन्या ग्वालियरके तोमरवंशी राजा मानसिंह की रानीथी। स ई की १६ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें हुई। सङ्गराय इतिहासकार जो मुगल सम्राट् शाहजहांके वक्तमें हुआ लिखताहै कि " रानी मृगनयनी राजा मानसिंहकी २०० रानियों में सबसे अधिक रूपवती तथा सुंदरी थी, सङ्गीतशास्त्रमें बड़ी निपुणथी और संकीर्णरागतैयारकी समान कोई गाता-बजाता था ही नहीं "। रानी मृगनयनीकेनिकाले ४ प्रकारके राग जो गुजारी, बहीलगुजारी, मालगुजारी और मंगल गुजारी कहिलाते हैं दक्षिणदेशोंमें खूबप्रसिद्ध है।

म्हात्रे (मिष्टर गणपतिरावकाशीनाथ म्हात्रे प्रसिद्ध मूर्तिकार)–ये बम्बई के रहिनेवाले सोमवंशी क्षत्री हैं। इन्होंने बम्बई के सर जमशेदजी जीजीभाइ के कारीगरी स्कूलम चित्रकारीकी शिक्षा पाई है और घर पर बैठकर उसचित्रकारीके आधारपर मिट्टी तथा पाथरकी मूर्तियं बनाना सीखाहै इनकी कारीगरीमें कमाल यहहै कि इनके बनाये वस्तु तथा मूर्तियें केवल असलके चित्रसेही नहीं मिलते हैं वरन उनकी आकृतिसे भी। जैसे फोटोंम मनुष्यका हाव भाव सबही मालूम होताहै वसही इनकी बनाई मूर्तियोंमें भी। मंदिराभिमुख, सरस्वती तथा भिखनी आदिकी इनकी बनाई पूरे कदकी मूर्तियोंके देखनेसे सच्चीस्त्रीका भ्रम होताहै। बम्बईम अनेक पार्सियोंके पाषाण वस्तु जो इन्होंने

बनाये हैं बिलकुल असलके मुताबिक हैं। अहमदाबादमें महारानी विक्टोरियाके स्मारक फंडमेंसे श्रीमतीकी मूर्ति बनानेके लिये इन्हें १४ हजार रुपयेमें ठेका दियागयाथा।

इनकी बनाई मंदिराभिमुखकी मूर्तिको बम्बईके पारसीनरी स्कूलमें (मिसिसेप्टर १२००) रु० में खरीदाथा। दूसरी मूर्ति सरस्वतीकी तैयार करके इन्होंने पारेस की प्रदर्शिनीमें भेजीथी जिसके बदलेमें सुवर्णके सिवाय वहांके कारीगरोंके सार्टिफिकटोंका इनके पास ढेर लगगया। तीसरी मूर्ति जिसको स० ई० १९०२ के दिल्लीदर्बारकी प्रदर्शिनीके लिये इन्होंने तैयारकी थी जिसको देख विलायती कारीगरोंके सिवाय लार्ड कर्जन तक मसन्न हुयेथे। सर जार्जबर्ड वुड(११००)जो देशी कारीगरीके नामी अनुभवीहैं, लिखतेहैं कि "मिस्टर म्हात्रेका मूर्ति बनानेका काम अपूर्वहै"। आपका जन्म स० ई० १८७६ में हुआहै और आप मात्र मात्रकी अंग्रेजी तथा देश भाषा भी पढ़े हैं।

यदु (यादवोंके मूलपुरुष)–राजा ययाति इनके पिता थे य इतने पराक्रमी हुये कि इनके वंशज इनके नामसे यादव (यदुवंशी) कहेजाय। श्रीकृष्णजी इसी यदुवंशमें हुये। कौरवोंके मूल पुरुष राजा पुरु इनके सहोदर थे। यदुने कभी राज्य नहीं किया और इनके वंशजोंमेंभी कभी कोई राजा नहीं हुआ। प्रसिद्ध ज्योतिष पंडित शुक्राचार्य इनके नानाथे।

ययाति–महाभारत आदि पर्व १५ अध्यायमें लिखाहै कि "राजा ययाति चंद्रवंशके छठे राजाथे, राजा नहुष इनके पिताथे राजा पुरूरवा इनके परदादाथे। यादवोंके मूल पुरुष राजा यदु और पौरवोंके मूल पुरुष राजा पुरु इन्हीके दो परम पराक्रमी पुत्रथे"। हरिवंश पुराणमें लिखाहै कि "राजा ययातिने इंद्रसे स्वर्गका रथ प्राप्त करके ६ दिनमें समस्त पृथ्वी तथा देवताओंको जीत लियाथा"। राजा ययातिका बनाया एक तालाब अबतक महोबा (बुंदेलखण्ड) में मौजूद है। यादवपुरसे ४ मील पूर्व आममऊमें गंगा तटपर एक टीलाहै जिसको राजा ययातिका किलाकहते हैं। राजा ययातिकी २० वीं पीढ़ीमें राजा दुष्यंत हुये जिनके पुत्र भरतके नामसे इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा। राजा भरतके प्रपौत्र राजा हस्तीने हस्तिनापुर बसायाथा। राजा हस्तीकी १४ वीं पीढ़ीमें कौरव पांडव हुये। वाल्मीकीयरामायणके अनुसार महाराज रामचंद्रके वृद्धप्रपितामहका नामभी ययाति था, इनकी गणना भी सूर्यवंशके प्रतापी नरेशोंमें है।

यवनाचार्य–देखो पिथागोरस।

याकूब–येयाथा आदमके पुत्र शामकी ११ वीं पीढ़ीमें हुये। इस हाज, इनके बापथे और इबराहीम इनके दादा। हजरत मूसा तथा हजरत ईसा यथा-

इन्हींके वंशमें उत्पन्न हुये। याकूबका दूसरा नाम इसराइलथा, इनके १२ बेटे थे जिनमेंसे सबसे छोटा यूसुफथा, पश्चात् इन्हीं बारहों बेटोंकी औलाद बहुत बढ़ जानेपर १२ जातियोंमें विभागित होगई और "बनी इसराइल" नामको प्राप्त होकर अरबदेशमें रहिनेलगी अरबमें एकदफे घोर अकाल पड़ा, उन दिनों याकूबका सबसे छोटा बेटा यूसुफ मिश्रमें वजीरथा निदान यूसुफने सब बनी इसराईलको मिश्रमें बुलालिया। ४३० वर्ष तक मिश्रमें रहिनेके बाद जब बनी इसराईल तादादमें अत्यंत बढ़गये तो मिश्रके हाकिमने उनको अपने मुल्कसे निकाल दिया।

४० वर्षतक इसराईल लोग अरबके जंगलोंमें घूमते रहिनेके बाद शाहिर किनआनमें बसरहे। पश्चात् हजरत मूसाने इसराइलोंको युहूदीधर्म ग्रहण कराया (देखोमूसा)। ई० स० से १०९ वर्ष पूर्व इसराइलोंने इबरानी (हेबरू) राज्य स्थापन किया जिसके दूसरे बादशाह हजरतदाऊद हुये।

यास्कमुनि (वेदाङ्ग निरुक्तके कर्ता)—निरुक्तमें वेदोंके कठिन शब्दों तथा मंत्रोंकी व्याख्या है। यास्कमुनि पारस्कर देशके रहनेवाले यस्कगोत्रोत्पन्न यजुर्वेदी थे। वैशम्पायन ऋषि इनके गुरु थे और तैत्तरीय इनके शिष्य थे। यास्कमुनि अपने ग्रन्थोंमें लिखतेहैं कि यास्कनामधारी चार और ग्रन्थकार मुझसे पहिले होचुके हैं"। निम्नस्थ ग्रंथ यास्कमुनिके रचे मिलतेहैं—"पदप्रकृतिसंहिता" जो शौनकीय ऋक्प्रातिशाख्यके सूत्रोंका आशय लेकर बनाई गईहै और सामवेदीय श्रौतसूत्र। यूरुपीय विद्वानोंके मतानुसार इनका समय ई० स० से प्राय: ९०० वर्ष पूर्वहै।

याज्ञवल्क्यऋषि—मैत्रेयी तथा कात्यायनी इनकी दो स्त्रियें थीं। "शुक्ल यजुर्वेदकी संहिता" तथा "याज्ञवल्क्यस्मृति" नामक धर्मशास्त्रका ग्रन्थ इनके रचे हुये हैं। यूरूपीयविद्वानोंके मतानुसार इनका समय ई० स० से दो हजार वर्ष पहिलेहै। महाराज युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें इनके उपस्थित होनेका वर्णन महाभारतमें है।

युधिष्ठरअन्ध (कश्मीरनरेश)—यह राजा नरेन्द्रादित्यके पुत्र वि० स० से १९३ वर्ष पहिले कश्मीरकी गद्दीपर बैठे। प्रथम तो कुछ दिनोंतक इन्होंने बड़ी सावधानीसे काम किया परन्तु बादको कुसङ्गतिमें पड़जानेके कारण विषय वासनामें फँसगये और लक्ष्मीमदसे मतवाले हो नीचोंकी समान योग्य पुरुषोंका भी तिरस्कार करनेलगे। इसी कारण श्रेष्ठपुरुषोंने इनको त्याग दिया और मंत्री लोगभी बिगड़ बैठे। आगे मंत्रशत्रा और पीछे अनेक प्रकारकी निन्दा होनेके कारण इनका तेज नष्ट होगया। जब इनकी ऐसी दशा दूसरे राजाओंको मालूम हुई तो उन्होंने कश्मीरको आघेरा। मंत्रीलोग तो द्वेषी थेही, एवं युधि-

डर, शत्रुभावसे युद्ध करनेमें असमर्थ हुये और अवसर पाकर रानियों तथा दासियों समेत वनको भाग गये। इनकी आंखोंसे कुछ कम दीखता था इसीलिये देशियोंने ठट्टेमें उनका नाम अन्धयुधिष्ठिर रखलियाथा। इन्होंने ३० वर्ष राज्य किया। इनके चरित्रसे यह उपदेश मिलताहै कि "समानदृष्टि होना यद्यपि महान् गुण है परन्तु राजाका समदृष्टि होना अपकीर्तिका हेतु होताहै"।

युधिष्ठिर महाराजा (पांडव)–यह हस्तनापुराधीश राजा पांडुके ज्येष्ठ पुत्र रानी कुन्तीके उदरसे थे। भीम तथा अर्जुन इनके सगे भाई थे और नकुल था सहदेव इनके सौतेले भाई रानी माद्रीके उदरसे थे। यह पांचो भाई पांडव कहलातेथे, द्रोणाचार्यने इनको अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा दीथी। कुछ दिनों बा राजा पांडुके हाथसे ब्रह्महत्या होगई एवं वह राज्य अपने अन्धे भाई धृतराष्ट्र सौंप वनको सिधारे। धृतराष्ट्रके कौरवनामक १०० पुत्रथे जो शुरूहीसे पांडवोंके साथ ईर्षाद्वेष रखते थे। जब युधिष्ठिर बड़े हुये तो धर्मशास्त्रकी आज्ञानुसा राजा धृतराष्ट्रने उनको युवराज नियत कियाथा इस बातपर दुर्योधन आदि कौरवों विरोध किया निदान लाचार होकर धृतराष्ट्रने पांडवोंको १४ वर्षका वनवा और कौरवोंमें ज्येष्ठ दुर्योधनको युवराजका पद दिया। वनवासके दिनोंमें युधिष्ठिरके छोटे भाई अर्जुनने स्वयम्बर विधिसे द्रौपदीके साथ विवाह किया जिसक निजमाताकी आज्ञानुसार पांचो पांडवोंने अपनी पत्नी बनाया। १४ वर्ष व्यती होनेपर पांडवोंने अपने ससुर पंजाब नरेश राजा द्रुपदकी सहायता पाकर अप धृतराष्ट्रसे राज्यबांट देनेकी प्रार्थनाकी निदान कौरवों तथा पांडवोंमें बीचराज्य बांटदिया गया जिसमें पक्षपात वश कौरवोंको बड़े २ नगर तथा धनाढ्य ग्राम मिले और पांडवोंको जंगल, ऊसर तथा उजाड़ खण्ड दिये गये। राज्य हाथ आनेपर महाराज युधिष्ठिरने राज्यसिंहासनपर बैठकर जमुनातट इन्द्रप्रस्थ नामक नगर बसाकर उसको अपनी राजधानी बनाया। इन्द्रप्रस्थके खंडहर अबतक दिल्लीसे १२ कोसपर दक्षिणकी ओर पड़े हैं। १६ वर्ष राज्यकरनेके बा महाराज युधिष्ठिरने राजसूय यज्ञ किया जिससे देश देशान्तरोंमें उनका यश विस्तृत हुआ। यह बात कौरवोंको बाण समान लगी। निदान उन्होंने अपनी रा धानी हस्तिनापुरमें एक द्यूतसभा स्थापनकी और उसमें युधिष्ठिरको भी बु या। उस सभामें युधिष्ठिर अपना राज्यस्व हार गये और यदि धृतराष्ट्र बीच आकर शान्ति स्थापन न करते तो घोर उपद्रव होजाता। पांडवोंको १२ वर्ष लिये फिर वनवासकी आज्ञा होगई। वनवासके दिनोंमें कौरवोंने अनेक उ पांडवोंको पकड़नेके लिये लेकिन वह बचगये। १२ वर्ष बाद वनसे लौट पांडवोंने अपना राज्य मांगा लेकिन कौरवोंने इनकार किया। यहींसे महाभारत युद्धकी जड़ जो कवि चन्द्रहास पूर्णीमाल राजाके लेखानुसार ८१४ गतकलिमें

दिन पर्यंत कुरुक्षेत्रके मैदानमें हुआ । इस युद्धमें भारतके सब राजे महाराजे पांडवों तथा कौरवोंके तरफदार थे । अन्तमें सब शूरवीरोंका होम होकर भारतका प्राचीन गौरव नष्ट हुआ, कौरवोंकी हार हुई, और दोनों तरफके दलमेंसे केवल निम्नस्थ १० मनुष्य बचे –

पांचोंभाई पांडव, छठे श्रीकृष्ण, सातवें सात्यकी, आठवें कृपाचार्य, नवें अश्वत्थामा और दशवें कृतवर्मा । राजाओं महाराजाओंके मृतशरीर को तथा कुटुम्बियोंको रणशायी हुये देख महाराज युधिष्ठिरके चित्तमें वैराग्यका उदय हुआ परन्तु श्रीकृष्णजीके बहुत समझानेपर राज्य सिंहासनपर विराजे । पश्चात् महाराजने अश्वमेध यज्ञकिया और ३६वर्ष पर्यंत भारत भूमिका एकछत्र धर्मराज्य किया । अन्तमें श्रीकृष्णजीके परलोक गमन करनेकी खबर पाकर महाराज अधीर हुये और निज पौत्र परीक्षितको राजपाट सौंप भाइयों तथा रानी द्रौपदी सहित दक्षिण, गुजरात, पंजाब तथा द्वारिका इत्यादिमें रोतेहुये घूमते फिरे और हिमालय पर्वतपर जाकर बर्फमें खोजगये । लेख है कि वसुधाराके बर्फमें महाराज युधिष्ठिर चलते२ ही गुप्त हुये और गिरेनहीं । विक्रमी सम्वत्से पहिले महाराज युधिष्ठिरके सम्वत्का प्रचार था । "धृतिक्षमा" आदि धर्मके १० लक्षण महाराज युधिष्ठिरमें पूर्णरीतिसे विद्यमानथे, उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला और न कभी कोई धर्म विरुद्ध काम किया और इसीलिये धर्मावतार कहिलाये । चंद्रवंशका राज्य केवल ३० पीढ़ीतक और महाराज युधिष्ठिरके पीछे चला । महाराज युधिष्ठिर युगान्तरके समयमें हुयेथे।समयने उनके वक्तमें बहुत कुछ पलटा खायाथा और रफ्ते२ मनुष्योंकी नियतमें जमीन आस्मानका अन्तर पड़गयाथा ।

उदाहरणके लिये उस समयका एक अभियोग महाभारतसे उद्धृत करतेहैं–

' महाराज युधिष्ठिरके राज्यमें किसी मनुष्यने अपना पुराना मकान बेचा मोल लेनेवाला नये मकान बनवाने लगा तो उसमें बहुतसा गड़ा हुआ धन मिला । तुरन्त उसने मकानके पूर्व स्वामीको खबरदी और कहा कि यह धन आपकाहै इसे लीजिये । पूर्व स्वामीने उत्तर दिया कि मैं मकान बेच चुका इस कारण इस धनमें मेरा कुछ स्वत्व नहीं । इस प्रकार झगड़ते हुये यह दोनों धर्मराजके पास आये, दोनों कहतेथे कि पराये धनको हम नहीं छूसकते । समयके परिवर्तन की परीक्षा के लिये महाराज युधिष्ठिरने उस धनको राजकोषमें रखनेकी आज्ञादी और उन दोनोंसे कहदिया कि यदि तुम मेंसे किसी को इस धन पर दावा हो तो फिर विचार करके आना । थोड़े दो वर्षबाद वे दोनों हाजिर होकर प्रार्थी हुये। बेचनेवाला कहताथा कि मैंने मकान बेचाहै नकि उसमें गड़ा हुआ धन। मोल लेनेवाला कहताथा कि जब मैं मकान मोल ले चुका तो बेचनेवालेका उसकी किसी चीजपर कुछ अधिकार नहीं रहा ।

रघुमहाराजा (रघुवंशियोंके मूल पुरुष)–यह अयोध्याके सूर्यवंशी नरेश बड़े प्रतापी, यशस्वी तथा परोपकारी हुयेहैं। सूर्यवंश इन्हींके नामसे रघुवंशकहलाया। इनके पिताका नाम दिलीप था। वाल्मीकीय रामायणके लेखानुसार यह सूर्यवंशके ३६ वे राजा थे और महाराज रामचन्द्र इनसे १४ पीढ़ी पीछे हुये। वि० पु० तथा भागवतके लेखानुसार यह महाराज रामचन्द्रके प्रपितामह थे।

रघुनाथदास बाबा (रामसनेही)–इनके बाप दुर्गाप्रसाद सरयूपारी ब्राह्मण पचपारके पांडे पैंतेपुर जिला सीतापुरके रहनेवाले थे। प्रथमसे महाराज रामचन्द्रके चरणोंमें इनका अनुराग था। बड़े होकर इन्होंने अंग्रेजी सेनाके गोलन्दाजोंमें नौकरीकी और अयोध्यावासी बाबा मौनीदासको गुरु किया। नौकरीकी हालतमेंभी यह सदैव हरि भजनमें एकाग्रचित्त रहतेथे। आखिर पल्टन छुटनेसे अयोध्यामें चले आये और भजनके प्रभावसे प्रसिद्ध साधुओंमें गिने गये। अवध यात्राको आनेवाले राजे महाराजे, सेठ साहूकार अब यहां इनसे मिलते तथा भेट पूजा करतेथे। सदाव्रत इनके यहां जारी रहताथा और कभी भण्डाराभी हुआ करताथा। यह देशकालके अनुसार चलनेवाले चतुर पुरुष और अच्छे विद्वान् होकर भाषा कविता करनेमें निपुण थे। हरिनाम सुमिरन तथा विश्राम सागर इनके रचे ग्रंथ देखनेमें आयेहैं। वि० सं० १९०० में ६६ वर्षकी उमरमें इनका देहांत हुआ। इनके ५ आदि शिष्य जिनका पंथ चल रहा है। इनके कोई औलाद नहींथी। स्त्री इनकी अयोध्याजीमें इनके साथ आईथी और वहीं इनसे पहिले स्वर्ग सिधार चुकीथी। इनके विषयमें प्रसिद्ध है कि नौकरीकी हालतमें रामभजनमें तत्पर रहनेके कारण एक दफ इनको पहरेपर जानेकी सुधि न रही तो स्वयं रामचन्द्र महाराजने इनके रूपमें उपस्थित होकर पहिरा दियाथा। मिस्टर जि० पहरायनने यात्रामें गया था जब लखनऊ फतेह कियाथा तो इस अवसर पर भी यह अंग्रेजी फौजमें मौजूद थे। इनका उल्लेख निम्नरूपसे मिलता है–

कवित्त।

सोपै भट पठी छत्तरी नौकरी त्यागके धाय पराई।
छै कुट फकट सूत्रीरणी जिन आपके बहुतन फेर फराई।
सुमत एक न एक कहैं रघुनाथ घुमानम ठाई।
गोलन मार गिराय गढ़ी मिस्टर भुक्का सम दूत दगाई।

इस सम्बन्धमें प्रसिद्ध है कि धावा हुक्म पांवड़े उस गोलन्दाज साहेब बड़े केपथ रघुनाथदास हरिभजनमें एकचित्त होनेके कारण नहीं पहुंचने पोड़ी देर पीछे जब उस गोलन्दाज मारेगये तो फौजी अफसर ...

देखते २ अकेले रघुनाथदासने गोलाकी बौछारसे वैरीदलको परास्त किया। पश्चात् जब रघुनाथदास गैरहाजिर होनेके कारण डरते कांपते साहबके सन्मुख पहुंचे तो साहबने प्रसन्न होकर कहा कि "तुमने बड़ा बहादुरीका काम किया, हम तुम्हारा दर्जा बढानेकी रिपोट करेंगे"। यह सुन रघुनाथदासके चित्तमें वैराग्यका उदय हुआ और यह सब रामचंद्र महाराजकी कृपा समझ इस्तेफा देदिया। ऐसी बातोंके प्रसिद्ध होजानेसे बाबा रघुनाथ दासकी असाधारण प्रसिद्धि तथा मानता हुई।

रघुनाथ परशोत्तम पराञ्जपे (प्रथम हिन्दोस्थानी सीनीयर रेंगलर)-यह पूनावासी एक कृषिकार महाराष्ट्र ब्राह्मणके पुत्रहैं। ८ वर्षकी उम्रमें बी०ये० पास करके इङ्गलैंडको गयेथे और वहां कई वर्ष पढकर इन्होंने गणितशास्त्रकी "सीनीयर रैंगलर" नामक अत्यन्त उत्कृष्ट परीक्षा स ई १८९९ की साल प्रथम नम्बरसे पासकी। इनसे पहिले किसी दूसरे हिन्दोस्थानीने यह परीक्षा नहीं पास की थी अतएव ये प्रथम हिन्दोस्थानी सीनियर रैंगलरहैं। इस परीक्षा पास करनेकी मुबारिकवादीमें वायसराय हिन्दने इनके पिताके पास तार भेजाया। सेन्ट जान काळिजकेम्ब्रिज तथा हिंदोस्थानकी अनेक यूनीवर्सिटीयोंने इनको अपना मेम्बर बनाया है। इनको ५००) रुपये से भी अधिक मासिकपर दूसरी नौकरी मिल सकतीहै लेकिन स्वजातीय पूना कालिजमें इन्होंने १०० रु० मासिक वेतनकी नौकरी स्वीकार करके देशहितका परिचय दियाहै।

रघुनाथरावपेशवा—द्वितीय पेशवा बाजीराव १ इनके बापथे और अन्तिम पेशवा बाजीराव२ इनके पुत्रथे। जब तृतीय पेशवा बालाजी बाजीराव दो बालक पुत्र माधवराव तथा नारायणरावको छोड़कर मरगये तो उनके छोटे भाई रघुनाथराव अपने भतीजोंके बड़े होनेतक राजकाज संभाला। बड़े होकर माधवराव पेशवा हुये लेकिन स. ई. १७७२ में अपुत्र मरगये और उनके छोटेभाई नारायणराव गद्दीपर बैठे। कुछही दिनों पीछे रघुनाथरावकी रानीने नारायणरावको विष खिलाकर खतम करदिया। नारायणरावके अपुत्र सिधारनेपर रघुनाथराव पेशवा हुये लेकिन ११ महीने बाद नारायणरावकी विधवाके गर्भसे माधवराव नारायण नामक पुत्रका जन्म हुआ। पेशवा रघुनाथरावने तो इसको हरामका ठहराया लेकिन पेशवाके मंत्री नाना फर्नवीसने फरासीसोंकी मददसे माधवराव नारायणको पेशवाकी गद्दी दिलवाई। जब माधवराव नारायण पेशवा हुये तो रघुनाथरावको बड़ी भारी पेन्शन दीगई और इन्होंने अपनी बाकी उम्र सूरतमें रहकर काटी। पेशवा रघुनाथराव बड़े उदार होकर गुणी जनोंके सन्मानीथे। कवि पद्माकरने निम्नस्थ कवित्त सुनाकर पेशवा रघुनाथरावसे १ लाख २५ हजार रुपये दान पायेथे:—

कवित्त।

सम्पति सुमेरकी कुबेरकी जो पावे कहूं तुरत लुटावे बिलम्ब उर धारै ना।
कहै पद्माकर सुहेम हय हाथिनके हलके हजारनको वितर बिचारै ना।
गज गज बकस महीप रघुनाथराव याही गजधोखे कहूं तोहि दै डारै ना।
याते गौरि गिरिजा गजाननको गोयरही गिरते गरेते निज गोदते उतारै ना।

रघुराज सिंहदेव, जी सी यस आई (महाराजारीवाँ)—आपके पूर्वज व्याघ्रदेव सुलंकी राजपूतने गुजरातसे आकर सन् ई. १०५७ में रीवाँ राज्य स्थापन किया था। व्याघ्रदेव बड़े प्रतापी थे निदान उनके वंशज बघेले और उनका देश बघेलखण्ड कहलाया। व्याघ्रदेवके पुत्र करण देवने और बहुतसा मुल्क विजय किया और मंडलाकी राज कुमारीसे विवाह करके बांधौगढ़का किला पाया। करणदेवसे ५९ पीढ़ी पीछे विक्रमादित्य हुए जिन्होंने स. ई. १६१८ में रीवापचागर यहां किला बनवाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। अनेक पीढ़ी पीछे स. ई. १८१२ में राजा जयसिंहदेवके समयमें रीवाँ राज्यने बृटिश गवर्नमेण्टका आधिपत्य स्वीकार किया।

इन्हीं महाराज जयसिंहके पौत्र तथा महाराज विश्वनाथ सिंहके पुत्र महाराज रघुराज सिंहदेव स. ई. १८२३ में जन्मे और स. ई. १८५४ में रीवाँकी गद्दीपर बैठे। महाराज रघुराजसिंह बड़े महात्माथे, निज पूर्वजोंके धर्मपर आरूढ़ रहकर रामकृष्णके अनन्य उपासकथे और श्रीमद्भागवत तथा रामायणके अनुरागीथे इत्यादि कि–

दोहा०—श्लोकहु श्लोकारध नाहीं, जबलों पाठ कराहीं।
तबलों अम्बु पानहु त्यागत, पुनिका भोजन पाहीं॥

महाराज रघुराज इस समयके भाषा कवियोंमें सर्वोत्तमथे। विद्वानोंका सत्कार करतेथे। साधु सन्तोंके सन्मानीथे। सबतीर्थोंकी यात्रा करआयेथे। दान पुण्यभी खूब कियाथा। कई दफे सोने चांदीका तुला चढ़ायाथा। राजकाजकी ओर खूब ध्यान देतेथे। प्रजापालनमें दत्तचित्त थे। राज्यके कर्मचारीगण उनसे प्रसन्न थे। बृटिश गवर्नमेन्ट उनको पसन्द करतीथी। निम्नस्थ ग्रंथ भाषा पद्यमें उनके रचे हुये हैं—

भक्तमाला (रामरसिकावली) रामस्वयम्वर, रुक्मिणीपरिणय जगन्नाथशतक, रघुराजविलास, यदुराजविलास विनयपत्रिका, सुन्दर शतक और भागवत पर "आनन्दाम्बु निधि" नामक तिलक। महाराज रघुराजके समयमें रीवाँ राज्यका विस्तार १३ हजार वर्ग मीलथा। बस्ती ११ लाख मनुष्योंकीथी। सेना में ६९१ सवार, ३१३५ पैदल तथा ५५ तोपथी। सन् ई० १८८० की साल महाराज रघुराज सिंहदेवने परलोक गमन किया और राजकुंवर वेङ्कटेशरमण सिंहदेवजू (वर्तमान नरेश) गद्दीपर बैठे।

रङ्गाचार्य वृन्दावनके—इनका जन्म वि० सं० १८६४ में द्राविड़ ब्राह्मण श्रीनिवासाचार्यजीके घर हुआथा। दक्षिणदेशमें काँचीपुरीसे ५ कोस पूर्व इनके पिताका निवास था। पांच वर्षकी वयसे इन्होंने पढ़ना आरम्भ किया और व्याकरण तथा काव्य पढ़नेके पीछे वि० सं० १८८५ में विशेष विद्या पठनार्थ काशीको चले आये और वहाँ रहकर अभयाचरणभट्टाचार्यसे न्यायादि शास्त्र पढ़े। मांडा राज्यसे इनको कुछ वार्षिक मिलता था जिससे इनके भोजन छाजनका प्रबन्ध होताथा। वि० सं० १८९० में स्वामीरङ्गाचार्य ब्रजको पधारे और एक छोटेसे मंदिरमें ठहरे तथा कुछ दिनों पीछे गोवर्द्धनकी गद्दीको प्राप्तहुये। मथुराके सेठ राधाकृष्णजीने वि० सं० १८९९ में इनके उपदेशोंको सुनकर जैनमत छोड़ वैष्णव मत ग्रहण किया तथा इनको गुरु करलिया। पश्चात् सेठजीने इनकी आज्ञासे श्रीरङ्गजीका बृहत् मंदिर वृंदावनमें बनवाया। जिसमें सप्पारीम भाव ४५ लाख रुपये खर्च हुये और ३५हजार रुपये वार्षिक बचतकीभू सम्पत्ति भोगरागके खर्चके निमित्त लगाई गई और यह सब दानपत्र द्वारा इनके अर्पण करके सेठजीने अपना स्वत्व उसमें कुछभी नहीं रक्खा। मृत्युसे कुछदिन पहिले स्वामी रङ्गाचार्यको चिन्ता हुई कि यह सब वैभव भगवानकाहै कहीं ऐसा न हो कि हमारे वंशज इसे कुमार्गमें नष्ट करदेंय निदान उन्होंने मन्दिरकी रक्षाका भार एक वैष्णव कमीटीको सौंप दिया और अपनेको तथा अपनी सन्तानको वैष्णवोंके भरोसे छोड़दिया।

वि० सं० १९३० मे स्वामीरङ्गाचार्य परमधामको सिधारे । यह बडे धीरजसे चित्त उदार भावोंसे परिपूर्णथा न्याय वेदान्तके बडे विद्वानथे, स्वभावमें पूर्ण नम्रता अवश्यथी पर यह तेजस्वितासे रिक्त नथी।

रणछोडलाल (आनरेबिल रणछोडलाल सी आई०ई०)-स ई १८५१ मे अहिमदाबाद(सिंध) म जन्मेथे। नागरब्राह्मण छोटेलाल इनके बापथे। इनके पूर्वज राजा महाराजाओंके दर्बारमें उच्चपदाधिकारी रहेथे एवं इनका वंश प्रतिष्ठितथा।

इन्होंने अङ्गरेजी तथा गुजराती भाषाकी शिक्षा पाईथी और संस्कृत तथा फारसी भले प्रकार जानतेथे । स० ई० १८४८ में पंच महिल्के असिस्टन्ट सुपरिन्टेन्डेन्टका ओहदा इनको मिला । १० बरसतक इसओहदेपररहकर इन्होंने इस्तेफा दे दिया और व्यापारकी ओर मनलगाकर अहिमदाबादम रुईका पचजारी किया। यह गुजरातभरमें रुईका पहिलाही पंच था, पश्चात्इनकी देखादेखी अनेक लोगोंने अहिमदाबाद तथा गुजरातमें रुईके पंच जारी किये इसीकारण उस देशवाले रणछोडलालजीको " मिल इन्डस्टीका पिता " कहते है । यह सूबाबम्बईकीलेजिसलेटिव कौंसिलके मेम्बरभी रहेथे और इसीलिये आनरेबिल कहलातेथे सदैव मधुरभाषणकरते और देशोपकारमें तत्परहतेथे। इनके उपकारोंसे किसीका चित्त नहीं दुखताथा । अहिमदाबादकी टेम्परन्स सोसाइटीकेभी यह प्रधानथे।अहिमदाबादम पुत्री पाठशाला,अतिथालय तथा चिकित्सालय आपने अपने खर्चसे खोलेथे, जो अबतक जारीहै । अहिमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके आपहीके प्रधानताके समयमें पानीके नल शहरमें जारीकियेथे। स० ई० १८८६ मे वृटिश गवर्नमेंटने प्रसन्न होकर आपको सी०आई०की पदवी प्रदानकीथी। ऐसे धनाढ्य होनेपरभी वृथा खर्च करना पसंद नहीं करतेथे। आपनेहिंदोस्तानके अनेकभूभागोंमें देशाटन कियाथा और कुटुम्बसहित सबतीर्थोंकी यात्रा कीथी । ४४ घंटे बीमार रहकर स०ई०१८९८म परलोक गमन किया तब सरकारी दफ्तरों,दुकानों कारखानों तथा बाजारने एक दिन बंद रहकर शोक मानाथा । आपके सुयोग्य पुत्र माधव लालजीने अपने देश मान्य पिताका उचित स्मारक चिह्न स्थापन करनेके लिये [illegible] लाखरूपया वृटिश गवर्मेंटको सौंपा ।

रणजीतसिंह महाराजा (पंजाबकेशरी)-इनके बाप महासिंह सिखोंकी सुकरचकिया मिसलके सर्दारथे और इनको दसबर्षका छोडकर मरगये थे इसी कारण इनको विद्याशिक्षा नहीं मिल सकीथी, केवल हिंदी तथा पंजाबी भाषा कुछ२ जानतेथे। लेकिन इनकी बुद्धिबडी विलक्षणथी, आदमियोंको देखकर उसके मन २ का हाल जानलेतेथे और बडे २ विद्वानभी इनकी समता [illegible]

असमर्थ रहतेथे। बचपनमें शीतलानिकलनेसेइनकी एक आँखभी जातीरहीथी। इनके बापके छोड़े हुये छोटेसे इलाके का प्रबन्ध कुछ दिनोंतक इनकी माता दीवान सुक्खाकी मददूसे करतीरही।

इन्होंने बड़े होकर दीवानको अलाहिदाकर दिया और माताको बदचलन देख मारडाला। पश्चात् क्रमशः लाहौर, अटक, कश्मीर, मुलतान, पेशावर, कांगड़ा झंग इत्यादि मुल्कोंको विजय किया और छोटेसे सर्दारसे सर्वत्र पंजाबके महाराजा बनकर पंजाबकेशरी कहिलाये। अफगानिस्तानके पठानतक इनका लोहा मान गये थे, और अंग्रेज लोग भी इनके दर्बार तथा फौजका दुरुस्त करीना तथा सामान देखकर दंगरहिजाते थे। स ई १८०८ मे लार्ड मिन्टोगवर्नर जनरलहिंद और महाराज रणजीतसिंहके बीच सरहदके सम्बन्धम सन्धि हुई थी जिसका पालन महाराजने अन्त समयतक दृढता सहित किया। स ई १८१७ में महाराजने अवसर पाकर शाहशुजा अमीर काबुलसे कोहनूर हीरा छीन लिया और स ई १८३६ म अपने राज्य भरमें लौंडी गुलाम बनानेकी चालबंदकरदी। स० ई० १८३९ में कुछ दिन बीमार रहकर महाराजने परलोक गमन किया। अन्त समय दान पुण्य भी खूबही किया, एक करोड़ रुपया तो मरने हीके दिन पुण्य हुआ,४ रानियें और कई लौंडियें सती हुई और आपके पुत्र खड्गसिंह, शेरसिंह तथा दलीप सिंहने आपके पीछे राज्य किया लेकिन आपसके झगड़ेके कारण स० ई०१८४९कीसाल पंजाबका राज्यबृटिश गवर्नमेंटके गालमें घुसगया और दलीपसिंहको पेन्शन देकर इङ्गलैंड भेजदियागया। महाराज रणजीतसिंहका राज्य सर्वत्र पंजाब पर होनेके सिवाय पश्चिमोत्तरमें हिंदूकुश और सुलेमान पर्वतों तक फैला हुआथा, इसमेंसे प्राय दो करोड़रुपये वार्षिक आयका मुल्क जागीर तथा मुआफीमें देरक्खाथा और सब प्रकारकी सेना मिलाकर दोलाख दसहजारथी। महाराज डील डौलमें छोटेथे लेकिन वीरता और तेज उनके चेहरे पर चमकताथा, रणमें उनका सामना कोई नहीं करसकताथा और घोर आपत्तिपड़ने परभी वह कभी नहीं घबराते थे। घोड़ेपरचढने, शिकार खेलने और दवाखानेको जानेकी उनकी बानथी, प्रति दिन ग्रंथ साहिब सुनतेथे और सदैव राजकाजमें दत्तचित्तरहकर दीनदुखियोंको सन्तोष दिलाना अपना कर्त्तव्य समझतेथे।

काशीमें विश्वेश्वर नाथके मंदिरपर और अमृतसरमें दर्बार साहिब पर सोने का पत्र उन्होंने मढ़वाया था। विद्यार्णवसेतु नामक राजनीति विषयक संस्कृत

ग्रंथ भी इन्हींके हुक्मसे बनाया। इनकी समाधि लाहौरमें किलेके समीन अर सक बनी है।

रणजीतसिंहजीकुँवर (ऑनिड्ड क्रिकेटिअर अर्थात् गेंदबल्लाके खिलाडी)-मुल्ककाठियावाड़मे स ई १८७२ की साल जन्मे। काठियावाड़के जाम साहिबने इन्ह गोदलिया। जाम साहिबके बाद अनेक कारणसे इनको गद्दी नहीं मिली परंतु यह वायदा कियागया कि अवसर आनेपर आपके पुत्रको गद्दी दी जायगी। १० हजार रुपयां वार्षिक आपको जामसाहबकी गद्दीसे मिलताहै और आप लंदनमे रहतेहैं। राजकुमारकालिज राजकोट और ट्रिनिटी कालिज केम्ब्रजमें आपने शिक्षापाई थी। इङ्गलैंड तथा आस्ट्रेलियाकी समस्त क्रिकेट पार्टियोंको आपने हरादियाहै और कई दफे हिन्दोस्तान आकर शिमला तथा कलकत्तेमें महाराज पटियालाकी टीममे शरीकहोकर नाम पाया है। स ई १८९१-९२ की साल केम्ब्रजकालिजकी समस्त क्रिकेट कमेटियोंमें सबसे अधिक रन आपहीने किये थे। अंग्रेजीमें आपने एक पुस्तक क्रिकेटके खेलके विषयमें रची है।

रणवीरसिंहजी-(महाराजा सर रणवीरसिंहइंद्रमहेंद्रबहादुर, जी सी. एस आइ जम्बू व कश्मीरनरेश)-आपके पिता महाराजा गुलाबसिंहजीको स ई १८४९ में कश्मीर मंडलको राज्य बृटिशगवर्नमेन्टने सौंपाथा। गुलाबसिंहजीके पूर्वज पूर्वकालमे कश्मीरके राजाथे लेकिन समयके हेर फेरसे बहुत दिनसे उनका राज्य छिन गया था। स ई १८५७ म महाराज गुलाबसिंहके परमधामको सिधारनेपर उनके पुत्र महाराज रणवीर सिंहजी गद्दीपर बैठे। आप विद्वानोंका खूब सत्कार करतेथे। अनेक अवसरोंपर बृटिशगवर्नमेंटकोभी आपने मददकी थी जिसके पुरस्कारमे गवर्नमेंटने आपको जी सी एस आई तथा गुलोर गादस्ताह जादी विक्टोरियाकी पदवीसे विभूषित किया था। अंग्रेजी सेनाके आप भवैतनिक जनरलथे। आपकी सलामी तोपके २१ फैरोंकीथी। स ई १८८५ में आपने परलोक गमनकिया और आपके ज्येष्ठपुत्र महाराज प्रतापसिंह इंद्रमहेंद्र बहादुर (वर्तमाननरेश) गद्दीपर बैठे। महाराज रणवीरन निरपपति मंग हीको गिरते हुये हिन्दुधर्म तथा हिन्दुजातिके सुधारके लिये बहुतकुछ उद्योग कियाथा।

रत्नाकर (संस्कृतकवि)-देखो राजानक रत्नाकर।

रमेशचन्द्रदत्त-(सर रमेशचंद्रदत्त,सी०एस०,सी०आई०ई०)आप बङ्गाली कायस्थ हैं, आपने इंग्लैंडजाकर सिविल सर्विसकी परीक्षा उत्तीर्णकी और बङ्गाल

सिविल सर्विसमें स्यायन्ट मैजिस्ट्रेट नियतहोकर हिंदोस्तानको वापिस आये। और २ कमिश्नरके पदको प्राप्तहुये और स ई १८९८ में पेन्शनपाई। स ई १८९२ में बृटिश गवर्नमेंटने प्रसन्नहोकर आपको सी आई ई का खिताब दिया था। प्राचीन भारतका इतिहास आपने अंग्रेजी भाषामें लिखा है। पेन्शनलेनेके बाद आपने इंग्लैंड जाकर कैम्ब्रजकालिजमें पूर्वी भाषाओंके प्रोफेसरका ओहदा पाया। ऐसे ऊंचे ओहदे आजतक किसी दूसरे हिंदोस्तानीको नहीं मिले हैं। स ई १९०४ से महाराजा बरोदाने आपको अपने राज्यका मुख्य मंत्री बनाया है।

रविवर्मा (जगत्प्रसिद्ध चित्रकार)—यह पूनाके रहनेवाले क्षत्रीवंशोद्भव, देशमान्य, पृथ्वीप्रसिद्ध चित्रकार हैं। फिरङ्गीशिल्पकारभी इनकी कारीगरीको देखकर चकराते है। महारानीविक्टोरियाके भवनमें इन्होंने इङ्गलैन्ड जाकर भारतीय ढंगके चित्र लिखकर राजाकी उपाधि पाईथी। अनेक चित्र बनाये हुये अत्युत्तम हैं और उनकी छबि मनहरण है। बम्बई तथा पूनामें इन्होंने चित्रशालाय स्थापनकी हैं जहांसे इनकी बनाई रंगीनतस्वीरें खरीदीजा सकतीहैं। स ई १९०३ में विद्यमानहैं।

रमेश्वरसिंहजी—(महाराज सर रमेश्वरसिंह बहादुर, के सी एस आई, ... नरेश) महाराज महेश्वरसिंहजीके घर स ई १८६१ की साल जन्मे। पूरे ... नहीने पायेथे कि पिताका देहान्त होगया और आपके बड़ेभाई महाराजलक्ष्मीश्वरसिंहजी ६ वर्षकी उम्रमें दर्भंगाकी गद्दीपर बैठे। राजकुमारोंकी ... गवर्नमेन्टकी तरफसे कोर्टआफवार्डसका इन्तजाम हुआ और क्रमशः कई अङ्गरेज शिक्षक राजकुमारोंको शिक्षादेनेके लिये नियत हुये। पश्चात् क्वीन्सकालिज बनारसमें राजकुमारोंको भेजागया। महाराज रमेश्वरसिंहजीका संस्कृतपढ़नेकी ओर ध्यान विशेषरहा। स ई १८७७ मे दोनोंराजकुमारोंको जिमीन्दारीका कार्य्य सिखाया जानेलगा। इसीसाल महाराजरमेश्वरसिंहकाविवाह हुआ। स ई १८७९ में आपके बड़े भाई लक्ष्मीश्वरसिंहजीको राज्यका पूरा अधिकार सौंपा गया। थोड़ेही दिनों पीछे किसीकारणसे दोनों भाइयोंमें वैमनस्य होगया जिससे महाराज रमेश्वर सिंहजीने कईवर्षतक भागलपुर आदि जिलोंमें स्याण्ट मजिस्ट्रेट के ओहदेपर काम किया। स ई १८८१ में बंगालके लफ्टिनेन्ट गवर्नरने भाइयोंमें मेल करा दिया जो अंततक चिरस्थाई रहा। स ई १८८५ मे आपने नौकरी छोड़दी और भाईसे मिली हुई अपनी ...यदत जागीरकी देख भाल करते रहे तथा समय पानेपर योग्यकर्मचारियों सहित

भिन्न २ तीर्थोंकी यात्रा करतेरहे। स० ई० १८९७ में कामाख्या में एकपक्का घाट आपने बनवाया और महामाया भुवनेश्वरीके मंदिरका जीर्णोद्धार करवाया। स० ई० १८९८ में महाराजलक्ष्मीश्वरसिंहके निःसन्तान सिधारनेपर आप दर्भंगाराज्यके मालिक हुये दर्भंगाकी प्रजा आपके शासनमे सुखचैनसेहै और हिंदोस्तान भरके हिन्दुओंकी आपपर पूज्य बुद्धिहै क्योंकि आप भारत व महामंडलके प्रेसीडेन्टहैं। आप स्वधर्मप्रिय, विचारशील, नीतिज्ञ तथा सुधरा पुरुष हैं और श्रोत्रियवंशोद्भव मैथिल ब्राह्मणहैं। आपके पूर्वज महामहोपाध्याय महेश ठक्कुरने अपारविद्याके पुरस्कारमे बादशाह अकबरसे दर्भंगाराज्य पायाथा

रसखान (भाषाकवि)—सप्पदशशताब्दीमें पिहानी जि० हरदोईवाले रसखान नामसे पद्यकर्त्ताहै। यह अपने घरके बड़े भारी रईसथे। पहिले य किसी स्त्रीपर आसक्तथे लेकिन यह अभिमानिनीथी। भागवतके फार्स अनुवादमें गोपियोंके विरहकी कथा पढ़ इनका चित्त मानुषीय प्रीतिसे हटक श्रीकृष्णचंद्रके चरणोंमें लगगया। फिर तो यह किसी स्थानपर भागवतके कथा सुननेको जानेलगे और वहां पर एक दिन श्रीकृष्णजीका सुन्दर चित्र देख इन्होंने व्यासजीसे पूछा कि "यह सांवली सूरत वाला कहां रहता है और इसका नाम क्या है ?" व्यासजीने उत्तर दिया कि "यह वृन्दावनमें रहताहै और इसका नाम रसखान है"। पश्चात् यह व्रजको चलेगये और श्रीनाथजीके मन्दिरमें पहुँचे लेकिन भीतर न घुसने पाये। अस्तु निराश हो गोविन्दकुण्डपर घरं दिनतक बिना अन्न जलके पड़े रहे। सुधि पाकर गोस्वामी विट्ठलनाथजी (वि० स० १५७२-१६४२) इनको श्रीनाथजीके सम्मुख ले आये। दर्शन पातेही इन्होंने निम्नस्थ दोहा पढा–

दोहा–कहा करो रसखानको, दुखचोर लबार।
जो प्रभु दीनदयालु हैं, तो मारनधारनहार॥

दर्शन करके जब यह चलनेलगे तो गोसाईंजीने इनको कृष्णभक्तिमें दृढ़ जानकर अपना लिया और कहा कि "अरे मन कहां जात है"। रसखानकी कविता निपट ललित, माधुर्यतासे भरपूर है। सुजान रसखान तथा प्रेमवाटिका (वि० स० १६७१) इनके रचे ग्रंथ हैं। कई सौ फुटकर दोहे भी इनके बनाये मिलते हैं। श्रीकृष्णचन्द्रकी भक्तिसे चित्त इनका शान्त होगया। अन्त समय फिर कहीं नहीं गये और व्रजकी रजमें मिलगये।

रसिक बिहारी (भाषाकवि) यह झांसीकी रहने वाली किसी विधवा ब्राह्मणीके पुत्र थे। माता इनको बचपनहीमें लेकर अयोध्याजीको चली आई थी और कनक भवनमें रहती थी। बड़े होकर यह कनक भवनके महन्त के शिष्य होगये लेकिन महन्तजीके पीछे मुकद्दमा कराने परभी गद्दी इनको नहीं मिली। इनका असली नाम जानकीदासथा लेकिन कविता रसिक बिहारी नामसे करतेथे। इन्होंने अनेक तीर्थोंमें पर्य्यटन कियाथा, अन्तको मेवाड़में परलोक गामी हुये। समय इनका सं ई १८४० से १८९० तक निश्चय है। कविता उत्तम करतेथे। निम्नस्थ ग्रंथ इनके रचे हुये हैं:—

रामायण सप्तकाण्ड, सुयश कदम्ब, सुमति पचीसी, रसकौमुदी नामक बिहारी सतसईके चुने दोहोंका कवित्तोंमें टीका।

रहिमन, रहीम—देखो अब्दुलरहीम खानखाना।

रावबुद्धहाड़ा (बूंदीनरेश)—जयपुरनेरश जयसिंहसवाईकी बहिन इनको विवाहीथी। मुहम्मदशाह मुगल सम्राट दिल्ली के दर्बारमें इनके समान किसी दूसरे राजाकी प्रतिष्ठा न थी। एक दफे जब सैयद भाइयोंने मुहम्मदशाह को राज्यरहित करदियाथा तो इन्होंने सैयदका मुँह तलवारोंसे फेर दियाथा। यह उम्रभर बादशाही दरबारहीमें रहे। भाषा कविता अच्छी करते थे और कविकोविदोंके सन्मानी थे। सं ई १७४० में इनके साले जयसिंह सवाईने इनका राज्य छीन लिया।

राघोजी भोंसला (बरारके भोंसला राजवंशके मूल पुरुष) इनको पेशवाबाजीराव प्रथमने "सेना साहबसभा" अर्थात् मरहठासर्दारोंकी सभाका सेनापति सं ई १७१४ में नियत कियाथा और सं ई १७२० में बरारका राज्य दियाथा। राज्यपाकर नागपुर में इन्होंने अपनी राजधानी स्थापन की थी। उसी साल मरहटोंमें राज्य सम्बन्धी घोर विप्लव उपस्थित हुआ क्योंकि सतारा के राजा रामराजाको गद्दीसे उतारकर पेशवाबाजीराव तथा राघोजी भोंसलाने सतारा गढ़में कैदकर दिया और उसका राज्य आपसमें बांट लिया। राघोजी भोंसला तथा रामराजा सपिण्डीथे क्योंकि दोनोंही मरहटाराज्यके मूल पुरुष महाराजा शिवाजीके वंशजथे। इतिहास साक्षी है क्योंकि महाराज राघोजी बड़े साहसी वीरपुरुष थे। सं ई १७५१ में उनके मरनेके बाद भोंसलाकी गद्दीपर निम्नस्थ क्रमसे राजे बैठे:—

रायोजी भोसला प्रथम	स ई १७५३ में मरे
रानोजी भो० (रायोजी भों० १ के पुत्र)	" १७७२ "
माधोजी भो० (" के भाई)	" १७८८ "
रायोजी भों० द्वितीय (माधोजी भो० के पुत्र)	" १८१६ "
परसोजी भो० (रायोजी भों० २ के पुत्र)	" १८१६ "

परसोजीको आपा साहिबने गला घोट कर मारडाला

आपा साहिब (अङ्गरेजोंकी सहायता से गद्दीपर बैठे हैं), परन्तु " १८१८ में राज्यसे उतार दिये गये-

प्रतापसिंह नारायण(रायोजी भोसला १ के पौत्र)	" १८१८ में मरे
रायोजी भों० तृतीय	" १८५३ में "

स ई १७५३ में रायोजी भों० तृतीय अपुत्र मरगये, उनके दत्तक पुत्रको ब्रुटिशगवर्नमटने राज्य देना स्वीकार नकर पेन्शन करदी और सुपकेसे भोंसला का बृहत राज्य दवालाकरलिया । महाराजा भोंसलाके वशज आजकल भी नागपुरमें रहते हैं और बड़े भारी जमींदार हैं ।

राजशेखर (संस्कृतकवि)—प्रबन्धकोष, बालरामायण तथा बाल भारत इनके बनाये संस्कृत ग्रंथ देखने योग्य हैं । माधवकृत शंकर दिग्विजयके एक लेखसे ज्ञात होता है कि राजशेखरजी केरल देशके जैनी राजाये । जीवन काल इनका विक्रमकी ११ वीं शताब्दी निश्चय है । इनकी शार्दूल विक्रीडित रचना अत्यंत रमणीय है और इसी कारण क्षेमेंद्र कविने इनके विषयमें लिखा है कि-

श्लो०—शार्दूलविक्रीडितैरेव प्रख्यातो राजशेखर ।
शिखरीव परं वक्रे सोल्लेखैरुच्चशेखरः ॥

राजानकरत्नाकर (संस्कृतकवि)—इनके नामके साथ राजानक शब्द उपनाम है जैसे दुबे,तिवारी आदि शब्द नामके आदि या अन्तमें होते हैं। इनके पिताका नाम अमृत भानु था यह वि सं की दशवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें काश्मीरमें हुये । काश्मीरनरेश अवन्तिवर्म्माके दबारसे इनका सबन्ध था, निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-

हरविजय महाकाव्य, वक्रोक्ति पंचाशिका और ध्वनिगाथापञ्जिका । हर विजय महाकाव्य जिसमें ५० सर्ग हैं अत्युत्तम है इसकाव्यकी उत्तमता देख राजशेखरजीने कहा है कि—

श्लो० मासम सन्तुदि चातवारः मायों रत्नाकरा इमे।
इतीवसत्कृतो धात्राकाविरत्नाकरोऽपरः ॥

राजारामशास्त्री—यह काशीवासी प्रसिद्ध पंडित सब शास्त्रोंमें पारंगत होनेके सिवाय व्याकरणमें अपने समान भारतमें कोई दूसरा नहीं रखतेथे।प्राय सब ही रजवाड़ोंमें इनकी निर्णीत व्यवस्था मानीजातीथी । सभामें इनका शास्त्रार्थ सुनकर बड़े २ पंडित सन्तुष्ट होतेथे । महाराज सेंधिया इनकी बड़ी प्रतिष्ठा करतेथे । प काशीनाथ शास्त्री इनके विद्यागुरुथे । संस्कृत कालिज बनारसमें धर्मशास्त्रके प्रोफेसरका पद इनको प्राप्त था । प० बाळशास्त्री सरीखे अद्वितीय विद्वान् इनके शिष्यथे । ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि विद्वानोंके विधवा विवाह सबंधी आन्दोलनका प्रवाह रोकनेके लिये इन्होने " विधवोद्वाह शंका समाधि " नामक संस्कृत ग्रंथरचाथा जिसका टीका बादको बाळशास्त्रीने किया था । दक्षिण देश वासियोंकी प्रार्थनापर इन्होंने बाळशास्त्री इत्यादि शिष्य प्रशिष्योंके साथ दक्षिण देशमें जाकर विधवाविवाह चर्चाके प्रबळ प्रवाहको रोकाथा। वि सं १९३१ में सिधारे।

राजेंद्रलालमित्र (राजा, डाक्टरराजेंद्रलाल मित्र, राय-बहादुर, यल० यल० डी०, सी०आई०ई०) आपके पूर्वज काली दास मित्र कायस्थको बंगालाधिपति महाराज आदीसुरने कन्नौजसे बुलायाथा-इनकी दासले २० पीढी पीछे पीतांबर मित्रहुये जोनवाब वजीर अवधकीतरफसे दर्बारदिल्लीमें वकीलथे और जिनको दरबार दिल्लीमें राजा बहादुरकी पदवी तथा तीन हजारी का मनसब और जिला इलाहाबादमें एकबड़ी जागीर दीथी इन्हीं राजापीतांबर मित्रके पौत्र राजा जन्मेजय मित्रकेघर स० ई० १८२४ कीबाद सूरद (बगाल) राजवाड़ीमें राजेंद्र लाल मित्रनामक पुत्रका जन्म हुआ। आप १४ वर्ष की उम्रतक बंगाली फारसी और अंग्रेजी पढ़तेरहे । १५ वर्ष की उम्रमें डाक्टरी पढनेकेलिये मेडीकेल कालिज कलकत्तोंमें भरती हुये । परंतु कुछ समय पीछे जब इन्होंने डाक्टरीकी विशेष शिक्षा पठनार्थ इर्ग्लेंडजाना चाहा तब पिताने इनको स्कूलसे उठालिया पश्चात् इन्होंने कानूनपढना शुरू किया लेकिन जिससाल कानूनका इम्तिहान दिया उससालके पर्चे चोरीहोजाने केकारण इम्तिहानही मनसूख होगया । इसप्रकार बार २ निराश होकर इन्होंने संस्कृत, हिंदी, फार्सी तथा उर्दूकाव्यको विचार सहित पढना आरंभ किया २३ बषकी उम्रमें एशियाटिक सोसाइटी बगालके उपमंत्री तथा पुस्तकाध्यक्ष

या ओहदा आपकोदिया, जिस पर १० वर्षरहकर सैकड़ों दुष्प्राप्य प्रा
ग्रंथोंके देखनेका अवसर आपको मिला । पश्चात् कलकत्तेके गवर्न
ऑफिसका उच्चपद आपको प्राप्त हुआ जिसपरबहुतदिनातक रहे । संस्कृत, ि
फार्सी, उर्दू, बङ्गला और अंग्रेजीमें सैकड़ा पुस्तकें आपने रचीथीं और, अ
प्राचीन बातोंओंका पता लगायाथा ॥

आप कलकत्तायूनीवर्सिटीके फेलो थे और उक्त यूनीवर्सिटीने सबसे पं
एल० एल० डी० का खिताब आपहीको दियाथा । पुरातत्त्वादि अनेक ि
योंमें पारङ्गत होने, देशहितकरने, हिन्दूधर्मप्रचारने और कार्यदक्षता, राज्य ि
तथा उदारताका पूर्ण परिचयदेनेके उपलक्षमें बृटिश गवर्नमेन्टने आपकोस०
१८७७ मे रायबहादुरका खिताब, स० ई० १८७८ में सी० आई० ई० की उ
धि तथा स०ई० १८८८ में राजाका खिताबदियाथा । स० ई० १८९८ में परल
गामी हुवे । कुंवर रामेन्द्रलालमित्र बी० ये०,बी०एल०,सी० आई०ई० तथा कुं
महेन्द्रलाल मित्र आपके दो पुत्रहैं ।

राधाकृष्णसेठ (वृन्दावनमें रङ्गजीके मन्दिरके निर्मा
कर्ता)—यह सेठ लक्ष्मीचन्दजीके छोटे भाई थे (देखो लक्ष्मीचन्द) । इ
पं० रङ्गाचार्यके उपदेशसे जैनमत छोड़ वैष्णव धर्म ग्रहण किया और उन
गुरु कर लिया । पश्चात् उनके कथनानुसार वृन्दावनमें श्रीरङ्गजीका मनि
स ई १८४५ मे बनवाना आरंभ किया । सेठजीके पासका कई लाख रुप
उठगया परन्तु मन्दिरकी छततक नपटपाई । जब यह बात सेठ लक्ष्मीचन्द
मालूम हुई तो उन्होने प्यारे भाईका चित्त दुखाना अनुचित समझकर ५
लाख रुपयेके खर्चसे स ई १८५१ में उक्तमन्दिरको तय्यार करादिया औ
भोगराग, उत्सव, मेला आदि मन्दिर सम्बन्धी खर्चके लिये ५३ हजार रुपं
वार्षिक बचतका प्रबंध जो ११ गांवोंसे आता है करदिया । पश्चात सेठ राधा
कृष्णने मन्दिरकी सम्पत्ति अपने गुरु रङ्गाचार्यको दानपत्र द्वारा देदी । से
राधाकृष्णकी प्रीति गुरुचरणोंमे अलौकिकथी । एक दफे वर्षाऋतुमें सेठजी
वृन्दावनमें बहु मूल्यवस्त्र पहिने चले जाते थे अकस्मात् दूसरी तरफसे आते
हुवे पं० रङ्गाचार्य साम्हने पड़गये, देखतेही सेठजीने अपने नियमानुसार ग
को साष्टाङ्ग दण्डवतकी जिससे सब वस्त्र खराब होगये क्योंकि रास्तेमें कीच
थी । गुरुके प्रेमाश्रुनिकल आये और शिष्यको हाथ पकड़ छातीसे लगालिया ।
राजा लक्ष्मणदास सी आई ई इनके पुत्रथे । पंडित रङ्गाचार्य और सेठ राधा

ष्णसरीखे गुरु शिष्य होना दुर्लभ है (देखो रङ्गाचार्य)। वि सं १९०५ में से० राधाकृष्णका वैकुंठवास हुआ। वृन्दावनमें "रामलक्ष्मणका मन्दिर" भी इन्हीं का बनवाया हुआ है।

राधा (श्रीकृष्णजीकी पटरानी)—गोकुलवासी वृषभानुग्वालकी कन्या, त्रैलोक्यसुन्दरी होकर श्रीकृष्णजीकी ८ पटरानीयोंमें सबसे अधिक प्रिय थी। वैष्णवोंके मंदिरोंमें श्रीकृष्ण तथा राधिकाकी पूजा सेवा साथ है होती है।

राधास्वामी शिवदयाल सिंह(राधास्वामी मतके आचार्य) शहर आगराके पन्नीगलीमें स ई १८१८ की साल एकक्षत्रीके घर लाला शिव दयाल सिंहका जन्म हुआ। वृन्दावन तथा प्रताप सिंह इनके दो भाई औरये। लाला शिवदयाल सिंह बाल्यावस्थासेही मुख्य २ लोगोंको उपदेश करने लगेथे। प्रायः १५ वर्ष तक उन्होंने अपने मकानके एकान्त कोठेमें बैठकर श्रुत शब्द योगका अभ्यास कियाथा और पश्चात् १७ वर्षतक अपने गृहमें सत संगियों तथा परमार्थी लोगोंको राधास्वामी मतका उपदेश कियाथा।

प्राय' १००० मनुष्य उनके शिष्य हुयेथे जिनमें से प्रधान शिष्यरायसालिग्राम बहादुर पोष्ट मास्टरजेनरलथे। ईश्वर जो सबसे परेहै उसीका नाम इस मतमें राधास्वामीहै। लाला शिवदयाल सिंह उसीका अवतार माने जाकर राधास्वामी कहे जाते हैं। इसमतके लोग श्रुत शब्द योगका अभ्यास करते हैं। अर्थात् जीवात्माको नेत्रोंके स्थानसे ऊपर ब्रह्माण्डमें चढ़ाकर अन्तरका शब्द सुन तेहैं। सद्गुरु, सत्यनाम तथा सतसङ्गकी इसमतमें जरूरत है।

मांस शराबादि मादिक वस्तुओंके खाने पानेका निषेध है और तीर्थ, व्रत मूर्तिपूजा तथा पुस्तकोंके खाली पढ़नेसे अन्तःकरणकी शुद्धिका होना नहीं माना जाता। स.ई १८७८म राधास्वामीने परलोकगमन किया। "सारवचनराधा स्वामी" नामक पुस्तक इनकी रची हुई है।

राधाकान्तदेव, राजाबहादुर, के०सी०यस०आई (संस्कृतकोष शब्दकल्पद्रुमकेकर्ता)—शोभा बाजार कलकत्ताके नवकृष्णदेव नामक रईस इनके दादेथे और इनके बापका नाम गोपीमोहन देवथा। यह जातिके कायस्थथे। इन्होंने संस्कृत, फार्सी, उर्दू, हिन्दी, बंगला घरपररहकर हुये नौकरोंसे पढ़ीथीं। हिंदुस्थानम उनदिनों अंग्रेजी राज्यका आरंभथा। बहुतसे अंग्रेजी

स्कूल उसवक्त तक नहीं खुलेथे । बंगाल भरमें केवल एकही अंग्रेजी स्कूल
थाआर कलकत्तेमथा। इसी स्कूलमें ३ वर्ष पर्यंत इन्होने शिक्षा पाईथी और
समय हिंदोस्थान भरमें कोई दूसरादेशी पुरुष इनकी समान अंग्रेजोंका
नहीं था । यह एशियाटिक सोसाइटी बंगालके मेम्बरथे और इन्होंकी रिया
काशीका क्वीन्स कालिज जिसमें संस्कृत कालिजभी शामिलहै वर्तमान दश
पहुंचाया । एक सन्हरणपूर्वक अभिधानका अभाव देख इन्होंने ५० वर्षके निर
परिश्रमसे शब्दकल्पद्रुम " नामक वृहत शब्दकोष रचाया । इसकोषके रच
बहुतसे पंडितों की सहायतालेनी पड़ीथी और बहुत कुछ व्यय करना पड़ाथ

यह कोष मलिका विक्टोरियाकी भटकरसे राधाकान्त देवने राजा बह
तथा नायटकी पदवियें और सोनेका पदक पायाथा । उनदिना अंग्रेजी स्कूल
जो पुस्तकें पढ़ाई जातीथीं वह बालकोंका चित्त ईसाई मतकी ओर झुक
वाली थीं । यह देख राजा राधाकान्त देव बहादुरने पाठशालाओंके हित
अनेक पुस्तकें रचकर स्वीकार कराई । पश्चात् हिन्दुकालिज कलकत्त
खोलनेमें बड़ा प्रयत्न किया । स्त्रीशिक्षाकेभी पक्षपातीथे परन्तु कन्या पाठशा
ओंका जारी करना पसन्दनहीं करतेथे । आपदृढ़ताके अपने पूर्वजोंके धर्मपर आ
रूढ़े । सर्व साधारण आपकी प्रतिष्ठाकरतेथे । धन दौलत सब प्रकारके सु
आपको प्राप्तथे । आपका चरित्र धनलोगोंको शिक्षादायक होसकताहै
कहते हैं कि "अमीरोंको क्या नौकरी करना है जो बहुत पढ़कर मग
खाली करें " । अन्तम कुछ दिनों वृन्दावन वास करके स ई १८६९ की साल
परलोक गामी हुये ।

रानडे (आनरेबिलजस्टिस महादेव गोविन्द रानडे

नासिकके जिलेमें स ई १८४२ की साल जन्मे और एल्फिन्स्टन कालि
बम्बईमें पढकर स ई १८६४ की साल एम ए. की परीक्षा और दोही वर्ष
पीछे एल एल बी की परीक्षा उत्तीर्णकी । इसके बाद एल्फिन्स्टन कालिजमें
६ वर्षतक अंग्रेजी भाषाके असिस्टेन्ट प्रोफेसर रहे और फिर कुछ दिनोंतक
आकलकोट तथा कोल्हापुरकी रियासतोंमें नौकरीकी । स ई १८७१ में बम्बई
के न्याय विभागमें नौकर होगये और बढ़ते २ बम्बई हाईकोर्टके जजके पद
को प्राप्त हुये ।

जस्टिस रानडे धर्म शास्त्रादिमें निपुणतथे परम अत्यंत शुभ आचरण विद्वान,
देश हितैषी, चतुर, पक्षपातरहित और बुरे भलेके जाननेवाले थे । इस देशके
राजनीति विशारदपुरुषोंमें उनकी गणना है, जबतकजनम भारतमें स्वदेशकी

भलाईका प्रयत्न करते रहे। बृटिशगवर्नमेन्टने उनकी तारीफ में उनको राय बहादुर तथा सी आई ई के खिताब दिये थे, बम्बई प्रांतमें अनेक सामाजिक, धर्मकारिक और शिल्पकारिक सभाओंके स्थापन करनेमें इन्होंने सहायता दीथी। यह स्वभावसेही उद्योगी, परिश्रमी तथा पक्का राजभक्त थे देश सुधारकी अनेक बातों पर उपदेश व्याख्यान दिया करते थे और थोडेसे शब्दोंमें दीर्घ आशयकहसक्ते थे। देश हितका कोई ऐसा विषय न था जिसको इन्होंने पूर्णरीतिसे न विचाराहो। निष्कपट होनेसे कारण सब लोग उनकी प्रतिष्ठा करतेथे और उनके फैसलोंसे प्रसन्न रहते थे।

अनेक पुस्तक भी इन्होंने रचीं थी। अकस्मात् स ई १९०१ की साल नवा ईकी हालतमें बम्बईमें परलोक गामी हुये। बम्बईमें उनका स्मारक चिह्न स्थापन किया गया है।

रानोजीसेंधिया (ग्वालियर राज्यवंशके मूल पुरुष)—ग्वालियरके सेंधिया महाराजे इन्हींके वंशमें है। यह वर्णके शूद्र थे और पेशवाकी चाकरीमें बढ़ते २ सेनापतिके उच्चपदको प्राप्त हुये थे तथा जागीर पाई थी। स ई १७५०में ये इनोजी ४ पुत्र छोडकर परमधामको सिधारे इन चारोंमसे माधोजी सेंधिया बडे प्रतापी हुये जिन्होंने बहुतसा मुल्क फतेह किया और ग्वालियरको अपनी राजधानी बनाया। प्रसिद्ध है कि रानोजी सेंधिया के मुखपर एक दफे सोतेसमय धूप आगई थी तब एक सर्पने आकर फनसे छाया किया था, इसी कारण ग्वालियर राजवंशका चिह्न सर्पोंकाफना है।

रामकृष्ण परमहंस—जिला हुगली (बंगाल) के कमरपूरकर ग्राममें ई १८३३ की साल इनका जन्म खुदीराम चट्टोपाध्यायके घर हुआ। रामकुमार तथा रामेश्वर इनके दो बडे भाई थे जो अच्छे विद्वान होकर कलकत्तेसे ३ कोस दूर गंगातट दक्षिणेश्वरमें रासमणिदासके बनवाये काली देवी के मन्दिरके पुजारी थे। बडे होनेपर रामकृष्णको जब पढनेके लिये पाठशालामें भेजा तब इन्होंने कहाकि "मैं पढ लिखकर क्या करूंगा क्योंकि इस विद्याका फल रुपयाका मामा है"। निदान थोडीसी बंगाला भाषाके सिवाय यह कुछ न पढ सके। पश्चात् पिताने बडे भाइयोंके पास इनको दक्षिणेश्वरमें भेज दिया। वहांपर रहकर यह धर्म संबन्धी अनेक विषयोंपर अपने भाइयोंके बीच शास्त्रार्थ सुनते रहते थे। कुछ दिनों बाद जब इनके भाई राम कुमारजीका देहांत होगया तो यह उनकी जगह कालीजीके मन्दिरके पुजारी हुये। इनका विवाह श्री रामचन्द्र मुकर्जीकी सारदामणि नामक कन्यासे होगया था। कालीजीकी

पूजा करते थे इनके मनमें ऐसी दृढ भावना हुई कि दर्शन पानेकी अभिलाषा यह पहरोंतक स्तोत्र पाठ करते तथा मां ! मां ! कहकर पुकारने लगे। करते जब बहुत दिन बीते तो भगवतीमें अस्पष्ट विश्वास होकर इनको भाईके दर्शनाकी चिन्ता रहने लगी और रातमें पहरोंतक देवीके सन्मुख बैठे हुये कभी रोते हुये और कभी खिल खिलाकर हंसते पाये गये। अन्तमें जब इनके प्राण रोने लगे और मनने जगतकी वस्तु मात्र जने पर दिया तो एक दिन देवीके सन्मुख बैठे रोते हुये इनकी सन्मतफौजी होगई जो छ' मासतक रही। पश्चात इन्होंने अहंकारको जीतनेका प्रयत्न किया, और उसके पदार्थोंको ईश्वरका जानने लगे और कामिनी काञ्चनसे विर मन हटालिया। इसके पीछे तोतापुरी एक संन्यासीसे इन्होंने संन्यास दीक्षाली और हठयोग तथा राजयोगकी क्रिया उससे सीखकर अभ्यास योग सिद्धियें प्राप्त हुये। योग सिद्धियें प्राप्त होकर इनका शरीर स्थूल था और लोग इनको परमहंस कहने लगे। इसप्रकार क्रमशः मनोवृत्ति शान्ति होने तथा समदर्शिताके बढ़नेसे यह साधन दशासे आरूढ दशा प्राप्त हुये। सन् ई० १८६६की साल ब्रह्मो धर्मप्रचारक बाबू केशवचंद्रसेनसे इन मुलाकात हुई और यह इनका ईश्वरानुराग, ब्रह्मज्ञान तथा दृढ धारणा देख मत्कृत होकर साकार ब्रह्मके अनुरागी हुये। सन् ई० १८८६ मे रामकृष्ण परमहंस ब्रह्मपदको प्राप्त हुये इनके कहे कई सौ उपदेशाऐं जिनको विचारनेसे ब्रह्म ज्ञानके अनेक गूढ रहस्य विदित होसकते हैं।

रामकृष्णवर्मा (भारतजीवन प्रेस बनारसके मालिक)

अमृतसर (पंजाब) से बाबू होयालाल नामक खत्री रोजगारकीतलाश काशीमें आकर बसे थे। वि० सं० १९१५ की साल उनके घर रामकृष्ण नाम बालकका जन्म हुआ। पिताके निर्धनी होनेके कारण रामकृष्णने ज्यों त्यों एफ० ए० पास करके बी० ए० तक अंग्रेजी पढी। ग्रंथ रचनाकी ओर प्रथमसे आपकी रुचि है, बलवीर नामसे भाषा कविता करते हैं और आप हिन्दी गद्य लेख पढ़ने लायक होते हैं। अन्य महानुभावोंके रचे सैकड़ों ग्रंथ निज व्ययसे छापकर हिंदी गद्यपद्य रचनाके प्रोत्साहनका आपने अच्छी भांति परिचय दिया है। सन् ई० १८८४ में आपने बनारसमें "भारत जीवन प्रेस" स्थापन किया और उसी सालसे "भारतजीवन" नामक हिन्दीका साप्ताहिक समाचार पत्र जारी किया जो सन् ई० १९०४ तक जारी है और गवर्नमेन्टके प्रबन्ध विभागकी रिपोर्टके अनुसार युक्त प्रान्तके सब हिन्दी उर्दू समाचार पत्रोंसे अधिक पढा जाता है। आपने अबतक हिन्दी गद्य पद्यकी प्रायः १५ पुस्तकें रची हैं जिनमेंसे निम्नस्थ मुख्य हैं:-

ठगवृत्तांतमाला, संसारदर्पण, पुलिसवृत्तांत माला तथा कान्सटेबिलवृत्तांत माला नामक ऐतिहासिक उपन्यास और कृष्णाकुमारी, वीरनारी तथा पद्मावती नामक नाटक।

आप सरलचित्त पुरुष हैं। भूल विदित होनेपर प्रथा हठ किये विना स्वीकार करते हैं। उद्योगी पुरुषोंमें आपकी गणना है।" पिता आपको दीन दशाम छोड़ गयेथे लेकिन अब धन, मकान, प्रतिष्ठा, नौकर चाकर सबही आपको प्राप्त है। यह सब होते हुये गर्व तथा ईर्षा द्वेषका आपमें बिलकुल अभाव पाया जाता है और परिश्रम सहित अपने कामकाज की देख भालमें स्वयं लवलीन रहते हैं।

सहनशीलता तथा नम्रताका आपके स्वभावमें समावेश है और इन्हीं सदकार-णोंसे सर्व साधारण आपकी प्रतिष्ठा करते हैं। भारतके अनेक राज्य दर्बारोंभमी आपका सन्मान होता है।

रावणाचार्य लंकेश—यह ऋषि पुलस्त्यका पौत्र तथा विस्त्रवा मुनि-का पुत्र वर्णका ब्राह्मण, बड़ा बलवान, अद्वितीय विद्वान और कलाकौशलादिमें निपुणथा। मिस्टर थामस मेननने निश्चय किया है कि,रावणका सीलोनके सि वाय स्याम, कम्बोडिया, फिलिपाइन, सुमात्रा, जावा, सेलिविज तथा बोर्नियो आदि द्वीपों और दक्षिणी चीन, कोचीन तथा बर्मा आदि देशोंम भी राज्यथा और दक्षिणी भारतके राजाओंपर उसका आतङ्क था।

हिंदोस्तानके दक्षिणमें सीलोन (सिंहलद्वीप) रावणकी लंका नहीं है। सुमात्रा टापूका वाल्मीकीय रामायणके लेखानुसार रावणकी प्राचीन लंकासे ठीक मि-लान होता है। रामचंद्र महाराजने लक्ष्मणजीके नामपर लंकाका नाम बदल कर सौमात्रा (सुमात्रा) रक्खा था। रानी सुमित्राके पुत्र होनेके कारण लक्ष्मण जीको सौमित्र कहतेथे। रामायणादि ग्रंथोंमें लेख है कि रावणके राज्यमें इन्द्र छि-ड़काव देतेथे, वायू झाड़ू देतेथे सूर्य रसोई बनातेथे, और कि वह समुद्रको पैदल पार कर सक्ता था और सूर्यकी तपिशसे मछलियें भून लेता था। यह सब बातें सत्य हैं किन्तु इस प्रकारकी हैं जैसे कोई कहे कि राजराजेश्वरी विक्टोरियाके राज्यमें दीपक जलाने और खबर पहुंचाने पर बिजली नौकर थी और अग्नि तथा वरुण चक्की पीसतेथे तथा गाड़ियोंमें जोते जाते थे। रावणने वेदका भाष्य किया था, इसी कारण रावणाचार्य इसको कहा। प्रकर्तमका ग्रंथ तथा रावणस्मृति नाम धर्मशास्त्रभी उसने रचा था। यह सब होते हुये भी वह बड़ा अभिमानी अन्याई तथा लम्पट था उसने हजारों ऋषियोंको निरपराध नाश किया था हजारों कुल कामनियोंका सतीत्व भङ्ग किया था और पाप पुण्यको कुछ नहीं डरताथा अंतमें रघुकुलतिलक महाराज रामचन्द्रने उसको नष्ट किया।

रावणेश्वर प्रसादसिंह, राजाबहादुर, के० सी० एस आई० गिद्धौरनरेश— बंगालमें गिद्धौरका राजवंश बड़ा प्रतिष्ठित है इस घरानेके मूलपुरुष राजा वीरविक्रम सिंहने रीवाँराज्यके घरसे आकर गिद्धौरमें अपना राज्य स्थापन कियाथा। वीरविक्रम सिंहसे ९ पीढ़ी पीछे कोई महाराज हुये जिन्होंने वैद्यनाथ (बैजनाथ) जीका शिवमंदिर बनवाया। वीरविक्रम सिंहकी १४ वी पीढ़ीमें राजा दलनसिंह हुये जिनको स ई १६ में मुगलसम्राट शाहजहांने राजाका खिताब दिया। अंग्रेजी ग्रंथकार कहते कि शाहजहांसे लेकर आजतक लगभग तीनसौ वर्षके भीतर गिद्धौरके राजा बंगालके राजाओंमें बड़े प्रभावशाली धनाढ्य और राजभक्त होते आये हैं। ई स १८५७ के भयंकर गदरमें गिद्धौरनरेश सर जयमंगलसिंह बहादुर, के० सी० एस०आई० ने अंग्रेजीसरकारको मददकीथी और सन्थालों का उपद्रव बड़ी धीरतासे रोकाथा, इसके बदलेमें के०सी० एस० आई० का खिताब तथा राजा बहादुरकी मौरूसी उपाधि पाई थी। सर जयमंगलसिंहके पौत्र वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजा रावणेश्वर प्रसाद सिंह बहादुर, के सी एस आई हैं। श्रीमान् अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी और फार्सीके अच्छे विद्वान् हैं और बिहारके उन राजाओंमेंसे एक हैं जो हिंदीसाहित्यकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझतेहैं। घविलछीरामने " रावणेश्वर कल्पतरु" नामक भाषा ग्रंथ रचकर आपसे उचित सत्कार पाया है। आपकी राजभक्ति, सुप्रबन्ध और उदारतासे केवल ब्रटिश गवर्नमेन्टही प्रसन्न नहीं है वरन्च सूबे बिहारकी प्रजाभी आपपर बड़ा प्रेम है। आप सर्वप्रिय कहिलानेकी चेष्टा सदैवही करते रहते हैं बिहारलैण्ड होल्डर्स ऐसोसियेशनके आप प्रेसीडेन्टहैं और बंगालके लफ्टिनन्ट गवर्नरकी व्यवस्थापक सभाके मेम्बरभी कईदफे रहचुके हैं। आपकी देशहितैषी सुकीर्ति केवल बंगाल बिहारहीमें आदर नहीं है वरन स ई १९०१ में आगरेकी क्षत्रिय महासभाका जो अधिवेशन हुआथा उसकेभी आप सभापति थे। आप सोम वंशी क्षत्री हैं। स ई १८५९ में आपका जन्म हुआ है। दीर्घायुहोवो ! देश प्रियनरेश ! !

राबिन्सन क्रूसो—डेनियलडेफ्यो साहिबके लेखानुसार स. ई १६३२ में यार्क (इंग्लैंड) में इनका जन्म हुआ, बचपन मातापिताके अतीव लाड़ करने के कारण निरर्थकही बीता। पश्चात् पिताने सामान्य लड़कोंकी भांति थोड़ासा लिखना पढ़ना इनको घरहीमें सिखादिया, पिताकी इच्छा इनको वकालत का पेशा सिखानेकी थी पर इनकी अभिलाषा किसी जहाजका मुखियाबनकर

देश विदेश भ्रमण करनेकी थी। इनके माता,पिता, मित्रादिकोंने बहुत समझाया परंतु इनकी विदेशगमनकी इच्छा ऐसी प्रबल हुईकि इन्होंने किसीकी न सुनी और इसी कारण इनको कठिन आपत्तियें झेलनी पड़ीं। स.ई १६५१में यह किसीकामके लिये हलमगरमें गयेथे और वहांसे अकस्मात किसी मित्रके फुसलाने पर विना किसीसे पूँछे जहाजपर सवार होकर लन्डन को चलते हुये यहीं इनकी आपत्तिका आरंभ हुआ और भाग्यवश इनको घरलौटनेका मौका नमिला ल इनसे जहाज पर सवार हो एफ्रीकाकी तरफ गये,जहाजरास्तेमें तबाह होगया सब मनुष्य डूबगये केवल राबिनसन् क्रूसो बचा जिसको कईवर्षतक एकनिर्जन टापूमें रहकर समय व्यतीत करना पड़ा। अंतमें एक जहाज उक्त टापूके किनारे आलगा जिसपर सवार होकर यह स्वदेशको आये परंतु अपनी कोठीतक भूलगयेथे। इनका सविस्तरवृत्तान्त डेनियलडिफो साहिबने "राबिनसन क्रूसो" नामक अंग्रेजी ग्रंथम लिखाहै जिसके पढनेसे लड़कोंको यह शिक्षा होजाती है कि माता पिताका आज्ञा भङ्गकर घरसे निकल जानेके कारण मनुष्यको अनेक आपत्तियें भोगनी पड़ती हैं और यह कि आपदाके समय निःसहाय मनुष्य किसप्रकार दृढता और धैर्य्यसे काम करके आपत्तिका निवारण करता है। अनेक विद्वानोंकी सम्मतिहै कि डेनियल डिफो साहिबने अलेग्जेंडर सेल्कर्क नामक स्काटलैंडवासी मल्लाहके चरित्रके आशयपर राबिन्सनक्रूसोका अनुमानित इतिहास लड़कोंके उपकारार्थ लिखा है।

रामचन्द्र महाराज (मर्य्यादा पुरुषोत्तम)—अयोध्यामें राजा दशरथकी बड़ी रानी कौशल्याजीके गर्भसे चै० शु० ९ के दिन त्रेतायुगके अन्त में (फिरंगी विद्वानोंके मतानुसार स० ई० से ३००० वर्ष पूर्व) अवतीर्ण हुये। महर्षि वशिष्ठ तथा विश्वामित्रसे अनेक शास्त्रों तथा धनुर्वेदकी शिक्षा पाई। १५ वर्षकी उमरमें शंकर धनुषको तोड़ जनकसुता सीताके साथ स्वयंवर विधिसे विवाह किया। २७ वर्षकी उमरमें पिताका वचन मान १४ वर्षके लिये वनवासको गये। वनवासके १३ वे वर्ष पंचवटी वन (नासिक) में से आश्रमको सूना पाय रावणलंकेश सीताजीको हरलेगया। तत्पश्चात् किष्किंधामें राजा सुग्रीवसे महाराजने मेल करके रीछ बन्दरोंकी बड़ी भारी सेना एकत्रकी और समुद्रपर सेतुबंधवाय लंकापर चढ़ाईकी। ३ महीनेसे कुछ अधिक कालतक युद्ध रहा जिसमें रावण सेना तथा परिवार सहित मारागया, महाराजकी जीत हुई, सीताजी को पुनः पाया,सुमित्रासुत लक्ष्मणके नामपर लंकाका नाम सौमित्रा (Sumatra) रक्खा गया तथा वहांका शासन विभीषणको सौंपा गया। वनवासकी अवधि पूरी होनेको थी एवं शीघ्रही पुष्पक विमान पर सवार होकर महाराज अयोध्या पहुंचे तथा राजसिंहासनपर विराजे। इसी साल सीता महारानीको गर्भ रहा

ईंधिम राघव ने यहां रही पुईको फिर विवाह होनेपर समिश्लोकापवात् होते महाराजने उनको त्यागकर वाल्मीकि ऋषिके आश्रमपर भेज दिया वहां व लव तथा कुश दो पुत्र एक साथ उत्पन्न हुये । पश्चात् महाराजने नैमिषार बड़ा भारी अश्वमेध यज्ञ किया जो एक वर्षसे कुछ अधिकमें पूरा हुआ ऋषि किभी निमंत्रण पाकर सीता तथा लवकुश सहित इस यज्ञमें पधारे थे । अंतमें लवकुशने सभाके बीच महाराजको १० ॥ दिनमें २० सर्ग प्रति हिसाबसे रामायण सुनाई जिससे महाराज अतिशय प्रसन्न हुए । इसी सरपर सीताजीने देह त्यागदी और लवकुश दोनों पुत्रोंको महाराजने ग्रहण किया । फिर अंत समय तक महाराजने दूसरा विवाह नहीं किया और प्रति १ अश्वमेध यज्ञ तथा बीच २ में अग्निष्टोम, वाजपेय तथा गोमेधादि यज्ञ करते रहे । यज्ञके दिनोंमें हरवक्त रत्न, धन, वस्त्र, शर्करा तथा अन्नादिके ढेर बटते रहतेथे । समय पाकर कौशल्यादि माताओंने देह त्यागी और महाराजने उनके श्राद्ध कर्म विधि पूर्वक किये।अन्तको महाराजकी आज्ञा पाकर लक्ष्मण भरत तथा शत्रुघ्न भाइयोंको देह त्यागना पड़ी । सबसे पीछे लवकुश दोनों पुत्रोंको राज्य सौंप महाराज भी सरयू तट गुप्त होगये, यह स्थान अबतक अयोध्या १० कोस दक्षिण गुप्तार घाट नामसे प्रसिद्ध है ।

देशविजय तथा राज्यविभाग-महाराज रामचंद्रने एक छत्र राज्य किया नानादेशोंके राजे आश्रित होकर उनको भेंट देते थे।

लक्ष्मणके पुत्र अंगदको कारूपथ देशका राज्य सौंपा और उनके नामसे अं दीय पुरी बसाई । द्वितीय पुत्र चन्द्रकेतुके नामसे चंद्रकांता नामक पुरबसाकर मल्लभूमिका शासन सौंपा ।

मधुवन (व्रज मंडल) के राजा लवणके अत्याचारोंकी शिकायत च्यवनादि ऋषियोंसे सुनकर महाराजने शत्रुघ्नको भेजकर यह देश विजय कराया और यहांका शासन शत्रुघ्नको सौंपा । अंतमें शत्रुघ्नके पुत्र सुबाहुको मधुरा (मथुरा) और दूसरे पुत्र शत्रुघातीको वैदिशा नगरका शासन सौंपागया ।

केकय देशके राजा युधाजितके प्रार्थना करने पर महाराजने भरतको भेजकर गंधर्वोंका देश जो सिन्धसे गान्धार (कन्धार) तकथा विजय कराय और उसका शासन भरतके पुत्र तक्ष तथा पुष्कलको सौंपा ।

निज पुत्र कुशकोविंध्ये विन्ध्याके दक्षिण किनारे पर कुशावती पुरी बसाकर कौशल देशका राज्य दियाऔर लवके लिये अयोध्याका सिंहासन सौंपा तथा इसके सम्पूर्ण से लेकर उज्जैनतक सर्वत्र देशका राज्य दिया ।

रामायणके पीछे ध-इट-डार्विन साहबकी थ्योरीके अनुसार इनकी गणना मनुष्य तथा पशुके बीचकी उस अर्द्ध सभ्य जातियोंमें करना असंगत नहीं है

जो अब समय पाकर नष्ट होगई हैं। अनेक फिरंगी विद्वान् अनुमान करते हैं कि मध्य एशियासे आये हुये आर्य्य लोग हिंदोस्थानके असली वासियोंको हिकारत के तौरपर बन्दर तथा रीछ कहतेथे।

महाराजका डीलडौल-मुखादि सब शरीर सुन्दर, सब देह जैसी चाहिये वैसी, कद न बहुत लम्बा न ठिगना और श्यामवर्ण था। नेत्र, जिह्वा, ओष्ठ, तालु, स्तन, नख, हाथ, पांव, और मुखका भीतरी तथा बाहरी भाग कमलाकारथे।

मंत्री व सभासद-सुमंत आदि का व्यवहार ज्ञाता मंत्रीथे(देखो सुमंत),वशिष्ठ आदि को ऋषियज्ञ कराया करतेथे और समय २ पर मंत्रीकाभी काम देतेथे। सभासद धर्मज्ञ व नीतिपरायणथे।

अयोध्यानगरी-सरयूके दक्षिण तटपर १२ योजन लम्बी तथा ३ योजन चौड़ी अयोध्यानगरीकी शोभा अलौकिकथी। शहर बड़े २ महलोंसे भराहुआथा जिनपर चूनहिला पानी फिराथा। बस्ती अत्यंत घनी थी। बाजार सब प्रकारकी चीजोंसे भरपूरथा। दूर २ से व्यापारी आतेथे। कुओंका जल मीठाथा। सड़क नित्य प्रति छिड़की जाती थीं, विशेष स्थानोंपर फूल बखेरे जाते थे। शहरकोटसे घिरा हुआथा, बाहर खाई थी जिसपर रक्षाके लिये सैकड़ों तोपें लगीरहतीथीं। घोड़ों, हाथियों तथा फौजके लिये कोटके बाहर स्थानबने हुयेथे। बगीचे भी अनेकथे। सरयूतटम सैकड़ों स्नानस्त्रियोंको जलक्रीड़ाके लिये बने थे।

प्रजागण-सच्चे, सदाचारी, प्रसन्न चित्त, विद्वान, पापरहित, देखने में सुंदर, उत्तम वेषधारी, खातेपीते, तन्दुरुस्त, एक दूसरेकी सहायता करनेवाले तथा मेल मिलापसे मर्य्यादानुसार चलनेवाले होकर व्यभिचारी नहीं थे।

देशकीहालत-रामराज्यमें कभी अकाल नहीं पड़ा। कोई विशेष रोग उत्पन्न नहीं हुआ। कभी कोई अनर्थ नहीं हुआ। प्रजा सुखसेरही और आधि व्याधिसे कभी नसताई गई। एक दफे किसी ब्राह्मणने विना अपराध किसी कुत्तेको मारकर बुरीतरह घायल कियाथा, महाराजने उस ब्राह्मणको भी दण्डित कियाथा।

वाल्मीकीय रामायण-इसको ऋषि वाल्मीकिने उत्तरकांड सहित २४००० श्लोकों तथा १०० उपाख्यानोंमें रामराज्यहीमें बनायाथा। जो कुछ महाराजको अंत समयतक करनाथा वही उत्तरकांडमें लिखागया था।

सिक्का-स ई १९०४ की प्रदर्शिनीमें रामचन्द्र महाराजका सोनेका सिक्का दिखाया गया था। उसका वजन ९ तोले, व्यास २½ इंच, सोना बहुत चोखा

और एक तरफ रामराज्याभिषेकका चित्र तथा दूसरी तरफ प्राचीन लिखावटका लेख है जो अत्यन्त प्राचीन होनेके कारण घिस गया है और पढ़ा नहीं जाता।

रामदासबाबा (प्रसिद्ध सङ्गीतज्ञ)—यह सूरदासजीके पिता थे और गाने बजाने में परम निपुण थे। स० ई० १५५० में अकबर बादशाहके दर्बारके गवैयाम नौकर थे। जब बैरमखां खानखानाने बगावतकी तो रामदासजी उसके तरफदार हुये। बैरमखांने प्रसन्न होकर १ लक्ष मुद्रा इनको इनाम दियेथे। यह फारसी तथा संस्कृतके अच्छे विद्वान थे और सङ्गीत विद्या में तान सेनके सिवाय कोई दूसरा इनकी समानता नहीं कर सकता था। अबुल फज्ल लिखताहै कि रामदास ग्वालियरसे आयाथा और इतिहासकार बदायूनी लिखताहै कि रामदास लखनऊसे आकर आगरेमें बसाथा।

रामदैवज्ञ (ज्योतिषकार)—इनके पूर्वज बरारसे काशीमें आरहे थे। अनन्त दैवज्ञ गर्गगोत्री इनके पिता थे और "नीलकण्ठी" ज्योतिष ग्रंथके रचयिता नीलकण्ठ दैवज्ञ इनके भाई थे। यह बादशाह अकबरके दर्बार में नौकरथे। निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं—

मुहूर्त चिन्तामणि, रामविनोद, यंत्रप्रकाश और टोडरानन्द। टोडरानन्द राजाटोडर मल्लके नामसे बनाया था।

राम मिश्र शास्त्री, पं० महामहोपाध्याय—आपके पूर्वज अकबरसे१८ कोसपर किसी ग्रामके रहनेवालेथे। आपका जन्म काशीमें वि सं १९०४ की साल पं० शालिग्रामाचार्यजीके घर हुआ था। आपके पिता योग्य पंडित थे, प्रथम कई वर्षतक आप उन्हींसे पढ़ा किये। पश्चात् पं० राधा मोहन भट्टाचार्य तर्कभूषण तथा पं० म० म० कैलासचन्द्र शिरोमणि भट्टाचार्यसे आपने अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा सम्पूर्णकी। फिर संस्कृत कालिज बनारसमें आपने सरकारी नौकरीकी और अवकाश मिलने पर सदैव अनेक विषयोंपर सैकड़ों प्राचीन ग्रंथ विचार सहित देखते रहे। जुबिलीकी साल गवर्नमेन्टने महाविद्वानोंमें गणना करके आपको पं० महामहोपाध्यायकी उपाधिसे विभूषित किया जिससे वास्तवमें अपार विद्याकी प्रतिष्ठा हुई। आप अंग्रेजी भाषाके भी ज्ञाता हैं और सरलता पूर्वक उक्त भाषामें बात चीत करसकतेहैं। स० ई० १९०१में आपने कालिजकी नौकरीसे पेन्शनली। अब आप स्वतंत्र होकर बहुधा भ्रमण करते रहतेहैं और सर्वथा त्यागी होकर किसीसे कुछ इच्छा नहीं रखते। आप सदाचार सम्पन्न, आचार शुद्ध तथा विलक्षण बुद्धिके महापुरुष हैं। सदैवसे निजपर साधारण विद्यार्थियोंको पढ़ानेकी अपेक्षा ग्रंथ रचनामें आपकी अधिक रुचि है किंतु कृपा

न, विशेष बुद्धिमान विद्यार्थी मिलजानेपर आप अवश्य उसका संग्रह करलेते हैं। पं० मोहनलाल वेदान्ताचारी, पं० अम्बिकादत्त व्यास, पं० देवीसहाय (धर्म दिवाकर सम्पादक) तथा पं०भागवताचार्य सरीखे प्रसिद्ध पंडित आपहीसे पढ़कर ऐसे विद्वान हुये। आप पढाते समय निज शिष्योंको धर्म शास्त्र तथा नीतिके अनेक उपदेशभी इस रीतिसे करते रहतेहैं कि जो उनके चित्त पटलपर अंकित होकर चिरस्थाई रहतेहैं। वैसे तो आप संस्कृत विद्याके सागरहैं परंतु विशेषत दर्शन विषयमें आपको अपूर्व योग्यता प्राप्त है। दर्शन विषयके बड़े २ गूढरहस्य आपके करतल पदार्थकी भांति हैं। आपके मिलनेसे चित्तमें एक प्रकारका उत्साह उत्पन्न होकर हिम्मत बंधती है और आपकी बात २ में कोई न कोई नीतिमय उपदेश झलकता है। काशीमें गंगापार राम नगरमें आपका निवास स्थान है। दशाश्वमेध घाटकी तरफ बंगाली टोलामें भी आपका एक मकान है जहां कभी २ आकर आप बैठते है। स ई १९०४ में आपका स्वास्थ्य अच्छा है, केशव स्वामी आपके सुयोग्य पुत्र हैं और निम्नस्थ ग्रंथ आपके रचे हुये हैं–

मंत्रमीमांसा, व्रात्यसंस्कार मीमांसा उद्वाह समय मीमांसा, तुरीय मीमांसा, स्नेह पूर्ति, दसक विजय वैजयन्ती, सर्व वेदसार निर्णय, सुबुद्ध बोध व्याकरण, बलाबल परीक्षा, दर्शन रहस्य, रत्न परीक्षा तथा अनेक और। आप श्रीसम्प्रदायके वैष्णव हैं, स्वामी आपकी परम्पराकी उपाधि है। सनातन धर्मका समर्थन करनेको बुलाये जानेपर आप अनेक अवसरोंपर दूर २ शहरोंमें पधारते रहे हैं तथा अबभी पधारते रहते हैं।

राम मोहनराय राजा (ब्रह्मो समाजोंके संस्थापक)–स० ई १७७४ में आपका जन्म राधानगर जिला बर्दवानमें हुआ था, रामकेवनराय आपके पिता थे। बंगाली भाषा मकानपर पढकर राम मोहन बाबू पटनाको पधारे और वहां रहकर उन्होंने अर्बी, फारसी, तथा रेखागणित सीखी। तत्पश्चात् बनारसमें जाकर संस्कृत पढ़ी। १६ वर्षकी उमरमें मूर्ति पूजाके खण्डनमें एक पुस्तक रची। पश्चात् तिब्बतमें जाकर बौद्ध मतके ग्रंथ पढे २२ वर्षकी उमरमें स्वदेशको लौटकर आये और अंग्रेजी पढ़नेलगे। स० ई० १८०३ में पिताका देहांत होनेपर उन्होंने रङ्गपुरके कलेक्टरके दफ्तरमें नौकरी करली और थोड़ेही दिनोंमें तरक्की पाकर उक्त दफ्तरमें दीवानके पदको प्राप्त हुये। नौकरी करके उन्होंने इतना धन कमाया कि १ हजार रुपया वार्षिक आयकी जमीन्दारी खरीदली। राम मोहन बाबू विद्याके बड़े रसिक थे, नौकरी करतेर उन्होंने उच्च श्रेणीका गणित तथा लेटिन, ग्रीक, हेब्रू आदि भाषायें पढ डालीं और अनेकानेक मतोंके धर्म सम्बन्धी ग्रंथोंको विचार सहित पढकर ईसाई मतको सर्वोत्तम ठहरादिया था जिससे उनके हजारों शत्रु हो गये थे। वेदान्त सूत्रोंका अनुवाद उन्होंने हिंदी, बङ्गला, और अंग्रेजीमें किया था।

एक अंग्रेजी स्कूल तथा स्वरचित ग्रंथोंके छापनेके लिये एक यंत्रालय भी जारी किया था और दो पुस्तकें सतीकी चाल मिटानेके लिये भी छपवाई थीं। स० ई० १८२८ में उन्होंने कलकत्तेमें ब्रह्मो समाज स्थापन की और अपने मन्तव्योंके प्रकाश करणार्थ कई पुस्तकें गीतों तथा भजनोंकी बनाई। स० ई० १८१७ में एशियाटिक सोसाइटी बंगालने उनको अपना मेम्बर नियत किया। स० ई० १८३० में यह तख्त दिल्लीकी तरफसे राजदूत नियत करके इङ्गलैंड भेजे गये और असाधारण प्रतिष्ठाके भागीहुये। स०ई०१८३२में इङ्गलैंडसे फ्रांसको पधारे और वहांके सम्राटके साथ बोजके भोजन करके सर्व्वोच्च प्रतिष्ठाको प्राप्त हुये। फ्रांसमें कुछ दिन ठहरकर उन्होंने फरासीस भाषा सीखी और पश्चात् इङ्गलैंड में वापिस आये और वहांके बादशाहकी तरफसे राजाका खिताब पाया। स० ई० १८३३ मे बृस्टलनगरमें मरे जहां उनकी कबर अबतक मौजूद है। ब्रह्मो समाजी लोग जाति पांति तथा खानपानका कुछ विचार नहीं रखते हैं। राजा राममोहन रायके रामप्रसाद राय नामक पुत्रथा जिसके वंशज अब तक कलकत्तेमें हैं। चौबीस परगना आदि बंगालके कई जिलोंमें उनकी जमीदारी है।

रामसिंहजी (महाराजा सवाई सर रामसिंह, जी सी यस आई जयपुर नरेश)—यह निज पिता महाराजा जयसिंह ३ के पीछे दो वर्षकी उमरमें स० ई० १८३८ की साल गद्दीपर बैठे। बाल्यावस्थामें राजकाज बृटिश पोलीटिकेल एजेन्ट करता रहा और बालिग होनेपर स० ई० १८५७ की साल राज्यका पूरा अधिकार आपको सौंपदियागया। सन् ५७ के उपद्रवमें आपने सरकार अङ्गरेज बहादुरकी तन मन धनसे सहायताकी जिसके बदले में कोटी कासिमका परगना तथा पुत्रगोद लेनेका अधिकार आपको दियागया। आप बड़े चतुर, प्रजा पालक तथा विद्योन्नति करनेवाले थे। जयपुरमें शिल्पमहाविद्यालय, रामनिवास बगीचा, अनाथयशाला, संस्कृत कालिज और जलकी न्यूनता मिटानेके लिये पानीके नल आपहीके समयमें बनाये गये थे। आपने अङ्गरेजी व संस्कृत कालिजों तथा पुत्री पाठशाला और शिल्प महा विद्यालयके वार्षिक व्ययके लिये ८० हजार रु० राजकोषसे नियत कियेथे। स० ई० १८६८ के अकालमें आपने प्रजाकी बड़ी सहायताकी थी। इसपर प्रसन्नहोकर बृटिशगवर्नमेंटने आपकी सलामी तोपके १९ फैरसे २१ फैरकरदीथी। स० ई० १८७५ में आप उस कमीशनके मेम्बर नियत किये गयेथे जो गैकवाड़ बड़ोदापर महिरा रजीडेन्टको विष देनेके मुकदमेका फैसला करनेके लिये गवर्नमेंट आफ्-इन्डियाकी तरफसे नियत हुआ था। उक्त कमीशनमें ३ हिन्दोस्थानी राजे और दो अंग्रेज अफसर शामिल थे। तीनोंराजाओंने गैकवाड़ को निर्दोष और दोनों अङ्गरेजी अफसरोंने राजाको दोषी ठहरायाथा, परंतु गव

नेमटने गैकवाड़को राज्यहीन करदिया। उसी साल हाइमाके वेल्सने जयपुर पधारकर ऐल्बर्टहालकी नींवका पत्थर रक्खाथा। आप दोदफे गवर्नरजेनरलके हिन्दकी व्यवस्थापकसभाके मेम्बर भी रहेथे। जयपुरकी प्रजाको सुप्रख्यात महाराजजयसिंह सवाई की मृत्यु (स० ई० १७४३) के पीछे आपके समयका सा अमनचैन कभीनहीं मिलाथा। अङ्गरेजों और मेमोंसे आपका खूब मेल रहताथा। स० ई० १८८० में वैकुण्ठवासी हुये और श्रीमान्‌के दत्तक पुत्र सरसवाई, माँधौ सिंहजी (वर्तमान नरेश) गद्दीपर बैठे। महाराजरामसिंहने अवनतिको प्राप्त हिन्दूधर्म तथा हिन्दूजातिके उद्धारके लिये अनेक उपाय कियेथे।

रामानन्दगुरु–(रामानन्दीयसम्प्रदायके आचार्य) भक्तमालके लेखसे विदित होता है कि यह दक्षिण देशके रहनेवाले थे और किसी सन्यासीके शिष्यथे। एक दिन यह दर्शन करणार्थ रामानुज स्वामीकी गद्दीके महन्त राघवान इनके पास जानिकले, महन्तजीने इनसे कहा कि "तुम्हारी आयु अब बहुत कम रहि गई है जो कुछ करना होकरलो"। यह सुन इन्होंने उक्त महन्तको गुरु करलिया। जब मृत्युका समय निकट आया तब गुरुने प्राण ब्रह्माण्डमें चढ़वाकर इनको समाधिस्थ कर दिया और मृत्युकाल टल जानेपर प्राण वायु उतार कर बहुकाल जीनेका वरदान दिया। कुछ दिनोंतक गुरु सेवामें रहिनेके बाद रामानन्दजी बद्रिकाश्रमको पधारे और वहांसे लौटकर काशीजी में पञ्च गंगाघाट पर कुछ दिनोंतक रहे। पश्चात् लौटकर जब यह निज गुरुके पास फिर पहुंचे तो वहां लोगोंने इन्हे पंक्तिमे नहीं लिया क्योंकि यह रामानुजीय कड़े आचारका पालन नहीं कर सकेथे। यह देख गुरुकी आज्ञानुसार इन्होने अपना नवीन पन्थ चलाया, जो रामावत या रामानन्दीय नामसे विदित है। समय इनका वि सं १४०० से १५०० के भीतर है। इनके अनेक शिष्योंमेंसे कबीर, रैदास, धना, सेन तथा पीपा इत्यादि १२ शिष्य मुख्यथे जिन्होने इस देशमें भाषा कविता तथा वैष्णव धर्मका बहुत कुछ प्रचार किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि ' जातिपांति पूंछै नहिं कोई। हरिको भजै सो हरिको होइ "। रामानन्दियोंकी प्रधान गद्दी जयपुर राज्यान्तर्गत गलता स्थानमें हैं, यह स्थान अत्यंत रम्य है और यहां कई बड़े २ मन्दिर वर्तमान हैं जिनमें श्री सीतारामकी मूर्तियें विराजमान हैं। गुरु रामानन्द भाषाके सुकविथे। उनकी स्फुट कविता लोकप्रसिद्ध है और " रामानन्दीय वेदान्त " इन्हींका बनाया हुआ है।

रामानुजस्वामी–(श्री सम्प्रदायके आचार्य) काञ्चीपुरी के निकट भूतपुरीमें केशव यज्वा नामक ब्राह्मणके घर कान्तिमतीके उदरसे जन्में। भूतपुरी दक्षि णमें तिरुवल्लूरकेरल्वे इस्टेशनसे १२ कोस दक्षिण है। १६ वर्षकी अवस्थामें चारो वेद कण्ठ करलेने पर इनका विवाह कर दिया

गया, विवाहसे कुछ दिनों पीछे इनके पिताका देहान्त होगया पश्चात् इन्होंने काञ्चीपुरीके प० यादव प्रकाश (यादवगिरि) तथा कावेरी नदीके तटस्थ रंगपुरमें यामुनाचार्यके शिष्य पूर्णाचार्यसे व्याकरण, न्याय, वेदांत आदि अनेक शास्त्र पढ़े और वेदोंको शास्त्रीय तरहका सहित विचारा । इनकी स्त्री रक्षाकामना झगड़ालूथी । अतएव उसके स्वभावसे दुःखित होकर एक दिन इन्होंने उसको नैहर पहुँचा दिया और आप सन्यास ग्रहण कर लिया। फिर देशा टन करते हुये बद्रिकाश्रम गये और वहांसे लौटते हुये अनेक तीर्थोंके दर्शन किये । सन्यास ग्रहण करनेसे पहिले इन्होंने काञ्चीपुरीके राजाकी कन्यापरसे पिशाच बाधा दूरकरके बहुत द्रव्य तथा सत्कार पाया था । बद्रीनाथसे लौटकर कापेल तीर्थ गये और वहांके राजा विट्ठल देवको शिष्य बनाकर सौवीर मेहक आदि अनेक ग्राम पाये । कपिल तीर्थसे श्रीरंगपट्टनमें आकर वेदान्त सूत्रपर श्रीभाष्य, वेदान्तप्रदीप, वेदान्तसार, वेदान्त संग्रह और गीता भाष्यादि अनेक ग्रंथ रचे । पश्चात् बहुतसे शिष्योंके साथ चोलमंडल, पाण्ड्यमंडल, कुर्ग इत्यादि देशोंमें विशिष्टाद्वैत मतका प्रचार किया और कुर्ग नरेशको दीक्षित करके केरलदेश (मालाबार) के पंडितोंको जीता । अंतमें फिर द्वारिका, मथुरा, काशी अयोध्या, बद्रिकाश्रम, नैमिषारण्य, पुरुषोत्तमपुरी (जगन्नाथ) और वेंकट गिरिकी यात्राकी । पुरुषोत्तमपुरीमें बौद्धोंको परास्त किया । परमधाम सिधारनेसे पहिले भूतपुरीमें अपनी मूर्त्ति स्थापनकी जो अबतक वहां एक मंदिरमें विद्यमान है । स ई १०१७में जन्म । स ई ११३७ में श्रीरंगपट्टनम मृत्यु ।

शैव लोग इनको दुःख देनेके अनेक उपाय करते रहे, परंतु कुछ नकरसके । इनके जीवनकालहीमें वैष्णवमतका खूब प्रचार होगया था और इनके अन्तसमय वैष्णवोंके ७०० मन्दिर मौजूद थे । रामानुजीयसंप्रदायके विशिष्टा द्वैतमतवादी वैष्णव कहते हैं कि मायाविशिष्ट ब्रह्म है अर्थात् जीव ईश्वरसे अलग होकर जन्म लेता है और मरनेपर ईश्वरमें मिलजाता है ।

रायप्रवीण—देखो प्रवीणराय पातुरी

रायपिथौरा—देखो पृथ्वीराज

ऋतुपर्ण—यह सूर्यवंशीनरेश महाराज रामचन्द्रसे अनेक पीढ़ी पूर्व हुये । नैषध (विहार) का राजा नल अपना राज्य जुयेमें हारकर इन्हींके दरबारमें घोड़े हांकनेपर नौकर हुआ था । राजा ऋतुपर्ण चौसर खेलनेमें अद्वितीय थे । इनकी राजधानी रिजोर जिला पटनामें थी। रिजोरका प्राचीन संस्कृत नाम ऋजित क्रांति है । भागवतके लेखानुसार रामचन्द्र इनसे ११ पीढ़ी पीछे हुये और शिव पु०के लेखानुसार ११ पीढ़ी पीछे हुये ।

रिषभदेव-(जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर)-यह राजा नाभाके पुत्र थे। इनके १०० पुत्र हुये जिनमेंसे सबसे बड़ा भरत था। रिषभदेवजीने १०० यज्ञ करके पुत्रोंको ज्ञान उपदेश किया और ज्येष्ठपुत्र भरतको राजपाट सौंप आप तप करने बनको सिधारे। भागवतमें लिखा है कि जब तप करते २ इनके शरीरमें केवल हाड़ चामही रहगये तो दक्षिणमें जाकर इन्होंने जैन मतका उपदेश किया।

इनको आदि नाथभी कहते हैं।
जैनियोंके निम्नस्थ २४ तीर्थ कर हैं-

ऋषभनाथ, अजितनाथ, सम्भवनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, सुपार्श्वना० चन्द्रप्रभु, पुष्पदन्तना० शीतलना० श्रेयांसना० वासुपूज्यना० विमल ना० अनंतना० धर्मना० शांतिना० कुंथुना० अरना० मल्लीना० सुव्रतना० नेमिना० नेमीना० पार्श्वना० और महावीर। जैन मतम जगत्की उत्पत्ति नहीं है न कोई ईश्वर है। उनके मतमें संसारी और मुक्त दो प्रकारके जीव हैं। ये लोग अपने तीर्थंकरों और सिद्ध देवताओंको मानते हैं। किसी प्राणीका वध नहीं करना यही जैन धर्मकी सार नीति है। जानवरोंपर जैनियोंकी बड़ी दया है, उन्हींके उद्योगसे स्थान २ पर पशुशालायें खुली हैं। जैनियोंके मंदिरोंमें इन्हीं जैन तीर्थ कराकी प्रतिमा चांदी, स्वर्ण तथा रत्नोंसे जटित होती हैं। जैनियोंमें श्वेतांबर और दिगंबर दो प्रकार होते हैं। दिगंबरोंकी मूर्तियें नङ्गी होती हैं। उदारता, सुशीलता, पुण्य और तप जैनियोंके ४ मुख्य धर्म हैं। स ई १८९१ की मनुष्य गणनाके समय हिन्दोस्तानमें १४१६६३८ जैनथे। जूनागढ राज्यात र्गत गिरिनारम ऋषभदेवजीका मंदिर है जिसम अन्य सब तीर्थकरोंकीभी मूर्तियें हैं। आबू पर्वत परभी पट्टन (गुजरात) वासी विमलसाह जैनीका बन वाया हुआ रिषभदेवजीका मंदिर है जिसके तैयार करानेमें १८॥ करोड़ रुपये खर्च हुये थे।,

रुक्मिणी(श्रीकृष्णकी पटरानी)-यह विदर्भ (बरारसे बीदर) के राजा भीष्मककी कन्या थी,भीष्मकका विचार इसका विवाह श्रीकृष्णजीके साथ करनेंका था, लेकिन इसके भाई रुक्मने हठ पूर्वक इसका विवाह चंदेरीके राजा शि शुपालसे ठहरा दियाथा। रुक्मिणीका श्रीकृष्णके चरणोंमें पहिलेहीसे अनुरागथा। एवं विवाहके पेशवक्त उसने अपनी करुणामय विनती पत्रम लिखकर एक वृद्धब्राह्मणके हाथ श्रीकृष्णजीके पास भेजी। तुरत महाराजद्वारिकासे धाये और बल पूर्वक रुक्मिणीजीको लेगये। द्वारिका पहुंच महाराजने बड़ी धूमधामसे विवाहकिया और रुक्मिणीको अपनी पटरानी बना लिया।

रूयक पंडित (अलङ्कार सर्वस्वकेरचयिता)—यह काश्मीरके राजानक यशके समारंभकर्ता थे। रुय्यकभी इन्हींका नामथा। वि० सं० की ११ वीं शताब्दीमें हुये।

रुद्रट (काव्यालंकारके निर्माता)—काश्मीर म वि स की ११वीं शताब्दीम हुये। इनके रचे काव्यालंकार पर अभिनवगुप्त आचार्यने वृत्तिरचीथी और नेमिनामक साधूने वि स की १२ वीं शताब्दीके प्रथम पादम उसपर टीका रचीथा।

रुस्तम (पृथ्वी प्रसिद्ध ईरानी पहिलवान)—यह जालका पुत्र तथा शामका पौत्र बड़ा बली पहिलवान होकर ईरान(फारिस) के बादशाह कैकाऊसका सेनापति था। मल्लयुद्ध तथा शस्त्रविद्यामें निपुणथा और रणभूमिमें परम भयानक शत्रुहोनेके कारण मध्यएशियाके लपरासे इससे थर २ कांपते थे। अनेक मल्लयुद्धोंमें इसने विजय प्राप्त की थी और अफ्रासियाब इत्यादि बड़े २ पहिलवानोंको पछाड़ा था। रुस्तमहीकी सहायतासे अफ्रासियाबकाराज्य जमशेदके पुत्र फैंकुबादको मिलाया। अन्तमें शत्रुओंने धोखा देकर इसके बेटेको इससे लड़ाकर मरवाडाला। पश्चात् इसको भी एक अन्धे कुंए मे जो नाजुक लकड़ियोंसे पटा हुआथा और जिसके भीतर भाले गड़ेहुये थे गिराकर मारडाला। रुस्तमने मरते वक्त अपने धोखा देनेवाले शत्रुको तीरमारकर वध किया। स ई से प्राय १८०० वर्ष पूर्व हुआ। रुस्तमशब्द आजकल वीरता वाची हो रहा है।

रूपमती रानी—मेल्कम साहब कृत इतिहासम लिखा है कि "रूपमती सारंगपुरकी किसी वेश्याकी कन्या, देखने भालने में सुंदर और गाने बजानेमें निपुणथी, कविताभी करतीथी, सैकड़ों राग उसके बनाये माल्वादेशमें अबतक प्रसिद्ध हैं, जिनको ढाढधारी और कलावंत लोग कंठ सीखतेहैं। माल्वाके राजा बाजबहादुरने रीझ कर उसको अपनी पटरानी बनायाथा। रंगमहलके खंडेर जो बाजबहादुरने रूपमतीके लिये बनवाया था अबतक पड़े हुयेहैं। इस प्रकार राग विलासमें ७ वर्ष बीतने पायेथे कि स ई १५७० में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आदमखाँने माल्वापर चढाईकी और बाजबहादुरको परास्त किया"। खफीखाँ इतिहासकार लिखतेहैं कि "जब बाजबहादुर हारकर भागा तो रूपमती आदमखाँ (अहमदखाँ) के हाथपड़ी, आदमखाँ के हृदय में रूपमतीके दुःख, विरह और विनतीसे किंचितभ्राज दया नहीं उत्पन्न

होतीथी और उसके प्रेमकी ख़बर न रखकर वह नाना विधिसे उस पराधीन स्त्रीको सताता था, ऐसी आपत्तिकी दशामें रूपमतीने मिलनेका एक समय नियत किया और खूब सजकर मुंहपर रूमाल डालकर लेटरही, नियत समये पर जब आदमख़ाँ आया तो दासियों ने रूपमतीको जगाया पर मुर्दा पाया क्योंकि उसने विष खालियाथा। रूपमतीका प्रेम अपने प्रियतमके साथ अत्यंत बढ़ा हुआ था जबसे बाज बहादुर आंखों ओट हुआ था वह विकल हो यह पद पढ़तीथी और फूट २ रोती थी-

दोहा-तुम बिन पियरा रहलहत, मांगत है सुखराज ।
रूपमती दुखिया भई, बिना बहादुर बाज ॥

उज्जैनमें एक तालाबके बीच रूपमती और बाज बहादुर दोनोंकी क़बरें है। भूमण्डलके इतिहास में बहुतकम ऐसे दो स्त्री पुरुषका वृत्तांत मिलता है जिन में ऐसा सच्चा और निष्कपट प्रेमहो, जिनके चित्त परस्परकी प्रीत से ऐसे आकर्षित हों और जिनकी चित्तकी वृत्तियों में इतनी समानता पाई जाती हो।

रूपसनातनगोस्वामी-(वैष्णव धर्म प्रवर्तक) भक्तमालकी टीकाके अनुसार रूप और सनातन दोनों भाई बङ्गदेशमें बादशाही पदाधिकारीथे, चित्त में वैराग्य उदय होनेके कारण सर्वस्व छोड़ श्री नित्यानन्द महाप्रभूके शिष्य होगये और गुरूकी आज्ञानुसार वृंदावनमें आकर वैष्णव धर्मका प्रचार किया। नित्यानन्द म० श्रीकृष्ण चैतन्य म० की सम्प्रदायके थे। मिस्टर ग्राउसके लेखानुसार उस समय थोड़ेसे झोंपड़ोंके सिवाय वृंदावनमें बिलकुल बनथा, रूप तथा सनातन दोनों भाइयोंने निज शिष्य नारायण भट्टकी सहायता से तीर्थों और देवस्थानों का पता लगा २ कर मूर्तियें स्थापन कीं। रूपगोस्वामीके सेव्य ठाकुर श्री गोविन्ददेवजी थे जिनका बहुत ऊंचा मन्दिर जयपुरके राजा मानसिंह ने वि० सं० १६४५ में११ लाख रुपयेके खर्चसे बनवायाथा। सनातन गोस्वामी के सेव्यठाकुर मदनमोहन जीथे जिनका मंदिर किसी महाशय गुणानन्द नाम कका बनवाया हुआ अबतक वृंदावनमें मौजूद है। Catalogus Catalogrum के अनुसार निम्नस्थ ग्रंथ रूप गो स्वामी कृत हैं-उज्ज्वल नीलमणि, हंसदूत, कार्पण्य पुंजिका, गोविंद बिरदावली, चैतन्याष्टक, दानकेलिकौमुदी,पद्यावली,प्रीतसन्दर्भ,विदग्ध माधव नाटक(स०ई० १५४९), मनसिक्षास्तव, संक्षेपामृत,उत्कलिकावल्लरी(स० ई० १५५०), उपदेशामृत, गंगाष्टक, गौरांगसुर कल्पतरु, छन्दोष्टादशक, नाटक चंद्रिका, परमार्थसन्दर्भ, प्रेमेन्दुसागर, मथुरा

महिमा, यमुनाष्टक, ललित माधव नाटक, विदग्ध कुसुमाञ्जलि, शिक्षादर्शक, साधन पद्धति, हंस दूतकाव्य, हरेकृष्णमहामन्त्रार्थनिरूपण, भक्तरसामृतसिन्धु, मुकुन्दमुक्तारत्नावली टीका, रसामृत और हरिनामामृत व्याकरण। Catalogus Catalogorum के अनुसार यह ग्रंथ सनातन गोस्वामी कृतहैं-उज्वलरस करण, भक्ति बिन्दु, भक्ति रसामृत सिन्धु, भागवतामृत, विष्णुतोषिणी, हरि भक्ति विलास, उज्वलनीलमणिटीका, भक्ति सन्दर्भ, योगशतक व्याख्यान और स्तवमाला। रूप और सनातन दोनो भाइयोंकी अस्थि वृन्दावनमें श्रीराधा दामोदरके मन्दिरमें संचितहै।

रेवती-गुजरातके सूर्य्यवंशीराजा रेवतकी कन्या श्रीकृष्णजीके भाइ बलरामजीको बियाही गई थी और इनसे दो पुत्र उत्पन्न हुयेथे। स्वरूप इनका बड़ा सुंदर था और कद लम्बाथा। इनके पिता रेवतने कुशस्थली नामक नगरी बसाई थी। इन्होंने अंतमें सत किया।

लल्लभट्ट (प्रसिद्ध ज्योतिषी)-इनके बापका नाम त्रिविक्रमभट्ट और दादे का नाम शाम्बु था। आर्य्यभट्टीयतंत्रके टीकाकार परमेश्वरजी लिखते हैं कि, प्रसिद्ध ज्योतिषी आर्य्यभट्ट इनके गुरुथे। इन्होंने पठन पाठनके अर्थ आर्य्य भट्टादि विद्वानोंके ज्योतिष सिद्धांतोंको श्रेणीबद्ध करके सुगम किया और उसमें अपनी तरफसे अनेक विशेष बातें सम्मिलित करके "लल्लसिद्धांत" रचा। "शिष्यधी वृद्धिदा" तथा "पाटीगणित" नामक ग्रंथभी इन्होंके बनाये हुये हैं। पश्चात् भास्कराचार्यने इनके अनेक ज्योतिषग्रंथोंको विचारसहित पढ़ कर "सिद्धांतशिरोमणि" नामक ग्रंथ बनाया था। लल्लजी पटनामगरके रहनेवाले थे और वि० सं० की छठी शताब्दीके उत्तरार्द्धमें हुये।

लल्लूलालजी (भाषाकवि)-यह आगरेके रहनेवाले सहस्रावदीच ब्राह्मणथे भाषागद्य लिखनेकी प्रणाली प्रथम इन्होंने चलाई। सीधे दोहे, चौपाई, सोरठे, छदभी अच्छे लिखते थे और लालचंद्रिकामसे पद पूर्ति करते थे। निम्नस्थ ग्रंथ जिनमेंसे बहुधा खड़ी बोलीमें हैं इन्हींके बनाये हुयेहैं-

१ प्रेमसागर (भागवत दशमस्कंधका भाषानुवाद)
२ बार्सिकराजनीति (नारायणपंडितके हितोपदेशका भाषानुवाद ब्रजभाषामें)
३ सभाविलास
४ माधवविलास
५ लालचंद्रिकानामक विहारी सतसईका तिलक

६ सुंदरदासके प्राचीन भाषानुवादसे सिंहासनबत्तीसी का खड़ी हिंदी बोली में अनुवाद ।

७ शिवदासकृत संस्कृत बेतालपन्चविंशतिकाका भाषानुवाद सूरतमिश्रने जयसिंह सवाई जयपुर नरेशके हुक्मसे कियाथा। लल्लूने सूरतमिश्रके अनुवाद का उल्था हिंदोस्तानी खड़ीबोलीमें किया।

८ मोतीलालने कामकन्दला माधवानलनाटकका भाषानुवाद एक संस्कृत के प्राचीन ग्रंथसे स० ई० १७०० के लगभग कियाथा। लल्लूने इसी भाषानुवाद का उल्था हिंदोस्तानी बोलीमें किया।

९-कवि कालिदासकृत शकुन्तलाका उल्था हिंदोस्तानी बोलीमें।
लल्लू स० ई० १८०२ में विद्यमानथे।

ललितादित्य–(काश्मीरका प्राचीन राजा)-इसने स० ई० ६९७ से ७३३ तक कश्मीरका राज्य भोगा और कन्नौज, गौड़देश, कलिङ्ग,तथा कर्नाटकके राजाओंको परास्त किया और अनेक द्वीपोंपर अपना अधिकार जमाया। यह भवभूति कवीश्वरको कन्नौज से अपने साथ काश्मीर लिवालेगयाथा। कश्मीरमें अनेक मंदिरभी इसने बनवाये थे। अन्तमें हिमालय पारकरके चीनपर चढ़ाई करने जाताथा लेकिन रास्तेहीमें मरगया।

लहिनासिंहसरदार–इनके बाप सरदार देसासिंहको महाराजा रणजीतसिंहजीने सतलज और रावीके बीचके पहाड़ी मुल्कका गवर्नर नियत किया था। स० ई०१८३२ में सरदार देसासिंह के सिधारने पर सरदार लहिनासिंहको गवर्नरी का ओहदा मिला और इन्होंने बड़ी योग्य रीति से मुल्कका इन्तजाम किया। अंतमें जब खालसा फौज बिगड़ी तो सरदार लहिनासिंह समय टालकर तीर्थाटनको चलेगये। जब फिसाद कुछ कुछ ठंडा पड़ा तो लाहौरके ब्रिटिश रेसीडेन्टके बुलाने से वापिस आये परन्तु उपद्रव फैलने के चिह्न देखकर पुन स० ई० १८४६ में बनारसको पधारे और यहीं परलोकगामी हुये। यह बड़े शिल्पकार तथा आविष्कार थे, खालसा फौजके तोपखानेमें इन्होंने बड़े २ सुधार किये थे। कौमके जाटथे और खालसापन्थको मानते थे। आपके सुयोग्य पुत्र सरदार दयालसिंह मजीठिया जिला अमृतसर के नामी रईस बृटिश गवर्नमेंटके कृपाभाजन हैं।

लक्ष्मणजी–यह महाराज रामचंद्रजीके छोटे भाई, कोसलेश राजा दशरथके पुत्र सुमित्राजीके गर्भसे त्रेतायुग के अन्तमें उत्पन्न हुये थे ।

महाराज रामचन्द्रसे साथ इनका भ्रातृ स्नेह अगाध था एवं वनवासको इनके साथही गये थे। वनमें जब महाराज आराम करते थे यह धनुषबाण लेकर चौकसी किया करते थे। महाराजका इशारा पाकर इन्होंने शूर्पनखाके नाक कान काट डाले थे और अन्य सब लड़ाइयोंमें जो राक्षसोंसे हुई महाराजके साथ २ बड़ी वीरतासे लड़े थे। यह वीरताकी मूर्ति होकर बड़े खरे स्वभावके थे। धनुषयज्ञके समय राजा जनक पर, महाराजको लौटानेको आनेके समय भरतजीपर और सीतामाताकी सुधि भूलनेके कारण सुग्रीवपर इनका क्रोध करना विदित है। सियास्वयंवरके अवसर पर जो विवाद इनमें और परशुराम जीमें पैदा हुआ था उससे इनका स्वभाव बहुत कुछ जाना जासकता है। लव णको ससैन तथा सपरिवार नष्ट करके महाराजने लक्ष्मणजीके नामपर इसका नाम सौमित्रा (Sumatra) रक्खा और उसका शासन विभीषणको सौंपा। लक्ष्मणजी अपनी माता सुमित्राके सम्बन्धसे सौमित्र कहलाते थे। राज्यसिंहासन आरूढ होनेपर महाराजने लक्ष्मणजीको किसी दूर देशके शासनपर नहीं भेजा किन्तु राजकाजकी देख भाल के लिये अपने पास ही इनको रक्खा तथा अयो- ध्याके समीपम इनको बहुतसा मुल्क दिया जिसमें इन्होंने लखनपुर नामक नगर बसाया जो अब लखनऊ नामसे मशहूर है। औरंगजेबने पवित्र स्थान जा- नकर लखनपुरके खण्डहरोंपर एक मसजिद बनवादी थी। यह मसजिद अब लखनऊ किला मच्छीभवनके भीतर है। सीताजीकी चचेरी बहिन उर्मिला से लक्ष्मणजीका विवाह हुआ था जिससे अङ्गद और चन्द्रकेतु दो पुत्र थे। महा राजने लक्ष्मणजीके पुत्र अंगदको कारूपथ देशका राज्य दियाथा और वहां अङ्गदीय पुरी नामक नगरी बसाई थीदूसरे पुत्र चन्द्रकेतुको मल्लभूमिका राज्य दिया तथा चन्द्रकांता नामक एक उत्तम पुर वहां बसाया था। महाराजके वैकुंठ पधारनेसे पहिले सरयूतट अयोध्याम लक्ष्मणजीको देह त्यागना पड़ी। यह स्थान "लक्ष्मण घाट" के नामसे मशहूर है। लक्ष्मणजीका रंग गोरा था, और डील, सुडौल था।

लक्ष्मणदाससेठ मथुराके (राजा लक्ष्मणदास,सी आई.ई)

सेठ राधाकृष्णके घर आ कृ ८, वि सं १९१० को मथुरामें आपका जन्म हुआ पिता आपको ५ वर्षका छोड़ मरेथे। सेठ गोविन्ददासके पीछे आप सेठ घरानेके मालिक हुये। निज पूर्वजोंकी समान राजभक्त होकर आप सदैव गवर्नमेन्टके दातव्यकोषोंमें चन्दा देते रहतेथे और स्वदेशी धर्मकार्योंमें भी सहायता करनेसे मुंह नहीं मोड़तेथे। बड़े धर्मानुरागी थे तथा भारतधर्ममहामंडलकी शोभाथे। गिरिराजकी यात्रा सालमें कई दफे श्री गर्गोंसहित धूमधामसे किया करतेथे।

अन्याय कर्मचारियोंके अप्रबन्धसे आपकी कलकत्तेकी कोठीका काम ढीला पड़ गयाथा जिससे आपको हुंडी पर्चा सब बन्द होगई थी लेकिन आपने सर एन्टोनी मैकडोनल लफ्टिनेन्ट गवर्नरकी सहायतासे शीघ्रही बात बनाली थी तथा सब प्रबन्ध ठीक करादियाथा। इस घटनासे सेठजी का चित्त मर्माहत होगयाथा, चिन्ताने भीतरही भीतर शरीर खरलियाथा निदान ४७वर्ष१ महीनेकी उम्रम ज्वरादिरोगोंसे पीड़ित होकर परमधामको सिधारे सेठ द्वारिकादास तथा दामोदर दास आपके दो पुत्र हैं। बृटिशगवर्नमेन्टने सेठ लक्ष्मणदासजीको सी आई ई की पदवी स ई १८८६ में और राजाका खिताब स ई १८९३ में दिया था तथा आवश्यकता पड़नेपर अदालतमें हाजिर होनेसे माफ कियाथा।

लक्ष्मणसेन—(बंगालके अन्तिम सेन वंशी नरेश) नदियामें इनकी राजधानी थी। स ई १२०१-३ में जब शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीके सेनापति बख्तियार खिलजीने बंगालपर चढ़ाईकी तो उन दिनों यह बहुत बूढ़े थे, निदान मुसलमानोंकी फौजका सामना नकरसके और कुटुम्बसहित पुरी (उड़ीसा) को भाग गये और शेष अवस्था जगन्नाथजीके मंदिरमें रहकर काटी। गीतगोविंदके कर्ता जयदेव मिश्र महाराज लक्ष्मणसेनके दर्बारके कविराज थे। लक्ष्मण सेनका दूसरा नाम अशोक सेन था और यह स ई ११४१ में निज पिता केशव सेनके बाद बंगालकी गद्दीपर बैठे थे। इनके पूर्वज वीरसेनने स ई ९८६ मे बंगालका राज्य पालवंशी राजाओंसे छीनकर सेन वंशी नरेशोंकी मूल रोपण की थी। वीरसेन और लक्ष्मण सेनके बीच ७ और राजाओंने राज्य किया। राजा लक्ष्मण सेनजी बड़े विद्योत्साही गुणग्राही थे, अनेक विद्वान् पंडित उनके दर्बारम रहतेथे। नदियामें महाराज लक्ष्मण सेनके सभास्थानके द्वारपर लगे हुये पत्थर पर निम्नस्थ श्लोक अंकित है—

श्लो०—गोवर्धनश्चशरणो जयदेव उमापति ।
कविराजश्चरत्नानि समितौ लक्ष्मणस्यच ॥

लक्ष्मीश्वर सिंह (महाराजा सरलक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर, के सी यस आई दरभङ्गा नरेश)—महाराज महेश्वर सिंहके पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मीश्वरसिंहजी स ई १८६१ में दरभंगाकी गद्दीपर बैठे। बाल्यावस्थामें रियासत का प्रबंध कोर्ट आफ-वार्डसके द्वारा होता रहा और आपको अङ्गरेजी तथा देशी शिक्षा दी गई। स ई १८७९ मे राज्यका पूरा अधिकरण आपको सौंपा गया और तबसे आप तन मन धनसे प्रजाका हित तथा राज्यका प्रबंध करते रहे। कई बरसतक आप वायसरायकी लेजिसलेटिव कौंसिल के मेम्बर रहे और स्वदेश भक्तिका परिचय सदैव आपसे मिलतारहा। भारत धर्म

महामण्डलके आप प्रधानथे और निज पूर्वजोंके धर्मपर दृढरहिकर सदैव धर्मकार्य्यमें तत्पर रहतेथे। स ई १८७३-७४ के अकालमें १० लाखसे अधिक रुपया आपने प्रजा की रक्षा में खर्च कियाथा। मुजफ्फरपुर तथा दरभंगामें आपने रोगियोंके हितार्थ दवाखाने बनवाये थे और सैकड़ों स्कूल, सैकड़ों मील पक्की सड़क तथा लाखों दरख्त पथिकोंके आरामके लिये निजराज्यमें लगवाये थे। राज्यकी नदियोंके सब घाटोंपर पुल बनवा दिये थे और अकालके समय खेत सींचनेके लिये नहिरें खुदवा दीथीं। कृषी तथा गाय बैल और घोड़ोंकी उत्पत्तिके सुधारपर भी आपने प्रशंसनीय प्रबन्ध किया था। आप मातृभाषा हिंदीके हितैषीथे और विद्वानों तथा गुणीजनोंका सत्कार करते थे। ४१ वर्षकी उम्रमें ता १७ दिसंबर स.ई १८९८को आप निःसन्तान परमधामको सिधारे और आपके छोटे भाई महाराज रमेश्वर सिंहजी (वर्तमाननरेश) राज्यके मालिक हुये काशीके स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती आपके गुरू थे। उन्हींके उपदेशसे आपने काशीमें दर्भङ्ग पाठशाला स्थापन की थी और दर्भङ्ग घाट बनवायाथा। काशीजानेपर आप सदैव विद्वानों तथा विद्यार्थियोंको दान पुण्यसे प्रसन्न कियां करतेथे। स्वामी विशुद्धानन्दसरस्वतीने आपका मृत्युका तार पाकर गद्गदकण्ठसे कहा-

श्लोक-लक्ष्मीर्वास्यति गोविन्दे वीरश्रीर्वीरमेष्यति।
गते भुजे यशः पुञ्जे निरालम्बा सरस्वती॥

दरभङ्गानरेश श्रोत्रियकुलोत्पन्न ब्राह्मण हैं।

लक्ष्मीबाई (झांसीकी मर्दानीरानी)—राजागंगाधरराव बुंदेलेकी रानीथी। गंगाधरराव स.ई १८५२ में एक दत्तक पुत्रको छोड़कर सिधारगयेथे। रानीने अपने दत्तक पुत्रको गद्दी दिलानेके लिये ब्रिटिशगवर्नमेंटसे प्रार्थना की, परंतु गवर्नरजेनरल लार्ड डेलहौसीने यह बात स्वीकार नकी और झांसी की रियासत ब्रिटिशराज्यमें मिलाकर रानी की पेन्शनकरदी इसके ४वर्षबाद सन् ५७ का गदर हुआ जिसमें रानीने झांसीकी पलटनको उकसाया और ४ जून सन् ५७को झांसीका किला घेरा,जिसमें अंग्रेज किलेमें से काटडाले गये और किलेपर अधिकार जमाकर रानीने नये सिरेसे झांसीका राज्य स्थापन किया। पर उसे यह विश्वास था कि अवश्य एक दिन अंग्रेजों से घोरयुद्ध करना होगा निदान उसने राजा रामचन्द्ररावके समयकी २० तोपें धरती से खुदवाकर निकलवाई और १४ हजारसेना एकत्र की। एकवर्षभी बीतने न पायाथा कि २५ अप्रैल स०ई०१८५८ को अङ्गरेजी फौजने झांसीका किला आ घेरा। रानी के सिपाही बड़ी वीरतासे लड़कर कटमरे, दूसरेही दिन झांसीका शहर और तीसरे दिन झांसीका किला रानीसे छूटगया परंतु दो हजार सेना सहित रानी बच कर निकल गई और काल्पीकी सड़क पर होती हुई ग्वालियर पहुंच वहां

की भागी फौजसे मिलगई। जब ग्वालियरको भी अंग्रेजोंने विजय कर लिया सो रानी छिपरानदीके किनारेकी तरफ भागी, परन्तु रास्तेमें मुरारके निकट एक अंग्रजी फौजसे सामना हुआ, जिसमें १७ जून स० ई० १८५८ को वीरता सहित लडकर कटमरी।

लक्ष्मीचन्द सेठ (सेठ वंश मथुराके संस्थापक)—इनके पिता मनीराम खण्डेलवालवैश्य जयपुरराज्यके रहनेवाले, धर्मके दिगम्बरी जैन ग्वालियरसे पारखजीके साथ मथुराको अपने तीनों पुत्रों लक्ष्मीचन्द, राधाकृष्ण तथा गोविन्ददास सहित आयेथे। पारखजीके कोई औलाद नहीं थी निदान अन्त समय इन्होंने लक्ष्मीचन्दको गोदबिठाळकर अपनी अटूट सम्पत्तिका मालिक बनादिया (देखो पारखजी)। पारखजीके उत्तराधिकारी होनेपरभी इन्होंने निज पूर्वजोंका जैनमत नहीं त्यागा और मथुरामें एक जैनमन्दिर बनवाया लेकिन वैष्णवसम्प्रदायसे भी किसी प्रकार इनको द्वेष नहीं था। इनके पुत्र रघुनाथ दासजी तथा इनके सबसे छोटे भाई गोविन्ददासजी निःसन्तान सिधार गये, केवल इनके भाई सेठ राधाकृष्णजीका वंश चला। से० राधाकृष्णसे इनको बडी प्रीति थी। इनसे बिनाकहे सुने उन्होंने प० रङ्गाचार्यके उपदेशसे जैनधर्म त्याग वृन्दावनमें रङ्गजीका मन्दिर बनवाना आरम्भ किया था लेकिन निजका कई लाखरुपया खर्च करदेनेपर छतभी नहीं पटपाईथी। जब यह बात इनको मालूम हुई तो भाईका चित्त दुखाना उचित न समझ इन्होंने उनसे कुछ नहीं कहा और ४५ लाख रुपयेके खर्चसे स०ई०१८५१की साल तक मन्दिर तैय्यार करादिया तथा उसके खर्चके निमित्त ५३ हजार रुपये वार्षिक बचतकी जायदादलगादी। इनके शारीरिक बल, उदारता तथा मिलनसारीकी कहानियें अब तक मथुरामें मशिहूर हैं। इनके तथा इनके भाई बेटोंके सुख चैनकी सीमा नहीं थी, समय आनन्दसे बिना किसी तरहकी चिन्ता के बीतता था। ब्रजमें यदि किसी चौबेका छोकरा प्रातःकाल देरतक सोता रहता है तो उसकी माता बहुधा कहते सुनी जातीहै कि " अरे छोरा! ऐसोहू कहा सेठ लक्ष्मीचन्दको बेटाहै, एतो दिन चढि आयो, उठे नाहि हेरे"।

लाङ्गफेलोकवीश्वर—(H. W Longfellow) यह अमेरिकानिवासी कवीश्वर स. ई. १८०७ में जन्मे और १८८२ में मरे। युनीवर्सिटीकी सर्वोच्च परीक्षा उत्तीर्ण करनेके पीछे इन्होंने यूरोपके अनेक देशोंकी यात्राकी, यात्रासे लौटकर हार्वर्ड यूनीवर्सिटी कालिजमें प्रोफेसर (अध्यापक) का पदपाया और पद्यरचनाकी ओर ध्यान दिया। इनके रचे अनेक ग्रंथ अंग्रेजी पद्यमें विद्यमान हैं जिनके कारण इनका नाम चिरंजीव है। अवसर तथा प्रसङ्गके अनुकूल शब्द प्रयोग करनेकी इनकी शक्ति अलौकिक थी और इनकरचे पद ऐसे मनोहर हैं कि हृदय पटलपर अंकित हो जाते हैं तथा श्रोताओंके कानोंको लुभातेहैं। इनके विचार और अलंकार भी प्रभाव शाली तथा कवीश्वरोंकेसेहैं। यह फ्रांस, जर्मनी, इटाली, स्पेन, हालैंड, डेन्मार्क, स्वीडेन, और स्कॉटलैंड

इत्यादि देशोंकी भी भाषायें जानतेथे और अनेक महापुरुषोंके जीवन चरित्र भी लिखकर इन्होंने समाचार पत्रोंमें छपवायेथे । स ई १८६९ में जब यह दूसरी दफे यूरोपकी यात्राको आयेथे तो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयने इनको डी सी एल की पदवी प्रदानकी थी ।

लॉरेन्स (सरहेनरी मांटगोमरी लॉरेन्स Sir Henery Montgomory Lawrence)यह लफटिनेन्ट कर्नेल अलेक्जन्डर विलियम एरे न्सके पुत्र थे और लन्दन्डेरीके स्कूलमें विद्योपार्जन करके ईस्ट इन्डिया-कम्पनीके तोप खानेमें भर्ती होकर स ई १८२३की साल बंगालको आयेथे । स ई १८४३ में काबुलकी चढ़ाईपर भेजे गये और वहांपर जो वीरता इन्होंने की उसके बदलेमें मेजरका पद पाया । कुछही दिनों पीछे नेपाल दर्बारमें बृटिश रजीडेन्ट नियत करके इनको भेजागया और बादको सतलज नदीके किनारेकी लड़ाइयोंमें अनेक साहस पूर्ण काम करनेके बदलेमें लफटिनेन्ट कर्नेलका पद इनको दियागया । स ई १८४६में लारेन्स साहबको लाहौर दर्बारमें रेजीडेन्ट नियत कियागया,वहांभी इन्होंने अच्छा काम करके के.सी.बी की उपाधि पाइसन ५७ के गदरमें बागियों से बड़ी वीरतासे लड़े, परन्तु अकस्मात् एक तोपका गोला फटकर इनके लगा और इनकी मृत्युका कारण हुआ। इन्होंने फिरङ्गी सिपाहियोंके अनाथ बच्चोंके लिये लारेन्स शाला स्थापन कीथी ।इङ्गलैन्डमें सेन्टपालके गिर्जेमें इनका स्मारक चिह्न है । लङ्कामें स ई १८०६ की सालमें जन्मे और स ई १८५७ में मरे ।

लाल कवि-देखो कल्लूलाल ।

लालगुरू-यह मालवाके रहनेवाले साधू मुगल सम्राट जहांगीरके समयमें हुये । जातिके क्षत्रीये, भाषा कविता अच्छी करतेथे, भगतलोग इनकी पूजा करते हैं तथा इनका नाम लेते हैं ।

लालबुझक्कड़ -यह अकबर बादशाहके मंत्री राजा बीरबलका पुत्रथा । असली नाम इसकालाल था और अपने पितासेभी अधिक ठठोली पसंदथा । शुरूहीसे इसके मनमें विरक्तताछमाई हुईथी, संसारको मिथ्या जानताथा और मानुषीय बुद्धिको अल्पज्ञ समझता था । स० ई० १५८३ में काबुलकी लड़ाईमें निज पिता राजा बीरबलके मारे जाने पर यह अपना सर्वस्व लुटाकर सन्यासी होगया आगरेके पास फतेपुर सीकरी नामक ग्राममें इसके बापके बनवाये महिलाके खण्डहर अबतक पड़े हैं । लोग इसको बड़ाचतुर समझते थे पर यह लुकमान हकीमकी तरह अपनी बुद्धिको तुच्छ जानताथा । इसकी बनाई सैकड़ों पहेलियें देशभरमें मशहूर हैं जिनमेंसे प्रत्येक इसबातकी प्रकाशक है कि गम्भीरगूढ़बातोंमें बड़े २ चतुर विद्वानोंकी बुद्धि वैसीही अस्तव्यस्त होतीहै जैसीकि साधारण बातोंमें सीधेगंवारोंकी । नमूनेके लिये लालबुझक्कड़की एक पहेली नीचे लिखते हैं-

लाल बुझक्कड़ बूझियो और न बूझेकोय। पैरमे चक्की बाँधकर कोई हिरना कूदो होय। लोग इसको चतुरसमझ बहुधा बातोंमें सम्मति लिया करते थे पर यह इस प्रतिष्ठाकोभी तुच्छ जाना करताथा और इसीलिये इसने अपना नाम बुझक्कड़ रखलियाथा।

लालाबाबू–इस बंगाली कायस्थने स० इ० १८१० की साल २५ लाख रुपयेके खर्चसे वृन्दावनमें एक मन्दिर बनवाया और बहुतसी जायदाद उसके रागभोगके निमित्त कृष्णार्पण की। आजकल इस मंदिरका वार्षिक व्यय प्रायः १२ हजार रुपयाहै। बढ़ीसय्यारी रहतीहै। बहुत लोग भोजन पातेहैं।

लालाबाबूका असली नाम कृष्णचंद्रसिंहथा। यह दीवान प्राणकृष्णके पुत्र थे। इन्होंने प्रथम कई बषतक बर्दवान, कटक और उड़ीसामें नौकरी कीथी और ३० वर्षकी उमरमें ब्रजमें आकर बसेथे। गोवर्धनमें राधाकुण्डके चारों तरफ पक्के घाट इन्हींके बनवाये हुये हैं। ४० वर्षकी उमरमें वैरागी होकर ब्रज मंडलमें विचरने लगये, अतमें गोवर्धनमें एक घोड़ेकी लातसे मरे। ब्रजमें निम्नस्थ लोकोक्ति इनके विषयमें प्रसिद्ध है–"लालाबाबू मरगये घोड़ा दोष लगाय। पारखके कीड़ा परे विधि सों कहा बिसाय"। यह अपने घरके बड़े अमीरथे, अबतक इनका वंश बंगालमें पायकपाड़ा नरेशके नामसे प्रसिद्ध है। वारेनहेस्टिंग्ज गवर्नरजेनरलके हिन्दके दीवान गंगागोविन्दसिंह इस वंशके अधिष्ठाताथे और बड़ी भारी सम्पत्ति छोड़ मरेथे।

लिकर्गस (Licargus) इस प्रसिद्धत्यागी पुरुषने स्पार्टादेशवासियोंके हितार्थ धर्मशास्त्र (कानून) रचाथा। इसके पिता राजा यूनोमसके मरनेपर पोलीडेक्टीज इसका बड़ा भाई स्पार्टाके राज्यसिंहासनपर बैठा, पर थोड़ेही दिन पीछे अपनी रानीको गर्भवती छोड़कर सिधारगया। गर्भवती विधवाने अपनेदेवर लिकर्गससे कहा कि यदितुम मुझसे शादी करलो तो निश्चिंतहोकर राज्य करो क्योंकि जो बच्चा मेरे पैदा होगा उसको मैं मारडालूंगी"। परन्तु लिकर्गसने यह बात पसंद नहीं की और केरीलास नामक भतीजापैदाहोनेपर उसको पाला और बड़े होनेपर उसको राजपाट सौंप दिया। पश्चात् लिकर्गस देशाटनको निकला और अनेक देशोंके धर्मशास्त्रोंसे जानकारी प्राप्त की। देशाटनसे लौटकर लिकर्गसने स्पार्टाकी हालत अच्छी नहीं पाई क्योंकि राजाका स्वेच्छाचारी होना प्रजागणको नापसंद था। यह देख लिकर्गसने राज्यको सुधारना चाहा, निदान उसने राजा और प्रजाके हितार्थ धर्मशास्त्र बनाया जिसपर चलनेसे सब बखेड़े दूर होगये और थोड़ेही समयमें स्पार्टाके रहनेवाले वीर सिपाही बन गये। इसके पीछे लिकर्गस फिर बाहर चलेगये और स० ई० से ८७० वर्ष पूर्व वृद्ध होकर शहर क्रेटमें मरे।

लीलावती—यह पटनाके राजाकी बेटी उज्जैनके राजा भोजको विवाही थी। खूब लिखी पढीथी और राज्यकी पुत्री पाठशालाओंकी देख भाल रखती थी।

लीलावती २—भास्कराचार्य ज्योतिषीकी पुत्रीका नाम लीलावती था जिसके नामसे लीलावती नामक अङ्कगणितकी पुस्तक रचकर " आचन्द्र दिवाकर " उक्त ज्योतिषीने चिरंजीव किया।

लीलावती ३(पंडित मण्डनमिश्रकी स्त्री)—काशीसे चलकर गयाजीके रास्तेमें शोणभद्रनदके किनारे ब्राह्मणवास नामक ग्राममें इसका जन्म हुआथा। इस पुत्रीके अतिरिक्त उसके और कोई सन्तान नहीं थी निदान उसने इसको नाना २ काव्य, व्याकरण, भूगोल, खगोल, अलङ्कार, गीत, वाद्य, नृत्य, कलाशास्त्र, पाकशास्त्र तथा गणितमें प्रवीण करके वेद उपवेद और शास्त्र पुराणादिकी शिक्षा देकर सब विद्याओंमें निपुण करदियाथा। पश्चात् इसका विवाह सुप्रसिद्ध मीमांसक पंडित मण्डन मिश्रसे होगया। दम्पतिमें खूब प्रेम रहा। पश्चात् जब शंकर स्वामी और मण्डन मिश्रमें शास्त्रार्थ हुआ तो लीला मध्यस्थ ठहराई गई। मण्डनमिश्रके पराजय होनेपर लीलाने शंकर स्वामीसे शास्त्रार्थ किया लेकिन जीतनसकी। इसके पीछे मण्डनमिश्र और लीला, शंकरस्वामीके शिष्य होकर सन्यासी होगये। शंकर स्वामीने शृङ्गपुर (शृङ्गगिरि) में मठबनवाकर लीलाको सरस्वतीनामसे उसम रहनेकी आज्ञा दी। जबतक जीती रही उसने शिक्षा, दीक्षा तथा ज्ञान उपदेशके द्वारा स्मार्तधर्मका प्रचार किया। वहांके लोग उसको " भारती " की उपाधिसे युक्त करके साक्षात् देवीके समान मानतेथे।

लीहङ्गचङ्ग (चीनीराजनीति विशारद)—यह पृथ्वीपर अपने समयम सबसे अधिक धनाढ्यथे, पासमें डेढ़ अरबरुपया नकदथा, प्रायः ३० लाख रुपयेकी मासिक आमदनी थी और अर्दलीमें ९ हजार सिपाही नियत रहतेथे। धनोपार्जन तथा राज्यके उच्चाधिकारसे इनको बड़ा प्रेम था, और ऐसी विचित्र नीतिके थे कि बहुधा बड़े २ अङ्गरेज राजनीतिज्ञोंको इनकी चालसे बड़े भ्रममें पड़ना होताथा। यद्यपि अफीमके व्योपारकी वृद्धिको अच्छा नहीं समझते थे परंतु अफीमकी खेती इनके समयमें अधिक होती थी, बारम्बारके अकालसे बड़े दुखी होतेथे परंतु इन्हींके आधीन कर्मचारी अन्नका संग्रह करके भाव महगा करनेमें अगुआथे यह बड़े विद्वान तथा सुलेखक भी थे, चीनके उच्चाधिकारियोंमें इनको सबसे अधिक पदवियां मिलीथीं और इनका आतङ्क निरयमति बढता देख अनेक चीनी राजनीतज्ञ कहा करतेथे कि लीहङ्गचङ्ग चीनका राज्य लिया चाहतेहैं। यूरोपियन राज्योंमेंभी इनका बड़ा सत्कार था क्योंकि चीन दर्बारमें जो कोई यूरोपियन राजदूत आता था उसका काम इनसे बिनामिले नहीं चलताथा इन्हींके द्वारा चीनसे भिन्न २ राज्योंके साथ स-

न्धि हुआकरतीथी कोयलेकी खान खोदने तथा चीनके समुद्राकिनारोंपर इंग्लैं डके जहाज जानेका अधिकार पहिले पहिल इन्होंने दियाथा और चीन तथा जापान राज्योंमें युद्ध मिटाकर सन्धि कराना इन्हींका कामथा। इन सबकामोंके बदलेमें चीनके प्रधान आमात्यका पद इनको दियागयाथा जिसपर अवसमयतक रहे। चीनी सम्राट्की आज्ञासे स ई १८९६ में यूरोप और अमेरिकाके अनेक देशोंमें यात्रा करके बडा सन्मान पायाथा तथा बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कियाथा। चीनके४ सम्राटोंके समयमें५०वर्षतक आपने राजसेवाकी।यूरोपके सन्तुष्ट करनेके लिये कई दफे चीनने अपने बडे २ राजनीतिज्ञोंके सर धडसे जुदा करवा दियेथे परंतु लीहुगचग मरनेकी घडीतक निजनीति निपुणताके कारण बचेरहे। इतने धनाढ्य होनेपरभी बडी सादीचाल रखतेथे और ठाठपसदनथे, चीनके कोमल और रेशमकेसे रोमवाले चमडाका व्यापार करतेथे और उपार्जित द्रव्यमेंसे दीन दुखियों तथा सम्बधियोंकी मददकरतेथे। इनके सुप्रबंधके कारण चीन राज्यकई दफे घोर दुघट नाओंमें पडने परभी यूरोपीय बादशाहोंके पंजेमें पडने से बचगया। स ई १९०१ में ७९वर्षकी उम्रपाकर तथा कई बच्चे छोडकर परम धामको सिधारे।

लुकमान(Lokman)–प्राचीन इतिहासकार लिखतेहैं कि लुकमान प्रथम किसी इसराइलके गुलामथे और कुछ दिनोंतक बढई तथा दर्जीका पेशा करते रहे-थे।किरनी विद्वान कहतेहैं कि यह यूनानके रहनेवालेथे और ईसप इन्हींका नामहै। अरबदेशवासियोंने लिखाहै कि लुकमान जावके बढोंमेंथे। मुसल्मानोंके पैगम्बर मुहमदनेभी कुरानमें लुकमानकी बुद्धि, विद्या और चातुर्यताकी तारीफ की है। हिंदोस्तानी पंडितोंकी रायहै कि लुकमान भारतवर्षके रहनेवाले लोकमन नामक ब्राह्मणथे और स्वदेशसे निकालेजानेपर यूनानमें जावसेथे। ख़ासित यह ऐसे चतुर पुरुषथे कि प्रत्येक जाति तथा देशके मनुष्य इनको अपनाया चाहतेहैं। इनकी कहानियें तथा कहावत जो चातुरीसे भरपूरहैं पृथ्वीके सब भागोंमें प्रसिद्ध हैं। स ई से प्राय १ हजार वर्ष पहिले यह इसराइल जातिके बादशाह दाऊदके समयमें विद्यमानथे। अपने समयमें सबसे अधिक बुद्धिमान गिने जातेथे परतु यह अपनी बुद्धिको तुच्छ जाना करतेथे। मोरचङ्ग पाजे तथा उडानेकी पतगका आविष्कार इन्होंने किया।

लेबनिज (G W Leibnitz) यह जरमनीके रहनेवाले प्रसिद्ध तत्त्व विज्ञानी होगये हैं। इनके बाप जो लीपजिगके विश्वविद्यालयमें कानूनके प्रोफेसर थे इनको ६ वर्षका छोडकर मरगयेथे। लेबनिजने स० ई० १६६४ में एम ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और यूनानीहकीमोंके बनाये ग्रंथोंका पढना आरंभ किया और बादको कानूनका इम्तिहान पास किया। स ई १६७२ में लेबनिज

साहब पेरिसनगरको गये और वहां अनेक गणितज्ञपण्डितोंसे मुलाकात की पश्चात् लेबनिज लन्दननगरमें आये और न्युटन आदि अनेक विद्वानोंसे मिले कुछ दिन पीछे न्युटन और लेबनिजम एक नियमके अन्वेषण करनेपर झगडा पैदा हुआ दोनों कहतेथे कि उक्त नियम हमारा निकाला हुआहै, परंतु लोगोंने निर्णय करके न्युटनको उक्त नियमका आविष्कार ठहिराया इस बातसे लेबनिजको दुख हुआ निदान बादशाह जमर्नीने पुन विचार करवाया और अन्तमें यह निर्णय किया गया कि लेबनिज तथा न्युटन दोनोंहीको उक्त नियमका एकही समयमें अनुभव हुआथा। यह नियम अब लेबनिजकी थ्योरम (Leibnitz's theorem) के नामसे विदित है परतु शोककी बात है कि यह निर्णय लेबनिजके मर जानेके पीछे हुआ।

लेबनिज बडे चतुर तथा गणितशास्त्रके पूर्ण ज्ञाता थे पर घमण्डी और लालचीभीथे। स० ई० १७११ में पीटर दीग्रेट महाराजा रूसने लेबनिजको मिनीकौन्सेलरके पदपर नियत कियाथा। स० ई० १७१६ में ७० वर्षके हो, कर मरे।

लोमहर्षण (व्यासमहर्षिके शिष्य)—व्यासजीसे पुराणोंकी शिक्षा पाकर इन्होंने पुराणोंकी हरपणिका संहिता रची और उसको अपने पुत्र उग्रश्रवासूतको पढाया। बादको उग्रश्रवासूतने हरपणिका संहितामें अपने मनसे स्वर मिलाकर१८पुराण पृथक् २बनादियेथे बरदेवजीके हाथसे नैमिषारण्यमें मारेगये।

लोलिम्बराज (वैद्य) वैद्यजीवननामक ग्रंथ इनका बनायाहुआ है वै द्यजीवनके पहिले दो श्लोकोंसे ज्ञातहोताहै कि लोलिम्बराजने अपनी स्त्रिपत्नीके अनुरोधसे इस ग्रन्थकी रचना कीथी।इस ग्रंथमें कपोलकल्पित बातें कुछभी नहीं है केवल चरक आदि मुनियोंके बनाये ग्रंथोंके गूढ रहस्योंका वर्णन है। लोलिम्बराज वैद्यकशास्त्रमें धन्वन्तरिके समानथे सङ्गीतशास्त्रके पूर्ण ज्ञाता थे, बडे २ बुद्धिमान कवियोंके शिरोभूषणथे और राजा महाराजाओंकी सभामें इनका बडा सत्कार होता था। इनके पिता दिवाकरजीभी अद्वितीय वैद्य थे। वि स की १५ वीं शताब्दीमें हुये।

ल्युदर (मार्टिनल्युदर—Martin Luther) यह जर्मनीके सूबे सैक्स नीमें स ई १४८३ की साल जन्मे। पिता इनके दरिद्रीथे निदान शिक्षा प्राप्त करनेमें प्रथम इनको बडी कठिनाइ झेलनीपडी, पश्चात् जब इनके बापकी हालत कुछ सम्हल गई तब उसने इनको १८ वर्षकी उमरमें कानून पढनेके लिये कालिजमें बिठलादिया। वहां स ई १५०५ में इन्होंने एम. ए की परीक्षा उत्तीर्ण की और कालिजके पुस्तकालयकी पुस्तकें देखके २ बडे ब्रह्मज्ञानी बन गये। सबलो इनके नातेदार आशा करने लगेथे कि थोडेही दिनोंमें को

अच्छा पद इनको मिलजायगा परन्तु ईश्वरको कुछ औरही करना मंजूर था क्यों कि उन्हींदिना एकरोज जगलमें हवाखाते वक्त इनके एक मित्रपर बिजली गिर पड़ी जिससे वह मरगया और यह बाल २ बचगये। यह देख इनको वैराग्य उत्पन्न होगया और संसारको असार समझ इन्होंने घरबार त्याग दिया और सेन्ट अगस्टाइनके अस्थलके साधुओंकी मण्डलीमें रहने लगे, जहां भिक्षाकरके भोजन करना पड़ताथा। पश्चात् अगस्टायमके गिर्जेके पुजारीका पद इनको प्राप्त हुआ और थोड़ेही दिन पीछे वेंस्वर्नवर्गके कालिजमें ब्रह्मज्ञानके प्रोफेसरके पदपर यह नियत कियेगये । इनकी विलक्षण शिक्षाप्रणाली तथा अपूर्व योग्यताकी तारीफ सुनकर दूरसे विद्यार्थी आनेलगे जिससे उक्त कालिजकी बड़ी उन्नति हुई। उन्हींदिनों इनको बाइबिलकी एक प्राचीन प्रति लैटिन भाषामें विचार सहित पढनेपर यह बात भले प्रकार प्रतीत हुई थी कि पोपके अनुगामी ईसाई लोग अनेक स्थलोंपर बाइबिलके अर्थ असली आशयके विरुद्ध लगाते हैं परन्तु धम सम्बन्धी विषयोंमें किसी राजा प्रजाको रोमके पोपकी सम्मति उल्लंघन करनेकी शक्ति न थी क्योंकि रोमके महाराजाका प्रभाव यूरोपके अन्य सब राजाओंपर छाया हुआ था और वह पोपका सत्य चित्तसे सहायक होकर पुराने ढरेंके अनुसार सबको चलनेकी शिक्षा करताथा। यदि कोई राजा पोप की शिक्षाके विरुद्ध आचरण करता तो गद्दीसे उतारा जाता था और प्रजागण यदि ऐसा करनेका साहस करते तो आईनके अनुसार आगमें जलाये जातेथे। पोप मनुष्योंसे रुपयालेकर इसबातकी सनद देताथा कि उनके उम्रभरके पाप क्षमाकर दियेगये और धनाढ्य मनुष्योंके मरनेपर पोप उनके उत्तराधिकारियोंसे मनमाना रुपया इस लिये लेतेथे कि मृतकको नर्कसे निकालकर स्वर्गमें भेजनेकी सिफारिश करदीजायगी। इस प्रकार धोकेसे रुपया इकट्ठा करनेकी पोपकी अनेक चार्लेयां पर किसीको डरके मारे उनको अप्रमाणित कहिने तकका साहस नहीं होताथा। ल्युदरने दृढचित्त होकर इस प्रकारकी ९९ बातोंका गिर्जेमें खड़े होकर खण्डनकरना आरंभ किया। पोपके कानमें जब यह बात पहुची तो उसने ल्युदरके बध करानेकी फिक्र की। शाहन्शाहरोममेंभी ल्युदरको बहुत धमकाया सहस्रों मनुष्यभी शत्रु बनगये परंतु इन्होंने दृढता सहित अपने मन्तव्य सबको सुनादिये। केवल डिटेन्बर्गका एलेक्टर पहिले पहिल ल्युदरका चेला हुआ और उसीकी कोशिससे ल्युदरके प्राणबचे फिरतो शनैः २ हजारों मनुष्य अनुगामी होगये, विद्वान और शिक्षितलोगोंने इनकी शिक्षा ग्रहण की और इसप्रकार ईसाइयोंमें प्रोटिस्टेन्टमत खड़ा होगया तथा पोपकी शिक्षापर चलनेवाले रोमन कैथलिक लोग थोड़ेही रहिगये। ल्युदरने बाइबिलका जर्मन भाषामें अनुवाद करके छपवायाथा और ४२ वर्षकी अवस्था कैथेरायन नामक एक बाईसे विवाह कियाथा जिससे कई बच्चे पैदा हुयेथे। स ई १५४६ मे ल्युदर विर्सीगांवम

एक धर्मसम्बंधी विवादका निपटारा करने गयेथे और वहीं यात्रें करतेहुए सिधारगये। बड़े साहसी, दृढचित्त तथा हृष्ट पुष्टथे और अपने बच्चोंसे बड़ा प्रेम रखतेथे।

वर्जिल (Virgil)-यह लैटिनकवि स ई से प्राय ७०वर्ष पहिले मुल्क इटेलीमें मान्टुआ नामक नगरके समीप ऐन्डीसमें जन्मेथे। प्रथम शिक्षा इन्होंने मिलन नामक नगरमें रहकर पाई और बादको नैपिल्समें जाकर ग्रीकभाषा, ब्रह्मविद्या, विज्ञानविटप और गणितशास्त्र पढ़ा। फिलिप्पीकी लड़ाईके बाद मिसमें इनकी जायदाद सिपाहियोंने लूट लीथी, यह रोममें आबसे और वहांके बादशाह अगस्टसकी मददसे पुन अपनी जायदाद पाई। पश्चात् इन्होंने कई ग्रंथ रचे और अंतमें बादशाह अगस्टसकी आज्ञानुसार पृथ्वीमशिहूर ग्रंथ "इनियड" लैटिनपद्यमें रचा। यह ग्रंथ इन्होंने ११ वर्षमें सम्पूर्ण कियाथा। होमरके सिवाय कोई दूसरा कवि लैटिनभाषामें इनकी समानता नहीं करसकताहै। अफलातून की फिलासोफीको यह मानतेथे। स ई से १९ वर्ष पहिले ब्रन्डूजिअममें मरे

व्हीटस्टोन (चार्लसव्हीटस्टोन-Charles Wheatstone) यह विद्युतशास्त्रका मुख्य आचार्य राजराजेश्वरी विक्टोरियाके शासनके प्रथम वर्षमें अर्थात् स० ई० १८३८ की साल लन्डन नगरके यूस्टन स्क्वैर मुहल्लेसे कैमडन नामक मुहल्लेतक बिजलीका तार लगानेमें समर्थ हुआ था। इससे पहिले भूमण्डलपर और कहीं बिजलीके तारसे खबर नहीं भेजी जातीथी पर अबतो व्हीटस्टोनके आविष्कृत नियमके अनुसार हजारों मीलतक लग गया है। यदि बिजलीके बलसे तार लगानेकी क्रिया संसारमें नहीं होती तो आज कल सभ्य देशोंकी जैसी उन्नति देखनेमें आती है उसका दशांशभी न होता। इसी महाशयने स० ई० १८४७ की साल चुंबककी सुईका आविष्कार कियाथा जिससे जहाज चलाया जाता है। यह लन्डन नगरका रहनेवाला था।

वाजिदअलीशाह (लखनऊके रंगीले नवाब) स० ई० १७३२ में मुगल सम्राट दिल्लीमें झगड़ालू दावियोंसे घबराकर अवधका सूबा सादतखां को दिया और उनकी संतति कई पीढीतक वहां राज्य करती रही और नवाब वजीर अवध कहलाती रही। नवाब वजीरकी राजधानी फैजाबादमेंथी परंतु नवाब आसफुद्दौलाके वक्तमें लखनऊमें राजधानी नियत कीगई। पश्चात् नवाब वजीर गाजि उद्दीन हैदरको ईस्ट-इन्डिया-कम्पनीने स० ई० १८१०में बादशाह अवधका खिताबदिया। गाजि उद्दीन हैदरसे चार पीढीबाद अमजद अलीशाह हुये जिनके पुत्र वाजिद अलीशाह स० ई० १८४७ में अवधके तख्तपर बैठे। यह जमाने होकर सङ्गीतविद्याके बड़े रसिक थे और राजकाजकी ओर कुछ ध्यान

नहीं देतेये जिसके कारण प्रजापर बड़ा अन्याय होता था। यह देख लार्ड डलहौजी गवर्नरजनरल हिंदने कोर्ट-आफ-डेरक्टरकी रायसे १३ फर्वरी स०ई० १८५६ को अवधका मुल्क अंग्रेजी अमल्दारीमें मिला लिया और वाजिद अलीशाहको १ लाख रुपया मासिक पन्शनदेकर मटियाबुर्ज कलकत्तेमें रहनेका हुक्म दिया जहां स ई १८८७में उनका देहांत हुआ। वाजिद् अलीशाह बड़े सरधोले थे, उन्होंने एक दिन प्रसन्न होकर फर्जंद अलीखाँदारोगा सिकंदर बाग लखनऊको बहांगीरावाद की जागीर तथा राजाका खिताब दिया था जिसको उसके वंशज अबतक भोग रहे हैं। वाजिद् अलीशाहकी माता अपने बेटे जव्वाद अली तथा अपने पोते मिर्जाहामिद अलीको लेकर स० ई० १८५६ में निज हुकूकका दावा करने इङ्गलैन्ड गईथी पर स० ई० १८५८ में वहां मरगई और फ्रांसमें दफनकी गई। थोड़े दिना बाद जव्वाद अलीभी मरगये और अपनी माताके समीपही दफन हुये। वाजिद् अलीशाह उर्दू तथा भाषा कविता भी खूब करतेथे। उर्दूमें तीन दीवान और तीन मसनवी उनकी बनाई मौजूद हैं जिनमें अख्तरनामसे पदपूर्ति की है।

भाषामें भी सैकड़ों फुटकर पद उनके बनाये मिलते हैं जो ललित और रोचक हैं और जिनमें रसिया नामसे पदपूर्ति कीगई है नमूनेके लिये यहांपर उनके एक पदका थोड़ासा भाग लिखतेहैं—

पद-मोहनरसिया आयेबगियामें फूलरही सब कली कलीरे।
कोई कली हरनामजपतहै कोई पुकारे अली अलीरे।

वार्डस्वर्थ—(विलियमवार्डस्वर्थ—William Wardsworth) इनकी गणना अंग्रेजी भाषाके श्रेष्ठ कवीश्वरोंमें है और इनकी कवितामें प्रकृतिका वर्णन बहुतायतसे पायाजाताहै। विकट वन, विशाल पर्वतोंकी चोटियें, पानीके भरने झीलें और फूल फलोंसे लदे हुये रुख इत्यादिकी अलौकिक छटाके दृश्य तथा उनकी चित्तलुभानेवाली शक्तिपर आपने पदरचना कीहै जैसा आश्चर्यजनक दिव्य वित्रर्ण छोटी २ चीजोंका इन्होंने किया है वैसा किसी अन्य कविको करना कठिनहै। यह बड़े दृढचित्त, परिश्रमी और अनुभवशील पुरुष थे और कम्बर लेन्डके रहनेवाले किसा वकीलके घर स० ई० १७७० में जन्मे थे। केम्ब्रस विश्वविद्यालयसे बी ए. की परिक्षा उत्तीर्ण करनेके पीछे फ्रांस इत्यादि देशोंकी यात्राभी इन्होंने कीथी और साउदी, कोलरिज तथा विल्सन आदि प्रसिद्ध विद्वानोंसे इनकी मित्रताथी। स० ई०१८४३ मे बृटिश गवर्नमेन्टने इनको ३०० पौंड वार्षिक वेतन देनेका ठहराव किया और एकही वर्ष पीछे राजकविके पदपर इनको नियुक्तकिया। स० ई० १८५० में परलोकगामी हुये।

वाल्टररैले-(सरवाल्टररैले-Sir Water Balogh) इन्होंने अनेक वार बड़े २ समुद्री सफर किये और अमेरिकाके समुद्री किनारोंपर कई बस्तियें बसाई। डेवन शायरके एक सभ्य पुरुषके घर स० ई० १५५१ में जन्मे थे और कुछ दिनोंतक स० ई० १५६८ के पीछे आक्सफोर्डके विश्वविद्यालयमें शिक्षा पाकर प्रोटिस्टेन्ट लोगोंकी सहायताके लिये फ्रांसको चले गयेथे। वहां ५।६ वर्ष रहनेके पीछे अपने सालेके साथ अमेरिकाको गये और वहां कई वर्ष ठहरकर अनेक बस्तियें बसाईं। स० ई० १५७९ म आलू तथा तम्बाकूका बीज लेकर ईंग्लैंडको वापिस आये और उनकी खेतीका प्रचार किया। पश्चात् इंगलैंडसे इन दोना चीजोंकी खेतीका प्रकार पृथ्वीके सर्वत्र भागोंमें होगया। स ई १५८८ में इन्होंने इंग्लैंडकी तरफसे युद्ध करके स्पेनवालोंके जङ्गी जहाजोंके बेडेको परास्त किया जिससे ग्रेट ब्रिटेनकी मालिका एलिजाबेद इनपर बहुत प्रसन्न होगई। मालिका एलिजाबेदके मरनेपर रैले साहिबके समयने पलटा खाया क्योंकि जेम्सप्रथमने गद्दीपर बैठकर इनको किसी अपराधमें कैद करदिया कैदमें रहकर इन्होंने अनेक ग्रंथ अंग्रेजीभाषामें रचे जिनमेंसे इनका बनाया संसारका इतिहास जो स ई १६१४ में छपा उत्तम है। स ई १६१५ में कैदसे छूटकर रैलेसाहिब गायनाको चले गये और वहाँ स्पेनवालोंकी एक बस्ती फूंक देनेके अपराधमें इंग्लैंडके बादशाह जेम्सप्रथमने स ई १६१८ में इनका सिर कटवा डाला। इनका मस्तक बहुत ऊंचा था और मुख लम्बा था।

वाल्टर स्काट-देखो स्काट।

वास्कोडी गामा (Vascode Gama)-यह पुर्तगाली मल्लाह सबसे पहिला किस्तान था जो हिंदोस्तानमें आया। स ई १४९८ में पुर्तगालके बादशाहने कई जहाज देकर इसको पूरबकी तरफ भेजा था, इस यात्रामें इसने पूर्वी हिंदके द्वीपोंको आनेका रास्ता खोज किया और हिंदोस्तानके किनारेपर पहुंच केलीकटके मुकाम लंगर डाला तथा ६ मास यहाँ रहकर पुर्तगालको लौट गया। स ई १५०२ में दूसरी दफे २० जहाजोंका बेडा लेकर हिंदोस्तानको आया, केली कटके जमोरनको परास्त करके पुर्तगाली राज्यकी हिंदोस्तानमें मूलरोपण की और कोचीन तथा कनानोरके राजाओंसे सन्धि की। स. ई. १५२४ में पुर्तगालके बादशाहने इसको पुर्तगाली हिंदका पहिला वायसराय नियत किया। स. ई. १५२५ में कोचीनमें मरा।

वाशिङ्गतन आर्विङ्ग-(Washington Irving) यह अमेरिकावासी ग्रंथकार स ई १७८३ की साल न्यूयार्क नगरमें जन्मे। बाप इनके व्यापार करनेके लिये स्काटलेन्डसे अमेरिकामें आबसे थे और यहीं इनको बालक छोड

कर परमधामको सिधारे थे। बड़े भाइने इनकी शिक्षाका प्रबन्ध किया था। हावर्ड यूनीवर्सिटीमें शिक्षा सम्पूर्ण करके इन्होंने यूरोपके फ्रांस, इटेली स्वीट सरलैंड, हालैंड तथा इंग्लैंड इत्यादि देशोंकी यात्रा करी जिसका मुख्य उद्देश अपने बिगड़े हुए स्वास्थ्यको सम्हालनेका था। यात्रासे लौटकर इन्होंने वकालत पढ़ी और बैरिस्ट्रीका इम्तिहान पास किया परन्तु वकालत कभी नहीं की और ग्रंथ रचनाकी ओर मन लगाया। स० ई० १८०९ में इन्होंने महस्सन युक्त न्यूयार्कका इतिहास लिखकर अपनेको अमेरिकावासी ग्रंथकारोंमें सर्वो- त्तम सिद्ध कर दिया। दूसरीदफे इन्होंने इंग्लैंडकी यात्रा फिर की और "स्केच- बुक" नामक ग्रंथ लिखना आरंभ किया जिसने थोड़ेही दिनोंमें ऐटलान्टिक महासागरके दोनोतरफ आदर पाया। इनके विचार मनहरण और सौंदर्यतासे परिपूर्ण हैं, लेख महस्सनयुक्त हैं, और विषय छांटनेकी शक्ति विलक्षण है। अंतमे अमेरिकान्तर्गत "सनी सायड" नामक अपनी रियासतम आकर बसे थे और वहीं स० ई० १८५९ म परमधामको सिधारे।

विलियमबेण्टिङ्क (Lord William Bentinck) इनके बाप पोर्लेण्डके तृतीयड्यूक थे, इन्होंने प्रथम फौजमें नौकरी करके फिलेण्डर्स, रूस और मिश्र इत्यादि देशोंकी लड़ाइयामें बड़े २ बहादुरीके काम किये और ब्रिटिश सेनाम उच्चपदपर तरक्की पाई। यह स० ई० १८०३ म हिन्दोस्तानको मद्रा सके गवर्नर नियत होकर आयेथे। यहांपर इन्होंने सिपाहियोंकी मूंछ, दाढ़ी तथा पगड़ी इत्यादिके सम्बन्धमें कुछ नियम जारी कियेथे जिनसे स०ई०१८०६ की साल बेलोरमें गदर होगया था। उसीसमय कोर्ट आफ डैरेक्टर्सने इनको इंग्लैंड बुलालिया और इटेली, स्पेन इत्यादि देशाम सेनापति नियतकरके भेजदिया।

स० ई० १८२८ में गवर्नर जनरलके पदपर नियुक्त करके फिर इनको हिंदो स्तान भेजागया। इनके शासनकालमें हिंदोस्तानसे सती होनेकी रसम बन्द की गई, और ठगोंको नष्ट किया गया, अंग्रेजोंको हिन्दोस्तानमें बसनेकी आज्ञा मिली और कुछ अंग्रेजी राज्यम मिलायागया। स० ई० १८३५में बीमार होनेके कारण इस्तेफा देकर इंग्लैंडको चलेगये और ग्लासगोकी प्रजाकी तरफसे स० ई० १८३६ में पार्लियामेण्टके मेम्बर बनायेगये। स० ई० १७७४ मे जन्मे और स० ई० १८३९ में मरे।

वैशम्पायन—यह व्यासजीके शिष्यथे, राजा जन्मेजयको महाभारत इन्होंने सुनायाथा। प्राइस साहब अनुमान करते हैं कि हरिवंश पुराण इन्होंने रचा था।

शकेन्द्र—देखो अलेग्जण्डर दीग्रेट.

शकुन्तला—पद्मपुराणमें लिखाहै कि, गाधितनय राजा विश्वामित्रने महर्षि वशिष्टसे युद्धमें परास्त होकर ब्रह्मबलको श्रेष्ठ और क्षत्रियबलको तुच्छ जान ब्राह्मण बननेके लिये तप करना आरंभ किया। देवताओंने यह देख मेनका अप्सराको तप डिगानेके लिये भेजा विश्वामित्रने मोहितहो उसके साथ भोगविलास किया जिससे शकुन्तलानामक कन्या उत्पन्न हुई। विश्वामित्रका जब मदनमद दूर हुआ तो अतिशय लज्जितहो चलते हुये और मेनकाभी कन्याको वनमें डाल वहांसे चलदी। दैवयोगसे ऋषिकण्व उधर होकर निकले और कन्याको अकेला पड़ा देख निज आश्रममें उठालाये और पुत्रीवत् उसको पाला। जब शकुन्तला १३। १४ वर्षकी हुई तो एक दिन चंद्रवंशी राजा दुष्यन्त शिकार खेलते हुये उधर जानिकले और त्रैलोक्यसुंदरी शकुन्तलाको देख मोहित हुये तथा गांधर्व रीतिसे उसके साथ विवाहकर भोगविलास किया। चलते समय राजाने अपनी अगूठी निशानीके तौरपर शकुन्तलाको दी और शीघ्रही बुलाभेजनेका विश्वास दिलाया पर दैवगतिसे राजधानीमें पहुंच राजाको शकुन्तलाकी कुछभी याद नरही। जब शकुन्तलाको कई महीनेका गर्भ होगया तो ऋषिकण्वने एकधाय तथा अपने दो शिष्योंको हिफाजतकेलिये साथ करके शकुन्तलाको उसके पति के घर भेज देना मुनासिब समझा। रास्तेमें नहाते वक्त राजा दुष्यन्तकी दीहुई अंगूठी शकुन्तलाकी अंगुलीमेंसे तालाबमें निकल पड़ी। जब शकुन्तला दर्बारमें पहुंची तो राजाने उसे नहीं पहिचाना और बहुतोंसे समझाये जानेपरभी उसे कपटधारी वेश्या समझ अङ्गीकार नहीं किया और कहा कि, हम पुरुवंशी लोग महात्माओंके मार्गमें आसन रखनेवाले गणिकाओंके रूपमात्रसे नहीं डिगसकते राजाके ऐसे वचन सुन ऋषिशिष्य क्रुद्धहो शकुन्तलाको वहीं छोड़ चलदिये और कहगये कि राजा! तुम इसके पश्चात्तापसे अतिशय अनुतप्त होओगे। गौतम राजपुरोहितनेभी राजाको बहुत कुछ समझाया पर राजाने शकुन्तलाको घरमें नहीं घुसने दिया और कहा कि पुंश्चलीके संसर्गसे कुलकामिनीभी दूषित होजाती हैं लाचारहो गौतम पुरोहितने शकुन्तलाको अपने घर ठहराया और वहांसे उस की माता मेनका शीघ्रही उसको लेगई परंतु अपने पास रखना उचित न समझ कश्यप मुनिको उसे सौंपदिया। कश्यपजीके आश्रम (काश्मीर) में शकुन्तलाके गर्भसे भरत नामक पुत्र हुआ। उधर कुछ दिन पीछे एक मछुआके द्वारा शकुन्तलाके हाथसे तालाबमें गिरीहुई अंगूठी राजा दुष्यन्तके पास पहुँची जिसेदेख वह विरहसे विकल होगये। जब भरत कुछ बड़ा होगयाथा तो एक दिन दुष्यन्त काश्मीरकी तरफ जा निकले और वहां कश्यपजीने शकुन्तलाको पुत्रसहित उनसे मिलाकर दोनों तरफका विरहदाह शान्तकिया। शकुन्तलाका पुत्र भरत बड़ा पराक्रमी, छत्रधारी राजा हुआ जिसके नामपर इस देशका नाम भारत वर्ष पड़ा।

शतानन्द–यह गौतम ऋषिके पुत्र जनकपुरी (तिरहुत) में रहते थे और राजा जनकके दर्बारमें इनका सत्कार होता था। शिव स्वयंवरके अवसरपर रामचन्द्र महाराजसे इनकी बातचीत हुई थी। बाल्मीकीय रामायणमें इनके लिये निम्नस्थ विशेषणोंका प्रयोग किया गयाहै–प्रहृष्ट रोम, महातेजस्वी, महातपस्वी, परमचतुर, मुनिश्रेष्ठ। रामचन्द्र महाराज तथा ऋषि विश्वामित्रके कहने सुननेसे गौतम ऋषिने इनकी माता अहल्याको अङ्गीकार किया था।

शम्भूनाथपण्डित–(हाईकोर्टके प्रथम हिन्दोस्थानी जज) आपके पिता शिवप्रसाद कश्मीरी पंडित स्वदेशसे ग्वालियर जाकर महाराज सेंधियाके दर्बारमें किसी उच्चपदपर नियत हुएथे और वहाँ उन्होंने मकानभी बना लिया था। ग्वालियरसे बादको काशी चले गये जहां वि स १८७६ की साल शम्भूनाथ जन्मे। शम्भूनाथने बाल्यावस्थाम उर्दू, फार्सी, संस्कृत तथा हिन्दी पढी थी। पश्चात् प० शिवप्रसादजी कलकत्ते चले गये, जहां शम्भूनाथने अंग्रेजी पढी और सदरदीवानी अदालतमें १६ रु० मासिकपर लेखककी नौकरी करली। पीछे तरक्की पाकर २५ रु० वेतनपर मुहार्रिर इजराय डिगरी हुये। सरकारी काम बडी मेहनत, होशियारी और इमान्दारीसे करते थे जिससे अफसर लोग अत्यन्त प्रसन्न रहते थे। फुर्सतके वक्त मकानपर नाना शास्त्रोंका अवलोकन करते रहते थे जिससे नित्यप्रति विद्योन्नति भी होती जाती थी। इसी पदपर रहते हुए पंडितजीने हाईकोर्टकी कार्यवाहीपर एक किताब लिखी जिससे सर्व साधारणको उनकी विद्याका परिचय मिला और जज साहब उक्त पुस्तकको देखकर बडे प्रसन्न हुये। नौकरीहीकी हालतमें आइन पढकर वकालतकी उच्च परीक्षा पण्डितजीने उत्तीर्ण की। पंडितजी धर्मपरायण थे झूठे मुकद्दमे कभी नहीं लेते थे दीन दुखियोंकी मुफ्त वकालत बेदाम करते थे जिससे अन्य वकीलोंकी अपेक्षा पहिले पहिल उनकी आमदनी कम होती थी परन्तु उनकी प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन बढती जाती थी पश्चात सीनियर गवर्नमेंटप्लीडरका पद तथा गवर्नमेंट कालिज कलकत्तामें आईनके प्रोफेसरका पद सर्कारने आपको दिया। उन्हीं दिनों गवर्नमेंट हिंदने सुप्रीमकोर्टकी जगह कलकत्तेमें हाईकोर्ट नियत किया था जिसमें एक हिंदोस्थानी जज रखनेका प्रस्तावभी मंजूर हो चुका था। इसी उच्च पदपर पण्डित शम्भूनाथ नियत किये गये, ६ वर्षतक बडी लियाकतसे काम किया, सब लोग अत्यन्त प्रसन्न रहे। हाईकोर्टमें कोई दूसरा जज आपसे अधिक योग्य नहीं समझा जाता था। स्वदेशियोंकी अनेक प्रकारसे मदद करतेथे, विधवाओं तथा अनाथोंको गुप्त रीतिसे सहायता देतेथे और दीन दुखियोंको वस्त्र, भोजन बँटवाते रहितेथे। आप वास्तवमें न्यायी तथा देशप्रिय हाकिमथे, गर्वका लेशमात्रभी आपमें नहींथा

और इसीलिये सब लोग आपकी प्रतिष्ठा करतेथे। वि० सं० १९९३ में ४० वर्षकी उमरमें परलोकगामीहुये। चाल ढाल रहिन सहिन अंग्रेजी नहीं था।

शमशुद्दीन अल्तमश (दिल्लीकाबादशाह)—सुलतान कुतबुद्दीन ऐबकने इसको बचपनमें एक सौदागरसे खरीद लियाथा और बड़े होनेपर अपनी बेटीकी शादी इसके साथ करदीथी। स १२१०में इसने कुतबुद्दीनके बेटे आरामशाहको गद्दीसे उतारदिया और आप दिल्लीका बादशाह बन बैठा। स० ई० १२१५ में गजनीके बादशाहने लाहौरपर चढाई की पर शमशुद्दीनसे हारकर उसे लौटना पड़ा। स ई १२३२ में शमशुद्दीनने ग्वालियरका किला सरकिया और २६ वर्ष राज्य करके स ई १२३६ में मरगया। रुकनुद्दीनफीरोज इसका बेटा गद्दीपर बैठा। दिल्लीमें कुतबकी लाटका एक भाग अल्तमशका बनवाया हुआहै।

शहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी—मुल्क गजनी तथा गोरके सुलतान गियासुद्दीन मुहम्मदने स ई ११७४ में अपने छोटे भाई शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीको गजनीका गवर्नर नियत कियाथा, पश्चात् शहाबुद्दीनने शाहिबादे खुसरो मालिकसे लाहौरछीन लिया और थोड़ेही दिनोंबाद खुरासान विजय किया। स.ई १२०में बड़े भाईके मरनेपर मुल्क गजनी तथा गोरकाभी राज्य पाया। स ई ११९१ में पृथ्वीराज महाराजा दिल्ली व अजमेरपर चढाई की परन्तु तिलावड़ीके मैदानमें परास्त होकर लाहौरकी तरफ लौटगया। स ई ११९२—९३ मे फिर चढाई की जिसमें पृथ्वीराज परास्त होकर कैद होगया। स ई ११९४ में जयचंद महाराजा कन्नौजपर चढाईकी और इसको भी परास्तकरके वध किया। पश्चात् ग्वालियर तथा बनारसके राजाओंको परास्तकिया और इसके सेनापति बख्तियार खिलजीने स ई ११९९में बिहार तथा स ई १२०३ में बंगाल, राजा लक्ष्मणसेनसे छीन लिया। बनारसमें शहाबुद्दीनने प्राय १०० मंदिर नष्ट किये थे। स ई १२०६ में सिन्धु नदीके किनारे डेरेमें घुसकर गक्करोंने इसको मार डाला। इसके कोई बेटा नहीं था निदान इसका भतीजा गजनी तथा गोरके राज्य का मालिक हुआ और इसका सुयोग्य गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक दिल्लीके तख्तपर बैठकर हिंदोस्तानका बादशाह हुआ।

शत्रुघ्न—यह अवध नरेश राजा दशरथके पुत्र रानी सुमित्राके उदरसे जन्मे थे। लक्ष्मणजी इनके सगे भाई थे। सीतामहारानीकी भतीजी श्रुतकीर्तिसे इनका विवाह हुआ था। जबतक महाराज रामचंद्र वनवास करते रहे शत्रुघ्न और भरतजी अयोध्यामें रहे। महाराज रामचंद्रके राजसिंहासन आरूढ होनेपर ब्रजमंडलसे च्यवनादि ऋषियोंने वहांके राक्षसराजा मधुपुत्र लवणके अत्याचारों

की आकर शिकायतकी। महाराजकी आज्ञा पाकर शत्रुघ्नने ससैन्य ब्रजमण्डलपर चढ़ाई की और लवणको मारकर उसकी राजधानी मधुपुरीको विध्वंस करादिया तथा उसके समीप मथुरा (मधुरा) नामक नगरी बसाई और महाराजकी आज्ञानुसार वहां रहकर बहुकालतक उस देशका शासन करते रहे। अतमें महाराजके वैकुंठ पधारनेके अवसरपर शत्रुघ्नजीने निज पुत्र सुबाहुको मधुराका राज्य और दूसरे पुत्र शत्रुघातीको वैदिशनगरका राज्य देकर इस लोकका सम्बंध छोड़दिया।

शाकटायन—इन्होंने संस्कृत व्याकरणकी एक पुस्तक रचीथी। शब्दानुशासन तथा उणादि सूत्रोंके कर्ताभी यही थे। यास्कमुनि तथा पाणिनि ऋषिसे पीछे इनका समय प्रतीत होताहै। हेनियल साहिबके मतानुसार यह ब्राह्मण थे और निर्मोनाक्षवम्मा जैनी लिखताहै कि यह जैनीथे। इनका व्याकरण पाणिनिमतके अनुकूलहै।

शाक्यसिंह—देखोबुद्ध

शांखायन—ऋग्वेदका ब्राह्मण तथा ऋग्वेदीय श्रौत सूत्र और ऋग्वेदके गृह्यसूत्र इन्होंने बनायेथे। श्रौतसूत्र१८अध्यायमें विभागितहैं और इनमें राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, पुरुषमेध, गोमेध इत्यादि बड़े २ यज्ञोंके करानेके नियम लिखे हैं। गृह्यसूत्र६ अध्यायोंमें है और इनमें सर्व संसारी संस्कार तथा ज्योतिष और डाकिनी आदि विद्याओंका वर्णन है।

शान्तनु—यह चन्द्रवंशी महाराज प्रियव्रतके पुत्रथे। महारानी गंगासे इनके भीष्मनामक पुत्र हुआ था। पश्चात् राजा शान्तनु सत्यवती एक सुन्दरी बालापर मोहित होगये और उसका विवाह इनके साथ इस शर्तपर होगया कि उसकी औलादको राजगद्दी मिलेगी। राजपुत्र भीष्मने अपने पिताकी विषय वासना पूरी करनेके लिये राजपाटका दावा छोड़दिया और अपना विवाह तक नहीं किया। सत्यवतीके गर्भसे विचित्रवीर्य तथा चित्राङ्गद दो पुत्र हुये। अंतम महाराज शान्तनु राजपाट त्याग वनको चल दिये। मथुरा तथा गोवर्धनके बीचमें इस स्थानपर आपने तप किया था जहांपर शान्तनकुण्ड और शान्तन गद्दी है। इनके विशेष वृत्तान्तके लिये देखो भीष्म पितामह।

शारङ्गदेव—इसनामके एक सङ्गीतज्ञने प्राचीन कालमें होकर सङ्गीत रत्नाकर नामक संस्कृत ग्रंथ रचाथा जिसमें अनेक प्रकारके नृत्योंकाभी वर्णन है। सङ्गीतरत्नाकरके रचनेमें इन्होंने अभिनव गुप्त, कीर्तिधर, मोहल और सोमेश्वर नामक सङ्गीताचार्योंके ग्रंथ अध्ययन कियेथे।

शारङ्गधर (वैद्य)—यह जातिके भाट प्रसिद्ध कवि चन्दवरदाईके वंशज थे। रणथम्भोनरेश हमीर सिंहदेवके दरबारमें इनका आदर था। इनके दादे रघुनाथ गुरूथे हमीरसिंहदेवके यह वैद्यकशास्त्र पारङ्गत होकर संस्कृतके बड़े भारी विद्वानथे और संस्कृत तथा भाषामें खूब कविता करतेथे। भाषामें हमीर रासा तथा हमीरकाव्य इन्हींके रचे हुये हैं। संस्कृतमें शारङ्गधर पद्धति (स०इ०१३६३) और शारङ्गधरसंहिता (वैद्यक) इनके रचे ग्रन्थ हैं। शारङ्गधर संहिता ऋषिकृत ग्रन्थोंसे प्रतिष्ठामें न्यून नहीं है, पतद्देशी वैद्यकग्रन्थोंमें उसकी गणना करते हैं।

शार्लेमेन महाराजाफ्रांस (*Charlemagne, emperor of France*) इनको चार्ल्स दी ग्रेट भी कहते हैं। ज्येष्ठ भ्राताके मरनेपर स० ई० ७७१ की साल फ्रांसके तख्तपर बैठे। स० ई० ७७४ में इन्होंने लोम्बार्डी विजय की और स० ई० ७७८ में स्पेनराज्यके अनेक मुल्कभी जीते तथा सैक्सनलोगोंको परास्त किया। स० ई० ८०० में अनेक पश्चिमी देश जीतकर इन्होंने अपने राज्यमें मिलाये। यह बड़े रणदक्ष, कार्यकुशल, अनुभवशील और न्यायी थे। फरासीसोंके वास्ते एक धर्मशास्त्र इन्होंने बनायाथा। अनेक मद्रिसे तथा गिरजे भी बनवाये थे। यह बड़े विद्वान और विजयी, विद्योन्नति इनके समयमें बहुत कुछ हुई, प्रायः सर्वत्र यूरूपपर इनका आतङ्क था। शहिर ऐक्सला शाला पलमें अपने बनवाये हुये गिरजेमें दफनाये गये। जैसे विक्रमादित्य इस देशमें प्रसिद्ध हैं वैसेही शार्लमेन फ्रांसमें। स०ई० ७४२ में जन्मे, स० ई० ८१४में मरे।

शालिवाहन महाराजा—(शाकाकार) यह विक्रम शकारीके सम कालीन बड़े पराक्रमी राजा थे। प्रतिष्ठानपुर में इनकी राजधानी थी। वाल्मीकीय रामायण उ०का०, ८९ सर्गके लेखानुसार राजा इलने मध्यदेशमें प्रयागसे थोड़ीदूर दक्षिण एक बड़ी उत्तम प्रतिष्ठानपुर नामक राजधानी बसाईथी जो अब गंगाके बांये किनारे झूसी नामसे प्रसिद्ध है। किसी कुम्हारके घर इनका जन्म हुआथा। बड़े होकर इन्होंने एक बृहत् राज्य स्थापन कियाथा और अनेक विजय प्राप्त करनेके स्मारकमें स० ई० से ७८ वर्ष पहिले अपने नामका शाका जारी किया विक्रमादित्य महाराजा उज्जैन इन्हींसे परास्त होकर रणशायी हुयेथे महाराष्ट्री प्राकृत भाषामें इनका रचा सप्तशती नामक एक पद्यमय कोष मिलता है जिसमें आदिरसात्मक और आध्यात्मिक विशेष हैं। बाणभट्टने स्वरचित हर्ष चरितमें उक्त कोषकी इसप्रकार प्रशंसा की है।

श्लोक—अविनाशिनम ग्राम्य मकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषरत्नैरिवसुभाषितैः॥

शाहआलम२ (मुगलसम्राट दिल्ली)–आलमगीर द्वितीयके पुत्र स ई १७२८में जन्मे और सं ई १७५९में वजीरके हाथसे अपने बापके मारेजानेकी खबर पाकर विहारसे दिल्ली आकर तख्तपर बैठे। स ई १७६४कीसालबक्सरकी लड़ाईमें परास्त होकर प्रयागको चले गये और स ई १७६५ में २४ लाख रु० सालियानापर बंगाल, बिहार तथा उड़ीसाकी दीवानीका ठेका ईष्ट इण्डिया कम्पनीको दे दिया और आप अङ्गरेजोंकी हिफाजतम स ई १७७८ तक प्रयाग हीमें रहे। तदुपरान्त एकान्तमें जीवन व्यतीत करनेसे थककर दिल्ली आये परंतु रुहेला सर्दार गुलामकादिरने काबू पाकर १० अगस्त स ई १७८८ का सानेपर चढ़कर इनकी आंख निकाल ली। अलुद्दीन शाहआलमने स ई १८०६ तक नाममात्रको राज्य करके जीवनकी दौड़ पूरी की। यह फार्सी तथा उर्दूके सुकवि थे आफताबनामसे पद्यपूर्ति करते थे, इनका बनाया १ दीवान मिलता है। दिल्ली में कुतुबशाहकी दरगाहके समीप, मोतीमसजिद्के निकट, सम्राट बहादुर शाहकी कबरके पास इनकी कबर है।

शाहजहाँ (पञ्चम मुगल सम्राट दिल्ली)– पिता जहांगीरके जीते जी इनका प्रभाव प्रबल होने लगा था। स ई १६२८ में जहाँगीरके मरनेपर ४० वर्षकी उम्रमे दक्षिणसे आकर तख्तपर बैठे और आगरेसे दिल्लीको अपनी राजधानी बदली। इनके समयमें कन्धारका सूबा मुगल राज्यसे अलग होगया, लेकिन दक्षिणदेशवर्ती अहिमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डाकी रियासतोंसे इन्होंने अपना आधिपत्य स्वीकार कराया तथा राजस्व वसूल किया और अपने पूर्वजोंका मुल्क बलख तथा बुखारा उजबक लोगोंसे जीत लिया। इन्होंने नौकरों चाकरोंको बड़ी २ जागीरें दी थीं और राजपूतोंकी कई एक नई रियासत स्थापन की थीं जिनमसे कोटा और रतलाम अबतक मौजूद हैं। यह बड़े दातारभी थे, करोड़ों रुपयेके दान पुण्यका पता इनकी तवारीखसे लगता है। नई दिल्लीको "शाहजहानाबाद" नामसे इन्होंने बसाया था और उसम एक बड़ाभारी किला, जुम्मामसजिद्, शहिरपनाह और बीचमें पानीकी नहिर बनवाई थी। किलेके भीतर दीवानखास, दीवानआम, मोतीमसजिद् और अतिसुंदर भवन बनवाये थे। आगरेमें अपनी प्यारी बेगम ताजबीबीके लिये संगमर्मरका रोजा बनवाया था जिसकी गणना पृथ्वीके नवीन सप्त आश्चर्योंमें है। आगरेम मोतीमसजिद तथा जामा मसजिदभी इन्होंने बनवाई थी। ७ करोड़ ५० लाख रु के खर्चसे सोन, चांदी और जवाहिरातका तख्त ताऊसभी इन्होंका बनवाया हुआ था जिसको सम्राट मुहम्मदशाहके वक्तमें नादिरशाह ईरानको लेगया। इनके समयमें आनेवाले फिरङ्गी यात्रियोंने इस देशका सुनहरीहिंदोस्तान लिखाहै, उनको यहां सोनेकी नदियां नजर आई थीं और बुगए दर्बार तथा दर्बारी लोग जवाहिरातसे लदे हुये तारोंकी समान चम

करते दीखते थे। सब चीज़ोंकी तरह सोनाभी इनके वक्तमें सस्ता होकर १४ रु० तोले बिकता था। इनके ४ प्यारे बेटे और ४ बेटियेंथीं, प्रत्येक बेटेको इन्होंने इतना बढ़ाया था कि, वह करोड़ों रुपयकी आमदनीके सूबोंके मालिक और लाखों फौजके धनी होगये थे और इनके काबूमें बाहर होकर आपसमें द्वेष रखने लगे थे। ७० वर्षकी उम्रमें जब यह बीमार पड़े तो इनके बेटोंने तख्तके लिये झगड़ा ठाना और औरङ्गज़ेब (आलमगीर) अपने सब भाइयोंको ठिकाने लगाकर तथा इनको आगरेके किलेमें कैद करके तख्तपर बैठ गया। कैदके ज़मानेमें यह लड़के पढ़ाते, केवल मांस-रोटी खाते और गरम पानी पीनेको पाते थे। ९ वर्ष कैद झेलकर स० ई० १६५८ में यह मरे और ताजगंजके रोज़ेमें अपनी बेगमके पासही दफन हुये। इनके दरबारके कवीश्वर सुन्दरमहाकविराजने “सुन्दरशृङ्गार” में लिखा है कि–

तीन पहर लौं रविचरे, जाके देखत माँहि।
जीत कह धरती दवी, शाहजहाँ नर नाहि॥

शाहमदार– यह प्रसिद्ध मुसल्मान फकीर, जिसका असली नाम बदि उद्दीन था शेखमुहम्मद तैफूरीबस्तामीका मुरीद था। इसके मतपर चलनेवाले फकीर, जो मदारी कहलाते हैं आजकलभी इस देशमें बहुत हैं। मदारिये फकीर एक झंडी हाथमें रखतेहैं जिसको मदारका झंडा कहतेहैं और बहुतसे मदारी फकीर रीछ बन्दरोंका तमाशाभी करते फिरते हैं। मुसल्मान तथा हिन्दुओंकी नीच कौमें मदारके झंडेको पूजती हैं। शाहमदार २० दिसम्बर स० ई० १४३४ को १२४ वर्षके होकर मरे और कन्नौजके समीप मकनपुरमें दफनायेगये यहां सालमें एकदफे इनकी कबरपर मेला अबतक होता है।

शिवकुमार शास्त्री, प० महामहोपाध्या– काशीसे दो कोस उत्तर उन्दीग्राममें घृतकौशिकगोत्री पं० रामसेवक मिश्र सरयूपारी ब्राह्मणके घर वि० सं० १९०४ की श्रावण कृ० ११ को आपका जन्म हुआ। आपके पूर्वजोंका मूलक ग्राम सरयूपारधर्मपुरा था। अक्षरारंभ होनेके पीछे कई वर्षतक अपनेघर पर व्याकरण पढ़ा। १४ वर्षकी उम्रमें आप अपने चचाके पास गये जो बेतियाराजधानीमें आजीविकावश रहते थे। वहां आपने पं० वाम्बीदत्त चौबेसे लघुकौमुदी पढ़ना आरंभ किया। बेतियासे सवासाल बाद काशीमें चले आये और यहांके प्रधान विद्वान पंडितोंसे परिश्रम सहित व्याकरण, काव्य अलङ्कार तथा न्यायादिषट् दर्शनकी शिक्षा पाई। और गोविन्दपुरामें मकान बनवाकर यहीं बस रहे। वेद वेदाङ्ग धर्म शास्त्र तथा पुराण इत्यादि सैकड़ों ग्रंथ आप विचारसहित पढ़कर देखते थे तथा अबभी अवकाश पानेपर देखते रहते हैं। आपके विद्यागुरुओंमेंसे पं० दुर्गादत्त

पं० कालीप्रसाद शिरोमणि पं० बालशास्त्री तथा स्वा० विशुद्धानन्दजी मुख्य थे। गवर्नमेंटने इससमयके महाविद्वानोंमें आपकी गणना की है, जुबिलीकी साल अपारविद्याके पुरस्कारमें आपको प० महामहोपाध्याकी उपाधि मिली है जिसके प्रभावसे लार्ड साहबके दरबारमें कुर्सी मिलती है । आप संस्कृत विद्याके समुद्र होकर षट्दर्शनके अद्वितीय पंडित हैं और वेदान्तके गूढ़ रहस्योंका ज्ञाता तो इससमय आपकी समान भूमंडलभरमें कोई दूसरा नहीं है । काशीके वर्तमान पंडितोंमें आप मुख्य समझे जाते हैं । संस्कृतकालिज बनारसमें प्रोफेसर का पद आपको प्राप्त था परन्तु स्वल्प वेतन होनेके कारण आपने इस्तेफा दे दिया। आप शान्तिकी मूर्ति होकर सर्वथा गर्वरहित हैं, सनातन धर्मका समर्थन करते हैं और शिष्योंको पढाने तथा पूजापाठ करनेमें बहुधा समय बिताते हैं। आजकल दर्शन विषयमें आप एक ग्रंथ रच रहे हैं। आपका प्रेम किसी वस्तुपर नहीं है। यद्यपि आप प्रगट नहीं कहते हैं परन्तु आपका दर्शन करनेपर यहज्ञान आप हो जाती है कि, संसार आपकी दृष्टीमें तुच्छ है और उससे आपका चित्त उदास है। हिन्दोस्थान भरकी शिक्षित मंडलीमें आपका नाम विदित है, मिलनेवालेके चित्तमें आपकी ओरसे पूज्यबुद्धि उत्पन्न होती है । यदि किसी स्थानके लोग विधर्मियोंके आक्रमणसे निरुपाय होकर आपको बुलाते हैं तो धर्मकार्य समझ शास्त्रार्थ अथवा सनातन धर्मका मंडन करनेके लिये आप तुरत पधारते हैं। महाराजा दरभंगा तथा राजा साहब हथौड़ा (लखनऊ) काशीके इस सदाचारी महाविद्वानको आर्थिक सहायता पहुंचाकर वास्तवमें अपना धन सुफल कररहे हैं । भीतर बाहर एकसा होकर चित्त आपका ईर्षा द्वेष रहित है और आपकी स्मरणशक्ति अलौकिक होकर विचार आपके अत्युत्तश्रेणीके महज्ञानियोंकेसेहैं जो ओतप्रोत आस्तिक भावसे परिपूर्ण हैं। सन ई० १९०४ में आपके एक पुत्र तथा एक पौत्र है।

शिशुपाल (चंदेरीका राजा)— जब महाराज युधिष्ठर भारतवर्षका राज्य करतथे तो उससमय चेदिदेश (बुंदेलखण्ड) में राजा शिशुपालका राज्य था । इसकी राजधानी चंदेरीमें थी । आजकल चंदेरी नगरी ललित पुरसे १८ मील पश्चिमकी ओर स्थित है । शिशुपालकी राजधानी चंदेरी आधुनिक नगरीसे प्रायः ७ मील उत्तर पश्चिमकी ओर स्थित थी उसे अब बूढी चंदेरी कहते हैं और टूटेफूटे मन्दिर उसकी प्राचीनताकी साक्षी देते हैं। शिशुपाल राजा दमघोषका बेटा था। श्रीकृष्णमहाराज इसके फुफेरे भाई थे लेकिन आपसमें बिगाड़ था, क्योंकि श्रीकृष्णजी इसकी मंगेतर रुक्मिणीको विवाहके दिन बलपूर्वक ले भागेथे । महाभारतके युद्धके पीछे जब महाराज युधिष्ठरने अश्वमेध यज्ञ किया तो श्रीकृष्णजी तथा

शिशुपाल दोनों वशमें आये थे । श्रीकृष्णजीने शत्रुका नष्ट करना उचितसमझ यहीं इसको वध करडाला ।

शिवप्रसाद (राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द)– इनके पूर्व जोंने स ई की ११ वीं शताब्दीमें जैनमत ग्रहणकर लिया था और जब अलाउद्दीन खिलजीने रणथम्भोरको लूटाथा तो रणथम्भोरसे अहिमदाबाद (सिन्ध) में आबसे थे । पश्चात् चम्पानेरमें जा रहे और वहांसे खम्भातमें जा बसे । खम्भातसे नादिरशाहकी चढ़ाईके वक्त मुर्शिदाबाद चले आये और राजा शिवप्रसादने मुर्शिदाबादको छोड़ बनारसमें मकान बनालिया । बा. गोपीचंद इनके पिताथे, रायडालचंद इनके पितामह थ और इनके वंशाय मनिहालियोंको जो मकसूदाबाद (मुर्शिदाबाद) में रहते थे मुगलसम्राट मुहम्मदशाहने जगतसेठका खिताब दिया था (देखो, जगतसेठ) । पिता इनको ११ वर्षका छोड़ मरेथे । बनारसकालिजमें पढ़कर यह १७ वर्षकी उम्रमें एजेन्ट गवर्नरजनरल अजमेरके दफ्तरमें महाराज भरतपुरकी तरफसे वकीलके पदपर नियत हुये । पश्चात् सिक्खोंके युद्धके अवसरपर मीरमुन्शी फौजका पद इनको प्राप्त हुआ पर स ई १८५२ में माताके अधिक वृद्ध होनेके कारण इस्तेफा देकर बनारस चले आये और बनारस एजेन्सीके मीरमुन्शीकी जगह पाली । पश्चात् स्कूलोंके असिस्टेन्ट इन्स्पेक्टरका ओहदा इनको मिला और थोड़े समय पीछे बनारस डिवीजनके इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्सके पदपर तरक्की पागये । ३० वर्ष गवर्नमेन्टकी चाकरी बड़ी मशीवाके साथ करके ५ हजार रुपये वार्षिककी पेन्शन पाई । ब्रटिशगवर्नमेन्टने काय दक्षता तथा राज्य भक्तिपर प्रसन्न होकर सितारे हिन्द तथा राजाका खिताब इनको दियाथा । देशियोंके सम्बन्धमें यदि किसी बातका विचार करना होताथा, तो गवर्नमेन्ट अवश्यही इनसे रायतलब करती थी । इन्होंने निजके तौरपर अपनी विद्या बहुतकुछ बढ़ाई थी और हिंदोस्थानके इतिहाससे बहुतकुछ जानकारी रखतेथे । इनका रचा इतिहास तिमिरनाशक पढ़ने योग्य है अनेक और पुस्तकेंभी स्कूलोंके हितार्थ रची थीं । स ई १८९४ में परमधामको सिधारे । आपके पुत्रपौत्र बनारसमें रहते हैं ।

शिवराज– देखो सेवाजी ।

शिवाजी मरहटा– देखो सेवाजी ।

शिवाजी द्वितीय– देखो साहू ।

शुकदेवजी—देखो शुकदेवजी।

शुक्राचार्य—यह भृगुऋषिके पुत्र महा यशस्वी ब्रह्मर्षि होकर दैत्योंके पुरोहितथे और पाताल (अमेरिका) के राजा बलिके दरबारमें पुरोहित तथा मन्त्रीके पदको मानथे। यह बड़े नीतिज्ञथे, वामनजीको पृथ्वीका दान देते समय इन्होंने राजाबलिको सचेत किया था जिसके कारण वामनजीने इनकी एक आंख फोड़ दीथी। कानेको अबतक इन्हींके तौरपर शुक्राचार्य कहते हैं। इनकी कन्या देवयानी चक्रवर्ती राजा ययातिको विवाहीथी। देवयानीके पुत्र यदुके वंशमें अनेक पीढ़ी पीछे श्रीकृष्णमहाराज हुये। "शुक्रनीति" नामक ग्रंथमें इन्हींका कहा हुआ उपदेश है। भृगुऋषिकी सन्तान होनेके कारण यह तथा इनके वंशज भार्गव कहलाये।

शेरशाहसूर–इसका असली नाम फरीद था और इसका बाप हसनसूर जातिका अफगान पेशावरके निकट "रोह" नामक ग्रामका रहनेवाला था परंतु बादको हिसारमें आबसाथा। हसनसूरको जमालखाँ गवर्नर जौनपुरने सहसराम और टाँडा जागीरमें देकर ५०० सवार तय्यार रखनेका हुक्म दियाथा। फरीदने बड़े होकर मुहम्मदखाँ लोहानी बादशाह बिहारके यहां नौकरी की तथा एक शेर मार कर शेरखाँ खिताब पाया। पश्चात् सुलतान बिहारने शेरखाँको अपना वज़ीर बना लिया। सूबेदार बंगालको लड़ाईमें परास्त करके शेरखाँ बहुतसे माल असबा-

बका भागी हुआ और मौकापाकर विहारका सुलतान बन बैठा। स ई १५४० में शेरशाहने हुमायूंको कन्नौजकी लडाईमें परास्त करके सिन्धकी तरफ भगादिया और शेरशाहनाम धारण करके बादशाह बन बैठा। आगरेम राजधानी नियत की। मालवा, मारवाड इत्यादिक कईदेश फतेह करके शेरशाहने स ई १५४५ में कालिञ्जरके किलेका घेरा किया। किलेकी दीवार सब टूटगई तो शेरसूरने धावा करनेका हुक्म दिया परन्तु इसी अवसरमें तोपका एक गोला फटकर उसको लगा जिससे यह घायल होकर मरणतुल्य होगया। इस हालतमें भी शेरशाह निरंतर अपनी सेनाको उत्तेजना देतारहा। संध्या समय सेनापतियोंने आकर खबर सुनाई कि, कालिञ्जरगढ फतेह होगया। यह सुनतेही शेरशाहने कहा कि "परमेश्वर तू धन्यहै!" और प्राण छोड दिये मृतक शरीरको सहसराममें लेजाकर तालावके बीच एक रोजेमें जिसको शेर शाहने पहिलेसे बनवा रक्खाथा और जो अबतक विद्यमानहै दफनाया गया। कहतेहैं कि, शेरशाहके समयमे चोरी तथा डकैती बिलकुल बन्द होगई थी और पथिक लोग सडकोंके किनारे अपना असबाब रक्खे हुये निर्भय सोते रहतेथे। बंगालसे पंजाबतक १५०० कोस लम्बी पक्की सडक उसने बनवाईथी जिसपर दोनों तरफ छायेदार मेवेके दरख्त लगवायेथे और १।२ कोसपर चौकी तथा पुलिसकी चौकियें बिठलाईथीं तथा कुये खुदवादियेथे। डॉक पंजाबसे बंगालमें ३ दिनेमें पहुंच जातीथी। राज्यभरमें १०।१० कोस पर हिन्दू मुसल्मान महुताजोंको कलापका खाना देनेके लिये धरमपुर तथा खैरपुर खुलवा दिये थे और सब चौकियों तथा महुताज खानोंमें १।१ नकाय रखवादियाथा। शेरशाहके खानेके वक्त सब नक्कारे बजादिये जातेथे जिससे राज्य भरमें मुहताजोंको एकही वक्तमें खाना बटना शुरू होजाताथा

दिल्लीके सूरवंशीबादशाहोंकी सूची।

शेरशाहसूर		स ई १५४५ मे मरा
सलीमशाहसूर (शेरशाहका छोटा बेटा)	”	१५५४ ”
फीरोजशाहसूर (सलीमसूरका बेटा)	”	१५५४ में सुद महम्मदशाहआदिलने इसको मारडाला
मुहम्मदशाहआदिल (शेरशाहका भतीजा)		१५५५ में इबराहिम सूरने इसे गद्दीसे उतार दिया.

इबराहीमखाँसूर (मुहम्मदशाहआदिलका बहनोई) "१५५५ में सिकन्दर शाहसूरने इसे तख्तसे उतार दिया

सिकन्दरशाहसूर (शेरसूरका भतीजा) " १५५५ में हुआ

यूने इसे सरहिन्दके निकट परास्त करके सूरवंशका अन्तकरदिया

शेरसिंह (महाराजा पंजाब)— यह पंजाबकेशरी महाराजा रणजीतसिंहजीके पुत्र रानी महताब कुँवरके पेटसे स० ई० १८०७ में जन्मे थे। खड्गसिंह तथा नौनिहालसिंहके बाद इन्होंने पंजाबकी गद्दीपर बैठना चाहा परन्तु जम्बूनरेश महाराज गुलाबसिंह तथा अन्यसिक्ख सर्दार चाहतेथे कि,राजकाज खड्गसिंहकी रानी चंद्रकुवरके हाथमें रहे निदान दोनों तरफसे लड़ाई ठनी दिनकी लड़ाईके बाद रानी चंद्रकुवरने लाहोरका किला खाली करदिया। और, शेरसिंह स ई १८४१ में गद्दीपर बैठे। लेकिन द्वेषकी आग बुझी नहीं थी, सदारलोग मनमें चुपचे और छिपे २ शेरसिंहके नष्ट करनेकी फिक्र कर रहे थे। आखिर इन्होंने अपनी तरकीबे लड़ाकर महाराज शेरसिंह और वजीर ध्यानसिंहके दिलोंमें फर्क डालदिया। यह सुअवसर पाकर अतरसिंह तथा अजीतसिंह सिंधवालोंने राजा और वजीरके बीच खूब अदावत करादी, उधर राजासे मिलकर वजीरके मारनेका हुक्म लिखालिया और वही हुक्म वजीरको दिखलाकर राजाके मारनेकी युगत ठहराई। थोड़ेही दिनोंबाद सिंधवाले दोनों सर्दार ५०० सवार लेकर लाहोर आये और महाराज शेरसिंहसे मिले। महाराज शेरसिंहने जाना कि, वजीरके मारनेके लिये आये हैं, इतनेहीमें सर्दार अजीतसिंहने एक भरीहुई दुनाली-बन्दूक महाराजके सन्मुख करके कहा कि, देखिये महाराजा क्या अच्छी बन्दूक है। महाराजने ज्योंही लेनेको हाथ बढ़ाया त्योंही अजीतसिंहने घोड़ा दबाया। दोनों गोलियें पार होगई और महाराजके मुहसे केवल यह निकलने पाया कि, "यह दगा की"।

शैक्सपियर (William Shakespear) यह प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि मलिका एलिजाबेथके समयमें इङ्गलेण्डके स्ट्रेटफोर्ड आन ऐवन नामक ग्राममें हुये थे। बाप इनके ऊन बेचने तथा दस्ताने बुननेका पेशा करते थे। १८ वर्षकी उम्रमें इनका विवाह हुआ जिससे ३ बच्चे हुये। पश्चात् लन्दनमें आकर यह एक नाटक कम्पनीके मेम्बर होगये। कुछ समय पीछे उक्त कम्पनीके मालिक बन गये। स० ई० १६०४ में इनके पिताका देहान्त होगया और स० ई० १६०५ में यह अपने गाँवको लौट आये। फिर अन्त समयतक यह

यहाँ रहे और एक बड़ी जायदाद मोल ले सके। कविता करनेकी शक्ति इनमें दैवीथी। सैकड़ों पुस्तक इन्होंने निर्माण कीं जिनमेंसे ७५ नाटक हैं। शृङ्गार, वीर, करुणा इत्यादि ९ रस जैसे इन्होंने दर्शाये वैसे कोई दूसरा अंग्रेजी कवीश्वर नहीं दर्शासका। सर्व प्रकारके विचारोंका इनकी कवितामें समावेश हुआहै और चित्तके सूक्ष्मभावोंको तो ऐसी उत्तमतासे इन्होंने चित्रित कियाहै कि मानों मूर्तिमान बनाकर दिखला दियाहै। नाटकपात्र इनके सब कर्तव्यपरायण हैं और पदलालित्य इनका ऐसाही प्रसिद्ध है जैसा संस्कृत कविदण्डीका। इङ्गलैन्डमें इनके नामके अनेक मेले होते हैं और इनके हाथकी छड़ी तथा वस्त्र अबतक इन्हींके मकानमें रक्खे हैं और आश्चर्यकी आंखसे देखे जाते हैं। स० ई० १६१६ में ५३ वर्षके होकर मरे और स्वेच्छानुसार निज जन्मभूमिके ग्राममें दफनाये गये।

शेखचिल्ली– चिल्ली अप भ्रंशहु दलीकाहै। तुर्की पार्सीभाषामें ठठोलको कहते हैं। वास्तवमें यह बड़े ठठोल तथा चतुर पुरुष थे। अनेक कहानियें इनकी इस देशमें प्रसिद्ध हैं। थानेश्वर (पंजाब) में इनकी कबर देखनेलायक बनी है। प्रतीत होताहै कि, यह मुगल सम्राट शाहजहां (स० ई० १६१८–५८) के वक्तमें हुये।

शेखजलाल– इनको मखदूमें जहानियां तथा जहाँगश्तभी कहते हैं। पृथ्वीके अनेक भागोंमें भ्रमण करनेके सिवाय इन्होंने ७ दफे मक्काकी यात्रा की थी। इनके मुरीद (चेले) जो जलालिये अथवा मलङ्ग कहलाते हैं अबभी इस देशमें बहुत हैं। इनके बाप सय्यद अहिमदकबीर मुलतानके रहनेवाले थे। और इनके दादा सय्यद जलाल बुखारी थे। शेखबहाउद्दीन जकारियाके पौत्र शेखरुकनुद्दीन अबुल्फतह इनके पीर (गुरू) थे। सुलतान फीरोजशाह तुगलक इनका मुरीद था, इन्होंने मक्कासे लाकर उसको एक पत्थर दिया था। जिसपर मुहम्मद साहबके चरणका चिह्न था। मुलतानके समीप अच्छामें स० ई० १३८४ की साल ७८ वर्षकी उमरमें इनका देहान्त हुआ। वर्षमें एक दफे इनकी कबरपर मेला होता है जिसमें लोग दूर २ से आते हैं। लोगोंको विश्वासहै कि, इनकी कबरकी मट्टी खानेसे पागलोंको आराम होजाता है। इनके एक मुरीदने इनके जीवनचरितकी पुस्तक लिखी थी और उसका नाम खिजानेजलाली रक्खा था।

शौनकऋषि— शुनकऋषिके पवित्र प्राचीन वंशमें वेद पढ़नेपढ़ाने तथा यज्ञ करानेका काम सदैव रहा। इनका घर नैमिषारण्य जिला सीतापुरमें था। शौनक नामके निम्नस्थ पांच प्रसिद्ध ग्रंथकार इस वंशमें हुये थे—

शौनकगृत्समदमहर्षि—इन्होंने ऋग्वेदका द्वितीय मण्डल प्रकट किया।

शौनकाचार्य २— यह शौनकगृत्समदमहर्षिके पौत्र थे। ब्राह्मण क्षत्रि आदि ४ वर्ण इन्होंने कायम किये थे। शौनकशाखा प्रवचन तथा ऋग्वेदके कल्पसूत्र इनके रचित ग्रंथ हैं।

शौनकाचार्य ३— इन्होंने वेदाङ्ग शिक्षा रची थी और परीक्षितके पुत्र जनमेजयका यज्ञ कराया था। महाभारतमें सूतजीके सम्वादके प्रवर्तक यही हैं। यह नैमिषारण्यमें रहकर ८८ हजार ऋषियोंके अग्रगण्य गिने जाते थे। प्रसिद्ध पं० अश्वलायन इनका शिष्य था।

शौनक ४— यह पाणिनि ऋषिके समकालिक थे क्योंकि "पाणिनिशिक्षा" के संग्रहीता पं० व्याडिके रचे "विकृतवल्लि" नामक ग्रंथमें इनका नाम है और शौनकीयक ऋक्प्रातिशाख्यके अनेक स्थलोंमें पाणिनिऋषिके सपाठी पं० व्याडिकानाम है। निम्नस्थग्रंथ ऋग्वेदपर इन्होंने रचे थे।

) शौनकीय ऋक्प्रातिशाख्य, अनुवाकानुक्रमणी, सूक्तानुक्रमणी, आर्षानुक्रमणी, छन्दानुक्रमणी, ऋक्पादयोर्विधान और स्मार्तसूत्र।

शौनक ५— इन्होंने अथर्व वेद संहिताका सम्पादन किया था जो शौनकीय संहिता कहलाती है। चित्राध्यायका तथा ४ भागोंमें अथर्ववेदीय प्रातिशाख्यभी इन्हींका बनाया हुआ है।

शंकराचार्य स्वामी (स्मार्तधर्मप्रवर्तक)— पुरातत्त्ववेत्ता पंडित के. बी पाठक स० ई० ७८८में इनका होना निश्चयकरते हैं। यह मलाबार प्रदेशान्तर्गत कलाड़ी ग्राममें विश्वजीत उपनाम शिवगुरु एक शुद्ध ब्राह्मणके घर विशिष्टा नामनी माताके गर्भसे जन्मे थे। परम्परासे चले आनेवाले वैमनस्यके कारण कुटुम्बियोंने इनके जन्ममें शंका उत्पन्न करके इनके माता पिताको त्याग दिया था। ५ वर्षकी उम्रमें इनके पिताका देहांत होगया। ८ वर्षकी उम्रमें इन्होंने नर्मदातटवासी गोविन्द भगवत्पाद एक सिद्ध पुरुषसे सन्यासधर्मसे

दीक्षा ली और उनसे सम्पूर्ण विद्या पढ़ १६ वर्षकी उमरमें काशीको चले आये। काशीमें जब एकदिन यह गंगास्नान किये आरहे थे तो रास्तेमें चार कुत्तोंको रस्सीमें बांधेहुये सामहनेसे एक चांडालको आता देख इन्होंने कहा कि, "गच्छ दूरे"। चांडाल मार्ग न छोड़ कहने लगा कि, "वेद तथा उपनिषद् परब्रह्मको अद्वतीय अनवद्य असङ्ग तथा सत्य बतलाते हैं परन्तु तुममें यह भेद बुद्धि देख मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। स्पर्शके भयसे आपने मुझसे मार्ग छोड़नेको कहा किन्तु मेरी और आपकी आत्मामें कुछ फर्क नहीं है। महात्मागण मोहकूपमें फसकर इस क्षणभङ्गुर नश्वर देहमें वृथा आत्माभिमान करते रहते है"। यह कहकर चांडाल गुप्त होगया और उसकी जगह चारौं वदसमेत एक विद्वान् दृष्टि पड़ा जो साक्षात शिवजी मालूम होता था। पलमात्रमें वह भी अन्तर्ध्यान होगया और इनको उपदेश कर गया कि "एक मात्र परब्रह्मही सत्य है और सब मिथ्या है"। इसी उपदेशके आधारपर इन्होंने स्मार्तधर्मका प्रचार करना चाहा निदान प्रयागमें जाय प्रसिद्ध पं० कुमारिलभट्टसे भेंट की कुमारिलजीने इनका अभिप्राय समझ इनको उपदेश किया और कहा कि "यदि माहिष्मतीवासी मीमांसक पंडित मण्डनमिश्रको तुम शास्त्रार्थमें परास्त कर सको तो भारतके अन्य सब पंडित परास्त होनेके तुल्य हो जावेंगे" यह सुन यह माहिष्मतीको सिधारे और पं० मण्डनमिश्रको शास्त्रार्थमें परास्त करके उसको शिष्य करलिया (देखो मण्डनमिश्र) पश्चात् इन्होंने अनेक और विद्वान् शिष्य किये जिनमेंसे सुरेश्वराचार्य (मण्डनमिश्र), पद्मपादाचार्य, हस्तामलकाचार्य, तोटकाचार्य इत्यादि १० प्रधान शिष्य थे। इन १० शिष्योंकी गणना वेदान्त दर्शनके आचार्योंमें है और सन्यासियोंकी १० शाखायें इनके नामसे प्रसिद्ध हैं। फिर इन्होंने भारतके प्रत्येक भागमें दिग्विजय करके स्मार्तधर्मका प्रचार किया और पूर्वोक्त चारों दिशाओंमें निम्नस्थ देव दर्शन मठ बनवाये और उनमें अपने विद्वान् शिष्योंको नियुक्त किया—

उड़ीसामें गोवर्धन मठ बनवाकर पद्मपादाचार्यको सौंपा।
द्वारिकामें शारदा मठ बनवाकर विश्वरूपाचार्यको सौंपा।
बदृकाश्रममें जोशी मठ बनवाकर तोटकाचार्यको सौंपा।
मैसोरमें शृंगगिरि मठ बनवाकर पृथ्वीधराचार्यको सौंपा।

उपरोक्त चारों गद्दियोंकी परम्परामें होनेवाले महन्त शंकराचार्य नाम धारण करते हैं शंकरस्वामीने ब्रह्मसूत्रोंपर अद्वैत भाष्य और कठ केनादि १० उपनिषदोंपर भाष्य तथा भगवद्गीतापर भाष्य रचा था। "विवेकचूड़ामणि' नामक ग्रंथभी इन्हींका विरचित है। वास्तवमें एकदिन शंकरस्वामीकी ग्रंथरचना, अनुपम प्रतिभा, असमानुविक शक्ति, अलौकिक खण्डनीय युक्ति, सारगर्भ उपदेश

और अद्भुत न्याय कलापने हिमालयसे रासकुमारीतक बड़ाभारी धर्म विप्लव उपस्थित किया था और बौद्धधर्मसे डूबतेहुए भारतकी रक्षा की थी। ३२ वर्षके उम्रमें शंकरस्वामी केदारनाथके शिखरपर स्वस्वरूपको प्राप्त हुये। स्वामीके दक्षिणदेशस्थ शिष्योंने कांचीपुरी कामाक्षीदेवीके मंदिरमें उनकी मूर्ति पधराई जो अबतक विद्यमान है। स्मार्तधर्मके अद्वैतवादी शिव, देवी, गणेश आदि सगुणदेवताओंको एक परमात्माका अंश मानकर अभेदबुद्धिसे पूजते हैं और जीवको ईश्वरसे अलग नहीं मानते।

शृंगीऋषि—शहर पटासे ८ कोस दूर ईशान नदीके तट सेनाग्राममें इनकी तपस्याका स्थान है। इस स्थानपर राजा परीक्षित्की सेना आकर पड़ी थी इसी कारण इसका नाम सेना पड़ा। यहींपर राजा परीक्षित्ने शृङ्गीऋषिके गलेमें सांप डाला था। शृङ्गीऋषिकी पक्की गुफा अबतक एकम झाड़ीके भीतर बनी है और उनके स्पर्शके लिये आसपासके खेत मामकार हैं। इनके पुत्रका नाम सिंहीऋषि था।

श्रीसेन—इन्होंने ज्योतिषके रोमकसिद्धांतका वर्तमानदशामें उद्धारकिया।

श्रीहर्षपंडित—(महाकाव्यनैषधके कर्ता)—डाक्टर बुह्लर साहबने कन्नौज नरेश जयन्ती चंदके एक दानपत्रसे सिद्ध किया है कि पं० श्रीहर्ष वि० सं० १२२५ में विद्यमानथे। प्रसिद्ध है कि इन्होंने पंचम अवस्थामें वाग्देवीके प्रसादसे सम्पूर्ण विद्या प्राप्त की थी। नैषधकाव्यके पढ़नेसे विदित होता है कि, यह दार्शनिक पंडित महाकवि विद्वद्वर असाधारण प्रतिभाशाली थे। जैनकवि राजशेखर स्वरचित प्रबन्धकोशमें लिखते हैं कि "श्रीहीरसुत श्रीहर्षने बनारसमें जन्म लेकर राजा जयन्तीचंदके आदेशसे नैषधकाव्य रचा था। राजा जयन्तीचंदका राज्य कन्नौजसे बनारसतक सर्वत्र देशमें था नैषधकाव्यमें लिखा है कि श्रीहर्षकी माताका नाम मामल्लदेवी था। कन्नौजके राजा जयन्तीचंदकी सभामें पं० श्रीहर्षको आसन तथा दोबीड़ा पान मिला करता था। पं० उदयनाचार्यने पं० श्रीहीरको शास्त्रार्थमें हराया था। पं० श्रीहर्षने स्वरचित "खण्डन खण्डखाद्य" ग्रंथमें उदयनकृत "न्यायकुसुमाञ्जलि" का खण्डनकरके पिताके वैरका बदला लिया। निम्नस्थग्रंथ औरभी इन्हींके बनाये हुये हैं—अर्णववर्णनकाव्य, नवसाहसाङ्कचरित, गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, शिवभक्तिसिद्धि—ईश्वराभिसन्धि, स्वपाशप्रस्ताव, स्थैर्यविचार और विजयप्रशस्ति। गीतगोविन्दके कर्ता जयदेव मिश्रने "प्रसन्नराघव" नाटकमें पं० श्रीहर्षको सरस्वतीका हर्षरूप लिखा है।

श्रीहर्षदेव (कश्मीर नरेश)—राजतरङ्गिणीके लेखानुसार यह अनेक भाषाओंके पंडित होकर सत्कवि तथा सम्पूर्ण विद्याओंकी खानिथे। वेशदेश

न्तरोंमें इसकी प्रतिष्ठा थी। सं० ई० १०९१ तथा ९७ के बीच काश्मीरकी गद्दी को प्राप्त हुये।

श्रीहर्षवर्द्धन (रत्नावली आदि नाटकोंके कर्त्ता)—"हर्ष चरित्र" में पं० बाणभट्ट लिखते हैं कि श्रीहर्षवर्द्धनके दादे पुष्पभूपति और बाप प्रभाकर वर्द्धन थानेश्वर (पंजाब) के राजाथे। श्रीहर्षकी बहिन राजश्री कन्नौज नरेश गृहवर्म्माको विवाही थी। राजा प्रभाकर वर्द्धनके मरनेपर मालवराजने अव सर पाकर गृहवर्म्माको वध किया और राजश्रीको कैद करलिया। यह सुन कर श्रीहर्षके बड़े भाई राज्यवर्द्धनने मालवराजपर चढ़ाई की और परास्त करके उसको वध किया। मालवराजके एक मित्रने डेरेमें घुसकर राज्यवर्द्धनको भी मारडाला। तब श्रीहर्षने थानेश्वर, कन्नौज तथा मालवाका एक

छत्रपात किया। कन्नौजको राजधानी बनाया। बहिन राज्यश्रीकी खोज करी; लेकिन मालूम हुआ कि वह बौद्धमत ग्रहण करके विरक्त होगई। सिंहासनारूढ़ होनेके कुछही दिन पीछे श्रीहर्षने भी बौद्धमत ग्रहण करके शिलादित्य श्रीहर्षवर्द्धन अपना नाम रक्खा। पण्डित मॉण लिखतेहैं कि 'महाराज श्रीहर्ष सर्वशास्त्र पारङ्गतथे और महावैयाकरण तथा सत्कवि होनेके सिवाय ग्रन्थरचनामें भी सिद्धहस्तथे। पाणिनि, व्याडि, शंकर, चन्द्र और वररुचि आदि विद्वानोंके विचारोंकी पर्यालोचना करके, उन्होंने एक बड़ा लिङ्गानुशासन बनायाथा।' वे दिग्विजयी, धार्मिक तथा जितेन्द्रिय राजाथे और राज्यविस्तारके द्वारा उन्होंने अत्यन्त यशो लाभ

किया था"। चीनीपथिक ह्वोईयसङ्ग अपनी यात्राके प्रथमे लिखता है कि, "महाराजा शिलादित्य प्रति ५ वींवर्ष त्रिवेणी तट प्रयागमें एक बडी भारी सभा किया करता था जिसमें दूर २ के राजे महाराजे, पंडित विद्वान, साधु सब बुलाये जाते थे। कितनेही दिनोंतक सबकी दावत होती थी। अन्तमें महाराज शिलादित्य अपना सब धनदौलत लुटा देता था। और अपने वस्त्र आभूषणभी किसी दीन पुरुषको देकर उसके चिथडे आप धारण करलेता था"। स० ई० ६३४ में महाराज शिलादित्यने बौद्धोंकी एक बड़ी सभा की थी जिसमें हजारों श्रमन तथा ब्राह्मण विद्वानोंके सिवाय २१ राजेभी शरीक थे। यह सभा तीन दिनतक रही थी। निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं–

रत्नावली, नागानन्द और प्रियदर्शिका। स० ई० ६५० म ४० वर्ष राज्य करके महाराजा शिलादित्य हर्षवर्द्धन परलोकगामी हुये।

श्रीचंद (सिक्खोंकी उदासी सम्प्रदायके आचार्य)–यह गुरु नान्हकजीके द्वितीय पुत्र थे। इन्होंने सिक्खोंकी उदासी सम्प्रदायका प्रचार किया। इनके मतको माननेवाले हजारों उदासी फकीर अबभी हैं।

श्रीधराचार्य (ज्योतिषी)–यह बङ्गदेशके दक्षिण देशवर्ती भूरशृष्टि नामक ग्राममें आवसेथे। इनके पिताका नाम बलदेवशर्म्मा था और शाके९१३ मे इनका जन्म हुआ था। "ज्योतिषत्रिंशती" तथा वैशेषिक सूत्रोंपर "न्याय कन्दली" नाम तिलक इन्होंके रचे ग्रंथ हैं।

श्रीपति (भाषाकवि)– यह प्रयागपुर जिला बहरायचके रहनेवाले थे। काव्यसरोज, श्रीपतिसरोज तथा काव्यकल्पद्रुम इनके बनाये ग्रंथ विख्यात हैं। यह वि० स० १७०० में विद्यमान थे।

श्रीलालपंडित– यह श्रवणीय ब्राह्मण जयपुर राज्यान्तरगत भाण्डेरके रहनेवाले थे। संस्कृतके पूर्णज्ञाता होकर गणितशास्त्रमें निपुण थे। प्रथम आगराकालिजमें संस्कृत प्रोफेसरके पद्पर नियुक्त हुये थे। स० ई० १८४८ म जब पश्चिमोत्तर देशके मथुरादि ८ जिलोंमे सरकारी स्कूल नियत हुये तो पाठशालाओंके विजीटर जनरलकी आज्ञानुसार निम्नस्थग्रंथ इन्होंने रचे थे।

लालापद्धति, समयप्रबोध, अक्षरदीपिका, गणितप्रकाश (पांचभाग), बीजग णित, भाषाचन्द्रिका ईश्वरता निदर्शन और ज्ञानचालीसी। स० ई० १८५१ म जब आगरेमें नार्मलस्कूल सरकारने खोला तो पं०श्रीलालको उसका हेडमास्टर नियत किया। ५ वर्षबाद पंडितजी जिला चहेरोंके डेपोटी इन्सपेक्टर हुये। स० ई० १८५८ में ग्वालियर कालिजके हेडमास्टरका पद पंडितजीको मिला। स० ई० १८६७ में ज्वरादि रोगसे पीड़ित होकर आगरेको आये और यमुना तटे देह त्यागी।

श्रीधर (भाषाकवि)-- गोरख जिला खीरोंके राजा सुब्बासिंह चौहान ने श्रीधर नामसे पदपूर्ति की है । भाषासाहित्यमें " विद्वन्मोद तरङ्गिणी " इनकी रचीहुई है । यह कवि सुखदासजीके शिष्य होकर वि० सं०१८७४में विद्यमान थे ।

श्रीधरस्वामी (भागवत तथा विष्णुपुराणके टीकाकार)-- यह दक्षिण देशस्थ किसी ब्राह्मण कुलमें जन्मे थे । प्रथम कुछ दिनोंतक व्यापार करते रहे पश्चात काशीको चले आये । इनका रचा भागवतभाष्य काशी नगरी की सभामें ५० भागवत भाष्योंमें जो उस वक्ततक बनचुके थे सर्वोत्तम ठहराया गया था । श्रीधर भाष्यमें कर्म, उपासना तथा ज्ञान इनकी अपना २ स्थान क्रममें प्रधान ठहराये गये हैं, परन्तु अन्यटीकाकारोंने अपने २ मन्तव्यके अनुसार कर्म, भक्ति, ज्ञान, योगादि १ । १ विषयको प्रधान ठहरानेका उद्यम किया है । श्रीधरभाष्यसे प्रसन्न होकर काशीनरेशने १००० अशर्फियें सभाके बीच श्रीधर स्वामीको दीथी जो इन्होंने उसीसमय पंडितों तथा साधुओंको बांट दी । वि० सं० के १४ वे शतकमें इनका समय है । यह रामानुजीय सम्प्रदायके थे और इनके गुरुका नाम परमानन्द था । निम्नस्थ ग्रंथ तथा टीकायें इनके बनाये हैं --

भगवद्गीतापर सुबोधिनीतिलक, भगवद्गीतासार टीका, भागवतपुराण टीका, विष्णुपुराणपर आत्मप्रकाशटीका, वेदस्तुतिटीका, व्रजविहार भावार्थदीपिका, और पदार्थप्रकाशिका पुराणटीका ।

सगर महाराजा - वाल्मीकि रामायण बा० का० में लिखा है कि सूर्यवंशमें राजा असित हुये जिनको हैहय, तालजंघ तथा शशबिन्दु देशके राजाओंने परास्त करके निकाल दिया । राज्यरहित राजा असित अपनी दोनों रानियों सहित हिमवान पर्वतपर जारहे और थोड़ेही दिनोंबाद परलोक सिधारे । दोनों रानियें उस समय गर्भसे थीं, एकने कालिन्दी नामक दूसरीको गर्भ नाश करनेके लिये गरल दिया । भार्गवच्यवन ऋषि उनदिनों हिमवान पर्वत (हिमालयका भाग विशेष) पर तप करते थे, कालिन्दीने जाकर उनको प्रणाम किया, मुनिके आशीर्वादसे गरके सहित कालिन्दीसे पुत्र जना और इसी लिये उसका नाम सगर पड़ा । बड़ा होकर सगरने शक, यवन, कम्बोज, तालजंघ, शूर, पारद विंदु तथा हैहय जातिवालोंको परास्त करके पृथ्वीका एकछत्र राज्य किया । अनेक द्वीपोंमेंभी सगरका राज्य था । शाकद्वीपमें अबतक उनकी पूजा होती है । समुद्रका नाम सागर इन्हींके नामसे पड़ा । सगरका बनवाया सागरताल अभी

सक तहसीलकासगंज जिला एटाके गढ़ीचकेरी नामक ग्राममें मौजूद है। सगर सन्ततिहीनथे एवं हिमवान पर्वतपर जाकर उन्होंने तप किया जिसके प्रभावसे रानीकेशिनीके १ पुत्र और रानी सुमतिके ६० हजार पुत्र हुये। अंतमें सगरने बद्रिकाश्रममें उस स्थानके समीप जिसको अब व्योमप्रयाग कहिते हैं अश्वमेध यज्ञ किया और कुछ काल पीछे निजपौत्र अंशुमानको राजपाटसौंप वनको सिधारे। सोरों जि० एटोंमें कपिलदेव मुनिकी गुफाके साम्हने सगरके ६० हजार पुत्रोंके भस्म होनेकी पुराणोक्त कथानक प्रसिद्धही है। इनका वंशवृक्ष महाराज सूर्य्यके चरित्रमें लिखा गया है सो देखो।

श्रद्धारामपंडित (सनातनधर्मके प्रथम पंजाबी उपदेशक)—

वि० सं० १८९४ की साल जयदयालु ब्राह्मणके घर फिल्लौर जिला जालन्धरमें जन्मे थे। पिता तथा चाचा इनके साधारणरीतिके पुरोहित होकर यजमानीके द्वारा अपना गुजारा करतेथे। पं०श्रद्धारामजी संस्कृत, अर्बी, फार्सी तथा अंग्रेजी के बड़े पंडित होनेके सिवाय चमत्कारी ज्योतिष तथा रमलशास्त्रके विद्वान होकर बड़े प्रतापी हुये। भाषाकविताभी करते थे, संगीतशास्त्रमें निपुण थे और प्रयत्नमार्गमें सिद्धहस्त होकर सत्यामृतप्रवाह, भाग्यवती सिक्खांदे-राजदीविधिया, प्रश्नके प्रजाहित तथा रमलकामधेनु आदि अनेक ग्रंथोंके रचयिता थे। पंजाब तथा युक्त प्रान्तके अनेक नगरोंमें अपने खर्चसे जाकर सनातन धर्मका उपदेश करते थे और यदि कोई चाहता तो श्रीमद्भागवत आदि पुराणोंकी कथा कहाकरते थे जिसको निम्नस्थ विशेषताओंके कारण हजारोंलोग सुनते तथा हजारों रुपये चढाते थे—

पहिले तो यथोचित कालके रागमें साजके साथ सस्वर पाठ करना फिर स्पष्ट भाषामें अर्थ कहना, प्रसंगको श्रुति स्मृति पुराण कुरान इंजील आदिके प्रमाणोंसे विभूषित करते जाना और साथही वेदविरुद्ध मतोंका खण्डन इस रीतिसे करते जाना कि, उनमेंसे सब पर कोई बुरा नमाने।

घरपर हो या बाहर पंडितजीके पास छोटे बड़े सरकारी नौकरों तथा सेठ साहूकार आदि हजारों अमीर गरीबोंकी भीड़ लगी रहती थी। अनेक राजे महाराजे तथा पंजाबके लफटिनेन्ट गवर्नरतक उनके गुणोंकी प्रतिष्ठा करते थे। ऐसे महत्पुरुषको ईर्षालुओंके द्वारा बहुतकुछ सन्ताप भोगना पड़ा था जिसका दिग्दर्शन मात्र यहां लिखते हैं—

अद्भुत विचारोंके पुरुष होकर पंडितजी विनाबुलाये किसीके यहां नहीं जाते थे, पिताके धनी यजमानोंकोभी अपनी अपार विद्याके आगे तुच्छ समझ उन्होंने त्याग दिया था। प्रकृतिके नियमानुसार ऐसी दशामें साधारण माता

पिताके पुत्रका विलक्षण प्रताप देख जन्मभूमिके कितनेही लोग ईर्षालु होगये थे परन्तु कुछ करसक न होकर बात २ में ठट्ठा उड़ाया करते तथा दूर २ तक सर्व साधारणके चित्तमें कुसंस्कार डालकर निरन्तर अपनी गणना बढानेका उद्योग किया करते थे। चढ़ती ज्वानीके दिनोंमें किसी अवसर पर पंडितजीने अपनी माताके एक थपेड़ा मारकर अतिशय पश्चात्ताप किया था। इसीकारण बाहिकाये जानेपर उनकी माता तथा घरकीभी स्त्रियोंके सहज स्वभावके अनुसार अपने पुराने यजमानोंसे, जो पंडितजीके मुख्य ईर्षालु थे, मिलगई थीं जिससे घरका भेद सहजहीमें बाहर होजाया करता था। अनुचित हठ करनेपर पंडित जी ब्रह्मवेतनपर आ जाते थे, इसी दुर्भियादपर ईर्षालुओंने छोटे दर्जेके मनुष्योंको सिखलाकर पंडितजीके बनानेके लिये उद्दित किया जिससे बात २ में व मर्मस्पर्शी शब्द बोलकर तथा विकार सूचक चेष्टा बनाकर पंडितजीका हृदय तपाने लगे। यह बालसमझ पंडितजीने उन "बन्दरके हाथके चिमटों" को यथाशक्ति अपनेसे दूर रखनेका प्रयत्न किया। फिल्लौर तथा लाहौरमें पंडितजीने हरिज्ञान मन्दिर बनवाये थे जिनमें हरसाल २।४ उत्सव धूमधामसे होते और अपने द्वारपर दाल आटेका सदाव्रत जारी किया था। अनेक और देशहितके काम करनेको थे जिनके पूरे होनेमें ईर्षालुओंके उद्योगसे देर हुई और शीघ्रही वि० सं० १९३८ को काल पंडितजीको मृत्युने आघेरा। ईर्षालोग जिसप्रकार पंडितजीको निरंतर सन्तप्त करनेका उद्योग करते थे उसका एक उदाहरण यहां लिखते हैं–

दाल आटेके सदाव्रतके विषयमें ईर्षालु लोग हाटबाटमें देशीविदेशी सबसे विकार सूचक चेष्टा बनाते हुये पापदर्शी शब्दोंमें कहा करते थे कि "अजी उनके यहां तो सदाव्रत खुला है जिसको इच्छा हो ले इनकारतो किसीको हैहीनहीं"। जो करना था वो पंडितजीने सदैव किया और ईर्षालुओंकी बातोंपर किञ्चिन्मात्र ध्यान न करनाही उनको उचित औषधि समझी। कुछ सन्तान नहीं थी यद्यपि अन्तसमय पंडितजीको निज अर्द्धांगी पार्वतीमहताबकुंवरकी शोकाग्निधार केवल एक विद्वान शिष्य प० तुलसीदेवके सहारे छोड़ पड़ी। पंडितजीके लोभियोंने अनाथ विधवाकोभी कलनहीं लेने दी परन्तु उन बर्में उसको कुछ विशेष हानि नहीं पहुंच सकी। धिक्कार! ऐसे लोगोंपांको जो उनमें प्राणरहित सदैवही गाल बजाते रहे लेकिन कुछ कर न सके। अनेक समाचार पत्रों तथा बड़े २ लोगोंने पंडितजीके मृत्युपर एकस्वरसे कहा था कि "प० श्रद्धाराम वास्तवमें देशहितैषी महाविद्वान थे"।

सम्भाजी–महाराज शिवाजीकी पत्नी सईबाईके उदरसे स० ई० १६५७ का बाद राजगढ़में जन्मे। पिताके जीतेजी इन्होंने किसीब्राह्मणीसे बलात्कार

व्याभिचार क्रियाथा जिसके बदलेमें महाराज शिवाजीने इनको कुछ दिनके लिये कैदकरके अपनी न्यायपरिताका परिचय दियाथा। पश्चात इन्होंने निजपिताके विरुद्ध उपद्रव ठाना जिससे महाराज शिवाजीको इतना शोक हुआ कि यह मरही गये। स०ई० १६८० में पिताके सिधारनेपर यह राज्यसिंहासन पर विराजे और ९ वषतक राज्य करते रहे। यह बड़े निर्दई थे, प्रजा इनके शासनसे थकलीउठीथी, शराब बहुत पीतेथे, बड़े स्त्रैणथे और बहुधा अन्तरपुरहीमें रहितेथे। इनका राज्यकाल पुर्तगालियों तथा मुगलोंसे लड़नेमें बीता, स० ई० १६८९ में मुगल सम्राट औरंगजेबने बीबी बच्चों सहित इनको पकड़वा लिया और लोहेकी गरम सलाखसे इन्हें अन्धा करवाके जिह्वा इनकी कटवाडाली क्युंकि मुसलमानोंके पैगम्बर मुहम्मदको इन्होंने कुवाक्य कहेथे बादको औरंगजेबने इनका सिर धड़से जुदा करवा दिया और इनके पुत्र शिवाजी द्वितीय (साहू) को बहुत दिनतक कैदमें रक्खा।

सर्वज्ञमुनि (संक्षेप शारीरक भाष्यके कर्ता)—यह स्वामी शंकराचार्य (स०ई० ७९९-८३१) के शिष्योपशिष्यथे।

सरस्वती—पं०मण्डन मिश्रकी स्त्री लीला अपनी अपार विद्याके कारण सरस्वती कहलातीथी (देखो लीलावती)।

सलीमचिश्ती शेख (करामाती फ्कीर) शेखबहाउद्दीनके घर दिल्लीमें स०ई० १४७८ की साल जन्मे। बड़े होकर इबराहीम चिश्तीके मुरीद हुये और आगरेके समीप फतेपुरसीकरीमें आरहे। इन्होंने २४ दफे मक्का मदीनाकी यात्राकीथी केवल सीकरीके वालापमें पैदा हुय सिपाहोंकी रोटी खातेथे और हिंदोस्तानके मुख्य पहुंचे हुये साधुओंमें इनकी गिनती थी। मुगल सम्राट अकबर इनको बहुत मानताथा। शाहिजादा सलीम (जहांगीर) इन्हींकी आशिषसे पैदा हुआथा। अकबरने सीकरीमें इनकी मढीके स्थानपर ५ लाख रुपये के खर्चसे एक मसजिद बनवादीथी जो अबतक मौजूद है। उक्त मसजिदके बननेसे कुछही महीने बाद स०ई० १५७२ की साल शेखजी परलोक गामी हुये। इनका एक बेटा बंगालमें मारागया, दूसरा इनकी गद्दी परसीकरीमें बैठा और इनके पोते इसलामखांको मुगल सम्राट जहांगीर (सलीम) ने बंगालका सुबेदार बनादिया।

सलीमशाहिज़ादा—देखो जहांगीर।

सहजो बाई (भाषाकवि)—यह प्रसिद्ध महात्मा चरणदासजीकी शिष्या कविता करनेमें निपुणथी। जातिकी दूसरथी और इसके पिताका नाम

हरिप्रसाद था। दिल्लीके परीक्षत पुरेमें रहतेथे। निम्नस्थ ग्रंथ इसके रचे हुये हैं:-

सहजो बाईके शब्द (योग), सोलह तिथ्यानिर्णय और सहज प्रकाश यह ग्रंथ (वि० सं० १८००)।

सहदेव पांडव-चन्द्रवंशीराजा पांडुके कनिष्ट पुत्र, रानी माद्रीके उदर से थे। ज्योतिष तथा वैद्यक खूब पढ़ेथे। "व्याधि सिन्धु विमर्दन" नामक वैद्यक ग्रंथ इनका रचा हुआ लुप्त होगया है। इनकी स्त्रीका नाम विजया जिससे सुहोत्र नामक एक पुत्रथा। इनका विशेष वृत्तांत युधिष्ठिरके सम्बधमें हो चुका है।

साउदी (राबर्ट साउदी- Robert Southey) इस अंग्रेजी कविके बाप ब्रस्टल नगर (इङ्गलैंड) में बसगये और वेस्टमिनिस्टर स्कूल तथा आक्सफोर्ड कालिजमें इसने विद्या पढीथी। १०० से अधिक पुस्तकें पद्य, इतिहास तथा जीवन चरित्रोंकी इसने रचीथीं। सं० ई० १८१३ में इङ्गलैंडके कविराजका पद इसको प्राप्त हुआ और ३०० पौंड वार्षिक वेतन नियत हुआ। सं० ई० १७७४ में जन्म, सं० ई० १८४३ में मृत्यु।

साङ्गाराना (हिंदूपति महाराना संग्राम सिंह चित्तौड़ नरेश)- वि० सं० १५६६ में निज पिता राना रायमलके बाद मेवाड़ राज्यके अधिकारको प्राप्त हुये। दिल्ली, माळवा तथा गुजरातके मुसलमान बादशाह इनके राज्यको चारों तरफसे घेरे हुयेथे परन्तु यह निर्भय होकर राज्य करतेथे और जिधर जाते उधर विजयही पातेथे। १८ दफे इन्होंने दिल्ली तथा माळवाके बादशाहोंको परास्त कियाथा। मारवाड़, अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, रायसेन, काल्पी, चंदेरी, बूंदी, रामपुरा और आबूके राजे आधीन होकर इनको राजस्व देतेथे। यह एक दफे लड़ाईमें माळवाके बादशाह महमूद खिलजीको पकड़ लाये और ६ महीनेतक चित्तौड़के किलेमें कैद रखकर उसको छोड़दिया। दिल्लीके मुगल सम्राट बाबरपर १ लाख सवार लेकर रानाजी चढ़गयेथे और उसके अमीर सर्दारोंपर अपनी ऐसी धाक बिठादीथी कि बाबर स्वयं अपने जीवन चरित्रकी पुस्तकमें लिखता है कि "मारे डरके कोई सर्दार साङ्गारानासे लड़नेकी बाततक मुंहसे नहीं निकालताथा"। सं० ई० १५२७ की साल अन्तिम युद्धमें जो राणा और बाबरमें हुआ, राणा के कई नमकहराम सर्दार बाबरसे मिल गये जिससे रानाकी हार हुई। दूसरेही वर्ष रानाने फिर दलबल सहित बाबरसे लड़नेको कूच किया लेकिन रास्तेहीमें

परलोक गमन किया। बाबर बादशाह अनुमान करते हैं कि १० करोड़ रुपये वार्षिक आयका मुल्क राणा साङ्गाजीके अधिकारमें था। राणा साङ्गाजी बड़े तेजस्वी वीर नरेशथे, उनके समयमें मेवाड़ राज्यको बड़ी रौनक हुईथी। उनके पुत्र राना रतनसेन उत्तराधिकारी हुये।

सादी (फारसीकवि)– इनका पूरानाम शेख मुसले हुद्दीन सादीथा। मुल्क ईरानके शहिर शीराजके रहिने वालेथे। इनके बाप अब्दुल्ला निर्धनी थे निदान इनको बहुत दिनोंतक ऊट हांकनेका पेशा करना पड़ाथा। ४० वर्षकी उमरमें इन्होंने पढ़ना लिखना शुरू किया। शहिर अलेपोके किसी सौदागरकी बेटीसे इनका विवाह हुआ था, कई दफे मक्के मदीनेको पैदल गयेथे, दूर २ देशोंमें भ्रमण कियाथा, और हिंदुस्थानकी सैरकोभी आयेथे। इन्होंने फारसीमें कई पुस्तकें रचीथी जिनमेंसे गुलिस्ताँ, बोस्ताँ, तथा करीमा जगतप्रसिद्ध हैं। इनके वचनमें अद्भुत शक्ति पाई जातीहै।सन्ई०१२९५ में१२० वर्ष के होकर मरे।

सान्दीपन गुरु (कृष्ण बलरामके विद्यागुरु)–यह पंडि जी अनेक शास्त्रोंके ज्ञाता होकर शस्त्रविद्या तथा रणकार्योंमें भी दक्ष थे। उज्जैनके रहिने वालेथे और वहीं एक पाठशालामें पढातेथे। कृष्ण बलरामने भ्रजसे उज्जैन जाकर इनसे विद्या पढ़ीथी। उज्जैनमें अबतक इनकी पाठशाला बनी है और उसमें कृष्ण बलराम तथा सुदामा आदि विद्यार्थीयोंकी मूर्तियें रक्खी हैं।

सायणाचार्य (वेदभाष्यकार)–इनके रचे २९ संस्कृत ग्रंथ हैं। इन्होंने तथा इनके भाई माधवाचार्यने मिलकर ऋग्वेद भाष्य रचाथा (देखो माधवाचार्य)। डाक्टर बुलहर (Doctor Bulher) साहेबके मतानुसार सायनाचार्य सं० ई० १३३१ से १३८३ तक संन्यासी होकर विद्यारण्य स्वामीके नामसे रहेथे। यज्ञतन्त्र सुधानिधि तथा पञ्चदशी इन्होंके रचे ग्रंथहैं।

सालारजंग (नव्वाब सर सालारजंग बहादुर, जी सी यस आई)
यह हैदराबादके निजाम नजीरुद्दौलाके समयमें सं० ई० १८५३ की साल वजीरके पदपर नियत हुये और रियासत हैदराबादको बिगड़नेसे रोकलिया क्योंकि निजाम नजीरुद्दौलाका राज्य प्रबंध खराब था। उन दिनों रियासतपर बहुत ऋण होगयाथा, सालारजंगके सुप्रबन्धसे ऋण थोड़ेही दिनोंमें चुका दिया गया और रियासतकी आमदनी बहुत कुछ बढ़ी। सन् ५७ के गदरके समय निजाम अफजलुद्दौला हैदराबादकी गद्दी पर राज्यकरतेथे लेकिन यह सालारजंगहीके सुप्रबन्धका कारण था

कि दक्षिणमें गदर अधिकतासे नहीं फैलने पाया गदरके बाद सालारजंगने हैदराबाद राज्यमें अनेक कुये तथा ताळाव खुदवाये, सड़कें निकलवाईं,न्यायालय स्थापन किये, पुलिसविभागके प्रबन्धमें सुधार किया और जेलखाना, स्कूल इत्यादिके लिये इमारतें बनवाईं। निजामअफजलुद्दौलाके बाद मीर महिबूब अलीखाँ गद्दीपर बैठे जिनकी बाल्यावस्थामें बृटिश गवर्नमेन्टने कौन्सिल आफ रिजेन्सी नियत की और सालारजंगको उसका प्रधान मुकर्रर किया। बृटिशगवर्नमेन्टने आपको सर तथा जी सी एस आई के खिताबदियेथे। आपकी बारादरी हैदराबादमें देखने लायक बनोंहै और आपके मकानका अहाता साढ़े ग्यारह फीट ऊंचा हिंदोस्थान भरमें अद्वितीय है।

सालिगरामरायबहादुर (राधास्वामीसम्प्रदायकेप्रचारक) रायबहादुरसिंह कायस्थकेघर आगरा मु पीपलमंडीमें १४ मार्च ई. ई १८२९ को जन्मे बाल्यावस्थामें हिन्दी, फारसी तथा अंग्रेजीकी शिक्षापाई। पश्चात् गॅवर्नमेन्टके डॉकविभागमें नौकरी की और बढ़ते २ पश्चिमोत्तर व अवध देशके डाकखानोंके इन्स्पेक्टरजेनरलके पदको प्राप्तहुये। स ई १८८७ में पेन्शनली और ६ दिसंबर स ई १८९८ को परलोक गामीहुये। आपने राधास्वामी लाला शिवदयाल सिंहकी चलाई हुई राधास्वामी संप्रदायका प्रचार बहुत कुछकिया (देखो राधास्वामी)। स ई १८७८ में राधास्वामी मतके माननेवाले केवल १००० थे परन्तु रायसालिगरामके उद्योगके प्रभावसे स ई १८९१ की मनुष्य गणनाके समय इस मतके अनुगामी १७६९१ निकले। आप बड़े अनुभवशील पुरुषथे, राधास्वामी मतके बड़े २ ग्रंथ आपने बनाकर छपवायेथे। आगरा तथा प्रयागमें इसमतकी सभायें नियतहुई हैं। काशीके पं० ब्रह्म शंकर मिश्र एम ये आपके प्रधान शिष्य आजकल वर्तमान हैं।

साहू (मरहठाराजा)--इनका असलीनाम शिवाजी द्वितीय था लेकिन मुगलसम्राट औरंगजेब साहूनामसे इनको पुकारतेथे। जगत प्रसिद्ध मरहठा वीर महाराज शिवाजी इनके दादाथे और सम्भाजी इनके बाप। स० ई० १६८९ में औरंगजेबने सम्भाजीको पकड़वाकर मरवाडाला और साहूको कैदकर लिया। साहूका विवाह एक अमीर मरहठाकी बेटीसे करवा दियागया और कैदमें उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाताथा। औरंगजेबके बाद बहादुर शाहने दिल्लीके तख्तपर बैठकर स ई १७०८ में साहूको कैदसे छोड़ दिया और सरसाबिहलिके आधीन रहिकर महाराष्ट्र देशके शासनका हुक्म दिया। मरहठोंने इसने दिनाबाद अपने राजाको पाकर बड़ी खुशीमनाई, लेकिन बहुतकालतक ऐशआरामकेसाथ कैदमें रहिनेके कारण साहूकी वीरता तथा परिश्रमकरनेकी बान जो मरहठोंके स्वाभाविक गुण हैं जाते रहे थे। साहूने अपने

पूर्वजाकी गद्दीपर सतारामें बैठकर जिला औरंगाबादके परगना सिवारीके पैठलसे अमयनकरली। पेठल सैय्याजीराउ दसहगड्डेमें मारागया और उसकी बिधवाने अपने, बच्चोंको साहूके पैरोंपर डालकर क्षमा मांगी। साहूने उसके बड़े पुत्र रानोंजीके पालन पोषणका वचन दिया और थोड़ेही दिनोंबाद उसको भोंसलाकी पदवी देकर आकलकोटका राज्य जागीरमें दिया। आकलकोटमें रानोजीके वंशज अवतक राज्य करतेहैं। साहू आरामतलब तो होहगयेथे निदान उनसे राज्य प्रबंध ठीक २ नहोसका, प्रजा थोड़ेही दिनोंमें उकला उठी और यदि साहू राजकाज अपने ब्राह्मण मंत्री बालाजी विश्वनाथको सौंपकर स० ई० १७१२ में अलहिदा नहोजावे तो शीघ्रही बड़े २ उपद्रव खड़े होकरमरहठा राज्यको नष्ट भ्रष्टकर देते। राजा साहूसे राज्यकाजका पूराअधिकार पाकर पेश्वाने पूनामें अपनी राजधानी स्थापन की और ऐसी उत्तमतासे काम चलांया कि पेश्वाका पद उनके वंशमें पुश्तैनी होकर७ पीढ़ीतक रहा। साहू तथा उनके उत्तराधिकारी सताराम रहिकर केवल नाममात्रके राजाथे, शासन वास्तवमें पूनामें रहिकर पेश्वा करताथा क्योंकि युद्ध विग्रह इत्यादि सबही राजकाज उसके हुक्मसे होतेथे। स० ई० १७४८ में राजा साहूका देवलोक ६५ सालकी उम्रमें हुआ।

सिकंदर आज़म—देखो अलेग्जेंडर दीग्रेट.

सिकंदर प्रथम सम्राट् रूस (Alexander I Emperor of Russia) निजपिता महाराज पालके वध होनेपर स० ई० १८०१ में रूसके तख्तपर बैठे। यह बड़े प्रजापालक थे। २ हजारसे अधिक स्कूल और २०४ अखाड़े इनके समयमें मुल्क रूसमें प्रजागणके हितार्थ जारी हुयेथे। दासत्वका प्रथा इन्होंने मिटायाथा। स० ई० १७७७ में जन्मे, स० ई० १८२५ में मरे।

सिराजुद्दौला (अन्तिमनवाबबंगाला)—निजदादा अलीवर्दी खांके बाद स० ई० १७५६ में गद्दीपर बैठा। यहा अन्यायी तथा क्रोधी था, थोड़ेही महीनेमें अंग्रेजोंसे बिगाड़ करबैठा और तुच्छ बातोंपर क्रुद्ध होकर कलकत्तेमें अंग्रेजोंकी कोठी जा घेरी और १४६ अंग्रेजोंको पकड़कर कालकोठरीमें ठूंसदिया; जिनमेंसे दूसरे दिन केवल २३ मनुष्य जीते बचे। यह खबर जब अंग्रेजी अफसर क्लायवसाहिबके कानमें पहुंची तो उन्होंने कुछ फौज लेकर मदरासके कूच किया और पहुँचतेही कलकत्तेपर अधिकार करलिया। नवाबने सुलह करली और जोकुछ कम्पनीका नुकसान हुआथा वहभी पूराकरदिया। स० ई० १७५७ में जब यूरूपमें अंग्रेजों और फरासीसोंम युद्ध ठनातो क्लायवने मौका पाकर चन्दन नगर फरासीसोंसे छीन लिया। इसकारण

यहांसे सिराजुद्दौलाके राज्यमें धर्मे हलचल हुई, पर यह फ़रासीसोंका तरफ़ धार होगया। क्लायवने यह देख सिराजुद्दौलापर चढ़ाई की और स० ई० १७५७ में पलासीके मैदानमें उसको परास्तकर्के भगादिया और मीरजाफिरको अपनी तरफ़से नवाब बनाया। कुछही दिनोंबाद मीरजाफिरके बेटेने सिराजुद्दौलाको पकड़वाकर २० वर्षकी उम्रमें मरवाडाला।

सिलादित्यमतापशील—यह विक्रमादित्यहर्ष महाराजा उज्जैनका बेटा निज पिताके बाद माय स० ई० ५५० म गद्दीपर बैठा। स० ई० ५८० के लगभग सिलादित्यके परलोक गमन करनेपर उसका बेटा प्रभाकर वर्धन गद्दीपर बैठा। सिलादित्यम० को शत्रुओंने राज्यरहितकर दियाथा लेकिन कश्मीर नरेश प्रवरसेन२ ने मदद देकर फिर उनको राज्य दिलवाया और महाराजविक्रमादित्यको मिला पूर्वजोंका दिया हुआ ३२ पुतलियोंका सिंहासन कश्मीरका लेगया।

सिलादित्य हर्षवर्द्धन (बौद्ध महाराजा)—देखो श्रीहर्ष वर्द्धन.

सीतामहारानी (जानकीजी)—मिथलादेश (तिरहुत) के राजा जनककी कन्या महासुंदरी तथा गुणवती त्रेतायुगके अन्तम हुई। महाराज रामचंद्रने स्वयम्बरमें शङ्कर धनुषको तोड़ सातामीके साथ विवाह किया। सीताजीकी उम्र विवाहके समय ७ वर्षकी थी और महाराज उससमय १५ वर्षके थे। विहार प्रदेशान्तरगत जनकपुरमें शङ्कर धनुषका आधाहिस्सा अबतक देखनेमें आताहै, दूसरा आधाहिस्सा सीतामढ़ी स्टेशनसे ३ कोस दूरपरहै। सुसरालमें आकर जानकी माईने अपने शुभ आचरणोंद्वारा सास, ससुर इत्यादि कुटुम्बियोंको अत्यंत प्रसन्न किया। पतिसे उनका प्रेम अगाधथा। २७ वेंवर्ष जब महाराज रामचंद्रको वनवास दियागया तो सीतामहारानी उनके साथहीगई। जानकीजीका यह मूलमंत्र परम प्रशंसनीयहै-

चौ०—जहँ लगनाथ नेह अरुनाते। पियाबिनु तियहि तरणिते ताते॥ तनुधनधाम धरणि पुरराजू। पतिविहीन सब शोक समाजू। वनवासके १३ व वर्ष महाराज रामचंद्र बम्बई प्रदेशान्तरगतनासिक शहरसेथोड़ी दूर गोदावरीतट पंचवटी वन मे जो अत्यन्त रम्यहै कुटीबनाकररहेथेयहांसे मा०शु०८को अवसर पाकर रावण लंकेश सीताजीको हरलेगया। रामजीने रावणको ससैन्य तथा सपरिवार नष्ट कर सीताजीको १० दिन १ ध मास अकाम रहिनेसे उपरांत पुनःपाया। तदुपरांत रामजी सीतामहारानी सहित अयोध्याके राजसिंहासन पर विराजे, इसीसाल साता माताको गर्भ रहा जिससे लव तथा कुश दोपुत्रहुये। पश्चात महाराज रामचंद्रने अश्वमेध यज्ञ किया और इसी अवसरपर सीता माताने देह त्यागदी। साधारण दृष्टिसे देखनेपर सीताजीकी जीवनीसे दो उपदेश मिलतेहैं, एक तो यह कि

स्त्रीका अत्यंत प्रेम करनेसे पुरुषको अनेक कष्ट सहन करने पड़तेहैं, दूसरा यह कि पतिव्रता अन्य सखोहितैषियोंकी आज्ञा उल्लंघन करनेसे स्त्रीको घोर आपत्तिमें पड़ना होताहै। यदि महाराज रामचंद्र प्रेमसे विवशहो सीताजीको अपने साथ वनको न लेजाते और यदि सीतामहारानी देवरकी आज्ञा उल्लंघन कर आश्रमसे बाहिर रावणको भिक्षा देने न निकलतीं तो रावण उनको क्युंकर हरलेजाता।

सीताराम बी ए (भाषाकवि)—अयोध्या नगरीमें स० ई० १८५८ की साल लाला सुखदेव प्रशाद श्रीवास्तव कायस्थके घर आपका जन्म हुआ। आप अंग्रेजीमें बी ए पासहैं, संस्कृतके पूर्ण ज्ञाताहैं और भाषाकविता अच्छी करते हैं। कालिदास, भवभूति आदिके रचे हुये बीसियों काव्य तथा नाटकोंका अनुवाद आपने भाषा पद्यमें कियाहै।

कविता आपकी उत्तम है और भाषा शैली पुराने ढंगकी नहीं है। खड़ीबोलीकी कविताका प्रचार करनेवाले कवियोंमें आप प्रधान हैं। बहुत दिनोंतक युक्त प्रान्तमें शिक्षा विभागके असिस्टन्ट इन्सपेक्टर रहिनेकेबाद गवर्नमेन्टने आपको डेपुटी कलेक्टरीके ओहदेपर नियत किया है जिसपर स० ई० १९०३ तकाधिष्ठमान हैं। बताव आपका ऐसा है कि जिससे आधीन कर्मचारियोंकी आप पर पूर्ण भक्ति है।

सुकरात (Socretes)—इस यूनानी हकीमका बाप मूर्ति बनानेका पेशा करताथा। सुकरातने बड़े २ प्रख्याती विद्वानोंसे विद्या पढ़ी और फिर कुछ दिनोंतक फौजमें नौकरी करके कइलड़ाइयोंमें वीरता दिखाई। एक दफे प्रसिद्ध इतिहासकार जेनोफन घायल पड़ाथा सुकरात उसको उठाकर लड़ते भिड़ते रणभूमिसे बाहर निकाल लाये। यह युद्धके समय फौजमें रहतेथे और युद्ध शान्तिहोनेपर पढ़ा लिखा करतेथे। बड़े कुरूपथे और इनकी पत्नि जेन्टिप बड़ी करकशाथी पर यह उस्से कुछभी नहीं कहितेथे। पश्चात् निज जन्म भूमि ऐथेन्समें बसकर सुकरात लड़कोंको पढ़ातेथे, इनके पढ़ानेका तरीका यह था कि प्रश्नोत्तर करते हुये पाठकके मुंहसे प्रत्येक बातको सिद्ध करातेथे। इनका वचन था कि विवेक मनुष्यको बुरेकामोंसे रोकता है इसलिये विवेकसे चलना चाहिये। आवागमनको मानतेथे, किसीको दुःख नहीं देतेथे और सबके सहायक रहतेथे। साफ कहिनेवालेथे और इसी कारण इनके बहुत शत्रु होगयेथे। अनेक शत्रुओंने मिलकर सुकरातको यूनानी लड़कोंके बिगाड़ने तथा मूर्तियोंकी निन्दा करने और मतामत चलानेका दोष

लगाया। राजाने प्रथम इनको १ महीनेके लिये कैद किया और पश्चात विष दिलाकर मरवा डाला। इनके ७ बालकथे, यूनानी हकीमोंमें यह बड़े चतुर गिने जातेहैं, अफलातून तथा जेनोफन इनके शिष्योंने स्वरचित ग्रंथोंमें इनके अनेक उपदेश संग्रह कियेहैं। सुकरातके मरनेके पीछे यूनानी लोग बड़े पछताये और सुकरातके शत्रु बड़े दुःखसे मरे। जन्म ४६९ वर्ष पूर्व स० ई०हुआ और मृत्यु ३९९ वर्ष पूर्व स० ई० हुई।

सुखदेवमिश्र (भाषाकवि)—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण कम्पिल जिला फर्रुखाबादके रहिने वालेथे और बादशाह औरंगजेबके दर्बारमें आते जातेथे। एक दिन बादशाहके दर्बारमें बहुतसे कवीश्वर बैठे हुयेथे और नगरमें किसीके घर उत्सवम गाजे बजरहेथे। बादशाहने कवीश्वरोंसे दरियाफ्त किया कि बीचवमेंसे क्या शब्द निकलता है? और कवियोंने तो अपना मनमाना बताया परंतु सुखदेवजीने यह दोहा पद उत्तर दिया—

दो०—द्वार दमामे बाजत,_ कहत पुकार पुकार।
हरि बिसराये बहुभये, पड़त चामपर मार॥

यह दोहा सुन बादशाहने सुखदेवजीको इनाम दिया और कविराजकी पदवी दी। पश्चात सुखदेवजी दिल्लीके बड़े २ रईसों अमीरोंसे मिलकर प्रतिष्ठाके भागी हुये। दिल्लीसे लौटकर कम्पिलम आये और यहाँसे अमेठीके राजा हिम्मत बहादुरके दर्बारम जाकर आदर पाया "फाजिल अलीप्रकाश" नामक ग्रंथ इन्होंने औरंगजेबके मंत्री फाजिल अलीके नामसे बनायाथा। जिसमन्य ग्रंथ और भी इन्हींके बनाये हुयेहैं—वृत्तविचार पिङ्गल, छंद विचार पिङ्गल और अध्यात्म प्रकाश। वृद्धावस्थामें सुखदेवजी घरबार छोड़ गंगातट रहतेथे, उसी समयका बनाया यह पद है—

पद—जननसौ, पोसनको हितकर मैं देखा विवेक फिरोहौं करोड़ा।
बांध्यो रह्यो ममताकी बरारिन ज्यों बली बैल रहै और थोड़ा।
छोड़के दीनदयालुकी आश अजान सोहै मैं फिरो रंगोड़ा।
एकादिना यह छांड़ि हैं मोहि पछी जियजात अभी मैं छोड़ा।
वि सं १७१८ में विद्यमान थे।

एक दूसरे सुखदेवमिश्र दोलतपुर जि० रायबरेलीके राहनेवाले वि०सं०१८०३ में विद्यमानथे, जिनका बनाया "रसार्णव" नामक ग्रंथ भाषा साहित्यमें अच्छा है। असोथर जि० फतेपुरके राजा भगवंत राय खीचीके दरबारमें इनका आदर होता था।

सुखदेवजी (व्यासजीकेपुत्र)—बाल्यवस्थाहीमें यह वनको चले गयेथे। पश्चात नारद मुनिके उपदेशसे घरको लौट आये और व्यासजीसे

शिक्षा पाई। राजा परीक्षितको भागवत इन्होंने सुनायाथा। व्यासको इनका विवाह हुआ जिससे ४ पुत्र और १ पुत्री हुई। अंतमें संसारसे बन्धनमुक्त होकर शुकदेवजी कैलाश पर्वत पर तप करने चले गये।

सुषेणवैद्य—यह रावण लङ्केशके राजवैद्य थे। रावण सरीसे विद्वान पण्डित तथा कला कौशलादिमें निपुण राजाके यहां राज्य वैद्यका पद पाना किसी साधारण पुरुषका काम नहीं था। लक्ष्मणजीके जब शक्ति बाण लगा था तो सुषेण वैद्यहीने सञ्जीवनी बूटीके प्रयोगसे इनको आराम कियाथा। "आयुर्वेद महोदधि" नामक ग्रंथ सुषेणका कहा हुआ है। उक्त ग्रंथमें पदार्थोंके गुण दोषोंका अच्छा वर्णन है।

सुंदरकवि—यह ग्राम असनी जिला फतेपुरके रहनेवाले भाट वि० सं० १९३० मे विद्यमान थे। "रसप्रबोध" नामक ग्रंथ इनका बनाया अच्छा है। एक सुंदरकवि मेवाड़ देशके रहनेवाले दादू बेहनाके शिष्य मायः वि० सं० १७६१ में विद्यमान थे जिनके रचे सुंदरगीता, सुंदर विलास, हरिबोलचिन्तामणि तथा सुंदर सांख्य नामक ग्रंथ हैं।

सुंदर महा कविराय—यह ग्वालियरके रहनेवाले नागर ब्राह्मणथे। मुगल सम्राट् शाहजहाँने इनको महाकविरायकी पदवी दीथी। "सुंदर शृंगार" नामक ग्रंथ इनका बनाया भाषा साहित्यमें अच्छा है। सिंहासन बत्तीसीका भाषानुवाद तथा ज्ञान समुद्र नामक ग्रंथभी इन्हींके रचे हुये हैं। वि० सं० १६८८ में विद्यमानथे।

सुदामा पांडे (श्रीकृष्णजीके सपाठी)—यह अत्यन्त रङ्क पर बड़े सुशील, कुलीन, सन्तोषी और महात्यागी ब्राह्मण थे। सान्दीपनि गुरुकी पाठशालामें, जो उज्जैनमें थी, इन्होंने श्रीकृष्णजीके साथ२ शिक्षा पाईथी। पश्चात् चटसार स्थापन करके बहुत दिनोंतक लड़के पढ़ायेथे, इनकी बनाई बारहखडी प्रसिद्ध हैं। इनकी स्त्री पतिव्रताथी। दरिद्रसे महादुःख पाय स्त्रीने एकदिन ठेलठालकर इनको श्रीकृष्णजीके पास द्वारिका भेजा। द्वारिका पहुंच महाराजसे इनकी भेंट हुई, महाराज अपने बालापनके मित्रकी दीनदशा देख रोनेलगे—

क० कैसे बेहाल बिवायन सों भये कंटक जाल गड़े पगधोये।
हाय महादुख पायो सखा तुम आये इतने कितै दिन खोये।
देख सुदामाकी दीनदशा करुणा करके करुणानिधि रोये।
पानी परातको हाथ छुओ नहिं नैननके जलसे पगधोये।

पश्चात महाराजने बड़े आदर सत्कारसे इनको अपने पास रक्खा और शुभ रीतिसे विश्वकर्मा आदि निज सेवकोंको आज्ञादी कि सुदामाके लिये जाकर विशाल भवन तैयार करो और अष्ट सिद्धि नव निद्धसे उसको भरदो। महाराजकी आज्ञा तुरंत पालनकी गई कई दिन पीछे जब सुदामा अपने घरको चलने लगे तो महाराजके नेत्रोंमें आँसू उमँड आये और मुहसे कुछ बात न निकली। रास्ते २ सुदामा अपने मनमें सोचते आतेथे कि महाराजने हमको कुछ दिया नहीं। ग्राममें पहुँच अपनी टूटी मँड़ैया तथा दीन ब्राह्मणीको भी न पाया, तो बहुत दुखीहो इधर उधर पूछने लगे। सुनतेही सुदामाकी ब्राह्मणी दौड़ी आई और निजस्वामीके चरणोंमें लिपट गई तथा आदर पूर्वक उनको भीतर लेगई। सुदामा अति विभव देख महा उदास हुये और कहने लगे कि प्रिये! यह माया बड़ी ठगनी है, संसारको इसने ठगाहै सो प्रभुने ये मोंगे मुझेदीं। सुदामा भी गुजरात देशमें सागर तट पोरबंदर (सुदामा पुरी) के रहने वाले थे जहाँपर एक छोटेसे मंदिरमें इनकी और इनकी स्त्रीकी मूर्ति अबतक विराज मानहै।

शुद्धोदन (सूर्यवंशीनरेश)—बौद्ध मतके आचार्य गौतम बुद्ध इनके पुत्रथे। कपिल वस्तु में इनकी राजधानीथी। इनसे पीछे केवल छ पीढ़ी तक और सूर्य वंशका राज्य चला। वि पु के लेखानुसार यह रामचंद्र महाराजसे ४८पीढ़ी पीछे हुये और भागवतके लेखानुसार ५१ पीढ़ी पीछे।

सुधाकर दुबे, प० महामहोपाध्या—आपके पूर्वज सरयूपारी ब्राह्मण ब्रह्मपुर ज़िला गोरखपुरसे बनारसमें आबसेथे। पं० सुधाकरजी संस्कृतके अपूर्व विद्वान होकर बड़े बुद्धिमान तथा गणित शास्त्र पारङ्गत हैं। स० ई० १८८३ में संस्कृतकालिजबनारसमें पुस्तकाध्यक्षके पदपर नियत हुयेथे। आज कल्ह (स० ई० १९०३) में क्वीन्सकालिज बनारसमें गणित तथा ज्योतिष शास्त्रके प्रोफेसर होकर एम ये के छात्रोंको उक्त शास्त्रोंकी शिक्षा देते हैं। स० ई० १८८७ में महामहोपाध्यायकी उपाधि अपार विद्याके पुरस्कारमें बृटिश गवर्मेन्टने आपको प्रदानकी है। आप हिंदी तथा संस्कृतके अनेक पुस्तकोंके रचयिता हैं और अंग्रजी, फार्सी इत्यादि अन्य देशीय भाषाओंके भी अच्छे ज्ञाताहैं। पुराने धर्मके लोगहैं और बनारस की घनी बस्तीमें रहना पसन्द न कर वरुनानदीपार एक गाममें रहते हैं। काशी नरेशकी सभामें आपका सत्कार होताहै। मिलने वालोंके, जिसमें आपको तरफसे पूर्ण बुद्धि प्रसन्न होता है।

सुबन्धु (वासव दत्ताके रचयिता)—यह महा पंडित उज्जैन नरेश विक्रमादित्य प्रतापशीलके दर्बारमें स० ई० की छठी शताब्दीके उत्तरार्धमें

विद्यमान था। ब्राह्मणके घर इसका जन्म हुआ था, काश्मीरमें इसने शिक्षा पाईथी, प० मनोरथ इसका गुरु था और पं० अवङ्ग इसका भाई था। शिला दित्यके दर्बारमें वैदिक मतानुगामी पंडितोंने इसको परास्त किया। पश्चात यह मगध देशको चलागया और नालन्द देशके विद्यालयमें अध्यापक होगया। अन्तमें नैपालमें जाकर परलोक गामी हुआ।

सुवंशशुक्ल (भाषाकवि)—बिगहपुर जि० उन्नावके रहिनेवाले ब्राह्मण थे अमेठी नरेश उमरावसिंह बन्धलगोत्रीके दर्बारमें रहकर इन्होंने अमरकोष, रसतरङ्गिणी, तथा रसमञ्जरीका अनुवाद भाषापद्यमें किया था और बादको ओड़छेके राजा खुमानसिंहके दर्बारमें जाय "विद्वन्मोद तरङ्गिणी" के रचनेमें उनकी सहायता की थी। वि० सं० १८३४ में विद्यमान थे।

सुल्वानसिंह—देखो श्रीधर कवि

सुभद्रा—यह वसुदेवजीकी बेटी होकर श्रीकृष्णजीकी बहिन थी और अर्जुनको बिवाही थी। अभिमन्यु इसके उदरसे जन्मे थे जिनके पुत्र परीक्षित हुए।

सुमन्त्र—यह महाराज दशरथके ८ मन्त्रियोंमेंसे मुख्य थे। दशरथजीके बाद रामचन्द्र महाराजके समयमें भी मंत्रीका पद इन्होंने बहुत दिनोंतक भोगा था। वाल्मीकीय रामायणके लेखानुसार यह बड़े व्यवहार दक्ष विद्या विनय सम्पन्न, अनुचित कार्य करनेमें लज्जावान, नीतिमें निपुण, अकरणीय काम करनेसे दूर, लक्ष्मीवान, महाबुद्धि, अति पराक्रमी, कीर्तिकारी, राजकाजमें सावधान, आज्ञाकारी, तेजस्वी यशस्वी, क्षमाधारी और क्रोध, काम, अर्थके लिये भी झूठ नहीं बोलने वाले थे। इनको सब बातें विदित थीं, बुद्धिबलसे मदेशमें टिकेहुए लोगोंके मनकी बात भी जानते थे, अपना पराया नहीं समझते थे, विश्वासनीय दूतोंके द्वारा खूब निर्णय करके कार्य करते थे सुहृदयतामें परीक्षित, अनुचित कार्यपर पुत्रको भी दण्ड देनेवाले, खजाना इकट्ठा करनेमें निपुण सेनाको वश करनेमें चतुर, शत्रुको भी निरपराध दण्ड नहीं देनेवाले और सत्साहसे रहने वाले थे। और शत्रुओंके दमन करनेमें उत्साह युक्त, पवित्र चित्त प्रजारक्षक, सदाचारी, मनमाना काम नहीं करने वाले तथा अपनेसे अधिक बुद्धिमानोंसे सलाह लेने वाले थे। सुन्दर वस्त्र धारण करने वाले, सुंदर वेष बनाये रहनेवाले, मिलाप तथा बिगाड़ करनेमें चतुर सत्त्व रज तम तीनों गुण समय २ पर धारण करने वाले, राजकाजकी सम्मति को गुप्त रखनेवाले सूक्ष्म विचारमें तत्पर और सदा सबसे प्रियवचन म द मुसकी सहित बोलने वाले थ।

सुमन्त्र (सूर्य्यवंशके अन्तिम नरेश)—यह गौतम बुद्धके पिता राजा शुद्धोदनके छ पीढ़ी पीछे हुये। मंत्री इनको राजरहित करके गद्दीपर बैठा।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (जगत विख्यात वक्ता)—कलकत्तेके प्रसिद्ध डाक्टर बाबूदुर्गाचरण बन्द्योपाध्यायके घर स ई १८४९में आपका जन्म हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालयकी बी ये की परीक्षा उत्तीर्ण करनेके पश्चात् सिविल स. र्विसकी परीक्षा पास करने आप इङ्गलैन्डको पधारेथे। उक्त परीक्षा पास करके बड़ी कोशिशसे आपको सिलहटकी ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेटी मिली क्योंकि आपकी वय ज्यादह होगईथी। इस पदपर आप बहुत दिनों तक नहीं रहे पर ५०रुपये मासिककी पेन्शनपर आप नौकरीके बन्धनसे मुक्त होगये। पश्चात् आपने "बङ्गाली" नामक समाचार पत्र अंग्रेजीमें जारीकिया जो अब दैनिक प्रकाशित होता है। कन्हीं दिनों भ्रमवश एक मिथ्या आन्दोलन हाईकोर्टके जजोंकेविरुद्ध आपके पत्रमें छपा जिसके अपराधमें हाईकोर्टने आपको कैद करदिया। जितने दिनों सुरेन्द्रबाबू जेलमें रहे बंगालियोंने शोक सूचक काले वस्त्र पहिने और चन्दा करके प्रसिद्ध बैरिस्टर बाबू लालमोहन घोषको अपील करने इङ्गलैंड भेजा। कैदसे छूटनेपर चार घोड़ोंकी गाड़ीमें बिठलाकर । लाखों - बंगाली भाइ. यानिके साथ फूल बरसाते हुये उनको मकान पर लाये तबहीसे सुरेन्द्र बाबूने कृतकृत्य होकर स्वदेश हितका बोझा उठाया। आपमें व्याख्यान देनेकी अद्भुत शक्ति है। आप बिना तय्यारहुये ऐन वक्तपर सूचना पाकर बड़े २ गम्भीर व्याख्यान, प्रभावशाली पुरुषोंके समक्ष, देनेको सहज स्वभावसे उठ खड़े होते हैं। व्याख्यान सुनकर विपक्षी विरोधियोंको भी आपका अनुयायी बनना पड़ता है। आप हिन्दुस्थानी कांग्रेसके महा सहायकों तथा मुखियाओंमें से हैं। दो दफे कांग्रेसके प्रेसीडेन्ट भी होचुके हैं और कई दफे कांग्रेसकीतरफसे इङ्गलैन्ड जाकर भारतवासियोंकी दीन दशापर व्याख्यान देकर वहांके बड़े २ लोगोंको बतलाचुके हैं। आप गवर्नमेन्टकी व्यवस्थापक सभाके आनरेबिल मेम्बर हैं। रिपनकालिज कलकत्ताके खोलनेमें भी आपने बहुत कुछ उद्योग किया था। सफल जीवन ऐसे महानुभावोंका।

सुरेंद्रमोहन ठाकुर (राजा, सर सुरेंद्रमोहन ठाकुर)—आप हरि कुमार ठाकुरके पुत्र हैं, महाराजा जतीन्द्रमोहन ठाकुर आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं। राजा सुरेंद्रमोहनने सङ्गीतविद्याके प्रचारके लिये बहुत कुछ यत्न किया है। कितनेही ग्रंथ इस विषयमें रचे हैं और दो म्युजिक स्कूल (गान विद्याके)

अपने खर्चसे सर्वसाधारणके हितार्थ स्थापन किये हैं। कई बाजे भी आपने नये बनाये हैं। संस्कृत, हिंदी, बंगला तथा अंग्रेजीके आप पूर्ण विद्वान हैं और भिन्न२ विषयापर प्रायः १०० पुस्तकोंके रचयिता हैं। मृदंग मंजरी, हारमोनियम सूत्र, भारतनाट्यरहस्य, मुक्तावली नाटक (बंगला) और मालविकाग्नि मित्र नाट कका बंगानुवाद इत्यादि आपहीके विरचित हैं। निज पूर्वजोंके धर्म पर आरूढ रहकर आप बड़े उदारचित्त, दानी तथा देशहितैषी हैं। बृटिश गवर्नमेंटने आपकी कारखाइयों पर प्रसन्न होकर नाइट (Knight) की भाई है तथा राजा बहादुरकी असाधारण उपाधियें आपको प्रदानकी हैं।

फिलेडेलफियाके विश्वविद्यालयने आपको डाक्टर आफ् म्युजिककी उपाधि दीहै जिसको ब्रटिश गवर्नमेन्टने भी स्वीकार कियाहै। नेपाल दर्बारसे आपने सन्मानसहित सङ्गीत-शिल्पविद्यासागर तथा भारत सङ्गीत नैयायकके खिताब प्राप्त कियेहैं।

सङ्गीतशास्त्रमें आज दिन आप सरीखा कोई दूसरा नहीं है और शिल्पशास्त्रमें भी पूर्ण विज्ञता आपको प्राप्तहै। इसी कारण इटेली, आस्ट्रिया, सेक्सनी, वर्टम्बर्ग, बेल्जियम, डेन्मार्क, स्वीडेन, फ्रांस, मांटीनीगरो, हवाइनद्वीप, पुर्तगाल, हालैंड, इरान, स्यामद्वीप, चीन तथा बोलीवियाके राजा महाराजाओंने भी आपको उपाधियें तथा पदक सन्मानार्थ प्रदानकियेहैं। यूरप, अमेरिका, अफरीका, आस्ट्रेलिया तथा एशियाकी अनेक बड़ी२सभाओंके आप प्रधान अथवा सभासद्भीहैं। बंगालके आठ जिलोंमें आपकी बड़ी भारी जिमींदारी है, पलासीकी रणभूमि तथा हिंदुओंका तीर्थ गंगासागर आपहीकी जमींदारीम हैं। आप कलकत्ता आदि देशविद्यालयोंके भी सभासदहैं और कलकत्तेमें आनरेरी मैजिस्ट्रेट, मैजिस्ट्रेट आफ् पुलिस तथा जस्टिस आफ् पीसके पद पाये हुयेहैं। आप स. ई १८४० में जन्मे, आपके ज्येष्ठ पुत्र कुंवर प्रमोदकुमार ठाकुरहैं।

सुरेशचन्द्र विस्वास लफ्टिनेन्ट—एक बंगाली कायस्थके घर स ई १८६१ की साल जिला नदियामें जन्मे। कुछ बड़े होकर घरसे अप्रसन्न होकर निकलगये और ईसाई होकर बर्म्मा तथा मद्रासमें आजीविकाकी तलाशमें घूमते फिरे। कुछदिनों बाद एक जहाजपर नौकरी करके इङ्गलैंडको चले गये और वहां पहुंचकर कपड़ेकी दुकान की। इङ्गलैंडसे जर्मनीको गये और वहां सिहालयमें नौकरीकरली तथा एक जर्मन लेडीसे विवाह करलिया। स ई- १८८५ में जर्मनीसे मैक्सीको (अमेरिका) को पधारे और वहांसे प्रातिष्ठम

आकर, बादशाही फौजमें भरती होगये। स. ई. १८९३ में आपने चारीकी लड़ाईमें, बड़ी वीरताके कामकिये और कप्टेनेन्टके पदपर तरक्कीपाई। जब आप रंगून (बर्मा) में थे तो एक जलते मकानमेंसे एक लड़कीको निकाल आपने निज वीरताका परिचय दियाथा।

आपही एक ऐसे भारतवासी हैं जिन्होंने दूसरी विलायतकी फौजमें ऐसा उच्च पद पाकर यूरूप तथा अमेरिका वासियों पर हुकूमत कीहै। स. ई. १९०१ में विद्यमानहैं।

सुरेश्वराचार्य—देखो मण्डन मिश्र।

सुलेमान (Solomon)—इसराईल जातिके पहिले बादशाह हजरत दाऊद इनके बाप थे। निज पिताके बाद स. ई० से १०१५ वर्ष पूर्व तख्तपर बैठे यह बड़े वीर तथा चतुर थे, इसराईल जातिकी उन्नति इनके समयमें बहुत कुछ हुई। इनकी बनाई कहावतें तथा गीत प्रसिद्ध हैं देव तथा परी इनके वशमें थीं राजधानी इनकी यरुशलममें थी। शाहिर बैतुल मुकद्दस इन्हींके समयमें बनाया गया। स. ई. से १०३३ वर्ष पहिले जन्मे, स. ई. से ९७५ वर्ष पहिले मरे।

सुश्रुत (आयुर्वेदीय सुश्रुत संहिताके रचयिता)—धन्वन्तरि प्रणीत आयुर्वेदके आश्रय पर इन्होंने अपने नामकी संहिता रची जो सब क्रियाओंकी यथोचित प्रकाशक, सब मान्य और प्रामाणिक है। चरक, सुश्रुत तथा वाग्भट्ट ऋषियोंकी बनाई संहितायें वृहत्त्रयी कहिलाती हैं और वैद्यक ग्रंथोंमें सबसे प्राचीन हैं। इस बातके प्रमाण मिलते हैं कि चरक संहिताके पीछे सुश्रुत संहिता बनी। सुश्रुत संहिताके प्रथम टीकाकार जेज्यट उपाध्याय विक्रं की १२ वीं शताब्दीमें हुये। बाबू रमेशचंद्र दत्त सी. यस. ने स्वरचित प्राचीन भारतके इतिहासमें निर्णय किया है कि सुश्रुत स. ई. की छठी शताब्दीमें हुये।

सूत—(उग्रश्रवासूत)—व्यास शिष्य लोमहर्षण इनके बापथे इन्होंने व्यासकृत पुराण संहितामें अपने मनोहर मिलाकर १८ पुराण पृथक् २ रचे (देखो व्यास महर्षि)। यह नैमषारण्यमें रहकर पुराणोंकी कथा बांचा करतेथे। एक दफे बलरामजी नैमषारण्यमें गये, सबऋषि उनको देख उठ खड़े हुये लेकिन सूतजी नहीं उठे निदान बलरामजीने क्रोधमें आकर उनको वहीं वध किया (स्कंद पु. सेतुबंधखण्ड १९ अध्याय)। पद्मपु० सृष्टिखण्ड० १ अध्यायमें लिखाहै कि जब उग्रश्रवासूत निजपिता लोमहर्षणकी आज्ञानुसार नैमिषारण्यमें ऋषियोंके धर्म विषयक संशय मिटाने गये तो ऋषियोंने उनसे पुराणकी कथा पूंछी। सूत यह सुन प्रसन्नहुये और कहने लगे कि " सूतका यही धर्म है कि देवता. ऋषि

और तेजस्वी राजाओंकी उत्पत्ति, यश, वश आदिका वर्णन करे और उन लोगोंकी प्रशंसा करताहै तथा इतिहास पुराण बाँचे क्योंकि वेद पढ़ने पढ़ानेका सूतको अधिकार नहीं है"। मनुस्मृति १० वें अध्यायमें लिखाहै कि क्षत्रियके द्वारा ब्राह्मणीके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्नहो वह सूत जातिका होताहै। नैमिषारण्य में एक मंदिरमें बड़े सिंहासनपर सूतजीकी गद्दी अबतक है।

शूद्रक (मृच्छकटिकनाटकका कर्ता)–यह किसी देशका राजा था। वि सं की पहिली शताब्दीमें हुआ।

सूरदास (भाषाकवि)–यद्यपूनी इतिहासकार लिखताहै कि सूरदास के बाप बाबा रामदास लखनऊसे आकर गऊघाटपर, जो आगरेसे ९ कोस मथुराकी सड़कपरहै,बसे थे। हिंदी, संस्कृत, फारसी तथा सङ्गीतशास्त्र सूरदासने अपने बापसे पढ़े थे।सूरदासके छः और भाई थे जो आगरेकी लड़ाईमें मारेगयेथे। भक्तमालके लेखानुसार यह सूरध्वज अथवा सारस्वत ब्राह्मणथे, परन्तु इनके रचेहुएकूट पदोंकी प्रस्तावनासे ज्ञात होताहै कि यह कवि चंदबर्दाईके वंश में होकर भाटथे। सूरदासजी जन्मांधथे भाषा कविता उत्तम करते थे और सङ्गीत शास्त्रके मरमोंको खूब समझतेथे। बादशाह अकबरने उनकी भरती अपने दर्बारके नवरत्नोंमें कीथी।प्रसिद्ध सङ्गीतज्ञ तानसेनसे इनकी मैत्रीथी (देखोतानसेन) बहुतदिनोंतक शाही दर्बारमें रहिनेके पीछे सूरदास ब्रजको चले आये और महाप्रभु वल्लभाचार्यके शिष्य हो विष्णुपद बना २ कर गातेहुये विचरनेलगे। पदोंका गूढ़ आशय समझ लोग इनके पीछे फिर २ कर लिखनेलगे और इसतरह सवालक्ष पदोंका सूरसागर नामक ग्रंथ बन गया। कविराजगंगने सूरसागरके विषयमें लिखाहै कि–

चौ०–पदन प्रबंध सूरजननागर। बांध्योजनहुसेतु भवसागर।
बिनु प्रयास कलिकाल मँझारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा॥

गो० विट्ठलनाथजीने सूरदासकी गणना ब्रजके अष्टछापम कीथी (देखो विट्ठलनाथ)। यद्यपि सूरजी चक्षुहीनेथे लेकिन उनके ज्ञानचक्षु खुले हुयेथे। एकदफे दर्बार अकबरीमें बैठे हुये सूरजी अपनी आदतके विरुद्ध हँस पड़े बादशाहने हँसनेका कारण पूछा। उत्तरमें सूरजीने कहा कि इसवक्त भातका भड़का उसारते हुये जगन्नाथजीके रसोइयेकी धोती खुलगई जिस्से थोड़ी देरके लिये वह अकथनीय कठिनाईम पड़गया, वह देख मुझे हँसी भागई। यह सुन बादशाहने हुक्म दियाकि पुरी (उड़ीसा) के पर्चेनवीससे दर्यापत किया जाय कि जगन्नाथजीके मंदिरमें इसवक्त क्या हुआ। पर्चेनवीसने ठीक सूरदासजी की कही हुई रसोइयेकी दुर्घटनालिखी। सूरदास कभी हँसते न थे और अब

कभी हँसतेथे तो उसमें कुछ रहस्य होताथा इसीलिये हुक्म था कि उनके हँसनेकी खबर बादशाह अकबरको तुरतकी जायाकरे। कहते हैं कि एक दिन बादशाह अकबरने अपनी किसी दासीके चाबुकमारा, दासी शिर झुकाय, हाथजोड़, चुप खड़ी होरही, सूरदासजी ठीक इसीवक्त अपने मकानपर बैठे हुये खिलखिलाकर हँसपड़े। पर्चेनवीस द्वारा जब यह खबर बादशाह अकबरको हुई तो आग्रह पूर्वक हँसनेका कारण सूरदाससे पूंछाग-या। सूरजीने कहा कि एकदफे श्रीकृष्णचंद्रने रासवादमें अपनी किसीदासी के फूलमाराथा, जिससे उसने ७ दिनतक मान किया था, आज इसीदासीके आपने चाबुक मारा परंतु यह कुछभी मान नकरसकी, यह देख मुझको हँसी आई। अकबरने कहा यह बात कैसे सच्ची जान पड़े। सूरजीने उत्तर दिया कि अपनी सबदासियोंको क्रमशः मेरे सामने होकर निकालिये, जो दासी सामने आतीथी सूरजी उसको सुनाकर कहतेथे कि "सुन्दरी सखी हेरत साहजहाँ" और सो सब सुनती हुई चलीगई लेकिन जब चाबुकसे मारी हुई दासी निकली तो उसने रोकर कहाकि "उद्धव तुमतो यहां गोपाल कहाँ" यह सुनतेही सूरदासको मूर्च्छा आगई और यह दासी पछाड़खाकर गिरी और मरगई। सूरदासके बनाये पद-ज्ञान तथा भक्तिसे भरपूरहैं। स ई १४८३ में जन्मे और स ई १५६३ में गोकुल (मथुरा) में परमधामको सिधारे। रीवाँनरेश महाराज रघुराज सिंहदेव इनकी कविताके विषयमें लिखते हैं-

क० कविकुलकोक कंजपाइके किरनकाव्य,विकसे विनोदित ह्वैनेरे और दूरके।
सासिगो अज्ञान पक मंद भो मयंक मोह, विषय विकार अन्धकार मिटेकूरके।
हरिकी विमुखताई रजनी पराई गई, मूकभये कुकवि उलूक रसमूरके।
छायो तेज पुहुमिमें रघुराज कूरहारि,जग जीव भूरसूर उदय होत सूरके॥

सूरदास मदन मोहन (मदन मोहन सूर)—यह संडीलेके रहने वाले कायस्थ थे तथा अवधमें बादशाह अकबरकी तरफसे पदाधिकारीथे। इन्होंने एक दफे मालगुजारीका १३००० रु० साधु सेवामें लगादिया और आप भयके मारे भागगये और बादशाह अकबरके पास यह पत्र लिखकर भेज दिया-

पद-तीनलाख तेरह हजार सबसाधुन मिलगटके।
सूरदास मदन मोहन आधीरातमें सटके।

अकबरने ढुंढवाकर इनको अजबास करनेके लिये भेजदिया। यह अन्धे नहीं थे, भाषा कविता अच्छी करतेथे, जिन पदोंमें सूरदास मदन मोहनकी छाप है वह इन्हींके बनाये हुयेहैं।

सूर (विल्वमंगलसूर)—यह दक्षिण देशस्थ ब्राह्मण, महाप्रभु वल्लभाचार्यके दीक्षा गुरुथे। यह बड़े पंडित थे। "कृष्णकर्णामृत" तथा "गोविंद माध

थ" आदि संस्कृत ग्रंथ इनके रचे हुयेहैं। भक्तमालमें लिखाहै कि यह चिन्तामणि वेश्यापर आसक्तथे, एक दिन अर्द्धरात्रिके समय गोस्वामी तुलसीदासकीसी दुर्घटनायें झेलकर नदीपार उससे मिलनेको गये लेकिन उससे तिरस्कृतहो वैरागीबन वृन्दावन चले आये। रास्तेमें पुन: किसी सुन्दरीको देख मोहित हुये और आंखोको सब उपाधियोंका कारण समझ सुईयें चुभोकर फोड़लिया। बहुत दिनों वृंदावनमें रहनेके उपरांत इनका देहांत हुआ।

सूर्य्य (सूर्यवंशीनरेशोंके मूल पुरुष)—यह कश्यपजीके पुत्र तथा मरीचिके पौत्रथे। इनके पुत्र वैवस्वत मनुने राज्यस्थापन किया और इनके पौत्र इक्ष्वाकुने शहर अयोध्याको बसाकर अपनी राजधानी बनाया. महाराज राम चन्द्र इनकी ३८वीं पीढ़ीमें हुये। सम्भवत: सूर्य्य सिद्धान्त नामक ज्योतिष ग्रंथ जिसके रचयिताका कुछ पतानहीं लगता इन्होंका बनाया हुआहो। वाल्मीकीय रामायणमें लेखहै कि रामचंद्रके विवाहके समय राजपुरोहित महर्षिवशिष्ठने निम्नस्थ क्रमसे दशरथजीका गोत्रोच्चारण कियाथा –

ब्रह्मा, मरीचि, कश्यप, सूर्य्य, वैवस्वत मनु, इक्ष्वाकु, कुक्षि, विकुक्षि, बाण, अनरण्य, पृथु, त्रिशंकु, धुन्धुमार, युवनाश्व,मान्धाता, सुसन्धि, ध्रुवसन्धि, भरत, असित, सगर, असमंजस, अंशुमान, दिलीप, भागीरथ, ककुत्स्थ, रघु, कल्माषपाद,शङ्खण, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्रग, मरु, प्रशुश्रुक, अम्बरीष,नहुष, ययाति, नाभाग, अज, दशरथ और रामचंद्र।

भागवत तथा वि॰पु॰में दिया हुआ वंशक्रम उपरोक्त वंश क्रमसे अनेक अंशोंमें विरुद्ध है लेकिन सूर्यवंशके विषयमें वाल्मीकीय रामायणके लेख अधिक विश्वासनीयहैं। वि पु के लेखानुसार महाराज रामचंद्रके बाद ५४ राजा-ओंने और भागवतके लेखानुसार ५८ राजाओंने राज्य किया। सुमन्त सूर्य्य वंशका अन्तिम राजा हुआ।

सेनापति (भाषाकवि)इन्होंने संन्यास धारणकरके सब उम्र वृन्दावनमें बिताई। काव्यकल्पद्रुम तथा षट्ऋतुवर्णन इनके रचे ग्रंथ अत्युत्तम हैं वि सं १६८० में विद्यमानथे।

सेनभक्त—यह जातिके नाई थे, गुरूरामानन्दके शिष्य थे रीवाँनरेशके यहाँ नापितकर्म करतेथे जब राजाको इनका महत्व विदित हुआ तो वह इनका शिष्य होगया। इनका एक पन्थ प्रचलित है और इनकी कविता सिक्खोंके ग्रंथ साहबमें संगृहीत है।

सेवाजी (मरहटा राज्यके संस्थापक)–इनके बाप शाहजी भोंसले महाराजाधिराजके संग्राम थे और बीजापुरके नवाबके यहाँ किसी ऊँचे पदपर नौकरथे। स ई १६२७ में जीजीबाइके गर्भसे सिवाजीका जन्म हुआथा, इनके जन्मसे ३ वर्ष पीछे शाहजीने तुकाबाई नामक मरहटिनसे विवाह किया और जीजीबाई तथा सेवाजीको पूनाकी जागीरपर भेजदिया और दादाजी कूरण देव नामक एक कार्यदक्ष तथा स्वामिभक्त वृद्ध ब्राह्मणको इनकी रखवाली तथा जागीरके प्रबन्धके लिये नायकर किया। दादाजीने पूनामें पहुंच एक महिल बनवाया और सेवाजीको युद्ध विद्याकी शिक्षादी। मावल पर्वतवासियोंसे जो बड़े उद्योगी, कामकाजी, साहसी, परिश्रमी तथा लड़ाकू होतेथे, सेवाजीका अत्यंत विश्वास और स्नेहथा।

मावलियोंके लड़कोंके साथ शिकार करते हुये दूर २ घूमकर सेवाजी पहाड़ियों तथा झाड़ियोंकी राहघाटसे खूब परिचित होगयथे। धीरे २ सिवाजीके साथियोंका जमाव बढ़ता गया, जिनकी एक छोटीसी पल्टन बनाकर स ई १६४६ मे मार प्रदेशस्थ तोरनका किला जो एक अगम्य विकटपहाड़परथा उन्होंने जीत लिया और इसीकिलेकी मरम्मत करवाते धुक बहुतसा गड़ा हुआ धनभी पाया। स ई १६४७ में दादाजीने मरते समय निम्नस्थ उपदेशशिवाजीको किये–

शैय्यापरसे उठकर जगदीश्वरका स्मरण किया करना, सुख दुःखमें एक साहि रहना, क्रोध और मोहमें आकर पक्षपात न करना, एक पक्षकी बात सुनकर न्याय न करना, सत्यको कभी न छोड़ना, अपने विभवपर अभिमान न करना, विचार करते समय हठ न करना, खुशामदियोंकी बातोंमें न आना, भोजन तथा वस्त्रमें आडम्बर न करना, यथार्थ वादी पण्डितोंको खातिर करना, नशा न खाना, परस्त्रीगमन न करना, आहार तथा निद्राको यथाशक्ति घटाना, अपना काम दूसरे पर न छोड़ना, मातहितोंको धक दम नौकरीसे न छुड़ाना जहांतक होसके क्षमा करना, नौकरोंके दरजेके भेदसे बर्ताव करना, आपत्तिके समय भी धर्मविरुद्ध आचरण न करना और न शिष्टाचारसे बाहिर होना और विचार पूरा होनेसे पहिले गुप्त रखना।

स ई १६४८ में सेवाजीने रामगढ़का किला बनवाया और बीजापुरसर्कारकी कई गढ़ियें छीनकर तथा २० लाख रु लूटकर अपना अधिकार बढ़ाया। यह देख घुरपुरे नामक जागीरदारकी सहायतासे बीजापुरसर्कारने शाहजीको कैद कर लिया। इस हालतमें शाहजीने निजपुत्र सेवाजीको लिखा कि "घुरपुरेने मेरे साथ विश्वासघात किया है, तुम्हारी सच्चीवीरता इसीमें है

कि इस दुष्टसे तुम अपने पिताका बदलालो"। जबतक शाहजी कैदमें रहे तब तक सेवाजी शान्तिसे रहे परंतु बादको उन्होंने फिर अपनी कार्रवाई शुरूकरदी। लाचार होकर बीजापुर सर्कारने सेनापति अफ़ज़लखाँको सेवाजीके दमनकार्य भेजा। सेवाजीने मीठी २ बातें बनाकर अफ़ज़लखाँसे एकान्तमें मुलाकातकी ठहिराई, जब सेवाजी निकट पहुंचे तो अफ़ज़लखाँने उनकी गर्दनपर तलवार चलाई परंतु वे कपड़ोंके भीतर फौलादी कवच पहिने हुयेथे इसलिये कुछ असर न हुआ और बड़ी फुर्तीके साथ उन्होंने बघनखेसे अफ़ज़लकी आँतें खींचडालीं। दौड़ो २ मचगई पर सेवाजीके चुने हुये सिपाही झाड़ियोंमेंसे निकल अफ़ज़लकी फौजपर टूटपड़े और पलक मारतेमें उसको भगादिया। पश्चात सेवाजीने कोकन प्रदेशका अधिकांश तथा बीजापुर सर्कारके अभेद्यदुर्ग पनेलागढ़को जीतकर अपने अपूर्व कौशल तथा असीमसाहसका परिचय दिया। बीजापुरके नवाब अली आदिलशाहने यह देख स्वयम् सेवाजीके दमन करनेके लिये चढ़ाईकी। लड़ाई दो वर्षतकरही और अन्तिम लाभका भाग सेवाजीकी तरफरहा। इन्हीं दिनों अवसर पाकर सेवाजी अपने पिताके शत्रु घुरपुरेपर चढ़धाये और उसको सपरिवार मारकर नष्टकरदिया। शाहजी यह समाचार पाय निजपुत्रको देखनेके लिये उत्कंठित हो चल पड़े। पिताका आगमन सुन सेवाजी १२ मीलतक अगवानी लेने आगे पैदलगये, पिताके देखते ही पृथ्वीपरसाष्टांग दंडवत् करनेको लेट गये दोनों और प्रेमाश्रु बहिने लगे, कंठगद्गदहोगये, पिताने सपूतको गलेसे लगा लिया, पुत्रने बड़े आगत स्वागतसे पिताको लाकर गद्दीपर बिठलाया और आप उनकी जूती उठाकर खड़ेरहे। कुछ दिनबाद अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक शाहजी अपने स्थानको गये। उस समय सेवाजीके पास १६० मीललम्बा, १०० मीलचौड़ा राज्य था और सेनामें ५०हजार पैदल तथा७हजार सवारथे। कुछ दिनबाद नवाब बीजापुरने अपने रणकुशल हबशी सेनापतिको सेवाजीके दमन करनेके लिये भेजा लेकिन सेवाजीकी चतुराईके आगे उसकी वीरता कुछ काम नहीं करसकी। इन्हीं दिनों औरंगजेब अपने बूढ़े बापको कैद करके तख्तपर बैठा, सेवाजीने देशकालके विचारसे दर्बार बीजापुरसे सुलह करली और मुगलोंके राज्यपर हाथफेरना आरंभकिया। औरंगजेबने दक्षिणके सूबेदार शायस्ताखाँको मुकाबलेके लिये भेजा। शायस्ताखाँने प्रबल दलके साथ पहुंचतेही पूनापर दखलकर लिया और जिसमहलमें सेवाजीकी बाल्यावस्था व्यतीत हुईथी उसमें रहिनेलगा और बड़ी सावधानीके साथ महिल तथा नगरकी रक्षामें सेना नियत करके यह घोषणा प्रचारकी कि आज्ञा बिना कोई हथियारबंद मरहट्टा नगरमें न आवे, सेवाजी एक दिन अंधेरी रातमें आधीरातके समय २५ सिपाहियों सहित एक बरातके साथ नगरमें घुसगये और मकानमें घुसकर शायस्ताखाँके सब साथियोंका काम तमाम

कर सिंहगढ़को लौट आये, केवल सापस्तावों सिकृकीकी राह भागबचा। माव शोतेही मुगलोंकी सेनाने सिंहगढ़पर चढ़ाईकी, सेवाजीने किलेपरसे तोपके गोले बरसाये जिससे अधिकांश मुगलसैनिक मारेगये और बाकी भागबचे स ई १६६६ मे औरंगजेबने धोकेसे सेवाजीको अपने दर्बारमें बुलाकर नजर बन्दकर लिया परंतु यह बड़ी चालाकीसे एकटोकरेमें बैठकर निकलगये और साधूके भेषमें अपनी राजधानीमें जा पहुंचे। स ई १६६८ में सेवाजीने शहिर सूरतको लूटा और अतुल विभव लेकर रायगढ़को लौट आये। इसी साल शाह जीके देहांत होनेसे बंगलोर, अर्नी, तञ्जोर, पोर्टोनोवो जागीरमें पाये। फिर सेवाजीने राजाका खिताब धारण किया, अपने नामका सिक्का ढलवाया, शिवशक जारीकिया, सोनेका तुला बढ़ाया और रायगढ़में नारायणका एक बड़ाभारी मंदिर बनवाया। स.ई. १६७५ में गुजरात तथा करनाटक विजय किये और स.ई. १६७९ मे औरंगजेबके मुकाबलेमें मदावबीजापुरको मदद देकर कृष्णा तथा तुंगभद्राके बीचका मुल्क जिसको रायचूर दोआबा कहतेहैं पाया और दक्षिणमें मैसोरतक सब देश जीतलिया। औरंगजेबको अफगानिस्तानके साथ विग्रहमें लगा देख कोंकन प्रदेश तथा दोनों घाटोंपरभी शिवाजीने अपना पूरा अधिकार जमालिया था। बीजापुर, गोलकंडा, खानदेश इत्यादिके सुल्तानोंने वश, स्त होकर उनको चौथ देना स्वीकार किया था। औरंगजेबने भी बड़ी भारी जागीर तथा राजाका खिताब उनको दिया था। अंत समयतक उन्होंने मुगलोंके ३७ और किले जीते। कहतेहैंकि-

दो०-औरंगा पछिताय मन, करतो जतन अनेक।
  शिवा लेहगो दुर्ग सब, कोजाने निश एक।

स ई १६८० में शिवाजी ज्वरसे पीड़ित होकर परम धामको सिधारे, शत्रुओंको भी यह समाचार पाय दुःख हुआ, औरंगजेबने स्वय कहा कि "यथार्थमें सेवाजी बड़ा वीर था, इसने मेरे मुकाबिलेम एक स्वतंत्र राज्यस्थापन करके अपनी टेके रक्खी, मेरी फौज निरन्तर १९ वर्षतक लड़कर उसका कुछ न करसकी" सवाजीकी विलक्षण राजनीति तथा अलौकिकवीरताने मुसल्मानोंके सबही मान मर्दित कियेथे। "मिल्योरहे अरु ना मिले,सासों कहा बिसाय" की उक्तिके अनुसार सेवाजी नित्य प्रति अपना अधिकार बढ़ातेथे और औरंगजेब कुछ कर सक न होकर उल्टी उनकी खातिरकरताथा। माता पिताके देहांत होनेपर सेवाजी बालकोंकी तरह अधीर होगयेथे, प्रियपत्नी सईबाईके वियोगकाभी दुःख उनको उठाना पड़ाथा, कपूत सम्भाजीनेभी उनको दुःखही दियाथा परंतु वह बड़े वीर पुरुषथे अंत समय तक अपना काम दृढ़ता पूर्वक करते रहे। इनकी सेनाका प्रबन्ध प्रशंसनीयथा, प्रजागणको इनके राज्यमें सुख चैन था, और व-

कभी एक घाट पानी पीतेथे, धर्तीकी उपजमेंसे ३ भाग किसानको और दो भाग सर्कारको जातेथे, बड़े २ पदोंका अधिकारी ब्राह्मणोंहीको बनायाथा, नवरात्रिपर महिषमर्दिनी दुर्गाका पूजन बड़े समारोहसे करतेथे और विजय दशमीके दिन फौजकी हाजरीलेते तथा जहां कहीं चढ़ाई करनी होती उसी दिन करते । भूषण कविने महाराज सेवाजीके वृत्तांतमें शिवराज भूषण ग्रंथ रचकर बहुत कुछ पायाथा (देखो भूषण) । निम्नस्थ कवित्त शिवराज भूषणसे उद्धृत करतेहैं-

क० दक्षिणजीत लियो दलकेबल पश्चिमजीतके चामर राख्यो ।
रूपगुमान हरयो गुजरातको सूरतको रस चूसके चाख्यो ।
पञ्जन पेल म्लेक्षमले भूषण कोई बच्यो ओदीन है भाख्यो ।
सोरगहे शिवराजबली जिन नौरंगमें रंग एक नराख्यो ।

महाराजा सतारांके यहां अबतक सेवाजीके भवानी नामक खड्गकी नित्य प्रति पूजा होतीहै ।

सेल्युकस यह सिकंदर आजमका सेनापतिथा । सिकंदरके मरनेपर बाबुलकी सूबेदारी इसको मिलीथी । अपना राज्य सब तरहसे पुष्टकर लेनेके पीछे स्वाधीन होकर इसने यूनानियोंके १४ शहिर बसाये । ८२ वर्षकी उम्रमे स ई से २८० वर्ष पूर्व वध कियागया ।

सेमुअलजानसन(Samnel Johnson)इसके बाप लिचफील्ड (इङ्गलैंड) के रहनेवालेथे, पुस्तकें बेंचाकरते थे । यह स ई १७२८ मे आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीम पढ़ने लिये भरती हुये लेकिन निर्धनी होनेकेकारण स ई १७३१ में बिना डिगरी प्राप्त किये ही स्कूल छोड़नापड़ा । पिताके देहांत होजाने के पीछे ग्रंथ रचनाकी ओर इन्होंने ध्यान दिया जिससे प्रतिष्ठा और धनके भागी हुये । स ई १७५१ में इनका अंग्रेजी कोष छपा और स ई १७५९ म माताके देहांत हो जानेके पीछे इनकी प्रसिद्ध पुस्तक "रैसलाज" छपी । स ई १७६१ में इङ्गलैंडके बादशाह जार्ज ३ मे ३०० पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी । स ई १७७३ में स्काटलैंडके पश्चिमी द्वीपोंकी यात्रा इन्होंने की और स ई १७७५ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने एल एल डी की उपाधि इनको प्रदानकी । स ई १७७९ में इन्होंने अंग्रेजी कवीश्वरोंके जीवन चरित्रकी पुस्तक लिखना शुरू की लेकिन उसीसाल बहुत दिन बीमाररहिकर ७० वर्षकी उम्रमें शहिर लन्दनमें परलोकगामी हुये और वेस्टमिनिस्टर ऐबीमें दफनाये गये ।

सैयदअली बिलग्रामी,नवाब इमादुल मुल्क-आपके पूर्वज बिलग्राम जिला हरदोईके रहिनेवालेथे । स.ई १८६१म प्रेजीडेन्सी कालिज कलकत्तेसे आपने बी ए.

तथा बी. एल. की परीक्षायें पास कीं। अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुरकी, लैटिन, ग्रीक, फरासीसी, संस्कृत इत्यादि १७ भाषाओंके आप विद्वान हैं। फैजीके बाद कोई दूसरा मुसल्मान आपके समान संस्कृतका ज्ञाता नहीं हुआ। हैदराबाद दक्षिणके नवाब निजामके प्रायवेटसेक्रेटरी आप बहुत दिनोंतक रहे। पश्चात् उक्त राज्यहीमें शिक्षाविभागकेडैरेक्टर तथा अन्यान्य उच्च पदोंपर रहे। आपके पुस्तकालयमें ४२००० रु की पुस्तकें हैं। आप दाढ़ी नहीं रखतेहैं और कपड़े पगड़ी इत्यादि बंगालियोंकेसे पहिनतेहैं। मिलनसार, सहनशील तथा परिश्रमी पुरुषहैं। फरासीसी भाषासे अरबीमें आपने एक बहुत बड़ी पुस्तकका अनुवाद करके उसका नाम "तमद्दुने अरब" रक्खाहै। जियालोजीकल सुसाइटी, रायलस्कूल आफ सायन्स लण्डन, रायल एशियाटिक सुसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लेंड, नार्थ आफ इङ्गलैंड इन्सटीट्यूशन आफ इंजिनियर्स, एशियाटिक सुसाइटी बंगाल व बम्बई, यूनीवर्सिटी कलकत्ता व बम्बई, और बाब सरायकी व्यवस्थापक सभाके आप मेम्बरहैं। "तमद्दुने अरब" में अरब लोगों की अनेक विद्याओं तथा रहिन सहिन, ढंगचाल इत्यादिका वर्णन है।

सय्यद अहिमदखाँ (आनरेबिलडाक्टरसरसैय्यद अहिमदखाँ,के०सी०एस० आई०, एल० एल० डी०)-इनके बाप मुहम्मद नकीखाँ दिल्लीके मुगल सम्राट बहादुरशाहके यहां वजीर थे। सैय्यद अहिमदको प्रथम शिक्षा निजमातासे मिलीथी। २० वर्षकी उम्रमें सैय्यद अहिमद सर्कार अंग्रेजी की चाकरीमें मुहकमा फौजदारीके सरिश्तेदार हुये और तीन वर्षकेभीतरही कमिश्नरीके नायब सरिश्तेदार होकर आगरेको बदल आये। पश्चात बदलेरडिपुटीकलेक्टर तथा सब जज हुये और दिल्ली, रोहतक तथा बिजनौरमें रहे और पेंशन लेनेकेबाद भी गढ़में बस रहे। स ई १८४७ में आपने प्रसिद्ध फारसी पुस्तक "आसारूस्सनादीद" छपवाई जिसका अनुवाद फ्रेंच भाषामेंभी हुआ, रायल एशियाटिक सोसाइटीने इसी पुस्तक रचनेके उपलक्षमें आपको अपना मेम्बर नियत किया। सन् ५७ के गदरमें आपने बृटिश गवर्नमेंटको सहायतादी जिसके बदलेमें उक्त गवर्नमटने आपको तथा आपके ज्येष्ठ पुत्रको जिन्दगी भरके लिये २०० रु मासिक की पेन्शनदी। स ई १८५८ में आपने गदरके वृत्तांतमें एक पुस्तक रची जिसका अंग्रेजी अनुवाद सर आकलैंड कालिनमने किया। पश्चात् "भारतके राज्यभक्त मुसल्मान" नामक पुस्तक आपने बनाई। इन दोनो पुस्तकोंसे बृटिश गवर्नमेंटका शक जो मुसलमानोंकी तरफसे था दूरहोगया। स ई १८६९ में सैय्यद साहब इङ्गलैंडकी यात्राको गये और उसी अवसरपर एडिम्बरोके विद्यालयने आपको एल० एल० डी० की उपाधि दी। आप दो दफे लेजिस लेटिवकौंसिलके मम्बरभी रहेथे। स० ई १८८२ में आप पशुकेरायक

कमीशनके मेम्बर नियत किये गये जिसके अंतम प्रसन्न होकर बृटिश गवर्नर्मेंटने आपको के सी यस आई की उपाधिदी। मुहमडन ऐंग्लो ओरियन्टेल कालिज अलीगढ़ आपहीका स्थापन किया हुआहै। इससूबेके लफ्टिनेन्ट गवनरोंने कितनीही दफे बड़े बड़िया शब्दोंमें आपको प्रशंसाकीथी। आपने मुसल्मानोंकी धर्म पुस्तक कुरानकीभी तफ़्सीर(टीका) कीथी जिसके कारण धर्मको विश्वास मूलक माननेवाले मुसल्मान लोग कृतघ्नी होकर आपके वैरी बनगयेथे। स ई १८१७ में दिल्लीमें जन्मे, स ई १९०० में अलीगढ़में मरे।

सैय्याजीराव ३ (महाराजा सरसैय्याजीराव गैकवाड़, सेनाखासखेल, शमशेरबहादुर, जी सी यस आई बरोडानरेश)—जब स ई १८७५ में महाराजा मल्हार-राव गैकवाड़ बरोदाकी गद्दीसे उतारे गये तो उनके स्वर्गवासी ज्येष्ठ भ्राता खँडेराचकी विधवारानी जमना बाईने बृटिश गवर्नमेंटकी आज्ञासे गायकवाड़के कुटुम्बी काशीरावके पुत्र गोपालरावको खान्देशके एक ग्रामसे बुलाकर गोदलिया और सैय्याजीराव नामसे गद्दीपर बिठलाया। आपकी बाल्यावस्थामें राज्यके दीवान राजा सरटी माधव रावने बड़ी योग्यतासे राज्य प्रबंधकिया और बालक महाराजकी शिक्षाका राजेश्वरी इन्तजाम किया। स ई १८८० में महारानी तञ्जोरकी भतीजीसे आपकी शादी हुई और एकही वर्ष पीछे राज्यका पूरा अधिकार आपको मिल गया। स ई १८८५ मे महारानीजीक १ पुत्री छोड़कर देहांत होगया निदान दूसरी शादी करना पड़ी। स ई १८८७ में महाराजा साहब अस्वस्थ होनेके कारण इङ्गलैंड गये और राजराजेश्वरीमाता विक्टोरियासे मिलकर जी सी यस आई की उपाधि पाई। इसके सिवाय कइदफे और भी आप इङ्गलैंड हो आयेहैं।श्रीमान अंग्रेजीके अच्छे विद्वान हैं और राज्यके सुधारमें लवलीनरहते हैं।राज्यकी प्रजा आपके समयमे सुखचैनसेहै न्याय होताहै शिक्षा विभागका प्रबंध अत्युत्तम हुआ है, पानी के नल, शफाखाने, कालिज और न्यायालय जावजा बनाये गये हैं। महाराज गैकवाड़की सलामी तोपके २१ फैरोंकी है;राज्यका विस्तार ८५७०वर्ग मीलहै; वार्षिक आय१करोड़५३लाख रु की है; फौजमें३५६२ सवार, ४९८८ पैदल और ३८ तोपैंहैं। आपके वक्तमें बरोदा राज्यकी पैदावार हुईहै,मजापरसे अनेक दुखदाईकर उठाये गयेहैं,जावता दीवानी व फौजदारी रियासतके लिये रचा गया है, पुलिस तथा सेनाकी हालतमें अत्यन्त सुधार हुआ है,सहस्रा पाठशालाय जारी हुई हैं,शिल्प विद्याका एककालिज बरोदा राजधानीमें खोलागयाहै, नीच वर्णके लोगोंकी शिक्षाकाभी प्रबन्ध हुआहै,

खड्गीत तथा कृषी विद्याकी शिक्षाके लियेभी स्कूल जारी हुये हैं, पुत्री तथा स्त्री पाठशालायेंभी स्थापन की गईहैं जिनमें पढने लिखनेके सिवाय सीना, पिरोना तथा भोजनबनानाभी सिखाया जाता है । राजधानी बरोदामें श्रीमानने २७ लाख रु० के सर्चसे लक्ष्मीविलास नामक एक उत्तम भवन बनवायाहै । वाइसराय लार्ड डफरनका कथनहै कि "तैय्याजीसे अधिक प्रजापालक नरेश कोई दूसरा नहीं होसकताहै" राजधानी बरोदामें "नजरबाग महिल" देखने योग्यहै, वहांपर महाराजा गैकवाड़की ३० लाख पौंड कीमतकी जवाहिरात रक्खी हुई है जिसमेंसे १ हारमें एकहीरा कोहनूरसेभी बड़ालगाहै । हैदराबादके सिवाय अन्य सब राज्योंसे बरोदा राज्यकी आमदनी अधिकहै । वृटिश गवर्नमेन्टके लिये कर नहीं देना पड़ताहै । गवर्नर बम्बईके आधीन न होकर यह रियासत वायसराय हिंदके आधीनहै ।

सोमदेवभट्ट (कथा सरितसागरके रचयिता)—यह कश्मीर के रहनेवाले ब्राह्मणथे । जब स ई ११२५ में कश्मीरकी रानी सूर्य्यवतीका पुत्र मरगया तो सोमदेवने शोकग्रसितरानीका चित्त बहिलानेके लिये "कथा सरित सागर" नामक ग्रंथ १८ पर्व अथवा१२४अध्यायमें रचा । इस ग्रंथमें प्राचीन कथानकोंका समूह संक्षेपसे वर्णितहै ।

सोलन(Solon)यूनानके सात चतुर पुरुषोंमें इनकी गणनाहै। यह अफ लातूनहकीमके मानाथे इनके पूर्वजोंने किसी समयमें यूनानकी बादशाही कीथी देश विदेश इन्होंने बहुत भ्रमण कियाथा । एकदफे जब यह देशाटनसे स्वदेश को लौटे तो इन्होंने यूनानियोंको आपसके झगड़ेमें तत्पर पाया निदान खूब सोच विचारकर इन्होंने उनके लिये एक धर्मशास्त्र बना दिया जिसपर चलनेसे परस्पर के झगड़े मिटगये । यूनानमें अन्याई राजाका राज्यथा इन्होंने उसकोभी बहुत कुछ समझाया और कहाकि अधिक अन्याय करना बुराहै । यूनानियोंने प्रसन्न होकर धर्म शास्त्रीकी उपाधि सोलनको दीथी । स ई से५५९ वर्ष पूर्व ७९ वर्ष की उम्रमें मरे ।

सग्रामसिंहराना—इनका नाम सांगाराना प्रसिद्धहै सो देखो।

सयुक्तासती— देखो संयोगता

संयोगता (रायपिथौराकी सतीरानी)—यह कन्नौजके महाराजा जयचंदकी बेटी अत्यंत रूपवती तथा गुणवतीथी । पृथ्वीराज और जयचंदमें बहुत दिनोंसे द्वेष चला आता था, जब पृथ्वीराजने अश्वमेध यज्ञकिया तो

जयचंदने राजसूय यज्ञकी तय्यारीकी। इस यज्ञमें भारतके सब राजे महाराजे आये लेकिन दिल्लीनरेश पृथ्वीराज और उनके बहिनोई चित्तौड़के रामासमर्सी नहीं आये। जयचंदने और राजाओंकी नजरमें तुच्छकरनेके लिये इन दोनों की सुवर्ण मूर्तियें बनवाकर एकको ड्योढ़ीपर और दूसरीको बर्तन मांजनेकी जगह पर खड़ाकरवा दिया। यज्ञके अंतम जयचंदने राजकुमारी संयोगताका स्वयं-वर रचदिया, जब संयोगता जयमाला लेकर निकली तो उसने चारों तरफ़ देख भालकर पृथ्वीराजकी सुवर्ण मूर्तिमें माला डालदी। जयचंद यह देख खड्ग लेकर कन्याकी गरदन काटनेको उपस्थित होगया। पृथ्वीराज पहिलेहीसे चुनी हुई फौजके साथ कन्नौजमें आछिपाया, खबर पातेही सभामें घुस पड़ा जयचंदके हाथमेंसे खड्ग छीन लिया, किसीको उसका सामना करनेका झावनहीं पड़ा और सबोंके देखते हुये वह अपनी प्राणवल्लभाको घोड़ेपर लादकर दिल्ली की ओर चल पड़ा। रास्तेमें ५ दिन बराबर जयचंद और पृथ्वीराज की फौजों में घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों तरफ़के बड़े २ सुभट शूरवीर काम आये लेकिन दम्पति कुशलसे दिल्ली पहुंचगये। जबसे पृथ्वीराज संयोगतासहित दिल्ली आया उसे राजकाजकी खबर नरही और अहर्निश रङ्ग महिलमें बिताने लगा। जयचंद इस अपमानको बिलकुल नहीं सहिसकाथा निदान सहायता देनेके वायदेपर उसने शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीको काबुलसे पृथ्वीराजपर चढ़ाई करनेके लिये बुलाया। संयोगताको लाये एक वर्षही बीतने पायाथा कि राजदूतोंने शहाबुद्दीनके सवेन चढ़ि आनेकी खबरदी यह सुन महारानी संयो-गता बोली "प्रिये उठिये, क्षत्री धर्म निबाहिये, यदि प्राण प्यारे आप रणशाई हुये तो मैं आपके साथसती हो स्वर्गपहुंचूंगी"। तुरंत पृथ्वीराजने अपनीसेना सुधारना शुरू किया लेकिन अफसोसकि बड़े २ सब सेनापति कन्नौजके युद्धम एक वर्ष पहिलेही काम आचुकेथे। रणपर चढ़ते समय क्षत्रीकुलकी मर्यादानुसार पृथ्वी राज माता, भगनी तथा रानियोंसे विदा होनेगया। जब रानी संयोगताके महि लमें पहुंचा तो दोनोंको बोलनेकी सामर्थ्य न रही, सेनाके डंके बजरहे थे अतएव राजा अपनी प्यारी रानीके हाथसे स्वर्णके कटोरेम पानी पीकर तुरन्त चल दिया रानी सतीपी उसे व्यापगया कि डंकोंका शब्द पुकार पुकार कुछ औरही कहिर-हाहै। पश्चात प्राचीन प्रथाके अनुसार जब रानी सेना लेकर अपने पतिके पीछे रणभूमिको चलने लगी तो उसने ठंडी सांस भरकर कहा "योगनीपुर आज मैं तुमसे विदा होतीहूं, अपने प्रियतमसे स्वर्गमें मिलूंगी अब उनका दर्शन यहां दुर्लभहै"। अंतमें मुसल्मानोंकी विजय हुई, पृथ्वीराज रणशाई हुये। सुनतेही

महारानी संयोगता सतीहोनेको तय्यार होगई,शहाबुद्दीनने सतीका यौवन,रूप, अवस्था तथा साहस देख बहुत समझाया पर सतीने ऐसे जवाब दिये कि शहाबुद्दीनकी आंखें खुलगईं।अंतमें पृथ्वीराजका शिर उसको देदिया गया और वहजलकर राख होगई । पृथ्वीराजके रणभूमिको जानेके समयसे सतीहोनेके वक्त तक महारानी संयोगता सवनाही जल पीकर रहीथी जो महाराज पृथ्वीराज जल्दीमें चलते वक्त पीनेसे स्वर्णके कटोरेमें छोड़ गयेथे। कविचंदने पृथ्वीराजरासौके संयोगता खण्डमें इस सतीका सविस्तर वृत्तांत लिखाहै । पुरानीदिल्लीमें रङ्गमहिलके खण्डहर अवतक इस सती रानीका स्मरण पथिकोंको करावहैं ।

स्काट (सरवाल्टरस्कॉट–Sir Walter Scott)–स ई १७७१ में जन्मे, इनके बाप स्काटलैंडके शाही दफतरमें क्लार्क (लेखक)थे। इन के माता पिता स्काटलैंडके उन सीमावर्ती प्राचीन वंशोंमेंथे जिनकी वीरताका साक्षी इतिहासहै। इन्हीं वंशोंकी वीरताका वर्णन स्वरचित ग्रंथोंमें करके स्काटने अपने पूर्वजोंका नाम चिरंजीव कियाहै । शुरूमें स्काटका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहताथा एवं जल वायुबदलनेके लिये वह अपने दादाके ग्राममें, जो केलसोके निकट था गयेथे, इस स्थानके समीप अनेक लड़ाई झगड़े इनके पूर्वजोंसे पहिले समयमें होचुकेथे अतएव वहां इन्होंने अनेक खण्डहर तथा स्थान ऐसे देखे जिन के सम्बधमें अनेक वीरताकी कहानियें प्रसिद्धथीं। इन्हीं वीरताके किस्सोंका समावेश पश्चात स्काट साहबने स्वरचित गद्य पद्य ग्रंथोंमें बड़ी तारीफके साथ किया । इन्होंने स्काटलैंडके देश विद्यालयमें शिक्षा पाईथी, पश्चात स्काटलैंड की अदालतोंमें कुछ दिनोंतक वकालतकीथी । एक लड़कीसे इनको प्रेमथा लेकिन उससे विवाह न होसका था । स ई १७९७ में एक फरासीसी लड़की मिस कारपंटरसे इनका विवाह हुआ और स ई १७९९ म सेलकर्क शायरके शेरिफका पद इनको मिला । उसी सालसे इन्होंने कविता करना शुरू किया। स ई १७९९ तथा १८१४ के बीच इनके रचे अनेक काव्य छपे जो वीररससे परिपूर्ण हैं । स ई १८१४ में इन्होंने उपन्यासोंके लिखनेकी तरफ ध्यान दिया और कितनेही उपन्यास अत्योत्तम लिखकर देशभरमें प्रसिद्धि पाई । स ई १८२६ में बैलेन्टायनका छापाखाना जिसमें इनकी साझेदारीथी टूटगया जिसके कारण १ लाख २० हजार पौंड इनपर ऋण होगया । दिवालिया बनना इन्होंने स्वीकार न किया एवं रातदिन ग्रंथ रचनामें मेहनत करके बहुतसा ऋण निपटाया परंतु घोरपरिश्रम करनेसे इनकी स्मरणशक्ति घटगई और यह ऐसे निर्बल होगये कि स्वास्थ्य सम्हालनेके लिये इटेली तथा भूमध्य सागरम इनको जाना पड़ा ।

इस यात्रासे कुछ लाभ न हुआ निदान स्वदेशको लौटे और कुछ दिनतक बेहो शपड़े रहनेके बाद सिधारगये। यह बड़े उदार चित्त और सन्मानीये, कोईभी इनका शत्रुनथा, उम्रभरमें किसीसे नाराजी नहीं हुई थी। लोग इनसे मिलकर प्रसन्न होते थे क्योंकि इनकी बातचीत सादा,नम्र,दिलहुभाने वाली और प्राचीन कथानकोंसे परिपूर्ण होतीथी।

स्टीफेन्सन (जार्जस्टीफेन्सन– George Stephenson) यह एक प्रसिद्ध अंग्रेजी आविष्कार हुयेहैं, इन्होंने चलनेवाली रेलगाड़ीकी सम्भावनासिद्ध करनेके लिये लोकोमोटिव एञ्जिन (धुयेकीकल) बनाई थी और स ई १८१४ में उसी कलसे रेलगाड़िये चलाकर दिखलायाथा यह इन्हींके परिश्रमका परिणामहै कि आजकल रेलगाड़ियें भक २ करती सैकड़ों कोस घंटोंमें चली जातीहैं। स्टीफेन्सनके बाप कोयलेकी खानमें नौकरथे। १० वर्षकी उम्रमें स्टीफे न्सनका विवाह हुआ था और स इ १८१२ मे १०० पौंड वार्षिक वेतनपर को- यलेकी खानमें इञ्जिनियरका पद इनको मिला थाइसी खानकेलिय स ई १८१४में इन्होंने एक धुयेंकी कल बनाइथी जो ८ गाडियोंको ४ मील प्रति घंटेके हिसाब से लेजासक्तीथी। इसी कलको स्टीफेन्सन साहबने और सुधारा जिससे वह फी घंटे १५ मीलजानेलगी। इनके जीतेजी कई एक रेलकी सड़कभी इङ्गलैण्डमें तैयार होगई थीं और यह उनके चीफ इञ्जिनियर नियत किये गयेथे। स ई १७८१ में इङ्गलैंडमे जन्मे, स ई १८४८ मे मरे।

स्वर्णमई(कासिमबाजारकी महारानी स्वर्णमई, सी० आई० ई०) जिलावर्दवानके भटाकोल नामक ग्राममें स ई १८२७ की साल जन्मी और ११ वर्षकी उम्रमें कासिमबाजारके राजा कृष्णनाथ रायको व्याही गई। कृष्ण नाथ रायके परदादेदीवान कृष्ण कान्तनन्दीने वारेनहेस्टिङ्गज साहबके प्रान एककठिनस्थलपर बचायेथे एवं जब वारेन हेस्टिङ्गज गवर्नरजेनरल हुये तो उन्होंने बाबू कृष्णकान्तको अपना दीवानबनाया, जिससे कृष्णकान्तके धन और सामर्थकी कुछ सीमानरही और बड़ी भारी जिमींदारी खरीद करसकोयही अतुल विभव विरःसतमें स इ १८३२ की साल राजा कृष्णनाथरायको मिली। स ई १८४४ में राजा कृष्णनाथराय आत्मघातकरके निर्वंश मरगये और वसी यत लिखगये कि मेरी स्त्री कुछ न पावे और सब जायदाद ईस्टइन्डियाकम्पनी लेलेवे। राजाके मरतेही ईस्टइन्डिया कम्पनीने राज्यपर अपना अधिकार करलिया निदान महारानी स्वर्णमईने कलकत्तेके सुप्रीम कोर्टमें कम्पेनीपर नालिशकी और यह बात प्रमाण करादी कि वसीयत नामा लिखते समय राजा बेहोशथा।

स ई १८५७ म महारानीकी डिकरी हुई और सब जायदाद मुर्शिदाबाद, राजशाही, पबना, दीनाजपुर, माल्दा, रंगपुर, बोगड़ा, फरीदपुर, जैसोर, नदिया, बर्दवान, हबड़ा, चौबीस परगना, गाजीपुर तथा आजमगढ़के जिलोंमें है उसको मिलगई । महारानीने जायदाद पाकर रायराजीवलोचनराय एक सुयोग्य पुरुषको अपना दीवान नियत किया और सब ऋण जो जायदादपर पहिले अप्रबंधोंके कारण होगयाथा अल्प कालहीमें चुका दिया । महारानी जबतक जीतीरही प्रतिवर्ष १ लाख रुपया पुण्यार्थ खर्च करती रही, बंगालमें कोई ऐसा घर न होगा जो महारानीकी दानव्यसनताकी प्रशंसा न करता हो, अकाल पीडितोंकी महारानीने सदैव लाखों रुपयेसे सहायताकी, सैकड़ों स्कूलों तथा शफाखानोंको लाखों रुपये चन्देमें दिये । महारानीके दीवानने राज्यप्रबंध बड़ी नीति, बुद्धिमानी, सच्चाई और धर्मके साथ किया और पहिलेकी अपेक्षा आमदनी बहुत बढ़ाई, यह सब आमदनी राज्यके सुधारमें, आसामियोंका सुख चैन बढ़ाने, दीनदुखियोंका क्लेश दूर करने, पुल तथा सड़क बनवाने और उचितरीतिसे पुण्य करनेमें लगाई गई । महारानीके पुण्यके काम पर्देमें रहिकर इतने लाभदायक और लोकहितकारी नहोते यदि दीवान सरयाचित्त से उसका सहायक न होता । वृटिश गवर्नमेंटने स ई १८७२ में स्वर्णमईको महारानीकी उपाधि देकर यथार्थ धर्म नीति और दयाकी प्रतिष्ठाकीथी । स ई १८७८ मे राजराजेश्वरी विक्टोरियाने भी महारानीके परमोदारताके कामोंपर रीझकर उसको सी० आइ० ई० अर्थात् भारतकी मुकुटमणिकी उपाधि दी थी । वर्तमान कालमें महारानी स्वर्णमईके समान कोई दूसरि स्त्री नहीं हुई जिसने निजधनको नियमितरीतिसे सर्व साधारणके उपकारमें लगाया हो । दीनोंका दुखदूर करना, विधवाओंके आंसू पोंछना, भूखोंको भोजन, नंगोंको वस्त्र, रोगियोंको औषधि, यात्रियों तथा पथिकोंको शरण और विद्यार्थियों तथा ग्रंथकारोंको सहायता देना इसदयावंतीके नित्य कर्तव्य । इसके कोई सन्ताननथी परन्तु यह मनुष्य जाति मात्रको अपना कुटुम्ब मानतीथी । स ई १८९५ में वैकुंठवासी हुई और राज्य अपनी बहिनके बेटेको सौंपगई ।

हकीकतराय (खालसापन्थके बलिदान)–इनके बाप बागमल खत्री स्यालकोटके हाकिमके पास कारकुनथे विवाह इनका बचपनहीमें पंजाबके किसी प्रतिष्ठित सिंह वंशमें होगयाथा । किसी मुल्लाके मकतबमें जो शहिर स्यालकोटकी एक मसजिदमें था यह फारसी पढ़नेको जायाकरतेथे । एक दिन वादानुवादमें अपने सपाठी मुसलमान लड़कोंके मुंहसे हिन्दुओंके देवताओंके लिये गाली सुनकर हकीकतके मुंहसे मुसल्मानी मतकी कुछ निन्दा निकलगई ।

मुसल्मान लड़कोंने बातका वितण्डा करदिया, मुल्लाजीनेभी सुनतेही काजी-जीको इत्तलाकी, काजीजीने तुरंत हुक्म देदिया कि काफरको सूली देदो। लाचार होकर हकीकतके बापने लाहौर जाकर हाकिम आलाके पास अपीलकी लेकिन उसनेभी काजीजीका हुक्म बहालरखा। हकीकतकी उम्र उसवक्त १७।१८ वर्षकी थी, गलेसे १६ वर्षकी कामिनी बंधीहुईथी निदान माता पिताने अश्रु धारा बहा २ कर बेटेको बहुत कुछ समझाया और कहाकि " बेटा मुसलमानों का राज्य है कुछ वश नहीं चल सकताहै, तुमहीं हमारे बुढ़ापेकी टेकहो, तुम्हारे बिना हम अन्धे होकर बूंद २ भर पानीको तड़फ २ कर मरेंगे, इस बहूके देखते औरभी कलेजा टूक होताहै क्योंकि इसका तुम्हारे सिवाय कोई सहारा नहीं है, बेटा विचारकर देखो और लाचारीका मुकाम समझ मुसल्मानही होकर प्राण बचालो"। पाषाणका हृदयभी माता पिताका विलाप कलाप सुनकर बे-धित होजाता लेकिन वीर हकीकतरायने धर्मकी अपेक्षा प्राणको तुच्छ समझ मुसल्मान होना स्वीकार न किया निदान गलेस हाकिमके हुक्मसे लाहौरमें वसन्त पंचमीके दिन लड़कोंकी बातोंमें निरपराध हकीकतरायका लोहूबहाकर बागमलका वंश नष्टकर दियागया। लाहौरमें हकीकतरायकी समाधि बनीहै जिसपर प्रति वर्ष वसन्तके दिन बड़ा भारी मेलाहोताहै। किसी कवीश्वरने सत्य ही कहाहै कि–

दो०–धन दे दारा राखिये, दारादे तनराख।
धन दारा तन सबे दे, एक धर्मके काज॥

स ई १७३४ में जन्मे, स ई १७५२ में धर्मके लिये जान देदी।

हमीरसिंहदेव (राना उदयपुर)–यह राना अभयसिंहके भती-जेथे, स ई १३०१ में उदयपुरकी गद्दीपर बैठे और स ई १३१३ में दिल्लीके बादशाहको परास्तकरके चित्तौड़ गढ़ इत्यादि निज पूर्वजोंका सब राज्य, जो दिल्लीके खिलजी सम्राट अलाउद्दीनने राना लखमसी (लक्ष्मण सिंह) के वक्तमें छीन लिया था, पुन विजय करलिया। इनके समयमें मेवाड़ राज्य की कीर्ति पुन स्थापन हुई, यह बड़े प्रजापालक थे।

हमीर देव चौहान (रणथम्भोरनरेश)–यह ब्यावर (अजमेर) नरेश महाराजा वीसलदेवके वंशमें बड़े वीर तथा दृढ प्रतिज्ञनरेश हुयेहैं। अन्तिमें दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान इनसे कई पीढ़ी पीछे होकर दिल्ली–अज-मेरके राज्यको प्राप्त हुये। कवि सारङ्ग धरने हमीर देवके नामसे "हमीररासा" तथा "हमीरकाव्य" नामक ग्रंथ रचकर बहुत कुछ इनाम पायाथा। सारङ्ग

धर कार्तिकके दादा रघुनाथ इनके गुरुथे। कहतेहैं कि मीर मुहम्मद मुगल नाम क सर्दारसे दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनकी एक बेगमकी आँखलडगईथी जब यह खबर अलाउद्दीनको हुई तो वह अपनी जान लेकर भागा और कई राजाओंके दर्बारम गया लेकिन किसीने उसको शरण न दी। अन्तमें वह हमीर देवके दर्बारमें रणथम्भोर पहुंचा। हमीरदेवने हाल सुनकर सहायताका वचन दिया। खबर पातेही अलाउद्दीनने हमीरदेवसे अपना अपराधी मांगा लेकिन राजाको शर्णागतका परित्याग करना स्वीकार नहीं हुआ निदान अला उद्दीनने रणथम्भोरपर चढाई कीनतीजेके विषयमें मुसल्मान इतिहासकारों तथा हिन्दू कवीश्वरोंके लेख एक दूसरेसे विरुद्ध हैं।इतिहासोंमें लिखाहै कि स ई ११००म कई महीनेतक लडनेकेबाद हमीरदेव परास्त होकर मारेगये और मीर मुहम्मद जब पकडकर लायागया तो अलाउद्दीनने उससे पूछा कि 'अब छोड दिए जानेपर तुम ठीक २ चलोगे" लेकिन उसने उत्तर दिया कि "यदि वश चला तो तुम्हारा सरकाटकर महाराजा हमीरके पुत्रको तख्त दिल्लीपर बिठलाऊंगा"। यह सुनकर अलाउद्दीनने उसको हाथीके पैरसे कुचलवाडाला। लेकिन कवीश्वर लोग 'हमीरहठ"मे लिखतेहैं कि, अन्तिमदिनके युद्धको जाते वक्त हमीरदेव कोटकी रक्षाके लिये मीरमुहम्मदको छोडगये और रानियोंसे कहिगये कि, जब किलेपरसे रणभूमिमें हमारा झंडा गिरा देखो तो हमको रणखाई हुआ जान तुम लोग पेश्तरसे तय्यार की हुई अग्निमें भस्म होजाना। अन्तमे महाराजकी जीत हुई, अलाउद्दीन परास्त होकर भागा, भावीवश भागडके धक्कम किसीको झंडेकी सुधिनरही। झंडेको गिरादेख राजभवनमें कुलाहल मचगया रानियें तुरंत अग्नि, में प्रवेशकरगई, राजदासियोंने क्षणमात्रमें महिलपरसे कूद २ कर जानखोदी, राजमाता राजभगनियों तथा राजकन्याओंने टक्करें मार २ कर प्राणदेडाले। यह अनर्थ हुआ देख मीरमुहम्मदनेभीअपना धिक्कार समझ कुएंमें गिरनेसे देर नहीं की। महाराजने लौटकर जब राजभवनमे चिड़ियातक न पाई और देखा कि, जिसके लिये इतनी आपत्ति सठाइ वहभी नहीं है तो उनके चित्तमें वैराग्यका उदय हुआ और निज पुत्रको राजातिलकदे शिवजीके मंदिरमें जाकर उन्होंने अपना शिर काटकर चढा दिया। महाराज हमीरसिंहदेवके शिवको शिरकाटकर चढानेकी तस्वीर अबतक महाराजा पटियालाके भवनमें विद्यमानहै। निम्नस्थ दोहा आपहीके विषयमें प्रसिद्ध है–

सो०–सिंहगमन सत्पुरुष वचन, कदली फलै एकबार।
त्रियातेल हमीरहठ, चढ़े न दूजी बार॥

हरगोविंदजी (सिक्खोंके छठेगुरु)—गुरु अर्जुनसाहबके घर स ई १५९५ में जन्मे। माताका नाम गंगाथा। स ई १६०६ में गद्दीपर बैठे। ठाट अमीरी रखतेथे। दो तलवारें बाँधतेथे, एक गुरियाईकी दूसरी अमीरीकी। चित्त आपका पक्षेपनहीसे रण सम्बंधी कामों तथा दंड कुश्ती, पटेबाजी, फरी गदका तथा तीरन्दाजी इत्यादि में लगताथा। बड़े स्वरूपवान तथा हृष्टपुष्टथे। स ई १६११ में निजपिता गुरु अर्जुन साहबकी समाधि इन्होंने बनवाई थी। दिल्लीके मुगल सम्राट जहाँगीरने दीवान चण्डूलालके कहनेसे इनको ग्वालियरके किलेमें नजरबन्द किया परंतु थोड़ेही दिनोबाद इनके महत्त्वके चरित्र सुनकर इनको अपने पास बुलाकररक्खा। एकदिन अवसर पाकर गुरुने बादशाहसे चण्डूलालकी सब करतूत जो उनके पिता गुरु अर्जुनके मरवाने तथा उनको नजरबन्द करानेमें उसनेकीथी कहदी। चन्डूलाल बादशाहके हुक्मसे गुरुको सौंपागया, गुरुने उसको मरवाडाला। आपसे पहिले जो पांच गुरुहुये मुल्कीमामलोंसे कुछ सरोकार नहीं रखतेथे लेकिन आपने दीनी तथा मुल्की दोनोंही प्रकारके मामलोंमें हिस्सा लिया। स इ १६४४ में परलोकगामीहुये।

हरदत्तपंडित (पदमञ्जरीके कर्त्ता)—जयादित्य तथा वामनकृतका शिका अष्टाध्यायीके ऊपर इन्होंने पदमञ्जरी नामक व्याख्या लिखीथी।

इसबातके प्रमाण मिलते हैं कि ये माघकविसे पीछेहुये (देखो माघ) आप स्तम्ब तथा गौतम धर्म सूत्रोंका भाष्यभी इन्होंने रचाथा।

हरबोंग—इस काशीनरेशने अपने राज्यमें सब चीजें एक भाव बेचनेकी आज्ञा दीथी। इसीकारण प्रसिद्धहै कि—"राजहरबोंगराजा टकेसेर भाजी टकेसेर खाजा"। हरबोंगके समय इत्यादिका कुछ विशेष हाल नहीं मालूम्।

हरदीक्षित (बृहच्छब्देन्दुशेखरकेकर्त्ता)—यह भट्टोजि दीक्षितके पौत्र थे। वि सं की १८ वीं शताब्दी मे इन्होंने भट्टोजिदीक्षितकृत सिद्धान्त कौमुदी पर बृहच्छब्देन्दुशेखर और मनोरमापर शब्दरत्ननामक व्याख्याकीथी

हर्ष—देखो श्रीहर्ष।

हरिदास—यह योगिराज इस समयमें योगाभ्यासकी महिमाको प्रकट करनेवाले साधुओंमेंसे थे। पंजाबकेशरी रणजीतसिंहजीने प्रशंसा सुनकर इनको अमृतसरसे अपने दर्बारमें बुलायाथा, यह वर्षोंकी समाधि लगासकतेथे।

गवर्नर जनरलहिंदके सैनिकमन्त्री आसबर्न साहिब अपने रोजनाम्चे में लिख तेहैं कि स ई १८३८ की साल ६ सा जूनको रणजीतसिंहजीने हरिदासफकीर को एकसन्दूक में बन्द कराके धर्तीके भीतर गड़वादिया, दश महीने बाद जब

जमीन खोदकर सन्दूक खोलागया तो साधू पद्म आसन बैठे हुये मिले, शरीरमें बिलकुल प्राणनहीं मालूम होतेथे, लेकिन थोडीदेर बाद कुछ २ श्वास चलती मालूम हुई और अधिक समय नहीं बीताथा कि महायोगीश्वरने नेत्र खोल कहा कि "बहुत सोये"। प्राय स ई १८०८ में इनका जन्महुआ, ये पंजाबके रहिने वालेथे।

हरदेवलाल (बुलकाकेदेवर)–बालकृष्णबलदेव शर्मा "बुंदेलखण्ड पर्यटन" मे लिखतेहैं कि स ई १६२८के लगभग जब ओरछाके राजा जुझारसिंह दिल्लीदर्बार में रहने लगे तो राजप्रबन्धका भार उनके भाई हरदेव सिंहके शिरपड़ा, हरदेवसिंहके पक्षमें मूसलमानसेवाकोंका निर्वाह न था एवं ईर्षावश उन्होंने भाइयोंमें वैमनस्य करानेके लिये राजा जुझारसिंहको लिखा कि कुँवर हरदेवसिंहका राज महिषी से अश्लील सम्बन्धहै। पत्रदेखतेही राजाने ओरछे आकर रानीसे कहा कि यदि हरदेवसिंह से तुम्हारा घृणित सम्बन्ध नहींहै तो अपने हाथसे उसे विष देदो। रानीने बड़े दुःखसे धर्म रक्षार्थ राजाका प्रस्ताव स्वीकार करके भोजन प्रस्तुत किया। भोजन परोसते समय रानीके अश्रु संचालनहो उठा। हरदेवसिंहने क्रान्तहो कारण पूंछा जिसके उत्तरमे रानी चोंसें मारकररोनेलगी। बहुत प्रबोध करनेपर बोली कि बेटा! अब मैं माताकहे जाने योग्यनहींहूं, महाराजको मेरे सतीत्वमें सन्देहहै। स्त्रीका पहिला धर्म सतीत्व रक्षाहै जिसकी इस समय परीक्षाहै। इसकारण यह दुर्भागिनी आत्मपुत्र सरीखे देवरका विषपूरित भोजन परोस कर पुत्र हत्या करनेको प्रस्तुत हुई है। यह सुनतेही हरदेवलालने वह भोजन खालिया और कहा कि माता! तेरी धर्मरक्षासे मेरी सुकीर्ति युगान्तयुग होगी। रानीनेभी इनकेऔजस्व पूरित वाक्योंको सुन अत्यंत कातरहो विषखालिया। जुझारसिंहभी यह धर्मपरीक्षा देखरोनेलगे। हरदेवसिंह रसोईका शेष विषपूरित भोजन बाहर उठवालाये और उन्होंने अपनी दशाका अन्तिम समाचार इष्टमित्रों सेवकों तथा कर्मचारियोंसे कहा। उनमेंसे बहुतोंने जो हरदेव सिंहके सद्गुणोंसे अनुरक्तथे वह विषपूरित भोजन तुरंत खालिया और थोडीही देरपीछे सबके सब अटल निद्रामें सोगये। इसअधम्यपापसे चारों ओर हाहाकार मचगया। सजातीय तथा विजातीय सब लोगोंने महाराज जुझारसिंहको सर्वदा अपमदमानकर उनसे सम्बन्ध तोड़दिया। उन्हीं दिनोंसे हरदेवलाल तथा कुलकादेवी विशुचिकाके दिनोंमें पुजनेलगे। कुलकादेवीके मन्दिर और हरदेवलालके चौतरे तथा कूप समस्त भारतवर्षमें ठौर २ बने हैं।

हरिदासस्वामी (वैष्णवधर्मप्रवर्तक)–"भक्तसिन्धु" ग्रन्थके आधारपर मिस्टर ग्रौसने लिखाहै कि अलीगढ़के पास एक गाँवमें जिसको अब हरिदासपुर कहते हैं महाधीरनामक सनाढ्य ब्राह्मण रहितेथे जिनके पुत्र हाम

धीरके इष्टदेव गोवर्धनपर विराजमान श्री गिरिधारीजीथे। ज्ञानधीरका विवाह मथुरामें हुआ था जिससे एकपुत्र आशधीरहुआ। आशधीरका विवाह वृंदावनके निकटस्थ राजपुर ग्राममें गंगाधर ब्राह्मणकी कन्यासे हुआ था जिससे हरिदासजीका जन्महुआ। बाल्यपनहीसे हरिदासजी भगवद्भक्तिमें लीनथे और अन्यलडकाकी भांति खेलना कूदना उनको पसन्द नहीं था।२५ वर्षकी उमरमें हरिदासजी गृहत्यागीहो वृंदावनमें मानसरोवरपर जा बसे और थोडेही दिनपीछे वहाँसे निधवनको उठगये। वहींपर श्रीबाँकेविहारीजीकी मूर्ति इनको मिलीथी जिनका बड़ाभारी मंदिर अबतक वृंदावनमें है,इस मंदिरके अधिकारी स्वामी हरिदासके भाई जगन्नाथके वंशधर हैं। हरदासजी परम विरक्त तथा महात्यागीथे और सदैव ईश्वरके ध्यानमें मग्नरहतेथे। भक्तमालवर्णित यमुनाजीमें पारसपत्थरफेंक देनेकी कथा इन्हीके विषयमेंहै। सङ्गीतशास्त्र इनको पूर्णरीतिसे आताथा, सुप्रसिद्ध गवैया तानसेन इनका शिष्यथा। एकदफे मुगलसम्राटअकबरने चाहा कि स्वामीजीका गानासुने परन्तु यह कठिनथा निदान तानसेन बादशाहके हाथ सेवकके रूपमें तानपूरा लिवाकर स्वामीजीके पास पहुंचा, यह चित्र वृंदावनमें अबतक मौजूदहै। स्वामीजी अपने प्राचीन शिष्यको देख प्रसन्न हुये, तानसेनने कुछगाया परन्तु जानबूझकर चूककी तब स्वामीजीने स्वयंगाकर बतलाया,बादशाहने मोहितहो स्वामीजीके चरणछुये और मोरों तथा बन्दरोंके चुगानेके खर्चके लिये जागीरदी। स्वा० हरिदासके बनाये पदोंके दो छोटे २ ग्रंथहैं। सिद्धांत नामक प्रथमी इन्हीका बनायाहुआहै। गवैयोंके सिवाय साधारण लोग इनके बनाये पदोंको नहीं गासकतेहैं। यह कवितामें अपना यह छापरखतेथे–“श्रीहरिदासके स्वामीश्यामा कुंजविहारी”। इनकी गद्दीके मुख्यस्थान वृंदावनमें तीनहैं श्रीबांकेविहारीजीका मंदिर, निधवन और मौनीदासजीकीटट्टी। इनकी शिष्य परम्परामें अनेक सुकविहुयेहैं जिनमेंसे मौनीदासजी ९ वेंथे। मौनीदासजीकी टट्टीमें स्वामीहरिदासजीका जन्मोत्सव हरसाल बड़े समारोहसे होताहै। स्वा० हरिदासकी भाषाकविता सूरदास तथा तुलसीदासकी कविताके समानहै और इनके बनाये संस्कृतपद्य जयदेव स्वामीकृत पदोंसे कमनहीं। डाक्टर ग्रीअर्सन साहब अपने ग्रंथमें लिखते हैं कि, सन् ई० १५६० में हरिदासस्वामी विद्यमानथे।

हरिनाथ (भाषाकवि)—प्रसिद्ध कवीश्वर नरहरिजू इनके पिता थे। यह भाट महापात्र ग्राम असनी जिला फतेपुरके रहनेवाले थे।हरिनाथ बड़े भाग्यवान, उदारचित्त और दानीहुये, जिस दर्बारमें गये लाखों रुपये, हाथी, घोडे, ग्राम इत्यादि मानकरके लौटे पर पास कुछ नहीं रक्खा सब लुटादिया।वीर्वांनरेश नेजारामबघेलेने१ लाख रुपया और वीररानी दुर्गावतीने सवालक्ष रुपया इनको इनाम दिया था, पश्चात् हरिनाथजीने महाराज मानसिंह जयपुर नरेशके दर्बारमें पहुंच निम्नस्थ दोहे सुनाय दोलक्ष रूपये इनाम पाये–

दो०-मद्धियोई फीरातिलसा, कर्णकरी है पात ।
सींची मान महीपमें, जब देखी कुम्हलात ॥

दो०-जातिजाति ते गुण अधिक, सुन्यो न अबहू कान ।
सेतुबाँधि रघुबरतरे, हेला दे नृप मान ॥

जब हरिनाथजू रुपये तथा अनेक सामान सहित घरको लौटे आरहेथे तो रास्तेमें एक नागापुत्र उनको मिला और उसने हरिनाथजूकी प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा-

दो०-दान पाय दोई बढे, की हरि की हरिनाथ ।
उन बढ लम्बे पग किये, इनबढ लम्बे हाथ ॥

यह सुनतेही हरिनाथजूने सब धनधान्य उस नागापुत्रको देदिया और आप रीतेहाथ घरको लौटआये । वि स की १७ वीं शताब्दीमें इनका समयहै ।

हरिश्चंद्र भारतेन्दु (हिन्दी सम्राट) यह बाबूजी काशीके रहने वाले बाबू गोपालचंद्रजी अग्रवाल वैश्यके पुत्रथे माता इनको केवल ५ वर्षका, पिता ८ वर्षका छोड़कर मरगयेथे, बनारसके क्वीन्स कालिजम कई वर्षतक इन्होंने अंग्रेजी, पढ़ीथी, संस्कृत तथा फार्सीकेभी पूर्ण ज्ञाता थे, तामिल और तैलङ्गके सिवाय इसदेशकी अन्य सब भाषा-ओंकोभी बड़े परिश्रमसे घरपर पढ़ा था । कविता बचपनहीसे अनेक भाषाओंमें करतेथे लेकिन हिंदी कविता करनेम निपुणथे । १६ वर्षकी उम्रमें इन्होने "कविवचनसुधा" नामक पत्र निकालना शुरू किया था, पश्चात् अनेक और पत्र, पत्रिकायें निकाली थीं तथा सैकड़ों गद्य, पद्य पुस्तक रचकर हिंदी भाषाका भण्डार परिपूर्ण कियाथा, बा० हरिश्चन्द्रके पहिले साधारण रीतिसे इस प्रान्तभरमें केवल संस्कृत, फार्सी तथा अंग्रेजीके पठन पाठन का चर्चाथा, भाषाग्रन्थोंका रचना, छपवाना तथा पढ़ना तुच्छ काम गिना जाताथा । बा० हरिश्चंद्रके उद्योगसे देशभर की रुचि शनैः २ इस ओर बढ़ी, सब लोगोंको हिन्दी लेख पढ़नेकी अभिलाषा उत्पन्न हुई । फिर तो उत्तरोत्तर क्रमसे सैकड़ा अच्छे २ ग्रंथकार होगये और फायदा होते देख ग्रंथोंको छापकर प्रकाशित करनेवाले सहजहीमें मिलने लगे । इसी कारण बा हरिश्चंद्रको "हिन्दी सम्राट्" कहना यथार्थ है । स० ई० १८७० से १८७४ तक बा० हरिश्चंद्र बनारसमें आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा म्युनिसिपेल कमिश्नर रहे । बनारसमें चौखम्भास्कूल, हिंदी डिबेटिंग क्लब, अनाथरक्षिणी सभा तथा काव्यसमाज आपने स्थापनकी थी । आप अनेक बड़ी २ सभाओं तथा समाजोंके प्रेसीडेन्ट तथा मेम्बरभी थे । धनाढ्य तो थे ही, विद्वानोंकाभी

सत्कार खूब करतेथे। काशीके पंडितोंने जो प्रशंसा पत्र हस्ताक्षर करके आपको दिया था उसमें लिखा था कि-

दो०-सब सज्जनके मानको, कारण इक हरिचंद्र।
जिमि स्वभाव दिनरैनके, कारण नित हरिचंद्र।

कहतेहैं कि सहस्रो मनुष्योंका कल्याण बाबूहरिश्चंद्रके द्वारा होताथा। विद्योन्नतिके लिये उन्होंने बहुत कुछ व्यय किया था। वह पक्के राज भक्त थे और देशहितके आगे अपने धन, मान तथा प्रतिष्ठाको तुच्छ समझते थे। उनका शील स्वभाव ऐसा था कि साधारण लोगोंके सिवाय भारतके बहुतसे राजाओं महाराजाओं तथा यूरूप और अमेरिकाके प्रधान लोगोंसे उनकी मैत्रीथी। काशीके बड़े २ पंडित तथा सर्वसाधारण उनकी प्रतिष्ठा करतेथे और काशीनरेशकी सभामें उनका बड़ा आदर होताथा। स ई १८८९ में हिंदीसमाचारपत्रोंके सम्पादकोंने एकमत होकर उनको भारतेन्दुकी उपाधिदी थी। वह वैष्णवथे और मत या धर्मको विश्वासमूलक मानकर प्रमाणमूलक नहीं मानतेथे। अहिंसा, दया, शील, नम्रता आदिकोभी धर्मके लक्षणोंमें गिनतेथे। अंतमें कितनेही दिन बीमार रहकर सिधारे। अन्तिम दिन जब भ तरपुरसे प्रेरित दहिलुनीने आकर आपसे पूछा कि आज आपकी तबियत कैसीहै? तब आपने उत्तरमें कहा कि आज तासको अन्तिम पतनिका गिरकर तमाशा खतमहोगा। स ई १८५० में जन्मे, स ई १८८५ में सिधारे।

हरिश्चंद्रदानी (सूर्यवंशीनरेश)-यह राजा त्रिशंकुके पुत्रथे, महाराज रामचंद्र इनसे ३० पीढी पीछे हुये। एकदफे हरिश्चंद्रके राज्यमें घोर दुर्भिक्ष पड़ा, लोग भूखों मरनेलगे तब उन्होंने अपना सब धन धान्य प्रजाकी रक्षामें लगादिया और आप निर्धन होगये। ऐसी आपत्तिके समयमें ऋषि विश्वामित्रने उनके धर्मकी परीक्षा करनी चाही और आकर कहा कि "महाराज! मुझे धन दीजिये और कन्यादानका फल लीजिये"। सुनतेही महाराजने अपना बचा बचाया माल असबाब बेंचकर ऋषिके अर्पण किया। पुन ऋषिने कहा कि धर्ममूर्त्ति! इतने धनसे मेरा काम न चलेगा और मुझे आपके सिवाय कोई दूसरा धनाढ्य धर्मात्मा संसारमें दृष्टिगोचर भी नहीं होता, हाँ! काशीमें एक स्वपच मापापात्र है कहो तो उससे आकर धनमाँगू। महाराज हरिश्चंद्र इतनी बात सुनतेही स्त्री पुत्र समेत विश्वामित्रको साथले उस स्वपचके घर गये और उससे कहा कि "भाई! तू हमें एक वर्षके लिये गिरवी रखले और इनका मनोरथ पूरा कर"। श्मशानमें जाय चौकी देने और जो मृतक आवे उससे करलेनेका काम स्वपचने महाराज हरिश्चंद्रको सौंपा और विश्वामित्रको रुपये गिन दिये, हरिश्चंद्रकी रानीने विवश हो एक ब्राह्मणके घर चौका बरतन धोनेकी नौकरी

करली। कितनेही दिन पीछे महाराजका पुत्र रोहिताश्व मरगया, महारानी सबे ले मरघटमें गईं और ज्योंही चिता बनाय अग्नि संस्कार करने लगीं त्योंही महाराज हरिश्चंद्रने आकर कर माँगा। महारानीने बिड़कारी फोड़, रोकर कहा कि "महाराज! यह आपका इकलौता पुत्र रोहिताश्व है और सिवाय इस चीरके जो पहिने खड़ी हूं मेरे पास देनेको कुछ और नहीं है"। महाराजने कलेजे पर पत्थर रखकर कहा कि "रानी! मेरा इसमें कुछ वश नहीं है, मैं दूसरेका चाकर हूं यदि उचित रीतिसे कार्य न करूंगा तो अधर्मी ठहरूंगा"। इस बातके सुनतेही महारानीने चीर उतारनेके लिये ज्योंही आँचल पर हाथ डाला कि तीनों लोक काँपने लगे, हाहाकार मचगया, पृथ्वी पुकार उठी कि "बस! बस!! बस!!! परीक्षा होचुकी, हरिश्चन्द्र दानी और धैर्य्यवान् है"। महाराजके सब कष्ट स्वप्नवत् होगये, पुत्र रोहिताश्व जीउठा और महाराज तथा महारानीका कीर्त्तिस्तम्भ "आचन्द्र दिवाकर" अटल होगया। पश्चात् महाराज हरिश्चन्द्र बहुकालतक धर्म राज्य करके दुर्लभ पदको प्राप्त हुये।

हरीराय (सिक्खोंके सप्तम गुरु)–यह गुरु हरगोविन्दजीके पौत्र थे और इनके पिताका नाम गुरुदित्ताजी था। शाहजहांका राजदूत इनकी महिमा सुनकर दिल्लीसे कोटसी समय इनके दर्शनोंको आया था। मुल्की मामलातमें भी इन्होंने खूब हिस्सा लिया, यह पञ्जाबके हिन्दुओंके पेशवा गिने जाते थे। इनकी समाधि कीरतपुर मुल्क पञ्जाब में है, हरकृष्णजी इनके कनिष्ठ पुत्र ५ वर्ष की उम्र म गुरुकी गद्दीपर बैठे। स० ई० १६२९ में जन्मे स० ई० १६६१ में सिधारे।

हातिमताई–यह अरबदेशवासी अब्दुल्लाका पुत्र बड़ा परोपकारी और दानी हुआ, मुसल्मानोंके पैगम्बर मुहम्मद साहिबके जन्मसे थोड़ेही दिन पहिले मरचुका था। इसका बेटा बाद को मुसल्मान होगया। इसके वृत्तान्तमें यह फ़ारसी किताब मिलती है, जिसका अनुवाद उर्दू अङ्गरेजी इत्यादि कई भाषाओंमें होगया है। हातिमताई की कबर अबतक अरबके एक गाँवमें मौजूद है।

हाफिज (फारसी कवीश्वर)–प्रसिद्ध फारसी ग्रन्थ दीवानहाफिज इसका बनाया हुआ है। पूरा नाम इसका मुहम्मद शमशुद्दीन थामुल्क ईरानके शहिर शीराजका रहने वाला था, कुछ दिनोंतक सुल्तान बग़दादके दर्बारसे इसका सम्बन्ध रहा। स० ई० १३८८ म मरा।

हाफिजरहिमतखाँ (रुहेला)–इसका बाप शाहआलमखाँ स० ई० की १७ वीं सदीके अंतमें अफ़ग़ानिस्तानसे आकर मुग़ल सम्राट् दिल्लीके दर्बार

में किसी उच्चपद पर नौकर हुआ था। शाहआलमखाँ के हाफिज रहिमतखाँ तथा दाऊदखाँ दो पुत्र थे। दाऊदखाँ ने अपनी वीरतासे मुगल सम्राटको खुश किया और नवाब का खिताब तथा रामपुर (रूहेलखण्ड) की जागीर इनाममें पाई। दाऊदखाँके वंशज अबतक रामपुरमें राज्य करते हैं। हाफिज् रहिमतखाँ ने उस मुल्कके अधिकांशपर जो अब किस्मत रूहेलखण्डमें शामिल है बहुत दिनोंतक हुकूमत की और पीली भीतको गाँवसे बढ़ाकर शहिर बनाया और हफीजाबाद नाम रक्खा। बरेली और पीलीभीतके बीच हाफिजगंज भी उन्होंने पथिका तथा फौजके ठहरनेके लिये बसाया था। पीलीभीत, बरेली और आँवला जि० बदायूंमें अबतक हाफिज रहमतकी बनवाई मसजिदें तथा अन्यान्य इमारत भग्नावस्थामें पड़ी हैं। बरेली में उस स्थानपर जिसको अब भी किला कहिते हैं उन्होंने एक कोट बनवाया था जिसको सन ५७ के गदरके बाद ब्रिटिश गवर्नमेंटने खुदवाकर फिकवा दिया। हाफिज रहिमत यथाशक्ति न्याय करना चाहता था, रावपहाड़सिंह खत्री जिसकी गढ़ी बरेलीमें अबतक टूटी फूटी पड़ी है उसका दीवान था। कहते हैं कि एक दफे शहर बरेलीसे ३ कोस पूर्व नरियावल ग्राममें देवीका मेला देखने राव पहाड़की बेटी रथमें बैठकर गई थी, हाफिज रहिमतके भाञ्जेकी उस पर आँख पड़ी, देखतेही मोहित होगया और सवारोंको हुक्म दिया कि पकड़ लो। रथवानको जब यह मालूम हुआ तो उसने तुरंत चाबुकसे कसकर लड़कीको कमरसे बाँध लिया और सवारोंको धोखेमें डालनेके लिये रथके पीछेका ताँगा छुरीसे काट सड़क पर छोड़ दिया और हवाकी समान बैलोंको उड़ाता हुआ अपने मालिककी प्रतिष्ठाको लेकर गढ़ीके फाटकमें घुस पड़ा और सवार उस को न पकड़ सके। स्वामिभक्त चाकरकी काररवाई देख राव पहाड़की आँखोंसे कृतज्ञताके आंसू बहने लगे, उसने रथवानके हाथोंमें सोनेके कड़े डलवा दिये और पूरी तनख्वाह पर आजन्म नौकरीसे माफ किया बैलोंको प्रतिदिन ५ सेर जलेबी बाँधदीं और हुक्म दिया कि उनसे कुछ काम न लिया जाय। जब यह बात हाफिज रहिमतके कानमें पहुँची तो उसने अपने भाञ्जेको उचित दण्ड दिया। हाफिज रहिमत प्रायः १२ बर्षोंका बाप था। आलमगीरीगंज, जुल्फिकारगंज तथा शहामतगंज नामक शहर बरेलीके मुहल्ले उसीके बेटोंक नामसे प्रसिद्ध हैं। हाफिजरहिमत खाँ अन्तमें नवाब वजीर अवधसे लड़कर कटरा जि० शाहजहाँपुरके मैदानमें मारा गया और उसके लड़कोंकी बात तक किसीने नहीं पूछी। हाफिजरहिमत अपने समयके सब रुहेला सर्दारोंका मुखिया समझा जाता था।

हारीत मुनि (आयुर्वेदीयहारीतसहिताके कर्ता)–इन्हाने आयुर्वेद अपने पिता ऋषि जाबालिसे पढ़ा था। ऋषि जाबालि राजा दश

रथके समयमें विद्यमान थे। हारीतमुनिने दो वैद्यक ग्रन्थ रचे थे जिनमेंसे एक वृद्धहारीत संहिता और दूसरा लघुहारीत संहिताके नामसे प्रसिद्ध है। उक्त दोना ग्रंथोंमें श्रीमान् आत्रेय महर्षि और हारीतमुनिके प्रश्नोत्तर हैं। व्यासकृत महाभारतमें वैशम्पायन ऋषिने हारीतके विषयमें यह कथन लिखाया है कि "मैंने जाबालिपुत्र हारीत को एक सरोवरमें नहानेको जाते हुये देखा, वह धीररसकी मूर्ति थे, तेज उनका सूर्य्यकासा था, मस्तकपर अग्र ललाटमें त्रिपुण्ड, कानोंमें स्फटिकमाला, बायें हाथमें कमण्डलु, दहिनेमें दण्ड, कंधेपर कृष्ण मृगछाला और गलेमें यज्ञोपवीत सुशोभित था, उनकी मूर्ति शांतिमय थी, स्वभाव दयालु था और एक टहिलुवा साथ था"।

हार्डिङ्ग (वाईकौन्ट हेनरी हार्डिङ्ग—Viscount Henery Hardinge) यह शहर डरहम (इंग्लेण्ड) के रहनेवाले एक पादरीके पुत्र थे। थोड़ेही वयसे यह फौजमें भरती होगये थे और स० ई० १८०४ में कप्तानके पदपर तरक्की पाकर बढ़ते २ अंगरेजी सेनामें उच्चपदको प्राप्त हुये थे। बहुतसी लड़ाईयोंमें ड्यूक आफ्वेलिङ्गटनके साथ २ बड़ी बहादुरीसे लड़े थे। स० ई० १८४४ में गवर्नरजनरल हिंद नियत होकर आये और मुदकी तथा फीरोजशाह की लड़ाईयोंमें सिक्खोंकी सेनाको परास्त किया। स० ई० १८५५ में फील्ड मार्शलका पद इनको दिया गया। स० ई० १७८५ में जन्मे और स० ई० १८५६ में मरे।

हारूँरशीद (खलीफाबग्दाद)—ये अबू अब्दुल्ला मेंहदीके पुत्र, बग्दादके अब्बासवंशोत्पन्न पञ्चम खलीफा थे। अपने बड़े भाई अलहदीके बाद २०।२२ वर्षकी उमरमें स ई ७८६ की साल तख्तपर बैठे। शाम, पैलेस्टायन, अरब, ईरान, आरमेनिया, काबुलिस्तान, नैतोलिया, आज रबायजान, सैविडम, ऐसीरिया, सिन्ध, खुरासान, तातारिस्तान, जाबुलिस्तान, बड़ा बुखारा, और मिश्र इत्यादि देशोंमें इन्हींका राज्य फैला हुआ था। इनके शासन कालमें अधिक मुल्क तो विजय नहीं हुआ लेकिन अनेक काम देशोन्नति, प्रजापालन और राज्यप्रबन्धके सफलतापूर्वक हुए। यह फार्सी तथा अर्बीके विद्वान होकर गुणी जनोंका खूब सत्कार करते थे। किसी कविकी पद्यरचनापर प्रसन्न हो कर इन्होंने ५ लाख अशर्फियें इनाम दीथीं। अनेक और कवीश्वरोंको भी १।१, २।२ लाख दिरम दिये थे। अनेक सड़कें, सफाखाने, स्कूल, कारवाँ सराये भी बनवाई थीं। डाक्टरी, पुलिस तथा शिक्षा इत्यादि अनेक राज्य विभाग स्थापन करनेका भी अनुभव पहिले पहिले इन्हींको अरबके बादशाहोंमें हुआ था। इन्होंने यूनानियोंको कई दफ परास्त किया था, अन्तिम दफे स ई ८०४ में इनकी हार हुई और४०हजार सेना मारी गई लेकिन दूसरीही साल फ्रिजिया पर चढ़ाई करके इन्होंने फिर शाह यूनानको परास्त किया और उसके अनेक सूबों

पर अधिकार जमाकर राजस्व शुरुल किया। फ्रांसके सम्राट् चार्लस दीग्रेटके साथ हार्ऊंकी मित्रता थी और एक अतीव सम्म यद्दी हार्ऊंने उसको नजरकी थी। स ई ८०९ म २३ वर्ष राज्य करके खुरासानमें मरे और तूस (मशहद) में दफन किये गये। यह मुसलमान थे; बेटा अलअमीन इनका उत्तराधिकारी हुआ।

हावर्ड (जानहावर्ड–Gohn Howard) इस प्रसिद्ध अंगरेज जगत हितैषीका बाप शहर लन्दनमें सौदागरी करताया और इसको छोटासा छोड़कर मरगयाथा यह होकर इसने अपने से २७ वर्ष बड़ी एक विधवाके साथ शादी की लेकिन वह तीनवर्ष बादही मरगई। स ई १७५६ में यह पुर्तगालकी राजधानी लिस्बनको उनलोगोंकी सहायता करणार्थ गये जिनकी भूकम्पसे हानि हुई थी। लिस्बनसे लौटकर यह हैम्पशायर (इङ्गलैण्ड) में बसरहे और स ई १७५८ में इन्होंने अपना दूसरा विवाह किया लेकिन दूसरी स्त्रीभी स ई १७६५ में एक बेटा छोड़कर मरगई। उस समय यह बेडफोर्डके समीप कार्डिङ्गटन म रहतेथे और वहाँ इन्होंने कुछ जायदाद भी खरीदलीथी। स ई १७७३ में शेरिफ़का ओहदा इनको मिला, उक्त ओहदेपर रहकर स्पष्टरीतिसे इनको जाँच होगई कि जेलखानोंमें कैदियोंके साथ पशुओंके समान बर्ताव किया जाताहै निदान इन्होंने सर्कारी आज्ञा लेकर इङ्गलैण्डके जेलखानोंका दौरा किया और उद्योग करके पार्लियामेंटसे आईन पास कराया जिससे कैदियोंकी तकलीफ बहुत कुछ घटगई। पश्चात् इन्होंने यूरूपके अन्यराज्योंमें भी भ्रमण करके जेलखानोंकी दीन दशाकी जाँच की और भिन्न२ राजाओंसे उद्योग करके उसमें सुधार करवाया। अंतमें यह क्रीमियाको गये, वहाँ उन दिनों बुखार फैल रहाथा, एक बीमारका इलाज करते समय हावर्ड साहब को उसकी बीमारी उठलगी और मृत्युका कारण हुई। स० ई० १७२७ म जन्मे, स० ई० १७९० में मरे।

हितहरवंश गोस्वामी (राधावल्लभीय सम्प्रदायके आचार्य)– देवबन्द जि० सहारनपुरमें व्यास स्वामी उपनाम हरिराम शुक्लके घर तारा सखीके उदरसे मिती वैशाख शुक्ल ११ वि० सं० १५५९ को जन्मे। प्रथम विवाह इनका देवबन्दमें रुक्मिणी नामक कन्यासे हुआ जिससे दो पुत्र और १ कन्या उत्पन्न हुई। इन तीनों बालकोंका विवाह करनेके बाद गोस्वामी श्री हितहरवंशजी वृंदावन वासकी इच्छासे घरबार छोड़ चलते हुये। मार्गमें होडलके पास चरथावल ग्राममें एक ब्राह्मण इनको मिला जिसने अपनी दो कन्यायें तथा श्रीराधावल्लभ ठाकुरकी मूर्त्ति इनके अर्पणकी जिसको लेकर यह वृंदावनमें आये और वहाँ मितीका० शु० १३ वि० सं०१५८२को श्रीराधावल्लभजीकी स्थापना की और राधावल्लभीय सम्प्रदायका प्रचार किया। राधावल्लभीय लोग अपने नामके पहिले हित लिखते हैं। हित हरवंशके शिष्योंमेंसे अनेक अच्छे कवीश्वर हुये हैं। इनकी पहिली स्त्रीका वंश देवबन्दमें है और पिछली दोनों

स्त्रियोंका वृंदावनमें। "श्रीराधासुधानिधि" तथा "कर्मानस्" काव्य इन्हींके बनाये संस्कृत ग्रंथ हैं। भाषामें इनके रचे ग्रंथ "वृंदावनशतक" और "हित चौरासीधाम" हैं।

हिमाचलराम (भाषाकवि)—यह शाकद्वीपीब्राह्मण रियासत भटौली जि० सहियग्यपके रहनेवाले थे। नागलीला, वृषिलीला इत्यादि इनके रचेग्रंथ हैं। वि० स० १९१५ में मृत्युवश हुये।

हिल (सर रौलैंड हिल-Sir Rowland Hill)—यह बर्मिंघम (इंग्लैंड) के रहनेवाले महाशय प्रथम लोगोंको गणित शास्त्रकी शिक्षा देकर अपना निर्वाह किया करते थे पश्चात् दक्षिणी आस्ट्रेलियन कमीशनके मन्त्रीका पद इनको प्राप्त हुआ और स० ई० १८३७ में डाकखानेके नियमोंके सुधारकी तरफ इनका ध्यान फिरा निदान इन्होंने एक पुस्तकरची और उसमें इस बातपर जोर दिया कि चिट्ठियोंपर तौलके हिसाबसे महसूल लेनाचाहिये, दूरीके हिसाबसे नहीं। कुछ दिनोंबाद पार्लियामेंटने एक कमीटी इनके विचारोंकी जाँचके लिये नियत की जिसने खूब जाँच करनेके बाद इनकी तजवीजोंकी सिफारिशकी एवं स० ई० १८४० में पेनीपोटेजका आईन जारी कियागया और हिल साहिबको इङ्गलैंडके पोष्टमाष्टर जेनरलका ओहदा मिला। थोड़ेही दिनों बाद मालूम होगया कि पेनीपोटेजका आईन जारी करनेसे सरकारको बहुत फायदा हुआ है। स० ई० १८६४में हिल साहिबको दो हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन मिली और के० सी० बी० की उपाधि स० ई० १८४० हीमें मिलचुकीथी। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयने भी डी० सी० एल० की उपाधि आपको दीथी। स० ई० १७९५ में जन्मे स० ई० १८७९ में मरे।

हुमायूं (द्वितीय मुगलसम्राट्‌दिल्ली)—यह मुगल सम्राट् बाबरका बेटा था, इसके तीन छोटे भाई और थे। २२ वर्षकी उम्रमें यह बीमार पड़ा, जीनेकी कुछ आशा न रही, तब तो बाबरने जो अपने बेटोंको अत्यंत प्रेम करताथा इसके पलंगके चारों तरफ घूमकर ईश्वरसे प्रार्थना की कि "हे परमात्मन् ! इसको जी दान दे और बदलेमें मुझे ले"। उसी वक्तसे हुमायूंको आराम हो चला और बाबर बीमार हो मरगया। मरतेवक्त बाबरने हुमायूं से कहा कि, अपने छोटे भाइयोंके साथ किसी तरहकी गर्द न करना। पितृभक्त हुमायूंने स० ई० १५३० में तख्तपर बैठकर गजनी, काबुल, कंधार तथा पंजाब अपने भाई कामरांको, सम्भल दूसरे भाई असकरीको, अलवर तीसरे भाई हिंदालको दिया और केवल आगरे तथा दिल्लीके आस पासका मुल्क अपने पासरक्खा। स० ई० १५४० में शेरशाह बंगालके सूबेदारने हुमायूं को परास्त किया, ऐसी हीन दशामें हुमायूं ने अपने भाइयोंसे मददमांगी लेकिन उन्होंने मदद देनेके बजाय उसकी जान भी लेलेनी चाही निदान लाचार होकर उसे ईरानकी तरफ भागना पड़ा, रास्तेमें अमरकोटके किलेमें स० ई० १५४२ की साल उसके अकबर पैदा हुआ,

हुमायूं के पास उसवक्त एक मुश्कनाफेके सिवाय और कुछ न था निदान उसी को तोड़ अपने सर्दारोंमे थोड़ा २ बांट खुशी मनाई। हुमायूं बड़ा दयालु, उदार और विद्वान् था, ज्योतिषमें पूरा अभ्यास रखताथा, अकबरकी जन्मपत्रीमें अत्युत्तम ग्रह देख खुशी के मारे नाँचनेलगाथा। स ई १५४४ में ईरान पहुँचनेपर शाह ईरानने यथोचित हुमायू की खातिर की और कुछ दिनबाद १० हजार फौज देकर हिंदोस्तानकी तरफ वापिसभेजा। रास्तेमें हुमायूं ने अपने कृतघ्नी, निर्दयी भाई कामराँ कोपरास्त करके काबुल, कंधार तथा पंजाब छीन लिया और दिल्लीकी तरफ बढ़कर स ई १५५५ में सिकन्दरशाह सूर को परास्त करके दिल्ली का तख्त विजय किया। सर्दार बैरमखाँको जिसने हरहालत में हुमायूं का साथ दिया था सर्व्वोच्चपदवी खानखानाकी दी गई और आगरेसे बदलकर दिल्ली में राजधानी नियत कीगई। दिल्लीमें केवल ७ महीने राज्य करनेके बाद सन्ध्या समय एक दिन हुमायूं बालाखानेपरसे नमाज पढ़नेके लिये उतरते वक्त नीचे गिरपड़ा और ४९ वर्षकी उम्रमें मरगया। हुमायूं अपने पिताकी समान दृढ चित्त नहोकर बड़ादयालुथा, उसके दुखदाई भाई कईदफे उसके हाथमें पड़े लेकिन उसने कभी जानसे नहीं मारा और इसी लिये उसको अनेक कष्ट उनके द्वारा भोगने पड़े। कहते हैं कि जब हुमायूं शेरसूरसे हारकर भागा जाताथा तो भोजपुरके समीप उसका घोड़ा गंगामें गिर पड़ा जिससे वह डूबने लगा, इस मौकेपर निजाम नामक भिश्तीने उसकी जान बचाई और इनाममें यह माँगा कि जब हजरत आगरेमें पहुँचें तो एक दिन दोपहरके वक्त ढाई घंटेकी बादशाही मुझको अता फर्मावैं। जब हुमायू आगरे पहुंचा तो निजामभी हाजिर हुआ, हुमायूंके हुक्मसे उसने २½ घंटे तख्तपर बैठकर इजलास किया और तमाम अमीर वजीर उसका हुक्म बजालाये। निजामने इस थोड़ेसे वक्तमें अपनी मशकमेंसे कटवाकर चमड़ेका सिक्का चलाया और अपने भाई बन्दोंको निहाल करदिया। हुमायूं स ई १५०८ म पैदा हुआ, स ई १५५६ में मरा।

हुलासरामकवि—यह संडलदीपीब्राह्मण प्रयागदत्तके पुत्र जि बाराबकी, तहसील फतेहपुर, ग्राम रामनगरके रहनेवाले थे। बुद्धिप्रकाश और बैताल पञ्चविंशतिकाका भाषापद्यमें अनुवाद तथा रामायण लंकाकाण्ड इनके रचे ग्रंथहैं। वि स १८४५ में जन्मे, वि स १९१२ में मरे।

हेमचद्र (प्राकृतका अन्तिमवैयाकरण)—कुमारपाल चरित्रसे पता लगता है कि बम्बईप्रदेशान्तर्गत खम्भातके रहनेवाले चाचिग नामक वैश्यके घर वि स ११४५ में चाङ्गदेव नामक पुत्रने जन्म लिया। चाङ्गदेव ९ वर्ष की उम्रमें जैन मत ग्रहण करके साधु होगया और तबहीसे उसका नाम हेमचन्द्र प्रसिद्ध हुआ जिसकी गणना जैनियोंके महत्पुरुषोंमें है। बड़े होकर हेमचद्रने पट्टन (गुजरात) के राजा सिद्धराज तथा कुमारपालके दर्बारमें बड़ा सत्कार

१८२३ में हिंदोस्तानको आये और अफगानिस्तान तथा सिक्खोंकी लड़ाइयोंमें बड़ी वीरतासे लड़े। सन् ५७ के गदरमें लखनऊ तथा कान्हपुरमें इन्होंने बागियोंको परास्त किया। लखनऊ रेजीडेन्सीमें घिरेहुये अंग्रेजोंके प्राण इन्होंने बड़ी वीरतासे लड़कर बचाये, उक्त अवसर पर इन्होंने ४०० सेनासे ५० हजार बागियोंको परास्त कियाथा लेकिन अंतमें आप भी घायल हुये और कुछही दिन बाद मरगये। जब इनकी वीरताकी रिपोर्ट इङ्गलैण्ड पहुंची तो पार्लियामेंटने प्रसन्न होकर अंग्रेजी सेनामें मेजर जनरलका ओहदा तथा १ हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी, लेकिन जब यह खबर हिंदोस्तानमें आई तो हैवलाक साहब मरचुके थे। स ई १७९५ में जन्मे, स ई १८५८ में लखनऊमें मरे।

हेस्टिङ्ग्ज (वारेन हेस्टिङ्ग्ज -Warren Hastings)-इन्होंने वोरसेस्टर शायर (इङ्गलैन्डके) एक प्राचीन प्रतिष्ठित वंशमें जन्म लेकर वेस्टमिनिस्टर स्कूलमें शिक्षा पाई थी। स ई १७५० में क्लार्कके पदपर नियत होकर ईस्ट इन्डिया कम्पेनीकी चाकरीमें हिंदोस्तानको आये। फार्सी तथा हिंदोस्तानी भाषाभी खूब जानतेथे और बढ़ते २ गवर्नर जेनरलके पदको प्राप्त हुये थे। इन्होंने हिंदोस्तानमें अंग्रेजी अमल्दारी बहुत कुछ बढ़ाई। स ई १७८५ में नौकरी छोड़ इङ्गलैंड चले गये और वहाँपर उन अत्याचारोंके कारण, जो हिंदोस्तानमें रहिकर इन्होंने काशीनरेश चेतसिंहपर तथा अवधकी बेगमोंपर किये थे, पार्लिया मेंटने इनपर मुकद्दमा कायम किया। ८ वर्ष पर्य्यंत मुकद्दमा चला, अंतमें स ई १७९५ की साल निरपराध समझ साफ छोड़दिये गये। उक्त मुकद्दमेमें इनका बहुत खर्च हुआ था जिससे गरीब होगयेथे लेकिन थोड़े ही दिनबाद पार्लिया मेंटने ४ हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी। स ई १७३६ में जन्मे, स ई १८१८ में मरे।

होमर-(Homer)इस यूनानी कविके देश, काल तथा चरित्रोंकी निश्चय ठीक हाल ज्ञात नहीं होता। अनेक विद्वानोंकी सम्मति है कि यह स्मिरना की रहनेवाली एक अनाथ लड़कीके पुत्र थे। प्रसिद्ध ग्रंथ "इलियड" तथा "ओडेसी" इन्हीके रचेहुये हैं उक्त ग्रंथोका अनुवाद अंग्रेजीमें कविपोपने किया है। होमर अन्धे थे और इनसे पहिले यूरूपमें कोई दूसरा कवि नहीं हुआ। समय इनका स ई से प्राय ८०० वर्ष पूर्व है।

होलराय (कविहोल)-मुगलसम्राट् अकबरके दीवान राजा हरवंशराय इनका सत्कार करतेथे। हरवंशरायने जि० बाराबंकीमें इनको कुछ जमीन दीथी जिसपर इन्होंने अपने नामका होलपुर गाँव बसायाथा। एक दिन गो० तुलसी दासजी होलपुरमें होकर निकले, होलरायजीने उनकी बड़ी आउ भगतकी और उनके लोटेकी प्रशंसामें कहाकि-

" छोटा तुलसीदासको लाखटकाको मोल" ।

गुसाँईजीने यह सुनकर कहाकि–

"मोल तोल कछु है नहीं लेउ रायकवि होल" । होलरायजीने उस छोटेकी मूर्तिके समान स्थापनाकी और जबतक जीते रहे उसकी पूजा करते रहे । उक्त छोटा होलपुरमें अबतक मौजूद है । होलराय वि स १६४० में विद्यमानथे । ग्रामहोलपुर अबतक उनके वंशजोंके अधिकारमें है ।

हंसराज (हंसराज निदानके कर्ता)–इनकी कविता श्लोक बद्ध अति अनूठी है । श्लोक ऐसे ललित हैं कि जिनके पढ़ने तथा श्रवण मात्रहीसे चित्तको आनन्द होताहै । यह बड़े वैद्यथे । विशेष हाल इनका नहीं मालूम ।

ह्यूम (डेविडह्यूम–David Hume)–इस प्रसिद्ध इतिहासकारने बरविकशायर(इङ्गलेन्ड)के एक सभ्य मनुष्यके घर जन्म लेकर एडिनबरो (स्काटलेन्ड)के विश्व विद्यालयमें शिक्षा पाई थी । स ई १७३४ में बृस्टल नगरके किसी प्रधान कार्य्यालयमें क्लार्क (लेखक) होगयेथे लेकिन काव्य रचनाकी ओर अधिक रुचि होनेके कारण थोड़ेही दिनोंबाद नौकरी छोड़ फ्रांसको चले गये । इन्होंने बहुतसी पुस्तकें रची थीं जिनमेंसे इङ्गलिस्तानका इतिहास मुख्य है । यह अनेक प्रतिष्ठित सर्कारी ओहदोंपरभी रहेथे, अंतमें थोड़ीसी पेन्शन पाकर अपनी जन्मभूमिमें आरहे । इनके बाप बर विकशायरसे स्काटलैंडकी राजधानी एडिनबरोमें आबसेथे और वहींपर स ई १७११ में डेविड ह्यूमका जन्म हुआ था । स ई १७७६ में डेविडह्यूम सिधारे ।

ह्योई थसङ्ग–(Hiuen Thsang)–यह चीनीपथिक बौद्ध साधू था । स ई ६२९ में चीनसे चलकर फरगाना, समरकन्द, बुखारा तथा बल्ख होता हुआ हिंदोस्तानको आयाथा और इस देशको चारों दिशाओंमें भ्रमण करके स ई ६४५ में चीनको लौटगया था । इसने अपनी यात्राके ग्रंथमें लिखा है कि " उन दिनों काबुलसे लेकर बंगालतक और हिमालयसे लेकर सिंहलद्वीपतक सर्वत्र देश छोटे २ राज्योंमें विभाजित था । कश्मीर, मगध और उड़ीसाके सिवाय बौद्धमतकी दशा अन्य सब जगह गिरती हुई थी । भारतवासी मनुष्य सच्चे, विद्वान, शूरवीर, परिश्रमी तथा उद्योगी थे " ।

ह्योईथसङ्ग ने अपने यात्राके ग्रंथमें उस समयके अनेक छोटे २ राज्योंका भी, जिनके अब नामतक नष्ट होगये हैं, ब्योरेवार सविस्तर वृत्तांत लिखा है । प्रत्येक राज्यके सम्बन्धमें उसकी सीमा सहित लम्बाई चौड़ाई तथा फसलों और फल फूलोंका हालभी लिखा है । मनुष्योंकी सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था और रहिन सहिन ढङ्ग चाल इत्यादिकाभी वर्णन किया है । संक्षिप्त उक्त पुस्तकके देखनेसे भारतवर्षकी दशा जो स ई के सातवें शतकमें थी स्पष्ट मालूम होजाती है ।

क्षेमकरण मिश्र (कवीश्वर)—यह खरवरिया ब्राह्मण ग्राम धमौली तहसील रामसनेही घाट जि० बाराबंकीके रहनेवाले थे। पिताका नाम आधार मिश्र, पितामहका रूछीराम और प्रपितामहका नाम लाल मणि मिश्रथा। वि सं १८३५ में इनका जन्म हुआ, ७ वर्षकी अवस्थासे संस्कृत पढ़ना आरम्भकिय' कई बड़े २ पंडित विद्वानोंसे विद्यापढ़ी, पश्चात् बहुत दिनोंतक मथुरामें रहक पिंगल शास्त्राध्ययन किया। यह संस्कृत तथा भाषा दोनोंहीमें कविता करते थे। संस्कृतमें श्रीराम रत्नाकर वृत्त, रामास्पद, गुरुकथा तथा आह्निक इनके रचे ग्रंथ हैं। भाषामें रामगीतमाला, कृष्णचरितामृत, पदविलास, वृत्त भास्कर रघुनाथ घनाक्षरी, गोकुलचन्द्रमा तथा कथानका नामके ग्रंथ इन्होंने रचे थे इन्होंने अम्बाला, बड़ोदा तथा बम्बई आदिस्थानोंमें जाकर बहुतसा द्रव्योपार्जन कियाथा और गयाश्राद्ध, ब्रह्मभोज तथा ८ कन्याओंके विवाह धूमधामसे कर नेमें खूब खर्च किया था। अन्तावस्थामें १७ वर्ष पर्य्यंत अयोध्यावास करके क्षेमकरणजी वि सं १९१५ की साल परमधामको सिधारे।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास सेठ'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम् प्रेस बम्बई के मालिक)—आप साधारण रीतिसे अपना नाम खेमराज श्रीकृष्णदास लिखते हैं। आपके पिता श्रीकृष्णदासजी राजपुतानाके' शेखावाटी प्रदेशमें चूरू नगरके रहनेवाले थे। जन्म आपका कार्तिक सुदी ८ वि.सं १९१३में हुआ। लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण (बम्बई) के मालिक सेठ गंगाविष्णुजी आपके बड़े भाई थे। प्राय ३० वर्षसे आप कुटुम्बसहित बम्बईमें रहते हैं और आस्तिकता, सरलता, व्यापारकुशलता तथा देशहित इत्यादि दुर्लभ गुणोंके उदाहरण हैं। आपका जारी कियाहुआ "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" साप्ताहिकपत्र हिंदीके सर्वोत्तम समाचार पत्रोंमें है।

प्राचीन संस्कृत विद्या तथा मातृभाषा हिन्दीके उद्धारके लिये आपका पुस्तक प्रकाशनका व्यापार अत्यंत प्रशंसनीय है। इससे जगदुपकारके साथ २ लाखोंही रुपयेका नफा आपको हुआ है। हजारों संस्कृत तथा हिन्दीके दुष्प्राप्य प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथोंको छापकर तथा उनके तिलक रचवाकर और आवश्यकीय विषयोंपर नयेग्रंथ बनवाकर सर्व साधारणके लिये आपने ऐसी बड़ी सुलभता करदी है कि भारत भूमिमें पहिलेकी अपेक्षा अब बहुत कुछ विद्याकी वृद्धि देखनेमें आती है। बड़े २ राजे महाराजे बम्बई जानेके अवसरपर श्रीवें कटेश्वर प्रेसमें पधारते हैं, सेठजी उनका सन्मान करना अपना सौभाग्य समझते हैं और वहभी सेठजीकी उचित प्रतिष्ठा करके सर्व साधारणको देश हितकी उत्तेजना देते हैं। सेठजी स्वधर्मप्रिय पुरुष हैं बड़े नीतिनिपुण हैं। सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी आजदिन सं० १९६१ में तीन पुत्र और दो कन्याओंके पिता हैं। स्वास्थ्य अच्छा है और धन प्रतिष्ठा गौरव सुबुद्धि शान्ति सब कुछ प्राप्त है। ऐसेही उद्योगी सत्पुरुषोंका जीवन सफल कहाता है।

जीवन चरित्रस्तोम

(मदनकोष)

परिशिष्टभाग।

आकलैंड (जार्ज एडिनलार्ड आकलैंड—(George Eden Lord Auckland)—सन् ई १७८४ में जन्मे।हरहमके बेरोनेट,विलियम एडिनके तृतीय पुत्रथे ई स १८०६ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीसे ग्रेजुएट हुये। लार्डमिन्टो गवर्नरजनरल हिंदकी बहिनेसे आपकी शादी हुईथी। प्रथम बहुत दिनोंतक आपरलैंडके चीफ सिक्रेटरीरहेथे। १८३६ से १८४२ तक गवर्नरजनरल हिंदके पदपर काम किया। १८४८ में इङ्गलैंडमें परलोकगामीहुये। आप बड़े योग्य शासकथे, माल विभाग का प्रबन्ध आपने प्रशंसनीय कियाथा। लेकिन रूसियोंके भयसे दोस्त मुहम्मद की जगह बृटिश गवर्नमेंटसे मित्रता रखनेवाले शाहशुजाको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेके लिये अंग्रेजी फौज अफगानिस्तानमें भेजकर बैठेबिठाये जो अशान्ति आपने फैलाई उसके लिये आपका शासन इतिहासमें बदनामहै। अंग्रेजी फौज काबुल, कंधार तथा गजनीपर अधिकार करके १८३९ मे शाहशुजाको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेमें समर्थ हुई लेकिन प्रजाका मन मुट्ठीमें नहीं आसका क्योंकि वह लोग शाहशुजाको नापसन्द करतेथे। १ वर्ष तो काम बेखटके चलागया लेकिन १८४१ में दोस्त मुहम्मदके पुत्र अकबरखाँके उकसानेसे अफगानिस्तानकी समस्त प्रजाने उपद्रव उठाया और अंग्रेजी फौजको जो केवल १६००० थी घेरलिया। सर विलियम मेकनाटन साहब सेनापति गोलीसे मारेगये और बड़ी खुशामद दरामदके बाद अंग्रेजी सेनाको हिंदोस्थान वापिसआनेकी आज्ञा मिली। लेकिन अफगानिस्तानमें रहिनेके कारण वह बीमार और जाड़ेसे कड़कड़ाती हुई सेना दूर नहीं पहुंचने पाई थी कि असंख्य अफगानोंने टूटकर बड़ी निर्दयतासे उसको नष्ट करडाला। केवल घायल होकर डाक्टर ब्रिडन (Dr Brydon) साहबने फटेहालों कई दिनके फाकेसे एक अधमरे टट्टूपर ज्यों त्यों भागकर जलालाबादके किलेमें खबर पहुंचाई कि १६००० फौजमें केवल मैंही बचाहूं। यह खबर सुनकर अफसरों और सिपाहियोंकी आंखोंसे आंसू बहनेलगे और जहां २ यह खबर पहुंची सब

लोगोंने शोक मनाया। वास्तवमें यह शोक नहीं मिटसका जबतक कि लार्ड आकलैंडके उत्तराधिकारी लार्ड एलनबरोके शासनमें अंग्रेजी सेनाने काबुलपर चढ़ाई करके इस हत्याके बदलेमें अफगानोंके रक्तसे नदीनाले नहीं बहा दिये।

आलकट (कर्नेल यच यस आलकट–Col H S Olcutt)-अमेरिकन सिविल युद्धमें बड़ी वीरतासे लड़े । युद्धविभागके स्पेशल कमिश्नर रहे मेडमब्लेवैट्स्की थ्योसोफिकल सोसाइटी स्थापन करनेमें आपहीकी मददसे सफल हुई थी। स ई १९०५ में बूढ़े हैं और थ्यासोफिकल सोसायटीके प्रधान हैं।

एडीसन (टी ए एडीसन प्रसिद्ध आविष्कार–T A Edison, the famons inventor) उत्तरी अमेरिकामें ओहियोस्टेटके मिलन नामक नगरमें ११ फरवरी, १८४७ को जन्मे। अब न्युजर्सी (उत्तरीअमेरिका)में रहते हैं आपके पिताके वंशका निकास हालैंडका था और माताके वंशका निकास स्काटलैंडका। आप प्रथम टेलीग्राफका काम करतेथे । पश्चात् १८७१ से ७६ तक LawGold Indicator कम्पनीके सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे। निम्नस्थ आविष्कार आपने कियेहैं –

1 Gold and stock Prnting टेलीग्राफ

2 System for Quadruplex and sextuplex Teligraphic transmission

3 The carbon Telephone Transmitter (दूर बैठे बातचीत करने का यंत्र)

4 The Microtacimeter for detection of small variations (गर्मी और सर्दीके सूक्ष्मतर अन्तर जाननेका यंत्र)

5 The Aerophone and Magophone for amplifying and magnifying sounds (इस यंत्रके द्वारा अत्यंत मंदस्वर भी भारी आवाजके समान सुनाई देता है)

6 Electric pen (बिजलीका कलम)

7 Electric Railway (बिजलीकी शक्तिसे चलनेवाली रेलवे)

8 Kinetograph

9 Phonograph (इस यंत्रमें बातचीत अथवा राग भरकर, रबड़की नलियाद्वारा सुनाया जाताहै।

10 The Incandescent Light System (बिजलीकी रोशनी)

आसफजाह दशहजारी सिपहसालार खानखाना बहादुर–

(मुगल सम्राट शाहजहाँके मुख्यमंत्री)—आपका असली नाम ख्वाजा अबुलहसन था। आपकी बेटी मुमताज महल (ताजबीबी) की शादी शाहजहाँ (स ई १६२८–५८) के साथ हुईथी और बादशाह जहाँगीरकी बेगम नूरजहाँ आपकी छोटी बहिन थी। बहिनके साथ आपका कुछ बिगाड़था,इसलिये पहिले कुछ समय तक आपको बादशाहका कोपभाजन बनना पड़ाथा। फिर आपको बंगालकी सूबेदारी दीगई। पश्चात् मुख्य मंत्रीके पदपर तरक्की हुई और अटककी जागीर मिली।सिपह सालार महाबतखाँने स ई १६२७-२८में जब बादशाह जहाँ गीरको केदकर लियाथा तो उस अवसरपर आसफजाहने अटकके किलेमें भाग कर पनाह लीथी। महाबतखाँने किलेको घेरकर इनकोभी पकड़ लियो लेकिन शीघ्रही पंजाबकी सूबेदारीपर भेजदिया। उन्ही दिनोंमहाँगीरका देहात होगया और भाइयोंके मुकाबलेमें इन्होने शाहजहाँकी तख्तपानेके लिये मदद की शाहजहाँने तख्तपर बैठकर इनको अपना मुख्य मंत्री बनाया और ६ हजारी मनसब तथा "आसफखाँ" का खिताब दिया। पश्चात् "आसफजाह" का खिताब तथा दसहजारी मनसब इन्होंने पाया। फिर बीजापुरके नवाब आदिल शाहको परास्तकरके इन्होंने सिपहसालार खानखाना बहादुरकी उपाधि प्राप्त की। यह बड़े विद्वानथे। दिल्ली आगरा और काश्मीरमें इनके बड़े २ मकानथे। लाहौरमें मरे और जहाँगीरकी कबरके पास दफनाये गये। ढाई करोड़ रु० की जवाहरात छोड़ मरेथे।

एलर्जिन (विक्टर अलेक्जण्डर ब्रूस, यम ए, के. जी, जी सी यस आई, जी सी आई ई., पी सी, यल यल डी, डी सी यल, एलजिन और किन्न कारडाइनके ९ वें अर्ल–

१६ मई, स ई १८४९ की सालजन्मे। आपके पिता अष्टम अर्ल आफ एलजिन १८६२–६३ में वायसराय हिंदथे और उनका देहात हिमालय पर धर्मशाला नामक स्थानमें हुआथा। हमारे चरित नायककी शादी १८७६ की साल सौथेस्कके अर्लकी बेटी कान्स्टेन्ससे हुई थी। एटन और बेलियलकालिज आक्सफोर्डसे यम ये की परीक्षा पास की। १८८६में विक्टोरिया महारानीके घरेलू विभागके खजांची तथा कमिश्नर तामीरातका ओहदापाया। थोड़ेही दिनोंबाद फायफशायरके लार्डलफ्टिनेन्टका पद आपको मिला। १८९४ से ९९ तक वायसराय हिंदके उच्च पदपर रहे। सहवास सम्मति आईन आपहीके शासनमें जारी हुआ लार्ड एलजिन १९०५ म विद्यमानहैं। प्रसिद्ध लार्ड ब्रूस आपके पुत्रहैं। एनीविसेन्ट (सेन्ट्रल हिंदूकालिज बनारसकी संस्थापक) आप थ्योसोफिकल सोसाइ-

टियोंकी प्रचारक होकर देशदेशान्तरोंमें धर्मोपदेश करतीहैं। वैज्ञानिक तथा अवैज्ञानिक विषयोंपर अंग्रेजीभाषाम अनेक ग्रंथ आपके विरचित हैं। विलियम पेजवुड साहबकी पत्नी एमिलीकी कुक्षासे स० १८४७ की साल आपका जन्म हुआ। १८६७ की साल शिवसी (लिनकम शायर) के पादरी फ्रेंक विसेन्टके साथ शादी हुई। लेकिन ईसाई मतपर आपको विश्वासनहीं था, इसकारण १८७३में विवाहका बंधन टूटगया।पिता आपको बालक छोड़ मरे थे निदान एक धनाढ्य लेडी (उच्च घरानेकी स्त्री) के साथ शुभविद्या पठनार्थ आप इङ्गलैंडसे जर्मनी तथा फ्रांसको चलीगई थीं। विद्योपार्जन निजके तौरपर कियाथा पश्चात् विज्ञानकी प्रथम परीक्षा लन्डन यूनीवर्सिटिसे पासकी थी। १८७४ की साल जातीय साधारण समाजमें संयुक्त हुई और बहुत दिनोंतक प्रसिद्ध नास्तिक सरचार्लस ब्राडला यम पी के जीरी किये हुये पत्र "नेशनल रीफार्मर" का सम्पादन किया। १८८७ से ९० तक लन्डनके स्कूलबोर्डकी तथा कई अन्य सभाओंकी मेम्बर रहीं। १८८९ में मैडमब्लेटस्कीकी चेलीहोकर थ्यासों फिकल सोसाइटीमें शामिल हुई और तबसे उपदेश करती हुई दुनियाके प्रायःसब भागोंमें हो आई हैं। आपके उपदेशसे बहुतसे लोगोंने थ्यासोफी धर्म ग्रहण कियाहै। १८९८ में आपने सेन्ट्रल हिंदूकालिज बनारसकी बुनियादडाली और देश देशान्तरोंसे चन्दाकरके बहुतसा रुपया उसके व्यय निर्वाहके लिये जमा किया। भगवद्गीता आदि प्राचीन संस्कृत ग्रंथोंको विचारती रहतीहैं। मांस नहीं खाती हैं भाषण आपके चमत्कारिक होतेहैं। १९०५ में जीवित हैं। शुभ विद्या विषयक अनेक ग्रंथ आपने बनाये हैं।

एतमादुद्दौला मिर्जाग्यास (मलिका नूरजहांके बाप) इनका असली नाम ख्वाजा ग्यासवेग था। बाप इनके मुहम्मद शरीफुद्दीन खुरासानके रहनेवाले थे और शाह ईरानके दर्बारम मन्त्री थे। पिताकी मृत्युके पीछे ग्यास गरीब होकर हिंदोस्थानको स्त्रीबच्चों सहित नौकरीकी तलाशमें पैदल चले। रास्तेमें इनके एक लड़की हुई जिसका नाम मेहरुन्निसा रखा। आगरा पहुंचकर बादशाह अकबरकी फौजम तीनसौकी मनसबदारी इनको मिलगई और फिर तरक्की पाकर काबुलके सूबेदार हुये। पश्चात् कमिसेरियट विभागके कम्प्ट्रोलर जेनरल का ओहदा और एतमादुद्दौलाका खिताब आपको मिला। बादशाह अकबरके बाद जहांगीरने तख्तपर बैठकर आपकी बेटी मेहरुन्निसा (नूरजहां) को अपने हरमम दाखिल किया और आपको मुख्यमंत्रीका पद तथा छः हजारी मनसब दिया। आप बड़े दानी और दिलेर थे। फारसीमें गद्यरचना अच्छी करतेथे। बादशाहके साथ कश्मीरको जातेहुये १००१ हि० की साल रास्तेमें मरगये। आपका मकबरा "एतमादुद्दौलाका इमामबाड़ा" आगरामें मशहूर

विद्यमानहैं और दर्शनीय इमारतोंमें गिनाजाताहै। सम्राट शाहजहाँके मुख्य मंत्री आसफ़शाह आपके पुत्र थे ।

ऐम्हर्स्ट (विलियम लार्ड ऐम्हर्स्ट William Lord Amherst) बाथनगर (इङ्गलैंड) में स०ई० १७७३ की साल जन्मे। पिता आपके विलियम ऐम्हर्स्ट नामक थे। क्रायस्ट चर्च कालिज, आक्सफोर्डसे एम०ए० पास किया कालिज, छोड़नेके बाद यूरोपमें भ्रमण करके अनेक मुल्कोंकी भाषायें सीखीं तथा वहांकी रीति रसम आदिका अनुभव प्राप्तकिया । १७९७ में आपके चचा प्रथम लार्ड ऐम्हर्स्टका देहांत हुआ और आपने उनका खिताब पाया। पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेंटने राजदूत बनाकर आपको चीनदर्बारमें भेजा। क्रमशः अनेक और उच्च पद पाये । फिर गवर्नर जनरल हिन्दका ओहदा आपको मिला जिसपर १८२३ से २८ तक रहे। इङ्गलैंड वापिस जाकर १८२९-३० में बादशाह जार्ज चतुर्थकी और १८३०-३३ में बादशाह विलियम चतुर्थकी सेवामें लार्ड आफ दी बेड-चैम्बरका पद पाया। १८३४ में नायट (Kt) का खिताब पाया। १८३५ में गवर्नर जेनरल, कनाडाका पद आपको दियागया लेकिन आपने अस्वीकार किया। १८३७में आपकी स्त्री मरी। १८३९ में दूसरी शादी की। १८५७ में परलोकगामी हुये।

आपका हिंदोस्थानी शासन प्रथम ब्रह्मायुद्ध और भरतपुरका किला विजयकरनेके लिये प्रसिद्ध है । १८२४ में ब्रह्माके राजा अलोम्पड़ाने बंगालके अंग्रेजी जिलापर हाथ फेंकना शुरूकिया । जब समझानेपर भी उसने नहीं माना तो लार्ड ऐम्हर्स्टने लड़ाईका इश्तिहार जारी किया। ३ तरफसे अंग्रेजी फौजोंने ब्रह्माको घेरा । २ वर्षसे अधिक तक युद्धचला गवर्नमेंटकी २० हजार सेना नष्ट हुई और १४ करोड़ रुपये खर्च पड़े। अंतमें अंग्रेज जीते और ब्रह्माके राजाने १८२६ में यानेडबूकी सन्धि स्वीकार की जिसके अनुसार उसका आसामपर कुछ अधिकार नहीं रहा और आराकान तथा टेनासेरिम अंग्रेजोंको मिले। इसके कुछ ही महीनेबाद १८२७ की साल भरतपुरमें गद्दीके वास्ते झगड़ा फैला। यह सुअवसर पाकर लार्ड ऐम्हर्स्टने लार्ड कोम्बर मियरको भरतपुरपर चढ़ादिया। लार्ड कोम्बर मियरने सुरंग लगाकर भरतपुरके किलेको उड़ादिया जिससे भारतवासियोंके दिलोंमेंसे उक्त गढ़के अभय होनेका गुमान निकलगया।

ओयामा (मार्क्विस ओयामा जापानी साम्राज्यके सर्वोच्च सेनाध्यक्ष-Marquis O'yama, Field Martial of Japan)-जापानके प्रतिष्ठित

समुराई वंशमें स॰ई॰ १८४४की साल जन्मे फ्रान्सदेशमें शिक्षापाकर फ्रांसवर्षमें स्थित जापानी राजदूतके सैनिक अफसरका पद पाया। आपके वंशमें वीरताका काम पहिलेहीसे होता आता है। आप बड़े कुरूप लेकिन लम्बे चौड़े हृष्टपुष्ट हैं और आपकी सुंदर, सुशीला, सुशिक्षिता, गर्वहीन है और अमेरिकाके एक कालेजमें शिक्षा प्राप्त किये हुये है। फ्रांससे लौटनेपर जापानके सेनाविभागमें एक ऊंचा पद आपको दियागया। कुछ समय पीछे आपकी बुद्धिमान देखकर जापानी सरकारने यूरोपके देशोंसे युद्धपद्धति सीख आनेके लिये भेजा। यहांसे लौटकर यमागाटाके आधीनतामें आपने जापानी सेनाका प्रशंसनीय सुधार किया। पश्चात् क्रमशः युद्धविभाग और जलसेनाके प्रधान रहे। शिक्षाविभागके मंत्रीका भी काम किया। १८९४ में युद्धविभागके मंत्रीका पद पाया। चीन जापानके संग्रामके समय जापानी सम्राटसे आज्ञा लेकर युद्धमें सम्मिलित हुये और अपनी १० हजार सेनाके साथ बड़ी बहादुरीसे लड़कर पोर्ट आर्थर टेलवर्ड और टिलिनवानमें अधिकार किया। चीनयुद्धके पश्चात् आप जापानी साम्राज्यके अत्यंत प्रिय कर्मचारी होगये पहिले कौन्ट, फिर मार्क्वसकी उपाधि पाई और जापानी साम्राज्यके सर्वोच्च सेनाध्यक्षका पद पाया। सेनाको सुयोग्य बनानेके लिये सैनिकोंपर बड़ी दृष्टि रखतेहैं और अन्याय नहीं करतेहैं। निम्नकर्मचारी तथा सैनिक आपपर विश्वास रखतेहैं और आदरणीय मानते हैं। रूस जापानयुद्धमें जो १९०४ ०६ में हुआ आपहीने पोर्ट आर्थर, मंचुरिया, मुकदन इत्यादिको फतेह करके रूस जैसे बृहत् साम्राज्यकी सेनाके धुर्रे उड़ादियेहैं जिससे दुनियांभरको दांतोंमें अंगली दाबना पड़ी।

कर्जन (जार्ज नैथेनियल कर्जन, एम ए., जी एम एस आइ, जी एम आई ई, पी सी, एफ आर एस, जे पी., डी एल केडिल्सटनके प्रथम बैरन (George Nathaniel Curzon, M.A. G.M.S.I, G.M.I.E., P.C, F.R.S, J.P, D.L, 1st Baron of Kedleston)— ११ जनवरी, स॰ ई॰ १८५९ की साल स्कार्सडेल तथा ल्हार्डीके चतुर्थ बैरन रेवरेन्ड एल्फेड नैथेनियल होल्डेन कर्जनके घर केडिल्स्टन (आयरलैंड) में जन्मे। एटन और बैलियल कालेज आक्सफोर्डमें एम ए. तथा डी एल की परीक्षायें उत्तीर्णकीं। १८९५ में वाशिङ्गटन (अमेरिका) के एक रईसकी परम सुंदरी बेटी मेरी विकटोरियानामकसे शादी की। आप पहिले ब्रिटिशगवर्नमेन्टकी सेवामें १८८० की साल यूनीयनके प्रेसीडेन्ट हुयेथे। १८८५ में सुप्रसिद्ध लार्ड सालिसबरीके मंत्रीके प्रायवेट उपमंत्रीका पद पाया और उसी साल डर्बी शायरकी तरफसे पार्लियामेन्टकी मेम्बरीके लिये कोशिश की। १८९१ से ९२

तक उपमंत्री आफ स्टेट रहे। १८९५ से ९८ तक विदेशी मामलातके उपमंत्री आफ स्टेटके पदपर काम किया और मध्य एशिया, इरान अफगानिस्तान पामी रपर्वत स्यामद्वीप, इन्डो चायना तथा कोरियामें भ्रमण करके पूर्वीय देशोंका अनुभव प्राप्त किया तथा राजकीय भौगोलिक सभाकी तरफसे सोनेका पदक पाया। १८८३ में लोथियन प्रबन्धका इनाम (Iothian essay prlze) और १८८४ में आर्नल्ड प्रबन्धका इनाम (Arnold essay prize) भी आपको मिलाथा। १८८३ में आलसोल्स कालिज आक्सफोर्डके मेम्बर हुये और १८८६ से ८९ तक सौथ पोर्ट (लंकाशायर) की तरफसे पार्लियामेन्टके मेम्बर रहे। १८९९ से १९०५ तक वायसराय हिन्दके पदपर नियुक्तरहे। यह पद इस समय पृथ्वीके राज्यकर्मचारियोंमें सर्वोच्च गिनाजाताहै। आपके शासनमें इस देशमें निरन्तर अकाल और महामारी फैलीरहीहै लेकिन आपने देशके इन दोनों शत्रुओंका प्रबन्ध भी प्रशंसनीय कियाहै। यूनीवर्सिटी कमीशन, पुलिस कमीशन, आबपाशीकमीशन, कृषिकमीशन आदि कई कमीशन नियत करके और तिब्बतको शान्तिमिशन, काबुलको राजनैतिक मिशन और ईरानको व्यापारी मिशन भेजकरके आपने साम्राज्यकी सीमा दृढ करने गवर्नमेण्टका बल प्रभाव बढ़ाने और अनेक प्रकारसे प्रजाका हित साधन किया। रेलवे आपके समयमें बहुत बढीहै, यूनीवर्सिटी ऐक्ट जारी हुआहै प्रजापरसे कई कर घटाये गयेहैं, किसानोंके हितकर २।३ आईन पास हुयेहैं, सैनिकोंका वेतन बढ़ाया गयाहै और सुपकेसे कई देशी राजाओंने राज्य से इस्तीफाभी देदियाहै। राजनीति आपकी विलक्षण है और आप अनुभवी विद्वान तथा सुप्रसिद्धवक्ता हैं। भाषण आपके माधुर्यतासे भरपूर होतेहैं। साम्राज्यको दृढ करने और गवर्नमेण्टका दबदबा बढ़ानेके साथ २ प्रजाका हित करनेमें आप अपना कर्तव्य समझतेहैं १९०२ में राजराजेश्वर एडवर्डसप्तमके राज्याभिषेकके अवसरपर आपने दिल्लीमें एक प्रभावोत्पादक वृहद् दर्बार कियाथा जो इतिहासमें अद्वितीय है। आपके शासनमें नहरें, रेल्वे, सड़कें अस्पताल और तार बढानेके लिये करोंड़ो रुपयेकी मन्जूरी दीगई। मुसाफिरोंके आरामकी बातें सोचनेके लिये रेलवे बोर्ड नियत कियागया। शिक्षा विभागके लिये डैरेक्टर जेनरलका पद स्थापन किया स्कूलमास्टरों, पुलिसवालों और सेक्रेटेरियट आदिके क्लर्कोंका वेतन बढ़ाया। फौज बढ़ाई। सेनापद्धतिका संशोधन किया। काबुल तथा तिब्बतके पड़ोसी राज्योंसे सीमा दृढ करनेके लिये मेलजोल बढ़ाया। राजा प्रजाकी सुविधाके लिये आसामकी चीफकमिश्नरीमें बंगालका कुछ भाग मिलाकर नई लफटिनेन्ट गवर्नरी नियत की। भारतके शिल्प व्यापारको असाधारण उत्तेजना दीगई शिल्प व्यापार सम्बन्धी एक नया विभागभी स्थापन कियागया पूसामें कृषिका

ट्टिस खोला। प्राचीन स्थानोंकी रक्षाके लिये भी एक नया विभाग स्थापन किया डाक,तार नमक इत्यादि विभागोंका महसूल घटाया ५० लाख पौंडसे अधिक लगान माफ किया। किसानोंके करका बोझा घटाया ३ करोड़ रुपया ब्याजका छोड़ा। इस प्रकार हमारे दयालु वायसरायने अनगिनती सुधार किये और २० करोड़ रुपयेसे अधिक भारतकी प्रजाका चार अपने शासनमें घटाया यह सब करनेपर भी बड़ी भारी प्रशंसाकी बात यह है कि, सर्कारी आमदनी घटनेके बजाय बढ़ी और खजानेमें बचत रही। लार्ड कर्जनकी राजनीति अत्यु च्छ्रेणीकी है। आप राजा प्रजाके सच्चे हितचिन्तक हैं आपसरीखा दूसरा वायसराय हिंदोस्थानमें नहीं आया। स ई १९०५ में इस्तेफा देकर विलायत चलेगये। निम्नस्थ ग्रंथ आपके रचेहुये हैं-1 Russia in Central Asia (1889) 2 Persia and the Persian Question (1893), 3. Problems of the Far East (1894)

किचनर (हर्बर्ट होरे शियो किचनर, जी सी बी, जी सी एम जी, लार्ड of खर्तूम-Horatio Herbert Kitchner, G C B, G C M G, 1st Baron of Khartum)-स ई १८५० की साल आयरलैंडमे जन्मे। आपकेपिता एच एच किचनर ब्रिटिशसेनामे लफ्टिनेन्ट कर्नैल थे। वुलविच नगरकी Royal marine Academy नामक पाठशालामें शिक्षा पाकर रायल इंजिनियर हुये उन्नतिकरके १८९६ में मेजर जेनरलके पदपर पहुंचे और १९०० में दक्षिणी अफरीकामें बृटिश सेनाके कमांडर इन चीफ हुये। आप वीरताकी मूर्तिहैं, युद्धकौशल आपका अलौकिक है। आतंक इतना है कि सैनिक आपके नामसे कांप उठतेहैं, देर्वेशोंके युद्धमें फराशीसोंको परास्त करके मिसरमें अँगरेजोंका विजयध्वज आपहीने फहराया खर्तूम को विजय कर अंग्रेजोंकी कीर्तिको आपहीने उज्वल किया है जेनरल गार्डनके वधका बदला आपहीने लियाहै। लार्ड रावर्टसके इङ्गलैंड चलेजानेपर ट्रांसवालका विजय भी आपहीने कियाहै। अस्तित आप मिसर और दक्षिणी अफरिकामें बृटिश राज्यके पदलिवाकेहैं। ऐसी महत्सनीय राजसेवाके बदलेमें, (१) बृटिशराज्य तथा प्रजाने आपका सत्कार किया है (२) पार्लियामेन्टने दोदके आपकी स्तुति कीहै (३) सम्राट एडवर्ड सप्तमके साथ भोजन करनेका सम्मान् आपको मिला है (४) एक लाख रुपया इनाम आपको दियागया है (५) जी सी बी., जी सी. एम जी, और लार्ड आफ खर्तूमकी उपाधियें आपको

दीगईहैं (६) १९०२ की साल भारतके कमाण्डरइन चीफ अर्थात् प्रधान सेनाध्यक्षका उच्च पद आपको दियागयाहै। नई सैनिक योजना आपहीके समयमें हुई है। १९०५ में आप ५५ वर्षके हैं लेकिन् शादी नहीं कीहै। आप शिक्षाप्रचारकेभी समर्थक हैं। गाडन् कालिज खर्तुम आपहीका स्थापितहै।

कार्न वालिस (चार्लस) मार्कुयस आफ-कार्नवालिस- Charles, Marquess of Cornwallis) -इङ्गलैंडके एक प्रतिष्ठित अमीर खान्दानमें सन् १७३८ की साल जन्मे। एटन और कैमब्रजके कालिजोंमें शिक्षा पाई और पिताके मरनेपर अर्ल आफ-कार्नवालिसका खिताब पाया। १७१८ में बृटिश सेनामें भरती होकर कैप्टिन हुए और शनैः २ उच्च पदपर पहुँचे, १७७६ की साल उस युद्धपर जो अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्तकरनेके लिये बृटिश गवर्नमेंटसे ठानाथा भेजेगये।इस युद्धके अन्तर्गत अनेक छोटीमोटी लड़ाइयोंमें आपने विजय प्राप्त की लेकिन अन्तको यार्कटाउनकी लड़ाईमें संयुक्तरियासतोंके कमांडर-इन चीफ जेनरल वाशिंटनसे परास्त होगये। १७८६ से ९३ तक हिंदोस्तानके कमाण्डर-इन- चीफ तथा गवर्नर जेनरल रहे। आपके शासनमें बंगलोर विजय हुआ, कलकत्तेमें निजामत सदर अदालत स्थापितहुई, प्रत्येक जिलेमें कलेक्टर और जज नियुक्तहुए, जमीन्दारों द्वारा जमाबन्दी वसूल करनेका सदैवके लिये दृढ प्रबन्ध कियागया। और १७९०-९२ में द्वितीय मैसोर युद्ध हुआ जिसमें मैसूरके टीपू सुल्तानने हारकर युद्धके खर्चका ३ करोड़ रुपया दिया और उसका आधा राज्य अंग्रेजों तथा उनके साथी मरहटों और हैदराबादके निजामने आपसमें बांटलिया। इस युद्धमें बड़ी सज धजसे लार्ड कार्नवालिस स्वयं सयुक्त हुएथे जिससे औरंगजेबके समयका रसद इत्यादिका प्रबन्ध याद आताथा। कई महीने पीछे शासनकी अवधि पूरी होनेपर इङ्गलैंड वापिस गये और मार्कुयसका खिताब पाया। उस समय हिंदोस्तानमें अंग्रेजी राज्य केवल बंगाल आसाम उत्तरीयसर्कार और बम्बई तथा मद्रासके निकट वर्ती समुद्रतट पर्के स्थानापर था। पश्चात् जब अनेक युद्धोंके खर्चसे जो निरन्तर लार्ड वेलिजली गवर्नर जनरल हिन्दके १० वर्षके शासनमें होतेरहे, अंग्रेजी खजाना खाली होगया तो ईस्ट इण्डियाकम्पेनीके डैरेक्टरोंने दूसरीदफे आपको गवर्नर जनरल नियत करके हिंदोस्तानमें भेजा और आज्ञा दी कि जिस्तरहहोसके युद्धकी अग्नी शान्तकरना। हिंदोस्तान पहुंचनेसे केवल १० हफ्ते पीछे १८०५ की साल पश्चिमोत्तरदेश (संयुक्तप्रान्त) में सौराघरसहुन गाजीपुरमें ज्वरसे लार्ड कार्नवालिसका देहान्तहुआ।

कैलासचंद्र शिरोमणि भट्टाचार्य, प महामहोपाध्याय-आप संस्कृत कालिज बनारसमें सीनियर प्रोफेसरहे । स ई १९०४ में अधिक वृद्ध होगयेहैं, पालकीपर सवार होकर कालिजमें पढाने आतेहैं । १८२९ मे पं घनश्याम सार्वभौम भट्टाचार्य्य बंगाली ब्राह्मणके घर जिला वदवानमें जन्म । आपकी समान न्यायदर्शनका ज्ञाता विद्वान् इस समय हिंदोस्थानमें विरलाही होगा । " सूत्रकी व्याख्या " नामक पुस्तक आपकी विरचित है । बनारस कालिजके मासिकपत्र " पंडित " में आपने संस्कृतके अनेक प्राचीन ग्रंथ सम्पादन करके छपवायेहै । गवर्नमंटने पं. महामहोपाध्यायकी उपाधिसे आपको विभूषित कियाहै । रहिनसहन पुराने ढंगकाहै ।

कृष्णचन्द्रसिंह-(महाराजा नदिया) आपके बापका नामरघुरामया महाराजाका खिताब आपको मुगल बादशाह दिल्लीने दियाथा । काशीसे पंडित बुलाकर आपने वाजपेय तथा अग्निहोत्र यज्ञ १२ लाख रुपयेके खर्चसे किये यज्ञके अन्तमें पंडितोंने आपको "अग्निहोत्री वाजपेयी श्रीमं महाराज राजेंद्र" की उपाधि प्रदान की थी । नदिया (नवद्वीप) आपके समयमें न्यायदर्शनकी यूनीवर्सिटी गिनाजाताथा उन सब छात्रोंके लिये जो नदियामें दूर२ से पढनेको आतेथे आपने छात्रवृत्तियें नियतकी थीं । पंडित विद्वानोंको हजारों जागीर तथा मिल्कें आपने दी थीं । बंगालमें अबतक प्रसिद्धहै कि "जिसने कृष्णचंद्र सिंहका दान नहीं पाया वह ब्राह्मणही नहीं" । आप संगीत तथा शिल्पविद्याके प्रचारकथे ज्ञानवापीकूप बनारसकी सीढियें आपने बनवाई थी । दो लाख रुपयेके खर्चसे पितृश्राद्ध कियाथा। बंगालमें जगद्धात्री पूजा जो प्रतिवर्ष अक्टूबरके महीनेमें हुआ करतीहै । आपहीकी जारीकीहुई है । १७५७ में पलासीके युद्धके अवसरपर अंग्रेजी जेनरल लार्ड क्लायवको मदद देकर आपने राजेंद्र बहादुरकी उपाधि पाईथी । ७० वर्षकी उमरमें परलोकगामीहुये और महाराजा शिवचंद्रसिंह आपके उत्तराधिकारी हुये । तंत्रसार ग्रंथके रचयिता तथा बंगालमें कालीपूजाका प्रचार करनेवालेवाजकपंडितकृष्णानन्द सार्वभौम उपनाम आगमवागीश आपहीके दुबारमें थे । आनन्दमंगल" और विद्यासुंदर" नाटकोंके कर्त्ता पं० भारतचंद्रभी आपहीके दर्बारको सुशोभित करतेथे ।

कृष्णराजेंद्र ओडेयर, महाराजा बहादुर, जी सी एस आई (मैसूरनरेश) आप महाराजा चामराजेंद्र जी सी एस आई के पुत्र हैं । स. ई १८८४ में जन्में । १८९५ मे पिताके परलोकगमनकरनेपर मैसूरके गद्दीपर बैठे । वरदवानके

झाला राना विमयसिंहकी राजकुमारीसे विवाह किया। १९०२ की साल मैसूरमें दबार करके लाड कर्जन घायसराय हिंदने राज्यके पूर्णअधिकार आपको सौंपे नाबालिगीकी हालतमें राज्यप्रबन्ध आपकी माता वाणी विलास और आपके पिताके दीवान सरशेषाद्रि ऐयर करतेरहेथे। राज्याभिषेकके स्मारकमें एक शिल्पविद्यालय और एक अनाथालय राजधानी मैसूरमें खुला। इस राज्यमें ३० हजार वर्गमील भूमिहै, प्राय ५० लाख आबादीहै और आमदनी प्राय दो करोड रुपया वार्षिक है। यह राज्य एक आदर्श देसी राज्य है,अंग्रेजों की बस्ती इसमें बहुतहै और यहांका प्रबन्ध उत्तमहै। सालभरमें एक दफे राज्यकी प्रजाके, ४०० चुने हुये प्रतिनिधि शासन परिपाटीकी जाँच करके त्रुटियोंको दूर करतेहैं। अपने पिताके किये हुये सुप्रबन्धोंमें आपने कुछ हस्तक्षेप नहीं किया है।

गंगाधर शास्त्री तैलंग, पं० महामहोपाध्याय, सन् १८५०में काशीमें जन्मे आपके पिता नरसिंहशास्त्री तैलंग ब्राह्मण घरबार सहित बंगलौरसे काशीमें उठ आयेथे। पं० राजारामशास्त्री और बालशास्त्रिसे आपने विद्या पढ़ी।काव्य षट्दर्शन में अपूर्व योग्यता रखते हैं। संस्कृत श्लोक अच्छे बनातेहैं। यह भी कराना जानते हैं अनेक शिष्योंको पढ़ाकर आचार्यपरीक्षा पास कराई है। गवर्नमेंटने अपार विद्याके कारण आपको पं० महामहोपाध्यायकी उपाधि दीहै। नित्यनैमित्तिक कर्मानुष्ठानसम्पन्न सदाचारी ब्राह्मण है। रहन सहन पुराने ढंगका है। कई पुत्रोंके बाप हैं। वाचस्पति मिश्रकृत "न्यायभाष्य" और जगन्नाथपंडितराजकृत "रसगंगाधर" का सम्पादन आपने किया है। शाश्वतधर्मदीपिका नामक ग्रंथ भी आपहीका संग्रहीत है। संस्कृतकालिज, बनारसके मासिकपत्र "पंडित" को लेखोंद्वारा सहायता देतेहैं। संस्कृतकालिज, बनारसमें प्रोफेसरका पद आपको प्राप्तहै। १९०५ में अधिक पठन पाठनके कारण कुछ अशक्तसे होरहेहैं।

ग्रिअर्सन(—जी ए. ग्रिअसन, बी ए,सी आई ई G A Grierson, B A, O I E) आयरलैंडकी राजधानी डबलिनके समीप ग्लेनाजियेरी नामक कसबेम ७ जून सन् १८५०को जन्मे। जार्ज ऐबरहेम ग्रिअर्सन एल एल डी आपके पिता थे। श्रूजबरी और ट्रिनिटी कालिज डबलिनमें शिक्षा पाकर बी ए. और फिलासोफर आफ, डिवीनिटी (Ph D) के इम्तिहान पास किये। गणितशास्त्रमें बड़ी योग्यता (Honors) प्राप्त की। हिन्दोस्थानीभाषा तथा संस्कृतके लिये वजीफा पातेरहे १८७३ की साल सिविल सर्विसम नियत

होकर हिंदोस्थानको आये और असिस्टेन्ट कलेक्टर मेजिस्ट्रेटका पद पाया।१८८० में विहार प्रदेशमें स्कूलोंके इन्स्पेक्टर हुए। १८८७ में गयाके कायम मुकाम कलेक्टर हुए। १८९३ में हावड़ाके मेजिस्ट्रेट हुए। १८९६ में पटनाके पेट्टीशनल कमिश्नर हुए और उसी साल सूबे बिहारमें अफीमके एजेन्टके पदपर पहुँचगये। अनेक देशीभाषाओंकी जाँच पड़तालके लिये १८९८ में गवर्नमेन्टने आपको स्पेशलडयुटीपर नियत किया। अंतमें विलायत गये। लिन्डर्स्ट (किम्बरली) में रहतेहैं। १९०७ में जीवितहैं। नाना भाषाओंके सीखने और ग्रंथरचनेका अनुराग है।ग्रंथरचनाके उपलक्षमें गवर्नमेन्ट आपको सी आई ई की उपाधि दीथी। एशियाटिक सोसायटी बंगालके, रायल एशियाटिक सोसाइटीके फोल्कलोर सभा और कलकत्ता यूनीवर्सिटीके सभासद् हैं। निम्नस्थ अंग्रेजीग्रंथ आपके विरचित हैं-

१ मैथिली भाषाका व्याकरण
२,विहारप्रदेशकी, सात भाषाओंके व्याकरण
३ " के किसानोंका रहन सहन
४ हिंदोस्थानी काव्यका इतिहास
५. बिहारीकी सतसईका अनुवाद
६ काश्मीरी व्याकरणपर प्रबन्ध

गुरुदासबनर्जी जस्टिस,सर ,एम डी ये. एल , नाइट (स्वधर्मानुरागी थे ई १८४४में जन्मे। अनेक महत् पुरुषोंके सदृश केवल ३ वर्षकी उमरमें आपमें पितृहीन होगयेथे। पढाने लिखानेकी चेष्टा जननीको करनेको पडीथी जो ईश्वर से डरनेवाली होकर इस समयमें दुर्लभ थी। माताकी ईश्वरभक्ति और धर्मनिष्ठाका अक्षय प्रभाव आपके स्वभावपर पडाया और इसी कारण पवित्र शिक्षासे उत्पन्न धर्मसम्बंधी उदासीनतासे इस विषम कालमें आपका धर्माचरण सर्वथा निष्कलङ्क रहसका। कितने सन्तोषकी बात है कि, यह भाग्यवती माता अपने पुत्रको हाईकोर्टका जज होते देखनेको और स्वदेशवासियोंके चित्तमें स्रऽर्थाके प्रतिष्ठा व प्रेम पानेका अनुभव करनेको प्रचुरकाल तक जीवित रहीथी। प्रेसीडेन्सीकालिज कलकत्तेसे २१ वर्षकी उमरमें आपने एम ये पास किया और एक ही वर्ष पीछे आइनकी बी एल परीक्षा उत्तीर्णकी। मट्रीकुलेशन और एफ ये की परीक्षाओंमें भी आपका नम्बर यूनीवार्सिटीभरमें प्रथम आयाथा। बी एल की परीक्षा पासकरनेके पीछे बेरहामपुर (बंगाल) में वकालत करना आरंभ किया और वहांके कालिजमें आइनके अध्यापकका पद पाया। १८७२की साल कलकत्ता हाईकोर्टमें वकालत करनेको आये। इससे

५ वर्ष बाद आईनकी डी यल परीक्षा उत्तीर्ण की और टागोर-ला प्रोफेसरका पद पाया। नवयुवकाके धर्म, शिक्षा, लोकाचार इत्यादिके हितसाधनका आपको दृढ अनुराग है। कई वर्ष तक सभासद रहनेके उपरान्त १८७९ की साल कलकत्ता विश्वविद्यालयम सर्वोच्चस्थान जिसतक हिंदोस्थानी पहुँचसकतेहैं आपको प्राप्तहुआथा अर्थात् आप उक्त विश्वविद्यालयके वायस-चैनसेलर नियत कियेगयेथे। इस स्थितिमे जो बहुमूल्य सेवा आपने कीथी उसका स्मरण भविष्यमें होनवाली कई पीढीतक रहेगा। १८८७ की साल आप बंगालकी व्यवस्थापक सभाके मेम्बर बनायेगये और प्रौढ-स्वतंत्र निर्णयशक्ति सम्पन्न होनेके कारण विख्यात हुये। १८८८ मे कलकत्ता हाईकोर्टके जजका उच्च पद आपको प्राप्तहुआ। इस स्थितिम जो सफलता और ख्याति आपने प्राप्त की उसके लोक विदित होनेके कारण इस क्षुद्र निबन्धम लिखनेकी आवश्यकता नहीं हो। १९०२ में लार्ड कर्जनके विश्वविद्यालयसम्बधी कमीशनमे आपकी नियुक्ति हुई। दो हिंदोस्थानी मेम्बरोंमेसे एक आप थे। यहां आपकी कर्तव्यपरायणता सत्यशीलता तथा सामर्थ्यका विकाश हुआ और जब कमीशनके सहाकारी फिरंगी मेम्बरोंसे आपकी राय विपरीत पडी तो बेधडक आपने भिन्नमतका लेख पेश करदिया जो यूनीवर्सिटीयेक्टकी कडाई बहुत कुछ घटानेमें समर्थहुआ। १९०४ की साल १५ वर्ष पर्यंत न्यायाधीशके आसनपर बैठकर ५९ वर्षकी उम्रमें आपने पेन्शन लीजब वायसरायने पेसी जल्द राज्यसेवासे अलग होनेका कारण पूछा तो आपने उत्तर दिया कि मेरी उम्र बहुत होनेआई, अब मुझको जीवनका शेषभाग शास्त्राध्ययनमें बिताना चाहिये और अपनेसे कनिष्ठोंकी उन्नतिका मार्गभी नहीं रोकना चाहिये।

अब आप अपना वह पौरुष जिसकी अभी आपमें कमी नहींहै पूर्ववत् अधिक स्वतन्त्रताके साथ परमात्मा तथा स्वदेशकी सेवामें लगावगे। गवर्नमेन्ट तथा प्रजा दोनोंहीका आपपर सदैव विश्वास रहाहै। राजराजेश्वरने आपकी सेवाको स्वीकार करके नायट (Kt.)की उपाधिसे आपको विभूषितकिया है। हालमें आपने शिक्षाविषयक एक पुस्तक रचीहै जो मनोहर और आध्यात्मिक है। आपके चरित्रसे विदित होताहै कि, किसतरह कोई हिन्दू अल्पुरुषश्रेणीकी शिक्षा पाकर आयुष्पद पाताहुआ, राजा तथा प्रजाका समान रीतिसे विश्वासपात्र रहकर निपुण सत्यधर्मावलम्बी हिन्दू रहसकताहै।

ग्रिफिथ (आर टी यच ग्रिफिथ, यम ए, सी आई ई-R T H Griffith, M A, C, I. E.) कोर्सली (विल्टशायर)में २५ मई

१८२६ की साल जन्मे पिता आपके रेवरेण्ड आर. सी ग्रिफिथ यम ए. कोर्सली (विल्टशायर) में रेक्टर (Rector) थे। क्रीस्ट काॅलिज आक्सफोर्डसे बी ए की परीक्षा १८४६ में और यम ए की परीक्षा १८४९ में उत्तीर्णकी। संस्कृतके प्रोफेसर यच यच विल्सन साहबसे आक्सफोर्डमें संस्कृत पढी। १८४९ से ५१ तक मार्लबरो काॅलिजके आसिस्टन्ट मास्टर रहे। १८५४ से ६१ तक क्वीन्सकालिज, बनारसमें अंग्रेजीभाषाके प्रोफेसर रहे। १८६१ से ७८ तक क्वीन्सकालिज, बनारसके प्रिन्सीपेल रहे। १८७० से ८५ तक पश्चिमोत्तर देश व अवध (युक्तप्रान्त) में शिक्षाविभागके डैरेक्टर रहे। १८८५ में गवर्नमेंटने सी आई. ई. की उपाधिसे आपको विभूषित किया। पेन्शन पाकर एकान्त वासकी इच्छासे कोटागिरी (नीलगिरीपर्वत) पर पधारे। गवर्नमेन्टकी चाकरीमें आपका आतङ्क असाधारण था, धुरन्धर विद्वान् और न्यायशील होनेके कारण निम्न कर्मचारी आपपर विश्वास रखतेथे और आदरणीय मानतेथे। ऐसा महाविद्वान जो अंग्रेजी, संस्कृत, ग्रीक लेटिन फार्सी आदि भाषाओंमें समान रीतिसे निपुण होकर कविता करनेमें विलक्षणशक्ति सम्पन्नहो, कठिन तासे प्राप्तहोसकताहै। बगीचा फुलवाड़ी लगाने, ग्रंथ अवलोकन करने और कवितारचनेकी ओर आपकी विशेष रुचि है। बनारस काॅलिजका मासिक संस्कृत पत्र "पंडित" आपका जारीकियाहुआ है, इसका सम्पादन भी ८ वर्ष पर्यंत आपने कियाथा। कुमारसम्भवका, युसुफजुलेखाका, ऋग आदि चारो वेदोंका और सात जिल्दोंमें वाल्मीकीयरामायणका अनुवाद अंग्रेजीगद्यमें और कृष्ण यजुर्वेदका अनुवाद अंग्रेजीगद्यमें आपने कियाहै। इसके सिवाय प्राचीन संस्कृत लेखोंके आशयपर औरभी कई पद्यमय अंग्रेजीग्रंथ आपने रचेहैं। स ई १९०६ में वृद्धहैं, शादी नहीं कीहै।

गोपालकृष्ण गोखले—सी ये, सी आई ई (राजनीतिविशारद पंडित स ई १८६६ की साल एक साधारण स्थितिके महाराष्ट्र ब्राह्मणके घर आपका जन्म हुआ। पिताका देहान्त आपकी बाल्यावस्थाहीमें होगया। प्रथम कुछ समय तक कोल्हापुरमें पढकर आपने एलफिन्स्टनकालिज बम्बईसे बी० ए० पास किया और एक नये स्कूलमें जो सार्वजनिकसभा पूनाकी तरफसे स्वदेश हितके लिये खोलागयाथा ७५) रु० मासिक पर नौकरी की। माता और ज्येष्ठ भ्राता आशामें थे कि शीघ्रही कोइ उच्च पद आपको प्राप्तहोगा आपका विचार भी स्वार्थरहित स्वदेशीकार्यसे बहुत विशेषतक सम्बन्ध रखनेका नहींथा लेकिन सार्वजनिक सभाके सिलक रानडे आदिक परस्वार्थी मेम्बरोंके निरोहम थोड़ेही दिन रहनेके पीछे आपके विचार पलटगये। यावत जीवित आपने

सार्वजनिक सभाके मेम्बर रहनेका प्रण किया और २० वर्ष तक ७५ रु० मासिकपर उक्त स्कूलमें नौकरी करनेकी शपथ की। बहुत वर्ष नहीं बीतने पाये थे कि आपलोगोंके निरन्तर उद्योगसे वह स्कूल वर्तमान फर्गुसन कालिज पूनाके रूपमें परिणत होगया जिसके कारण बम्बईके गवर्मेंटने अनेक अवसरोंपर सार्वजनिकसभाके मेम्बरोंकी सराहना की। १८८७की साल सार्वजनिकसभाके त्रैमासिक पत्रके लिये एक उपयुक्त ईमान्दार सम्पादककी आवश्यकता हुई। सभाके प्रधान मिस्टर महादेव गोविन्द रानडेने सुयोग्य समझ पत्रके सम्पादन का भार आपको सौंपा। इस अवस्थामें सरकारी रिपोर्टों तथा पुस्तरितलेखार्थोंका संग्रह तथा संक्षेपकरना आपका कर्त्तव्य था जिसको बुद्धिमानीसे पालनकरनेके साथ २ स्वदव्यय तथा राजनीति सम्बन्धी शिक्षा प्राप्तकरनेका अवसर आपको मिलता था। इस कार्यमें महाशय रानडेसे आपको असाधारण सहायता मिलती थी। और इसी कारणसे आपके और उनके बीच गुरुशिष्यसम्बन्ध ऐसा दृढ़ होगया था कि महाशय रानडेके स्वर्गवासी होनेपर भी उसमें अन्तर नहीं पड़ा। मिस्टर रानडेके विषयमें आपकी लेखनीसे निकले हुए अनेक लेखोंको पढ़नेसे जो समय २ पर समाचारपत्रोंमें प्रकाशितहुए हैं उपरोक्त कथन सहजहीमें विदित हो सकता है।

१८९७ की साल जब ब्रिटेन और भारतवर्षके राजस्व व राज्यकरादि सम्बन्धी नातेको जाँचने तथा नियमित करनेके लिये इङ्गलैण्डमें वेल्बी कमीशनकी नियुक्ति हुईथी तब कमीशनके सामने इस वृहत प्रश्नके विषयमें हिंदोस्तानी राय प्रकटकरनेके लिये इस देशसे बुलाये जाने पर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी(बङ्गाल) सुब्रह्मण्य ऐयर (मद्रास), दिनशा एदलजी वाचा (बम्बई) और गोपाल कृष्ण गोखले (पूना) इङ्गलैंडको पधारे थे।

कमीशनकेमेम्बरोंने तत्त्वांककी श्रेष्ठता,व्याख्याकीस्पष्टता औरस्वदेशानुरागी विश्वासकेमीतोमय उत्साहकेलिये आपकी बड़ी प्रशंसाकी। स्वदेशको लौटकर पंडितजीने स्वेच्छा पूर्वक प्लेगका प्रबन्ध करना आरंभ किया जिसके लिये सर्वसाधारणने तथा बम्बई गवर्नर लार्ड सेन्डहर्स्टने आपकी बड़ाई की और बम्बईकी व्यवस्थापक सभाका मेम्बर आपको बनाया। सर पी० एम० मेहताके अलग होनेपर वायसरॉयकी व्यवस्थापकसभाकी मेम्बरी आपको दीगई।

स्वदेशहित तथा राज्यसेवाका परिचय सदैवही आपसे मिलताहै एवं गवर्न मेन्टने प्रसन्न होकर सी० आई ई की उपाधिसे आपको विभूषित किया है। आपने फर्गूसनकालिजमें बहुतकाल पर्य्यंत कठिन परिश्रम कियाहै, स्वदेशके परिमित व्यय व अन्यान्य राजनीति सम्बन्धी प्रश्नोंका विचार पूर्वक अध्ययन व संशोधन कियाहै, स्थिर तीक्ष्ण व स्पष्ट व्याख्याकरनेकी अद्भुत शक्ति आपमें पाइजातीहै। सत्पथसे कदापि नहीं हटनेवाली और किसी कारणमें नहीं हिचकनेवाली स्वतन्त्रताका आवाहन आपमें हुआहै। स्वदेशवासियोंके पक्षमें सदैव चित्तके पूर्ण उत्साहका परिचय आपसे मिलता रहा है।अन्तःकरण व बुद्धि की निर्मलता, तेजोमय योग्यता और स्वार्थका सर्वथा अभाव आपके स्वाभाविक गुण हैं। हमारी जातीयसभा इण्डियन नेशनल कांग्रेसके आप महासहायक हैं। लोकल सेल्फ गवर्नमेन्टके पक्षपाती होकर उसको अधिक विस्तृत करानेका उद्योग करनेके लिये १९०५ की साल आप इङ्गलैंडको पधारे थे। वहांसे लौट कर राजनैतिक वीरोंकी संख्या बढ़ानेके लिये आपने पूनामें Servant of Indian Society (वन्देमातरम्सभा) स्थापितकी है ऐसेही अनेकानेक विम कारणोंसे पंडित गोपालकृष्ण गोखलेकी गणना हमारे स्वदेशहितैषी राजनै तिक मुखियाओंकी शिरमौर श्रेणीमें की गई है।

"इण्डियन नेशनल कांग्रेसका मत आपका मत है और दुनियामें जो कुछ है वह सब हमारी भलाईके लिये है" यह आपका विश्वास है

१९०५ के अन्तमें कांग्रेसका वार्षिक अधिवशन जो बनारसमें हुआ था उसके सभापतिका आसन आपने ग्रहण किया था।

ग्रिफिन (सर लेपिल ग्रिफिन, के० सी०एस आई०– Sir Lepel Griffin, K C S I.)-स० ई० १८४० में जन्मे। १८६० में सिविलसर्विस परीक्षा उत्तीर्ण करके हिंदोस्थानको असिस्टेन्टकलेक्टर-मैजिस्ट्रेट होकर आये। १८७० में पञ्जाबके चीफ सिक्रेटरीका पद पाया। १८८०में चीफपोलीटिकल अफसर होकर अफगानिस्तानको गये। १८८१ में के० सी० एस० आई० का खिताब पाया। १८८७ से ८८ तक इन्दौर दरबारमें रजीडेन्ट रहे। १८८८से८९ तक हैदराबाद (दक्षिण) रजीडेन्ट रहे। १८८९ में शादी की। ईष्टइण्डिया एसो सियेशनके ईरानी इम्पीरियल बैङ्कके, और अराकी सपाहराहकी खानोंवाली कंपनीके आप प्रधान हैं। बृटिशगवर्नमेन्टकी चाकरीमें अनेक राजाओं महाराजा ओंको गद्दीपर बिठलानेका आपको अवसर मिला था इसी कारण बहुधा हाकिम सरकारोंने राज्यदाता(King Maker) का विशेषण आपको दियाहै।इङ्गलैंडमें १९०६ की साल जीवित हैं "एशियाटिकक्वार्टरलीरिव्यु" नामक पत्रके जन्मदाता आपही हैं।

पंजाबके सरदार, पंजाबके राजे, मध्यहिंदके प्रसिद्ध स्मारकचिह्न, रणजीत सिंहका चरित्र, इत्यादि कई अंग्रेजी ग्रंथ आपके विरचित हैं।

जमशेदजी नसरवानजी टाटा (पार्सी कामवीर) स० ई० १८३९ की साल गुजरातदेशके शहर नौसारीमें पार्सी जातिके पुजारियोंके वंशमें आपका जन्म हुआ। १३ वर्षकी उम्रमें प्रारंभिक शिक्षा पानेके लिये बम्बईमें आये।इसके ३ वर्ष पीछे एलफिन्स्टन कालिजमें भरती हुए लेकिन २० वर्षके होने नहीं पायेथे कि पिताको व्यवसायमें मदद देनेके लिये कालिज छोडदिया।१८२५ की साल ब्रिटनमें हिंदोस्थानी बैंक खोलनेके विचारसे आप इङ्गलैंडको पधारे लेकिन उन दिनों बम्बईमें सवादलेका भाव गिरजानेसे आपको बड़ा टोटा हुआ इस कारण बैंक खोलनेकी योजना छोडकर आप १८६७ मे स्वदेशको वापिस आये। ऐबीसिनियाके साथ उन दिनों अंग्रेजोंका युद्ध ठनाहुआथा, पिताके साथ शरीक होकर आपने लड़ाईपर रसद पहुँचानेका ठेका लिया जिसमें खूब नफा हुआ। फिर आपने हिंदोस्थानमें रुईका सूत बनवाकर बेचनेका प्रशंसनीय बृहत् व्यवसाय जारीकिया जिसका फल यह हुआ कि धीरे२ बम्बईमें कपडा बिननेका दस्तकारीका मूल आरोपण। होगई। शीघ्रही आपने बम्बईके समीपमें तेलका एक पेच खरीदकर उसको पुतलीघरमें परिणित किया और कुछ समय तक उसका चलाकर बड़ा लाभ उठाया १८७२की साल फायदेके साथ उस पुतलीघरको बेचकर आप इङ्गलैंडको दूसरी दफे गये। वहां पहुंच लङ्काशायरके अनेक पुतलीघरोंका आपने अवलोकन किया और कातने-बिनने की दस्तकारीकी सर्वोत्तम नवीन रीतिकी खोजमें बड़े परिश्रमसे लगे रहे और उक्त विषयका अच्छा अनुभव प्राप्त करके भारतको लौटे और १ जनवरी १८७७ को अर्थात् जिस दिन मालिका विक्टोरियाने कैसरे-हिंदका खिताब लियाथा उस दिन आपने नागपुरमें "इम्प्रेसमिल" नामक पुतलीघर जारी किया। इससे बड़ा भारी लाभ हुआ निदान कई अन्य स्थानोंमें भी आपने पुतलीघर जारी किये। बल्कि २ काम इतना बढ़ा कि अब एक लाखसे भी अधिक मनुष्य आपके पुतलीघरोंमें काम करतेहैं। कइ दफे निष्फल उद्योग करनेके पश्चात आपने १८७७ की साल टाटाकम्पनी स्थापनकीथी। कार्यनिपुण तथा बुद्धिमान मालिक होनेके कारण इस कम्पनीकी दोनों गोलार्द्धोंमें खूब प्रख्याति हुई पैरिस तथा न्यूयार्कमें भी कम्पनीकी शाखायें खोलीगई। चीनमें व्यवसाय फैलाने और जापान तथा पूर्वी एशियाके साथ भारतका तिजारती सम्बंध दृढ करनेके लिये आपने हौंगकौंग और शंघायमें व्यवसायके केन्द्र स्थापन किये। हिंदुस्थानी रुई बारीक कपड़ा बिननेके लायक नहीं होतीथी अतः करोडों रुपयेकी विदेशसे भारतमें आतीथी। गवर्नमेंटके अनुभवी अफसर मिश्रकी रुईको बारीक कपड़ाके बिनाईके लिये उत्तम बतलातेथे लेकिन उनकी रायमें उसका इस देशमें

पैदा होना असम्भव था । भारतहितैषी टाटाने * १८९६ में एक छोटी पुस्तक रचकर सर्कारी अफसरोंकी रायका खण्डन किया और सिद्ध किया कि, यदि भारतीय वायुकी अत्यंत खुश्कीका और जलके खूब सींचनेका प्रबंध किया जासके तो मिश्रकी रुईकी खेती इस देशमें सफलता पूर्वक होसकती है । तजुर्बा करनेके लिये शीघ्रही आपने एक खेत मुवाकर सफलता पाई फिरतो आपने मिश्रकी रुईके बीज बिनामूल्य बांटना आरंभ किया जिसका फल यह हुआ कि लम्बे रेशेवाली रुई भारतमें ढेरों होतीहै ।

आपने भारतवासियोंको लोहेकी दस्तकारी सिखाने कामी उद्योग कियाथा इस कार्यकी पूर्तिके लिये अमेरिकाके अनुभवी कारीगरोंको बुलाकर नौकर रक्खा उन लोगोंके तजुर्बा करनेपर सिद्धहुआ कि मध्यहिंदमें सबसे अच्छा लोहा निकलता है अतः गवर्नमेंटकी आज्ञासे मध्यहिंदमें लोहेकी खानें खोदनेका कारखाना आपने जारीकिया । रेशमकी दस्तकारीके भी आप ही जन्मदाता थे जिसका प्रारंभ जापानियोंके ढंगपर मैसोरमें हुआहै ।

भारतवासियोंको उच्च शिक्षा दिलानेके भी आप पक्षपाती थे और तन मन धनसे सहायता करतेथे । एक वर्ष बम्बईके गवर्नरने किसी जलसेमें, शिल्पसम्बन्धी शिक्षा पर एक व्याख्यानदियाथा और चन्देसे उसके लिये धन एकत्र करनेके वास्ते रईसोंका ध्यान आकर्षित कियाथा।उस व्याख्यानका आप पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि पार्सीलड़कोंको शिल्प शिक्षाप्राप्तकरणार्थ बिलायत भेजनेके लिये चन्देसे आपने एक स्थायी फण्ड स्थापन किया और आपभी जी खोलकर चन्दा दिया । १८९६ में उक्त फण्डको बढ़ाकर आपने ऐसा प्रबन्ध किया कि जिससे प्रत्येक जातिका भारतवासी उससे लाभ उठासके।अन्तम नवीन बातोंके आविष्कार और विज्ञानकी उन्नतिके लिये एक कालिज खोलनेके वास्ते आपने ३२ लाख रुपयेकी जायदाद अर्पणकी जिसकी खालिस वार्षिक आय १२५००० रु० होतीहै । गवर्नमेन्टने भी इस काममें मदद दीहै और महाशय टाटाकी योजनाके अनुसार बम्बईमें वैज्ञानिक खोजका कालिज(Research Instatute) खोलनेकी बात स्थिरहुई है ।

आपने बहुत धन कमायाथा । बड़ी भारी जमीन्दारी मोल लीथी। रुईकी वास से,भारतके कपड़ाका विलायतमें व्यापार करनेसे, मैसूरमें रेशमकी खेतीसे और लोहा बनानेके कारखाना आदिसे भी आपको बड़ी भारी आमदनी थी । जन्मभर अपनेको तथा भारतवासियोंको धनाढ्य बनानेमें लगेरहे । कई करोड़का मालदार होनेपर भी गर्व तथा दिखावटका आपमें लेश नहीं था । मई १९०४ में, जर्मनीके एक स्वास्थ्यकर स्थानमें आपका देहांत हुआ । आपकी मृत्युसे केवल पार्सियोंहीकी नहीं किन्तु भारतभरकी हानि हुई ।

आप सतौनी वीर नहीं थे, कामवीर थे । भारतके शिल्प और व्यापारकी उन्नति जो इस समय दृष्टि गोचर होती है विशेषत आपहीके उद्योगसे हुई है। निज उद्योगसे बढ़नेवालोंमें ऐसे मनुष्यका उदाहरण सहसा नहीं मिलेगा जिसने महाशय टाटाकी सदृश मातृभूमिकी उन्नति करतेहुये अपनेको तथा स्वदेशवासियोंको धनाढ्य बनानेकी सर्वदैव कोशिश कीहो और अपने उपार्जित द्रव्यको ऐसी उदारताके साथ देशोन्नतिमें लगाया हो। अब आपके बृहत व्यवसायके प्रबन्ध करता आपके कई पुत्र हैं। बम्बईमें आपका बड़ा भारी महल है।

जावजी दादाजी—आपकी गणना उन महत्पुरुषोंमें है जो परम उद्योगी होनेके कारण गरीबसे अमीर हुये हैं। दादाजी नामक आपके पिता, शाहपुरके रहनेवाले गरीब थे और उदर निर्वाहके कारण उमरखाडी, बम्बईमें आकर बसे थे। लड़कपनमें जावजी स्कूलके उद्दण्ड लड़कोंमें गिनेजातेथे और बड़े होकर इन्होंने अमेरिकन मिशन प्रेसमें२ रुपये मासिकपर टायप साफ़ करनेकी नौकरी की थी और बढ़ते२ तीस रुपया वेतन पाने लगेथे। इसी चाकरीद्वारा कुछ पूंजी जमा करके स ई १८६४की साल बम्बईमें उन्होंने एक छोटासा छापाखाना जारी कियाथा जो अब निर्णयसागर नामसे प्रसिद्ध है। जावजी टायपके काममें निपुण थे, नौकरोंके साथ अच्छा बरताव करतेथे, किसी धर्मसे द्वेष नहीं रखतेथे,सुख दुखको समानभावसे देखतेथे, धैर्य और सरलासे उद्योग किये जातेथे और घर बाहर सबको प्रसन्न रखतेथे। इन्हीं शुभ गुणोंके द्वारा निर्णयसागर प्रेसकी असाधारण उन्नति हुई और जावजी बड़े धनी सेठ होगये। जनवरी १८८६ से आपने "काव्यमाला" नामक मासिक पुस्तक जारी कीथी जिसमें अनुपलब्ध प्राचीन संस्कृतग्रंथ संशोधन करके टिप्पणीसहित छापेजातेहैं। बहुतसे और अब भी निजव्ययसे छपवायेथे जिससे व्यवसायकी उन्नति हुई, विद्याका विस्तार हुआ और प्राचीन ग्रंथ नष्टहोनेसे बचे। निर्णयसागरके वर्तमान मालिक, सेठ तुकाराम जावजी, आपके पुत्र हैं। इस प्रेसमें छपाईका काम अत्युत्तम, निहायत साफ़ और विलायतीढंगका होता है। स ई १८३९ में जन्म, स ई १८९० में मृत्यु।

डेवी (सर हम्फरी डेवी बेरोनेट—Sir Humphery Davy Bart.) कार्नवालमें स ई १७७८ की साल जन्मे। लड़कपनमें संकुचितरीतिकी शिक्षा पाई। १७ वर्षकी उम्रमें एक डाक्टरके पास काम सीखनेके लिये उम्मेदवारी की और गम्भीरतासे विद्या अध्ययनमें चित्त लगाया। २ वर्ष बाद रसायन विद्याकी तरफ ध्यान आकर्षित हुआ। आप उन दिनों अपने मित्र टानकिन साहबके मकान पर रहकर अपरिचित मिश्रित द्रव्योंके योगोंसे नवीन सिद्धान्त स्थिर करनेकी खोज किया करते थे। टानकिन साहब आपके इस उद्योगको

वृथा समझतेथे और इसी कारण प्रसन्न रहते तथा शोक किया करतेथे कि मगर किसी दिन आग लगगई तो मकान हिल जायगा और हम सब बरबा थगे । लेकिन आपकी प्रारब्धमें इन परीक्षाओंसे सिद्धि प्राप्त होनी थी । १९ वर्षकी उम्रमें प्रकाश और उष्णताके विषयमें आपने एक निबन्ध लिखा । य आपका पहिला ही पक्का सम्बन्धी लेख था । २१ वर्षकी उम्रमें डाक्टर बेडो जने बृस्टलके एक चिकित्सालयको निरीक्षक आपको नियत किया । इ समयसे आपके खोजकी चमत्कारिक गतिका आरम्भ हुआ । १८०१ में राजकै रसायनिक कमशालाके डैरेक्टरका पद आपको प्राप्तहुआ और दूसरी वर्ष रस यन विद्याके प्रोफेसरका ओहदा मिला । पोटेशियम, सोडियम, मैगनेशिय स्ट्रोन्शियम नामक धातोंको तथा क्लोरायन गैसको आपने ढूंढ निकाला में सिद्ध किया कि आयोडायन मिश्रित पदार्थ न होकर मूलवस्तु है । रसाय सम्बन्धी तृणमणिशक्तिकी भी उत्पत्ति आपके द्वारा हुई ।

पश्चात् खानोंकी गम भवककी परीक्षा करनेमें मन लगाया जिससे डेवीज सुरक्षित दीपककी उत्पत्ति हुई । यह दीपक बारीक तारके पिंजरेमें रखा जिससे कारण खानोंके भीतरकी असाधारण वायु नहीं जल पाती है।असाधारण वायु अधिक एकत्र होजानपर कभी २ पिंजडेके भीत जाकर दीपक भी लपटसे जलने लगती है लेकिन लपट पिंजडके बाह नहीं निकल सकतीहै और ऐसा होतेही असाधारण वायुकी अधिकत जानकर खान खोदनेवाले तुरन्त बाहर निकल आतेहै । १८१८ में स हम्फरी डेवीको बैरोनेटका खिताब मिला । २ वर्ष पीछे रायल सोसायटी प्रधानका पद पाया । इस प्रकार तेजोमय कार्यकलापसे परिपूर्ण वर्ष बच भी बीते । १८२७ में लकवेका रोग हुआ । १८२९ में मृत्यु हुई । शहर जेनीवा बाहर समाधि दीगई ।

नवल किशोर,सी आइ ई -आपके पिता यमुनाप्रसादभार्गव सासनीग्रा जिला अलीगढ़के रहनेवालेथे । उनके ५ पुत्रथे जिनको शिक्षादेनेम कोशिश की थी । हिन्दी उर्दू पढ़कर १२ वर्षकी उम्रमें नवलकिशोरको आगरा कालिजमें भरती करायाथा । यहां ५ वर्ष पढ़कर "कोहनूरप्रेस" लाहोरमें नौकरी की और छापेखानेका काम सीखा स्वामीके सदैव शुभचिन्तक रहे सन् ५७ के गदर पीछे अंग्रेज हाकिमोंकी सम्मतिसे लखनऊमें "नवलकिशोरप्रेस" स्थापनकिया और 'अवधअखबार" नामक उर्दू समाचार पत्र निकाला । "अवधअखबार को निष्पक्ष और सर्व हितकारी होनेके कारण सबने स्वीकारकिया । आमदनी बढ़नेके साथ २ मुं० नवलकिशोरने, मार्मिक ग्रन्थोंके खोजकरने, शुद्ध कराके उनको छपवाने और उनके विक्रय रखवाने इत्यादिमें कोशिश की ।

जो ग्रन्थ सैकड़ों रुपयके खर्चसे नहीं मिलते थे वह ही आपके उद्योगसे कौड़ियोंके मोल होगये जिससे पठन पाठनमें अत्यन्त सुलभता हुई और प्राचीन विद्या नष्ट होनेसे बची। इसके सिवाय जिन विषयोंपर जरूरत देखी ग्रन्थकारोंको पारितोषिक देकर नये ग्रन्थ रचवाये। फिर प्रत्येक शहर और गांवमें अपने एजेण्ट नियत किये जिससे देशभरमें संस्कृत अर्बी फारसी, उर्दू, हिंदी पुस्तकोंका प्रचार होगया और कारखानेकी बड़ी उन्नति हुई। पश्चात् कानपुर, लाहौर, दिल्ली, आगरा तथा अजमेरम "नवल किशोरप्रेस" की शाखायें खोली गई और मुसाफिरोंके लिये दवा, अन्न, वस्त्र आदिका सदाव्रत जारी किया गया। देशहितके कामोंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने मुंशीजीको सी आई ई का खिताब दिया, प्रयाग यूनीवर्सिटीका सभासद बनाया और लखनऊ मेलका अवैतनिक निरीक्षक तथा लखनऊकी चुंगीका मेम्बर नियत किया। पश्चिमोत्तर देशकी गवर्नमेण्टको मुंशीजीपर बड़ा विश्वास था, लार्ड साहबके दर्बारियोंकी सूचीमें उनका नाम था और दिल्लीके दर्बार कैसरीके अवसर पर उनको अवधके रईसोंमें अव्वल नम्बरकी कुर्सी मिलीथी। शरीफ गरीबोंकी गुप्त रीतिसे सहायता करते थे। हजारों कन्याओंके विवाहोंमें मदद दीथी और देशोपकारके कामोंमें चन्दा देनेसे भी नहीं चूकते थे। चन्देकी सूचीमें निम्नस्थ रकमें मुख्य हैं:—

१ आगराकालिज, बोर्डिङ्ग हौसके लिये १० हजार रुपया नकद और १५ हजार रुपया वार्षिक आयकी भूसम्पत्ति।

२ लेडी डफरन्न फण्डमें १५ हजार रुपया।

३ जुबिली हाई स्कूल लखनऊके लिये १५ हजार रुपया।

अन्तमें इतना कहना और शेष है कि, मुन्शीजी बड़े परिश्रमी तथा पुरुषार्थी थे, सब काम खुद देखतेथे, लखनऊमें उनके उद्योगसे कागज़ बनानेका कारखाना खुलाया, लखनऊ और उन्नावके जिलोंमें बड़ा भारी इलाका उन्होंने खरीदाथा और इन सब कामों पर हजारों नौकर उनके नियुक्त थे। भले ध्यानै योगिराजाकी समान मृत्यु पाई। मुं प्रयागनारायण सुयोग्य पिताके पुत्रहैं।

वि सं १८९२ में जन्म।

वि सं १९५१ म मृत्यु।

नार्थब्रुक-(टामस जार्ज बेरिङ्ग लार्ड नार्थब्रुक,पी सी ,डी सी एल , एल एल , डी एफ़ आर.एस ,जी सी एस आई –Thomas George Baring,P C ,D. C. L, L L D, F R S, G C S I, Earl of North Brook) स ई १८२६ की साल लन्दनम जन्मे। पिता आपके प्रथम बैरन नार्थब्रुक थे जिनके सिधारने पर १८६६ में बैरनकी उपाधि आपको मिली। १८४८ में शादी की लेकिन १ पुत्र और १ पुत्री छोड़कर स्त्री १८६७ में चलबसी फिर दूसरे

शादी नहीं की। क्राइस्ट चर्च कालिज, आक्सफोर्डमें शिक्षा पाई थी। बोर्ड आफ ट्रेडके, होम आफिसके, इन्डिया आफिसके और पेडमिरल्टीके क्रमशः असिस्टेंट सिक्रेटरी रहे थे। १८५० से ६६ तक पार्लियामेन्टके मेम्बर रहे। १८५९ से ६१ तक साम्राज्य हिन्दके उपमंत्री रहे। बीचमें कई महीने तक १८६१ की साल सेनाविभागके उपमंत्री रहे। १८७२ से ७६ तक वायसराय हिन्दके पद पर काम किया। पश्चात् इङ्गलैंड आकर जलसेनाविभागके मंत्रीका पद पाया और उस पर १८८० से ८५ तक रहे। १९०४ में परमधामको सिधारे। आपके हिंदोस्थानी शासनमें बिहारमें दुकाल पड़ा जिसका प्रबन्ध आपने अत्युत्तम किया और अन्य कामोंमें खर्च घटाकर अकालके कामोंमें खर्च करनेसे गवर्नमेन्टकी भी स्थिति नहीं बिगड़ने पाई। इस अकालमें गवर्नमेन्टने ९ करोड़ रुपये खर्च कियेथे। जोधपुर और काश्मीर राज्योंके भीतरी झगड़ोंको आपने बुद्धिमानीसे शान्त किया था। अंग्रेजी रेजीडेन्टको विष देनेके अपराधिम पूरा सबूत न होनेपर भी महाराजा गैकवाड़ आपहीके समयमें गद्दीसे उतारेगयेथे लेकिन उनके उत्तराधिकारी वर्तमान गायकवाड़ महाराजा सैयाजीरावकी शिक्षाका अच्छा प्रबन्ध कियाथा और उनके बाल्यकपनमें राजा सर टी० माधवरावको दीवान नियत करके बड़ोदा राज्यकी हालत नहीं बिगड़नेदीथी। इन्कमटैक्स घटाकर, म्युनिसिपेलिटियोंके दुखदायी करोंको दूर करके तथा अनेक निरर्थक खर्च घटाकर देशोपकारी कामोंमें खर्च करके आपने प्रजाका हित किया था और गवर्नमेन्टकोषकी भी हालत नहीं बिगड़नेदीथी। भारतीय सेनाके खर्चकी बारीकीसे जांचकरके १ लाख रुपयेकी बचत निकालीथी। १८७५-७६ की साल राजराजेश्वर एडवर्ड सप्तम, प्रिंस आफ-वेल्सकी स्थितिमें हिंदोस्थान आयेथे जिसका प्रभाव देशी नरेशों और प्रजापर अच्छा पड़ाथा। आपको २५ लाख रुपया वार्षिक वेतन मिलताथा लेकिन आपने खर्चके लिये घरसे रुपया मँगवातेथे। वेतनका रुपया दान पुण्यमें खर्च होताथा। आपका कथन है कि "भारतका शासन इस प्रकार करनाचाहिये जिससे प्रजाका भला हो और भारतवासियोंको विदित होजाय कि हम उन्हींके हितके लिये शासन करतेहैं" प्रजाकी स्वतन्त्रताको नष्ट करनेवाली फौजदारी क़ानूनकी शक्तिको और देशी नरेशोंको कष्ट पहुंचानेवाली पोलीटिकल एजेन्टोंकी सख्तीकी शिकायत सुनतेही आपने उठालियाथा।

इङ्गलैंडम १० हजार एकड़ भूमि आपकी जमींदारीमें है। "ईसामसीहके दूत देश" नामक अंग्रेजी ग्रंथ आपका विरचित है। इस समय आपके पुत्र वाईकौन्ट बैरिङ्ग लन्दनमें विद्यमान होकर पार्लियामेन्टके मेम्बर हैं।

निजामुल्मुल्क, फ़तेहजँग, आसफजाह, हफ्तहजारी, सूबेदार बहादुर (हैदराबाद राज्यके संस्थापक)—आपका नाम क़मरुद्दीन ख़ाँ था और आप

गाजी उद्दीन खाँ के पुत्र थे। मुगलसम्राट, औरंगजेबके समयमें आपका पांच हजारी मनसब था। औरंगजेबकी मृत्युके पीछे तख्तके लिये जो झगड़ा उसके बेटोंमें हुआथा उससे आप बिलकुल अलग रहेथे। पश्चात् बहादुरशाहने तख्त-पर बैठकर खानदौराँ, खानबहादुरका खिताब और अवधकी सूबेदारी तथा लखनऊकी फौजदारी आपको दी। कुछ समय पीछे नौकरी छोड़, फकीर हो आप दिल्ली चलेगये। जहाँ दारशाहने तख्तपर बैठकर फिर आपको तलब किया। फर्रुखसियरने तख्तपर बैठकरजनाब निजामुल्मुल्क, फतेहजंगका खिताब; हफ्तहजारी मनसब और दक्षिणकी सूबेदारी अपको दी। मुहम्मदशाहने तख्तपर बैठकर आपका पद और उपाधिबहाल रखी। मुहम्मद अमीनखाँ कोकानीके मरनेपर मुख्य मत्री नियत होकर आप दिल्ली आये। मत्रीके पदपर रहतेहुये आपने औरंगजेबके समयके कायदे जारी करने चाहे लेकिन दर्बारके अन्य सर्दार आपके खिलाफ हो गयेपश्चात् दक्षिणकी सूबेदारी पर आपको भेजा गया लेकिन शीघ्रही नौकरीसे अलहिदा करदियेगये। इस समय मुगल साम्राज्यकी गिरतीका जमाना था' अत एव कुछ फौज एकत्र करके शकर खेर खेके युद्धमें अपने उत्तराधिकारीको परास्त करके आपने दक्षिणके सूबेपर अधिकार करलिया और इस समयसे नाममात्रको आप दिल्लीके आधीन रहे। मुगल सम्राट् दिल्लीने इसी समय आपको आसफजाहका खिताब दियाथा। अन्तमें आप मरहटोंसे लड़तेरहे और कर्नाटक तथा अर्काट विजय किये। स.ई १७४८ में १०० वर्षके होकर इस दुनियासे कूच किया।

नौरोजजी मानकजी वाडिया, सी आई ई (पारसी दानवीर)—आप सूरत नगरके रहनेवाले हैं। आपकी माता मोटली बाईके बापदादाने जहाज बनानेके काममें करोड़ों रुपये पैदाकियेथे जो अन्तमें मोटली बाईको मिले। मोटली बाइके पिताका नाम सेठ नसरवानजी वाडिया था। मोटली बाई २६ वर्षकी उम्रमें विधवा होगईथी और उसने पार्सियोंमें विधवाविवाहकी प्रथा रहने पर भी दूसरी शादी नहीं की थी। वह बड़ी दानवीरा थी और सदैव अपनी जायदादकी रक्षा करनेमें जो लाखसिटद्वीपमें है तथा अपने एकलोते पुत्रके लालन पालनमें लगी रहतीथी। १८९७ में मोटली बाईका देहान्त ८९ वर्षकी उम्रमें हुआ।

माताके पश्चात् वाडिया महाशयने १ करोड़ रुपया दान किया। दुनिया भरमें जिसकिसी मनुष्यपर यकायक शोचनीय दैवविपत्ति पड़ेगी वह इस करोड़ रुपयेकी आमदनीसे मदद पावेगा।

अग्निसे, जलसे, ज्वालामुखीके उद्गारसे, दुर्भिक्षसे भूकम्पसे विपद्ग्रस्त होनेपर अथवा किसी अन्यप्रकारकी दैवविपत्तिसे निरुपाय होनेपर मनुष्य इस करोड़ रुपयेकी आमदनीसे सहायता पावेगा।

भाऊनगरी-(सर मञ्चरजी मरवानजी भाऊनगरी) के सी. आई ई स ई १८९५ से १९०५ तक कनजरवेटिव दलम शरीक होकर पृटिश पार्लियामेन्टके मेम्बर हैं और इङ्गलैंडमें रहते हैं। एक अमीर पारसी सौदागरके घर १५ अगस्त, १८५१ की साल बम्बईमें जन्मे। एलफिन्स्टनकालिज, बम्बईमें शिक्षा पाई। कालिज छोडनेके पीछे समाचारपत्र सम्पादनका काम करतेरहे। १८७२ की साल भाऊनगरराज्यकी तरफसे एजेन्ट नियत हुये और बादको उक्त राज्यके कानूनी सलाहकारका पद आपको मिला। १८९५ में इङ्गलैंड चलेगये और ब्रटिश पार्लियामेन्टमें मेम्बरी पाई। १८९७ में ब्रटिशगवर्नमेंटने के, सी आई इ की उपाधिसे आपको विभूषित किया। घोडेकी पीठ पर सवारी लेने और व्यायामकरनेके अनुरागी हैं। आपसे पेश्तर केवल दादाभाई नौरोजीही ब्रटिश पार्लियामेन्टकी मेम्बरी पानेम समर्थ होसके थे और इन्हीं दोनोंको सिवाय कोई तीसरा हिंदोस्थानी मेम्बर अब भी पार्लियामन्टमें नहीं हैं।

आपने ईस्टइन्डिया कम्पनीके राजप्रबन्धका इतिहास अंग्रेजीम रचा है और महाराणी विक्टोरियाके हाईलैंड सम्बन्धी चरित्रका अनुवाद गुजरातीमें किया है।

भालचंद्रकृष्ण भाटवडेकर, एल एम ,जे पी ,नायट,-इस समय हिंदोस्थानी प्रसिद्ध राजनैतिक पुरुषोंमें आपकी गणना है। स इ १८८५ से गिरगांव बम्बईमें रहिकर हिकमत करते हैं। १९ फरवरी १८५२ को जन्मे। कृष्ण शास्त्री भाटवडेकर आपके पिता थे और माताका नाम रुक्माबाई था। सावित्रीबाईसे आपकी शादी हुई है। एलफिन्स्टन हाईस्कूल और ग्रान्ट मेडीकेल कालिजमें पढकर डाक्टरीकी एल एम परीक्षा उत्तीर्णकी है और सोनेका पदक पाया है। १८७४ से ७६ तक बौद्दरा, पालनपुर और वैसीनमें असिस्टेन्ट सर जियन रहेथे। १८७६ से ८५ तक विज्ञान सम्बन्धी देशीभाषाके कालिज म मिडीपेल और चीफ मेडीकेल अफसर बरोदाम रहेथे। बम्बई यूनीवर्सिटीके सभासद हैं और कभीरक्त यूनीवर्सिटीके सिन्डीकट भी होते हैं। बम्बईकी म्युनिसिपेल कार्पोरेशनके, मेडीकेल यूनीयनके और ग्रान्टकालिजकी मेडीकेल सभाके प्रधान है। १८९७ से ९९ तक लेजिसले टिव कौंसिलके पेड़ीशनेल मेम्बर और१९०१ म लेजिसलेटिव कौंसिलके मेम्बर रहे थे। बम्बईकी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी मेम्बर हैं।

म्युनीसिपेल कार्पोरेशन बम्बईके प्रधान रहिकर जो राजा और प्रजा की सेवा आपने कीथी उसीके पुरस्कारमें नायट (Kt.) की उपाधि पाईहै। सना तन हिन्दुधर्मके अनुरागी हैं। इन्डियन नेशनल कांग्रेसके सहायक हैं।

सन ई १९०५ तक वनस्पतिविद्या, स्त्रीचिकित्सा, कुष्ठ, मदिरादोष निवारण आदि विषयोंपर कई अंग्रेजी ग्रंथ आपने रचेहैं।

महाबतखाँ, हफ्तहजारी, खानखाना सिपह सालार बहादुर–आप का असली नाम जमानावेग था। आपके पिता गयूरबेग, काबुलके रहनेवाले सैयद थे और आपके पूर्वज शीराजसे आकर काबुलमें बसे थे। अकबरने मिर्जा हकीमकी मातहितीमें आपको मुगलसेना में भरती किया था और चितौड़की लड़ाईमें बहादुरीसे लड़कर आपने प्रसिद्धि पाईथी। पश्चात् शाहिजादे सलीम (जहांगीर) के निजके ओहदेदारोंमें रहेथे और कुछ कालतक शागिर्दपेशेके बख्शीका पद भोगाथा। उस समय आपका मनसब तीन हजारीथा और महा बतखाँखिताब था। जहाँगीरने तख्तपर बैठकर शाहिजादे खुर्रम (शाहजहाँ) की मातहितीमें आपको दक्षिणकी लड़ाइ पर भेजा। वहाँ आपने ऐसी उत्तम राजसेवा की कि जिसके प्रभावसे आपकी प्रतिष्ठा और दर्जा दर्बारके अन्य सरदारोंकी अपेक्षा अधिक बढगया। इसके बाद खानदौरोंकी जगहकाबुलकी सूबेदारी पर भेजेगये थे।

मुगल सम्राट् जहांगीरके तीन बेटेथे खुरम, शाहिरयार और परवेज। शाहिरयारको नूरजहांकी बेटी जो पहिले पति शेरअफगनसे थी विवाही थी। इसी कारण नूरजहां चाहती थी कि जहांगीरके बाद शाहिरयारको तख्त मिले।

थोड़े दिनों पीछे जब खुर्रमने बिगड़कर उपद्रव किया तो नूरजहांने अपना इरादा पूरा करनेके लिये आपको काबुलसे तलब किया। दिल्ली पहुँच आपने इलाहाबादकी सूबेदारी पाई और साथियोंको छितर बितर करके खुर्रमका पक्ष हलका करदिया। फिर शाहिजादेपरवेजकी मातहितीमें बिहारके सुलतान मानदारमीको परास्तकिया। परवेजके साथ आपका मेल बढ़ना नूरजहांको बुरा लगा, निदान अपने भाई आसफखाँ वजीरकी मारफत उसने दरबारके सब सरदारोंसे आपके खिलाफ जत्था कराया और जहांगीरके काबुलके दौरेपर जाते समय आपको बुलाया। लेकिन अर्दलीके ५०० राजपूत सवारों सहित हाजिर होनेपर आपको बादशाहसे मिलनेकी आज्ञा नहीं मिली इस अप्रतिष्ठाको आप बरदाश्त नहीं करसके, निदान जब फौज उतरजानेके बाद बादशाहकी सवारी झेलमपार होरहीथी तो आपने राजदम्पत्तिको कैद करलिया। यह खबर पातेही वजीर आसफखाँने अपनी जागीरपर भागकर अटकमें किलेम पनाह ली लेकिन वहांसे भी कैद कर लियेगये।

इसके बाद प्रायः १ वर्ष तक राज्यमें आपका पूरा अधिकार रहा अंतमें मौका पाकर नूरजहांने आपके अर्दलीके सिपाहियोंको मरवाडाला और बाद शाहको कैदसे छुड़ाया। इस हालतमें आप भागकर गुजरातके पास शाहि

भाइ खुर्रमसे आ मिले, जो उन दिनों बागी होरहाथा। कुछ ही दिन पीछे जहांगीरने परलोकयात्रा की। खुर्रमने तख्तपर बैठकर अपना नाम शाहजहां रखा और आपको हफ्तहजारी मनसब, खानखाना सिपहसालार बहादुरका खिताब, ४ लाख रुपया नकद इनाम, अजमेरकी सूबेदारी और आपके बेटे खानजमाँको मालवाकी सूबेदारी दी। पश्चात् दक्षिणकी सूबेदारी पर आपकी बदली होगई। यहां आपने राज्यप्रबन्धमें सुधार किया, बीजापुरका घेरा किया, अमरकोट और महानकोटके किलोंको उड़ादिया, याकूब हबशीको परास्त किया, फतेहखांको कैद करके दौलताबादको लूटा, लूटका २५ लाख रुपया बादशाहको भेंट किया और ५ लाख रुपया इनाम पाया। फिर मरहटोंसे लड़तेरहे। १०४४ हि० मे ८ बेटे छोड़कर परलोकयात्रा की। और नजफशरीफ मे लेजाकर दफनायेगये।

मालोजी भौंसले (मरहठाराज्यके संस्थापक महाराज शिवाजी भौंसलाके दादा)–आप राना चित्तौड़के वंशमें थे। आपसे ७।८ पीढ़ी पहिले शिव राय राना चित्तौड़के कनिष्ट पुत्र भीमसिंहने भौंसलानामक दुर्गमें भागकर अपनी जान बचाईथी, इसीसे उनके वंशज भौंसला कहलाये। मालोजीके पिता सम्माजी भौंसला दौलताबादके समीप वेरूळमें रहतेथे और कई ग्रामके जमींदार थे। २५ वर्षकी उमरमें मालोजी अहमदनगर राज्यमें कुछ घुड़सवारोंके अफसर नियत हुये और धीरे २ पांच हजार घुड़सवारोंके अफसर होगये। स० ई० १५९४ में आपके पुत्र शाहजी भौंसलाका जन्म हुआ। सं ई० १६०४ मे निजाम शाही सरकारने मालोजीको सूपा और पूनाके परगने जागीरमें दिये। स ई० १५५२ में जन्म, स ई० १६१८ में मृत्यु।

मीरजुम्ला, मुअज्जमखाँ, हफ्तहजारी, सिपहसालार, खानखाना बहादुर–आपका असली नाम मीर मुहम्मद खाँ था। पिता आपके असफहानमें रहनेवाले एक अमीर सैयद थे और गोलकुंडामें रहकर जौहरीका पेशा करतेथे। आपने पहिले पहिल गोलकुंडाके नवाब अब्दुल्ला कुतबशाहके दर्बारमें नौकरी की थी और क्रमसे उच्चपद पर पहुंचकर करनाटक विजय कियाथा, हीरेकी खानोंपर अधिकार कियाथा, राज्यप्रबन्धमें सुधार कियाथा और मीर जुमलाका खिताब पायाथा। लेकिन दर्बारके अमीर सर्दारोंने ईर्षक होकर आपके बड़े पुत्र मुहम्मद अमीनकी तरफसे कुतब शाहका दिल फेरदियाथा जिसके कारण इस्तीफा देकर आप औरंगजेबके पास चले आयेथे। औरंगजेबने आपको अपने पिता मुगलसम्राट शाहजहाँकी खिदमतमें दिल्ली भेजदिया। यहां आपने एक बहुत बड़ा हीरा, १० हाथी और १५ लाख रुपयेकी जवाहरात बादशाहको भेंटकी और दीवान आला (मुख्यमंत्री) का पद, मुअज्जमखाँका खिताब, ६

हजारी मनसब तथा ५ लाख रुपया नकद इनाम पाया। पश्चात् औरंगजेब की मातहितीमें बीजापुर विजय करनेके लिये भेजेगये। वहां आपने विदर तथा कल्याणका किला फतेह किया और शुभवर्गोंके मयार्थ आदिलशाहको परास्त करके १ करोड़ रुपया वसूल किया तथा काकणप्रदेशका राज्य छीन लिया। औरंगजेबके वापिस आनेपर कोंकण प्रदेशका शासन आपके हाथमें रहा। इन्हीं दिनों शाहजहांके बीमार पड़नेसे तख्तके वास्ते उसके बेटोंमें झगड़ा हुआ और गुप्त राजनैतिक कारणोंसे वजीरके पदसे आपको बदल दिया गया और जुमलातुल्मुल्कका खिताब दियागया। इसी समय औरंगजेबसे भी आपकी कुछ अनबन होगई जिसके कारण दौलताबादके किलेमें आपको कैद किया गया, धन धान्य सब खालसा करलियागया और आपके घरके लोगोंको शाही गुलाम बना लियागया। औरंगजेबने तख्तपर बैठकर आपको फिर तलब किया और हफ्तहजारी मन सब, १० लाख रुपये नकदका खिलत और खानदेशकी सूबेदारी दी और अपने भाई शाहशुजाको परास्त करनेके लिये आपको भेजा। शाहशुजाको परास्त करके सिपहसालार, खानखाना बहादुरका खिताब आपने पाया। फिर कूचविहारका राज्य लड़ाईमें जीता और अन्तमें आसामपर चढ़ाई की। कई महीने तक युक्ति पूर्वक लड़कर आसामके राजा धनसुखसे खिराज वसूल किया लेकिन वर्षातका मौसम आजानेसे फौजमें बुखार फैला जिससे अधिकांश सैनिक नष्ट हुए और आपभी सरदी लगनेसे बीमार पड़गये। अन्तमें लाचार होकर बंगालकी तरफ कूंच किया लेकिन खिजरपुर पहुँचतेही १०७३ हि० में इस असारसंसारका सम्बन्ध छोड़ना पड़ा। हैदराबाद (दक्षिण) में आपकी बड़ी भारी हवेली थी।

मिन्टो (सर गिल्बर्ट जान इलियट–मरे–किनिन्मौंड, अर्ल आफ मिन्टो, वायसराय हिंद–Sir Gilbert John Elliot Murry Kynyn Mound Earl of Minto, Viceroy of India)–इंगलैंडके प्रसिद्ध इलियट वंशमें आपका जन्म हुआहै। आपके प्रपितामह प्रथम अर्ल आफ–मिन्टो सन् ई० १८०७ से १८१३ तक हिन्दोस्थानके गवर्नर जेनरल रहेथे और यहांसे वापिस आनेपर उत्तम राज्यसेवा करनेके पुरस्कारमें उनका दर्जा बढ़ाया गयाथा और अर्लडम आफ–मिन्टो उनको प्रदान की गईथी। जेनरल सर टामस हिसलोप, जो १८१७ की साल मेहदीपुरके संग्राममें संयुक्त थे, आपके दादा थे। प्रथम अर्ल आफ–मिन्टोके भाई सर ह्यू इलियट, म्युरिच, बर्लिन और नैपिल्समें आमात्यका पद भोगनेके उपरांत मद्रासमें गवर्नर नियुक्त हुयेथे। इसलिये भारतसे आपका सम्बन्ध पुराना है। आपका जन्म १८४५ में हुआथा। ईटन तथा ट्रिनिटी कालिजमें आपने विद्या पढ़ीथी। बहादुरीका परिचय पढ़नेके सम

यमें ही आपसे मिलने लगाया । ईटनके कालिजमें आप कसरती रहकर कपातये । ट्रिनिटी कालिजमें दौड़की कसरतमें आप प्रथम आयेथे । वि प्राप्त करनेके अवसर पर रीत्यानुसार १० मीलकी घुड़ दौड़में उत्तीर्ण हो आपने यूनीवर्सिटी स्टीपिल चेसका प्रथम पारितोषिक पायाथा । आप बड़े धुर, साहसी पुरुषहैं । संसारके प्रायः सब भागोंका भ्रमण भी आपने किय सैर और शिकारकेभी बड़े शौकीन है । विद्याभ्यासग और साहित्यसेव योग्यता भी सदैवसे आपके पक्षमें पाई जातीहै । अब भी आपके छोटे मानरेबिल मार्टर इलियट यम पी पब्लिकरोरीव्युके सुयोग्य संपादक हैं । भी गंभीर सैनिक विषयोंपर पब्लि करोरीव्यु, नायनटीय सेंचुरी, यूना सर्विस मैगजीन आदि पत्रोंमे निबन्ध लिखा करते हैं । आप युद्ध विग्रह राज्यशासन दोनोंके अनुभवी हैं और ६० वर्षके होजाने पर भी शरीरसे दृढ़ प्रसन्नचित्त हैं । १८६७में आप अंग्रेजी सेनामें भर्ती हुयेथे । १८७१ में किसी वि प कारणसे पैरिसमें गुप्तरूपसे रहे और एक भयानक आग बुझानेमें स हुए । पश्चात किसी गुप्त कार्यके लिये स्पेनकी सीमामें भेजेगये। १८७० में रु रूम संग्रामके अवसरपर जब रूसके विरुद्ध रूममें सेना भेजीगई तो उसके साथ थे । और डेन्युब नदीपर आपने रुसियोंसे मुकाबला कियाथ १८७८ की साल अफगानिस्थानकी लड़ाईमें आपने शूरता प्रकटकी थी । १८८१ म लार्ड रावटसके साथ प्रायवेट सिक्रेटरी होकर रास कुमाऊंमें गयेथे । १८८२ मे अर्बी पाशाके खिलाफ आप मिश्रकी लड़ाईपर भेजे गये और वहां अबूकिरके समामके अन्तर्गत जिसमें लार्ड वोल्सिलीने विजय पाई आप मागफाहये बुरुम घायल हुयेथे । उसी साल जब लार्ड लैन्सडोन क डाके गवर्नर जेनरल नियत हुये तो आपको उनके मैंगी सिक्रेटरीका दियागया । १८८५ में उत्तरी पश्चिमी कनाडाका बलवा दबानेके लिये आप नियुक्ति हुई । उपद्रव शान्ति करनेमें आपने सफलता पाई । १३ वर्ष पश्च लार्ड ऐबर्डीनके उत्तराधिकारी होकर आप गवर्नर जेनरल कनाडाके उच्च पद प्राप्त हुये । कनाडाके राज्य और प्रजाकी आपके शासनमें बड़ी उन्नति हुई सर्वसाधारणकी भलाइ पर आपका सदैव ध्यान रहा । १९०५ में वायसर यके पद पर नियुक्त होकर जब आप भारतको पयान करनेके लिये इं लैण्डको वापिस आये तो राजराजेश्वरकी गवर्नमेंटने कनाडाका अत्युत्तम शास करनेके पुरस्कारमें आयुक्त शस्त्रोंसे भराहुआ प्रशंसापत्र आपको दिया । आपक पत्नी लेडी मिन्टो महारानी विक्टोरियाके प्रायवेट सिक्रेटरी सर चार्ल ग्रेकी लड़कियोंमेंसे एक हैं । भारतको पयान करते समयः लेडी मिन्टोंने क बिदाईके जल्सेम कहाया कि यदि मेरे पतिके शासनमें कनाडाकी प्रजा सदृश पूर्वी प्रजाको भी सुख चैन हुआ तो मुझको सन्तोष होगा । लार्ड मिन्टो

हिंदोस्थान आने पर लेडी मिन्टोंके भाई वर्तमान अर्ल ग्रे कनाडाके गवर्नर जेनरल नियुक्त हुयेहैं । रावसबरोशायरमें शहर हेनिकसे ६ मील दूर आपका राजप्रसाद "मिन्टोभवन" बहुत सुंदर, भव्य और दर्शनीय है। उसमें पहलेसे ही बहुमूल्य प्राचीन चित्रों तथा पदार्थोंका संग्रह है। आपने उसमें और भी बढ़ती कीहै। स्काटलैंडके प्रसिद्धकवि सर वाल्टर स्काटने मिन्टोभवनको आकर देखाया और "ले आफ दी लास्ट मिन्स्ट्रेल" नामक काव्यमें उसका वर्णन कियाया।

मेओ–(रिचर्ड सौथवेल, षष्ठ अर्ल आफ् मेयो–Richard Sonthwell, 6th Earl of Mayo)–डबलिन (आयरलैंड) में २१ फरवरी, स. ई. १८२२को जन्मे। आपके पितापंचम अर्ल आफ–मेओ थ। और आपका वंश प्राचीन तथा प्रतिष्ठित था आपके अनेक पूर्वजोंने भी बड़े२ उच्च पद पायेथे। युवा होकर लार्ड मेओ ३ दफे आयरलैंडके मुख्य मंत्री रहे। १८६९ में वायसराय हिंद होकर हिंदोस्थानको आये लेकिन ऐन्डमन द्वीपमें १८७२ का. साल एक कैदीके हाथसे मारेगये। आपके शासनमें इसदेशके भीतरी प्रबन्धमें बहुत कुछ उन्नति हुई। लार्ड लारेन्सका विचारहुआ अम्बाला दर्बारभी शेरअलीको अमीरकाबुल बनानेके लिये आपहीके शासनके पहिले वर्षमें सफलतासहित सम्पूर्ण हुआ। १८६९-७० में ड्युक आफ एडिन्बरो हिंदोस्थानमें आये जिससे देशीनरेशोंके चित्तमें सरकारकी शुभ चिन्तनाने पहिलेकी अपेक्षा अधिक दृढताले स्थितिपाई।

लार्ड मेओने कृषिविभाग स्थापनकिया और अनेक विभागोंका सुधार किया। मालगुजारी और नमकका महसूल वसूल करनेके कायदोंमें बहुत कुछ सुधार किया। आपके समयमें सड़क, रेलवे और नहिरोंने बहुत विस्तार पाया जिससे देशकी दशामें अधिक उन्नति हुई। लार्ड डेलहौसीका सोचाहुआ पबलिक वर्क्स विभाग (मुहकमा तामीरात) भी आपहीके समयमें स्थापित हुआ। मेओकालिज, अजमेर आपके स्मारकमें खोलागया।

म्युर (सर विलियम म्युर, के सी यस आई, यल यल डी, डी सी यल–Sir William Muir, K C S I, L L D D C L)–म्युरसेन्ट्रल कालिज, इलाहाबाद आपकी स्थापित है। १८१९ में जन्मे। ग्लासगोके रहनेवाले विलियम म्युर आपके पिता थे। १८४० में शादीकी। एडिनबरो और ग्लासगोकी यूनीवर्सिटियोंमें तथा हेलीबरी कालिजमें शिक्षा पाई। १८३७ में बंगाल सिविल सर्विसमें भरतीहुए। पश्चात पश्चिमोत्तरदेशकी गवर्नमेन्टके सिक्रेटरी तथा बोर्ड आफ रेवीन्युके मेम्बर रहे। सन ५७ के गदरमें खबर विभाग (Intelligenc,

Department) के अफसर होकर आगरेमें रहे। फिर गवर्नमेन्ट हिन्दके मंत्री होगये। १८६७ में गवर्नर जेनरलकी कौंसिलके मेम्बर हुए और के सी आई ई का खिताब पाया। १८६८ में पश्चिमोत्तरदेशके लफटिनेन्ट गवर्नरका पद पाया। १८७४ में इङ्गलैंड जाकर मालविभागके मंत्री हुए।१८७६में कौंसिल आफ इन्डियाके मेम्बर हुये। १८८५ से १९०० तक एडिनबरो यूनीवर्सिटीके प्रिंसिपेल और वायस चैनसेलर रहे।

हिंदोस्थानसे पेन्शन पाकर इङ्गलैंडको वापिस जाने पर आपको भारतके सिक्रेटरी आफस्टेटके दफ्तरमें नौकरी दीगईथी। १९०५ की साल एडिनबरो (स्काटलैंड) में आपका देहान्त हुआ। आपको घोड़ेपर चढ़नेका अनुराग था। फिलासोफर आफ डिवीनिटी (Ph D) की उपाधि आपको प्राप्त थी। निम्नस्थ ग्रंथ आपके विरचित हैं-

1 Life of Mohomed
2 The Caliphate.
3. Mamluke dynasty
4 The Coran its Composition and teaching
5 The Mohomedan Controversy

रावर्टस (सर फ्रेडरिक रावर्टस, पी सी ,के पी ,जी सी वी ,जी सी यस आई ,जी सी आई ई , वी सी , डी सी यल ,यल यल. डी, लार्ड आफ कन्धार,प्रिटोरिया ऐन्ड वाटरफोर्ड—Sir Fredrick Roberts, P C., K. P., G C B, G C S I, G C I E, V C., D C L, L L. D, 1st Earl of Kandhar, Pretoria and Waterford) सन ई १८३२ की साल कानपुर में जन्मे। आपके पिता जेनरल सर ऐबरहम रावर्ट, जी सी बी आयरलैंडके रहनेवाले थे। एटन, सैन्टहर्स्ट और एडिस्कोम्बी के कालिजोंमें शिक्षा पाकर बंगालके तोपखानेमें लफटीनेन्टके पद पर नौकरी की। १८५९ में एक कप्तानकी बेटी नोरा बेमरीटासे शादी की। शनैः २ उन्नति करतेहुये १८८५ में हिंदोस्थानके कमान्डर इन चीफ हुए। १८५७ के गदरमें लखनऊ, दिल्ली, बुलन्दशहर, आगरा, अलीगढ़, कन्नौज, कानपुर, खुदागंज, फतेहगढ़, मियागंज इत्यादि स्थानोंमें बागियोंको परास्त करके शान्तिस्थापन की। १८६७ से ६८ तक ऐबीसीनियाकी लड़ाई में और १८७१-७२ में लुशाईकी लड़ाइमें सेनापति रहकर विजय प्राप्तकी। १८८६ की साल ब्रह्माकी लड़ाईमें भी आपही सेनापति थे। १८७९ से ८० तक काबुल कन्धारके युद्धमें वहांका झगड़ा सदैवके लिये चुकाकर आपने बृटिश गवर्नमेन्टकी कीर्ति अटलरक्खी

और लार्ड आफ कन्धारकी उपाधि पाई। १९०१—०२ में ट्रान्सवाल (दक्षिणी ऐफरिका) के युद्धमें आप बड़ी बहादुरीसे लड़े और अंग्रेजोंकी बिगड़ी बात बनानेमें समर्थ हुये। इसी युद्धमें आपका इकलौता पुत्र रणशायी हुआ लेकिन आपने उफ् नहीं की। थोड़ेही दिन पश्चात् आप इङ्गलैंड बुलालिये गये। उपरोक्त लड़ाइयोंके सिवाय अन्य बीसियों मोर्चोंपर भी जाकर आपने शत्रुका साम्हना कियाहै लेकिन कहींसे हारकर नहीं लौटेहै। गवर्नमेंट हिन्दने बीसियों दफे सर्कारी कागजोंमें आपकी प्रशंसा की है। लड़ाइयोंमें कई दफे आप घायल हुये और कई दफे आपका घोड़ा मारागया लेकिन आपके प्राण बाल २ बचे गये। सैनिक लोग पिताके समान आपको प्यार करते हैं और आपका नाम सुनतेही प्रेमसे विह्वल होजाते हैं। आप राजा तथा प्रजाके प्यारे हैं और आप रलैंडके रहनेवाले हैं। बृटिश गवर्नमेंटने वीरताके कामोंसे प्रसन्न होकर आपको (१) अनेक पदक प्रदान किये हैं (२) लार्ड आफ कन्धार और जी सी बी, जी सी यस आई तथा जी सी आई ई की उपाधियं दी हैं (३) बड़े २ इनाम भी दिये हैं और (४) बृटिश साम्राज्यकी सेनाके फील्ड मार्शलका पद दियाहै जिस पर आप १९०६ तक विद्यमानहै। पार्लियामेंटकी लार्ड और कामन्स सभाओंने भी आपकी कार्यवाहियोंपर दो दफे कृतज्ञता प्रकाश की है। अनन्यवीर सिपाही होनेके सिवाय आप विद्वान भी असाधारण श्रेणीके हैं। १८८१ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीसे डी सी यल की उपाधि पाईथी। १८८० में डबलिन यूनिवर्सिटीने और १८०३ में केम्ब्रिज तथा एडिनबरोकी यूनीवर्सिटियोंने यल यल डी की उपाधि आपको दीथी।

"वेलिङ्गटनकी उन्नति" और "हिंदोस्तानमें ४१ वर्ष" नामक अंग्रेजी ग्रंथ आपके विरचितहैं।

रिपन (जार्ज फ्रेडरिक सैमुअल राबिन्सन, के जी पी सी, जी सी यस आई, जी सी आई ई, बी डी, डी यल जे पी डी सी यल., प्रथममार्कुइस आफ रिपन—George Frederick Samuel Robinson, K G, P C, G C S I, G C I E, V D, D L, J P, D C L, 1st Marquis of Ripon)—

२४ अक्टूबर, स ई १८२७ को लन्डनमें जन्मे। आपके किसी पूर्वजको स ई १६८० में बैरोनेटका खिताब मिलाथा, एवं आपका वंश प्राचीन और प्रतिष्ठित है। आपके बापको अर्लकी उपाधि प्राप्त थी और आपकी माता बकिन्घ मशायरके महुय वेरनकी बेटी थी। प्रथम अर्ल दीग्रेकी पोती हेनरीटा, सी० आई० से आपकी शादी हुई। हलनगरकी तरफसे १८५२—५३ में, हडर्स-

फोल्डकी तरफसे १८५२—५७ म, वेस्टरायडिङ्ग (यार्कशायर) की तरफ से १८५७–५७ में पार्लियामेंटके मेम्बर रहे। १८५९–६१ में युद्ध विभागके उपमंत्री रहे। इन्डिया आफिसके उपमंत्री १८६१–६३ में रहे। युद्ध विभागके मंत्री १८६३–६६ में रहे। १८६६ में हिंदोस्थानके मंत्री आफ स्टेट हुए। १८६८ से ७३ तक कौंसिलके लार्ड प्रेसीडेन्ट रहे। १८७१ म आप उस कमेटीके प्रधान थे जिसने वाशिंगटनकी सन्धिका मसौदा तैयार किया था। १८१७ से ७४ तक फ्रीमेसन्सके ग्रैंडमास्टर भी आपही थे। १८८० से ८४ तक वायसराय हिंदके पद पर काम किया। १८८६ म जलसेनाविभागके मंत्री हुए। १८९२ से ९५ तक विदेशीबस्तियोंके मंत्री आफ स्टेट रहे। १८९५ में रिपनके मुख्यनायकका कामभी आपके सिपुर्द रहा। १९०२ में जीवित हैं और इङ्गलैंडमें २१,८०० एकड़ भूमिके जमींदार हैं। आपके हिंदोस्थानी शासनमें (१) ऐयूबखाँको परास्त करके अमीर अब्दुल रहिमानको काबुल का राज्य गद्दी दीगई (२) देशी समाचार पत्रोंको स्वतंत्रता दीगई (३) लोकल सेल्फ गवर्नमेंटका आईन जारी हुआ (४) शिक्षा विभागका सुधार हुआ विद्याविस्तार हुआ (५) बाहरसे आनेवाले सूती इत्यादि तिजारती असबाब पर से महसूल हटायागया (६) कुछ हिंदोस्थानी सेना वृटिश गोरी सेनाको मदद देनेके लिये १८८२ में मिस्र देशको भेजीगई जो वहां पर बड़ी दृढ़ता और वीरतासे लड़ी। पश्चात् इसी सेनाके कुछ अफसर और सिपाही इङ्गलैंडको भेजे गये जिनका आगत स्वागत वहांपर सब लोगोंने प्रतिष्ठा सहित किया। संक्षित लार्ड रिपनने अपने शासनमें हिंदोस्थानियोंको अनेक स्वत्व दिये, उनकी आर्थिक दशा सुधारनेका उद्योग किया, विद्योन्नति की ओर देशियोंकी प्रतिष्ठा बढ़ाई। रिपन कालिज, लखनऊ आपके स्मारकमें खोलागयाथा।

लिटन (लार्ड बुलवर लिटन, जी सी यस आई –Lord Bulwer Lytton, G C S I) आप नामी कवि होकर अनेक ग्रंथोंके रचयिता थे। राजनैतिक पुरुषों तथा सुप्रसिद्ध वक्ताओंमें आपकी गणना है। स ई १८७६ से ८० तक वायसराय हिंद रहे। आपने शस्त्र सम्बन्धी आईन बनाकर हिंदोस्थानी प्रजासे हथियार लेलिये थे और देशी पेपरोंका मुंह बन्दकरनेके लिये भी आईन बनाया था। १८७४ में मलिका विक्टोरियाने कैसरे–हिंदका खिताब लिया, इसके प्रचारके करनेके लिये आपने दिल्लीमें बृहत दरबार किया। १८७६–७७ में इस देशमें भयानक अकाल पड़ा, जिसमें सरकारने ११ करोड़ रुपया खर्च किया, बाहरसे बहुतेरा नाज मंगवाया और अकाल पीड़ित देशोंमें रेल और जहाजद्वारा पहुंचाया लेकिन मदान शोचनीय स्थल है कि सब मिलाकर लगभग ५० हजार मनुष्य मरगये,

१८७८ में शेर अली अमीर काबुलने बृटिश राजदूतका अनादर किया और काबुलमें आये हुए रूसी मिशनकी प्रतिष्ठाकी। इस पर अप्रसन्न होकर लार्ड लिटनने खैबर, कुर्रम और बोलानकी घाटियोंके रास्तेसे बृटिश फौजको काबुलपर चढ़ा दिया। शेर अली तुर्किस्तानकी तरफ भाग गया और वहीं मरगया। शेर अलीके पुत्र याकूबखाँने गन्डमकके स्थानपर सन्धि की जिसके अनुसार घाटियोंके पश्चिमी छोरतक अंग्रेजी सीमा बढ़गई और काबुलमें बृटिश रेजीडेन्ट रखनेकी बात स्थिर हुई। कुछ ही महीने पीछे अफ़ग़ानोंने सर उठाया, बृटिश रेजीडेन्ट सर लुई केवेगनरीको मारडाला और द्वितीय अफ़ग़ानयुद्धकी नौबत पहुंची। ऐसी हालतमें याकूबखाँने तख्त त्याग दिया और कलकत्ते पहुंचाये गये। सर फ्रेडरिक राबर्टसने काबुल पर चढ़ाई की और वहांकी उपद्रवी प्रजाको खूब ही ठीक किया। इसी अवसरपर लार्ड सालिसबरी मुख्यमंत्रीको इङ्गलैंडमें कनजरवेटिवदलकी पराजय होनसे अपना पद त्यागना पड़ा, यह सुनतेही लार्ड लिटन भी इस्तीफा देकर इङ्गलैंडको पधारे। युद्धका खर्चा निर्वाह करनेके लिये आपने हिंदोस्थानी प्रजापर इन्कमटैक्स लगायाथा। आपके पुत्र लिटनके द्वितीय अर्ल, हर्टफोर्ड शायर (इङ्गलैंड) में रहतेहैं और ४००० एकड़ भूमिके जमीदार हैं। आपकी पुत्री लेडी एलिजाबेथकी शादी लार्ड बैलफोरके साथ हुईथी जो लार्ड सालिसबरीके पीछे १९०२में इङ्गलैंडके मुख्य आमात्य हुए। १८९१में लार्ड लिटन परलोकगामी हुए।

लेथब्रिज (सर रोपर लेथब्रिज, एम ए, के सी आई ई Sir Ropper Leith bridge, M A., K C I E) २३ दिसंबर, स ई १८४० की साल डेवनशायरमें जन्मे। ई लेथब्रिज आपके बाप थे। आक्सफोर्ड कालिजसे एम ए पास किया। लैटिन, ग्रीक, हेब्रू आदि प्राचीन भाषाओं और गणित शास्त्रमें अपूर्व योग्यता दिखलाई। १८६८ से ७६ तक बंगालके शिक्षाविभागमें रहे। १८७१ से ७८ तक "कलकत्ता त्रैमासिक रिव्यु" का संपादन किया। १८७७ में शिक्षासम्बन्धी कमीशन, शिमलाके मंत्री बनाये गये। १८७८ में पोलीटिकेल एजेन्ट हुए और के सी आई ई का खिताब पाया। १८९२ मे पेन्शन ली। १८९५ में स्त्री मरीं। १८९७ में दूसरी शादी की। डेपुटी लेफटिनेन्ट और लार्डका खिताब आपको प्राप्तहै। डेवन तथा केन्टके जास्टिस आफ पीस भी हैं। १९०१ में डेवनशायर एसोसिएशनके प्रधान बनाये गयेथे। जूनियर कनजर्वेटिवक्लब, लण्डनके भी आप प्रधान हैं। एक्सटरके शिक्षासम्बन्धी डायोसिसनबोर्डके और डायोसियन कानफ्रेन्सके मेम्बर हैं। ओकहेम्पटनकी कौंसिलके उपप्रधान हैं। अपीलोंके कमिश्नर होकर ओकहेम्पटनमें इनकमटैक्सकी अपीलें सुनतेहैं। शिकारकरने और गाने बजानेके अनुरागी हैं। शिक्षासम्बन्धी तथा राजनैतिक आन्दोलनोंमें हिस्सा लेतेहैं। १९०७ में जीवितहैं। हिंदोस्थानकी

स्वर्णचरित्रावली, हिंदोस्थानका इतिहास, बंगालका इतिहास तथा भूगोल और अंग्रेजी नूतन काव्यसंग्रह आपके रचे अंग्रेजी ग्रंथ हैं।

लैन्सडौन (हेनरी चार्लस कीथपेटी फिट्जमारिस, के जी, पी सी, जी सी एस आई, जी सी आई ई, जी सी यम् जी, डी सी यल, यल यल डी पञ्चम मार्कुइस आफ लैन्सडौन—Henry Charles Keith Petty Fitzmaurice, K G P C, G C S I, G C I E, G C M G, D C L, L L D., 5th. Marquess of Lansdowne) आप इङ्गलैंडके एक अत्यंत अमीर प्राचीन वैरन वंशमें हैं। आपके अनेक पूर्वजोंने भी बड़े २ पद पाये थे। १४ जनवरी, सन् ई० १८४५ की साल आपका जन्म हुआ। १८६६ में पिताके देहांत होनेपर मार्क्वस आफ-लैन्सडौनका खिताब पाया। १८६९में ड्यूक आफ एवरकार्नकी बेटी माड, सी० आइ० से शादी की और उसी साल बृटिश गवर्नमेंटकी चाकरीमें मंत्री कोषविभागका पद पाया जिसपर १८७२ तक रहे। १८७२से ७४ तक सेनाविभागके उपमंत्रीका पद भोगा। १८८०में हिंदोस्थानके उपमंत्री आफ-स्टेट रहे। १८८३ से ८८ तक कनाडाके गवर्नर जेनरल रहे। १८८८से ९३तक वायसराय हिंदके पद पर काम किया। इङ्गलैंड वापिस जाने पर सेनाविभागके मंत्रीका उच्च पद १८९५ से १९०० तक भोगा। १९०० में विदेशी मुल्कोंके मंत्री आफ-स्टेटका पद पाया जिस पर १९०५ तक हैं। १४२००० एकड़ भूमि आपकी जमींदारीमें है। आप प्रमाणिक और पक्के शासक हैं।

वाशिङ्गटन (जार्ज वाशिङ्गटन, अमेरिकाकी संयुक्तरियासतोंके प्रथम प्रेसीडेण्ट—George Washington 1st President of United States, America) आपके पूर्वज इङ्गलैंडसे अमेरिकामें आयसे थे। वरजीनियामें सन् ई०१७३२ की साल आपका जन्म हुआ। युवावस्थामें जेनरल ब्रेडक्की मातहतीमें फ्रांसीसियोंसे कनाडामें लड़ते रहे। जब अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनताके लिये बृटिश गवर्नमेंटसे युद्ध ठाना तो सेनाका कमाण्डर इन-चीफ आपको नियत किया। बड़ी बुद्धिमानी और वीरताके साथ १७ मार्च १७७६ में आपने अंग्रेजोंसे बोस्टन् खाली करा लिया। पश्चात् कई वर्ष तक युद्ध जारी रहा जिसमें आप कई दफे हारे लेकिन १७८१ की साल यार्क टाउनके युद्धमें बृटिश जेनरल लार्ड कार्नवालिसको आपने पूर्णरीतिसे परास्त करदिया। इसके दो वर्ष पीछे सन्धिकी नौबत पहुंची जिसके अनुसार अमेरिकाकी संयुक्त रियासतों ने स्वाधीनता पाई और आपको संयुक्त रियासतोंका प्रेसीडेन्ट बनाया। युद्ध तथा शान्तिमें समान रीतिसे सर्वोत्तम शासक और स्वदेशियोंके अत्यन्त मानिभाजन होनेके कारण अमेरिकावाले आपको सर्वश्रेष्ठ पुरुष मानते थे। आप बड़े मजबूत,

शान्ति स्वभावके अंग्रेजथे। बाहरी भाव सर्वथा शान्तिमय मालूम होताथा लेकिन दिल जोशसे भराहुआ था जिसको आप जब्त करसकते थे और दूसरोंमें व्याप्त करसकते थे। जेनरल वाशिंगटनका स० ई०१७९९ में देहान्त हुआ।

वेङ्कटरमणसिंहजूदेव, सर, महाराजा, बहादुर, जी सी यस आई

(रीवाँनरेश) आप सर रघुराजसिंहजू देव, जी०सी० यस० आई० के पुत्र हैं। इस राज्यके संस्थापक महाराज व्याघ्र देवकी आप३२ वीं पीढीमें हैं। वि० सं० १९३३ में आपका जन्म हुआ। पूरे ३ वर्षके भी नहीं होने पाये थे कि पिताका वैकुंठवास होगया। मातृगणके अनुरोधसे श्रीमानकी शिक्षाका प्रबन्ध राजधानी रीवाँ तथा सतनाहीमें कियागया और कहीं दूर नहीं भेजे गये। अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत भाषाओंके ज्ञान के बाद साहित्य, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, कानून गणित, युद्ध विद्या आदि की शिक्षा आपको दीगई। पश्चात् राजकाजका व्यवहारिक काम आपको सिखलायागया और स्वराज्यका दौरा तथा भारतके प्रत्येक भागकी सैर कराके देश विदेशकी रीति भाँति और चाल ढालसे आपको परिचित किया गया। १८९१ ई० में डूमराऊंकीराज कुमारीसे विवाह हुआ। १८९५ ई० में राजकाजका भार ब्रटिश गवर्नमेन्टकी आज्ञासे आपको सौंपागया। सिंहासनारूढ होनेके दिनही श्रीमानकी प्रथम आज्ञा राज्यलिपि उर्दूके स्थानमें देव नागरी करदेनेकी हुई। श्रीमान हिंदीके बडे प्रेमीहैं। राज्याधिकार पानेके कुछहीदिन बाद श्रीमानका विवाह रतलाम नरेशकी भगिनीसे हुआ। दोवर्ष बाद १२ मार्च स० ई० १९०३ को श्रीयुत उज्जैनिन महारानी साहिबाके गर्भसे वर्तमान महाराज कुमारका जन्म हुआ। श्रीमानबडे विद्यानुरागी हैं। प्रजाकी विद्योन्नति करना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। सतनामें श्रीमानने अपने नामसे एक स्कूल खोलाहै। रीवाँमें पहलेहीसे हाई स्कूल, बोर्डिंगहौस तथा संस्कृत पाठशाला है और दीन विद्यार्थियोंके लिये बहुतसी छात्र वृत्तियें नियत हैं। इसके सिवाय राज्यके प्रत्येक बडे गाँवमें हिंदी और उर्दूकी पाठशालायें हैं। प्रजाके रोग निवारणार्थ राज्यके छोटे २ गाँवमें भी अस्पतालहैं। रीवाँ, सतना और उमरियामें बडे २ अस्पताल हैं। इन अस्पतालोंमें औषधि मुफ्तबाँटी जातीहै। राज्यारूढ होतेही श्रीमानने सतनामें अपने नामका नेत्रौषधालय खोल दियाथा। राज्याधिकार पानेके एकही वर्ष बाद रीवाँ राज्यमें घोर दुर्भिक्षपड़ा जिसमें प्रजाकी प्राणरक्षाके लिये अनेक प्रयत्न किये गये और२५लाख रुपये खर्च किये गये।इस सुप्रबन्धसे खुश होकर महारानी विक्टोरियाने श्रीमानको जी०सी०यस०आई० का खिताब दिया। उमरियाके आसपास कोयलेकी खानि खोदनेका काम पहलेसे गवर्नमेन्टके हाथमें था राज्यको गवर्नमेन्टसे कुछ कर मिलता था। स० ई० १९०२ में श्रीमानने यहाँके कुल कारखानेको १३ लाख रुपयेमें गवर्न–

मेन्टसे मोल लेलिया जिससे दर्बारकोभव बहुत आमदनी होतीहै। रीवाँका आधेसे अधिक भाग धन युक्त है जिसमें अच्छी २ लकडियोंके सिवाय चिरौंजी लाख और कत्था आदिकी उपज विशेषतासे होतीहै। श्रीमानने इसकी आमदनी पूर्वापेक्षा बहुत बढाई है। श्रीमानने राज्यके दीवान राव जनार्दन सिंहकी सेवासे प्रसन्न होकर उन्हें २५००० रु० वार्षिक आमदनीकीजागीर देकर लालाका ठाकुर बनाया था। वह जागीर अबतक उनकी विधवा और पुत्रके अधिकारमें है। स० ई० १९०४ से सेना विभागके कमाण्डर-इन-चीफ की जगह खाली रखकर उक्त पदका काम एक मिलिटेरी सिक्रेटरीकी मददसे श्रीमान खुद करतेहैं। अवसर आनेपर अनेक और विभागोंमें भी फेरफार करके श्रीमानने सुयोग्य कर्मचारियोंकी नियुक्तिकीहै। श्रीमान निपुण शिकारी हैं। अयोग्य और अपराधी कर्मचारियोंपर दया नहीं करतेहैं। राजमद और युवावस्थाके दुर्व्यसनोंका लेश मात्रभी आपम नहीं पाया जाताहै। इसी कारण अत्यन्त पुष्ट और नीरोगहैं।स्वभाव अत्यन्त सरल है। साधारण मनुष्योंकी तरह परिश्रम करनेसे भी नहीं हिचकते हैं। सब बातोंकी खबर रखते हैं इसीलिये अन्याय होनेकी संभावना नहीं रहती॥

वेलिजली (रिचर्ड काली, मार्कुइस आफ-वेलिजली-Richard-Colley Marquess of Wellesly)-२०जून,स ई १७६०को डबलिन(आयरलैंड) में जन्मे। गैरेट, प्रथम अर्ल आफ़-मारनिङ्गटन आपके पिता थे। एटन कालिजमें शिक्षा पाई। बियरअल्स्टनकी तरफसे पार्लियामेंटके मेम्बर हुये। शीघ्र ही मंत्री कोषविभागका पद पाया। १७९३ में प्रिवीकौंसिलके मेम्बर हुये और पिताके मरने पर लार्ड मारनिङ्गटनका खिताब पाया। १७९८ से १८०५ तक गवर्नर जेनरल हिंद रहे। १७९० में मार्कुइस आफ़ वेलिजलीका खिताब पाया। १८२१ और १८३३ में दो दफे आयरलैंडके लार्ड लफ्टिनेन्ट हुए। १८३१ म लार्ड स्टेवर्डका पद पाया। दो शादियां कीं। पहिलीसे कई बच्चे हुए जो मरगये। दूसरी शादीसे जो ६५ सालकी उम्रमें कीथी कोई सन्तान नहीं हुई। आप बड़े विद्वान थे और ग्रंथकार भी थ। जब हिंदोस्थानमें गवर्नर जेनरल होकर आये तो उन दिनों दिल्लीके मुगलराज्यकी हीन दशा थी। अनेक राजे, नवाब और सूबेदार स्वाधीन हो बैठेथे; मरहठे जोरपर थे और आपसमें फूट होनेके कारण फरासीसोंका दबदबा बढ़ता जाता था। यह हालत देख लार्ड वेलिजलीने राजाओं, नवाबों इत्यादिको अपने साथ एक सहायक मेलजोलमें मिलाकर फरासीसोंका दबदबा घटानेकी चाल चली। सन्धिके अनुसार सबसे प्रथम निज़ाम हैदराबादने बिना युद्धकी नौबत आये १७९८ की सन्धिके अनुसार बिना अंग्रेजोंकी सम्मतिके किसी फिरङ्गीको नौकर न रखनेका वायदा किया और फरासीसी सेनाको अपने राज्यसे दूर किया। १८०१ में नवाब दर्बार अवधने उपमरूपी सन्धिके अनुसार सहायक सेनाके खर्चके लिये गंगा और यमुनाके

धीपका मुल्क (दोआबा) और रुहेलखण्ड अंग्रेजोंको देदिया । पश्चात् वेलिजलीने मैसूरके टीपू सुलतानको फरासीसोंसे सम्बध तोड़ने और अंग्रेजोंके साथ सहायक मंडलीम सम्मिलित होनेके लिये लिखा । टीपूके कान न करने पर १७९९ में तृतीय मैसूरयुद्ध आरम्भ हुआ।लार्ड वेलिजलीने खुद चढ़ाई की। टीपू वीरतासे लड़कर श्रीरङ्गपट्टनके किलेमें मारागया और उसका राज्य अंग्रेजों तथा उनके साथी निज़ाम और मरहटोंने आपसमें बांटलिया । इसी समय कर्नाटक और टैन्जोरका राज्य भी अंग्रेजी अधिकारमें आया । यह सब मिलाकर प्राय: उतनाही मुल्कथा जितना अब मद्रास प्रेजीडेन्सीमें दाखिलहै ।

टीपूके मुक़ाबलेमें अभी तक अंग्रेजोंके साथ२दो दफ़े मरहटे लड़चुकेथे लेकिन निज़ामकी तरह सहायक मंडलीमें दाखिल नहीं थे । बरोडाके गायकवाड़, नागपुरके भोंसला, इन्दौरके होलकर और मालवाके सेंधिया इस समयके मुख्य मरहटा सरदार थे और पूनाके पेश्वा इन सबके प्रधान थे, लेकिन नष्टबुद्धिको प्राप्त होनेके कारण आपसमें मिलकर नहीं चलतेथे। १८०२ में होलकरसे परास्त होकर पेशवाने अंग्रेजोंके साथ बैसीनकी सन्धि की जिसके अनुसार अंग्रेजोंके सिवाय किसी देशी, या फिरंगी शक्तिसे सम्बध न रखनेका वायदा किया और सहायक फ़ौजके खर्चके लिये कई जिले अंग्रेजोंको दिये जिससे बम्बईकी तरफ अंग्रेजी राज्य पहिलेकी अपेक्षा अधिक बढ़गया। मरहटोंकी स्वाधीनताका नाश कारक यह मेल सेंधिया और भोंसलाको पसन्द नहीं आया अतएव द्वितीय मरहटा युद्ध छिड़ा । इसम गवनर जेनरलके भाइ सर आर्थर वेलिजली (ड्यूक आफ़-वेलिङ्गटन) और लार्ड लेक अंग्रेजी फ़ौजके सेनापति थे और दूसरी तरफ़ सेंधिया, भासला और जस्वन्तराव होलकर थे । आर्थर वेलिजलीने असाई और आरगांमके युद्धोंमे भोंसलाको परास्त करके अहमदनगर छीनलिया लार्ड लेकने अलीगढ़ और लसवाड़ीके युद्धोंमें सेंधियाको परास्त किया और दिल्ली तथा आगरा के शहर छीनलिये । हारकर भोंसला और सेंधियाने १८०३ के अन्तमें सन्धिकी जिसके अनुसार सेंधियाने मुगल सम्राट शाह आलम मय साहित जमुनाके उत्तरोत्तर सब देश अंग्रेजोंके हवाले किया जो नवाब वजीर अवधसे पायेहुये मुल्कके साथ मिलकर पश्चिमोत्तर प्रदेश हुआ । भोंसलाने अंग्रेजोंको उड़ीसा और निजामको बरार दिया । महाराजा जस्वन्तराव होल्कर इस अवसरपर पराजित नहीं होसके उन्होंने १८०४ में कर्नैल मानसन साहबको मध्य हिंद५ बेतरह हराया और १९०५ में लार्ड लेकका मुंह भरतपुरके किलेपरसे फेर दियागया ।

शायस्ताखाँ, हफ्तहजारी,खानेजहाँ,अमीरुल उमरा,उमदतुल्मुल्क, सिपह सालर बहादुर आपका असली नाम मिर्जा अबूतालिबया।मलिका नूरजहाँ

के आप समीपी मातेदारथे। मुगलसम्राट शाहजहांकी फौजमें अपने बाप ममीख़ दोला आसफखाँके नीचे नौकर हुयेथे और कई लड़ाइयोंमें बहादुरीसे लड़कर पञ्च हजारी मनसब तथा खानखानाँका खिताब पायाथा। फिर दक्षिणदेशीय निजामशाही वंशके बादशाहोंको परास्त करके तथा मरहठासे लड़कर विहारकी सूबेदारी पाईथी। पश्चात् मालवाकी सूबेदारी पर भेजेगयेथे और औरंगजेबके साथ बलख तथा बदख़शानाकी लड़ाइयोंमें रहेथे।कुछ दिनों बाद शाहिज़ादे मुरादकी जगह कुछ दक्षिणकी सूबेदारी पाईथी फिर औरंगजेबकी मातहतीमें तानाशाह और अबुल हसनसे लड़ेथे।अंतमें मुगल सम्राट् शाहजांने प्रसन्न होकर छःहजारी मनसब तथा खान जहाँका खिताब आपको दियाथा।औरंगजेब और दाराशिकोहमें मेल करानेका काम भी आपको सौंपागयाथा। शाहजहांके बीमार पड़नेपर जो तख्तके वास्ते झगड़ा हुआथा उसमें आप औरंगजेबके पक्षमें थे। औरंगजेबने तख्तपर बैठकर आपको हफ्तहजारी मनसब, अमीरुल उमराका खिताब तथा दो करोड़ दामकी जागीर दीथी और शुलेमां शिकोहके पकड़नेके लिये आपको सईनात कियाथा। सुलेमाँशिकोहको पकड़लाने पर दक्षिणकी सूबेदारीपर फिर भेजेगयेथे। कई विपद साक्षारोंके मारे जानेपर औरंगजेबने आपको शिवाजी मरहटाके दमन करणार्थ भेजा लेकिन वहां आपका छोटा पुत्र अबुल हसन मारागया, आपकीभी एक उंगली कटगई। आपकी फौज छिन्न भिन्नहोगई और आपको जान बचाकर भागनापड़ा। इसके पीछे बंगालकी सूबेदारी आपको मिली। वहां चिटागांव विजय करके उमदतुलमुल्कका खिताब पाया। फिर आगरेकी सूबेदारीपर बदली होगई। अंतमें बंगालकी सूबेदारीपर और फिर आगरेकी सूबेदारी पर बदल दियेगये। ११०५ हिजरीमें मरे।

शाहजी भोंसला (मरहठाराज्यके संस्थापक महाराज शिवाजी भोंसलाके पिता)—आपके पिता मालोजी भोंसला सूपा वा पूनाके जागीरदारथे। लुखजी यादवरावकी पुत्री जीजीबाईसे स०ई०१६०४में आपकी शादीहुईथी।जीजीबाईके पिता निजाम शाहीदर्बारके आधीन एक बड़े जागीरदारथे। जब मुगल सम्राट दिल्लीने अहमद नगरपर अधिकार करलिया तो स ई १६२१ में लुखजी मुगलोंकी तरफ् चले गये और शाहजी निजामशाही सरकारकी तरफ होगये। किसी २ लड़ाईमें श्वशुर दामादकाभी सामना होजाता था। स ई १६२६ में शाहजी हारकर भागे। जीजीबाई जो उनके साथ २ युद्धस्थलमें बहलीकी घोड़ेपर सवारहो उनके साथ भागी। लुखजीने पीछा किया और जीजीबाईको जो इनदिनों गर्भसेथी पकड़कर शिवनेरीके किलेमें कैद करदिया। स ई १६२७ की साल कैदहीमें जीजीबाईके गर्भसे शिवाजीका जन्म हुआ। स ई १६३० में लुखजीके मारेजानेपर जीजीबाई मुगलोंके हाथ पड़ी और मरहटोंने मिलकर

बड़ी कठिनाईसे उसको छुड़ाया । पश्चात् शाहजीने नवाब बीजापुरके यहां नौकरी करके कर्नाटकमें बड़ी जागीर पाई और अपने ज्येष्ठपुत्र शम्भाजीको तथा नई विवाहिता स्त्री तुकाबाईको अपने साथ रखके जीजीबाई और शिवाजीको पूनाकी जागीरपर भेज दिया । पूनामें शिवाजीका वैभव बहुत कुछ बढ़ा (देखो शिवाजी) । स ई १६४९ म सुलतान बीजापुरकी अनुमतिसे बाजीघोरपुरेने शाहजीको दगासे कैद करा दिया । स ई १६५३ में शाहजीने कैदसे रिहाई पाई । इससे पहिलेही उनके पुत्र शम्भाजी विद्रोहियोंके हाथसे मारे जाचुकेथे और शिवाजीने अवसर पाकर अपने पिताके शत्रु बाजीघोरपुरेको सपरिवार नष्ट करदिया था । कैदसे छूटकर शाहजी अपने पुत्रसे मिलनेको गये । स ई १५९४ में जन्मे, स ई १६६४ में मृत्यु ।

शाहुछत्रपति, महाराजा, जी सी यस आई, (कोल्हापुर नरेश)--आप कागल नरेशके पुत्रहैं और कोल्हापुरकी गद्दीपर दत्तक होकर आयेहैं । स० ई० १८७४ मे जन्मे । १८८३में महाराजा शिवाजी चतुर्थके बाद कोल्हापुरकी गद्दीपर बैठे । १८८५ से ९० तक राजकुमारकालिजमें शिक्षा पाई और हिंदोस्तान तथा सीलोनमें भ्रमण करके अनुभव प्राप्त किया।१८९१की साल बड़ोदामें आपका विवाह हुआ ।१८९४ में बृटिश गवर्नमेंटने राज्यका पूर्ण अधिकार आपको सौंपा आप घोड़ेपर खूब चढ़ते हैं, एक दफे ६ घंटेमें ११० मील घोड़ेकी पीठपर गयेथे । १८९८ में बृटिश गवर्नमेंटने जी सी यस आई का खिताब आपको दिया। १८६२ में कोल्हापुर राज्यसे प्राणदण्ड देनेका अधिकार छिलिया गयाथा लेकिन १८९६ में आपको फिर मिलगया । कोल्हापुर राजधानीमें आपने एक बृहद् विद्यालय तथा एक शफाखाना बनवायाहै और कई बाग लगवायेहैं । राजप्रबन्ध आपका प्रशंसनीयहै । बृटिश गवर्नमेंट आपसे प्रसन्नहै । व्यापारियोंको उत्तेजना आपसे मिलतीहै । राजराजेश्वर एडवर्ड सप्तमके राज्याभिषेकके अवसर पर निमंत्रण पाकर आप इङ्गलैंड पधारेथे । कोल्हापुर राज्यके अंतर्गत विशालगढ़, कागल आदि ११ छोटे राज्यहैं और इस राज्यसे मरहठा राज्यके संस्थापक महाराज शिवाजीके वंशका नाम चिरस्थायी है ।

सरदारसिंह, महाराजा, जी सी यस आई (जोधपुर नरेश)-आप स्वर्गीय महाराजा यशवन्तसिंह, जी सी यस आई के पुत्र हैं । स० ई०१८८० में जन्मे । बूंदीकी राजकुमारीसे तथा महाराव राजाराम सिंहकी राजकुमारीसे शादी हुई जिससे कई सन्तान हैं । अंग्रेजी भाषा औरपोलो तथा सैनिक कामोंमें अच्छी योग्यता रखतेहैं । १८९७ में बृटिश गवनमटने आपको राज्यका पूण अधिकार दिया । १९०१में सीलोन,आस्ट्रेलिया,फ्रांस और लण्डनकी यात्रा करके राजकीय प्रबन्ध इत्यादिका अनुभव प्राप्तकिया । जोधपुर नरेश राठौरजातिके मुखिया होकर छः राठौरराज्योंके अग्रणीहैं । जोधपुरराज्यम ३७००० वर्गमील भूमि है।

३१६२ सवार । ३६५३ पैदल और २१ तोपें रखनेका अधिकार है । नेटाल सलामी १७ फैरोंकी है । वार्षिक आय ४९, ३७००० रुपयेकी है ।

सालिसबरी (रायट आर्थर टालबट गैस्कायन सेसिल, के जी , पी सी एफ आर. एस , डी सी एल एल एल डी , डी एल , जे पी तृतीयमार्क्वस आफ सालिसबरी Robert Arthur Talbot Gascoyne Cecil, K G , P C , F R S , D C L , L L D , DL , J, P 3rd Marquess of Salisbury)–३फरवरी, स० ई० १८३० को हेटफील्डमें जन्म पिता आपके द्वितीय मार्क्विस आफ–सालिसबरीये जिनके देहांत होनेपर१८६८ मार्क्विसका खिताब पाकर आप लार्डसभामें दाखिल हुये । १८५७ में एक अमीरकी बेटीसे शादीकी । ईटन और क्राइस्ट चर्च कालिज, आक्सफोर्डमें शिक्षा पाकर ग्रेजुएट हुये । विज्ञान और रसायनादि शास्त्रोंमें अपूर्व योग्यता रखतेथे इसके सिवाय प्रसिद्धवक्ता तथा ग्रन्थकार भी थे । १८५३ में आप ऑल्सकालिज आक्सफोर्डके सभासद बनाये गयेथे । १८६९ से अन्त समय तक आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीके चैन्सेलर रहे । १८५३ से ६३ तक स्टेमफोर्डकी तरफसे पार्लियामेंटके मेम्बर रहे । १८६६ से ६७ तक भारतके मंत्री आफ–स्टेट रहे । १८७४ से ७८ तक इन्डिया कौंसिलके मेम्बर रहे । १८७६ की साल कान्स्टैन्टीनोपिलकी कान्फरेन्समें राजदूत होकर गयेथे और १८७८ की साल बर्लिनकी कांग्रेसमें बृटिश गवनमेंटकी तरफसे असीम शक्ति पाकर संयुक्त हुये थेआधिकांश विलायत वासियोंकी दृष्टिमें आप विद्याबुद्धिके लिहाजसे सर्वोपरहोकर कानजरवेटिव दलके सर्वस्वीकृत प्रधान पुरुष थे । इसी कारण १८८१ से ८५ तक, १८८६ से ९२ तक और १८९५ से१९०२तक,कुल प्राय २० वर्ष इङ्गलैंडके प्रधान मंत्री रहे । बीच२ में गैर मुल्कोंके मंत्री आफ–स्टेट तथा मंत्री प्रीव विभागके पद पर भी काम किया । आपके मंत्रित्वके समयमें बृटिश राज्यकी बहुत उन्नति हुई और अन्य राज्योंकी दृष्टिमें उसका बल प्रभाव बहुत कुछ बढ़गया । आयर्लैंडवालोंको आपहीने पराभूत किया, मिसर तथा सोडानमें अंगरेजोंकी प्रधानता आपहीके समयमें प्रतिष्ठित हुई और आपहीके समयमें सम्पूर्ण दक्षिण अफरीका अंग्रेजी राज्य बनगया । आप ग्रेट इस्टन रेलवेके प्रधान थे । १९०० से लार्ड प्रिवीसिल और वेस्ट मिनिस्टरके हाई स्टेवर्डका कर्तव्य तथा अनेक और बड़े २ काम आपकी सुपुर्दगीमें थे ।२०३०० एकड़ भूमि आपकी जमींदारीमें थी । वाईकौन्ट क्रेनबोर्न आपके पुत्र हैं । आपका वंश प्राचीन और प्रतिष्ठितहै । आपके अनेक पूर्वज भी बड़े२ पदोंपर रहेथे । १९०२ में बुढ़ापेके कारण इस्तीफा दिया और आपके भान्जे लार्ड बेलफोर मुख्य मंत्री हुये । १९०४ में परलोकगामी थे ।

सुलतानसिंह राना (प्रसिद्ध लक्ष्यवेधी)-दक्षिणके निवासी इन्हें राणा सरतानसिंह कहते हैं। वि सं १९२० की साल लींबडीके क्षत्रिय राज्यवंशमे आपका जन्म हुआ। लींबडीके समीप रंगपुरमें आपकी कुछ जागीर है। आपके किसी पूर्व पुरुषने मुगलयुद्धके समय महाराना उदयपुरकी रक्षा करके रानाका खिताब पायाथा। आपके पिताका नाम भूपतिसिंह और काकाका नाम केशरीसिंह था। काका केशरीसिंह बचपनहीसे आपको गोदमे बिठलाकर बन्दूक चलाना तथा निशाना लगाना सिखाया करतेथे और रामायण, महाभारतादिकी कथायें सुनातेथे। इस प्रकार बडे होतेहुये आप हिंसक जीवोंका शिकार करने लगे और महाभारतके अनुसार निशानेबाजीका अभ्यास बढाने लगे। धीरे २ लक्ष्यवेधमें पारंगत होगये। भेद इतनाही रहा कि प्राचीन वीर तो बाणसे लक्ष्यवेध करतेथे लेकिन आप बन्दूक या पिस्टोलसे करतेहैं। वि० सं० १९६२ में आपकी उम्र ४२ वर्षकी है। इस समय आप ३० । ३५ प्रकारके प्रयोग करसकतेहैं। पुत्र शूरसिंहको भी आपने इस विद्यामें पारंगत करदियाहै। (१) बन्दूकको दहिने अथवा बायें कन्धेपर या टांगोंके बीचमें रखकर खडे, बैठे लेटेहुये हाथसे अथवा पैरसे बन्दूक चलाकर ठीक निशाना मारसकतेहैं। इसीका नाम सक्ष्यवेध है (२) चौखूटी लकडी पर बंधीहुई चार कुम रियोंमेसे जिसे कहाजाय उसे चक्कर करातेरहनेकी स्थितिमें तोडदेतेहैं इसी को चललक्ष्यवेध कहते हैं। (३) श्लोक पढते २ निशाना मारतेहैं। (४) जलतीहुई मोमबत्तीको गोलीसे बुझादेते हैं परन्तु बत्तीमें कुछ अन्तर नहीं आताहै। (५) किसीके शिर अथवा हाथमें नारियल देकर उसकी नरेटीको तोडदेतेहैं परन्तु न तो उस मनुष्यके कुछ चोट आती है और न गोला टूटने पाताहै इसीका नाम भयानक वेध है। (६) कुयेंके पानीमें पडेहुए सूखे नींबूमें ऐसी गोली मारतेहैं कि वह कुयेंके बाहर आपडताहै। (७) एक घडेके भीतर ४ रंगकी कुमरियोंको रखकर घडेके घूमते रहनेपर जिस रंगकी कुमरीको कहा उसीको विना देखे तोड देतेहैं इसीका नाम अदृश्यवेध है। (८) महाराजा दशरथ और पृथ्वीराजके शब्दवेधा बाण मारनेकी बात प्रसिद्ध है, आप भी आंखोंमें पट्टी बाँधकर चार रंगके रखेहुये घडोंका शब्द सुनते और उसे मननकरके फिर घडोंका स्थान बदलदेनेपर भी जिस रंगके घडेको कहो उसीको तोडदेतेहै। (९) द्रुपदराजाकी सभामें जिस मत्स्यवेधने सब राजाओंकी बुद्धि चकरादीथी वह मत्स्यवेध भी आप करतेहैं अर्थात् ऊपर खम्भेपर एक मछली टांगीजातीहै उसके नीचे एक बडे बर्तनमें भरकर पानी रखाजाताहै जिसमें मछलीकी छाया पडतीहै, उस छायाको देखतेहुये आप एटकतेहुए तराजूमें चढतेहैं और शरीरका गुरुत्व केंद्र ठीक रखतेहुए ऊपर टंगीहुई मछलीका वेध करतेहैं।

इन दिनों आप प्राचीन धनुर्विद्या और मंत्रोंकी खोज कररहेहैं और इस उद्योगमें हैं कि कोई राजा महाराजा व्यायामशाळा खोळकर ऐसा प्रबन्ध करदें कि जिससे प्राचीन धनुर्विद्याके सहारे इस प्रकारकी निशानेबाजीकी शिक्षाका प्रचार हो। आपकी विद्याका चमत्कार उदयपुर, निजाम, बड़ोदा, पोरबन्दर, दाँता, शाहपुरा, सिरोही, लीमड़ी, खंभात, बड़वान, सांगली, इचलकरंजी, भावनगर, ध्रांगध्रा, भरतपुर किशनगढ़, जूनागढ़, मैसूर आदिके नरेशोंने देखा और प्रसन्न होकर सार्टिफिकेट दिया है।

हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) इस महादार्शनिकका जन्म सन्ई० १८२० की साल इङ्गलैंडके डरबी नामक शहरमें हुआ। इसके बाप लड़कोंको पढाया करतेथे और चचा पादरी थे। बाप और चचासे इ ने ५ फिर शिक्षा पाइथी और किसी मदरसे में नहीं पढ़ा था। वैज्ञानिक विषयोंकी ओर इसकी प्रवृत्ति शुरूहीसे थी। यह जबतक किसीबातको तजरिबेसे सबूत नहीं करळेतेथे तबतक उसपर विश्वास नहीं करतेथे। इसी आदतके अनुसार पूर्व तत्व ज्ञानियोंके सिद्धांतोंको अपधापनमानकर इन्होंने उनकी परीक्षाकी और उनके खण्डनीय अंशका कठोरता पूर्वक खण्डन किया। १७ वर्षकी उमर काम सीखकर यह रेळवेके मुहकमेंमें यञ्जिनियर हुये लेकिन ८ वर्ष बाद इस्तेफा दे दिया। अनेक सामयिक पुस्तकोंमें लेख लिखते २ इनकी लेखन शक्ति प्रबलहुई और सम्पादन करना तथा ग्रंथ रचनाही इनका एक मात्र व्यवसाय हुआ ३० वर्षकी उमर इन्होंने स्पेशल स्टेटिक्स नामक किताब लिखी जिसमें सामाजिक और राजनैतिक विषयोंका विचार था। इनकी बुद्धिका झुकाव विशेष करके सृष्टि रचना और अध्यात्म विद्याकी तरफ था। यह प्रवृत्ति धीरे २ प्रतिदिन बढती गई और यह तत्कालीन पादरी होगये। तत्कालीनके १६ सिद्धांत इन्होंने निकाले। संसारके सब इष्टाइष्ट व्यापार इन्हीं नियमोंके अनुसार होतेहैं इस बातके सिद्ध करनेके लिये इन्होंने अपरिमित श्रमकिया। यह सृष्टिक्या ईश्वरने पैदाकीहै, या पदार्थोंहीमें कोई ऐसी शक्तिहै जिसके कारण यह आपही आप उत्पन्न होगये हैं? जन्म क्या है, पुनर्जन्म क्याहै, मरण क्याहै, धर्मक्याहै, पापपुण्य क्याहै, सुख दुःख क्याहै, संसारमें जितनी घटनायें होतीहैं वह किन नियमोंके अनुसार होतीहैं? दिनरात स्पेन्सर साहब इन्हीं बातोंके विचारमें संलग्न रहते थे। यह अभ्यास इन्होंने इतना बढाया कि सं सारमें ऐसा कोई भी शास्त्रीय विषय शेष नरहा जो इनके मानसिक विचारोंकी कसौटी पर नकसा गयाहो। नये २ सिद्धांतोंके निकालनेमें इनकी बुद्धि विलक्षण थी। ५० वर्षतक इन्होंने यह काम किया और अपने नये २ सिद्धान्तोंसे संसारको चकित और स्तम्भित कर दिया। १८८२ में स्पेन्सर साहब

अमेरिकाको गये, वहाँ उनका बड़ा आदर हुआ। योरप और अमेरिकाके विश्वविद्यालयोंने उन्हें दर्शनशास्त्रकी शिक्षा देनेके लिये कितनेही ऊचे २ पद देना चाहा, परन्तु उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक अस्वीकार किया। यूनिवर्सिटीकी उपाधियें पानेकी इच्छा आपको कभी नहीं हुई और यदि बिनापूछे कोई उपाधि आपको दीगई तो उसकी परवाह आपने नहीं की। स्वाधीन रहकर अपनी सारी उम्र विद्याभ्यासक्रम खर्च करदी और अपने अभूतपूर्व तत्त्वज्ञान पूर्ण ग्रंथोंसे संसारको अनन्त ज्ञान पहुंचाया। किताबोंके छपवाने और प्रकाशित करनेमें नफानुकसानका कभी विचार नहीं किया। आपकी तर्कशक्ति अद्वितीय थी, प्रतिपादनशक्ति विलक्षण थी, विपक्षियोंकोभी आपके सामहन सर झुकाना पड़ता था। आप अत्यंत कर्तव्य निष्ठ, दृढ निश्चय और निर्लोभी थे। आपका विद्याभ्यास दीर्घ, ज्ञानभण्डार अगाध और परिश्रम अमर्यादित तथा। योरपमें आपका तत्वज्ञानी विरलाही हुआ। आपने सर्वशक्तिमान् ईश्वरकी अपने समाज-घटना-शास्त्रमें कड़ी समालोचना कीहै लेकिन सृष्टि सम्बंधनी एक "अगम्य मर्यादा और सर्व व्यापक शक्ति" की महिमागाई है। अन्तके ५।७ वर्षोंमें वह बहुधा बीमार रहे। अन्तमें ८ डिसम्बर १९०३ ई० को इस लोकसे उठगये। कह मरे थे कि हमको गाड़ने की जगह जलाना वैसाही किया गया।

निम्नस्थ ग्रंथ स्पेन्सरके रचे हुये हैं –

1. Principles of Psychology (मानस शास्त्रके मूलतत्त्व)

2 A Synthetic Philosophy in 5 parts–1 First principles, 2.Principles of Biology, 3.Principles of Psychology, 4 Principles of Sociology, 5 Principles of Ethics. (संयोगात्मक तत्त्वज्ञान पद्धति ५ भाग–१प्राथमिक सिद्धान्त, २ जीवनशास्त्रके मूलतत्त्व ३ मानस शास्त्रके मूलतत्त्व, ४ समाज शास्त्रके मूलतत्त्व, ५ नीतिशास्त्रके मूलतत्त्व)

3 Facts and Comments (यथार्थ और टीका)

4 Essays (निबन्ध ३ जिल्द)

5 Various fragments (बहुतसी फुटकर बातें)

6 The study of Sociology (समाजशास्त्रका अध्ययन)

7 Education (शिक्षा)

हरुका-(जापानकी पटरानी)–२८ मई स ई १८५०को आपका जन्म उस उच्च वंशमें हुआ जिसमें से जापानके सम्राट्, मिकाडो अपने लिये रानियें चुनाकरतेहैं। आपको प्रथमही से रानीके योग्य शिक्षा दीगईथी। १९ वर्षकी उम्रमें वर्तमान मिकाडोसे आपकी शादी हुई। जब आप विवाहके आई तो उस

समय जापानमें देशसुधारकी इच्छासे प्राचीन रीति नीति और रियविम परिवर्तन होरहाया। देशस्थितिके परिवर्तनमें सबसे अधिक और प्रथम भाग आपहीने लिया। पुरानी पोशाकके बदले यूरोपियन पोशाकका प्रचार किया जिसको प्रजागणने खुशीसे अङ्गीकार किया। यद्यपि पोशाक यूरोपियन ढगकी पहनतीहैं लेकिन स्वदेशके आचार विचारोंको मानतीहैं। निजकी पूजीमेंसे दीन दुखियाको सहायता देतीहैं। अस्पतालोंमें जाकर रोगी सैनिकोंकी देखभाल किया करतीं हैं। चीन-जापान युद्धके अवसरपर आपने राजघरानेकी स्त्रियोंसे घायल सैनिकोंके लिये पट्टियें तैयार कराईथीं जो अस्पतालोंमें काम आईं। घायलोंकी शुश्रूषाके लिये आपने स्त्रियोंकी Red Cross Society स्थापन कीथी। आप दयालु और बुद्धिमती हैं। सर्दारों, जागीरदारों और दरबारियोंको सालमें एक दफ़ भोजन दिया करतीहैं। प्रजाकी हितकामनाके लिये सदैव चिन्तित रहतीहैं। कविता भी करतीहैं जो राजा प्रजाका सम्बंध दृढ़ करनेवाली और आपसमें प्रीति बढ़ानेवाली होतीहै।

आपके गुणोंका प्रभाव तमाम राज्य पर इस तरह पड़ाहै कि जिससे सम्पूर्ण प्रजा, राज्यके हानिलाभको अपना हानिलाभ समझतीहै। रुस-जापान युद्धके समय जो १९०५ में जारीथा राजदम्पतिजापानने अपने आरामके लिये १ पैसा भी खर्च न करनेका प्रण कियाथा, ऐश आराम छोड़ दियाथा, जापानी सैनिकोंके मारेजानेका हाल सुन २ कर आंसू बहायेथे और रणशायी सैनिकोंकी माताओं और विधवाओंको तसल्ली और सहायता दीथी। जापानी सैनिक भी अपने साम्राज्यकी प्रतिष्ठा बचानेके लिये जी तोड़कर लड़ेथे और रूसियोंको परास्त करदेनेमें समर्थ हुये थे।

हार्डिङ्ग (वाईकौन्ट हेनरी हार्डिङ्ग-Viscount Henery Hardinge)-सर हेनरी हार्डिङ्ग जो बादको वाईकौन्ट का खिताब पाकर लार्ड हार्डिङ्ग हुये, स इ १७८५ की साल केन्ट (इङ्गलैंड) में जन्मेथे। रेवरेण्ड हेनरी हार्डिङ्ग आपके बाप थे। आप १७९८ में अंग्रेज़ी सेनामें भरती हुए। १८०२ में लफ़टिनेन्ट और १८०४ में पैन्शन होकर ऊंचे २ ओहदे पर पहुंचे। ड्यूक आफ़ वेलिङ्गटनकी मातहितीमें अनेक युद्धोंमें लड़कर के. सी. बी. का खिताब पाया। पेनिनसुलर संग्राममें आपका एक हाथ भी जाता रहाथा। १८४४ से ४८ तक गवर्नर जेनरल हिंद रहे। इङ्गलैंडमें १८५६ की साल मरे। जब आप हिंदोस्तान आयेथे तो उस समय पंजाबी सिक्ख राज्यके सिवाय अन्य सब हिंदोस्तानी राजे अंग्रेज़ोंसे परास्त होचुकेथे। सर चार्ल्स मेटकाफके साथ जो महाराजा रणजीत सिंहने सन्धि कीथी उसका पालन उन्होंने अपनेजीते जी १८३९ तक पूर्णरीतिसे किया था लेकिन महाराजाके उत्तराधिकारियोंमें आपसमें फूट फैली और लालचवश फौजने ग ड़बड़कर अपनेही अमीर वज़ीरोंको मारना शुरूकियाथा। देशी दशामें घर्म

वन्दीने ६० हजार खालसा फौजको १५० तोपो सहित अंग्रेजी मुल्कपर चढ़ाई करनेके लिये भेजकर घरकी बला बाहर टालना चाही । यह खबर पहुंचतेही कमांडर इन–चीफ सर ह्यूगफ और गवर्नर जेनरल लार्ड हार्डिंग मोरचे पर आडटे । ३ सप्ताहके बीच मुदकी, फिरोजशाहर, अलीवाल और सोबराउनमें ४ युद्ध हुये । यद्यपि अंग्रेजी सेनाकी बड़ी हानि हुई लेकिन अन्तिम युद्धमें सिक्ख सेना सतलज पार हटादीगई और लाहौरपर अंग्रेजी अधिकार होगया । अन्तमें सन्धि हुई जिसके अनुसार महाराज रणजीत सिंहके बालक पुत्रको लाहौरकी गद्दी मिली, रावी और सतलजके बीचका मुल्क (जालंधर दो आब) अंग्रेजोंको मिला, खालसा फौजकी तादाद घटाईगई और लाहौर दर्बारमें बृटिश रेजीडेन्ट नियत कियागया । इस राजसेवाके उपलक्षमें सर हेनरी हार्डिंगको वाइकौन्टका खिताब मिला ।

हेस्टिङ्गज (लार्ड फ्रैन्सिस राडन, मार्कुइस आफ हेस्टिङ्गज–Lord Francis Rawdon, Marquess of Hastings) आयरलैंडमें ९ दिसंबर सन् ई० १७५४की साल जन्मे। जान लार्ड राडन आपके बाप थे। हारोमें शिक्षा पाकर उस समयकी रीतिके अनुसार सर्वत्र यूरपमें भ्रमण करके अनुभव प्राप्त किया था देशाटनसे लौटकर बृटिशसेनामें भरती हुये और १७७३ में लफटिनेन्टकापद पाया। कुछही समय पीछे आपको अमेरिकामें उस युद्ध पर जाना पड़ा जो अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनता पानेके लिये अंग्रेजोंसे ठानाया । ८ वर्ष पर्यंत वहा बड़ी वीरतासे लड़कर ऊंचा पद पाया । १७९३ में पिताके मरनेपर अर्ल आफ म्वायरा (लार्ड म्वायरा) का खिताब पाया। १८१४–२३ में हिंदोस्थानके गवर्नर जेनरल रहे । आपके हिंदोस्थान आनेके बहुत दिन पहिलेसे नैपाली गोरखे बृटिश सीमामें आकर प्रजाको सतायाकरतेथे । लार्ड मिन्टो और सर जार्ज बारलोने अनेक दफे उनको समझायाथा लेकिन उन्होंने कान नहीं कियाथा १८१४ में लार्ड हेस्टिंगजने जेनरल आक्टरलोनीको पंजाबकी तरफसे नैपालपर चढ़ादिया । पहिली दफे हारकर दूसरी दफे जेनरल आक्टर लोनीने हिमालय पर्वतपर स्थित गोरखोंके अनेक किलोंको जो अब पजाब मेजीडेन्सीमे शामिलहैं फतेह करलिया । दूसरी साल १८१५ में जेनरल अक्टर लोनीको पटनाकी तर फसे काठमांडूपर चढ़ाई करनेका हुक्म मिला। हारकर गोरखोंने सेगौलीकी सन्धि स्वीकारकी जिसके अनुसार नैनीताल, मसौरी और शिमला अंग्रेजी अधिकारमें आये । उधर मध्यहिंदके पिंडारियोंकी लूटमारसे प्रजा तंगथी । १८१७ में लार्डहेस्टिंगजने उनपर चढ़ाईकी । पिंडारी सर्दार चीतू परास्त होकर जंगलको भागा और चीतेकी शिकार हुआ । दूसरा पिंडारी सर्दार करीम हारकर अंग्रेजोंकी शरणागत हुआ। तीसरा पिंडारी सरदार अमीरखाँ टोंकका नवाब बना दिया जाने पर वश कियागया ।

पिंडारियोंको पामाल होते देख १८१७ में पूनाके पेशवा नागपुरके भोस
और इन्दौरके होळकरने सर उठाया लेकिन परास्तहुये। यह युद्ध जो इतिहास
तृतीय मरहट्टायुद्धके नामसे प्रसिद्ध है १८१८ में सन्धिद्वारा खतम हुआ
सन्धिकी शर्तोंके अनुसार पेशवाका मुल्क खालसा कियागया। पेशवाको ८
हजार पाउंड वार्षिक पेन्शन देकर बिठूर (कानपुर) में कैद कियागया। पेश
की जगह प्राचीन मरहट्टाराज्यका नाम चिरस्थायी रखनेके लिये महारा
शिवाजीके एक वंशजको थोड़ासा मुल्क देकर सताराका राजा बनायागय
भोंसला और होळकरके वंशके दो बालक बृटिश गवर्नमेंटकी रक्षामें नाग
और इन्दौरकी गद्दियोंके वारिस करारपाये। संक्षिप्त इस सन्धिद्वारा अंग्रेजों
प्राप्त यह सब मुल्क मिला जिससे वर्तमान बम्बई प्रेजीडेन्सी बनीहै। इ
समय राजपुतानाके राजाओंने भी अंग्रेजी रक्षामें आना स्वीकार किया। ए
हेस्टिङ्गजने केवल बृटिशराज्यकी सीमाही नहीं बढ़ाई किन्तु लुटेरे पिंडारियों
नष्ट करके और मरहट्टे तथा गोरखाको परास्त करके देशमें अमन चैन फैला
जहां लुटजानेके भयसे रास्ता चलना कठिन था वहां लार्ड हेस्टिंगजके शासन
प्रतापसे एक बुढ़ियाभी सोनेका ढेला हाथमें लिये हुये सफर करनेमें स
होगई। १८२३ में लार्ड हेस्टिङ्गज इंग्लैंड वापिस गये और कुछही समयमें
परमधामको सिधारे।

